वीर	सेवा म	रन्दिर	8
	दिल्ली		2000
			XXX
	*		8
_	293	6	X X
कम संख्या	030.2		8
काल नं०	200	अगर	~X
ब्रण्ड			- 🕱

॥ श्रीमणेशाय नमः ॥ अथ

अर्थप्रकाशिकया भाषाटीकया समन्वितः

अमरकोश:।

प्रथमकाण्डम् ।

श्रीअमरिसह निर्विद्मपूर्वक इस ग्रन्थकी समाप्ति और शिष्योंकी शिक्सिक लिये ग्रन्थके आदिमें प्रथम मंगलाचरण करते हैं:--

यस्य ज्ञानद्यासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः । सेव्यतामक्षयो घीराः स श्रिये चामृताय च ॥ १ ॥

हैं अन्वयः-भो धीराः ! यस्य अग्राधस्य ज्ञानद्यासिधोः अनघाः गुणाः योनन्ति), स अक्षयः श्रिये अमृताय च (भवद्भिः) सेन्यताम् ॥ १ ॥ श्रीमहुष्त्रमस्कृत्य गविदत्तेन धीमता ।

ही नूनममरकोशस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

है भाषार्थः है धीरपुरुषो ! जिस अत्यन्त गम्भीर ज्ञान और द्याके समुद्रके क्षांति आदि निर्मल गुण हैं उस अविताशीकी सम्पत्ति और मोक्षके ाप आराधना करो ॥ १॥

प्रस्तावना ।

समाहत्यान्यतन्त्राणि संक्षितैः प्रतिसंस्कृतेः । संपूर्णमुच्यते वर्गैनीमिछङ्गातुशासनम् ॥ २ ॥

ान्त्रयः-अन्यतन्त्राणि समाहृत्य संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः वर्गैः सम्पूर्ण िकंगानुशासनम् (मया) उच्यते ॥ २ ॥

माधार्थः नाम और लिङ्गके प्रतिपादन करनेवाले अन्यग्रन्थोंको एक के करके अल्पविस्तासक बहुअर्थवाले और प्रत्येक पदके प्रकृति प्रत्यय आदि-के विचारसे जिनमें प्रत्येक पदका संस्कार किया गया है ऐसे वर्गिक द्वारा सम्पूर्ण स्वर् इत्यादि नाम और पुरुष आदि लिंग इनके व्युत्पत्ति-विधायक श्रास्त्रकों में कहता हूं ॥ २ ॥

परिभाषा ।

प्रायशो रूपभेदेन साइचरीच कुत्रचित् । स्त्रीपुंनपुंसकं क्षेत्रं तद्विशेषविधः कचित् ॥ ३ ॥

अन्वयः - त्रायशः रूपभेदेन, कुत्रचित् साहचर्यात्, कचित्

विषेः स्त्रीपुनपुंसकं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भाषार्थः इस अन्यमें बहुधा करके रूपमेदसे अर्थात् आकारिते खीलिंग, पुँछिङ्ग और मपुंसकिंग जानना चाहिये ! जैसे-" छह पद्मालया पद्मा" " पिनाको जगवं घनुः " इन श्लोकों में रूपमेदसे छह पद्मालया पद्मा" " पिनाको जगवं घनुः " इन श्लोकों में रूपमेदसे छह पद्माइ ब्दिक स्त्रीिलंग है। पिनाकः यह पुर्छिग है, अजगवं यह नपुंसक है। तथा कहीं कहीं साहचर्यसे अर्थात् अन्यश्व क्त्रेय समीप होनेसे खंग, पुछिंग और नपुंसकिंग जानना। जैसे-"अश्व युगिश्वनी" " ब्रह्म भूः सुरज्येष्ठः " " वियदि ज्लापदम् " इन श्लोकों में अश्वनीकी साह अश्व युक् शब्द स्त्रीिलंग है। आत्मम् शब्द साहचर्यसे ब्रह्मा पुछिंग विज्ञापदके साहचर्यसे वियत्शब्द नपुंसकिंग है और कहीं लि विश्लेष उत्तिसे खीलिंग, पुछिंग और नपुंसकिंग जानना। है "भेरी खी दुंद्विभः पुमान् " " छीने त्रिविष्टपम् " इन श्लोकों में ह कहनेसे भेरी खीलिंग है और पुमान् पद् कहनेसे दुंदिभशब्द पुछिंग छीन पद कहनेसे त्रिविष्टप क्रीन अर्थात् नपुंसकिंग है॥ ३॥

भेदास्यानाय न द्वन्द्वी नैकशेषो न संकरः । कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादते ॥ २ ॥

अन्वयः -अत्र अनुक्तानां भिन्निलंगानां भेदाख्यानाय द्वन्द्वो न कृतः, (तथा) एकरोषः न कृतः, (तथा) क्रमात् ऋते संकरः अपि न कृतः ॥४॥ भाषार्थः -इस ग्रन्थमं अनुक्त अर्थात् अव्युत्पादित और भिन्निलंगवाले नामोंका लिंगभेद् कहनेके लिये द्वन्द्वसमास नहीं किया गया । जैसे-"कुलिशं भिद्धरं पिवः " इस श्लोकमं 'कुलिशिभिद्धरपत्रयः " ऐसा होता सो नहीं किया। तथा एकरोषभी नहीं किया क्योंकि एकरोषमं जो रोष रहता जसीके लिंगका बोध होता। जैसे-" नभः अविष्णो नमाः " इसकी जगह 'स्वश्रावणी तु नभसी " ऐसा नहीं किया। तथा क्रमके विना भिन्न लिंगोंका संकर अर्थात् मेलभी नहीं किया; क्योंकि साहचर्यसे लिंगके निश्वयका अभाव हो जाता, किन्तु खोलिंग, पिक्निंग, नपुंसकः

हमसे पढे । जैसे-" स्तवः स्तोतं स्तृतिर्नृतिः" इसकी जगह 'स्तु-॥त्रं स्तवो नृतिः १ ऐसा नहीं किया । यहां बहुधा क्रूपमेद करके का छिंग कहा, उन भित्रछिंगवाष्टीका द्वन्द्व आदि ेण है। 'अप्सरोयक्षरक्षोगन्धर्वकित्रसः " " मातापितरो पितरो " इन छो-द्वसमास और एकशेष किया है ॥ ४॥

्रत्रिलिङ्गचां त्रिष्विति पदं मिशुने तु द्वयोरिति । निषिद्**छिङ्गं** शेषार्थ त्वन्तायादि न पूर्वभाक् ॥ ५ ॥

अन्वयः-त्रिषु इति पदं त्रिक्टियां (ज्ञेयम्), मिथुने तु ह्रयोः इति पदं विक्रियां), निषिद्धिकां शेषार्थं (ज्ञेयम्), त्वंताथादि पूर्वभाक् न

भाषार्थः-तीनों लिगोंके कहनेमें त्रिषु यह पद कहा । जैसे-" त्रिषु गुलिंगोऽग्निकणः " यहां त्रिषु कहनेसे स्फुलिंगशब्द तीनों लिगवाची है । तथा ख्रीलिंग पुल्लिंगके कहनेमें द्वयोः यह पद कहा है । जैसे-"क्षेट्रे योज्वीलकि ।" यहां द्वयोः कहनेसे ज्वालकील शब्द पुल्लिंग ख्रीलिंग है । तथा निषिद्ध लिग शेषके लिये जानना । जैसे-"व्योम यानं विमानोऽ- ख्री " यहां ख्रीलिंगके निषधमें विमानशब्द पुल्लिंग नपुंसक लिंग है । तथा 'जिसके अन्तमें हो वह त्वंत और अथ जिसके आदिमें हो वह अथादि दोनों पूर्वपदके साथ सम्बन्ध करनेवाले नहीं होते । जैसे-" पुल्लेमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती " यहां नगरी यह त्वंत पद इन्द्राणीसे संबन्ध नहीं रखता किंतु अमरावतीसे संबंध रखता है । तथा "नित्यानवर-ताजस्त्रमप्यथातिशयो भरः " यहां अथादिपद अतिशय पूर्वपदको नहीं- कहता किन्तु भरका पर्याय है ॥ ५ ॥



स्वर्गवर्गः १।

स्वरुव्ययं स्वर्गनाकत्रिदिवित्रदशाल्याः !

पुरक्लोको द्योदिवी द्वे स्त्रियां क्लीने त्रिविष्टपम् ॥ ६ ॥

अमरा निर्जरा देवास्त्रिद्दशा विवुधाः पुराः !

पुर्वाणः पुमनसिन्निदिवेशा दिवीकसः ॥ ७ ॥

आदित्या ऋभवोऽस्वप्रा अमत्यो अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

विद्या ऋभवोऽस्वप्रा अमत्यो अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

विद्याः ऋगवोऽस्वप्रा अमत्यो अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

विद्याः ऋगवोऽस्वप्रा अमत्यो अमृतान्धसः ॥ ८ ॥

विद्याः ऋगवेष्ठनो गीर्वाणा दानवारयः ।

वृन्दारका देवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम् ॥ ९ ॥

आदित्यविश्ववसवस्तुविताऽभास्वरानिलाः ।

महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः ॥ १० ॥

विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगन्धविकिनराः ।

पिशाचो ग्रह्मकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ॥ ११ ॥

अथ स्वर्गवर्गः । स्वर्, स्वर्गे, नाक, त्रिदिव, त्रिदशाल्य, सुरलोक, ब्बो, दिवु, त्रिविष्टप ये नव नाम स्वर्गके हैं। तहां स्वर् अव्यय है । ब्बो, दिवृ (स्त्री॰) हैं । त्रिविष्टप (न॰) है । शेष पुछिन हैं ॥ ६ ॥ अमर, निर्जर, देव, त्रिद्श, विबुध, सुर, सुपर्वन् (नान्त), सुमनस् (सान्त), त्रिदिवेश, दिवोकस् (सान्त) ॥ ७ ॥ आदितेयं, दिविषट्, छेख, अदि-तिनन्दन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतांघस् (सान्त)॥ ८॥ **बर्हिर्भुख, ऋतुभुज्, (जान्त), गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, देवत, देवता** ये छव्वीस नाम देवताओंके हैं। देवत पुद्धिंग नपुंसक छिंग है। देवता स्त्री-छिंग है। शेष (पु॰) हैं ॥ ९॥ आदित्य १२, विश्व १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, अनिल ४९, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११ ये सब (पु॰) नाम गणदेवताके हैं। यहां तुषित आदि गण बीद्ध, पातंजाल आदिमें देखने उचित हैं ॥ १० ॥ विद्याघर (पु॰ जीमृतवाहन आदि), अपसरस् (सान्त वैकाओंकी स्त्रियां), । यक्ष (पु॰ कुबेर आदि), रक्षम् (सान्त छंकादिके वासी), गन्धर्व (तुं-बरू आदि), किन्नर (अश्वादि मुखवाले मनुष्याकृति), पिक्षाच (भूत-विशेष), गुह्मक (गणिभद्र आदि), सिद्ध (निश्वावसु आदि), भूत

प्रथमं काण्डं स्वर्गवर्गः १।

असुरा दैत्यदेतेयदनु जेन्द्रारिदानवाः ।
शुक्रशिष्या दितिस्रताः पूर्वदेषाः सुरद्विषः ॥ १२ ॥
सर्वत्रः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्त्यागतः ।
समन्तभद्रो भगवान्मारिज छोकि जिज्जिनः ॥ १३ ॥
वहभिक्षो दशक्छोऽद्वयवादी विनायकः ।
मुनीन्द्रः श्रीधनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥ १४ ॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोद्दिश्य सः ।
गौतमश्राक्षेवन्धुश्य मायादेवीस्रुतश्य सः ॥ १५ ॥
ब्रह्मात्मभूः सुरुज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः ।
हिरण्यगर्भो छोकेन्नः स्वयंभूश्रतुराननः ॥ १६ ॥
धाताञ्जयोनिर्द्धिणो विरिश्चिः कम्छासनः ।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृद्धिषः ॥ १७ ॥
"नाभिजन्माण्डजः पूर्वो निधनः कम्छोद्धवः ।
सदानंदो रजोगूतिः सत्यको हंसवाहनः ॥ "

(बालग्रह आदि), ये देवयोनिसंज्ञक हैं। अप्सरस्शब्द स्त्रील्गि, रह्मस् शब्द (न॰) और शेष (पु॰) हैं॥ ११॥ असुर, देत्य, देतेय, द्नुज, इन्द्रारि, दानव, शुक्रशिष्य, दितिसुत, पूर्वदेव, सुरहिष् (पान्त) ये दश पुष्टिंग नाम देत्योंके हैं॥ १२॥ सर्वज्ञ, सुगत, बुद्ध, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत (मत्वन्त), मार्गजित, लोकजित, जिन्न ॥१३॥ घडिभज्ञ, दशबल, अह्रयवादिन (इन्नत), विनायक, सुनीन्द्र, श्रीधन, शास्तृ (ऋकारान्त), सुनि ये अठारह पुष्टिंग नाम बुद्धके हैं। शाक्यसुनि॥ १४॥ शाक्यसिह, स्वार्थिसिद्ध, शोद्धोद्दिन, गौतम, अर्कवन्धु, मायादेवीसुत ये सात नाम शाक्यसुनिक हैं॥ १५॥ अह्रान् (नान्त), अस्मूम्, सुरज्येष्ठ, परमेष्ठिन (इन्न्त), पिताबह, हिरप्यमर्भ, लोकंश, स्वयम्भू, चतुरानन॥ १६॥ धातृ (ऋकारान्त), अब्जयोनि, दुहिण, विमिश्चि, कमलासन, सृष्ट् (ऋकारान्त), प्रजापित, विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (ऋकारान्त), विधातृ (आकारान्त), विधात् ये धीत्र विधात् ।

विष्णुनीरायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः । दामोदरो ह्विकेशः केशवो माधवः स्वभूः॥ १८॥ दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः । पीताम्बरोऽच्युतः शाङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्रकपाणिश्रत्भेजः। पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥ देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः । वनमाछी बिलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः ॥ २१ ॥ विश्वंभरः कैटभजिद्विधः श्रीवत्सलाञ्छनः। पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः ॥ २२ ॥ जलशायी विश्वरूपो मुक्कन्दो मुरमर्दनः । वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ॥ २३ ॥ बलभद्रः प्रलम्बन्नो बलदेवोऽच्युतायजः । रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥ २४ ॥ नीलाम्बरो रोहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली । संकर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः ॥ २५ ॥

(पु॰) नाम ब्रह्मांक हैं ॥१७॥ विष्णु, नारायण, कृष्ण, वेकुंठ, विष्ठरश्रवस् (सान्त), दामोद्दर, ह्वीकेश, केशव, माधव, स्त्रभू ॥ १८ ॥ देत्यारि, पुंडरीकाक्ष, गोविन्द, गरुडध्त्रज, पीताम्बर, अच्युत, शार्द्धित्र (इन्नन्त), विध्वक्सेन, जनादेन ॥ १९ ॥ उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चन्नपाणि, चतुर्भुज-पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम ॥ २० ॥ देवकी नन्दन, शोरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमाछिन् (इन्नन्त), बिछ्वस्तिन् (इन्नन्त), केसा, राति, अधोक्षज॥२९॥ विश्वम्भर, केटमजित्,(तान्त), विधु, श्रीवत्सछाछन, पुराणपुरुष, यज्ञपुरुष, नरकान्तक ॥ २२॥ जलशायिन् (इन्नन्त), विश्वस्त्रप, सुकुन्द, सुरमर्दन ये चवालीस (पु॰) नाम विष्णुके हैं । वसुदेव यह एक (पु॰) नाम कृष्णके पिता वसुदेव हैं । वही आनक-दुन्दुभि हैं । अर्थात् ये दोनों नाम कृष्णके पिता वसुदेव हैं ॥ २३॥ बलभद्र, प्रलम्बन्न, बलदेव, अच्युताय्रज, रेवतीरमण, राम, कामपाल, हलायुध॥२४॥ नीलाम्बर, रोहिणेय, तालांक, सुसल्दिन (इन्नन्त), हलिन् (इन्नन्त), संक-

मदनो मन्यथो मारः प्रदुष्त्रो मीनकेतनः ।
कंदपें दर्पकोऽनङ्गः कामः पश्चराः स्मरः ॥ २६ ॥
शम्बरारिमैनस्जिः कुसुमेषुरनन्यजः ।
पुष्पधन्वा रितपितमेकरध्वज आत्मभूः ॥ २७ ॥
ब्रह्मसूर्ग्रुष्यकेतुः स्याद्निरुद्ध उषापितः ।
छक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहिरिप्रिया ॥ २८ ॥
इंदिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ।
" भागवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका । "
शंखो लक्ष्मीपतेः पाश्चजन्यश्चकं सुदर्शनम् ॥ २९ ॥
कौमोदकी गदा खड्गो नन्दकः कौस्तुभो मणिः ।
चापः शार्ङ्ग मुरारेस्तु श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् ॥ ३० ॥
" अश्वाश्च शैन्यसुप्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।
सारिथर्दारुको मंत्री हाद्धवो वनजो गजः ॥ "

र्षण, सीरपाणि, कालिन्दीभेदन, बल ये सत्रह (पु॰) नाम बलदेवजीके हैं॥ २५ ॥ मदन, मन्मथ, मार, प्रद्युम्न, मीनकेतन, कन्दर्प, द्र्पक, अनङ्ग, काम, पञ्चशर, स्मर ॥ २६ ॥ शम्बरारि, मनसिज, कुसुमेषु, अनन्यज, पुष्पधन्वन् (नान्त), रतिपति, मकरध्वज, आत्मभू ये उन्नीस (पुः) नाम कामदेवके हैं ॥ २७ ॥ ब्रह्ममू, ऋष्यकेतु, अनिरुद्ध, उ-षापति ये चार (प्र॰) नाम अनिरुद्धके हैं । लक्ष्मी, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्री, हरिप्रिया ॥ २८ ॥ इन्दिरा, लोकमातृ, (ऋकारान्त) मा, क्षीरोदतनया, रमा ये ग्यारह (स्त्री॰) नाम लक्ष्मीके हैं। पाञ्चज-न्य यह एक (पु॰) नाम विष्णुके शंखका है। सुदर्शन यह एक (पु॰) ना-म विष्णुके चक्रका है ॥ २९ ॥ कौमोदकी यह एक (स्त्री०) नाम विष्णुकी गदाका है । नन्दक यह एक (पु॰) नाम विष्णुके खड़का है। कौस्तुभ यह एक (पु॰) नाम विष्णुकी मणिका है। शार्क यह (न॰) नाम् विष्णुके धनुषका है । श्रीवत्स यह एक (पु॰) नाम विष्णुकी छातीके लांछनका है ॥ ३० ॥ "राज्य, सुयीव, मेध-पुष्प, बराहक ये चार (पु॰) नाम विष्णुके धोडोंके हैं। दास्क यह एक (पु॰) नाम विष्णुके सारथीका है। उद्भव यह एक (पु॰) नाम गरुत्मान्गरुडस्ताक्ष्यों वैनतेयः खंगेश्वरः ।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाञ्चनः ॥ ३१ ॥
शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूछी महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शंकरश्चन्द्रशेखरः ॥ ३२ ॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृद्धः ।
मृत्युंजयः कृतिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः ॥ ३३ ॥
खग्रः कपदीं श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
वामदेवो महादेवो विष्ठपाक्षित्रलोचनः ॥ ३४ ॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जिटिनीललोहितः ।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्रयम्बकिष्ठपान्तकः ॥ ३५ ॥
गङ्गाधरोऽन्धकरिषुः कृतुध्वंसी वृषध्वजः ।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणु सृद्र उमापतिः ॥ ३६ ॥
" अहिर्बुध्योष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः । "
कपदीऽस्य जटालूटः पिनाकोऽजगवं धनुः ।
प्रमथाः स्युः पारिषदा ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥ ३७ ॥

विष्णुके मंत्रीका है। वनज यह एक (पु॰) नाम विष्णुके हाथीका है। गगरत्मन् (मत्वन्त), गरुड, तार्क्य, वैनतेय, खगेश्वर, नागांतक, विष्णुरथ, सुपण, पन्नगाञ्चान ये नव (पु॰) नाम गरुडके हैं ॥ ३१ ॥ शंभु, ईश्चा, पशुपति, शिव, शूछिन् (इन्नन्त), महेश्वर, ईश्वर, श्वे, ईशान, शंकर, चन्द्रशेखर ॥ ३२ ॥ भूतेश, खण्डपरशु, गिरीश, गिरिश, मृड, मृत्युक्तय, कृत्तिवासस् (सान्त), पिनाकिन् (इन्नन्त), प्रमथाधिप ॥३३॥ उग्र, कपार्द्द् (इन्न्त), श्रीकण्ठ, शितिकण्ठ, कपाल्युन्त् (तान्त), वामदेव, महादेव, विरूपाक्ष, त्रिलोचन ॥३४॥ कुन्शानुरेतस् (सान्त), सर्वज्ञ, धूर्जाट, नील्लोहित, हर, स्मरहर, मर्ग, न्यंवक, त्रिपुरान्तक ॥ ३५ ॥ गंगाधर, अंधकरिपु, क्रतुष्वंसिन् (इन्नन्त), वृषध्वज, व्योमकेश, भव, भीम, स्थाणु, रद्ध, उस्प्रपति ये अडतालीस (पु॰) नाम शिवजीके जटाजूटका है। पिनाक (पु॰), अजगव (न॰) ये दो नाम शिवजीके जटाजूटका है। पिनाक (पु॰), अजगव (न॰) ये दो नाम शिवजीके जटाजूटका है। शिवके पारिषद (समामें रहनेवाले) प्रमथ कहाते हैं।

" ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही च तथेंद्राणी चामुण्डा सप्त मातरः ॥ " विभूतिर्भृतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्ट्या । " अणिमा महिमा चैव गरिमा रुघिमा तथा । ् प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टिसद्धयः ॥ " उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीक ो ॥ ३८॥ शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला । अपर्णा पार्वेती दुर्गा मृडानी चण्डिकाम्बिका ॥ ३८ ॥ आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा । विनायको विन्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः॥ ४० ॥ अप्येकदन्तहेरम्बलम्बोदरगजाननाः । कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ॥ ४१ ॥ पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरश्रिभृग्रेहः । बाहुलेयस्तारकजिद्धिशाखः शिखिवाहनः ॥ ४२ ॥ षाण्मातुरः शक्तिघरः कुमारः क्रीश्वदारणः । शृंगी भृंगी रिटिस्तुंडी नन्दिको नन्दिकेश्वरः ॥ ४३ ॥

प्रमथ शब्द (पु॰) है। ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुंडा ये सात (स्त्री॰) नाम मातृकावाची हैं ॥३७॥ विभूति (स्त्री॰), भूति (स्त्री॰), एश्वर्य (न॰) ये तीन नाम ऐश्वर्य वा सिद्धिक हैं। "अणिमन, महिमन, गरिमन, रुघिमन ये चार (नान्त पु॰) हैं। प्राप्ति (स्त्री॰), प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये तीन (न॰) हैं। इन भेदोंसे आठ प्रकारकी सिद्धि हैं। " उमा, कात्यायनी, गौरी, काली, हेमक्ती, ईश्वरी ॥३८॥ शिवा, भवानी, रुद्राणी, शर्वाणी, सर्वमंगला, अपणी, पार्वती, दुर्गा, मुडानी, चंडिका, अम्बका ॥ ३९॥ आर्या, दाक्षायणी, गिरिजा, मेनकारमजा ये इकीस (स्त्री॰) नाम पार्वतिके हैं। विनायक, विन्नराज, हेमातुर, गणाधिप ॥४०॥ एकदन्त, हेरंब, लम्बोद्र, गजानन ये आठ (पु॰) नाम गणेशाजीके हैं। क्तितंकेय, महासेन, शरजन्मन (नान्त), वहानन ॥ ४१॥ पार्वतीनंदन, स्कन्द, सेनानी, अग्निभू, गुह, बाहुलेय, तारकिनत (तान्त), विशास, शिविवाहन ॥ ४२॥ षाण्मातुर, शिक्तिपर,

" कममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका।"
इन्द्रो मरुत्वान्मघवा विडीजां: पाकशासनः।
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहृतः पुरंदरः॥ ४४॥
जिष्णुर्लेखम्भः शकः शतमन्युर्दिवस्पतिः।
सुत्रामा गोत्रभिद्धजी वासवो वृत्रहा वृषा॥ ४५॥
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वलारातिः शचीपतिः।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः॥ ४६॥
संकन्दनो दुश्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया॥ ४७॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती।
इय उच्चैःश्रवाः स्तो मातल्जिनन्दनं वनम्॥ ४८॥
स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः।
ऐरावतोऽश्रमातङ्गरावणाश्रमुवल्लभाः॥ ४९॥

कुमार, क्रीअदारण ये सत्रह (पु०) नाम खामिकार्तिकके हैं। ब्राङ्गन, भू. द्धिन (इन्नन्त),रिटि, तुंडिन (इन्नन्त), निन्दक, निन्दिकेश्वर ये छः (पु॰) नाम नंदिगणके हैं ॥४३॥ इन्द्र, मरुत्वत् (मत्वन्त), मघवत् (मत्वन्त), बिर्डोजस् (सान्त), पाकशासन, वृद्धश्रवस् (सान्त), सुनासीर, पुरुहूत, पुरन्दर्॥४४॥ जिष्णु, छेखर्षभ, शक्र, शतमन्यु, द्विस्पति, सुत्रामन् (नान्त), गोत्रभृत् (तान्त), वाञ्चेन (इन्नन्त), वासव, वृत्रहन् (नान्त), वृपन् (नान्त) ॥४५॥ वास्तोष्पति, सुरपति, बलाराति, राचीपति, जम्ममेदिन (इत्रन्त), हरिहय, स्वाराज् (जान्त), नमुचिमूदन ॥४६॥ संक्रन्दन, दुश्यवन, तुरापाइ (हान्त), मेघवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष, ऋमुक्षिन् (नान्त), ये पैंतीस (पु॰) नाम इन्द्रके हैं। इन्द्रकी प्रियाके नाम ॥४७॥ पुरुोमजा, शची, इन्द्राणी, ये तीन (स्त्री॰) नाम हैं। अमरावती यह एक (स्त्री॰) नाम इन्द्रकी नगरीका है। उच्चैःश्रवस् (सान्त) यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके घोडे-का है। मातिल यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके सारिश्वका है। नन्दन यह एक (न॰) नाम इन्द्रके बागका है ॥ ४८ ॥ वैजयन्त यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके महरुका है। जयन्त और पाकशासनि ये दो (पु॰) नाम इन्द्रके पुत्रके हैं। ऐरावत, अभ्रमातंग, ऐरावण, अभ्रमुबद्धभ ये चार (पु॰)

हादिनी वज्रमस्री स्यात्कुिंह शं भिदुरं पिनः ।
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोहिरशनिर्द्रयोः ॥ ५० ॥
व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुर्षयः ।
स्यात्सुधर्मो देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥
मन्दािकनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीिर्धका ।
मेरुः सुमेरुहेमाद्री रत्नसातुः सुराह्ययः ॥ ५२ ॥
पञ्चते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
संतानः कल्पष्टक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥
सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वेद्याविश्वनीसुतौ ।
नासत्याविश्वनौ दस्नावािश्वनेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥
स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेद्या उर्वशीमुखाः ।
हाहा हृहुश्चेवमाद्या गन्धवीिस्त्रादिवीकसाम् ॥ ५५ ॥

नाम इन्द्रके हाथांके हैं॥४९॥ बादिनी (स्त्री॰),वज्र, कुछिश, भिदुर, पवि, अतकोटि, स्वरु, शम्ब, दम्भोलि, अशनि ये दश नाम वज्रके हैं। वज्रशब्द (पु॰) और (न॰) है। अज्ञानिज्ञब्द (पु॰) और (स्त्री॰) हैं। कुछिज्ञ, भिद्धर (न॰), शेष (पु॰) हैं॥ ५० ॥ व्योमयान, (न॰) विमान ये दो नाम विमानके हैं। विमानशब्द (पु॰) और (न॰) है। नारद, देवल आदि देवताओं में ऋषि हैं। सुधर्मी, दे-वसभा ये दो (स्त्री॰) नाम देवताओंकी सभाके हैं । पीयूष (न॰), अ-मृत (न॰) सुधा (स्त्री॰) ये तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दा-किनी, वियदका, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका ये चार (स्त्री०) नाम आकाश-गंगाके हैं। मेरु. सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुराख्य ये पांच (पु॰) नाम समेरपर्वतके हैं ॥ ५२ ॥ मन्दार, पारिजातक, सन्तान, कल्पवृक्ष, हरिच-न्दन ये पांच (पु॰) नाम देवताओं के वृक्षके हैं। हरिचन्दनशब्द (पु॰ नः) है ॥ ५३ ॥ सनत्कुमार, वधात्र ये दो (पु॰) नाम सन कादिकोंके हैं। खबैंदा, अश्विनी सुत, नासत्य, अश्विन, दस्र, आश्विनेय ये छः (पु॰) नाम अश्विनीकुमारोंके हैं। ये यमल अर्थात् दोनों एक-साथ उत्पन्न हुए हैं: इसिलिये इनके वाचकश्रब्द सर्वदा द्विवचनांत होते हैं 渊 ५४ ॥ अप्सरस्, स्वर्वेश्या ये दो (स्त्री॰) नाम उर्वशी मेनका "कर्ममोटी तु चामुण्डा चर्ममुण्डा तु चर्चिका।"
इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडीजां: पाकशासनः।
वृद्धश्रवाः सुनासीरः पुरुहूतः पुरंदरः॥ ४४॥
विष्णुर्छेखर्षभः शकः शतमन्युर्दिवस्पतिः।
सुत्रामा गोत्रिभद्धज्री वासवो वृत्रहा वृषा॥ ४५॥
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्वेद्धारातिः शचीपतिः।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः॥ ४६॥
संकन्दनो दुश्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः।
आखण्डद्धः सहस्राक्ष ऋभुक्षास्तस्य तु प्रिया॥ ४७॥
पुद्धोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती।
हय उच्चैःश्रवाः सूतो मातद्धिनेन्दनं वनम्॥ ४८॥
स्यात्प्रासादो वैजयन्तो जयन्तः पाकशासनिः।
ऐरावतोऽश्रमातङ्गरावणाश्रमुवद्धभाः॥ ४९॥

कमार, क्रीअदारण ये सत्रह (पु॰) नाम स्वामिकार्तिकके हैं। क्राङ्किन, मू. द्धिन् (इन्नन्त),रिटि, तुंडिन् (इन्नन्त), नन्दिक, नन्दिकेश्वर ये छः (पु॰) नाम नंदिगणके हैं ॥४३॥ इन्द्र, मरुत्वत् (मत्वन्त), मघवत् (मत्वन्त), बिंहीजस् (सान्त), पाकशासन, वृद्धश्रवस् (सान्त), सुनासीर, पुरुहत, पुरन्दर॥४४॥ जिष्णु, लेखर्षम, शक्र, शतमन्यु, दिवस्पति, सुत्रामन् (नान्त), गोत्रभृत (तान्त), वाज्रिन् (इन्नन्त), वासव, वृत्रहन् (नान्त), वृषन् (नान्त) ॥४५॥ वास्तोष्पति, सुरपति, बलाराति, राचीपति, जम्भभेदिन (इन्नन्त), हरिहय, स्वाराज् (जान्त), नमुचिमूद्न ॥४६॥ संक्रन्दन, दुश्च्यवन, तुराषाह् (हान्त), मेचवाहन, आखण्डल, सहस्राक्ष, ऋभुक्षिन् (नान्त), ये पैंतीस (पु॰) नाम इन्द्रके हैं। इन्द्रकी प्रियाके नाम ॥४७॥ पुलोमजा, शची, इन्द्राणी, ये तीन (स्त्री॰) नाम हैं। अमरावती यह एक (स्त्री॰) नाम इन्द्रकी नगरीका है । उच्चैःश्रवस् (सान्त) यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके घोडे-का है। मातिल यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके सारिश्वका है। नन्दन यह एक (न॰) नाम इन्द्रके बागका है ॥ ४८ ॥ वैजयन्त यह एक (पु॰) नाम इन्द्रके महरुका है। जयन्त और पाकशासनि ये दो (पु॰) नाम इन्द्रके पुत्रके हैं। ऐरावत, अभ्रमातंग, एरावण, अभ्रमवद्धभ ये चार (पु॰)

हादिनी वज्रमस्री स्याकुछिशं भिदुरं पविः ।
शतकोटिः स्वरुः शम्बो दम्भोछिरशनिर्द्धयोः ॥ ५० ॥
व्योमयानं विमानोऽस्त्री नारदाद्याः सुर्षयः ।
स्यात्सुधर्मा देवसभा पीयूषममृतं सुधा ॥ ५१ ॥
मन्दािकनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीिर्धिका ।
मेरुः सुमेरुईमाद्री रत्नसातुः सुरालयः ॥ ५२ ॥
पञ्चेते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
संतानः कल्पनृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ॥ ५३ ॥
सनत्कुमारो वैधात्रः स्वर्वेद्याविधनीसुतौ ।
नासत्याविधनो दस्नावािधनेयौ च तावुभौ ॥ ५४ ॥
स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्वर्वेश्या उर्वशीमुखाः ।
हाहा हुहुश्चेवमाद्या गन्धवीिस्त्रिदिवीकसाम् ॥ ५५ ॥

नाम इन्द्रके हाथांके हैं॥४९॥ हादिनी (स्त्री॰),वज्र, कुलिश, भिदुर, पवि, जातकोटि, स्वरु, राम्ब, दम्भोलि, अशानि ये दश नाम वज्रके हैं। वज्रशब्द (प॰) और (न॰) है। अज्ञानिज्ञब्द (पु॰) और (स्त्री॰) है। कुलिश, भिदुर (न॰), शेष (पु॰) हैं ॥ ५० ॥ व्योमयान, (न॰) विमान ये दो नाम विमानके हैं। विमानशब्द (पु॰) और (न॰) है। नारद, देवल आदि देवताओं में ऋषि हैं। सुधर्मा, दे-वसमा ये दो (स्त्री॰) नाम देवताओंकी सभाके हैं । पीयूष (न॰), अ मृत (न॰) सुधा (स्त्री॰) ये तीन नाम अमृतके हैं ॥ ५१ ॥ मन्दा-किनी, वियदक्का, स्वर्णदी, सुरदीर्घिका ये चार (स्त्री॰) नाम आकाश-गंगाके हैं। मेरु. सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय ये पांच (पु॰) नाम समेरपर्वतके हैं ॥ ५२ ॥ मन्दार, पारिजातक, सन्तान, कल्पनृक्ष, हरिच-न्दन ये पांच (पु॰) नाम देवताओं के बक्षके हैं। हरिचन्दनशब्द (पु॰ नः) है ॥ ५३ ॥ सनत्कुमार, वधात्र ये दो (पुः) नाम सन-कादिकोंके हैं। स्ववैद्य, अश्विनीसुत, नासत्य, अश्विन, दस्न, आश्विनेय ये छः (पु॰) नाम अश्विनीकुमारोंके हैं। ये यमल अर्थात दोनों एक-साथ उत्पन्न हुए हैं; इसिछिये इनके वाचकदाब्द सर्वदा दिवचनांत होते हैं 渊 ५४ ॥ अप्सरम् , स्वर्वेश्या ये दो (स्त्री॰) नाम उर्वशी मेनका अप्रिवेश्वानरो विद्ववितिहोत्रो धनंजयः।
कृपीटयोनिर्ज्वेछनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ ५६ ॥
बिहिं शुष्मा कृष्णवत्मी शोविष्केश उपर्वधः।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनछः ॥ ५७ ॥
छोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः।
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः॥ ५८ ॥
सप्ताचिद्मुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः।
शुचिरिप्पत्तमीर्वस्तु वाडवो वडवानछः॥ ५९ ॥
वहेद्वयोज्विछकीछावचिहेतिः शिखा ख्रियाम् ।
त्रिषु स्फुछिङ्गोऽप्रिकणः संतापः संव्वरः समी ॥ ६० ॥
अ उल्का स्यान्निर्गतज्वाछा भृतिर्भित्तमस्मनी ।
क्षारो रक्षा च दावस्तु द्वो वनहुताशनः॥ "
धर्मराजः पितृपतिः समवतीं परेतराट्।
कृतान्तो यमुनाञ्चाता शमनो यमराङ्यमः॥ ६१ ॥

आदि हैं। तहां अप्सरस्शान्द (स्त्री॰) बहुवचनांत है। हाहा, हूहू आदि (पु॰) नाम देवताओं के गन्धवें अर्थात गानेवालों के हैं ॥ ५५॥ अग्नि, वैश्वानर, विह्न, वीतिहोत्र, धनक्रय, कृपीटयोनि, ज्वलन, जातवेद्स् (सान्त), तनूनपात् (तान्त)॥ ५६॥ विहिःशुष्मन् (नान्त), कृष्णवर्त्मन् (नान्त), शोचिष्केश, उपर्वुध, आश्रयाश वृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल ॥ ५७॥ रोहिताश्व, वायुसख, शिखावत (मत्वन्त), आशुश्रक्षणि, हिरण्यरेतम् (सान्त), हुतभुज् (जान्त), दृहन, हव्यवाहन ॥ ५८॥ सप्ताचिस् (सान्त), द्मुनस् (सान्त), शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि (पु॰), अप्पित्त (न॰), ये चौतीस नाम अग्निके हैं। स्विन्त, वाहव, वहवानल ये तीन (पु॰) नाम वहवाअग्निके हैं ॥ ५९॥ ज्वाल, कील, अर्चिस्, हेति, शिखा ये पांच नाम अग्निकी शिखाके हैं। ज्वाल और किलक्षव्द (पु॰ स्त्री॰) हैं। अर्चिस्शव्द (स्त्री॰ न॰) है। हेति और शिखाशव्द स्त्रीलिंग है। स्फुलिंग, अग्निकण ये दो (पु॰) नाम अग्निके कणके हैं। स्फुलिंग शव्द तीनीं लिंगका वाची है। संताप, संज्वर ये दो (पु॰) नाम अग्निके संतापके हैं॥ ६०॥ धर्मक्रुज,

कालो दण्डघर: श्राद्धदेवा वैवस्वतोऽन्तकः ।
राक्षसः कीणपः कव्यात्कव्यादोऽस्वप आश्वरः ॥ ६२ ॥
रात्रिंचरो रात्रिचरः कर्नुरो निकषात्मजः ।
यातुघानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥ ६३ ॥
प्रचेता वरुणः पाशी यादसांपतिरप्पतिः ।
श्वसनः स्पर्शनो वायुर्भातिरश्वा सदागतिः ॥ ६४ ॥
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः ।
समीरमारुतमरुज्जगत्प्राणसमीरणाः ॥ ६५ ॥
नभस्बद्धातपवनपवमानप्रभञ्जनाः ।
प्रकम्पनो महावातो झंझावातः सवृष्टिकः ॥ ६६ ॥
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः ।
श्रीरस्था इमे रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥ ६७ ॥

पितपति, समवर्तिन् (इन्नन्त), परेतराज् (जान्त), कृतांत, यमुनाञ्चात् (ऋकारान्त), शमन, यमराज़् (जान्त), यम ॥ ६१ ॥ काल, दंह-धर, श्राद्धदेव, वैवस्वत, अन्तक ये चौदह (पु॰) नाम यमके हैं। राक्षस कीणप, क्रव्याट् (दान्त), क्रव्याद, अस्त्रप, आशर ॥ ६२ ॥ रात्रिचर, रात्रिचर, कर्ड्रर, निकषात्मज, यातुधान, पुण्यजन, नैर्ऋत, यातु, रक्षस् (सान्त) ये पन्द्रह नाम राक्षसके हैं। इनमें यातु और रक्षम् ये दो नाम (न॰) शेष पुष्टिंग हैं ॥ ६३ ॥ प्रचेतस् (सान्त), वरुण, पाशिन (इत्रन्त), यादसांपति, अप्पत्ति ये पांच (पु॰) नाम वरुणके हैं । श्वसन, स्पर्शन, वायु, मातरिश्वन् (नान्त), सदागति ॥ ६४ ॥ पृषद्श्व, गन्धव-ह, गन्धवाह, अनिल, आञ्चाग, समीर, मास्त, मस्त (तान्त), जगत्प्राण, समीरण ॥ ६५ ॥ नभस्वत् (मत्वन्त), वात, पवन, पवमान, प्रभञ्जन, ये वीस (पु॰) नाम वायुके हैं। प्रकंपन, महावात ये दो (पु॰) नाम महावाय अर्थात आंधीके हैं । और जो वृष्टि करके सिहत हो तो उसीको झंझावात कहते हैं यह पुष्टिंग है ॥ ६६ ॥ प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान ये पांच (go) नाम शरीरमें स्थित वायुके हैं। हृद्यमें प्राण है, गुद्रामें अपान है, नाभिमें समान है, कंठमें उदान और सम्पूर्ण शरीरमें व्यान है । रहस् (सान्त न०) तरस् (सान्त न०) रय (पु०) स्यद् (पु०) जवोऽय शीघं त्वरितं छषु क्षिप्रमरं द्वतम् ।
सत्तरं चपछं त्र्णमविछम्बितमाशु च ॥ ६८ ॥
सततानारताश्रान्तसंतताविरतानिशम् ।
नित्यानवरताजस्त्रमप्यथातिशयो भरः ॥ ६९ ॥
अतिवेछभृशात्यर्थातिमात्रोद्वादिनर्भरम् ।
तीत्रैकान्तनितान्तानि गादबाददृद्धानि च ॥ ७० ॥
छीवे शीघाद्यसत्त्वे स्यात्रिष्वेषां सत्त्वगामि यत् ।
कुवेरस्वयम्बकसखो यक्षराङ् गुद्धकेश्वरः ॥ ७१ ॥
मनुष्यधमी धनदो राजराजो धनाधिपः ।
किनरेशो वेश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥ ७२ ॥
यक्षैकपिङ्गलविलश्रीदृषुण्यजनेश्वरः ।
अस्योद्यानं चेत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ॥ ७३ ॥

॥ ६७ ॥ जब (पु॰) ये पांच नाम वेगके हैं । ज्ञीघ्र, त्वरित, रुघु, क्षि-प्र, अर, द्वत, सत्वर, चपल, तूर्ण, अविल्लाम्बत, आशु ये ग्यारह (न०) नाम शीव्रताके हें ॥ ६८ ॥ सतत, अनारत, अश्रान्त, संतत, अविरत, अनिज्ञा, नित्य, अनवरत, अजस्त्र ये नव (न॰) नाम नित्यके हैं । अति-ज्ञाय (पु॰), भर (पु॰) ॥६९॥ अतिवेल, भूजा, अत्यर्थ, अतिमात्र, उद्गाढ, निर्भर, तीव्र, एकांत, नितांत, गाढ, बाढ, दृढ ये बारह (न॰) कुछ चौदह नाम अतिशयके हैं॥ ७० ॥ शीव्रसे आदि ले दढ पर्यंत शब्द असत्व विषें अर्थात द्रव्यवृत्तिपनेके अभावमें नपुंसक्रिंग हैं। जैसे-'ज्ञी-घ्रं कृतवान, भुशं मूर्खः, भुशं याति ^१ इन वचनोंमें नपुंसकिंछग है और इन ज्ञीन्रआदिकोंके मध्यमें जो सत्वगामी द्रव्यवृत्ति हैं वह तीनों छिंग-वाची हैं । जैसे-'शीव्रा धेतुः, शीव्रो वृषः, शीव्रं गमनम् । इन वचनोंमें (स्त्री॰ पु॰ न॰) है । कुबर, व्यंबकसख, यक्षराज् (जान्त), गुह्मके-श्वर् ॥ ७१ ॥ मनुष्यधर्मन् (नान्त), धनद्, राजराज, धनाधिप, किन्न-रेज्ञ, वैश्रवण, पौलस्त्य, नरवाहन ॥ ७२ ॥ यक्ष, एकपिंग, ऐलविल, श्रीद, पुण्यश्तेश्वर ये सत्रह (पु॰) नाम कुनेरके हैं। चैत्ररथ यह एक (प॰) नाम कुबेरके बगीचेका है। नलकुबर यह एक (प॰) नाम कैलासः स्थानमलका पूर्विमानं तु पुष्पकम् ।
स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरंगवदनो मयुः ॥ ७४ ॥
निधिनो शेवधिर्भेदाः प्रकाह्यद्वेत नियेश। इति स्वर्गवर्गः॥१॥
अथ द्योगवर्गः २।

द्योदिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं न्योम पुष्करमम्बरम् ।
नभोन्तिरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म स्त्रम् ॥ १ ॥
वियद्भिष्णपदं वा तु पुंस्याकाशिवहायसी ।
विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरिष स्यात्तदन्ययम् ॥ २ ॥
"तारापथोऽन्तिरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिल्लम्।" इति न्योमवर्गः २
अथ दिग्वर्गः ३ ।

दिशस्तु कुकुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः। प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्वदक्षिणपश्चिमाः॥ १॥

कुबेरके पुत्रका है ॥ ७३ ॥ कैलास यह एक (पु॰) नाम कुबेरके स्थानका है। अलका यह एक (स्त्री॰) नाम कुनरकी पुरीका है। पु-प्पक यह एक (पु॰ न॰) नाम कुबेरके विमानका है। किन्नर, किंपुरूष तुरंगवदन, मयु ये चार (९०) नाम किन्नरोंके हैं ॥ ७४ ॥ निधि, री-विध य दो (पु॰) नाम खजानेके हैं । (यहां " ना " अर्थात् पुछिनका काककी आंखकी पुतलीके समान दोनोंमें सम्बन्ध है) पद्म (पु॰), शंख (पु॰ न॰) आदि नाम निधि अर्थात् खजानेके भेदबाची हैं । " महा-पद्मश्च पद्मश्च शंखो मकरकच्छपो । मुकुन्दकुन्दो नीलश्च खर्वश्च निधयो नव ॥ " महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुंद, नील, ये नव (पु॰) नाम निधि अर्थात् खजानेके मेद् हैं ॥ इति स्वर्गवर्गः ॥ १ ॥ अथ व्योमवर्गः । द्यो, दिव् , अभ्र, व्योमन् (नान्त), पुष्कर, अम्बर, नभस् (सान्त), अंतरिक्ष, गगन, अनंत, सुरवर्त्मन् (नांत), ख ॥ १ ॥ वियत् (तान्त), विष्णुपद, आकाश, विहायस् (सान्त), विहायस, नाक, द्रा ये इक्कीस नाम आकाशके हैं। द्यो और दिव् शब्द स्त्रीलिंग हैं। आकाश और विहायस शब्द (पु॰ न॰) हैं और ग्रुस् यह अव्यय है द्येष (न०) हैं ॥ २ ॥ इति व्योमवर्गः ॥ २ ॥ अथ दिग्वर्गः । दिश् (शान्त), ककुम् (भान्त), काष्ठा, आशा, उत्तरा दिग्रदीची स्यात् दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

" अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।
प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥ "
इन्द्रो वाहिः पित्रपतिनैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥ २ ॥
कुवेर ईशः पत्यः पूर्वोदीनां दिशां कमात् ।

" रिवः शुक्रो महीस्तुः स्वभीनुभीनुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्रेति दिशां चैव तथा प्रहाः ॥ "

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ॥ ३ ॥
पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

करिण्योऽश्रमुकपिलापिंगलानुपमाः क्रमात् ॥ ४ ॥
ताम्रकणीं शुश्चदन्ती चांगना चाञ्जनावती ।
क्रीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोमध्य विदिक् स्त्रियाम् ॥ ५ ॥

हरित (तांत) ये पांच (स्त्री ०) नाम दिशाके हैं । वे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम इनके प्राची, अवाची, प्रतीची ये ऋमसे (स्त्री॰) नाम हैं ॥१॥ उदीची यह एक (स्त्री॰) नाम उत्तर दिशाका है। दिशामें होनेवालेको दिश्य कहते हैं और यह तीनों लिगवाची है । जैसे-' दिश्यो हस्ती, दिश्या हस्तिनी ' इन वचनोंमें हस्तीके साथ दिश्यशब्द पुर्छिग है और हस्तिनीके साथ दिश्यशब्द स्त्रीं छंग है। इन्द्र, अग्नि, यम, राक्षस, वरुण, मरुत् (तान्त) ॥ २ ॥ दुबेर, ईश ये आठों (पु॰) नाम पूर्व आदि दिशाओंके कमसे खामियोंके हैं। " सूर्य, शुक्र, मंगल, राहु, शिन, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति ये आठ ग्रहोंके (पु॰) नाम ऋमसे पूर्व आदि दिशाओं के स्वाभियों के हैं। " ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन ॥ ३ ॥ पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक ये आठ (पु॰) नाम पूर्व आदि दिशाओं के कमसे दिग्गज अर्थात दिशाओं को धारण करनेवालों के हैं। अभ्रम, कपिला, पिंगला, अनुपमा ॥ ४ ॥ ताम्रकणी, राभ्रदन्ती, अंगना, अञ्जनावती ये आठ (स्त्री॰) नाम दिग्गनोंकी हथिनियोंके हैं। अप-दिज्ञा, विदिश् (ज्ञान्त) ये दो नाम दिज्ञाओं के मध्यवाली दिज्ञाके हैं तहां अपदिज्ञज्ञब्द (न॰) और अव्यय है और विदिक् ज्ञब्द (स्त्री॰)

अभ्यन्तरं त्वन्तराछं चक्रवाछं तु मण्डलम् ।
अश्रं मेघो वारिवाहः स्तनियलुर्वेछाहकः ॥ ६ ॥
धाराधरो जल्ठधरस्ति इत्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
घनजीमृतमुदिरजल्मुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥
कादम्बिनी मेघमाला त्रिषु मेघभवेऽश्रियम् ।
स्तिनतं गर्जितं मेघनिधोषे रिसतादि च ॥ ८ ॥
शंपाशतहदाहादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
तिहिन्सौदामनी विद्युच्चश्र्वला चपला अपि ॥ ९ ॥
स्फूर्जथुवेत्रनिघोषो मेघज्योतिरिरंमदः ।
इन्द्रायुधं शक्रधनुस्तदेव ऋजुरोहितम् ॥ १० ॥
वृष्टिवर्षं तिद्वघातेवग्राहावग्रही समौ ।
धारासंपात आसारः शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥ ११ ॥

हैं ॥ ५ ॥ अभ्यंतर, अन्तराल ये दो (न॰) नाम भीतर अक्काञ्चे हैं। चक्रवाल, मंडल ये दो (पु॰ न॰) नाम मंडल अर्थात घेरके हैं। अभ (न ः), मेघ, वारिवाह, स्तनियत्तु, बलाहक ॥ ६ ॥ घाराघर, जलघर, तिंडस्वत् (मत्वन्त), वारिद्, अंबुभृत् (तान्त), धनः जीमृत्, मुदिर्, जलमुच (चान्त), धूमयोनि ये पंद्रह (पु॰) नाम मेघके हें ॥ ७ ॥ कादम्बिनी, मेघमाला ये दो (स्त्री) नाम भेघकी पंक्तिके हैं। मेघमं जो हो उसे अभिय कहते हैं और वह तीनों हिंगी है। जैसे-'अभिया आपः अभियः आसारः, अभियं जलम् इन वाक्योंमें स्त्रीलिंग, पुंटिंग नपुंसक लिंग क्रमसे हैं। स्तनित, गर्जित, रसित आदि य तीन (न०) नाम मेचके गर्जनेके हैं ॥ ८ ॥ इांपा, शतन्हदा, न्हादिनी, ऐरावर्ता, क्षणप्रभा, ताहित, सौदामनी, विद्युत, चश्चला, चपला ये दश (स्त्री॰) नाम बिजलीके हैं ॥ ९ ॥ स्फुर्जथु, वज्रनिर्घाप ये दो (पु॰) नाम वज्रके शब्दके हैं। मेघज्योतिस्, इरंमद् ये दो (पु॰) नाम मेघर्का ज्योतिके हैं। इन्द्रायुण, शक्रधनुस् (सान्त), ऋजुरोहित ये तीन (न॰) नाम इन्द्रके धनुषके हैं ॥ १० ॥ वृष्टि (स्त्री०), वर्ष (न०) ये दो नाम वर्षाके हैं। अवग्रह, अवग्राह ये दो (९०) नाम वर्षाके निरोधके हैं। धारासंपात, आसार ये दो (पु॰) नाम निरंतर वर्षनेके हैं । शीकर यह एक (पु॰)

वर्षोपलस्तु करका मेथच्छन्नेऽद्धि दुदिनम् ।
अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तिधिरपवारणम् ॥ १२ ॥
अपिधानितरोधानिपधानाच्छादनानि च ।
हिमांशुश्रंद्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुद्वान्धवः ॥ १३ ॥
विद्युः सुधांशुः शुआंशुरोषधीशो निशापितः ।
अञ्जो जैवातृकः सोमो ग्रीर्मृगांकः कल्लानिधिः ॥ १४ ॥
दिजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।
कला तु षोडशो भागो विम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥ १५ ॥
भित्तं शकल्लण्डे वा पुंस्पधींऽर्ध समेंऽशके ।
चन्द्रिका कीमुदी ज्योतस्ता प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥ १६ ॥

नाम जलके छोटे २ कणकोंका है ॥११॥ वर्षोपल (पु॰),करका (स्त्री॰) ये दो नाम ओळोंके हैं। दुदिन यह एक (न०) नाम मेघसे आच्छादित हुए दिनका है। अन्तर्धा (स्त्री॰), व्यवधा (स्त्री॰), अन्तर्धि (पु॰), अपवारण (न॰)॥ १२॥ अपिधान (न॰), तिरोधान (न॰), पिश्रान (न॰), आच्छादन (न॰) ये आठ नाम आच्छादनके हैं। तहां अंतर्थिशब्द पुछिंग है । हिमांग्र, चन्द्रमस् (सान्त), चन्द्र, इन्द्र, कुमुद्बांधव ॥ १३ ॥ विधु, सुषांशु, शुद्रांशु, ओषधीश्, निशापति, अब्ज, जैवातृक, साम, ग्ही, मृगांक, कलानिधि ॥ ९४ ॥ द्विजराज, राराधर, नक्षत्रेरा, क्षणकर ये वीस (पु॰) नाम चन्द्रमाके हैं । कला यह एक (स्त्री॰) नाम चन्द्रमाके मंडलके सोलहवें भागका है। विव, मंडल ये दो नाम विवके हैं। तहां बिबराब्द (पु॰ न॰) छिंग है और मण्डलज्ञब्द त्रिलिंगी है ॥ १५ ॥ भित्त (न॰), कराल, खंड, अर्द्ध ये चार नाम दुकडेके हैं । तहां शकल और खंडशब्द (पु॰ न॰) हैं । अर्द्धशब्द पुर्हिंग है। जैसे-'कवळस्यार्द्धः खण्ड' इत्यर्थः । और वाच्यिलगभी है । जैसे-' अर्घा ज्ञाटो, अर्थः पटः, अर्थं वस्त्रम् , और समानभागमें अर्द्धज्ञहरू नपुंसक छिंग है। चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना ये तीन (स्त्री॰) नाम चंद्रमाकी चांदनीके हैं। प्रसाद (पु॰) , प्रसन्नता (स्त्री॰) ये दो नाम कल्ङ्काङ्की लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।
सुषमा परमा शोभा शोभा कान्तिचीति इछविः ॥ १७ ॥
अवस्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहितः ॥ १८ ॥
शीतं गुणे तद्द्वयोः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शितलः शितो हिमः सत्तान्यलिङ्ककाः ॥ १९ ॥
धुव औत्तानपादिः स्याद्गस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
मेत्रावरुणिरस्येव लोपामुद्रा संधर्मणी ॥ २० ॥
नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।
दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा अश्वयुगिधनी ॥ २१ ॥
राधा विशासा पुष्ये तु सिध्यितिष्यी श्रविष्ठया ।
समा धनिष्ठा स्युः प्रोष्ठपदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥ २२ ॥

निर्मलताके हैं ॥१६॥ कलंक, अंक, लांछन, चिह्न, लक्ष्मन् (नांत), लक्षण् ये छः नाम चिद्रके हैं। कलंक, अंक ये दो (पु०) हैं शेष (न०) लिंग हैं । सुषमा यह एक (स्त्री॰) नाम उत्तम शोभाका है । शोभा, कांति, द्यति, छावि ये चार (स्त्री॰) नाम कांतिके हैं ॥ १७॥ अवश्याय (पु॰), नीहार (पु॰), तुषार (पु॰), तुहिन (न॰), हिम (न॰), प्रालेय (न॰), मिहिका (स्त्री॰) ये सात नाम हिम अर्थात जाडेके हैं। हिमानी, हिमसंहति ये दो (स्त्री॰) नाम बहुत हिमके हैं ॥ १८ ॥ शितशब्द गुण सर्थात् स्पर्शविशेषमंही (न॰) है, गुणवालेमें नहीं है । सुषीम, शिशिर, जड, तुषार, शीतल, शीत, हिम ये सातों नाम शीतगुणवालेके हैं। अन्यिलग अर्थात त्रिलिंगी हैं। इनका लिंग विशेष्यके अनुसार होता है ॥ १९ ॥ भूव, औत्तानपादि ये दो (पु॰) नाम उत्तानपादके पुत्रके हैं । अगस्त्य, कंभसंभव, भेत्रावरुणि ये तीन (पु॰) नाम अगस्त्यमुनिके हैं । लोपामुद्रा यह एक (स्त्री॰) नाम अगस्त्यकी समानधर्मवाली स्त्रीका है ॥२०॥ नंसत्र (न॰), भ (न॰), ऋक्ष (न॰), तारा (स्त्री॰), तारका (स्त्री॰), उहु ये छः नाम नक्षत्रके हैं। तहां उडुशब्द (स्त्री॰ न॰) है। अश्विनीनक्षत्रसे आदि हे रेवतीपर्यंत दाक्षायणी नामसे प्रसिद्ध हैं। अश्वयुज् (जान्त), अधिनी ये दो (स्री॰) नाम अधिनीके हैं ॥ २१ ॥ राधा, विशासा ये

मृगशीर्षं मृगशिरस्तिस्मन्नेवामहायणी ।
इल्वछास्तिच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पतिधिषणो गुरुः ।
जीव आङ्किरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखणे गुरुः ॥ २४ ॥
गुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भागवः कविः ।
अङ्कारकः कुजो भीमो लोहिताङ्को महीसुतः ॥ २५ ॥
रीहिणयो बुधः सीम्यः समी सीरिशनश्चरी ।
तमस्तु राहुः स्वभीनुः सैंहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥
सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिसंडिनः ।
राशीनामुद्यो लमं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥
सुरसूर्यार्यमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
भास्कराहस्करब्रध्रमभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥

दो (स्त्री ॰) नाम विशाखाके हैं । सिध्य, तिप्य, पुष्य ये तीन (पु॰) नाम पुष्यके हैं। अविष्ठा, धनिष्ठा ये दो (स्त्री॰) नाम धनिष्ठाके हैं। अविष्ठाके तुल्य है। प्रोष्ठपदा, भाद्रपदा ये दो (स्त्री) नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्त-राभाद्रपद्के हैं ॥ २२ ॥ मृगर्शार्ष (न०), मृगशिरम् (सान्त न०), आग्रहायणी (स्त्री) ये तीन नाम मृगशिरके हैं । इल्वला एक (स्त्री) नाम मगशीरके शिरके देशमें रहनेवाले पांच तारीका है ॥ २३॥ बृहस्पति, सुराचार्य, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आंगिरसः वाचस्पति, चित्रशिखंडिज ये नव (पु॰) नाम बृहस्पतिके हैं ॥ २४ ॥ शुक्र, दैत्य, गुरू, काव्य, उज्ञनस् (सान्त), भागव, कवि ये छः(पु॰)नाम शुक्रके हैं। अंगारक, कुज, माम, लोहितांग, महीसुत ये पांच (पु॰) नाम मंगलके हैं ॥ २५॥ राहिणेयः, बुधः, सीम्य य तीन (पु०) नाम बुधके हैं । सीरिः, इनिश्चर ये दां (पु॰) नाम श्रानिक हैं। तमस् (सान्त), राहु, स्वर्भानु, सिंहिकेय, वि भुंतुद् ये पांच नाम राहुके हैं। तहां तमस् शब्द (न०) है। शेष (पु०) हैं ॥२६॥ चित्रशिखंडिन यह एक (इत्रन्त पु॰) नाम मरीचि, अंगिरस : आत्रे, पुरुस्त्य, पुरुह, ऋतु, विसिष्ठ इन सप्तऋषियोंका है। स्त्र यह एक (न॰) नाम मेष, वृष, भिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुल, वृश्विक, धन, मकर, कुंभ, मीन इन राशियोंके उद्यका है ॥२७॥ सूर, सूर्य्य, अर्थमन् (नान्त),

भारवद्भिवस्वत्सप्ताश्वहारिदश्वोष्णरञ्मयः। विकर्त्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानविरोचनः । विभावस्त्रप्रेइपतिस्तिवषांपतिरहपेतिः ॥ ३०॥ भानुईसः सहस्रांश्रस्तपनः सविता रविः । 4 पद्माक्षरतेजसांराशिङ्खायानायस्तमिस्रहा । कर्मसाक्षी जगचक्षुर्छोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥ प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो छोकबान्धवः । इनो भागो धामनिधिश्चांशुमाल्यन्जिनीपृतिः॥ ग माठरः पिङ्गलो दंडश्वण्डांशोः पारिपार्थकाः ॥ ३१ ॥ सुरसूतोऽहणोऽनूरुः काश्यपिर्गहडायजः । परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यक्रमण्डले ॥ ३२ ॥ किरणोस्त्रमयुखांशुगभस्तिष्टणिरइमयः । भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोदींधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥ स्यः प्रभा रुप्रचिरित्वह् भा भारखविद्यतिदीसयः । रोचिः शोचिरुभे छीबे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३८ ॥

आदित्य, द्वाद्शात्मन् (नान्त), द्विवाकर, भारकर, अहस्कर, ब्रम्न, प्रभाकर, विभाकर ॥ २८ ॥ भारवत् (तांत), विवस्वत् (तांत), सप्तान्ध्र, हरिदश्व, उष्णरिश्म, विकर्तन, अर्क, मार्तण्ड, मिहिर, अरुण, पूषन् (नांत) ॥ २९ ॥ द्युमणि, तरणि, मित्र, चित्रभानु, विरोचन, विभावसु, ग्रहपति, त्विषांपति, अहंपति ॥ ३० ॥ भानु, हंस, सहस्रांश्च, तपन, सिवतृ (ऋकारांत), रिव ये सैंतीस (पु॰) नाम मूर्य्यके हैं । माटर, पिंगल, दंड ये तीन (पु॰) नाम मूर्य्यके पास रहनेवालोंके हैं ॥ ३१ ॥ सूरमूत, अरुण, अनूरु, काश्यपि, गरुडायज ये पांच (पु॰) नाम सूर्यके सारियके हैं । परिवेष (पु॰), परिषि (पु॰), उपसूर्यक (न॰), मण्डल (न॰) ये चार नाम सूर्यके कुण्डलनाके हैं ॥३२॥ किरण, उस्न, मयूल, अंशु, गमित्त, शृणि, रिम, भानु, कर, मरीचि, दीधितिशब्द स्त्रीलिंग और श्लेष पुलिंग हैं । तहां मरीचिशब्द स्त्रीलिंग पुलिंग, दीधितिशब्द स्त्रीलिंग और श्लेष पुलिंग हैं ॥ ३३ ॥ प्रभा, रुच् (चान्त), रुचि, त्विष्

मुगशीर्षं मृगशिरस्तिस्मिन्नेवामहायणी ।
इत्वछास्तिच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः ॥ २३ ॥
बृहस्पतिः सुराचार्यो गीष्पितिधिषणो गुरुः ।
जीव आङ्किरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखणिडजः ॥ २४ ॥
शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भागवः कविः ।
अङ्कारकः कुजो भीमो लोहिताङ्को महीसुतः ॥ २५ ॥
रीहिणयो बुधः सौम्यः समौ सीरिशनैश्वरी ।
तमस्तु राहुः स्वभीतुः सैंहिकेयो विधुंतुदः ॥ २६ ॥
सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखंडिनः ।
राशीनामुदयो लग्नं ते तु मेषवृषादयः ॥ २७ ॥
स्रस्यूर्यार्थमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः ।
भासकराहस्करत्रप्रप्रभाकरविभाकराः ॥ २८ ॥

दो (स्त्री॰) नाम विशाखांके हैं । सिध्य, तिष्य, पुष्य ये तीन (पु॰) नाम पुष्पके हैं । अविष्ठा, धनिष्ठा ये दो (स्त्री॰) नाम धनिष्ठाके हैं। अविष्ठाके तुल्य है । प्रोष्ठपदा, भाद्रपदा ये दो (स्त्री॰) नाम पूर्वाभाद्रपद और उत्त-राभाद्रपदके हैं ॥ २२ ॥ मृगर्शार्ष (न॰), मृगशिरम् (सान्त न॰), आग्रहायणी (स्त्री॰) ये तीन नाम मृगशिरके हैं । इल्वला एक (स्त्री॰) नाम मगशीरके शिरके देशमें रहनेवाले पांच तारीका है ॥ २३॥ ब्रहस्पति, सुराचार्य, गीष्पति, धिषण, गुरु, जीव, आंगिरस, वाचस्पति, चित्रशिखंडिज ये नव (पु॰) नाम बृहस्पतिके हैं ॥ २४ ॥ शुऋ, दैत्य, गुरू, काव्य, डञ्जनस् (सान्त), भार्गव, कवि ये छः(पु॰)नाम शुक्रके हैं। अंगारक, कुज, माम, लोहितांग, महीसुत ये पांच (पु॰) नाम मंगलके हैं ॥ २५ ॥ राहिणेयः, बुधः, सीम्य य तीन (पु॰) नाम बुधके हैं । सीरिः, इनिश्चर ये दा (पु॰) नाम शनिके हैं। तमस् (सान्त), राहु, स्वर्भानु, सिंहिकेय, विः थुंतुद् ये पांच नाम राहुके हैं । तहां तमस् शब्द (न०) है । शेष (पु०) हैं ॥२६॥ चित्रशिखंडिन यह एक (इत्रन्त पु॰) नाम मरीचि, अंगिरस् आत्रि, पुरुस्त्य, पुरुह, ऋतु, विसिष्ठ इन सप्तऋषियोंका है। एम यह एक (न॰) नाम मेष, वृष, भिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुल, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन इन राशियोंके उद्यका है ॥२७॥ सूर, सूर्य्य, अर्थमन् (नान्त),

भारवद्भिवस्वत्सत्ताश्वहरिदश्वीष्णरव्ययः। विकर्त्तनार्कमार्त्तण्डमिहिरारुणपूषणः ॥ २९ ॥ द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुविरोचनः । विभावस्प्रेंद्रपतिस्तियगंपतिरहर्पतिः ॥ ३० ॥ भावुईसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः। " पद्माक्षरतेजसाराशिङ्खायानायस्तमिस्रहा । कमसासी जगबक्षकीकबन्धस्वयीतनः॥ प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो छोकबान्धवः । इनो भागो धामनिधिश्चांश्चमाल्यब्जिनीपतिः ॥ ७ माठरः पिङ्गलो दंडश्रण्डांशोः पारिपार्शकाः ॥ ३१ ॥ स्रस्तोऽहणोऽनुहः काश्यपिर्गह्डाग्रजः । परिवेषस्तु परिधिरुपसूर्यकमण्डले ॥ ३२ ॥ किरणोस्त्रमयुखांशुगभस्तिघृणिरदमयः। भानुः करो मरीचिः स्त्रीपुंसयोदीधितिः स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥ स्युः प्रभा रुयुचिस्तिबह् भा भारछविद्यतिदीतयः। रोचिः शोचिरुभे क्षीबे प्रकाशो द्योत आतपः ॥ ३४ ॥

आदित्य, द्वाद्शात्मन् (नान्त), दिवाकर, भास्कर, अहस्कर, क्रश्न, प्रभाकर, विभाकर ॥ २८ ॥ भास्वत् (तांत), विवस्तत् (तांत), सप्ताश्व, हरिद्श्व, उष्णरिश्म, विकर्तन, अर्क, मार्तण्ड, मिहिर, अरुण, पूषन्
(नांत) ॥ २९ ॥ द्युमणि, तरिण, मित्र, चित्रभानु, विरोचन, विभात्रसु, ग्रहपति, त्विषांपति, अहंपति ॥ ३० ॥ भानु, हंस, सहस्रांशु, तपन,
सिवतृ (ऋकारांत), रिव ये सैंतीस (पु॰) नाम सूर्य्यके हैं। माठर,
पंगल, दंड ये तीन (पु॰) नाम सूर्य्यके पास रहनेवालोंके हैं। ३१ ॥
सूरसूत, अरुण, अनूरु, काश्यिप, गरुडाग्रज ये पांच (पु॰) नाम सूर्य्यके
सारियके हैं। परिवेष (पु॰), परिषि (पु॰), उपसूर्यक (न॰), मण्डल
(न॰) ये चार नाम सूर्यके कुण्डलनाके हैं॥३२॥ किरण, उस्न, मयूस्त,
अंशु, गमस्ति, शृणि, रिश्म, भानु, कर, मरीचि, दीधितिश्चद् खीलिंग
किरणके हैं। तहां मरीचिश्चद् खीलिंग पुल्लिंग, दीधितिश्चद् खीलिंग
और श्लेष पुल्लिंग हैं॥ ३३॥ प्रभा, रुच् (चान्त), रुचि, तिष्टू

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्दति । तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्दनमृगतृष्णा मरीचिका॥३५॥ इति दिग्वर्गः क् अथ कास्त्रवर्गः ४।

कालो दिष्टोप्यनेहापि समयोप्यथ पक्षतिः । पतिपद्दे इमे स्त्रीत्वे तदाद्यास्तिथयो द्रयोः ॥ १ ॥ घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवसवासरी । प्रत्यूषोऽहर्भुखं कल्यमुषःप्रत्युषसी अपि ॥ २ ॥ " व्युष्टं विभातं द्रे क्लीबे पुंसि गोसर्गे इष्यते ।" प्रभातं च दिनान्ते तु सायंसंध्या पितृप्रसः । प्राह्मापराह्मध्याद्यास्त्रिसन्ध्यमय शर्वरी ॥ ३ ॥

(शंत), मास् (संत), छिनि, बिति, दीप्ति, रोचिस् (संत), शोचिस् (संत) ये ग्यारह नाम प्रभाके नाम हैं। इनमें प्रभासे दीप्तिशब्दतक स्ति। हिंग हैं। रोचिष् और शोचिष् शब्द (न०) हैं। प्रकाश, बोत, आतप ये तीन नाम (पु०) सूर्यकी घामके हैं। ३४ ॥ कोष्ण, कवोष्ण, मन्दोष्ण, कदुष्ण ये चार नाम अल्पगर्मके हैं। ये धर्ममें रूपभेदसे (न०) हिंग हैं। धर्मी अर्थात् धर्मवालेमें त्रिलिंगी हैं। तिग्म, तीक्ष्ण, खर ये तीन नाम अत्यंत गर्मके हैं। येभी धर्म में रूपभेदसे नपुंसकालिंग हैं और धर्मी अर्थात् धर्मवालोंमें त्रिलिंगी हैं। मृगतृष्णा, मरीचिका ये दो (खी०) नाम मृगजल अर्थात् मरुदेशमें फेली हुई रेतपर सूर्यकी किरणें पढ़नेसे जो अमरूप जलका आभास होता है उसके हैं। ३५॥ इति दिग्वर्गः।

अथ काल्रवर्गः। काल, दिष्ट, अनेहस् (सान्त), समय ये चार (पु॰) नाम काल्के हैं। पक्षति, प्रतिपद् (दांत) ये दो नाम पड-वाके हैं। प्रतिपद्से आदि तिथि कहाती हैं। पक्षति और प्रतिपद् शब्द (स्त्री॰) हैं। तिथिशब्द (स्त्री॰ और पु॰) है॥ १॥ वस्त्र (पु॰), दिन (न॰), अहन् (नांत न॰) दिवस, वासर ये पांच नाम दिनके हैं। तहां दिवस, वासर शब्द (पु॰ न॰) हैं। प्रत्यूष, अहर्भुख, कल्य, उषस् (सांत), प्रत्युषम् (सांत)॥२॥ प्रभात ये छः नाम प्रभातके हैं। प्रत्यूष (पु॰) है। शेष (न॰) हैं। साय निशा निशीशनी रात्रिस्तियामा सणदा सपा ।
विभावरीतमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी ॥ २ ॥
तमिस्रा तामसी रात्रिज्यौंत्स्री चिन्द्रिकयान्विता ।
आगामिवर्त्तमानाहयुक्तायां निशा पक्षणी ॥ ५ ॥
गणरात्रं निशा बह्वयः प्रदोषो रजनीमुस्तम् ।
अर्धरात्रनिशीयौ द्वौ द्वौ यामप्रहरी समी ॥ ६ ॥
स पर्वसन्धः प्रतिपत्पश्चदश्योयदन्तरम् ।
पक्षान्तौ पश्चदश्यौ द्वे पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥ ७ ॥
कल्लाहीने सानुमितः पूर्णे राका निशाकरे ।
अमावास्या त्वमावस्या दशैः सूर्येन्द्रसङ्गमः ॥ ८ ॥

(अव्यय), संध्या (स्त्री॰), पितृप्रसू (स्त्री॰) ये तीन नाम सायंकालके ँहैं । प्राण्ह, अपराण्ह, मध्यान्ह इन तीनोंको त्रिसंध्य कहते **हैं । प्राण्ह** यह एक (पु॰) नाम दिनके पूर्वभागका है। मध्यान्ह यह एक (पु॰) नाम दुपहरका है। अपराण्ह यह एक (पु॰) नाम दुपहर पीछेका है। रावेरी II ३ II निर्शा, निर्शिथनी, रात्रि, त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, वि-भावरी, तमस्विनी, रजनी, यामिनी, तमी ये बारह (स्त्री॰) नाम रात्रि-के हैं ॥ ४ ॥ तामिस्रा यह एक (स्त्री॰) नाम अंधेरी रात्रिका है । ज्योत्स्नी यह एक (स्त्री॰) नाम चंद्रमासे युक्त अर्थात् चांद्नीरात्रिका है। पक्षिणी यह एक (स्त्री॰) नाम पहले पिछले दिनसे युक्त हुई रात्रि-का है ॥ ५ ॥ गणरात्र यह एक (न॰) नाम बहुतसी रात्रियोंके समू हका है । प्रदोष (पु॰), रजनीमुख (न॰) ये दो नाम रात्रिके पूर्व-भागके हैं । अर्द्धरात्र, निर्शाथ ये दो (पु॰) नाम आधी रातके हैं । याम, प्रहर ये दो (पु॰) नाम प्रहरके हैं ॥ ६ ॥ फ्रीसंधि यह एक (पु॰) नाम प्रतिपदा और पंचदशीके अंतरका है। पक्षांत (पु॰), पञ्चदशी (स्त्री॰) ये दो नाम पक्षके अंतकी तिथिके हैं। पौर्णमासी, पूर्णिमा ये दो (स्त्री॰) नाम पूर्णमासीके हैं ॥ ७ ॥ अनुमति यह एक (स्त्री॰) नाम कलाहीन चंद्रमायुक्त पौर्णमासीका है। राका यह एक (स्त्री॰) नाम पूर्णचंद्रमायुक्त पार्णमासीका है। अमावास्या (स्त्री॰), अमावस्या (র্ন্সা॰), दर्श (पु॰), सूर्येंदुसंगम (पु॰) ये चार नाम अमावसके हैं ॥ ८ ॥ सा दृष्टेन्द्वः तिनीवाळी सा नृष्टेन्द्वकळा कुद्वः । उपरागो ग्रहो राहुग्रस्ते त्विन्द्वौ च पूष्णि च ॥ ९ ॥ सोपप्रवोपरक्ती द्वावस्युत्पात उपाहितः । एकयोक्त्या पुष्पवन्ती दिवाकरिनशाकरी ॥ १० ॥ अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा त्रिशस्त्र ताः कळा । तास्तु त्रिशस्त्रणस्ते तु मुद्दती द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥ ते तु त्रिशस्त्रणस्ते तु मुद्दती द्वादशास्त्रियाम् ॥ ११ ॥ ते तु त्रिशस्त्रणस्ते स्थादतुस्तिरयनं त्रिभः । ध्वो द्वी मार्गोदिमासी स्यादतुस्तिरयनं त्रिभः । अयने द्वे गतिरुद्दिश्वणार्कस्य वत्सरः ॥ १३ ॥ समरात्रिन्दिवे काळे विषुवद्विषुवं च तत् । " पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा ।

सिनीवाली यह एक (स्त्री॰) नाम चन्द्रमा जिसमें दिखाई दे उस अमा-वसका है। और कुहू यह एक (स्त्री॰) नाम जिसमें चंद्रमा नहीं दीखे उस अमावसका है। उपराग, यह ये दो नाम राहुसे किये गये चंद्रमा और सूर्यके ग्रासके हैं ॥ ९ ॥ सोपप्छव, उपरक्त ये दो नाम राहुसे ग्रस्त हुए चंद्रमा और सूर्यके हैं । ये चारों (पु॰) नाम हैं। अग्न्युत्पात. उपाहित ये दो (पु॰) नाम अग्निकृत उत्पातके हैं। पुष्पवन्त यह एक (90) नाम एक युक्ति करके अर्थात दोनोंको एक साथ कहनेसे सूर्य चंद्रमाका है ॥ १० ॥ आंखके मीचने और खोछनेका नाम निमेष है । अठारह निमेषका नाम काष्टा (स्त्री॰) है। तीस काष्टाओंका नाम एक कला (स्त्री॰) है। तीस कलाओंका नाम एक क्षण (पु॰) है। बारह क्षणों-का नाम मुहूर्त्त है। और मुहूर्त्तशब्द (पु॰न॰) है ॥११ ॥ तीस मुहूर्त्ती-का एक अहोरात्र अर्थात् दिनरात्रि होती है। पंद्रह अहोरात्रका पक्ष होता है। महीनेका पूर्वपक्ष शुक्र है और परपक्ष कृष्ण है। और दोनों फ्लोंका मास अर्थात् महीना होता है ॥ १२ ॥ मगिहार आदि दो दो भासींका ऋत होता है। (मूलमें जो माघसे दो दो मासींकी गणना है वह केवल अयनारम्भके वरासे है) । तीन ऋतुओंका अयन होता है । अयन दो प्रकारका है । उत्तरायण और दक्षिणायन इन दोनी अपनींका वर्ष होता है ॥ १३ ॥ विषुवत (तान्त), विषुव ये दो

नामा स पौषो प्राघाद्याञ्चैवमेकादशापरे ॥ ११ ॥
पौषे तेषसहस्यो द्वौ तपा माघेऽथ फाल्युने ।
स्यात्तपस्यः फाल्युनिकः स्याञ्चेत्रे चेत्रिको मधुः ॥ १५ ॥
वैशाखे माधवो राघो ज्येष्ठे शुक्रः शुचिस्त्वयम् ।
आषाढ श्रावणे तु स्यात्रमाः श्रावणिकश्च सः ॥ १६ ॥
स्युनेभस्यप्रौष्ठपदभाद्रभाद्रपदाः समाः ।
स्यादाश्विन इषोप्याश्वयुजोऽपि स्यात्त कार्तिके ॥ १७ ॥
बाहुलोजीं कार्तिकिको हेमन्तः शिशिरोऽश्चियाम् ।
वसन्ते पुष्पसमयः सुरिभित्रीष्म ऊष्मकः ॥ १८ ॥
निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।
श्चियां प्रावृद् श्चियां भूम्नि वर्षा अथ शरत् श्चियाम् ॥ १९ ॥

(न॰) नाम समान रात्रिद्निवाछे काछ अर्थात् मेष-तुलाकी संक्रांतिके काछके हैं। मार्गशिष, सहस् (सान्त), मार्ग, आग्रहायणिक ये चार (पु॰) नाम मगिश्तिके हैं। १८॥ पीष, तैष, सहस्य ये तीन (पु॰) नाम पीषके हैं। तपस् (सान्त), माघ ये दो (पु॰) नाम माघके हैं। फाल्गुन, तपस्य, फाल्गुनिक ये तीन (पु॰) नाम फाल्गुनके हैं। चेन्न, चीन्नक, मधु ये तीन (पु॰) नाम चैतके हैं। १९॥ वैशास्त, माघव, राघ ये तीन (पु॰) नाम वैशासके हैं। ज्येष्ठ, शुक्र ये दो (पु॰) नाम जेठके हैं। शुचि, आषाढ ये दो (पु॰) नाम आषाढके हैं। श्रावण, नमस् (सान्त), श्रावणिक ये तीन (पु॰) नाम आषाढके हें। श्रावण, नमस् (सान्त), श्रावणिक ये तीन (पु॰) नाम आवणके हें। श्रावण, नमस्य, प्रोष्ठपद, भाद्र, माद्रपद ये चार (पु॰) नाम आवणके हें। शास्त्रन, इष, आश्रयुज ये तीन (पु॰) नाम आश्रयजके हैं। कार्तिक ॥ १७॥ बाहुछ, उर्ज, कार्तिकिक ये चार (पु॰) नाम कार्तिकके हैं। हेमंत यह एक ऋतु है। शिश्ति यह एक ऋतु है। हेमंत स्वर्ध भारतिक हैं। श्रावण, उष्ण्यानम, तथे सात (पु॰) नाम ग्रीष्म सहके हैं। हेमंत स्वर्ध भाव पु॰, उष्ण्यानम, तथे सात (पु॰) नाम ग्रीष्म सहके हैं। ग्रावण, उष्ण्यानम, तथे सात (पु॰) नाम ग्रीष्म सहके हैं। ग्रावण, वष्ण, उष्ण्यानम, तथे सात (पु॰) नाम ग्रीष्म सहके हैं। ग्रावण, वष्ण, उष्ण्यानम, तथे सात (पु॰) नाम ग्रीष्म सहके हैं। नाम वर्षत्तऋतुके हैं। तहां प्रावट्शन्द काराज़त (स्त्रि॰) है। और वर्षाश्रव्य

पडमी ऋतवः पुंसि मार्गोदीनां युगैः क्रमात् ।
संवत्सरो वत्सरोऽन्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः ॥ २० ॥
मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रो वर्षेण दैवतः ।
दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥ २१ ॥
मन्वन्तरं तु दिन्यानां युगानामेकसप्ततिः ।
संवत्तेः प्रख्यः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ २२ ॥
अस्त्री पङ्कं पुमान् पाप्मा पापं किल्विषकल्मषम् ।
कल्लुषं वृजिनेनोघमंहो दुरितदुष्कृतम् ॥ २३ ॥
स्याद्यमेमस्त्रियां पुण्यश्रेयसी सुकृतं वृषः ।
मुत्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोदसंमदाः ॥ २४ ॥

(स्त्री॰) और नित्य बहुक्चनांत है। शरद् (दान्त) यह एक नाम शरद ऋतुका है और ख्रींहिंग है ॥ १९ ॥ मगशिर आदि दो दो मही-नोंके क्रमसे ये छः ऋतु हैं और ऋतुराब्द (पु॰) है। संवत्सर, वत्सर, अब्द, हायन, शरदू, समा ये छः नाम वर्षके हैं। तहां हायनशब्द (पुः न॰) है। शरत (स्त्री॰) है। समाशब्द स्त्रीलिंग बहुवचनांत है। शेष प्रक्रिंग हैं ॥ २० ॥ मनुष्योंके एक महीनेसे पितरोंका एक दिनरात्रि होता है। तहां कृष्णपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें दिनका आरम्भ होता है और शुक्रपक्षकी अष्टमीके उत्तरार्द्धमें रात्रिका आरम्भ होता है । मनुष्योंके एक वर्षमें देवताओंका दिनरात्रि होता है। उत्तरायण दिन है, दक्षिणायन रात्रि है और मनुष्योंके कृतयुगआदि चौकडी देवताओंका एक युग होता है । इस प्रकार देवताओंके दो हजार युगका ब्रह्माका एक दिनरात्रि होता है । ब्रह्माके दिनमें संसारकी स्थिति है और ब्रह्माजीकी रात्रिमें प्रख्यकाल होता है। ऐसे देवताओंके दो हजार युगमें मनुष्योंकी स्थिति और प्रख्य होता है ॥२१॥ देवताओंके ७१ युगोंका एक मन्वंतर होता है । संवर्त्त, प्रस्था, कल्प, क्षय, कल्पांत ये पांच (पु॰) नाम प्रस्थके हैं ॥ २२ ॥ पंक, पाप्मन् (नांत), पाप, किल्बिष, कल्मष, कल्लूष, वृजिन, एनस् (स्रोत), अव, अंहस्, (स्रांत), दुरित, दुष्कृत ये बारह नाम पाफो हैं। तहां पाप्मनशब्द (पु॰) है । पंक शब्द (पु॰ न॰) है । और सब छीब हैं ॥ २३ ॥ धर्म, पुण्य, श्रेयस् (सांत), सुकृत, वृष ये पांच नाम धर्मके

स्यादानन्द्युरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।

शःश्वेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मंगछं शुभम् ॥ २५ ॥

भावुकं भिवकं भव्यं कुशछं क्षेममिश्चयाम् ।

शस्तं चाय त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥ २६ ॥

मताछिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतछुजौ ।

प्रशस्तवाचकान्यमून्ययः शुभावहो विधिः ॥ २७ ॥

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिविधिः ।

हेतुनी कारणं बीजं निदानं त्वोदिकारणम् ॥ २८ ॥

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

विशेषः काछिकोऽवस्या गुणाः सन्त्वं रजस्तमः ॥ २९ ॥

हैं। इनमें धर्मशब्द (पु॰ न॰), वृष (पु॰), शेष (न॰) छिंग हैं। पुण्यशब्द जन विशेषण होता है तन इसका छिंग विशेष्यके समान होता हैं। मुद् (दांत), प्रीति, प्रमद, हर्ष, प्रमोद, आमोद, संमद् ॥ २४ ॥ आनंद्यु, आनंद्, शर्मन् (नांत), शात, सुख ये बारह नाम सुखके हैं। इनमें मुद् और प्रीतिशब्द स्त्रीिंस्य हैं । शर्मन्, शात, मुख (न॰), शेष (पुः) हैं। श्वःश्रेयस, शिव, भद्र, कल्याण, मंगल, शुभ ॥ २५ ॥ भावक, भविक, भव्य, कुशुल, क्षेम, शस्त ये बारह नाम कल्याणमात्रके हैं। तहां क्षेम और इस्त २ाव्द (पु॰न॰) हैं। पाप-पुण्यशब्द और सुखादिशब्द (श्वःश्रेयससे लेके शस्तपर्यंत शब्द) विशेष्यके साथ आनेसे वाच्य छिंग अर्थात् तीनों छिंग हैं। जैसे-'पापा स्त्री, पाषः पुमान, पापं कुछम् ग इन वचनोंमें स्त्रीहिंग, पुष्टिंग और नपुंसकरिंग हैं ॥ २६ ॥ मतक्षिका (स्त्री॰), मचिका (स्त्री॰), प्रकांड (पु॰), उद्घ (पु॰), तहुज (पु॰) ये पांच नाम प्रशास्तवाचक हैं । जैसे-'प्रशास्ता ब्राह्मणाः ब्राह्मण-मतिष्ठका भादि जानने । अय यह एक (पु॰) नाम ग्रुभको उत्पन्न करनेवाले देव अर्थात भाग्यका है ॥ २७ ॥ देव, दिष्ट, भागधेय, भाग्य, नियति, विधि ये छः नाम पूर्वजन्मके कर्मके हैं। यहां नियतिशब्द (स्त्री०) हैं । विधिज्ञब्द (पु॰) और ज्ञेष (न॰) छिंग हैं । हेतु, कारण, बीजये नाम कारणके हैं। इनमें हेतुशब्द (पु॰), देाष (न॰) है। निदान यह एक (न॰) नाम आदिकारणका है ॥ २८ ॥ क्षेत्रज्ञ, आत्मन् (नान्त), पुरुष ये

जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्यसिरद्भवः । प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुजन्युशरीरिणः ॥ ३०॥ जातिजीतं च सामान्यं व्यक्तिस्तु पृथमात्मसा । चित्तं तु चेतो इदयं स्वान्तं इन्मानसं मनः ॥ ३१॥

> ॥ इति कालवर्गः ॥ ४ ॥ अथ घीचर्गः ५ ।

बुद्धिर्मनीषा घिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
प्रेक्षोपछिव्धिश्चित्संवित्प्रतिषज्ज्ञतिचेतनाः ॥ १ ॥
धीर्धारणावती मेघा सङ्कल्पः कम्मे मानसम् ।
" अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च । "
चित्ताओगो मनस्कारश्चर्चा संख्या विचारणा ॥ २ ॥

तीन (पु॰) नाम जारीरके अधिदैवतके हैं । प्रधान (न॰), प्रकृति ये दो नाम सत्त्वआदि गुणींकी साम्यअवस्थाके हैं। प्रकृतिशब्द स्त्रीलिंग है। अवस्था यह एक (स्त्री॰) नाम कालकृत योवन आदि विशेषका है। सत्त्व, रजस् (सान्त), तमस् (सान्त) ये तीन (न॰) नाम गुणोंके हें ॥ २९ ॥ जनुस् (सान्त न०), जनन (न०), जन्मन् (नान्त न०), जिन (स्त्री॰) उत्पत्ति (स्त्री॰), उद्भव (पु॰) ये छः नाम जन्मके हैं । प्राणिन (इक्नत), चेतन, जन्मिन (इक्नत), जन्त, जन्य, शरीरिन (इन्नन्त) ये छः नाम प्राणिके हैं॥ ३०॥ जाति (स्त्री०), जात (न•), सामान्य (न॰) ये तीन नाम घट आदि जातिके हैं । व्यक्ति, पृथगारमता ये दो (स्त्री॰) नाम घट आदि व्यक्तिके हैं। चित्त, चेतस (सान्त), इद्य, स्वान्त, इद् (दान्त), मानस, मनस् (सान्त) ये सात (न०) नाम मनके हैं ॥ ३१ ॥ ॥ इति कालवर्गः ॥ ४ ॥ अथ धीवर्गः । बुद्धि, मनीषा, धिषणा, धी, प्रज्ञा, देश्युषी, मति, प्रक्षा, उपलब्धि, चिंदू, संविद् (दान्त), प्रतिपद् (दान्त), ज्ञप्ति, चेतना ये चौदह (स्त्री॰) नाम बुद्धिके हैं ॥ १ ॥ मेघा यह एक (स्त्री॰) नाम धारणा-बाली बुद्धिका है। संकल्प यह एक (पु॰) नाम मनके व्यापारका है। अवधान, समाधान, प्रणिधान ये तीन (न॰) नाम समाधानके हैं। चित्ताभोग, मनस्कार ये दो (प्र॰) नाम सुख आदिमें तत्पर मनके हैं ।

"विमशों भावना चैव वासना च निगद्यते।"
अध्याहारस्तर्के उद्दो विचिकित्सा तु संभयः।
संदेहद्वापरी चाथ समी निर्णयनिश्वयी॥ ३॥
मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादो द्रोहचिन्तनम्।
समी सिद्धान्तराद्धान्ती श्रांतिर्मिथ्यामितिश्रेमः॥ ४॥
संविद्यायः प्रतिकानं नियमाश्रवसंश्रवाः।
अङ्गीकाराभ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः॥ ५॥
मोक्षे धीर्शानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।
मुक्तिः कैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम्॥ ६॥
मोक्षोऽपवर्गोऽथाज्ञानमविद्याहंमतिः स्त्रियाम्।
क्रं शब्दो गंधरसस्पर्शाश्च विषया समी॥ ७॥

चर्चा, संख्या, विचारणा ये तीन (स्त्री॰) नाम प्रमाणांकरके अर्थकी परीक्षांके हैं ॥२॥ विमर्श (पु॰), भावना, वासना (दो स्त्री॰) ये तीन नाम वासनाके हैं। अध्याहार, तर्क, ऊह ये तीन (पु॰) नाम तर्कके हैं। विचि-कित्सा (स्त्रीः), संशय (पु॰), सन्देह (पु॰), द्वापर (पु॰) ये चार नाम संज्ञायज्ञानके हैं । निर्णय, निश्चय ये दो (पु॰) नाम निर्णयके हैं ॥३ (मिथ्यादृष्टि, नास्तिकता प्रे दो(स्त्री॰) नाम नास्तिकपनेके हैं। व्यापाद (पु॰), द्रोहचितन (न॰) ये दो नाम परद्रोहचितनके हैं। सिद्धांत, राद्धान्त ये दो (पु॰) नाम सिद्धान्तके हैं । श्रान्ति (स्त्री॰), भिष्या-मति (स्त्री॰), अम (पु॰) ये तीन नाम अमके हैं ॥ ४ ॥ संवित, आग् , प्रतिज्ञान, नियम, आश्रव, संश्रव, अंगीकार, अभ्युपगम, प्रतिश्रव, समाधि ये दश नाम अंगीकारके हैं। इनमें संवित और आगू (स्त्री॰), प्रतिज्ञान (न॰) और शेष (पु॰) हैं ॥ ५ ॥ ज्ञान यह (न॰) नाम मोक्षमें बुद्धिका है । विज्ञान यह (न॰) नाम शिल्प और अन्यशास्त्रमें जो बुद्धि है उसका है। मुक्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस् (सान्त), निःश्रे-यस् (सान्त), अमृत ॥ ६ ॥ मोक्ष, अप्वर्ग ये आठ नःम मोक्षके हैं। तहां मुक्ति (स्त्री॰), मोक्ष, अपवर्ग (पु॰), शेष (न॰) हैं । अज्ञान (न॰), अविद्या, अहंमति ये तीन नाम अज्ञानके हैं। तहां अविद्या, अहंमतिशब्द ख्रीलिंग हैं। रूप (न०), शब्द (पु०), गंध (पु०), गोचरा इन्द्रियार्थाश्च इषीकं विषयीन्द्रियम् । कर्मेन्द्रियं तु पाट्यादि मनोनेत्रादि धीन्द्रियम् ॥ ८ ॥ तुवरस्तु कषायोस्त्री मधुरो छवणः कटुः । तिक्तोम्छश्च रसाः पुंसि तद्वत्सु षडमा त्रिषु ॥ ९ ॥ विमद्वित्ये परिमछो गन्धे जनमनोहरे । आमोदः सोऽतिनिहीरी वाच्यिछंगत्वमाग्रणात् ॥ १० ॥ समाकर्षी तु निहीरी सुरभित्रीणतर्पणः । इष्टगन्धः सुगन्धः स्यादामोदी मुखवासनः ॥ ११ ॥ पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धो विस्तं स्यादामगन्धि यत् । शुक्कगुश्चशुच्थितविशदद्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥ शुक्कगुश्चशुच्थितविशदद्येतपाण्डराः ॥ १२ ॥

रस (पु॰), स्पर्श (पु॰) ये पांच विषय हैं ॥ ७ ॥ गोचर (पु॰) इन्द्रि-यार्थ (पु॰) इन नामोंसे वे प्रसिद्ध हैं । हृषीक विषयिन, इन्द्रिय ये तीन (न॰) नाम चक्षुआदि इन्द्रियके हैं। तहां गुदा, छिंग, हाथ, पर, वाणी ये कम्मेनिद्रय हैं । मन और नेत्र आदि ज्ञानेन्द्रिय कहाते हैं ॥ ८ ॥ तुवर, कषाय, मधुर, छवण, कट्ट, तिक्त, अम्छ ये छः रसवाचक शब्द (पु॰) हैं। कषायशब्द (पु॰न॰), शेष (पु॰) हैं। ये शब्द रसवानों में वर्त्त-मान हो तो त्रिलिंगी हैं। तहां तुबरज्ञब्द हरड आदिमें प्रसिद्ध है। मधुर रस जल आदिमें प्रसिद्ध है। छत्रण रस संधा आदिमें प्रसिद्ध है। कटुरस मरीच आदिमें प्रसिद्ध है। तिक्तरस नींब आदिमें प्रसिद्ध है। अम्लरस अमछी आदिमें प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥ परिमल यह (पु॰) नाम संवर्षण आदिसे उत्पन्न और मनोहारी गंधका है। आमोद यह (पु॰) नाम अत्यंत समाकर्षवाले गंधका है । इससे आगे ' गुणे शुक्रादयः ' इस पर्यंत नक्ष्यमाण (जो आगे कहे जायंगे) ज्ञब्द त्रिलिंगी हैं। कस्त्रीमें आमोद गंध है । कपूरमें मुखवासन गंध है । बकुलमें परिमल गंध है । चंपा आ-दिमें सुराभिगंध है ॥१०॥ समाकर्षिन् (इन्नन्त), निर्हारिन् (इन्नन्त) ये दो (पु॰) नाम दूर जानेवाले गंधके हैं । सुरभि, ब्राणतर्पण, इष्टगंध, सुगन्धि ये चार (पु॰) नाम सुन्दर गंधके हैं । आमोदिन (इन्नन्त), मुखवासन ये दो (पु॰) नाम ताम्बूल आदि गंधके हैं ॥ ११ ॥ पूतिगंध, द्वरीध १ यह शब्द जब दींघे ईकारान्त होता है तब स्नीलिंग है।

अवदातः सितो गौरोऽवल्क्षो घवलोऽर्जुनः ।

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुरीषत्पाण्डुस्तु घूसरः १३ ॥
कृष्णे नीलासितश्यामकालश्यामलमेचकाः ।
पीतो गौरो हरिद्राभः पालाशो हरितो हरित् ॥ १४ ॥
रे।हितो लोहितो रक्तः शोणः कोकनदच्छविः ।
अञ्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥ १५ ॥
श्यावः स्यात्किपशो धूम्रधूमली कृष्णलोहिते ।
कहारः किपलः पिंगपिशंगो कहुपिंगली ॥ १६ ॥
चित्रं किमीरकल्माषशबलैताश्च कर्बुरे ।
गुणे शुक्कादयः पुंसि गुणिलिंगास्तु तद्वति ॥ १७ ॥
इति धीवर्गः ५ ।

ये दो (पु॰) नाम दुष्टगंघके हैं । विस्न, आमगंधि य दो (न॰) नाम कची गांधिके हैं अर्थात विना को हुए मांस आदिके हैं। शुक्क, शुभ्र, शुचि, श्वेत, विराद, श्येत, पांडर ॥ १२ ॥ अवदात, सित, गौर, अवलक्ष, धवल, अर्जन ये तेरह नाम सुपेद रंगके हैं । हरिण, पांडर, पांड ये तीन नाम पीलेसे मिले हुए सुपेदरंगके हैं । ईषत्पांह, धूसर ये दो नाम अल्फ्बेत रं-गके हैं ॥ १३ ॥ कृष्ण, नील, असित, श्याम, काल, श्यामल, मेचक ये सात नाम नी छे आदि रंगके हैं। पीत, गीर, हरिद्राभ ये तीन नाम पीछे रंगके हैं । पालाश, हरित, हरित ये तीन नाम हरे रंगके हैं ॥ १४ ॥ छोहित, रोहित, रक्त ये तीन नाम छाछ रंगके हैं। शोण यह एक नाम लाल कमलके समान रंगका है। अरुण यह एक नाम थोडे लालरंगका है। पाटल यह नाम सुपेद और लाल मिले हुए अर्थात गुलाबी रंगका है॥१५॥ श्याव, किपरा ये दो नाम धूसर अरुण अर्थात वानरकेसे रंगके हैं। धूम्र, भूमल, कृष्णलोहित ये तीन नाम कालेसहित लाल रंगके हैं। कडार, कपिल, पिंग, पिशंग, कद्म, पिंगल, ये छः नाम पिंगल (पीले) वर्णके हैं ॥ १६ ॥ चित्र, किमीर, करमाप, ज्ञाबरू, एत, कर्बुर ये छः नाम विचि-त्रवर्णके हैं। गुणमात्रमें शुक्क आदि शब्द पुष्टिंग हैं और गुणवाछोंमें त्रि-िलंगी हैं। जैसे ' शुक्का शाटी, शुक्कः पटः, शुक्कं वस्त्रम् ' इन वचनोंमें तीनों इति धीवर्गः ॥ ५ ॥ लिंग हैं ॥ १७ ॥

अथ दाब्दादिवर्गः ६।

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।
व्याहार उक्तिर्छिपतं भाषितं वचनं वचः॥१॥
व्याहार उक्तिर्छिपतं भाषितं वचनं वचः॥१॥
व्याहार उक्तिर्छिपतं भाषितं वचनं वचः॥१॥
व्यामुंद्रोऽपशब्दः स्याच्छास्त्रे शब्दस्तु वाचकः।
तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं किया वा कारकान्विता॥२॥
श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी धर्मस्तु तिद्विधिः।
स्त्रियामुक् सामयजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी॥३॥
शिक्षेत्यादि श्रुतेरंगमोंकारप्रणवी समी।
इतिहासः पुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः॥४॥
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः।

आख्यायिकोपलन्धार्थी पुराणं पश्चलक्षणम् ॥ ५ ॥

अथ शब्दादिवर्गः । ब्राह्मी, भारती, भाषा, गिर्, वाच् (चान्त), वाणी, सरस्वती ये सात (स्त्री॰) नाम सरस्वतीके हैं। व्याहार (प्र०), **उक्तिः** (स्त्री॰), रुपित (न॰), भाषित (न॰), वचन (न॰), वचम् (सान्त न॰) ये छः नाम वचनके हैं ॥ १ ॥ अपज्ञब्द यह एक (पु॰) नाम अपभ्रंशशब्दका है। व्याकरण आदिमें जो वाचक है वह शब्द कहाता है । तिडन्त सुबन्त पदोंका समूह वाक्य कहाता है । जैसे-'१चित भवति, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् १ यह वाक्य है । अथवा कारकों-करके क्रिया वाक्य कहाती है। जैसे-' देवदत्त गाममिरक्ष शुक्कदंडेन ग्यह वाक्य है ॥ २ ॥ श्रुति, वेद (पु॰), आम्नाय (पु॰) ये तीन नाम वेदके हैं। तहां श्रुतिशब्द स्त्रीलिंग है। धर्म यह एक (पु॰) नाम वैदिक विधि यज्ञ आदिका है। ऋच् (चान्त), सामन् (नान्त न०), यज्ञषु (षान्त न०) इन तीन वेदोंके समहको त्रयी कहाते हैं।तहां ऋचुशब्द (स्त्री॰) है ॥ ३ ॥ शिक्षा, करप, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द ये ्सब वेदके अंग हैं । अंगशब्द (न॰) है । छः अंग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण ये चौदह विद्या हैं। ऑकार, प्रणव ये दो (पु॰) नाम ओंकारके हैं । इतिहास (पु॰), पुरावृत्त (न॰) ये दो नाम भारत आदि पूर्वचरितके हैं। उदात्त, अनुदात्त, स्वरित ये तीन स्वर कहाते हैं ॥ ४ ॥ आन्वीक्षिकी (स्त्री॰) यह एक नाम गौत- प्रवन्धकल्पना कथा प्रविका प्रहेलिका ।
स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहितस्तु संग्रहः ॥ ६ ॥
समस्या तु समासाथा किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्याद्याद्वयः ॥ ७ ॥
आख्याह्व अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।
हितराकारणाह्वानं संहृतिर्वहुभिः कृता ॥ ८ ॥
विवादो व्यवहारः स्यादुपन्यासस्तु वाङ्गुखम् ।
उपोद्दात उदाहारः शपनं शपथः पुमान् ॥ ९ ॥

मप्रणीत तर्कविद्याका है। दंडनीति यह एक (स्त्री॰) नाम बृहस्पति आदि प्रणीत अर्थ-नीतिशास्त्रका है । आख्यायिका, उपरुब्धार्थी ये दो (स्त्री॰) नाम वासवदत्ता आदि ग्रंथके हैं। पुराण यह एक (न॰) नाम सर्ग, प्रतिसर्ग, वंदा, मन्वंतर, वंश्यानुचरित इन पांच रूक्षणोंसे युक्तका है ॥ ५ ॥ कथा यह एक (स्त्री॰) नाम वाक्यके विस्तारकी रचनाका है। प्रवल्हिका, प्रहेलिका ये दो (स्त्री॰) नाम पहेलीके हैं। रमृति यह एक (स्त्री॰) नाम धर्मके बोधके लिये रची हुई संहिताका है। समाहति (स्त्री॰), संग्रह (पु॰) ये दो नाम संग्रहग्रंथके हैं ॥ ६ ॥ समस्या यह एक (स्त्री॰) नाम कविकी शक्तिकी परीक्षाके अर्थ किसी श्लोक वा कवित्तके संकेत देनेका है। किंवदंती, जनश्रुति ये दो (स्री०) नाम लोक प्रवादके हैं। वार्ता (स्त्री॰), प्रवृत्ति (स्त्री॰), वृत्तान्त (पु॰), खदंत (पु॰) ये चार नाम लोकवृत्तान्त कथनके हैं । आह्रय (पु॰)॥७॥ आख्या (स्त्री॰), आह्वा (स्त्री॰), अनिधान (न॰), नामधेय (न॰), नामन् (नान्त न॰) ये छः नाम नामके हैं । इति (स्त्री॰), आकारणा (ন্ত্রী০), आह्वान (ন০) ये तीन नाम आह्वान अर्थात् बुटानेके हैं। संद्वति यह एक (स्त्री॰) नाम बहुतोंसे मिलके बुलानेका है ॥ ८॥ विवाद, व्यवहार ये दो (५०) नाम कर्जा आदिके निमित्त अनेक प्रका-रके विवादके हैं। उपन्यास (पु॰), वाइमुख (न॰) ये दो नाम वचनके आरंभके हैं। इपोद्घात, उदाहार ये दों (पु॰) नाम प्रवृताकि दिके किये हुए चिन्तवनके हैं। शान (न०), शाथ ये दो नाम कसम

प्रश्नोनुयोगः पृच्छा च प्रतिबाक्योत्तरे समे ।

पिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानमय मिथ्याभिशंसनम् ॥ १० ॥

अभिशापः प्रणादस्तु शन्दः स्यादनुरागजः ।

यशः कीर्तिः समज्ञा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ११ ॥

आम्रोडितं द्विश्विरुक्तमुञ्जेर्थुष्टं तु घोषणा ।

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः ॥ १२ ॥

अवर्णाक्षेपनिर्वादपरीवादापवादवत् ।

उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गईणे ॥ १३ ॥

पारुष्यमितवादः स्याद्धर्तसेनं त्वपकारगीः ।

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् ॥ १४ ॥

तत्र त्यक्षारणा यः स्यादाकोशो मैथुनं प्रति ।

स्यादाभाषणमालापः प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥ १५ ॥

হাपथराब्द पुद्धिंग है ॥ ९ ॥ प्रश्न (पु॰), अनुयोग (पु॰), पृच्छा (स्त्रीं॰) ये तीन नाम प्रश्नके हैं । प्रतिवाक्य, उत्तर ये दो (न॰) नाम उत्तरके हैं। भिथ्याभियोग (प॰), अभ्याख्यान (न॰) ये दो नाम झूंटे दोष लगानेके हैं। मिथ्याभिशंसन (न॰) ॥ १० ॥ अभिशाप(पु॰) ये दो नाम मदिरापान आदि मिथ्यापापके उद्घावनके हैं। प्रणाद यह एक (पु॰) नाम अनुरागसे उत्पन्न इञ्चका है । यञ्चस (न॰), कीर्त्त (स्त्री॰), समज्ञा (स्त्री॰) ये तीन नाम की तिके हैं। स्तव (पु॰), स्तोत्र (न॰), स्तृति (स्त्री॰), नृति (स्त्री॰) ये चार नाम स्तृतिके हें ॥ ११ ॥ आम्रेडित यह एक (न०) नाम दोवार तीनवार कहेका है। उच्चेर्पृष्ट (न०), घोषणा (स्त्री०) ये दो नाम ऊंचे शब्दके हैं। काक् यह एक नाम शोक और भय आदिसे उत्पन्न ध्वनिविकारका है। तहां काकुशब्द (स्त्री॰) है ॥ १२ ॥ अवर्ण, आक्षेप, निर्वाद, परीवाद, अप-वाद, उपक्रोश-यहांतक (पु॰), जुगुप्सा, कुत्सा, निन्दा-ये स्त्रीः), गर्हण (न॰) ये दश नाम निन्दाके हैं ॥ १३ ॥ पारुष्य (न॰), अ-तिवाद (पु॰) ये दो नाम कठोर बोलनेके हैं। भरर्सन यह एक (न॰) नाम अपकारके छिये बोलने अर्थात् धमकानेका है। बॅरिभाषण यह एक (न॰) नाम कोघपूर्वक दोषके प्रतिपादनका है ॥ १४ ॥ आक्षारणा यह अनुलापो मुहुर्भाषा विलापः परिदेवनम् ।
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिषः ॥ १६ ॥
सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निह्नवः ।
''चोद्यमाक्षेपाभियोगो शापाकोशौ दुरेषणा ।
अस्त्री चाट चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकत्थनम् ॥ ''
संदेशवाग्वाचिकं स्याद्वाग्भेदास्तु त्रिष्त्तरे ॥ १७ ॥
रुशती वागकल्याणी स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।
अत्यर्थमधुरं सान्त्वं संगतं इद्यंगमम् ॥ १८ ॥
निष्ठरं परुषं ग्राम्यमश्लीलं स्नृतं प्रिये ।
सत्येऽथ संकुलक्तिष्टे परस्परपराहते ॥ १९ ॥

एक (स्त्री॰) नाम परस्त्रीपुरुषके संयोगनिमित्त निन्दाका है। आभाषण (न॰), आलाप (पु॰) ये दो नाम आफ्तमें संबोधनपूर्वक बोल्जेके हिं। प्रलाप यह एक (पु॰) नाम अनर्थक वचनका है ॥ १५ ॥ अनुलाप (पु॰), मुहुर्भाषा (स्त्री॰) ये दो नाम बहुतवार बोळनेके हैं । विलाप (पु॰), परिदेवन (न॰) ये दो नाम रुद्नपूर्वक बोलनेके हैं । विप्रलाप (पु॰), विरोधोक्ति (स्त्री॰) ये दो नाम आपसमें विरुद्ध बोलनेके हैं। संलाप यह एक (पु॰) नाम आपसमें बोरुनेका है ॥ १६ ॥ सुप्रलाप (पु॰), सुक्चन (न॰) ये दो नाम सुन्दर बोलनेके हैं। अफ्लाप, निह्न ये दो (पु॰) नाम गुप्तवचनके हैं। "चोद्य (न॰), आक्षेप (पु॰), अभियोग (पु॰) ये तीन नाम अद्भुत प्रश्नके हैं । शाप (पु॰), आक्रोश (प्रः), द्वरेषणा (स्त्रीः) ये तीन नाम शापवचनके हैं। चाह, चटु, श्लाघा (स्त्री॰) ये तीन नाम प्रेमकरके मिथ्या बोल्नेके हैं । तहां चाटु चटु इब्द (पु॰ न॰) हैं । " सन्देशवाच् (च।न्त स्त्री॰), वाचिक (न॰) ये दो नाम दूत आदिके मुखसे कहे हुए वचनके हैं। इससे परे वक्ष्यमाण रुराती आदि और सम्यक्षयर्थत वाणीके भेद त्रिलिंगी हैं॥१७॥ रुशती यह एक (स्त्री॰) नाम अकल्याणी वाणीका है। कल्या यह एक (स्त्री॰) नाम शुभवाणीका है। सान्त्व यह एक (न॰) नाम अत्यंत मधुर बोलनेका है। संगत, इद्यंगम ये दो (न॰) नाम संबद्ध वचनके हैं ॥ १८ ॥ निष्टुर, परुष ये दो (न॰) नाम कठोर वचनके हैं । ग्राम्य, सुप्तवर्णपदं प्रस्तं निरस्तं त्वरितोदितम् । अम्बूकृतं सनिष्ठीवमबदं स्यादनर्थकम् ॥ २० ॥ अनक्षरमवाच्यं स्यादाहतं तु मृषार्थकम् । "सोक्षण्ठनं तु सोरप्रासं भिषतं रतिकृतितम् ॥ " अव्यं इद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥ " अयं म्लिष्टमविस्पष्टं वितयं त्वनृतं वचः ॥ २१ ॥ सत्यं तथ्यमृतं सम्यगम्नि त्रिषु तद्वति । शब्दे निनादनिनद्ध्वनिध्वानरवस्वनाः ॥ २२ ॥ स्वाननिष्ठोषनिर्द्वादनिस्वाननिस्वनाः । आरवारावसंरावविरावा अथ ममेरः ॥ २६ ॥

अश्वील ये दो (न॰) नाम शिथिल वचनके हैं । सूनृत यह एक (न॰) नाम प्रिय और सत्यवचनका है। संकुछ, क्रिष्ट ये दो (न॰) नाम आ-पसमें पूर्वापर विरुद्धके हैं। जैसे-'मेरी माता वंध्या हैं ॥१९॥ यस्त यह एक (न॰) नाम असंपूर्ण उच्चारित वचनका है । निरस्त यह एक (न॰) नाम शीघ्र कहे हुए वचनका है। अंवृकृत यह एक (न०) नाम छार अर्थात् थुकसहित वचनका है। अबद्ध यह एक (न॰) नाम अनर्थक वचनका है ॥ २० ॥ अनक्षर, अवाच्य ये दो (न०) नाम नहीं कहने योग्य वचनके हैं । आहत यह एक (न॰) नाम मिथ्या और असंभावित अर्थवाछेका है। जैस-'यह बंध्याका पुत्र जाता हैं। "सोल्लुंडन, सोत्प्रास ये दो (न॰) नाम उपहाससाहित वचनके हैं । भणित, रतिकृजित ये दो (न॰) नाम स्त्रीसंगक समय बोढनेके हैं। श्राव्य, हवा, मनोहारिन, विस्पष्ट, प्रकटोदित ये पांच (न॰) नाम स्पष्टवचनके हैं "। म्छिष्ट, अवि स्पष्ट थे दो (न०) नाम स्पष्टवचनके हैं। वितथ यह एक (न०) नाम मिथ्यावचनका है ॥ २१ ॥ सत्य, तथ्य, ऋत, सम्यच् (चान्त) ये चार (न॰) नाम सत्यवचनके हैं। ये शब्द विशेषण होते हैं तब त्रिलिगी हैं। जैसे-' सत्या स्त्री, सत्यः पुमान्, सत्यं कुरुम् । इत्यादि । शब्द, निनाद, निनद, ध्वनि, ध्वान, रव, स्वन ॥ २२ ॥ स्वान, निर्घोष, निर्ह्माद, नाद, निस्वान, निस्वन, आरव, आराव, संराव, विराव ये सत्रह (-पु॰) नाम

स्वनिते वस्त्रपर्णानां मूचणानां तु शिक्षितम् । निकाणो निक्षणः काणः कणः कणनमित्यपि ॥ २४ ॥ वीणायाः कणिते प्रादेः प्रकाणप्रक्षणाद्यः । कोलाहलः कलकलस्तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥ २५ ॥ स्त्री प्रतिश्रुत्पतिष्वाने गीतं गानमिमे समे । ॥ इति शब्दादिवर्गः ६ ॥

अथ नाट्यवर्गः ७।

निषाद्षभगान्धारषड्जमध्यमधैवताः।
पश्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः॥ १॥
काकली तु कले सूक्ष्मे धानौ तु मधुरास्फुटे।
कलो मन्द्रस्तु गम्भीरे तारोऽत्युचैख्वयिख्वषु॥ २॥

इह्दमात्रके हैं । मर्भर ॥ २३ ॥ यह एक (पु॰) नाम क्स्न और पत्तींके ज्ञान्दका है। ज्ञिनित यह एक (न०) नाम गहनोंके ज्ञान्दका है। नि क्वाण, निक्कण, क्वाण, क्वण, क्वणन ये पांच नाम वीणा आदिके शब्दके हैं। इनमें क्रणन (न॰) शेष (पु॰) हैं॥ २४॥ प्रकाण, प्रकण आदि (प॰) नामभी वीणाहीके शब्दमें हैं; अन्यके शब्दमें नहीं हैं। कोळाहरू, कलकरु य दो (पु॰) नाम बहुतींसे भिलकर किये हुए अन्दर्क हैं। वाजित, स्त ये दो (न॰) नाम पक्षियोंके अन्दर्क हैं॥ २५ ॥ प्रतिश्रत (तान्त स्त्री॰), प्रतिध्वान (पु॰) ये दो नाम प्रतिशब्दके हैं। गीत, गान ये दो (न०) नाम गानेके हैं। इति शब्दादिवर्गः ॥ ६ ॥ अय नाटचवर्गः। स्वरके भेद कहते हैं-निषाद, ऋषभ, गांधार, षड्ज, ्मध्यम, धैवत, पश्चम ये सात (पु॰) नाम वीणा या कंठसे उठे हुए स्वरींके हैं ॥ १ ॥ " हस्ती निषाद स्वरसे बोलता है । गी ऋषम स्वरसे बोल्ती है। बकरी आदि गांधार स्वरसे बोलती हैं। मोर पड्ज स्वरसे बोलता है। कंज मध्यम स्वरसे बोलती है। घोडा धैवत स्वरसे बोलता है। कोयल पञ्चम स्वरसे बोलती है। '' काकली यह एक (स्त्री॰) नाम सूहम कलका है। कल यह एक नाम मधुर और अस्पष्ट शब्दका है। मंद्र यह एक नाम गंभीर ध्वनिका है। तार यह एक नाम अत्यंत उंची ध्वनिका

" नृणामुरित मध्यस्यो द्वाविंशतिविधी ध्वनिः। स मन्द्रः कण्डमध्यस्यस्तारः शिरांत गीयते।।" समन्त्रित्वरुपस्त्वेकतालो वीणा तु वल्लकी । विपश्ची सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥ ३ ॥ ततं वीणादिकं वाद्यमानद्धं मुरजादिकम् । वंशादिकं तु सुविरं कांस्यतालादिकं घनम् ॥ ४ ॥ व्यतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम् । सृदङ्गा मुरजा भेदास्त्वङ्क्र्यालिङ्ग्योध्वेकास्त्रयः ॥ ५ ॥ स्याद्यशःपटहो दक्षा भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् । आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्कोणो वीणादिवादनम् ॥ ६ ॥ वीणादण्डः प्रवालः स्यात्ककुभस्तु प्रसेवकः । कोल्डम्बकस्तु कायोऽस्या उपनाहो निबन्धनम् ॥ ७ ॥

है। ये तीनों शब्द (त्रि॰) हैं॥२॥ जिसमें अच्छी खय हो और गीतके तुल्य हो उसे एकताळ कहते हैं यह (पु॰) है । वीणा, वळकी, विपंची, ये तीन (स्त्री॰) नाम वीणाके हैं। परिवादिनी यह एक (स्त्री॰) नाम सात तंत्रियोंकरके बंधी हुई वीणाका है ॥ ३ ॥ तत यह (न॰) नाम वीणा आदि बाजेका है। आनद्ध यह एक(न॰) नाम मृद्ङ्ग आदि बा जेका है। सुषिर यह एक (न॰) नाम वंज्ञी, अलगोजा, जांख आदि बाजेका है। घन यह एक (न॰) नाम कांसीका बाजा घंटा झाळर आ दिका है ॥ ४ ॥ वादित्र, आतोद्य ये दो (न॰) नाम पूर्वीक्त तत आदि चार प्रकारके बाजेके हैं । मृदङ्ग, मुरज ये दो (पु॰) नाम मृदङ्गके हैं । **अंक्य, आर्ष्टिंग्य, उ**र्ध्वक ये तीन (पु॰) नामभी मृदङ्गकेही भेदके हैं ॥ ५ ॥ यशःपटह (पु॰), टक्का (स्त्री॰) ये दो नाम ढोलकके हैं। भेरी, दुंदुमि ये दो नाम नकारेके हैं। तहां भेरीशब्द (स्त्री॰) और दुंद्धभिशब्द (पु॰) है। आनक (पु॰), पटह ये दो नाम बडे नगाडेके हैं। तहां पटहशब्द (पु॰ न॰) है। कोण यह एक (पु॰) नाम जिससे वीणादि बजाई जाती है उस धनुषाकार काष्ट्रका है ॥ ६ ॥ प्रवाल यह एक (पु॰) नाम वीणाके दंडका है। ककुभ, प्रसेवक ये दो (पु॰) नाम वीणाके प्रान्तमें स्थित चर्मसे मंदे हुए काष्टतुंबीके हैं। जो शब्दकी वाद्यप्रभेदा डमरुमडुडिण्डिमझईराः ।

मर्दछः पणवोऽन्ये च नर्तकीछासिके समे ॥ ८ ॥

विलिम्बतं दुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।

तालः कालिकियामानं लयः साम्यमयाख्रियाम् ॥ ९ ॥

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

तीर्यत्रिकं नृत्यगीतवाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् ॥ १० ॥

श्रकुंसश्य श्रकुंसश्य श्रकुंसश्चेति नर्तकः ।

खीवेषधारी पुरुषो नाट्योक्तौ गणिकाज्जुका ॥ ११ ॥

भगिनीपितरावुक्तो भाषो विद्वानधावुकः ।

जनको युवराजस्तु कुमारो भर्तदारकः ॥ १२ ॥

गंभीरताके छिये रहते हैं। कोलंबक यह एक (पु॰) नाम वीणाके तंत्री-रहित दंड आदिके समुदायका है। उपनाह यह एक (पु॰) नाम जहां वीणाके प्रान्तमें तंत्री बांधी जाती है उसका है ॥ ७ ॥ उमहरसे आदि लेकर ये बाजोंके भेदके नाम हैं। डमरु, मर्ड, डिडिंग, झईर, मर्द्छ, पणव आदि। नर्तकी, लासिका ये दो (स्त्री॰) नाम नाचनवालीके हैं॥८॥ तत्व यह एक (न॰) नाम हाथ पर आदि करके देरमें नाचने आदिका है। ओघ यह एक (पु॰) नाम शीघ्र नाचने आदिका है। घन यह एक (न॰) नाम जो न देरसे और न शीव्रता नाचना हो उ-सका है। ताल यह एक (पु॰) नाम काल-िक्रयाके नियमके हेतुका है। लय यह एक नाम गाना बजाना और पैर आदिका धरना इन्होंकी कि-या-कालके साम्यका है। तहां ताल और लयशब्द (पु॰) हैं॥ ९॥ तांडव, नटन, नाटच, छास्य, नृत्य, नर्त्तन ये छः (न॰) नाम नाचनेके हैं । इनमें तांडवराब्द (पु॰) भी है । नृत्य, गीत, वाद्य ये तीन मिलके तौर्य्यत्रिक और नाट्य कहाते हैं। ये (न॰) हैं ॥१०॥ अकुंस, अकुंस, भूकंस ये तीन (प्र॰) नाम स्त्रीके भेषको धारण कर नाचनेवाले पुरुषके हैं। 'अंगहार' यहांतक नाठचप्रकरणके शब्द कहते हैं। अज्जुका यह एक (खी॰) नाम वेश्याका है॥११॥ आवुत्त यह एक (पु॰) नाम बहनके पति-का है। भाव यह एक (पु॰) नाम विद्वानका है। आवुक यह एक (पु॰) नाम पिताका है। कुमार, भर्तृदारक ये दो (पु॰) नाम युवराज अर्थात राजा भट्टारको देवस्तरभुता भर्तदारिका ।
देवी कृताभिषेकायामितरासु तु भट्टिनी ॥ १३ ॥
अवसाण्यमवध्योक्ती राजशास्त्रतु राष्ट्रियः ।
अम्बा माताऽथ बास्ता स्यादास्रायस्तु मारिषः ॥ १४ ॥
अक्तिका भिग्नी ज्येष्ठा निष्ठानिवृद्देणे समे ।
इण्डे हुझे हस्रद्वाने नीचां चेटीं सस्तीं प्रति ॥ १५ ॥
अङ्ग्रहारोङ्गविक्षेपो व्यञ्जकाभिनयौ समी ।
निवृत्ते त्वङ्गसत्वाभ्यां दे त्रिष्वाङ्गिकसात्विके ॥ १६ ॥
गृंगारवीरकरुणान्त्तहास्यभयानकाः ।
वीभत्सरौद्री च रसाः श्रंगारः शुचिरुज्वस्यः ॥ १७ ॥

राजपुत्रके हैं ॥१२॥ भट्टारक, देव ये दो (पु॰) नाम राजाके हैं । भर्तृदा-रिका यह एक (स्त्री॰) नाम राजाकी पुत्रीका है। देवी यह एक (स्त्री॰) नाम अभिषेक हुई रानीका है। भट्टिनी यह एक (स्त्री॰) नाम अन्यरानीका है। १३ ॥ अब्रह्मण्य यह एक (न०) नाम अवध्य ब्राह्मण आदिके दोष प्रकाश करनेका है। राष्ट्रिय यह एक (पु॰) नाम राजाके सालेका है। अंबा, मातु ये दो (स्त्री०) नाम माताके हैं। मातुज्ञब्द ऋकारान्त हैं। बाह्य, वासू ये दो (स्त्री॰) नाम कुमारीके हैं। आर्य्य, मारिष ये दो (पु॰) नाम उत्तमके हैं ॥ १४ ॥ अत्तिका यह एक (स्त्री॰) नाम जेठी बहनका है। निष्ठा (स्त्री०), निर्वहण (न०) ये दो नाम नाटककी निर्वहण संधिक हैं। इंडे यह एक नाम नीच सहेळीके प्रति बुळानेका है। हंजे यह एक नाम चेटीको बुलानेका है। हला यह एक नाम सखीको बुलाने-का है । तहां हंडे, हंजे, हुला ये अव्यय हैं ॥१५॥ अंगहार, अंगविक्षेप ये दो (पु॰) नाम नृत्यविशेषके हैं। व्यंजक, अभिनय ये दो (पु॰) नाम हाथ आदि करके मनोगत अर्थके प्रकाशके हैं । आंगिक यह नाम अं गकरके निष्पन्न कर्मका है। सात्विक यह एक नाम अन्तःकरणकरके हुए कर्मका है। आंगिक, सात्विक दोनों त्रिलिंगी हैं। " स्तंम, स्वेद, रो-माश्व, खरमंग, कंप, वर्णका बदलना, अश्व, प्रलय ये आठ सात्विक गुण हैं " ॥ १६ ॥ शुक्कार, वीर, करुण, अद्भृत, हास्य, भयानक, बीभत्स, रोंद्र ये आठ (पु॰) नाम नाटकके रसके हैं। चकारसे नवर्श शान्तरस उत्साहवर्द्धनो वीरः कारुष्यं करुणा घृणा । कृपा द्यानुकम्पा स्मादनुक्रोक्षोऽप्यथो इसः ॥ १८॥ इसो हास्यं च वीमत्सं विक्कतं त्रिष्वदं द्यम् । विस्मयोऽकृतमाश्चर्यं चित्रमप्पय भैरवम् ॥ १९॥ दारुणं भीषणं भीषां घोरं भीमं मयानकम् । भयंकरं प्रतिभयं रौद्रं त्यममी त्रिषु ॥ २०॥ चतुर्दश दरस्राक्षो भीतिभीः साध्वसं भयम् । विकारो मानको भावोऽनुभावो भावबोधकः ॥ २१॥ गवीभिमानोऽहंकारो मानश्चित्तसमुन्नतिः । " द्पेऽवल्लेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः ।" अनादरः परिभवः परीभाविस्तरिक्तया ॥ २२॥

नानना । जुङ्गार, जुन्ति, उज्ज्वल ये तीन (पु॰) नाम जुङ्गारके हैं ॥१७॥ उत्साहवर्द्धन, वीर ये दो (पु॰) नाम वीररसके हैं। कारुण्य, करुणा, घुणा, कूपा, दया, अनुकंपा, अनुकोश ये सात नाम दयाके हैं। यहां कारुण्य (न॰), अनुक्रोश (पु॰), शेष (स्त्री॰) हैं। हस॥ १८॥ हास, हास्य ये तीन नाम हांसीके हैं। हास्य (न॰) शेष (पु॰) हैं। बीमत्स, वैकृत ये दो नाम बीमत्सके हैं और ये दोनों शब्द त्रिलिंगी हैं। विस्मय, अद्भृत, आश्चर्य, चित्र ये चार नाम अचरजके हैं । विस्मय (पु॰) होष (न॰) हैं । मैरव ॥ १९ ॥ दारुण, भीषण, भीष्म, घोर, भीम, भयानक, भयंकर, प्रतिभय ये नव नाम भयानकके हैं । रौद्र, उग्र ये दो नाम उन्नके हैं । भैरवसे छेकर रीद्रपर्यंत चौदह शब्द तीनों छिंगवाची हैं ॥ २० ॥ दर (पु॰ न॰), त्रास (पु॰), भीति (स्त्री॰) भी, (स्त्री॰), साध्वस (न॰), भय (न॰) ये छः नाम भयके हैं। भाव यह एक (पु॰) नाम मनसंबंधी विकारका है । अनुभाव यह एक (पु॰) नाम चित्तके विकारको प्रकाश करनेवालेका है ॥ २१ ॥ गर्व, अभिमान, अहं-कार ये तीन (पु॰) नाम गर्वके हैं। मान यह एक (पु॰) नाम चि-त्तकी बहुत ऊंचाई अर्थात् उन्नताका है। " दर्प, अवलेप, अवष्टम, चित्तो-द्रोक, समय, मद् ये छः (पु॰) नाम भद्के हैं। " अनाद्र, परिभव, रीढावमाननावज्ञावहेल्नमसुर्भषम् ।

मन्दासं हीख्रपा त्रीढा ल्ल्ला सापत्रपान्यतः ॥ २३ ॥

सान्तिरितिसाऽभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

असान्तिरीष्यीऽस्या तु दोषारोपो गुणेष्विष ॥ २४ ॥

वैरं विरोघो विद्वेषो मन्युशोकौ तु शुक् ख्रियाम् ।

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विमतीसार इत्यिष ॥ २५ ॥

कोपकोधामर्षरोषमतिघा रुट्कुधौ ख्रियौ ।

शुचौ तु चरिते शीलमुन्मादश्चित्तविश्रमः ॥ २६ ॥

प्रेमा ना मियता हार्द प्रेम स्रेहोथ दोहदम् ।

इच्ला कांक्षा स्पृहेहा तुड्वाञ्ला लिप्सा मनोरथः ॥ २७ ॥

परीभाव-ये तीन (पु॰), तिरिक्तया ॥ २२ ॥ रीढा, अवमानना, अवज्ञा-ये चार (स्त्री॰), अवहेळन, अमूर्क्षण-ये दो (न॰) ये नव नाम अनादरके हैं। मन्दाक्ष, ही,त्रपा, बीडा, छजा ये पांच नाम लाजके हैं । यहां मन्दाक्ष (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं । अपत्रपा यह एक (स्त्री॰) नाम दूसरेसे लाजका है ॥ २३ ॥ क्षांति, तितिक्षा ये दो (स्त्री॰) नाम अन्यके सुखको सहनेके हैं। अभिध्या यह एक (स्त्री॰) नाम अन्यके धनके विषयमें इच्छाका है। अक्षांति, ईर्षा ये दो (स्त्री॰) नाम ईर्षाके 诺 । असूया यह एक (स्त्री॰) नाम गुणोंमें दोष आरोपणका है ॥२४॥ वैर, विरोध, विदेष ये तीन नाम वैरके हैं ! वैरज्ञब्द (न॰) शेष (पु॰) हैं। मन्यु, शोक, ग्रुच् (चान्त) ये तीन नाम शोकके हैं। ग्रुच्शब्द (स्री॰) शेष (पु॰) हैं। पश्चात्ताप, अनुताप, विप्रतीसार ये तीन (पु॰) नाम पश्चात्तापके हैं ॥ २५ ॥ कोप, ऋोध, अमर्ष, रोष, प्रतिघ, रुषु (षान्त), क्रुप् ये सात नाम क्रोधके हैं । तहां रुष् और क्रुप् ये दोनों शब्द (स्त्री॰) हैं शेष (प्र॰) हैं । शील यह एक (न॰) नाम ग्रद्ध चरितका है। उन्माद, चित्तविश्रम ये दो (पु॰) नाम चित्त बिगडनेके हैं ॥ २६ ॥ प्रेमन् (नान्त पु॰), प्रियता (स्त्री॰), हार्द (न०), प्रेमन् (नान्त न०), स्नेह (पु०) ये पांच नाम प्रेमके हैं। दोहद्, इच्छा, कांक्षा, स्पृहा, ईहा, तृष (पान्त), वांछा, लिप्सा, मनो

कामोऽभिछाषस्तर्षश्च सोत्यर्थ छाछसा द्वयोः ।
उपाधिनी धर्मिचन्ता पुंस्याधिमीनसी व्यथा ॥ २८ ॥
स्याचिन्ता स्मृतिराध्यानमुत्कण्ठोत्किके समे ।
उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्स वीर्यमितिशक्तिभाक् ॥ २९ ॥
कपटोऽस्त्री व्याजदम्भोपधयरछग्रकेतवे ।
कुसृतिर्निकृतिः शाख्यं प्रमादोऽनवधानता ॥ ३० ॥
कौत्हछं कौतुकं च कुतुकं च कुत्हछम् ।
स्त्रीणां विछासविव्योकविश्रमा छिछतं तथा ॥ ३१ ॥
हेछा छीछेत्यमी हावाः क्रियाः गृंगारभावजाः ।
द्वकेछिपरीहासाः अीडा छीछा च नमे च ॥ ३२ ॥

रथ ॥ २७ ॥ काम, अभिलाष, तर्ष ये बारह नाम मनोरथके हैं । दोहदः राज्द (पु॰ न॰), इच्छासे लिप्सातक (स्री॰) और रोष (पु॰) हैं। लालसा यह एक नाम अत्यंत इच्छाका है और (स्री॰ पु॰) हैं। उपाधि, धर्मिचन्ता (स्री॰) ये दो नाम धर्मकी चिन्ताके हैं। तहां उपाधिराज्द (पु॰) है। आधि, मानसीव्यथा ये दो नाम मनकी पीडाके हैं। तहां आधिराज्द (पु॰) है दूसरा (स्री॰) हैं॥ २८॥ चिन्ता, स्मृति, आध्यान ये तीन नाम स्मरणके हैं। आध्यान (न॰) रोष (स्री॰) हैं। उत्कांठा, उत्कल्किका ये दो (स्री॰) नाम उत्कांठाके हैं। उत्साह, अध्यन्ताय ये दो (पु॰) नाम उत्साहके हैं। वीर्य (न॰) यह एक नाम अत्यंत उत्साहका है ॥ २९॥ कपट, व्याज (पु॰), दंभ (पु॰), उपाधि (पु॰), छन्मन (न॰), कैतव (न॰), कुमृति स्री॰), निकृति (स्री॰), राठच (न॰) ये नव नाम राठपनेके हैं। तहां कपटराज्द (पु॰ न॰) हैं॥ ३०॥ कीतू हल, कीतुक, कुतुक, कुतुहल ये चार(न॰) नाम कीतुकके हैं। विलासे (पु॰), विव्वोक (पु॰), विश्रम (पु॰), लिलेंत (न॰)॥ ३१॥ हलां (स्री॰), लिलों (स्री॰) ये सब स्थि

⁹ नेत्र मुख भृकुटी आदिसे जो रस उत्पन्न हो उसे विलास कहते हैं। २ गर्वसे उत्पन्न अनादरादिकको विद्योक कहते हैं। ३ वस्त्र आभृषणादिकरके उलट पुलट को विश्रम कहते हैं। ४ अंगोंके अच्छे विन्यासको लिलत कहते हैं। ५ इत्य आदिकों हेला कहते हैं। ६ प्रिय भृषण और वचन आदिके अनुकरणको लीला कहते हैं।

व्याजोऽपदेशो छस्यं च क्रीडा खेळा च कूर्देनम्।

घमी निदाधः खेदः स्यात्मछयो नष्टचेष्टता ॥ ३३ ॥

अवहित्याकारगुर्तिः समी संवेगसंश्रमी ।

स्यादाच्छिरितकं हासः सोत्मासः स मनाक् स्मितम् ॥ ३४ ॥

मध्यमः स्यादिहसितं रोमाओ रोमहर्षणम् ।

क्रिन्दतं रुदितं कुष्टं जुम्भस्तु त्रिषु जुम्भणम् ॥ ३५ ॥

विम्रष्टम्भो विसंवादो रिङ्कणं स्वछनं समे ।

स्यात्रिद्रा शयनं स्वापः स्वमः संवेश इत्यपि ॥ ३६ ॥

तन्द्री ममीला अकुटिर्म्नुकुटिर्म्नुकुटिः ख्रियाम् ।

अदृष्टिः स्यादसीम्योहेण संविद्धिमकृती त्विमे ॥ ३७ ॥

योंके जुङ्गारसे उपजी छः चेष्टा हाव नामसे प्रसिद्ध हैं। दव (पु॰), केरि (पु॰ स्त्री॰), परीहास (पु॰), क्रीडा (स्त्री॰), छीछा (स्त्री॰), नर्भन् (नः) ये छः नाम कीडामात्रके हैं ॥ ३२ ॥ व्याज (पु॰), अपदेश (पु॰), रुक्ष्य (न॰) ये तीन नाम अपने रूपको छिपानेके हैं। ऋडा (स्त्री॰), खेला (स्त्री॰), कुर्दन (न॰) ये तीन नाम बा-**ल्लीलाके हैं । घर्म, निदाय, स्वेद ये तीन (पु॰) नाम पर्सानेके हैं ।** प्रस्य (पु॰), नष्टचेष्टता (स्त्री॰) ये दो नाम मूर्च्छाकरके बेहोशफ्नेके हैं ॥ ३३ ॥ अवहित्था, आकारगुप्ति ये दो (स्त्री॰) नाम शोक आदिसे उपनी मुखकी ग्लानिके वा ग्रप्त आकारके हैं। संवेग, संभ्रम ये दो(पु॰) नाम आनन्दपूर्वक कर्मीमें शीघ्रताके हैं। आच्छ्ररित यह एक (न॰) नाम अभिप्रायसहित हँसनेका है अथवा शब्दसहित हँसनेका है। स्मित यह एक (न॰) नाम मुसकुरानेका है ॥ ३४ ॥ विहसित यह एक(न॰) नाम मध्यम इसनेका है। रोमाञ्च (पु॰), रोमहर्षण (न॰) ये दो नाम रोमांवर्छी खडी होनेके हैं। क्रन्दित, रुदित, क्रुष्ट ये तीन (न॰) नाम रोवनेके हैं । जुंभ, जुंभण (न॰) ये दो नाम जंभाईके हैं । तहां ज़ंमराब्द त्रिलिंगी हैं ॥ ३५ ॥ विप्रलंभ, विसंवाद ये दो (पु॰) नाम ढगाईसे मिछे हुए बोळनेके हैं। रिगण, स्वलन ये दो (न०) नाम अपने धर्म आदिसे उल्टे चलनेके हैं। निद्रा (स्त्री॰), शयन (न॰), स्वाप (पु॰), स्वम (पु॰), संवेश (पु॰) ये पांच नाम नींदके हैं ॥ ३६ ॥ तन्द्री, प्रमीछा ये दो (स्त्री०) नाम नींदके आदि और अन्त्यमें हुए

स्वद्भपं च स्वभावश्च निसर्मश्चाय वेपयुः । कम्पोऽय क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥ ३८ ॥ इति नाट्यवर्गः ॥ ७॥

अथ पाताल भोगिवर्गः ८।
अधोभुवनपातालं बलिसम्म रसातलम्।
नागलोकोऽय कुहरं सुषिरं विवरं विलम् ॥ १॥
छिद्रं निर्व्ययनं रोकं रन्त्रं अत्रं वपा शुषिः।
गतीवटी भुवि सम्रे सरन्त्रे सुषिरं त्रिषु ॥ २॥
अन्धकारोऽस्मियां ध्वान्तं तिमस्रं तिमरं तमः।
ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसं क्षीणेवतमसं तमः॥ ३॥
विष्वक् संतमसं नागाः काद्रवेयास्तदिश्वरः।
शेषोऽनन्तो वासुकिस्तु सर्पराजाऽय गोनसे॥ १॥

आरुस्पके हैं। अ़कुटि, अ़कुटि, अ़कुटि ये तीन नाम भृकुटी चढनेके हैं। तहां अ़कुटि आदि तीनों शब्द (स्त्री॰) हैं। अदृष्टि यह एक (स्त्री॰) नाम रोक्सिहित टेढी आंखसे देखनेका है। संसिद्धि (स्त्री॰), प्रकृति (स्त्री॰), ॥ ३७॥ स्वरूप (न॰), स्वभाव (षु॰), निसर्ग (पु॰) ये पांच नाम स्वभावके हैं। वेपशु, कंप ये दो (पु॰) नाम कंपके हैं। क्षण, उद्धर्ष, मह, उद्धव, उत्सव ये पांच (पु॰) नाम उत्सवके हैं॥ ३८॥

इति नाट्यवर्गः ॥ ७ ॥

अथ पातालभोगिवर्गः । अधोमुवन, पाताल, बलिस्झ, रसातल, नाग लोक ये पांच नाम पातालके हैं। यहां नागलोक (पु०) शेष (न०) हैं। कुहर, सुषिर, बिल ॥ १ ॥ छिद्र, निर्व्यथन, रोक, राम, श्वाम, वपा, शुषि ये ग्यारह नाम छिद्रमात्रके हैं। तहां वपा और शुषि शब्द (खि०) और शेष (न०) हैं। गत्ते, अवट ये दो (पु०) नाम पृथ्वीछिद्रके हैं। सुषिर यह एक नाम छिद्रमुक्त वस्तुका है और तीनों लिगवाची है ॥२॥ अधकार (पु० न०), ध्वांत (न०), तिमस्स (न०) तिमिर (न०), तमस्स (न०) ये पांच नाम अधकारके हैं। अधतमस यह एक (न०)नाम अत्यंत अधेरेका है ॥ ३ ॥ सतमस यह एक (न०) नाम स्वव्यापी अन्यंत अधेरेका है ॥ ३ ॥ सतमस यह एक (न०) नाम स्वव्यापी अन्यंत अधेरेका है । नाम, कादवेय ये दो (पु०) नाम स्पत्ति हैं। शेष, क्रांज

तिलित्सः स्यादजमरे अधुर्वोह्स इत्सुभी ।
अलगदों जल्ल्यालः समी राजिल्डुण्डुभी ॥ ५ ॥
मालुधानो मातुलाहिनिर्मुक्तो मुक्तकञ्चकः ।
सर्पः पृदाकुर्मुजगो मुजंगोऽहिर्मुजंगमः ॥ ६ ॥
आशीविषो विषधरश्वकी न्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गृहपाचक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ॥ ७ ॥
दवींकरो दीर्घपृष्ठो दन्दश्को विलेश्वाः ।
उरगः पत्रगो भोगी जिह्मगः पर्वनाकानः ॥ ८ ॥
" लेलिहानो दिरसनो गोकणः कंचुकी तथा ।
कुम्भीनसः फणधरो हरिभीगधरस्तथा ॥
अहेः शरीरं भोगः स्यादाशीरप्यहिदंष्ट्रिका । "
तिष्वाहेयं विषास्थ्यादि स्फटायां तु फणा द्वयोः ।
समौ कञ्चकनिमोंकौ क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥ ९ ॥

ये दो (पु॰) नाम सपाँके पात शेषनागके हैं। वासुकि, सपराज ये दो नाम (पु॰) सपाँके राजाके हैं। गोनस ॥ ४॥ तिलिस्स ये दो (पु॰) नाम पाणससपंके हैं। अजगर, शयु, वाहस ये तीन (पु॰) नाम अजगरके हैं। अलगई, जलन्याल ये दो (पु॰) नाम पानीके सपंके हैं। राजिल, इंडुम ये दो (पु॰) नाम निर्विष और दो मुखवाले सपंके हैं। राजिल, इंडुम ये दो (पु॰) नाम निर्विष और दो मुखवाले सपंके हैं। ९॥ नालुघान, मातुलाहि ये दो (पु॰) नाम लक्ष्मके आकारवाले चित्रसपंके हैं। निर्कृत, मुलग, मुलंग, अहि, मुलंगम ॥ ६॥ आशीविष, विषधर, चित्रक्त, मुलंग, अलंग, अहि, मुलंगम ॥ ६॥ आशीविष, विषधर, चित्रक्त, क्लंग, क्लंग, अलंग, क्लंग, क्लंडिन (इन्नत), गूढपाद, चक्षुःश्रन्स (सान्त), काकोदर, फणिन (इन्नत)। ॥ ७॥ दवींकर, दिप्षृष्ट, दंद्यूक, बिलेश्य, उरग, पत्रग, भोगिन (इन्नत), जिह्नग, पवनाशन ये पञ्चीस (पु॰) नाम सपंके हैं॥ ८॥ "लेलिहान, हिरसन, गोकर्ण, कंचुकिन, कुंभीनस, फणधर, हिर, भोगघर ये आठ (पु॰) नाम सपंमानक हैं। भोग यह एक (पु॰) नाम सांपकी जाढके हैं। » आहेय यह

पुंसि छीवे च काकोलकालकूटहलाहलाः। सौराष्ट्रिकः शौक्तिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः ॥ १०॥ दारदो वत्सनाभश्च विषमेदा अमी नव । विषवेद्यो जाङ्गुलिको व्यालग्राह्महितुण्डिकः॥ ११॥ इति पातालभोगिवर्गः॥ ८॥

अथ नरकवर्गः ९।

स्यात्रारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् । तद्भेदास्तर्पनाविश्विमहारीरवरीरवाः ॥ १ ॥ संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः सत्वास्तु नारकाः । प्रेता वैतरणी सिंधुः स्यादलक्ष्मीस्तु निर्द्रातिः ॥ २ ॥ विष्टिराजूः कारणा तु यातना तीव्रवेदना । पीडा बाघा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसृतिजम् ॥ ३ ॥

एक नाम सर्पके विष और हा आदिका है। तहां आहेयशब्द तीनों छिंगवाची है। स्फटा, फणा ये दो (पु॰ स्त्री॰) नाम सर्पके फनके हैं। कञ्चक, निर्मोक ये दो (पु॰) नाम सांपकी कांचलीके हैं। क्ष्वेड (पु॰), गरल (न॰), विष ये तीन नाम विषके हैं। तहां विषशब्द (पु॰ न॰) हैं और सौराष्ट्रिक, शौक्तिकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन ॥ १०॥ दारद, वत्सनाम ये छः नाम (पु॰) हैं। इस प्रकार ये नव भेद विषके हैं। विषवेद्य, जांगुलिक ये दो (पु॰) नाम विषवेद्यके हैं। व्यालग्राहिन (इन्नन्त), अहितुंडिक ये दो (पु॰) नाम सर्प पकडनेवालके हैं॥ ११॥

इति पातालभोगिवर्गः ॥ ८ ॥

अथ नरकवर्गः। नारक, नरक, निरय, दुर्गति ये चार नाम नरक के हैं। तहां दुर्गतिशब्द (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं। तपन (पु॰), अविष्य (पु॰ स्त्री॰), महारीरव (पु॰), रीरव (पु॰)॥१॥ संघात (पु॰), कास्ट्रस्स्त्र (न॰) आदि नरक के भेद हैं। यहां आदिशब्दसे तामिस्त्र, कुंभीपाक आदि हेने चाहिय। प्रेत यह एक (पु॰) नाम नरकमें रहने चाले जीवोंका है। वेतरणी यह एक (स्त्री॰) नाम नरककी नदीका है। निर्न्नाति यह एक (स्त्री॰) नाम नरककी नदीका है।

स्यात्कष्टं कुच्छ्माभीलं त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् । इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥

अथ वारिवर्गः १०।

समुद्रोन्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।

उदन्वानुद्धिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽणेवः ॥ १ ॥

रत्नाकरो जलनिधियोदःपतिरपांपतिः ।

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥ २ ॥

वापः स्त्री भान्ने वार्वारे सलिलं कमलं जलम् ।

पयः कीयालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥

कवन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।

अम्भोऽणस्तोयपानीयनीरक्षीराम्बुशंबरम् ॥ ४ ॥

मेघपुष्पं घनरसिक्षेषु द्वे आप्यमम्भयम् ।

भंगस्तरंग किंमवो स्त्रियां वीचिरथोमिषु ॥ ५ ॥

आजू य दो (स्त्री॰) नाम नरकमें हठसे गेरनेके हैं। कारणा, यातना, तिश्ववेदना ये तीन (स्त्री॰) नाम नरककी पीडाके हैं। पीडा (स्त्री॰), बाधा (स्त्री॰), व्यथा (स्त्री॰), दुःख (न॰), आमनस्य (न॰), प्रसृतिज (न॰) ॥ ३ ॥ कष्ट (न॰), कुच्छ (न॰), आमील (न॰) ये नव नाम दः खके हैं। इन्होंके मध्यमें जो दुःख आदि विशेष्यवृत्तिवारे हैं व तीनों लिंगवाची हैं। जैस-' सेयं सेवा दुःखा च **बहरूपा, सो**यं दुःखसुतो गुणः, सर्व दुःखं विविकतः और भेद्यगामित्व (विशेष्यवृत्तित्व) का जहां अभाव है वहां वेही छिंग हैं ॥ ४ ॥ इति नरकवर्गः ॥ ९ ॥ अथ वारिवर्गः । समुद्र, अब्धि, अकूपार, पारावार, सरित्पति, उद्नवत् (मत्वन्त), उद्धि, सिंघु, सरस्वत् (मत्वन्त), सागर, अर्णव ॥ १ ॥ रलाकर, जलनिथि, यादःपति, अपापिति ये पन्द्रह (पु॰) नाम समुद्रके हैं। क्षीरोद, छवणोद, दध्युद, घृतोद, सुरोद, इक्षुद, खादूद ये सात(पु॰) ्राब्द् समुद्रभेदके हैं ॥ २ ॥ अप् (स्त्री॰ बहुवचन), वार्, वारि, सिट्स्ट्रे कमल, जल, प्यस् (सान्त), कीलाल, अमृत, जीवन, भुवन, वन ॥ ३॥ कंबंध, उदक, पायस् (सान्त), पुष्कर, सर्वतामुख, अंभस् (सान्त), अर्णस् (सान्त), ताय, पानीय, नीर, क्षीर, अंबु, शंबर ॥ ४ ॥ मेघपुष्प,

महत्स्छोछकछोछो स्यादावतींऽम्भसां भ्रमः ।
पृषित विन्दुपृषताः पुगांसो विभुषः स्त्रियाम् ॥ ६ ॥
चक्राणि पुटभेदाः स्युभ्रमाश्च जल्लिनेगमः ।
कूलं रोषश्च तीरश्च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥ ७ ॥
पारावारे परावीची तीरे पात्रं तदन्तरम् ।
द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तवीरिणस्तटम् ॥ ८ ॥
तोयोत्थितं तत्पुलिनं सैकतं सिकतामयम् ।
विषद्वरस्तु जम्बाष्टः पंकोऽस्त्रा शादकदेमी ॥ ९ ॥
जलोच्छासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतायें स्त्रियां नौस्तराणस्तारेः ॥ १० ॥

थनरस (पु॰) ये सत्ताईस (न॰) नाम पानीके हैं। आप्य, अम्मय ये दो नाम पानीके विकारके हैं और त्रिहिंगी हैं। भंग (पु॰), तरंग (पु॰), ऊर्मि, वीचि ये चार नाम लहरके हैं। तहां ऊर्मिशब्द (स्त्री॰ पु॰) है और वीचिश्रब्द (स्त्री॰) है शेष (पु॰) हैं ॥ ५ ॥ महत्त्मू छारू, कछोरू ये दो (पु॰) नाम बढ़ी एहरके हैं । आवर्त्त यह एक (पु॰) नाम मंडलके आकारवाले भैवरका है। पुषत् (न॰), बिन्दु (पु॰), पुषत (पु॰), विष्ठुष् ये चार नाम पानीकी बूंदोंके हैं। तहां विष्ठुष्शब्द क्कारान्त (स्त्री॰) हैं ॥ ६ ॥ चक्र (न॰), पुटभेद (पु॰) ये दो नाम चक्रके आकारकरके नीचे जाते हुए पानीके हैं। भ्रम, जलनिर्गम ये दो (पु॰) नाम पानी निकसनेके जालके हैं। कूल, रोधस् (सान्त), तीर, प्रतीर, तट ये पांच (न०) नाम तीरके हैं। तहां तटशब्द त्रिछिंगी है॥७॥ पार यह (न०) नाम नदीके परछे तीरका है। आवार यह (पु॰न॰)नाम नदी के उरले तीरका है। पात्र यह (न॰) नाम दोनों तीरोंके मध्यका है । द्वीप, अन्तरीप ये दो (पु॰ न॰) नाम पानीके मध्यमें तट अर्थात् टापुके हैं ॥ ८ ॥ पुष्टिन यह एक (न॰) नाम पानीके क्रमसे निकली हुई पृथ्वीका है। सैकत, सिकतामय ये दो (न॰) नाम बहुत वालू रेतवाली जगहके हैं। निषदर, जंबाल, पंक, ज्ञाद, कर्दम ये पांच (पु॰) नाम की चडके हैं। तहां पंकराब्द (स्री॰ पु॰) हैं ॥ ९ ॥ जल्लोच्छ्वास, परीवाह थे दो (पु॰) नाम नि-र्गम मार्गीकरके बढे हुए और बहुते हुए पानीके हैं। कूपक, विदारक ये दो

जुपं तु प्रवः कोछः स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः । आतरस्तरपण्यं स्यात् द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ ११ ॥ संयात्रिकः पोतविषक्कणघारस्तु नाविकः । नियामकाः पोतविहाः कूपको गुणवृक्षकः ॥ १२ ॥ नीकादण्डः क्षेपणी स्यादित्रं केनिपातकः । अग्निः स्त्री काष्ठकुद्दालः सेकपात्रं तु सेचनम् ॥ १३ ॥ क्षीबेऽर्धनावं नावोऽर्धेतीतनौकेऽतितु त्रिषु । तिष्वागाधात्प्रसन्नोऽच्छः कलुपोनच्छ आविलः ॥ १४ ॥

(पु॰) नाम सूखी नदी आदिमें पानीके छिये जो गढे किये जावें उनके हैं। नाव्य यह नाम नावकरके तारनेके योग्य पानी आदिका है और त्रिलिंगी है। नी, तरिण, तरि ये तीन नाम नावक हैं और (स्त्री॰) हैं ॥ १० ॥ उहुप, प्लत्र, कोल ये तीन (पु॰) नाम डोंगीके हैं । उहुप (न०) भी है। स्रोतम् यह एक (पु०न०) नाम आफ्होंसे पानी झिरे अर्थात् झिरनेका । आतर (पु॰), तरपण्य (न॰) ये दो नाम नदीकी उतराई देनेके हैं। द्रोणी (स्त्री॰) यह नाम काठसे बनी हुई और पा-नीमें बहनेवाली नावका है ॥ ११ ॥ सांयात्रिकः, पोतविणज् ये दो (पु॰) नाम नावके द्वारा व्यवहार करनेवालोंके हैं। कर्णधार, नाविक ये दो (पु॰) नाम मलाहके हैं। नियामक, पोतवाह ये दो नाम जहाजके स्विवेयके हैं । कूपक, गुणवृक्षक ये दो (go) नाम रस्सी आदिके मध्य आधारस्थित स्तंभ अर्थात् मस्तूलका है॥ १२॥ नीकादंड (पु॰), क्षेपणी (स्त्री॰) ये दो नाम नावको चलानेवाली वल्लोके हैं। अरित्र (न॰), केनिपात (पु॰) ये दो नाम सुकाण अर्थात् पतवारके हैं। अत्रि (स्त्री॰), काष्ठकुद्दाल (पु॰) य दो नाम जहाज आदिके मलको दूर करनेके लिये काठके कुदालके हैं। सेकपात्र, सचन ये दो (न॰) नाम चमडेके जल फेंक्रनेके पात्रके हैं ॥ १३ ॥ अर्द्धनाव यह नाम नावके आधे भागका है और (न॰) है। अतिनु यह एक नाम नावको जीतकर बडे तैरनेवाले मनुष्य आदिका है और यह शब्द त्रिलिं-गी है। यहांसे अनलस्पर्शपर्यंत सब शब्द त्रिलिंगी हैं। प्रसन्न, अच्छ ये दो नाम निर्मलके हैं। कल्प, अनच्छ, आविल ये तीन नाम गदलके हैं

निम्नं गभीरं गम्भीरमुत्तानं तद्विपयेषे ।

भगाधमतलस्पर्शे कैवर्ते दाशधीवरी ॥ १५ ॥

आनायः पुंसि जालं स्याच्छणसूत्रं पवित्रकम् ।

मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्विशं मत्स्यवेधनम् ॥ १६ ॥

पृथुरोमा क्षयो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।

विसारः शकुली चाथ गडकः शकुलाभेकः ॥ १७ ॥

सहस्रदंष्ट्रः पाठीन उल्पी शिशुकः समी ।

नलमीनश्चिलिचमः प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥ १८ ॥

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानमयो क्षयाः ।

रोहितो मद्दरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः ॥ १९ ॥

॥ १४ ॥ निम्न, गभीर, गंमीर ये तीन नाम गंभीर (गहरे) के हैं। उत्तान यह एक नाम गंभीरसे विष्रीतका है । अगाध, अतलस्पर्श ये दो नाम अत्यंत गंभीर अर्थात अथाहके हैं। कैवर्त्त, दाज्ञ, धीवर ये तीन (पु॰) नाम मलाहके हैं ॥ १५ ॥ आनाय, जाल (न॰) ये दो नाम जालके हैं। तहां आनायशब्द (पु॰) है। शणसूत्र, पवित्रक ये दा (न॰) नाम शणसूत्र अर्थात् सुतलीके हैं। मत्स्याधानी, कुवेणी ये दो (स्त्री) नाम मछली बांधनेकी करंडिका अर्थात् टोकरीके हैं । बिड्रा, मस्यवेधन ये दो (न॰) नाम मछलीनेधन अर्थात् वंशीके हैं ॥ १६ ॥ प्युरोमन् (नान्त), झष, मत्स्य, मीन, वैसारिण, अंडज, विसार, क्र-खिन् (इद्रंत) ये आठ (पु॰) नाम मछलीके हैं। गड़क, श्रुक्लर्भक ये दो (पु॰)नाम गलफरी मछली वा बच्चेविशेषके हैं॥१७॥ सहस्रदंष्ट्र, पाठीन ये दो (पु॰) नाम बहुत दांतवाली मछलीविशेषके हैं । उलुपिन (इन्नंत), शिशुक ये दो (पु॰) नाम शिशुमारके आकारवाली मछलीके हैं । नल-मीन, चिलिचिम ये दो (पु॰) नाम पानी और तृणमें विचरनेवाली म छलीके हैं। प्रोष्टी (स्त्री:), शफरी य दो नाम सफरी मछलीके हैं। तहां सफरीशब्द (स्त्री॰ पु॰) है ॥१८॥ पोताधान यह एक (पु॰) नाम छोटी मछिरयोंके समूहका है। झष (पु॰) यह एक नाम मछलीविज्ञे-षका है। रोहित यह एक (पु॰) नाम रोही मछलीका है। महुर यह एक (पु॰) नाम मंगरा मछलीका है। ज्ञाल यह (पु॰) नाम चक्राँकित तिमिंगिछादयश्राय यादांसि जलजन्तवः ।
तद्भेदाः शिशुमारोद्रशङ्क्ष्ये मकरादयः ॥ २० ॥
स्यात्कुळीरः कर्कटकः कूमें कमटकच्छपौ ।
याहोऽवहारो नकस्तु कुम्भीरोथ महीलता ॥ २१ ॥
गण्डूपदः किंचुलको निहाका गोधिका समे ।
रक्तपा तु जलौकायां खियां भूम्नि जलौकसः ॥२२॥
मुक्तास्फोटः खियां शुक्तिः शंखः स्यात्कम्बुरिखयो ।
शुद्रशङ्काः शङ्कनखाः शम्बूका जलशुक्तयः ॥ २३ ॥
भेके मंड्कवर्षाभृशालूरप्रवद्दुराः ।
शिली गण्डूपदी भेकी वर्षाभ्वी कमठी दुलिः ॥ २४ ॥

मछलीका है। राजीव यह (पु॰) नाम राया मछलीका है। ज्ञञ्जल यह (पु॰) नाम सौरा मछलीका है। तिमि ॥१९॥ तिमिगिल, नंद्यावर्त्त ये तीन (पु॰) नाम तीन तरहकी मछिछयोंके हैं। यादम् (सान्त न॰), जळजन्तु (पु॰) य दो नाम पानीमें रहनेवाले जीवके हैं । शिशुमार यह (पु॰) नाम शिरस मछलीका है। उद्र यह (पु॰) नाम हूद् मछली-का है। शंकु यह (पु॰) नाम सफू मच्छका है। मकर यह (पु॰) नाम मगरमच्छका है। आदिशब्दसे जरुहस्ती आदि जानने। ये सब मच्छोंके भेद हैं ॥ २० ॥ कुलीर, कर्कटक ये दा (पु॰) नाम कैंकडके हैं। कूर्म, कमठ, कच्छप य तीन (पु॰) नाम कल्लुआके हैं। ग्राह, अवहार य दो (पु॰) नाम ब्राहके हैं। नक्र, कुंभीर य दो (पु॰) नाम नाक्क हैं। महीलता (स्त्री॰) ॥ २१ ॥ गंड्रपद (पु॰), किंचुलक (पु॰) ये तीन नाम केंचुवाके हैं 1 निहाका, गोधिका ये दो (स्त्री॰) नाम जलगाहके हैं। रक्तपा (स्त्री॰), जलौका (स्त्री॰), जलौकस् ये तीन नाम जोंकके कहे हैं। तहां जलोंकस् राज्य बहुवचनान्त सकारान्त स्त्रीलिंग है ॥२२॥ मुक्तास्फोट (पु॰), शुक्ति ये दो नाम सींपीके हैं । तहां शुक्तिशब्द (स्त्री॰) है। शंख, कंबु ये दो नाम शंखके हैं और (पु॰ न॰) हैं। क्षद्रशंख, शंखनख ये (पु॰) नाम छोटे शंखके हैं। शम्बक यह (पुः स्त्रीः) नाम घोँघेका है ॥२३॥ भेक, मंडूक, वर्षाभू, शालूर, प्छव, दर्दर ये छः (पु॰) नाम मेंडकके हैं। शिली, गंड्पदी, ये दो (स्त्री॰) महरस्य त्रिया शृङ्गी दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलो हदः ॥ २५ ॥
आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।
पुंस्येवान्धुः प्रद्विः कूप उदपानं तु पुंसि वा ॥ २६ ॥
नेमिखिकाऽस्य वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।
पुष्करिण्यां तु खातं स्यादखातं देवलातकम् ॥ २७ ॥
पद्माकरस्तडागोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
वेशन्तः पत्वलं चाल्पसरो वापी तु दीर्घिका ॥ २८ ॥
स्यादालवालमावालमावापोऽय नदी सरित् ॥ २९ ॥
स्यादालवालमावालमावापोऽय नदी सरित् ॥ २९ ॥

नाम छोट गिंडोवा अर्त्यात् केंचुएके हैं । भेकी, वर्षाभ्वी ये दो (स्त्री॰) नाम छोटा मैंडकजातिक हैं। कमठी, डुलि ये दो (स्त्री॰) नाम कछत्रीके हैं ॥ २४ ॥ जूंगी (स्त्री०) यह एक नाम मद्गर नामवाले मच्छविशेषकी स्रीके हैं। दुर्नामन (पु॰), दीर्थकोशिका (स्री॰) ये दो नाम जींकके आकारवाले जलचरविशेषके हैं । जलाशय, जलाधार ये दो (५०) नाम तालाव आदिके हैं। न्हद यह (पु॰) नाम अगाध पानीवाले जलस्थानका है ॥ २५ ॥ आहाव (पु॰), निपान (न॰) ये दो नाम कुएके पासके गढेके हैं । इसमें भर पानीको पशु पीते हैं । अंधु, प्रहि, कूप, उदपान ये चार नाम कुएके हैं। उद्पान शब्द (पु॰ न॰) है। शेष (पु॰) हैं ॥२६॥ नेमि, त्रिका ये दो (स्त्री॰) नाम कुएके चाक अर्थात् धित्रीके हैं। वीनाह (पु॰) यह नाम कुएके मनघटेका है। पुष्करिणी (स्त्री॰), खात (न॰) ये दो नाम खोदी हुई छोटी तर्छैयाके हैं। अस्वात, देवस्वातक य दो (न॰) नाम विना स्वोदे हुए सरोवर अर्थात् पुराने तीर्थके हैं ॥ २७ ॥ पद्माकर (पुं॰), तडाग (पु॰ न॰), कासार (पु॰), सरसी (स्त्री॰), सरस् (न॰) ये पांच नाम तलाको हैं। वेशंत (पु॰), पहवछ (पु॰ न॰), अहुपसुरस् (सान्त न॰) ये तीन नाम छोटी तलाईके हैं। वापी, दीर्धिका ये दां (स्त्री) नाम बावडीके हैं ॥ २८ ॥ खेय (न०), परिखा (स्त्री०) ये दो नाम खाईके हैं । आधार (५०) यह नाम बांदका है। अन्छवाल (न०), आवाल (न०) तरिङ्गणी शैविलिनी तिलिनी हादिनी धुनी ।
स्रोतिस्वनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगापगा ॥ ३० ॥
"कूलंकषा निर्मारेणी रोधोवका सरस्वती । "
गङ्गा विष्णुपदी जहुतनया सुरिनम्नगा ।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसुरिष ॥ ३१ ॥
कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।
रेवा तु नर्भदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥ ३२ ॥
करतोया सदानीरा बाहुदा सैतवाहिनी ।
शतहुस्तु शुतुद्धिः स्याद्भिपाशा तु विषाट् स्त्रियाम् ॥ ३३ ॥
शोणो हिरण्यवाहः स्यात् कुल्याल्पा कृत्रिमा सरित् ।
शरावती वेत्रवती चंद्रभागा सरस्वती ॥ ३४ ॥
कावेरी सरितोऽन्याश्च संभेदः सिन्धुसंगमः ।
द्योः प्रणाली पयसः पद्यां त्रिषु त्त्ररी ॥ ३५ ॥

आवाप (प्रः) य तीन नाम बृक्ष आदिके थांवरेके हैं । नदी, सरित ॥ २९ ॥ तरंगिणी, शैविष्टिनी, तटिनी, ऱ्हादिनी, धुनी, स्रोत्तरिवनी, द्वीप-वती, स्त्रवंती, निम्नगा, आपगा ये बारह (स्त्री) नाम नदीके हैं ॥३०॥ ''कूलंकषा, निर्झरिणी, रोधोवक्रा, सरस्वती येभी चार (स्त्री०) नाम नदी-केही हैं।" गंगा, विष्णुपदी, जहुतनया, सुरनिम्नगा, भागीरथी, त्रिपथगा, त्रिस्रोतम् (सान्त), भीष्मसू ये आठ (स्त्री॰) नाम गंगाजीके हैं॥३१॥ कालिन्दी, सूर्यतनया, यमुना, शमनस्वस् (ऋकारान्त) ये चार (स्त्री॰), नाम यमुनाजीके हैं। रेवा, नर्भदा, सोमोद्भवा, मेकलकन्यका ये चार (स्त्री॰) नाम नर्भदाक हैं ॥३२॥ करतोया, सदानीरा ये दो (स्त्री॰) नाम गौरीके विवाहमें कन्यादानके जलसे उपनी नदीके हैं। बाहुदा, सैतवा-हिनी ये दो (स्त्री) नाम कार्त्तवीर्यार्जुनने उतारी नदीके हैं। ज्ञतद्व, राताद्रि ये दो (स्त्री॰) नाम सतलज नदीके हैं। विपाजा, विपाजा (ज्ञान्त) ये दो (स्त्री॰) नाम व्यासनदीके हैं। तहाँ विपाञ्जाबद (ज्ञाकारान्त स्त्री॰) है ॥ ३३ ॥ शोण, हिरण्यवाह ये दो (पु॰) नाम नद्विशेषके हैं अर्त्थात् शोणा नदीके हैं। कुल्या यह एक (र्ख्वा॰) नाम छोटी और बनाई हुई नहरका है। शरावती, वेत्रवर्ता, चन्द्रभागा, सरस्वती॥ ३४॥ कावेरी

देविकायां सरव्यां च भवे दाविकसारवी ।
सीगन्धिकं तु कहारं हल्लकं रक्तसंध्यकम् ॥ ३६ ॥
स्यादुत्पलं कुवल्यमय नीलाम्बुजन्म च ।
इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्सित कुमुद्कैरवे ॥ ३७ ॥
शाल्कमेषां कंदः स्याद्वारिपणीं तु कुम्भिका ।
जलनीली तु शैवालं शेवलोथ कुमुद्दती ॥ ३८ ॥
कुमुदिन्यां निलन्यां तु विसिनीपद्मिनीमुखाः ।
वा पुंसि पद्मं निलनमरिवन्दं महोत्पलम् ॥ ३९ ॥
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पद्मेरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥ ४० ॥
विसप्रस्नराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च ।
पुण्डरीकं सिताम्भोजमथ रक्तसरोरुहं ॥ ४१ ॥

य पांच (स्त्री॰) नाम पांच नादेयों के हैं। और काशिका, गंडकी, चम्मल, गोदावरी, वेणी आदि अन्यभी नदी हैं। संभेद, सिंधुसंगम ये दो (पु॰) नाम नदीसंगमके हैं। प्रणाली यह एक नाम पानी निकसनेके मार्गमें मच्छके मुखके समान रूप्वालेका है और (स्त्री॰ पु॰) है ॥३५॥ देवि-कानदीमें जो हो उसे दाविक, सरयूनदीमें हो उसे सारव कहते हैं। ये दोनों इन्द त्रिलिंगी हैं। सौंगंधिक, कल्हार ये दो (न॰) नाम सायंकालमें खिलनेवाले कमलके हैं। इसीको कुईभी कहते हैं। हल्क, रक्तसंध्यक ये दो (न॰) नाम छाछरंगवाले पूर्वीक्त कमलके हैं ॥ ३६॥ उत्पर, क्करय य दो (न॰) नाम कुमोदिनोके हैं। अथवा साधारण कमलके हैं। नीलाम्बुजन्मन् (नान्त), इन्दीवर ये दो (न॰) नाम नीले कमलके हैं। कुमुद, केरव ये दो (न॰) नाम सुपेद कमलके हैं ॥ ३७ ॥ शालूक यह एक (न॰) नाम कमलकन्दका है। वारिपणीं, कुंभिका ये दो (स्त्री॰) नाम जलकंभीके हैं । जलनीली (स्त्री॰), शैवाल (न॰), शैवल (पु॰) य तीन नाम ज़िवालके हैं। कुमुह्ती ॥ ३८ ॥ कुमुद्रिनी ये दो (स्त्री) नाम कुमोदिनीके हैं। नारेनी, बिसिनी, पद्मिनी ये तीन (स्त्री॰) नाम कमिलनीके हैं। यहां मुख्याब्दसे सरोजिनी आदि नामभी कमिलनीके हैं। पदा, निक्रन, अरविन्द, महोत्पल ॥ ३९ ॥ सहस्रपत्र, कमल, शतपत्र, क् होशय, फेंक्ह, तामरस, सारस, सरसीक्ह ॥ ४० ॥ विसप्रसून, रा-

रक्तोत्पर्छं कोकनदं नाछो नास्त्रमथाखियाम् । मृणार्छं निसमन्जादिकदम्बे खण्डमिखयाम् ॥ ४२ ॥ करहाटः शिफाकंदः किंजल्कः केसरोऽखियाम् । संवर्तिका नवद्छं बीजकोशो वराटकः ॥ ४३ ॥ इति वारिवर्गः ॥१० ॥

उक्तं स्वव्योंमिदिकालधीशन्दादि सनाट्यकम् । पातालभोगि नरकं वारि चैषां च संगतम् ॥ १ ॥ इत्यमरसिंहकृती नामलिङ्गानुशासने । स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः ॥ २ ॥ इत्यमरसिंहकृती नामलिङ्गानुशासने प्रथमं काण्डम् ॥ १ ॥

जीव, पुष्कर, अंभोरुह ये सीछह (न॰) नाम कमलके हैं और पद्मशब्द (पु॰ न॰) है। पुंडरीक, सितांभोज ये दो (न॰) नाम सुपेद कमलके हैं। रक्तसरोरुह ॥ ४१ ॥ रक्तोत्पल, कोकनद ये तीन (न॰) नाम लालकमलके हैं। नालं, नाल ये दो नाम कमलकी दंडीके हैं। तहां नालं शब्द (पु॰ न॰) है। मृणाल, विस ये दो (पु॰ न॰) नाम कमलकी मेसाके हैं। खंड यह एक नाम कमल आदिके समूहका है और (पु॰ न॰) है॥ ४२ ॥ करहाट, शिफाकन्द ये दो (पु॰) नाम कमलकी जडके हैं। किंजलक (पु॰), केसर ये दो नाम कमलकी केसरके हैं। तहां केशर्रा हिंजलक (पु॰), केसर ये दो नाम कमलकी केसरके हैं। तहां केशर्रा हिंजलक (पु॰), है। संवींत्तका (स्त्री॰), नवदल (न॰) ये दो नाम कमल आदिके नये पत्तोंके हैं। बीजकोश, वराटक ये दो (पु॰) नाम कमलगटोंके हैं। ४३ ॥ इति वारिवर्गः ॥ १० ॥

स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्वर्ग, कालवर्ग, घीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाटचवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग ये दृश वर्ग कहे ॥ १ ॥ इस प्रकार अमरसिंहकी कृति नाम लिंगानुशासनमें स्वरादि शब्दोंका अंग उपांगसिंहत प्रथम कोड कहा ॥ २ ॥

इति श्रीदिछीरोहतकप्रदेशान्तर्गतवेरीग्रामनिवासिगोडवंशावतंसविविधशा-स्त्रपरमपंडितश्रीशिवसहायपुत्ररविद्त्तशास्त्रिराजकैयविरिचतायामागरा-नगरवास्तव्यज्योतिर्विद्दालमुकुन्द्भट्टसूरिस्नुपं० रामेश्वरमट्टेन संशोधि-तायां अमरकोशार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां प्रथमकांडः ॥ १॥

द्वितीयं काण्डम्।

अथ भूमिवर्गः १।

वर्गाः पृथ्वीपुरस्माभृद्धनीषिमृगादिभिः ।

नृत्रक्षस्त्रविद्शुद्धैः सांगोपांगैरिहोदिताः ॥ १ ॥

मूर्भूमिरचलानन्ता रसा विश्वभरा स्थिरा ।

घरा धरित्री घरणिः भोणिज्यो काश्यपी सितिः ॥ २ ॥

सर्वसहा वसुमती वसुधोधीं वसुंधरा ।

गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्मावनिमेदिनी मही ॥ ३ ॥

" विपुला गद्धरी घात्री गीरिला कुम्भिनी क्षमा ।

मूत्रघात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥ "

मृत्युत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।

छवरा सर्वसस्यात्या स्यादृषः क्षारमृत्तिका ॥ १ ॥

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यिलगी स्थलं स्थली ।

समानी मरुधन्वानी दे खिलाप्रहते समे ॥ ५ ॥

अथ भूमिवर्गः । पृथ्वीवर्गः, पुरवर्गः, द्रीलवर्गः, वनीषधिवर्गः, सिहादिवर्गः, नृवर्गः, ब्रह्मवर्गः, क्षित्रयवर्गः, विश्यवर्गः, क्रह्मवर्गः ये वर्गः अग उपांगसिहत इस दूसरे कांडमें कहे हैं ॥ १ ॥ भूः भूमिः, अचलाः, अनन्ताः, रसाः, विश्वम्भराः, रियराः, धराः, धरित्रीः, धरणीः, क्षोणिः, ज्याः, काश्यपीः, क्षिति ॥ २ ॥ सर्वसहाः, वसुमतीः, वसुधाः, उवीः, वसुन्धराः, गोत्राः, कुः, पृथिवीः, पृथ्वीः, क्षाः, अविन, मेदिनीः, मही ये सत्ताईस (स्त्रीः) नाम पृथिवीके हैं ॥३॥ "विपुलाः, गह्वरीः, धात्रीः, गोः, इलाः, कुम्भिनीः, क्षमाः, भूतधात्रीः, रत्नगर्भाः, जगतीः, सागराम्बरा ये ग्यारह नामभी पृथ्वीके हैं। ए मृद् (दांत)ः, मृत्तिः का ये दो (स्त्रीः) नाम माटीके हैं । मृत्साः, मृत्साः ये दो (स्त्रीः) नाम संदूरं माटीके हैं । उवरा (स्त्रीः) यह एक नाम संपूर्ण खेतियोंसे यक्त पृथिवीका है । उव (पुः), क्षारमृत्तिका (स्त्रीः) ये दो नाम खारी माटीके हैं ॥ ४ ॥ उपवत् (तांत), उत्तर ये दोनीं नाम खारी माटीके हैं ॥ ४ ॥ उपवत् (तांत), उत्तर ये दोनीं नाम खारी माटीके हुएके हैं । ये दोनीं इाब्द त्रिलिंगी हैं । स्थल (नः) स्थली (स्त्रीः) ये दो नाम अकुत्रिम स्थानके हैं । महः, धन्वन (नांत) ये दो

त्रिष्वयो जगती छोको विष्टपं भुवनं जगत्।
छोकोयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥ ६॥
देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदिच्यः पश्चिमोत्तरः।
प्रत्यन्तो म्छेच्छदेशः स्यान्मध्यदेशस्तु मध्यमः॥ ७॥
आयीवर्तः पुण्यभूभिर्मध्यं विन्ध्यहिमाछयोः।
नीवृज्जनपदो देशविषयौ त्पवर्तनम् ॥ ८॥
त्रिष्वागोष्ठान्नद्याये नद्वान्नद्वछ इत्यपि।
कुमुद्दान्कुमुद्पाये वेतस्वान्बहुवेतसे॥ ९॥
शाद्दछः शादहरिते सजम्बाछे तु पङ्किछः।
जलप्रायमनूपं स्यात्यंसि कच्छस्तयाविधः॥ १०॥

(पु॰) नाम बागड (मारवाड) देशके हैं। खिल, अप्रहत ये दो नाम विना बोई हुई पृथ्वीके हैं और त्रिष्ठिंगी हैं ॥ ५ ॥ जगती (स्त्री॰), होक (पु॰), विष्टप (न॰), भुवन (न॰), जगत् (न॰), ये पांच नाम जगत्के हैं। जम्बुद्वीपमं वर्त्तमान लोक भारतवर्षके नामसे प्रसिद्ध हैं। इलावृत्त आदि अन्यभी वर्ष हैं। शरावती नदीकी अवधिसे जो ॥ ६ ॥ पूर्व दक्षिण देश हैं वह प्राच्य कहाता है और (पु॰) है। और शरावती नदीकी अवधिसे जो देश पश्चिम उत्तर है वह उदीच्य कहाता है यह (पु॰) है। प्रत्यन्त म्लेच्छदेश ये दो (पु॰) नाम म्लेच्छदेशके हैं। जिस देशभें चार वर्णीकी व्यवस्था नहीं हो वह म्लेच्छदेश होता है । मध्यदेश, मध्यम ये दो (पु॰) नाम मध्यदेशके हैं । हिमालय और विन्ध्याचलके मध्य हो कुरुक्षेत्रसे पूर्व और प्रयागसे पश्चिम हो यह मध्यदेश है ॥ ७॥ आर्याक्त, पुण्यभूमि ये दो (पु०) नाम आर्यावर्त्त देशके हैं। यह आर्यावर्त्त हिमालय और विध्याचलके भीतर है अर्थात पूर्वके समुद्र और पश्चिमके समुद्रके बीचकी पृथ्वी आर्यावर्त्तसे प्रसिद्ध है। नीवृत (पु॰ स्त्री॰), जनपद (पु॰) ये दो नाम मगध आदि देशके हैं। देश (पु॰), विषय (पु॰), उपवर्त्तन (न॰) ये तीन नाम देशमात्रके हैं ॥८॥ गोष्ठशब्दतक त्रिलिंगी हैं। नदूत, नदुल ये दो नाम बहुत नरसल्वाले देशके हैं। कुमुद्रत यह एक नाम बहुत कमोदनीवाले देशका है वेतस्वत् (तान्त) यह एक नाम बहुत वेतीवाले देशका है ॥ ९ ॥ शाद्वल

स्त्री शकेरा शकेरिटः शार्करः शकेरावति । देश प्वादिमावेवमुन्नेयाः सिकतावति ॥ ११ ॥ देशो नद्यम्बुष्ट्रघम्बुसम्पन्नवीहिपाटितः । स्यान्नदीमात्को देवमात्कश्च यथान्नमम् ॥ १२ ॥ सुरान्नि देशे राजन्वान्स्यात्ततोऽन्यत्र राजवान् । गोर्ष्ठ गोस्थानकं तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥ १३ ॥ पर्यतभः परिसरः सतुराठौ स्त्रियां पुमान् । वामळूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥ १४ ॥ स्यनं वर्त्भ मार्गोध्वपन्थानः पदवी सृतिः । सरणिः पद्धातः पद्या वर्त्तन्येकपदीति च ॥ १५ ॥

यह एक नाम बालतृणोंंसे हरे देशका है। पंकिल यह एक नाम की चडवाळे देशका है। अनुप यह एक नाम अनुप (अर्थात बहुत जलः वाले) देशका है । कच्छ यह एक नाम नदी आदिके समीपदेशका है और पुष्टिंग है ॥ १० ॥ शर्करा, शर्करिल ये दो नाम वालूरेतसे युक्त देशके हैं । तहां शर्कराशब्द स्त्रीलिंग है । शार्कर, शर्करावत् ये दो नाम कंकणोंसे युक्त देशके हैं। सिकता, सिकतिल ये दो नाम कंकरोंसे युत हुए देशके हैं। सैकत, सिकतावत् ये दो नाम वाळूसे युक्त हुए देश आदिके हैं ॥ ११॥ नदीमातुक यह एक नाम नदीके पानीसे सम्पन्न हुए त्राहिवाले देशका है । देवमातृक यह एक नाम वर्षाके पानीसे सम्पन्न हुए ब्रीहिवाले देशका है ॥ १२ ॥ राजन्त्रत् (तान्त) यह एक नाम **सुन्द**र धर्म धर्मशील राजा जिसमें हो उसका है। राजवत् (तान्त) यह एक नाम साधारण राजा जिस देशमें हो उसका है। गोष्ठ, गोस्थानक ये दो नाम गौवोंके स्थानके हैं यहातक त्रिष्टिंगी हैं। गोष्ठीन (न॰) यह जहां पहले गी रहती हों उस स्थानका नाम है ॥ १३ ॥ पर्य्यतभू (स्त्री॰), परिसर (पु॰) ये दो नाम नदी पर्वत आदिके समीपकी पृथ्वीके हैं। सेत् (पु॰), आछि ये दो नाम पुरुके हैं। तहां सेतुशब्द (पु॰) हं और आलिशब्द (पु॰ स्त्री॰) है । वामलूर (पु॰), नाकु (पु॰), वल्मीक (पु॰ न॰) ये तीन नाम सांप आदिकी बांबीक हैं ॥ १४ ॥ अयन (न०), वर्रमन् (नान्त न०), मार्ग (पु०), अध्वन् अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चाचितेष्विति ।

व्यथ्वो दुर्घ्वो विषयः कदघ्वा कापयः समाः ॥ १६ ॥
अपन्थास्त्वपयं तुल्पे शृङ्काटकचतुष्पथे ।
प्रान्तरं दूरशृन्योऽध्या कान्तारं वत्मे दुर्गमम् ॥ १७ ॥
गव्यातिः स्त्री कोशयुगं नल्वः किष्कुचतुःशतम् ।
घण्टापथः संसरणं तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥ १८ ॥
' द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी ।
दिवस्पृथिव्यौ गञ्जा तु रुमा स्याद्धवणाकरः ॥ ''
इति भूभिवर्गः ॥ १ ॥

अथ पुरवर्गः २।

पूः स्त्री पुरी नगर्यों वा पत्तनं पुटभेदनम् । स्थानीयं निगमोऽन्यत्तु यन्मूछनगरात्पुरम् ॥ १ ॥

(नान्त पु॰), पथिन (नान्त पु॰), पद्वी, सृति, सरणि, पद्धति, पद्धा, वर्त्तनी, एकपदी ये बारह नाम मार्ग (रस्ते) के हैं । पदवीसे एकपदी-ज्ञाब्दतक (स्त्री॰) हैं ॥१५॥ अतिपथिन, सुपथिन, सत्पथ ये तीन (पु॰) नाम सुन्दर रस्तेके हैं । व्यध्व, दुरध्व, विषय, कद्ध्वन् (नान्त), कापय ये पांच (पु॰) नाम हारे रस्तेके हैं ॥ १६ ॥ अपथिन (पु॰), अपथ (न॰) ये दो नाम अमार्ग अर्थात् जहां रास्ता न हो उसके हैं । जंगा-टक, चतुष्पथ ये दो (न॰) नाम चौराहेके हैं । प्रान्तर (न॰) यह एक नाम दूर और जुन्य रास्तेका है। कान्तार यह एक (पु॰ न॰) नाम दुर्गम मार्गका है ॥ १७ ॥ गव्यति यह एक नाम दो कोसका है (स्त्री०) हैं। नल्व यह एक (पु॰) नाम चार सी हाथका है। घंटापथ (पु॰) और संसरण (न॰) ये दो नाम घंटोंसे युत हस्ती आदिके निकलनेके चौढे अर्थात् मुख्य मार्गके हैं। उपनिष्कर यह एक (न०) नाम जिस राजमार्गसे सेना निकले वा मार्ग साकडा हो उसका है ॥१८॥ "बावा-प्रथिवी, रोदसी, द्यावाभूमी, रोदसी, दिवस्पृथिवी ये पांच (स्त्री॰) नाम आकाशसहित पृथिवीके हैं। गंजा (स्त्री॰), रुमा (स्त्री॰), रुवणा-कर (पु॰) ये तीन नाम खारी समुद्रके हैं ॥ " इति भूमिवर्गः ॥१॥ अथ पुरवर्गः । पुरु, पुरी, नगरी, फ्तन, पुटभेदन, स्थानीय, निगम ये तच्छासानगरं वेशो वेश्याजनसमाभयः ।
आपणस्तु निषद्यायां विपणिः पण्यवीयिका ॥ २ ॥
रथ्या मतोली विशिखा स्याख्यो वममिश्चयाम् ।
माकारो वरणः सालः प्राचीनं मान्ततो वृतिः ॥ ३ ॥
भित्तिः स्त्री कुडचमेह्कं यदन्तन्येस्तकीकसम् ।
गृहं गेहोदवसितं वेश्म सम्म निकेतनम् ॥ ४ ॥
निशान्तपस्त्यसदनं भवनागारमन्दिरम् ।
गृहाः पुंसि च भूम्न्येव निकाय्यनिलयालयाः ॥ ५ ॥
वासः कुटी द्वयोः शाला सभा संजवनं त्विदम् ।
चतुःशालं मुनीनां तु पणशालोटजोऽस्वियाम् ॥ ६ ॥

सात नाम नगरके हैं। तहां पुर्शब्द (स्त्री॰) है। पुरी और नगरीशः ब्दभी (स्त्री॰) हैं और जब पुरं नगर ऐसा बनता है तब (न॰) हैं। निगम (पु॰) शेष (न॰) हैं ॥१॥ जो मूलनगरसे अन्य पुर हो वह शा-खानगर कहाता है। वंश यह एक नाम वेश्याके निवासस्थानका है। आपण (पु॰), निषद्या (स्त्री॰) ये दो नाम हाटके हैं । विपणि (स्त्री), पण्यवीयिका (स्त्री) ये दो नाम दुकानोंकी पंक्तिके हैं ॥ २ ॥ रथ्या, प्रतोछी, विशिखा ये तीन (स्त्रीः) नाम ग्रामकी गढ़ीके हैं । चय (पु॰), वप्र ये दोनों नाम कोटके हैं । तहां वप्रशब्द (पु॰ न॰) है । प्राकार, वरण, साल ये तीन (पु॰) नाम बाह करनेके हैं। प्राचीन (न॰) यह एक नाम नगर आदिके प्रान्तभागमें वांस और कां टे आदिके बेष्टनका है ॥ ३ ॥ भित्ति (छी०), कुड्य (न०) ये दो नाम भीतके हैं। एड्क यह एक (न०) नाम हिश्योंसिहत भीतका है। गृह, गेह, उदवसित, वेश्मन् (नांत), सम्मन (नांत), निकेतन ॥ ४ ॥ निकांत, परत्य, सदन, भवन, अगार, मन्दिर, गृह, निकाय्य, निलय, आलय ये सोलह नाम घरके हैं। तहां गृहरान्द बहुवचनमें (पु॰) है शेष (न॰) हैं गेहशब्द (पु॰) भी है ॥ ५॥ वास, कुटी, शाला, सभा ये चार (स्त्री॰) नाम सभावरके हैं। तहां कुटीशब्द (स्त्री॰ पु॰) है । संजवन, चतुःशाल ये दो नाम आपसमें सन्मुखरूप चारज्ञाका अर्थात चौकके हैं। पर्णज्ञाका (स्त्री॰), उटज ये दो नाम वैत्यमायतनं तुल्ये वाजिशाला तु मन्दुरा ।

आवेशनं शिल्पिशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ ७ ॥

मठइलात्रादिनिल्यो गञ्जा तु मिदरागृहम् ।

गर्भागारं वासगृहमिरष्टं स्तिकागृहम् ॥ ८ ॥

" कुष्टिमोऽस्त्री निवद्धा भूश्वन्द्रशाला शिरोगृहम् । "

वातायनं गवाक्षोऽय मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

हम्यीदि धनिनां वासः प्रासादे। देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

सीधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावतादयोऽपि च ॥ १० ॥

विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

हयगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवराधनम् ॥ ११ ॥

मुनियोंके घरके हैं। तहां उटजराब्द (पु॰ न॰) है ॥ ६ ॥ चैत्य, आयतन ये दो (न॰) नाम यज्ञके स्थानभेदके हैं । वाजिशाला, मन्दुरा ये दो (स्त्री॰) नाम अश्वज्ञालाके हैं। आवेज्ञन (न॰), ज्ञिलिक्जाला (स्त्री॰) ये दो नाम सुनार आदिकी शास्त्रके हैं । प्रपा, पानीयशास्त्रिः का ये दो (स्त्री॰) नाम प्याउन्ने हैं ॥७॥ मठ (पु॰) यह एक नाम शिष्य संन्यासी आदिकोंके स्थानका है। गंजा (स्त्री॰), मदिरागृह (न॰) येदो नाम मदिराघरके हैं। गर्भागार, वासगृह ये दो (न॰) नाम गर्भस्थानके हैं। अरिष्ठ, सूतिकागृह ये दो (न॰) नाम स्विकाघरके हैं ॥ ८॥ "कुट्टिम यह एक (पु॰ न॰) नाम पत्थर आदिसे वैधी हुई पृथ्वीका है। चन्द्रशाला (स्त्री॰), शिरोगृह (न॰) ये दो नाम अ-टारीके हैं। " वातायन (न॰), गवाक्ष (पु॰) ये दो नाम झरोखाके हैं। मण्डप (पु॰न॰), जनाश्रय (पु॰) ये दो नाम मण्डफो हैं। हर्म्य यह एक (न॰) नाम धनवाळोंके स्थानका है । प्रासाद यह एक (पु॰) नाम राजधरका है ॥ ९ ॥ सौध (पु॰ न॰), राजसद्न, (न॰), उप-कार्या (स्त्री), उपकारिका (स्त्री०) ये चार नाम राजाके स्थानके हैं। स्वस्तिक यह एक (पु॰ न॰) नाम तोरणसहित चारद्वारवाळे स्थान-का है। सर्वतोभद्र यह एक (पु॰ न॰) नाम उपरके घरका ह । नद्या-वर्त्त यह एक (पु॰ न॰) नाम गोलघरका है। आदिशब्दसे अन्यगृहभी जानने ॥ १० ॥ विच्छन्दक यह एक (पु॰) नाम बढे सुन्दर घरका है। गुद्धान्तश्चावरोधश्च स्यादृष्टः श्लीममिख्याम् ।
प्रवाणप्रघणािलन्दा बहिर्द्वारमकोष्ठके ॥ १२ ॥
गृहावग्रहणी देहल्यंगणं चत्वराजिरे ।
अधस्ताद्दारुणि शिला नासा दाक्रपिर स्थितम् ॥ १३ ॥
पन्छन्नमन्तद्वारं स्यात्पश्चद्वारं तु पश्चकम् ।
वलीकनीश्रे पटलमान्तेऽथ पटलं छिदिः ॥ १४ ॥
गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।
कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुंनपुंसकम् ॥ १५ ॥
स्री द्वाद्वारं प्रतीहारः स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।
तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥ १६ ॥

ये स्वस्तिक आदि राजघरोंके भेद हैं । अन्तःपुर (न॰), अवरोधन (न॰) ॥ ११ ॥ शुद्धान्त (पु॰), अवराध (पु॰) ये चार नाम राजाओंके स्त्री-घर (रिनवास) के हैं। अट्ट (पु॰), क्षीम ये दो नाम हर्म्य आदिके पृष्ठस्थानके हैं । तहां क्षीमइ.ब्द्(पु॰ न॰) है । प्रवाण, प्रवण, आलिन्द् ये तीन (पु॰) नाम घरके बाहरके चौतरक हैं ॥ १२ ॥ गृहावग्रहणी, देहळी ये दो (स्त्री॰) नाम देहळके हैं । अंगण, चत्वर, अजिर ये तीन (न॰) नाम आंगनके हैं। शिला (स्त्री॰) यह एक नाम द्वारस्तंभके नीचे स्थित काठका है। नासा (स्त्री॰) यह एक नाम द्वारस्तंभके उपर स्थितका है ॥ १३ ॥ प्रच्छन्न, अन्तर्द्वार ये दो (न०) नाम खिडकीक हैं। पक्षद्वार, पक्षक ये दो (न॰) नाम पार्श्वदारके हैं। वळीक (पु॰ न॰), नीध (न॰) ये दो नाम परहके प्रान्तमें घरके आच्छादनके हैं। परह (न॰), छदि (स्त्री॰) ये दो नाम छातके हैं। छदिशब्द सान्तभी पाया जाता है ॥ १४ ॥ गोपानसी, वरुभी ये दो (स्त्री॰) नाम छादनके लिये टेढे काठके हैं। कपोतपालिका (स्त्री॰), विध्क ये दो नाम काठ आदिसे बने हुए पक्षीघरके हैं तहां विटंकशब्द (पु॰ न॰) है ॥ १५ ॥ ह्यार् (स्त्री॰), द्वार् (न॰), प्रतीहार् (पु॰) ये तीन नाम द्वारके हैं ! वितर्दि, वेदिका थे दो (स्त्री॰) नाम वेदीके हैं। तोरण (पु॰ न॰), बहिर्द्वार (न॰) ये दो नाम तोरणके हैं। प्रस्तार, गोपुर ये दो (न॰)

कूटं पूर्द्वीर यद्धस्तिनसस्तिसम्भय त्रिषु ।
कपाटमररं तुल्ये तद्दिष्कम्भोऽगंछं न ना ॥ १७ ॥
आरोहणं स्यात्सोपानं निःश्रेणिस्त्विधरोहिणी ।
संमार्जनी शोधनी स्यात्संकरोऽनकरस्त्रया ॥ १८ ॥
क्षिते मुखं निःसरणं संनिवेशो निकर्षणम् ।
समी संवस्थयामी वेश्मभूवीस्तुरिखयाम् ॥ १९ ॥
यामान्त उपशल्यं स्यात् सीमसीमे ख्रियामुभे ।
घोष आभीरपञ्ची स्यात्पक्कणः शबराङ्यः ॥ २० ॥
इति पुरवर्गः ॥ २ ॥

अथ शैलवर्गः ३।

महीधे शिखरिक्षाभृदद्दार्यघरपर्वताः । अद्भिगोत्रगिरियावाचलकीलक्षिलोचयाः ॥ १ ॥

नाम नगरके द्वारके हैं ॥ १६ ॥ हास्तिनख यह एक (पु॰) नाम नगरके ह्रारमें सुखपूर्वक उतरनेके लिये माटीकी सीढीके हैं। कपाट, अरर ये दो नाम किवाडके हैं और त्रिलिंगी हैं। अर्गल यह एक नाम आगलका है और (स्त्री॰ न॰) है ॥ १७ ॥ आरोहण, सोपान ये दो (न॰) नाम जीने वा सीढीके हैं। निश्रेणि, अधिराहिणी ये दो (स्त्री॰) नाम का-ष्ठकी बनी सीढीके हैं। संमार्जनी, शोधनी ये दो (स्त्री॰) नाम बुहा-रीके हैं। संकर, अवकर ये दो (पु॰) नाम कूडाकरकटके हैं॥ १८॥ मुख, निःसरण ये दो (न॰) नाम घर आदिके प्रवेश वा निकलनेके हारके हैं। संनिवेश (पु॰), निकर्षण (न॰) ये दो नाम सम्यक प्रकारसे वासस्थानके हैं। संवसथ, ग्राम ये दो (पु॰) नाम गामके हैं। वेश्मभूः (स्त्री॰), वास्तु ये दो नाम घरकी पृथ्वीके हैं । वास्तुज्ञान्द (पु॰ न॰) है ॥ १९ ॥ उपश्रहय यह एक (न॰) नाम ग्रामके समीप प्रदेशका है । सीमन, सीमा यह दो (स्त्री॰) नाम सीमाके हैं । घोष (पु॰), अभीरपह्ली (ब्री॰) ये दो नाम गोपलोगोंके गामके हैं। पक्षण, शबरालय ये दो (पु॰) नाम भीलोंके गामके हैं॥ २०॥ इति प्रस्कर्गः ॥२॥ अय शेलवर्गः । महीध्र, शिलरिन् (इनन्त), क्ष्माभृत्, अहार्य, धर, पर्वत, भद्रि, गोत्र, गिरि, यावन (नान्त), अचल, शैल, शिलोच्चय ये

छोकाछोकश्वकवाछिक्क्रदिक्षिककुरसमी । अस्तस्तु चरमक्ष्माभृदुद्यः पूर्वपर्वतः ॥ २ ॥ हिमवात्रिषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रिकः । गन्धमादनमन्ये च हेमक्रूटादयो नगाः ॥ ३ ॥ पाषाणप्रस्तरप्रावोपछाइमानः शिछा दृषत् । क्रूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्कं प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ ४ ॥ कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः स्तुः प्रस्थः सानुरक्षियाम् । उत्सः प्रस्रवणं वारिप्रवाहो निर्भरो झरः ॥ ५ ॥ दरी तु कंदरो वा स्त्री देवस्वातिबछे गुहा । गृह्वरं गण्डशैछास्तु च्युताः स्थूछोपछा गिरः ॥ ६ ॥ गृह्वरं गण्डशैछास्तु च्युताः स्थूछोपछा गिरः ॥ ६ ॥

तेरह (पु॰) नाम पर्वतंक हैं ॥ १ ॥ छोकारोक, चक्रवाल ये दो (पु॰) नाम सात द्वीपवाली पृथ्वीक प्राकारभूत पर्वतके हैं। त्रिकूट, त्रिककुत् य दो (पु॰) नाम त्रिकूट पर्वतके हैं। अस्त, चरमक्ष्मामृत् य दो (पु॰) नाम अस्ताचलके हैं। उदय, पूर्वपर्वत ये दो (पु॰) नाम उदयाचल पर्वतके हैं॥२॥ हिमवत्, निषध, विनध्य, मारुयवत्, पारियात्रिक, गंधमादन हेमकूट, (मलय, चित्रकूट, मन्दराचल) ये सब (पु॰) नाम पर्वतभेदः वाची हैं ॥ ३ ॥ पाषाण, प्रस्तर, ग्रावन् (नांत), उपल, अश्मन् (नांत), शिला, दषद् ये सात नाम पत्थरके हैं। इनमें शिला और दषद् (स्त्री॰) होष (पु॰) हैं । कूट, शिखर (न॰), द्यंग (न॰) ये तीन नाम पर्श-तके अग्रभागके हैं। तहां कृटकाब्द (पु॰ न॰) है। प्रपात, अतट, भूग ये तीन (पु॰) नाम पर्वतसे पतनस्थानके हैं ॥ ४ ॥ कटक यह एक नाम पर्वतके मध्यभागका है। तहां कटकशब्द (पु॰ न॰) है। स्तु,प्रस्य, सानु ये तीन नाम पर्वतके एक देशके हैं और तीनों शब्द (पु॰ न॰) हैं। उत्स (पु॰), प्रस्नवण (न॰) ये दो नाम जहां पानी झिरके बहुत हो जाता है उस स्थानके हैं। वारिप्रवाह, निर्झर, झर ये तीन (पु॰) नाम झिरनेके हैं ॥ ५ ॥ द्री (स्त्री॰) कन्दर ये दो नाम समान बनाई हुई फीतकी गुफाके हैं। तहां कन्दरशब्द (पु॰) और विकल्पकरके (स्री॰) है। देवखात, बिछ, गुहा, गह्नर ये चोर नाम विना बनाई हुई पर्वतकी गुफाके हैं। गुहाशब्द (स्त्री॰) शेष (न॰) हैं। गंडरील यह एक " दन्तकास्तु बहिस्तियेकप्रदेशान्निर्गता गिरेः। "
खिनः स्त्रियामाकरः स्यात् पादाः प्रत्यन्तपर्वताः।
उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिकःध्वमधित्यका॥ ७॥
धातुर्मनःशिलाद्यद्रेगैरिकं तु विशेषतः।
निकुञ्जकुञ्जी वा क्रीबे लतादिपिहितोदरे॥ ८॥
इति शैलवर्गः॥ ३॥

अथ वनौषधिवर्गः ४ । अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् । महारण्यमरण्यानी गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥ १ ॥ आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।

अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥ २ ॥

(पु०) नाम पर्वतसे गिरे हुए मोटे पत्थरका है ॥६॥ " दंतक (पु०) यह एक नाम पर्वतके तिरछे प्रदेशसे बाहर निकले हुए शुलके आकारवाले पत्थरोंका है। " खनि (स्त्री०), आकर (पु०) ये दो नाम खानके हैं। पाद, प्रत्यंतपर्वत ये दो (पु०) नाम पर्वतके समीपमें छोटे पर्वतींके हैं। उपत्थका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके नीचेवाली पृथ्वीका है। अधित्यका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके उपरकी पृथ्वीका है। अधित्यका (स्त्री०) यह एक नाम पर्वतके उपरकी पृथ्वीका है। अधि यह एक (पु०) नाम पर्वतको मनशिल आदिका है। गिरक यह एक (न०) नाम पर्वतकी धातुविशेष अर्थात् गेस्टका है। निकुज, कुल ये दो नाम छता आदिसे ढके हुए स्थानके हैं और विकल्फरके (पु०न०) ह ॥ ८॥

अध वनीषिवर्गः । अट्वी, अरण्य, विषिन, गहन कानेन, वन ये छः नाम वनके हैं। तहां अट्वीशब्द (स्त्री०) शेष (न०) हैं। महारण्य (न०), अरण्यानी (स्त्री०) ये दो नाम बड़े वनके हैं। गृहाराम, निष्कुट ये दो (पु०) नाम घरके समीप बनाये हुए बगीचेक हैं।। १॥ आराम (पु०), उपवन (न०) ये दो नाम लगाये हुए बगीचेके हैं। इसवाटि-का यह एक (स्त्री०) नाम राजमंत्री और वैश्याओंके घरमें लगाये हुए पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।
स्यादेतदेव प्रमद्वनमन्तःपुरोचितम् ॥ ३ ॥
वीध्यालिरावलिः पंक्तिः श्रेणी छेलास्तु राजवः ।
वन्या वनसमूहे स्यादंकुरोऽभिनवोद्घिदि ॥ ४ ॥
वृक्षो महीरुहः शाली विटपी पादपस्तरः ।
अनोकहः कुटः शालः पलाशी दुदुमागमाः ॥ ५ ॥
वानस्पत्यः फल्टः पुष्पात्तैरपुष्पाद्वनस्पातः ।
ओषध्यः फल्पाकान्ताः स्युरवन्ध्यः फल्पेश्रहः ॥ ६ ॥
वन्ध्योऽफल्लोऽवकेशी च फल्वान् फल्लिनः फल्ली ।
प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लन्याकोश्चिकचस्फुटाः ॥ ७ ॥
पुल्लुश्चेते विकसिते स्युरवन्ध्यादयिख्य ।
स्थाणुर्वा ना ध्रवः शंकुर्हस्वशालाशिफः क्षुपः ॥ ८ ॥

बगीचेके हैं ॥ २ ॥ आंक्रीड, उद्यान (न॰) ये दो नाम राजाके सा-धारण बगीचेके हैं। तहां आक्री दशब्द (पु॰) है। प्रमदक्त (न॰) यह एक नाम रानियोंके क्रीडावनका है ॥ ३ ॥ बीथी, आलि, आविल, पंक्तिः, श्रेणी ये पांच (स्त्री॰) नाम पंक्तिके हैं। छेखा, राजि ये दो (स्त्री॰) नाम रेखाके हैं । बन्या (स्त्री॰) यह एक नाम वनके समूहका हैं | अंकर (पु॰) यह एक नाम नये अंकरका है ॥ ४ ॥ इक्ष, मही-रुह, ज्ञाखिन (इन्नन्त), विटिपन (इन्नन्त), पादप, तरु, अनोकह, कू-टजाल, पलाजिन (इनन्त), द्व, द्वम, अगम थे तेरह (पु॰) नाम वृक्षके हैं ॥ ५ ॥ फुरुसे उपने फर्होंकरके उपरूक्षित कुयेको वा**नस्प**त्य **कह**ते हैं यह (पु॰) है । जैसे-आम आदि । फूळांके बिना फळांसे उपना वन-रपति कहलाता है। जैसे-गूलर आदि। फलपाकही है अन्त जिन्हों-का वे ओषि कहाते हैं। जसे-ब्रीहि जव आदि । अबंध्य, फलेप्रहि ये दो (पु॰) नाम जैसा काल हो उसके अनुसार फरुधारी वृक्षके हैं ॥६॥ वंध्य, अफल, अक्केशिन् (इक्नत) ये तीन नाम ऋतकालमें फलरहित वृक्षके हैं । फलवत् (तान्त), फालिन, फल्लिन् (इन्नन्त) ये तीन नाम फलवाले वृक्षके हैं । प्रफुछ, उत्फुछ, संफुछ, व्याकोश, विकन, स्फुट, फुछ ॥७॥ ये आठ नाम फूले हुए वृक्षके हैं। अवंध्यते हेके फुलुफ्यत शब्द (वि०) अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मी बल्ली तु व्रतितर्छता । छता प्रतानिनी वीरुद्धिनिन्युलप इत्यिप ॥ ९ ॥ नगाद्यारोह उच्छाय उत्सेधश्रोच्छ्यश्च सः । अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः स्थान्मूलाच्छास्नाविधस्तरोः ॥ १० ॥ समे शास्त्रालते स्कन्धशास्त्राशाले शिफाजटे । शास्त्रा शिफावरोहः स्थान्यूलाचायं गता लता ॥ ११ ॥ शिरोऽप्रं शिस्तरं वा ना मूलं बुप्नोऽङ्घिनामकः । सारो मज्जा निर त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमिस्त्रयाम् ॥ १२ ॥ काष्ठं दार्विन्धनं त्वेध इध्ममेधः समित् स्त्रियाम् । निष्कुहः कोटरं वा ना वल्लरिमेश्चरिः स्त्रियौ ॥ १३ ॥

हैं । स्थाणु (पु॰ न॰), भ्रव (पु॰), शंकु (पु॰) ये तीन नाम छांट हुए जाखाबाले बृक्षके अर्थात् ठूंटे हैं । क्षुप यह एक (पु॰) नाम छोटी डाली और जडवाल वक्षका है ॥ ८ ॥ स्तंब, गुरुम ये दा (पु॰) नाम प्रकांडरहित बक्षक हैं। बल्ली, ब्रताते, लता ये तीन (स्त्री॰) नाम बेलिके हैं। बीरुष् (धान्त स्त्री॰) गुल्मिनी (स्त्री॰), उरुप (पु॰) य तीन नाम फैली हुई वेखिके हैं ॥ ९ ॥ उच्छाय, उत्संध, उच्छय य तीन (पु॰) नाम वृक्ष आदिकी उँचाईके हैं। प्रकांड (पु॰ न॰), स्कंघ (पु॰) ये दो नाम बुक्षके मुख्से आखापर्यंत भागके हैं ॥ १० ॥ शा-खा, खता ये दो (स्त्री॰) नाम शासाके हैं। स्कंधशासा, शासा ये दो (स्त्री॰) नाम प्रधान शास्त्रांक हैं। शिका, जटा ये दो (स्त्री॰) नाम वृक्षकी जडके हैं। अवरोह यह एक (पु॰) नाम शासाकी जडका हैं। बृक्षके मूलसे अग्रभागपर्यंत चढी हुई वेल गिलोय आदिभी अवरोह कहाती है ॥ ११ ॥ शिखर यह एक नाम शिरके अग्रभागका है और (पु॰ न॰) हैं । मूल (न॰), बुन्न (पु॰), अग्निनामक (पु॰) ये तीन नाम वृक्ष आदिकी जहके हैं। सार, मज्जन (नान्त) ये दो (पु॰) नाम वृक्षके गुहेके हैं। त्वच् (चान्त स्त्री०), बल्क, बल्कल ये तीन नाम वृक्षकी छालके हैं। तहां बल्क और बल्कलकाब्द (पु॰न॰) हैं ॥१२॥ काष्ट (न॰), दारु (पु॰ न॰) ये दो नाम काठमात्रके हैं। इंधन (न॰), एचस् (सान्त न॰), इध्म (न॰), एध (पु॰), समिध् (धान्त) ये पत्रं पलाशं छदनं दछं पर्ण छदः पुमान् ।
पल्लगोऽस्त्री किसल्यं विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥ १४ ॥
वृक्षादीनां फळं सस्यं वृन्तं प्रसववन्धनम् ।
आमे फले शलादुः स्याच्छ्रष्के वानमुभे त्रिषु ॥ १५ ॥
क्षारको जालकं छीवे कलिका कोरकः पुमान् ।
स्याद्वच्छकस्तु स्तवकः कुद्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
स्वियः सुमनसः पुष्पं प्रस्नं कुसुमं सुमम् ।
मकरन्दः पुष्परसः परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥
दिहीनं प्रसवे सर्व हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।
आश्रस्यवैणवद्राक्षनेययोधेगृदं फले ॥ १८ ॥

पांच नाम सूखे हुए तृण काष्ट आदिके हैं। तहां समिध्इाब्द धकारान्त (स्त्रीं) है। निष्कुह (पु॰), कोटर ये दो नाम वक्षके छिद्रके हैं। और कोटरशब्द (पु॰न॰) हैं। वहारि, मऋरि ये दो नाम तुलसी आदिकी मंजरीके हैं और (स्त्री॰) हैं ॥ १३ ॥ पत्र, पळाज्ञा, छद्न, द्रु, पणे, छद् ये छः नाम पत्तींक हैं। तहां छद्शब्द अकारान्त (पु॰) शेष (न॰) हैं। पहन, किसलय ये दो नाम पत्ता आदिसे युत हुए शाखाके पर्वके हैं और दोनों राब्द (प्र० न०) हैं। यथा 'प्रांसे क्वीबे च पहनः ग इति तु व्याडिः। विटप यह एक नाम शाखापत्तीं के समुदायका है (पु॰न्॰) है ॥ १४ ॥ सम्य यह एक (न०) नाम बक्ष आदिक फलका है। बृंत यह एक नाम फल आदि जिसकरके बांब जाते हैं उसका है। शलाइ यह एक नाम कचे फलका है । वान यह एक नाम सूखे हुए फलका है । हालाद और वान शब्द त्रिलिंगी हैं ॥ १५ ॥ क्षारक (पु॰), जालक ये दो नाम नई कछीके हैं। तहां जालकज़ब्द (न०) है। कलिका (स्त्री॰), कोरक ये दो नाम कलीके हैं। तहां कोरकशब्द (पु॰) हैं। गुच्छक, स्तबक ये दो (पु॰) नाम कली आदिसे आकीर्ण हुई पत्तींकी गांठक हैं। कुड्मल, मुकुल ये दो नाम थोडी खिली हुई कलीके हैं और (पु॰ ने॰) हैं ॥ १६ ॥ सुमनस् (सान्त), पुष्प, प्रसून, कुसुम ये चार नाम फूलके हैं। तहां सुमनस्राब्द (स्त्री॰) शेष (न॰) हैं। मकरन्द, पुष्परस ये दो नाम फलींके मधुके हैं। पराग (पु॰), सुम-नोरजस् (सान्त न॰) ये दो नाम फूलोंकी रेणुके हैं ॥ १७ ॥ पुष्प, फल, बाहतं च फले जम्बा जम्बः श्ली जम्ब जाम्बतम् । पुष्पे जातीप्रभृतयः स्विलंगा ब्रीहयः फले ॥ १९ ॥ विदार्याद्यास्तु मूलेपि पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला । बोधिद्यमश्रल्लस्कः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥ २० ॥ अवत्थेथ कपित्थे स्युद्धित्थम्राहिमन्मथाः । तिस्मन्द्धिफलः पुष्पफलदन्तशठावपि ॥ २१ ॥ उदुम्बरो जन्तुफलो यशांगो हेमदुग्धकः । कोविदारे चमरिकः कुद्दालो यगपत्रकः ॥ २२ ॥ सत्तपणी विशालत्वक् शारदो विषमच्लदः । आरम्बचे राजवृक्षशम्याकचतुरंग्रलाः ॥ २३ ॥

मूल इन्होंमें वर्त्तमान सब (न०) हैं। और हरीतकी आदि शब्द (स्त्री०) हैं। अश्वस्थ, वैणव, प्लाक्ष, नैयग्रोध, ऐंगुद य पांचों ऋमसे पीपल, वांस, फिल्मन, वड, हींगड इन्होंके फलोंके नाम हैं और (न०) हैं ॥ १८ ॥ बाहत यह एक (न॰) नाम बडी कटेहरीके फलका है । जम्बू, जम्बु, जाम्बव ये तीन नाम जामुनके फलके हैं। तहां जंबूजब्द (स्त्री॰) इंग्रंष (न॰) हैं । जातींसे आदि स्टे पुष्पवाचक शब्द अपने २ छिंगवाले हैं और फलवाचक ब्रीहिशब्द अपने २ लिंगवाले हैं किन्तु (न०) नहीं हैं। तहां जातीशब्द (स्त्री०) ह त्रीहिशब्द (पु०) है ॥१९॥ विदारी आदि फल पुष्पवाचक शब्द स्विलिंग हैं। पाटलाशब्द, पुष्पवाचक होनेसेभी (न॰ और खिंछंग) है । जैसे-' पाटलयाः पुष्पं पाटलम् ः। बोधिद्रम, चलदल, पिप्पल, कुञ्जराञ्चन ॥ २० ॥ अश्वत्य ये पांच नाम पीपलवृक्षके हैं। कपित्थ, द्धित्थ, ग्राहिन् (इत्रन्त), मन्मथ, द्धिफल, पुष्पफल, दन्तज्ञाठ ये सात (पु॰) नाम कैथके हैं ॥ २१ ॥ उदंबर, जन्तुफल, यज्ञांग, हेमदुग्धक ये चार (पु॰) नाम गूलरके हैं। कोवि-दार, चमरिक, कुदाछ, युगपत्रक ये चार (पु॰) नाम कचनारके हैं ॥ २२ ॥ सप्तपर्ण, विशालस्वच् (चांत), शाग्द, विषमच्छद् ये चार (पु॰) नाम सातविण अर्थात् सात फ्तेवालेके हैं । आरम्बध, राजवृक्ष, सर्वितव्याधिघातकृतमालसुवर्णकाः ।
स्युर्जम्बीरं दन्तश्रद्धजम्भजम्भीरजम्भलाः ॥ २४ ॥
वरणो वरुणः सेतुस्तिकशाखः कुमारकः ।
पुंनागे पुरुषस्तुंगः केसरो देववल्लभः ॥ २५ ॥
पारिभद्रे निम्बतरुर्भन्दारः पारिजातकः ।
तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथहरतिमुक्तकः ॥ २६ ॥
वंजुलश्चित्रकृत्वाय द्वी पीतनकपीतनौ ।
आम्रातके मधूके तु गुढपुष्पमधुद्धमौ ॥ २७ ॥
वानप्रस्थमधुष्ठीली जलजेऽत्र मधूलकः ।
पीली गुढफलः संसी तस्मिस्तु गिरिसंभवे ॥ २८ ॥
अक्षोटकन्दराली द्वावंकोटे तु निकोचकः ।
पलाशे किंशुकः पणी वातपोथोथ वेतसे ॥ २९ ॥
स्थात्रपुष्पविदुरशीतवानीरवंजुलाः ।
दी परिव्याधविदुली नादेयी चाम्बुवेतसे ॥ ३० ॥

राम्याक, चतुरंगुल ॥ २३ ॥ आरेवत, व्याधिघात, कृतमाल, सुवर्णक ये आठ (पु॰) नाम अमलतासके हें । जम्बीर, दन्तराठ, जंभ, जंभीर, जंभल ये पांच (पु॰) नाम जंभीर नीबूके हें ॥ २४ ॥ वरुण, वरण, सेतु, तिक्तराख, कुमारक ये पांच (पु॰) नाम वरनाके हें । पुन्नाग, पुरुष, तुंग, केसर, देववल्लम ये पांच (पु॰) नाम केसरके हें ॥ २५ ॥ पारिभद्र, निबतरु, मन्दार, पारिजातक ये चार (पु॰) नाम नींबिहरोष वृक्षके हैं। तिनिश, स्यन्दन, नेमि, रथद्ध, अतिसक्तक ॥२६॥ वंजुल, चित्रक्त ये सात (पु॰) नाम तिवस (तेंद्धए) के हैं। पीतन, कपीतन, आम्रातक ये तीन (पु॰) नाम लामलेके हैं । मधूक, गुडपुष्प, मधूद्धम ॥२७॥ वानप्रस्थ, मधुष्ठील ये पांच (पु॰) नाम महुवेके हैं । मधूलक यह एक (पु॰) नाम जलमहुवेका है । पीलु, गुडफल, स्रंसिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु॰) नाम पीलुवृक्षके हैं ॥ २८ ॥ अक्षोट, कन्दराल ये दो (पु॰) नाम पर्वतपील अर्थात् अखरोटके हैं । अंकोट, निकोचक ये दो (पु॰) नाम पिरुतेके हैं । पलाश, किंगुक, पर्ण,वातपोथ ये चार (पु॰) नाम दाकके हैं । वेतस, ॥ २९ ॥ रथ, अभ्रपुष्प, विदुर, शीत, वानीर, वंजुल

सोभाञ्जने शियुतीहणगन्धकाक्षिबमोचकाः ।
रक्तोऽसी मधुशियुः स्यादिरष्टः फेनिलः समी ॥ ३१ ॥
बिल्वे शाण्डिल्यशैलूषी मालूरश्रीफलाविष ।
प्रक्षो जटी पर्कटो स्यात्र्यशोधो बहुपाद्दः ॥ ३२ ॥
गालवः शाबरो छोधिरतिरिटिरतल्बमार्जनी ।
आस्रश्चतो रसालोसी सहकारोऽतिसीरभः ॥ ३३ ॥
कुम्भोलूखलकं छीवे कीशिको गुग्गुलुः पुरः ।
शेलुः स्रेष्मातकः शीत लहालो बहुवारकः ॥ ३४ ॥
राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकर्नुधनुःपटः ।
गंभारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ॥ ३५ ॥
श्रीपणीं भद्रपणीं च काश्मर्यश्चाप्यथ द्वयोः ।
कर्कधूबेद्री कोलिः कोलं कुवलफेनिले ॥ ३६ ॥

य सात (पु॰) नाम वेतके हैं । परिव्याघ, विदुल, नाद्यी, अंबुवेतस ये चार (पु॰) नाम जलवेतके हैं ॥ ३० ॥ सौभांजन, शियु, तीक्ष्णगंधक, अक्षीब, मोचक ये पांच (पु॰) नाम सहजनेके हैं । मधुज्ञिय़ यह एक (पु॰) नाम लाल फूलवाले सहजनेका है । अरिष्ट, फेनिल ये दो (पु॰) नाम रीठेके हैं ॥३१॥ बिल्न, ज्ञांडिल्य, ज्ञैलूष, मालूर, श्रीफल ये पांच(पु०) नाम बेलवृक्षके हैं। प्रक्ष, जटिन, पर्कटिन ये तीन (पु॰) नाम पिरुखनके हैं। न्यग्रोध, बहुपाद् , वट ये तीन (पु॰) नाम बढवृक्षके हैं ॥३२॥ गालव, शाबर, होध्र, तिरीट, तिस्व, मार्जन ये छः (पु॰) नाम होधके हैं। आम्र, चूत, रसाल ये तीन (पु॰) नाम आंबके हैं । सहकार यह एक (पु॰) नाम अत्यन्त सुगन्धवारे आंबका है ॥ ३३ ॥ कुंभ, उलूबर, कोशिक, गुग्गुलु, पुर ये पांच नाम गूगलके हैं।तहां कुंभ उल्लूखलक (न॰) शेष (पु॰) हें । रोलु, श्रेष्टमातक, शीत, उदारू, बहुवारक ये पांच (पु॰) नाम ल्हमांडेके हैं ॥ ३४ ॥ राजादन, प्रियाल, सन्नकद्व, धनुःपर ये चार (पू०) नाम चिरोंजीके हैं । राजादन क्वीबभी है । गंभारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मध्यणिका ॥ ३५ ॥ श्रीपणीं, भद्रपणीं, काश्मर्य ये सात नाम कंभारीके हैं। काश्मर्थ (प्र०) दोष (स्त्री०) हैं। कर्कन्यू, बदरी, कोलिये तीन नाम सीवीरं बदरं घोण्टाप्यथ स्थात्स्वादुकण्टकः ।
विकंकतः स्वावृक्षो प्रन्थिलो न्याप्रपादिष ॥ ३७॥
ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।
तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके ॥ ६८॥
काकेन्दुः कुलकः काकतिंदुकः काकपीलुके ।
गोलीदो झाटलो घण्टापाटलिमोंक्षमुष्कको ॥ ३९॥
तिलकः क्षुरकः श्रीमान्समा पिचुलझावुको ।
श्रीपणिका कुमुदिका कुम्भी कैढर्यकट्फलो ॥ ४०॥
अमुकः पट्टिकास्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।
न्दस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च ॥ ४१॥
तुलं च नीपप्रियककदम्बास्तु हरिप्रियः ।
वीरवृक्षोऽरुष्करोऽप्रमुखी भल्लातकी त्रिषु ॥ ४२॥

बडबेरीके हैं ऑर (पु॰ स्त्री॰) हैं। कोल, कुबल, फेनिल ॥३६॥ सौवीर, बदर, घोंटा ये छः नाम बेरके हैं। तहां घोंटा (स्त्री०) शेष (न०) हैं। स्वादुकंटक, विकंकत, स्रुवावृक्ष, ग्रंथिल, व्याघ्रपाट् ये पांच (पु॰) नाम वेहली (द्यामी) वृक्षके हैं ॥ ३७ ॥ ऐरावत, नागरंग, नादेयी, भूमिजं-बुका ये चार नाम नारंगीके हैं। प्रथम दो नाम (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं । तिंदुक, स्फूर्जक, काल्स्कंघ, शितिसारक ये चार नाम टेंभुरनी (छोटे तेंदुयों) के हैं ॥ ३८ ॥ कांकेंद्र, कुलक, काकतिन्दुक, काकपीलुक ये चार (पु॰) नाम काकतेंदू अर्थात् कुचलेके हैं । गोलीढ, झाटल, घंटापा-टिल, मोक्ष, मुष्कक ये पांच (पु॰) नाम घंटापाटिल (काली पांडिर) के हैं। घंटापाटिल (स्त्री॰) भी है ॥ ३९॥ तिलक, क्षरक, श्रीमत् (तान्त) ये तीन (पु॰) नाम फिरांस (ताल्यमखाने) के हैं। फ्लिल, झानुक ये दो (पु॰) नाम झाउके हैं। श्रीपर्णिका, कुमुदिका, कुंभी, केडर्य, कट्फल ये पांच नाम कायफलके हैं। श्रीपणिका, कुमुदिका, कुंभी (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं ॥ ४० ॥ ऋमुक, पट्टिकाख्य, पट्टिन (इक्न्त), लाक्षाप्रसादन ये चार (पु॰) नाम लाल लोधके हैं। तूद, यूप, ऋसुक, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, तूल ये छः नाम पारस पीपलके हैं। ब्रह्मदारु और तूल (न॰) शेष (पु॰) हैं ॥ ४१ ॥ नीप, प्रियक, कदंब, हरिप्रिय ये चार गईभाण्डे कंदरास्कापीतनसुपार्श्वताः ।
स्रक्षश्च तिन्तिडी चिंचाम्छिकायो पीतसारके ॥ १३ ॥
सर्जकासनवन्ध्कपुष्पात्रियकजीवकाः ।
सास्चे तु सर्जकार्श्यश्वकष्ठकाः सस्यसंबरः ॥ १४ ॥
नदीसर्जो वीरतहारिन्द्रद्धः ककुभोऽर्जुनः ।
राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायामय द्वयोः ॥ १५ ॥
इंगुदी तापसतहर्भुजे चिममृदुत्वचौ ।
पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मिलिद्वयोः ॥ १६ ॥
पिच्छा तु शाल्मली वेष्टे रोचनः कूटशाल्मिलः ।
चिरविक्वो नक्तमान्नः करजश्च करअके ॥ १७ ॥

(पु॰) नाम कदंबके हैं । वीरवृक्ष (पु॰), अरुष्कर (पु॰), अग्निमुखी (स्त्री॰), भह्रातकी (स्त्री॰), भह्रातक (पु॰), भह्रातक (न॰) ये चार नाम भिळावेके हैं। तहां भल्लातक शब्द त्रिलिंगी हैं ॥ ४२ ॥ गर्दभांड, कन्दराल, कर्पातन, सुपार्श्व, प्रक्ष ये पांच (पु॰) नाम लाखी पीपलके हैं। तितिही, चिचा, अम्छिका ये तीन (स्त्री॰) नाम इमछीके हैं। पीतसा-रक ॥ ४३ ॥ सर्जक, आसन, बंधूकपुष्प, प्रियक, जीवक ये छः (पुट) नाम आसनाके हैं। साल, सर्ज, कार्श्य, अश्वकर्णक, सस्यसंबर ये पांच (पु॰) नाम सालवृक्षके हैं ॥ ४४ ॥ नदीसर्ज, वीरतरु, इन्द्रद्व, ककुभ, अर्जुन ये पांच (पु॰) नाम कोह (अर्जुन) वृक्षके हैं । राजादन (पु॰ नः), फहाध्यक्ष (पु॰), क्षीरिका (स्त्री॰) ये तीन नाम खिरनीके हैं ॥ ४५ ॥ इंगुदी (स्त्री॰ पु॰) है। (पु॰) में इंगुद होता है। तापस-तह (पु॰) ये दो नाम हिंगनबेट (गोंदी) के हैं। भूर्ज, चर्मिन् (इन्नन्त), मृद्धत्वच् ये तीन (पु॰) नाम भोजपत्रके हैं। पिच्छिला (स्त्री॰), प्रणी (स्त्री॰), मोचा (स्त्री॰), स्थिरायु (पु॰), शाल्मिङ ये पांच नाम संभलके हैं । तहां ज्ञालमलिज्ञब्द (पु॰ न॰) है ॥ ४६ ॥ पिच्छा यह एक (स्त्री॰) नाम जांभलके गोंदका है। रोचन (पु॰), कुटशाल्मिल (पु॰ स्त्री॰) ये दो नाम काली शंभलके हैं। चिरिनिल्न, नक्तमाल, करज, करंजक ये चार (पु॰) नाम करंज़वाके हैं ॥ ४७ ॥

प्रकीर्यः प्रतिकरणः प्रतिकः कालिमारकः ।
करंजभेदाः षड्यन्यो मर्कटचङ्गारवल्लरा ॥ ४८ ॥
रोही रोहितकः प्रीह्शञ्चदीं हिमपुष्पकः ।
गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥ ४९ ॥
अरिमेदो विट्लिदिरे कदरः खिदरे सिते ।
सोमवल्कोऽप्यय व्याष्ठपुच्छगंधर्वहस्तकौ ॥ ५० ॥
एरण्ड चरुवृकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।
चंचुः पञ्चांगुलो मण्डवर्धमानव्यडम्बकाः ॥ ५१ ॥
अल्पा शमी शमीरः स्याच्छमी सक्तुफला शिवा ।
पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः ॥ ५२ ॥
श्वल्यश्च मदने शक्रपादपः पारिभद्रकः ।
भद्रदारु द्विकिल्धमं पीतदारु च दारु च ॥ ५३ ॥
प्रतिकाष्ठं च सप्त स्युदेवदारुण्यथ द्वयोः ।
पाटिलः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरहा ॥ ५४ ॥

प्रकीर्य, प्रतिकरन, प्रतिक, किलमारक ये चार (पु॰) नाम कंटिदार करंजुएके हैं। षड्प्रंथ (पु॰), मर्कट (स्ति॰), अंभारवद्धरी (स्ति॰) ये तीन करंजुएके भेद हैं ॥ ४८ ॥ रोहिन (इन्नत्त), रोहितक, प्लीह-राञ्च, दािडमपुष्पक ये चार (पु॰) नाम लाल रोहिडा (करंज) के हैं। गायत्री, बालतनय, खिद्र, दंतधावन ये चार नाम खेरके हें। गायत्री (स्ति॰) रोष (पु॰) हैं ॥ ४९ ॥ अरिमेद, विट्खिद्र ये दो (पु॰) नाम दुर्गधावले खेरके हैं। कद्र, सोमवल्क ये दो (पु॰) नाम सुपेद खेरके हैं। व्याव्रपुच्छक, गंधवहस्तक ॥ ५० ॥ एरंड, उस्त्रूक, रुचक, चित्रक, चश्चु, पश्चांगुल, मंड, वर्धमान, व्यडंबक ये ग्यारह (पु॰) नाम अरंडके हैं। इमि, राक्तफला, दिवा ये तीन (स्ति॰) नाम रामिके हैं। पिंडी-तक, मरुचक, श्वस्तन, करहाटक ॥ ५२ ॥ रास्य, मदन ये छः (पु॰) नाम मेंनफलके हैं। राक्तपादप (पु॰), पारिभद्रक (पु॰), मददारु (पु॰ न॰), द्विकिलम (न॰), पीतदारु (न॰), दारु (न॰) ॥ ५३॥ प्रतिकाष्ठ (न॰) ये सात नाम देवदारके हैं। पाटिल, पाटला, मोघा,

कृष्णवृन्ता कुबेरासी श्यामा तु महिलाहमा । लता गोवन्दिनी ग्रंद्रा प्रियंगुः फलिनी फली ॥ ५५ ॥ विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियंकश्च सा । मण्ड्कपणेपत्रोणेनटकदुङ्गदुण्दुकाः ॥ ५६ ॥ स्योनाकशुक्रनाससेदीघेवृन्तकुटन्नटाः । शोणकश्चारली तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥ ५७ ॥ अमृता च वयस्था च त्रिलिङ्गस्तु बिभीतकः । नासस्तुषः कषेफलो भूतावासः कलिद्रमः ॥ ५८ ॥ अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूत्रनामृता । हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा ॥ ५९ ॥ पीतद्वः सरलः प्तिकाष्ठं चाथ दुमोत्पलः । क्रिणेकारः परिव्याघो लक्कचो लिक्कचो हहः ॥ ६० ॥

काचस्थाली, फलेस्हा ॥ ५४ ॥ कृष्णवृंता, कुबेराक्षी ये सात (स्त्री॰) नाम पाटलके हैं । तहां पाटिल्शाब्द (पु॰) भी है । श्यामा, महिला, लता, गोवंदिनी, गुंद्रा, प्रियंगु, फिलेनी, फली ॥ ५५ ॥ विषवसेना, गंधफली, कारंभा, प्रियंक ये बारह नाम मेहदीके हैं। तहां प्रियंकशब्द (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं । मंडूकपण, पत्रोण, नट, कटूंग, टुंटुक ॥ ५६ ॥ स्योनाक, गुक्रनास, ऋक्ष, दीर्घवंत, कुटंनट, शोणक, अरल ये बारह (पु॰) नाम शोनापाठेके हैं । तिष्यंफला (स्त्री॰), आमलकी ॥ ५७ ॥ अमृता (स्त्री॰), वयस्था (स्त्री॰) ये चार नाम आंबलेके हैं । तहां आमलकी शब्द प्रिलंगी है । बिभीतक, अक्ष, तुष, कर्षफल, भूतावास, कलिद्धम ये छः नाम बहेडेके हैं । तहां बिभीतकशब्द त्रिलिंगी है अक्षशब्द आदि (पु॰) हैं ॥५८॥ अभया, अञ्यथा, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हरीतकी, हेमवती, चेतकी, श्रेयसी, शिवा ये ग्यारह (स्त्री॰) नाम हरडके हैं ॥ ५९ ॥ पीतद्व (पु॰), सरल (पु॰), पूतिकाष्ठ (न॰) ये तीन नाम देवदारविशेषके हैं । दुमोत्पल, कर्णिकार, परिव्याध ये तीन (पु॰) नाम कर्णिकार वृक्षके हैं । लकुच, लिख्नच, डहु ये तीन (पु॰) नाम

पनसः कण्टिकफलो निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः ।
काकोन्दुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥ ६१ ॥
अरिष्टः सर्वतोभद्रहिंगुनियासमालकाः ।
पिचुमंदश्च निम्बेऽथ पिच्छिलाऽगुरुशिंशपा ॥ ६२ ॥
कपिला भस्मगर्भा सा शिरीषस्तु कपीतनः ।
भाण्डलोप्यथ चाम्पेपश्चंपको हेमपुष्पकः ॥ ६३ ॥
एतस्य कलिका गन्धफली स्यादथ केसरे ।
बकुलो वञ्चलोऽशोके समी करकदाहिमा ॥ ६४ ॥
चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काश्चनाह्वयः ।
जया जयन्ती तकारी नादेयी वैजयन्तिका ॥ ६५ ॥
श्रीपर्णममिमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका ।
जयोऽथ कुटजः शको वत्सको गिरिमल्लिका ॥ ६६ ॥

ऑंड (बडहरू) वृक्षके हैं ॥ ६० ॥ पनस्, कण्टिकफरू ये दो (पु०) नाम पनसके हैं। निचुल, हिज्जल, अंबुज ये तीन (पु॰) नाम जल्वेतके भेद हैं। काकोद्धम्बरिका, फल्गु, मलयू, जघनेफला ये चार (स्त्री०) नाम काली गूलरके हैं ॥ ६१ ॥ अरिष्ट, सर्वतोभद्र, हिंगुनिर्यास, मालक, पिचमन्द्र, निब ये छः पुर्ह्मिंग नाम नीबके हैं । पिच्छिला, अगुरुक्षिज्ञपा ॥ ६२ ॥ किएला, भरमगर्भा, ये चार (स्त्री॰) नाम शीशमके हैं। जि-रीष, कपीतन, भण्डिल ये तीन (पु॰) नाम शिरसके हैं । चांपेय, चंपक, हेमपुष्पक ये तीन (पु॰) नाम सुनहरी चमेलीके हैं ॥ ६३ ॥ गंधफली यह एक (स्त्री॰) नाम पूर्वीक्त चमेलीकी कलीका है। केसर, बकुल ये दों (पु॰) नाम ऑवलवृक्ष अर्थात् बकुलके हैं। वंजुल, अशोक ये दो (पु॰) नाम अशोकवृक्षके हैं। करक, दािंडम ये दो (पु॰) नाम अ-नारके हैं ॥ ६४ ॥ चांपेय, केसर, नागकेशर, कांचनाह्रय ये (पु॰) नाम नागकेसरके हैं। जया, जयन्ती, तर्कारी, नादेयी, वैजयंतिका ये पांच (स्त्री॰) नाम अरनीके हैं ॥ ६५ ॥ श्रीपर्ण (न॰), अग्निमन्थ (पु॰), किणका (स्त्री॰), गणिकारिका (स्त्री॰), जय (पु॰) ये पांच नाम नरबेलके हैं । कुटन, शक्त, वत्सक, गिरिमाक्टिका ये चार नाम कुरैआके हैं। गिरिमाङ्किता (स्त्री॰) रोष (पु॰) हैं॥ ६६॥

एतस्येव किंगेन्द्रयवभद्रयवं फले ।
कृष्णपाकफलावित्रसुषेणाः करमदेके ॥ ६७ ॥
कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोप्यथ सिन्दुके ।
सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्मुण्डींद्राणिकेत्यपि ॥ ६८ ॥
वेणी गरा गरी देवतालो जीम्त इत्यपि ।
श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी तृणशून्यं तु मिल्लका ॥ ६९ ॥
भूपदी शीतभीरुश्च सेवास्फोटा वनोद्भवा ।
शेफालिका तु सुवहा निर्मुण्डी नीलिका च सा ॥ ७० ॥
सिताऽसौ श्वेतसुरसा भूतवेश्यय मागधी ।
गणिका यूथिकाऽम्बष्टा सा पीता हेमपुष्पिका ॥ ७१ ॥
अतिमुक्तः पुण्डुकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।
सुमना मालती जातिः सत्तला नवमालिका ॥ ७२ ॥

कर्छिंग, इन्द्रजव, भद्रजव ये तीन (त्रि॰) नाम इन्द्रजवके हैं। कृष्णपाकफल, अविद्रा, सुषेण, करमर्दक ये चार (पु॰) नाम करों-देके हैं ॥ ६७ ॥ कालस्कन्धः तमालः तापिच्छ ये तीन (प्र०) नाम तमालके हैं। सिंद्रक (पु॰), सिन्दुवार (पु॰), इन्द्रसुरस (पु॰), निर्गुण्डी (स्त्री॰), इन्द्राणिका (स्त्री॰) ये पांच नाम संभालुके हैं ॥ ६८ ॥ बेणी, गरा, गरी, देवताड, जीमृत ये पांच नाम देवदारुकि हैं । देक्ताड और जीमृत (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं । श्रीहस्तिनी, भुरुंडी य दो (स्त्री॰) नाम अरबीज्ञाकके हैं। तुणज्ञून्य (न॰), मिह्नका (स्त्री॰) ॥ ६९ ॥ भूपदी (स्त्री॰), शितभीरु (पु॰) ये चार नाम मोगरेके हैं। आस्फोटा यह (स्त्री॰) नाम वनमोगरेका है। शेफाछिका, निर्गुंडी, नीलिका ये चार (स्त्री०) नाम रानाञ्ञंभालूके हैं ॥ ७० ॥ श्वेतसरसा, भूतवेशी ये दो (स्त्री॰) नाम स्रोपेद संभालके हैं। मागधी, गणिका, यूथिका, अवष्ठा ये चार (स्त्री॰) नाम जुईके हैं। हेमपुष्पिका यह एक (स्त्री॰) नाम पीली जुईका है ॥ ७१ ॥ अतिमुक्त (पु॰), पुंडुक (पु॰), वासंती (स्त्री॰), माधवीलता (स्त्री॰) ये चार नाम कुन्दके भेदके हैं। समना, मालती, जाति ये तीन (स्त्री) नाम चमे॰ माध्यं कुन्दं रक्तकस्तु बन्धुको बन्धुजीवकः ।
सहा कुमारी तरिणरम्छानस्तु महासहा ॥ ७३ ॥
तत्र शोणे कुरवकस्तत्र पीते कुरण्टकः ।
नीछी झिण्टी द्रयोबाणा दासी चार्तगळश्च सा ॥ ७४ ॥
सेरेयकस्तु झिण्टी स्यात्तस्मिन्कुरवकोऽरुणे ।
पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्रयोः ॥ ७५ ॥
ओण्ड्रपुष्पं जपापुष्पं वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।
प्रतिहासशतप्रासचण्डातहयमारकाः ॥ ७६ ॥
करवीरे करीरे तु क्रकरप्रान्थिलावुभौ ।
उन्मत्तः कितवो धूर्तो धन्त्रः कनकाह्नयः ॥ ७७ ॥
मातुलो मदनश्चास्य फले मातुलुषुक्रके ॥ ७८ ॥
फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्कके ॥ ७८ ॥

लीके हैं। सप्तला, नवमालिका ये दो (स्त्री॰) नाम बेलमोगराके हैं ॥ ७२ ॥ माध्य, कुन्द य दो (पु॰ न॰) नाम कुन्दके हैं। रक्तक, बंधूक, बंधुजीवक ये तीन (पु॰) नाम दुपहरियाके हैं । सहा, कुमारी, तरिण ये तीन (स्त्री॰) नाम सेवतीगुलावके हैं। अम्लान (पु॰), महा-सहा (स्त्री॰) ये दो नाम आबोली (कांटेदार सेवती) के हैं ॥ ७३॥ कुरबक यह एक (पु॰) नाम छाल कुरंटेका है। कुरंटक यह एक (पु॰) नाम पीछे कुरंटा अर्थात् पीछे पियावासेका है । बाणा (स्त्री॰पु॰), दासी (श्वी॰), आर्त्तगरू (पु॰) ये तीन नाम नीली झिटीके हैं ॥ ७४ ॥ सरेयक (पु॰), झिटी (स्त्री॰) ये दो नाम कुरंटेके हैं। कुरबक यह एक (पु॰) नाम रक्तवर्ण कुरंटेका है। कुरंटक यह एक (पु॰) नाम पीले कुरंटेका है। सहचरी यहभी कुरंटेका नाम है तहां सहचरशब्द (पु॰ स्त्री॰) है ॥ ७५ ॥ ओंड्युष्प, जपायुष्प ये दो (न॰) नाम जास्बंद (गुडहरू) के हैं। बज्रपुष्प यह एक (न॰) नाम तिलोंके फलका है। प्रतिहास, शंतप्रांस, चंडात, हयमारक ॥ ७६ ॥ करवीर ये पांच (पु॰) नाम क-नरके हैं। करीर, क्रकर, ग्रंथिछ ये तीन (पु॰) नाम करीस्के हैं। ख-न्मत्त, कितव, धूर्त्त, धत्तुर, कनकाह्नय ॥ ७७ ॥ मातुरू, मदन ये सात (पु॰) नाम धत्रेके हैं । मातुलपुत्रक यह एक (पु॰) नाम धत्रेके

समीरणो मरुवकः प्रस्यपुष्पः फणिज्जकः ।
जम्बीरोऽप्यथ पर्णासे किन्निक्तं हेरकौ ॥ ७९ ॥
सितेऽर्जकोऽत्र पाठी तु चित्रको विद्वसंज्ञकः ।
अर्काद्वयुकाऽऽरफोटगणक्पिविकीरणाः ॥ ८० ॥
मन्दारश्चाकेपणोऽत्र शुक्केऽरुकंप्रतापसौ ।
शिवमञ्जी पाशुपत एकाष्ठीन्नो बुको वसुः॥ ८१ ॥
वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यिप ।
वन्तादनी छित्ररुहा गुङ्ची तिन्त्रकाऽमृता ॥ ८२ ॥
जीवन्तिका सोमवल्ली विश्वल्या मधुपण्यपि ।
मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्त्रवा ॥ ८३ ॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकणीं पीलुपण्यपि ।
पाठाऽम्बष्ठा विद्वकणीं स्थापनी श्रेयसी रसा ॥ ८४ ॥

फलका है। फलपूर, बीजपूर, रुचक, मातुलुंगक ये चार (पु०) नाम बिजोरेके हैं ॥ ७८ ॥ समीरण, मरुवक, प्रस्थपुष्प, फाणिज्जक, जंबीर ये पांच नाम सुपेद मरवाके हैं। पणीस, किटंजर, कुठेरक ये तिन (पु०) नाम पणीसके भेदके हैं॥ ७९ ॥ अर्जक यह एक (पु०) नाम सुफेद पणीसका है। पाठिन (इजन्त), चित्रक, विक्तंसंक्रक ये तीन (पु०) नाम चीतेके हैं। अर्काह्व, वसुक, आस्फोट, गणकूप, विकीरण ॥ ८०॥ मन्दार, अर्कपणे ये सात (पु०) नाम आकके हैं। रिश्वमल्ली, पाशुपत, एका-छील, बुक, वसु ये पांच नाम आकके भेदके हैं। शिवमल्ली, पशुपत, एका-छील, बुक, वसु ये पांच नाम आकके भेदके हैं। शिवमल्ली (स्त्री०) हैं। वन्दां, वृक्षादनी, वृक्षरहा, जीवन्तिका ये चार नाम अमरवलके हैं। वन्सादनी, छिन्नरहा, गुद्धां, तंत्रिका, अमृता ॥ ८२ ॥ जीवन्तिका, सोमवल्ली, विश्वल्या, मधुपणीं ये नव नाम गिलोयके हैं। मूर्वा, देवी, मधुरसा, मोरठा, तेजनी, खुवा ॥ ८३ ॥ मधुल्किंका, मधुश्रेणी, गोकणी, पील्रुपणीं ये दश नाम मरोरफलीके हैं। पाठा, अम्बष्ठा, विद्वकर्णी, स्था-

एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।
कटुः कटंभराऽशोकरे।हिणी कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥
मस्यिपत्ता कृष्णभेदी चकाङ्गी शकुलादनी ।
आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा पावृषायणी ॥ ८६ ॥
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बः किषकच्छश्च मकेटी ।
चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ॥ ८७ ॥
प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मृषिकपण्यीप ।
अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरको ॥ ८८ ॥
प्रत्यक्पणीं केशपणीं किणिही खरमञ्जरी ।
हिञ्जका बाह्मणी पद्मा भागीं ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥
बङ्गारवित्री बालेयशाकवर्षरवर्धकाः ।
मिञ्जष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ॥ ९० ॥
मण्डुकपणीं मण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।
यासो यवासो दुःस्पशे धन्वयासः कुनाशकः ॥ ९१ ॥

पनी, श्रेयसी, रसा ॥ ८४ ॥ एकाष्ठीला, पापचेली, प्राचीना, वनितिक्ता ये द्रा नाम पाठाके हैं। कटु, कटम्भरा, अशोकरोहिणी, कटुरोहिणी ॥ ८५ ॥ मत्स्यिपता, कृष्णमेदी, चक्रांगी, राकुलादनी ये आठ नाम कुटकीके हैं। आत्मग्रात, अजहा, अव्यण्डा, कण्डुरा, प्रावृषायणी ॥ ८६ ॥ ऋष्यप्रोक्ता, श्रूकिश्ति, कापिकच्छु, मर्कटी ये नव नाम कौंचके हैं। चित्रा, उपित्रत्रा, न्यप्रोधी, द्रवंती, शम्बरी, वृषा ॥ ८७ ॥ प्रत्यक्श्रेणी, सुतश्रेणी, रण्डा, मूषिकपणीं ये द्रा नाम मूषपणींके हें। यहांतक (श्री०) हैं। अपामार्ग (पु०), श्रोखरिक (पु०), धामार्गव (पु०), मयूरक (पु०) ॥ ८८ ॥ प्रत्यक्पणीं (श्री०), केशपणीं (श्री०), किणिही (श्री०), खरमञ्जरी (श्री०) ये आठ नाम उंगाके हैं। हंजिका, ब्राह्मणी, पद्मा, भार्गी, ब्राह्मणयष्टिका ॥ ८९ ॥ अगारविष्ठी, बाल्यश्राक, बर्वर, वर्षक थे नव नाम भारगीके हैं। बाल्यश्राक आदि तीन (पु०) हैं शेष (श्री०) हैं। मंजिष्ठा, विकसा, जिंगी, समंगा, काल्मेषिका ॥ ९० ॥ मण्डुकपणीं, मंडीरी, मंडी, योजनवल्ली थे

रोदनी कच्छराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।
पृत्रिपणीं पृथकपणीं चित्रपण्येक्षित्रविल्लेका ॥ ९२ ॥
कोष्ठवित्रा सिंहपुच्छी कलशी धावनी गुहा ।
निदिग्धिका स्पृशी व्याधी बृहती कण्टकारिका ॥ ९३ ॥
प्रचोदनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यिप ।
नीली काला क्वीतिकका प्रामीणा मधुपणिका ॥ ९४ ॥
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी ।
अवल्गुजः सोमराजी सुविल्लः सोमविल्लका ॥ ९५ ॥
कालमेषी कृष्णफला बाकुची प्रतिफल्याप ।
कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा ॥ ९६ ॥
उपणा पिप्पली शौण्डी कोलाऽथ करिपिप्पली ।
किपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी विश्वरः पुमान् ॥ ९७ ॥
चव्यं तु चिवका काकचिश्वीगुञ्जे तु कृष्णला ।
पलंकषा तिक्कुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ॥ ९८ ॥

नव (स्त्री॰) नाम मजीठके हैं। यास, यवास, दुःस्पर्श, धन्वयास, कुनाराक ये (पु॰) हैं ॥ ९१ ॥ रोदनो, कच्छुरा, अनन्ता, समुद्रांता, दुरारुभा ये पांच (स्त्री॰) ये दश नाम धमासेके हैं । पृश्यिपणीं, पृथक्पणीं
चित्रपणीं, अंत्रिविद्यका ॥ ९२ ॥ कोष्ट्रविन्ना, सिंहपुच्छी, करुशी, धावनी, गुहा ये नव (स्त्री॰) नाम पिठवनके हैं । निदिग्धिका, स्पृशी, व्याप्रां, बृहती, कण्टकारिका ॥ ९३ ॥ प्रचोदनी, कुरुी, क्षुद्रा, दुःस्पर्शा,
राष्ट्रिका ये दश (स्त्री॰) नाम कटेठीके हैं । नीर्छी, कार्छा, क्षीतिकका,
ग्रामीणा, मधुपणिका ॥ ९४ ॥ रंजनी, श्रीफर्छी, तुत्था, द्रोणी, दोला,
नीर्छिनी ये ग्यारह (स्त्री॰) नाम नीरुके हैं । अवल्गुज (पु॰), सोमराजी,
सुवाद्धि, सोमविद्धका ॥ ९५ ॥ कारुमेषी, कुष्णफर्छा, बाकुची, पूतिफर्छी
ये (स्त्री॰) कुरु आठ नाम बाबचीके हैं । कुष्णा, उपकुल्या, वदेही, मामधी
चफ्छा, कणा ॥ ९६ ॥ उपणा, पिप्पर्छी, शोण्डी, कोरुग ये दश (स्त्री॰)
नाम पीफ्टके हैं । करिपिप्पर्छी, कपिश्रद्धी, कोरुवद्धी, श्रेयसी, विशार य
पांच नाम गन्नपीपरके हैं । तहां विश्वराब्द (पु॰) हे शेष (स्त्री॰) हैं
॥९७॥ चन्य (न॰), चिनका (स्त्री॰) ये दो नाम चन्य (पीपरकी रुक-

गोकण्टको गोक्षरको वनगृङ्गाट इत्यपि ।
विश्वा विषा प्रतिविषातिविषोपविषारुणा ॥ ९९ ॥
ग्रङ्गी महौषषं चाथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।
ग्रतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥ १०० ॥
ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्रीनारायण्यः शतावरी ।
अहेरुस्थ पीतहुकालीयकहरिद्रवः ॥ १०१ ॥
दावीं पर्चपचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।
वचात्रगन्धा षड्यन्था गोलोभी शतपविका ॥ १०२ ॥
ग्रुक्ता हेमवती वद्यमातृसिंहची तु वाशिका ।
नृषोऽटक्षयः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः ॥ १०३ ॥
आस्फोटा गिरिकणीं स्याद्विष्णुकान्ताऽपराजिता ।
इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षुकोकिलाक्षेक्षुरक्षुराः ॥ १०४ ॥

डी) के हैं । काकिंची, गुंजा, कृष्णला ये तीन (स्त्री :) नाम चिरम-टींके हैं। परंक्षा (स्त्री॰), इक्षगंधा (स्त्री॰), श्वदंष्ट्रा (पु॰ स्त्री॰), स्वादकण्टक (पु॰) ॥ ९८ ॥ गोकण्टक (पु॰), गोक्करक (पु॰), वनजङ्गाट (पु॰) ये सात नाम गोखरूके हैं । विश्वा, विषा, उपविषा, अतिविषा, प्रतिविषा, अरुणा ॥ ९९ ॥ जुंगी, महोषध ये आठ नाम अतीसके हैं। महीषघ (न०) शेष (स्त्री०) हैं। क्षीरावी, दुग्धिका थे दो (स्त्री॰) नाम दूर्धीके हैं । ज्ञतमूली, बहुसुता, अभीरु, इन्दीवरी, वरी ॥ १०० ॥ ऋष्यप्रोक्ता, अभीरुपत्री, नारायणी, शतावरी, अहेरु ये दस (स्त्री॰) नाम शता<u>वरी</u>के हैं । पीतद्र, कालीय-क, हरिद्रव ये तीन नाम (पु॰) हैं ॥१०१॥ दार्वी, पचंपचा, दारुहरिद्रा, पर्जनी ये चार (स्त्री॰) हैं ये सात नाम दारुहरूदीके हैं। वचा, उग्रगं-धा, षहुग्रंथा, गोलोमी, शतपर्विका ये पांच (स्त्री०) नाम वचके हैं ॥ १०२ ॥ हैमवती यह एक (स्त्री०) नाम सुपेद वचका है। वैद्यमा-तु, सिंही, वाशिका ये तीन नाम (स्त्री॰) हैं वृष, अटकूष, सिंहास्य, वासक, वाजिदन्तक ये पांच (पु॰) हैं ये आठ नाम वांसाके हैं ॥१०३॥ आस्फोटा, गिरिकर्णी, विष्णुकांता, अपराजिता ये चार (स्त्री॰) नाम विष्णुकांताके हैं। इक्ष्मंघा, कांदेक्ष, कोकिलाक्ष, इक्षर, क्षर ये पांच नाम

शालेयः स्याच्छीतिशिवर्छत्रा मधुरिका मिसिः ।

मिश्रेयाप्यय सीहुण्डो वजः स्तुक् स्त्री स्तुही गुडा ॥ १०५ ॥
समन्तदुग्धाऽयो वेल्लममोघा चित्रतण्डला ।
तण्डुलश्च कृमिन्नश्च विडङ्गं पुंनपुंसकम् ॥ १०६ ॥
बला वाटचालका घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।
मृद्रीका गोस्तनी द्रक्षा स्वाद्री मधुरसेति च ॥ १०७ ॥
सर्वानुभृतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।
त्रिभण्डी रोचनी र्यामापालिन्द्यौ तु सुषेणिका ॥ १०८ ॥
काला मस्रविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेषिका ।
मधुकं क्रीतकं यष्टिमधुकं मधुयष्टिका ॥ १०९ ॥
विदारी क्षीरशुक्केक्षुगन्धा क्राष्ट्री तु या सिता ।
अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतक्षेगन्धिका ॥ ११० ॥

तालमसानेक हैं। तहाँ इक्षुगंघा (स्त्री:) शेष (पु:) हैं॥ १०४॥ शास्य (पु॰), शीतशिव (पु॰), छत्रा (स्त्री॰), मधुरिका (स्त्री॰), मिसि (स्त्री॰), मिश्रया (स्त्री॰) ये छः नाम सोंफके हैं। सीहंड (पु॰), वज्र (पु॰), स्नुह, स्नुही (स्त्री॰), गुडा (स्त्री॰), समंतदुग्घा (स्त्री॰) ये छः नाम थोहरके हैं । तहां स्नुह्मब्द (हकारांत स्त्री॰) है ॥ १०५ ॥ वेछ (पु॰न॰), अमोघा (स्त्री॰), चित्रतंदुला (स्त्री॰), तंदुल (पु॰), कृमिन्न (पु॰), विडंग ये छः नाम वायविडंगके हैं। तहाँ विडंगशब्द (पु॰ न॰) है ॥ १०६ ॥ बला, वाट्यालका ये दो (स्त्री॰) नाम खरैं। हटीके हैं। घंटारवा, राजपुष्पिका ये दो (स्त्री) नाम राजपुष्पीके हैं। मृद्वीका, गोस्तनी, द्राक्षा, स्वाही, मधुरसा ये पांच (स्त्री॰) नाम मुनका दाखके हैं ॥ १०७ ॥ सर्वानुभाते, सरहा, त्रिपुरा, त्रिवृता, त्रिवृत, त्रि-भंडी, रोचनी ये सात (स्त्री) नाम निसोतके हैं। श्यामा, पालिन्दी, सुषेणिका ॥ १०८ ॥ काला, मस्रिवदला, अर्द्धचन्द्रा, कालमेषिका य सात (स्त्री॰) नाम काली निस्तोतके हैं । मधुक (न॰), इहीतक (न॰), यष्टिमधुक (न०), मधुयष्टिका (स्त्री०) ये चार नाम मुरुहठीके हैं ॥ १०९ ॥ दिदारी, क्षीरशुद्धा, इक्षगंघा, कोब्री ये चार (स्त्री०) नाम स्पेद मुमिकोहरेके हैं। क्षीरविदारी, महाश्वेता, ऋक्षगंधिका य तीन

लाङ्गली शारदी तोयिषप्पली शकुलादनी।
सराधा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः॥ १११॥
गोपी श्यामा सारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा।
योग्यमृद्धिः सिद्धिलक्ष्म्यौ वृद्धेरप्याह्मया इमे ॥ ११२॥
कदली वारणबुसा रम्मा मोचौशुमत्पला।
काष्ठीला मुद्रपणीं तु काकमुद्रा सहेत्यिष ॥ ११३॥
वार्ताकी हिंगुली सिंही मण्टाकी दुष्प्रधावणी।
नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ॥ ११४॥
नकुलेष्टा मुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा।
विदारिगन्धांऽशुमती सालपणीं स्थिरा ध्रुवा॥ ११५॥
गुंदिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च।
भारद्वाजी तु सा वन्या शृङ्गी तु ऋषभो वृषः॥ ११६॥

(स्त्री) नाम काले भूमिकोहलेके हैं ॥ ११० ॥ लांगली, शारदी, नोयापेपली अकलादनी य चार (स्त्री) नाम जलपीपलके हैं। खराश्वा (स्त्री॰), कारवी (स्त्री॰), दीप्य (पु॰), मयूर (पु॰), छोचमस्तक (पु॰) ये पांच नाम मोरिशिखा (अजमोदी) के हैं ॥ १११ ॥ गोपी, श्यामा, सारिवा, अनंता, उत्परकारिवा ये पांच (स्त्री) नाम सरयाईके हें। यांग्य, ऋदि, सिद्धि, रूक्ष्मी ये चार नाम ऋदि औषधींके हैं योग्य (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं। और येही नाम बृद्धिऔषधिकेभी हैं ॥११२॥ कदली, वारणबुसा, रंभा, मोचा, अंग्रमत्फला, काष्टीला ये छः (स्त्री॰) नाम केलाके हैं। मुद्रपर्णी, काकमुद्रा, सहा ये तीन (स्त्री॰) नाम रानी म्रंगके हैं ॥ ११३ ॥ वार्ताकी, हिंगुळी, सिंही, भंटाकी, दुष्प्रधर्षिणी ये पांच (स्त्री॰) नाम बडी कटेलीके हैं । नाकुली, सुरसा, रास्त्रा, सुगंधा, गंधनाकुळी ॥ ११४ ॥ नकुरेष्टा, भुजंगाक्षी, छत्राकी, सुवहा ये नत्र (स्त्री॰) नाम रास्त्राके हैं । विदारिगंघा, अंशुमती, सालपणीं, स्थिरा, ध्रवा ये पांच (स्त्रीः) नाम सालवनके हैं ॥११५ ॥ तुंडिकरी, समुद्रांता, कार्पासी, बदरा ये चार (र्ह्वा०) नाम कपासके हैं। कार्पासः (पु०) है। भारद्वाजी यह एक (स्त्री॰) नाम रानी वनकपासका है। ऋंगिन (पु॰), ऋषम (पु॰), वृष (पु॰) ये तीन नाम ऋषमक औषधी

गाङ्गिरुकी नागवला शवा हस्वमवेधुका ।
धामागेवो घोषकः स्यान्महाजाली स पीतकः ॥ ११७ ॥
ज्योत्स्नी पटोलिका जाली नादेयी भूमिजम्बुका ।
स्याल्लाङ्गिल्यमिशिखा काकाङ्गी काकनासिका ॥ ११८ ॥
गोधापदी त सुवहा मुसली तालमूलिका ।
अजशृङ्गी विषाणी स्याद्रोजिह्नादार्विके समे ॥ ११९ ॥
ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्लचप्यथ द्विजा ।
हरेण रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ॥ १२० ॥
एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ।
वालुकं चाथ पालङ्क्यां मुकुन्दः कुन्दकुन्दुक् ॥ १२१ ॥
बालं दीवरवर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।
काल्लानुसार्यवृद्धाः मपुष्पशीतिशिवानि तु ॥ १२२ ॥

(कांकडासिंगी) के हैं ॥११६॥ गांगेहकी, नागबला, झषा, व्हस्वगवेधका ये चार (स्त्री :) नाम बढ़ी खरेहटीके हैं । धामार्गव, घोषक ये दो (पु:) नाम कडवी तारईके हैं। महाजाली यह एक (स्त्री :) नाम पीले वर्णकी तारईका है ॥ ११७ ॥ ज्योत्स्ती, पशेलिका, जाली ये तीन (स्त्री :)नाम परवरके हैं । नादेयी, भूमिजंबुका ये दो (स्त्री॰) नाम भूमिजामनके हैं। लांगलिकी, अग्निशिखा ये दो (स्त्री :) नाम कलहारीके हैं । काकांगी काकनासिका ये दो (स्त्री०) नाम मकोहिविशेषके हैं ॥ ११८ ॥ गोधा-पदी, सक्हा ये दो (स्त्री॰) नाम लाल लज्जावतीके हैं । मुसली, तालमू-रिका ये दो (स्त्री॰) नाम मुसलीके हैं। अनुजंगी, विषाणी ये दो (स्त्री॰) नाम मेढासींगीके हैं। गोजिह्ना, दार्विका ये दो (स्त्री॰) नाम गोभीज्ञाकके हैं ॥ ११९ ॥ ताम्बुळवर्द्धा, ताम्बुळी, नागवर्द्धा ये तीन (स्त्री॰) नाम नागरपानकी वेलिके हैं। द्विजा, हरेणु, रेणुका, कैंर्ता, क पिला, भरमगंधिनी ये छः (स्त्री॰) नाम रेणुकवीजके हैं ॥ १२० ॥ एळावालुक, ऐस्टेय, सुगंधि, हरिवालुक, वालुक ये पांच (न०) नाम अतरके हैं । पारंकी (र्स्ता॰), मुकुन्द (पु॰), कुन्द (पु॰), कुन्दुरु (पु॰ स्त्री॰) ये चार नाम पालक शाकके हैं ॥ १२१ ॥ बाळ, ऋबिर, बर्हिष्ठ, उद्चिय, केशाम्बुनाम ये पांच (न॰) नाम नेत्रवालाके हैं। का-

रीलेयं तालपणीं तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।
गन्धिनी गजभस्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥ १२३ ॥
महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी हादिनीति च ।
अग्रिज्वालासुभिन्ने तु धातकी धातुपुष्पिका ॥ १२४ ॥
पृथ्वीका चन्द्रवालेला निष्कुटिबेहुलाऽथ सा ।
स्रूभोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा ब्रुटिः ॥ १२५ ॥
व्याधिः कुष्ठं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ।
शङ्किनी चोरपुष्पी स्यात्केशिन्यथ वितुन्नकः ॥ १२६ ॥
सटामलाज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।
प्रपीण्डरीकं पौण्डर्थमथ तुन्नः कुवेरकः ॥ १२७ ॥
कृणिः कच्लः कान्तलको निद्वृक्षोऽथ राक्षसी ।
चण्डा धनहरी क्षेमदुष्पत्रगणहासकाः ॥ १२८ ॥

लानुसार्य, बृद्ध, अश्मपुष्प, शांतिशिव ॥ १२२ ॥ शैलेय ये पांच (न०) नाम शिलाजीतके हैं। तालपणीं, दैत्या, गंधकुटी, मुरा, गंधिनी ये पांच (स्त्रीः) नाम तालीसपत्रके हैं । गजमक्या, सुवहा, सुरभी, रसा ॥१२३॥ महेरुणा, कुन्दुरुकी, सल्लकी, ल्हादिनी ये आठ (स्त्री॰) नाम साल्यीके हैं। अग्निज्वाला, सुभिक्षा, धातकी, धातुपुष्पिका ये चार (स्त्री॰) नाम धायके हैं ॥ १२४ ॥ पृथ्वीका, चन्द्रवाला, एला, निष्कृटि, बहुला ये पांच (स्त्रीः) नाम इलायचीके हैं । उपकुंचिका, तुत्था, कोरंगी, त्रिपुटा, त्रिट ये पांच (स्त्री॰) नाम छोटी इलायचीके हैं ॥ १२५ ॥ व्याधि, कुष्ठ, परिभाव्य, वाप्य, पाकल, उत्पल ये छः नाम कूटके हैं । व्याधिशब्द (पु॰) शेष (न॰) हैं । शंखिनी, चोरपुर्षा, केशिनी ये तीन (स्त्री॰) नाम चोरवेष्टिके हैं । वितुन्नक ॥ १२६ ॥ झटामला, अज्झटा, ताली, शिवा, तामलकी ये छः नाम भूमिआंवलेके हैं। वितुन्नकशब्द (पु॰) होष (स्त्री॰) हैं। प्रपोंडरीक, पैंडर्य ये दो (न॰) नाम स्थलकमलके हैं। तुन्न, कुबेरक ॥ १२७ ॥ कुणि, कच्छ, कांतलक, नन्दिवृक्ष ये छः (प॰) नाम नांदरूखीके हैं। राक्षसी (स्त्री॰), चंडा (स्त्री॰), धन-हरी (स्त्री॰), क्षेम (पु॰), दुष्पत्र (पु॰), गणहासक (पु॰) ये व्याडायुधं व्यात्रनसं करजं चक्रकारकम् ।
सुिषरा विद्वमलता कपोताङ् निर्नटी नली ॥ १२९ ॥
धमन्यञ्जनकेशी च इनुईट्टाबिलासिनी ।
शुक्तिः शङ्कः खुरः कोलदलं नलमयादकी ॥ १३० ॥
काक्षी मृत्स्ना तुनिका मृत्तालकसुराष्ट्रजे ।
कुटन्नटं दाशपुरं वानयं परिपेलवम् ॥ १३१ ॥
ल्पवगोपुरगोनदंकैवर्तीमुस्तकानि च ।
ग्रंथिपणे शुकं बहेपुष्पं स्थाणयकुकुरे ॥ १३२ ॥
मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः ।
समुद्रांता वधः कोटिवषा लंकोपिकत्यिप ॥ १३३ ॥
तपस्विनी जटामांसी जिटला लोमशा मिशी ।
त्वक्पत्रमुक्तटं सृङ्गं त्वचं वोचं वराङ्गकम् ॥ १३४ ॥
कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।
ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजाती सर्वमीषधम् ॥ १३५ ॥

छः नाम किरमाणी अजमायनके हैं ॥ १२८ ॥ व्याडायुघ, व्याव्रनख, करज, चक्रकारक ये चार (न०) नाम व्याव्रनखके हें । सुषिरा, विद्वम्खता, कपोतांत्रि, नटी, नली ॥ १२९ ॥ धमनी, अंजनकेशी ये सात (स्त्री०) नाम प्रारोके हें । हनु (स्त्री०), हट्टविलासिनी (स्त्री०), शृक्त (स्त्री०), शृंख (पु०), खुर (पु०), कोलदल (न०), नख (न०) ये सात नाम नखलाके हें । आढकी (स्त्री०) ॥ १३० ॥ काशी (स्त्री०), मृत्स्त्रा (स्त्री०), तुवरिका (स्त्री०), मृत्तालक (न०), सुराष्ट्रज (न०) ये छः नाम फटकडीके हें । कुटलट, दाशपुर, वानेय, परिपेलव ॥ १३१ ॥ प्रत्य, गोपुर, गोनर्द, केवर्तामुस्तक ये आठ (न०) नाम जलमोयाके हें । ग्राथिपण, शुक्त, बहंपुष्प, स्थाणिय, कुक्तुर ये पांच (न०) नाम भटो-राके हें ॥ १३२ ॥ मरून्माला, पिश्चना, स्पृक्ता, देवी, लता, लघु, समुद्रान्ता, वधू, कोटिवर्षा, लंकोपिका ये दश (स्त्री०) नाम स्पृक्ता अर्थात पिडकाके हें ॥ १३३ ॥ तपिस्वनी, जटामांसी, जटिला, लामशा, मिक्री ये पांच (स्त्री०) नाम बाल्लुडके हैं । त्वक्षत्र, उत्कट, मृंग, त्वच, चोच, वरांगक ये छः (न०) नाम दालचीनीके हें ॥ १३४ ॥ कर्जूरक, द्रावि-

शाकाख्यं पत्रपुष्पादि तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।
विशल्याग्रिशिखानन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका ॥ १३६ ॥
स्यादृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः ।
जुङ्गो ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥ १३७ ॥
पटुपणीं हैमवती स्वणंक्षीरी हिमावती ।
हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपणी महासहा ॥ १३८ ॥
तुण्डिकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपण्यीप ।
बर्बरा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥ १३९ ॥
एलापणी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।
चाङ्गरी चुकिका दन्तशटाम्बलाम्ललोणिका ॥ १४० ॥
सहस्रवेधी चुकोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।
नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि ॥ १४१ ॥

डक, काल्पक, वेधमुख्यक ये चार (पु॰) नाम कचूरके हैं। जातिमात्रमें ओषघ्यः यह (स्त्री॰ बहुवचन) पद होता है। जब औषधिका रोग-हारिपना प्रतीत हो तब औषध इस (न॰) शब्दका प्रयोग होता है ॥ १३५ ॥ ज्ञाक यह एक (न०) नाम तरकारी आदिका है। तंडुळीय, अल्पमारिष ये दो (पु॰) नाम चौळाईके हैं। विशल्या, अग्निशिखा, अनन्ता, फल्टिनी, श्रक्रपुप्पिका य पांच (स्त्री॰) नाम इन्द्र-पुष्पी विशेषके हैं ॥ १३६ ॥ ऋक्षगन्धा, छगळांत्री, आवेगी, बृद्धदारक, जुंग य पांच नाम भिदाराके हैं। दार, जुंग (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं। 🗠 ब्राह्मी, मत्स्याक्षी, वयस्था, सोमवछरी य चार (स्त्री॰) नाम सोमलताके हैं ॥ १३७ ॥ पटुपर्णी, हैमवती, स्वर्णक्षीरी, हिमावती ये चार (स्त्री॰) नाम सनाहके हैं । हयपुच्छी, कांबाजी, माषपर्णी, महासहा ये चार (स्त्री॰) नाम राना उडदके हैं ॥१३८॥ तृंडिकेरी, रक्तफला, विविका, पीलपर्णी ये चार (स्त्री) नाम तोंडली (कुन्दरू) के हैं। बर्बरा, क-बरी, तुंगी, खरपुष्पा, अजगंधिका ये पांच (स्त्रीः) नाम कानफाडीके हैं ॥ १३९ ॥ एलापर्णी, सुवहा, रास्त्रा, युक्तरसा य चार (स्त्री॰) नाम कोलिंद्णके हैं। चांगरी, चुक्रिका, दन्तराठा, अम्बष्ठा, अम्ललोणिका ये पांच (स्त्री॰) नाम चुकाके हैं॥ १४०॥ सहस्रविधिन (इनन्त),

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।
कूर्चशीषी मधुरकः शृङ्गह्नस्वाङ्गजीवकाः ॥ १४२ ॥
किरातिको भूनिम्बोऽनार्यतिकोऽय सप्तछा ।
विमला शातला भूरिफेना चर्मकषेत्यिप ॥ १४३ ॥
वायसोली स्वादुरसा वयस्थाऽय मकूलकः ।
निकुम्भा दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुंबरपण्येपि ॥ १४४ ॥
अजमोदा त्यगन्धा ब्रह्मदर्भो यवानिका ।
मूले पुष्करकाश्मीरपद्मपत्राणि पौष्करे ॥ १४५ ॥
अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
कामिपल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यिप ॥ १४६ ॥
पद्माट दरणाख्यश्च पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥ १४७ ॥

चुक्र, अम्छवेतस्, शतवेधिन् (इत्रन्त) ये चार (पु॰) नाम अम्छवेतस-के हैं। नमस्कारी, गंडकारी, समंगा, खदिरा य चार (स्त्री) नाम ळजावन्तीके हैं ॥ १४१ ॥ जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्रवा ये पांच (स्त्री॰) नाम हरणदोडी नाम औषधिके हैं । कूर्चशीर्ष, मधुरक, कांग, ह्रखांग, जीवक ये पांच (पु॰) नाम जीवकके हैं॥१४२॥ किरातिक्त, भूनिम्ब, अनार्थतिक्त ये तीन (पु॰) नाम चिरायतेके हैं । सप्तला, विम-छा, शातला, भूरिफेना, चर्मकषा ये पांच (स्त्री॰) नाम सातलाके हैं ॥ १४३ ॥ वायसोली, खादुरसा, वयस्था ये तीन (स्त्री॰) नाम काको-लीके हैं । मकूलक (पु॰), निकुम्भ (पु॰), दन्तिका (स्त्री॰), प्रत्य-कुश्रेणी (स्त्री॰), उद्दुम्बरपणीं (स्त्री॰) ये पांच नाम जमालगोटके जडके 诺 ॥ १४४ ॥ अजमोदा, उग्रगन्धा य दो (स्त्री०) नाम अजमोदके हैं । अद्यदर्भा, यवानिका ये दो (स्त्री०) नाम अजमानके हैं। पुष्कर, काश्मीर, पद्मपत्र ये तीन (न॰) नाम पोहकरमूलके हैं ॥१४५॥ अन्यथा, अतिचरा, पद्मा, चारटी, पद्मचारिणी ये पांच (स्त्री॰) नाम स्थलकमालेनीके हैं। कांपिल्य, कर्कश, चन्द्र, रक्तांग, रोचनी ये पांच नाम रोचना (कबीला) के हैं । रोचनी (स्त्री॰) दोष (पु॰) हैं ॥ १४६ ॥ प्रपुन्नाड, एडगज, दद्दन्न, चक्रमर्दक, पद्माट, उरणाख्य ये छः (पु॰) नाम पुवाडके हैं।

छतार्केदुद्वमौ तत्र हरितेऽथ महौषधम् ।
छग्ननेवा तु शोथत्री वितुत्रं सुनिषणकम् ।
स्याद्वातकः शीतछोऽपराजिता शणपण्यीप ॥ १४९ ॥
पारावताङ्त्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती छता ।
वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्रायन्ती बङभाद्रेका ॥ १५० ॥
विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।
मार्कवो भृद्धराजः स्यात्काकमाची तु वायसी ॥ १५१ ॥
शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः ।
अवाक्पुष्पी कारवी च सरणा तु प्रसारिणी ॥ १५२ ॥
तस्यां कटंभरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।
जनी जत्का रजनी जतुकुचक्रवितनी ॥ १५३ ॥

पलांड, मुकन्दक ये दो (पु॰) नाम प्याजके हैं ॥ १४७ ॥ लतार्क, दुद्रम य दो (पु॰) नाम हरी प्याजके हैं । महोषघ, ऌरान, गुंजन, अरिष्ट, महाकन्द, रसोनक ये छः नाम छह्युनके हैं । महीषध, गृंजन शब्द(न॰) र्शेष (पु॰) हैं ॥ १४८ ॥ पुनर्नवा, शोथन्नी ये दो (स्त्री॰) नाम सांठीके हैं । वितुन्न, सुनिषण्णक ये दो (न०) नाम कुरडूके हैं । वातक (पु०), হানিন্ত (पु॰), अपराजिता (स्त्री॰), হাणपणीं (स्त्री॰) ये चार नाम गोकर्णीक हैं॥१४९॥ पारावतांत्रि, कठभी, पण्या, ज्योतिष्मती, स्ता ये पांच (स्त्री॰) नाम मालक<u>ांग</u>न्छिके हैं । वार्षिक, त्राणमाणा, त्रायंती, बलभद्रिका य चार नाम त्रायमाण चिरायतेके फलके हैं । तहां वार्षिकशब्द (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं॥ १५०॥ विष्वक्सेनप्रिया, गृष्टि, वाराही, बदरा य चार (स्त्री :) नाम वाराही (बिलाई) कन्दके हैं । मार्कव, मंगराज ये दो (पु॰) नाम भांगरेके हैं । काकमाची, वायसी ये दो (स्त्री॰) नाम मकोहके हैं ॥ १५१ ॥ ज्ञतपुष्पा, सितच्छत्रा, अतिच्छत्रा, मधुरा, मिसि, अवाक्पुष्पी, कारवी ये सात (स्त्री॰) नाम सोंफके हैं। सरणा, प्रसा-रिणी ॥ १५२ ॥ कटंभरा, राजवला, भद्रवला ये पांच (स्त्री०) नाम रंडीप नामक औषधिके हैं । जनी, जतुका, रजनी, जतुकृत, चऋवर्तिनी

संस्पर्शाऽय शटी गन्धमूळी षड्मिन्यकेत्यिप ।
कर्चूरोऽपि पळाशोऽय कारवेळ्ठः किटळ्ळकः ॥ १५४ ॥
सुषवी चाय कुळकं पटोळिस्तिक्तकः पटुः ।
कूष्माण्डकस्तु कर्कारुस्वीरः कर्कटी स्त्रियो ॥ १५५ ॥
इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्तम्ब्यळाब्रुक्षे समे ।
चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा विशाळा त्विन्द्रवारुणी ॥ १५६ ॥
अशोंघ्रः सूरणः कन्दो गण्डीरस्तु समष्ठिळा ।
कळम्ब्युपोदिका स्त्री तु मूळकं हिळमोचिका ॥ १५७ ॥
वास्तुकं शाकभेदाः स्युदूवी तु शतपविका ।
सहस्रवीयोभार्यव्यो रुहाऽनन्ताऽय सा सिता ॥ १५८ ॥
गोळोमी शतवीयो च गण्डाळी शकुळाक्षका ।
कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् ॥ १५९ ॥

॥ १५३ ॥ संस्पर्का ये छः (स्त्री॰) नाम चाकवत शाकके हैं। शर्टी, (स्त्री॰), गंधमूली (स्त्री॰), पहुमंथिका (स्त्री॰), कर्चूर (पु॰), पलाञा (पु॰) ये पांच नाम कपूरकचरीके हैं । कारवेछ (पु॰), कठिछक (पु॰) ॥ १५४ ॥ सुष्वी (स्त्री॰) ये तीन नाम करेलेके हैं । कुलक (न॰), पटोल, तिक्तक, पटुं (तीन पु॰) ये चार नाम कडवी परव्लके हैं। कृष्मांडक, कर्कार ये दो (पु॰) नाम कोहलेके हैं । उर्वार, कर्कटी ये दो नाम ककडीके हैं। तहां उर्वारु और कर्कटीशब्द (स्त्री॰) हैं ॥ १५५ ॥ इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी ये दो (स्त्री०) नाम कडवी तूंबीके हैं । तुंबी, अलावू ये दो (स्त्री॰) नाम काछी तूंबीक हैं । चित्रा, गवाक्षी, गोडुंबा ये तीन (स्त्री॰) नाम जेठऊककरीके हैं। विशाला, इन्द्रवारुणा ये दो (स्त्रीः) नाम इंद्रवारुणिके हैं ॥ १५६ ॥ अशीव्र, सूरण, कन्द् ये तीन (पु॰) नाम जमीकन्दके हैं । गंडीर (पु॰), समष्ठिला (स्त्री॰) ये दो नाम कड़ये जमीकन्दके हैं। कलंबी यह एक (स्त्री॰) नाम बांसकी आकृतिवाले शाकका है। उपोदिका यह एक (स्त्री॰) नाम पुदीना शाकका है। मूलक यह एक (न॰) नाम मूलीशाकका है। हिल-मोचिका यह एक (स्त्री॰) नाम हल्हंची ज्ञाकका है॥ १५७ ॥वास्तुक यह एक (न॰) नाम वथुआ शाकका है। ये शाकोंके भेद हैं। दूर्वा, शतपर्विका, सहस्रवीर्या, भागवी, रहा, अनन्ता ये छः (स्त्री॰) नाम दुबके हैं ॥ १५८ ॥ गोलोमी, शतवीयी, गण्डाली, शकुलाक्षका ये चार

स्याद्धद्रमुस्तको गुन्द्रा चूढाला चक्रलोचटा ।
वंशे त्वक्सारकमीरत्वचिसारतृणध्वजाः ॥ १६० ॥
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ।
वेणवः कीचकास्ते स्युर्थे स्वनन्त्यनिलोद्धताः ॥ १६१ ॥
प्रान्थिनी पर्वपरुषी गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।
नहस्तु धमनः पोटगलोऽथो काशमिस्त्रयाम् ॥ १६२ ॥
इक्षुगन्धा पोटगलः पुंति भूम्नि तु बल्वजाः ।
रसाल इक्षुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारकादयः ॥ १६३ ॥
स्याद्धीरणं वीरतरं मूलेऽस्योशीरमास्त्रियाम् ।
अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥ १६४ ॥
लामज्जकं लघुल्यमवदाहेष्टकापथे ।
नहादयस्तृणं गर्भुच्ल्यामाकप्रमुखा अपि ॥ १६५ ॥

(स्त्री॰) नाम सुपेद दूबके हैं । कुरुविन्द, मेधनामन्, (दो पु॰) मुस्ता, (स्त्री॰) मुस्तक (पु॰ न॰) ये चार नाम नागरमोथेके हैं। मेघनामा यान मेघक नाम इसकेभी वाचक होते हैं ॥ १५९ ॥ भद्रमुस्तक (पु॰), गुन्द्रा (स्त्री॰) ये दो नाम भद्रमोथाके हैं। चूडाला, चक्रला, उच्चटा ये तीन (स्त्री) नामभी माथाविशेषके हैं । वंश, त्वक्सार, कर्मार, त्विचसार, तृणध्वज ॥१६० ॥ शतपर्वेन्, (नांत), यवफल, वेणु, मस्कर, तेजन ये दश (पु॰) नाम वांसके हैं। की चक यह एक (पु॰) नाम कीडोंसे किथे हुए छिद्रोंमें होकर गये हुए प्वनके झकारोंसे इान्द्रवाल वांसका है ॥ १६१ ॥ य्रांथ, पर्वन् (नांत), परुस् ये तीन नाम बांस आदिकी गांठके हैं । तहां ग्रंथिशब्द (पु॰) शेष (न॰) हैं । गुंद्र, तेजनक, शर ये तान (पु॰) नाम शरके हैं। नड, धमन, पोटगरू ये तीन (पु॰) नाम नरशास्त्रे हैं । काञ्च॥१६२॥ इक्षुगन्धा (स्त्री॰), पोटगरू (पु॰) ये तीन नाम काराके हैं । तहां काराशब्द (पु॰न॰) है । बल्वज यह एक नाम छवाका बहुवचनमें (पु॰) है। रसाछ, इक्षु ये दो (पु॰) नाम ईस्के हैं । पुण्डू, कान्तारक ये दो (पु॰) नाम ईस्के भेद (पौंडा) के हैं ॥१६३॥ वीरण, वीरतर ये दो (न०) नाम तृणभेदके हैं। उज्ञीर, अभय, नलद्, सेन्य, अमृणाल, जलाज्ञय ॥ १६४ ॥ लामज्जक, **रुबुलय, अवदाह, इ**ष्टका**पथ ये द्रा नाम वीरणवृक्षकी जड अधीत् स्वस**-

अस्ती कुरं कुथो दभेः पवित्रमय कत्तृणम् ।
पौरसीगन्धिकध्यामदेवजग्धकरीहिषम् ॥ १६६ ॥ ।
छत्रातिच्छत्रपालन्नौ मालातृणकभूस्तृणे ।
शब्पं बालतृणं घासो यवसं तृणमर्जुनम् ॥ १६७ ॥
तृणानां संहतिस्तृण्या नडचा तु नडसंहतिः ।
तृणराजाह्वयस्तालो नालिकरस्तु लाङ्गली ॥ १६८ ॥
घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरोऽस्य तु ।
फलमुद्देगमेते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥ १६९ ॥
खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्वमाः ।
इति वनीषधिवर्गः ॥ १ ॥

के हैं । तहां उज्ञारज्ञब्द (पु॰न॰) रोष (न॰) हैं । नड आदि शब्द तृण जातिके वाचक हैं । गर्मुत् (स्त्री॰), श्यामाक (पु॰) इत्यादि राज्दभी त्णजातिवाचकही हैं । यहां प्रमुखशब्दसे कुशुआदि कांगनीका दूब आ-दिका ग्रहण है ॥१६५॥ कुरा, कुथ (पु०), दर्भ (पु०), पवित्र (न०) ये चार नाम डाभके हैं । तहां कुञ्जिब्द (पु॰ न॰) है । कन्नुण, पीर, सीग-न्धिक, ध्याम, देवजग्धक, रौहिष ये छः (न०) नाम रोहिषनुणके हैं॥१६६॥ छत्रा (स्त्री॰), अतिच्छत्र (पु॰),पारुन्न (पु॰), मारुातृणक (न॰), भूस्त्रण (न॰) ये पांच नाम जलतृणके हैं । शब्प, बालतृण ये दो (न॰) नाम कोमल तिनके हैं। घास (पु॰), यत्रस (पु॰न॰) ये दो नाम गी आदिके चरने योग्य तृणके हैं। तृण, अर्जुन ये दो (न॰) नाम तृणमा-त्रके हैं ॥ १६७ ॥ तृण्या यह एक (स्त्री॰) नाम तृणोंके समूहका है। नडचा यह एक (स्त्री॰) नोम नडोंके समूहका है। तृणराजाह्निय, ताल ये दो (पु॰) नाम ताडके हैं। नालिकेर (पु॰), लांगली (स्त्री॰) ये दो नाम नारियलके हैं ॥ १६८ ॥ घोंटा, पूग, क्रमुक, गुवाक, खपुर ये पांच नाम सुपारीके हैं। घोंटा (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं। उद्देग यह एक नाम धुपारीके फलका है। और ताल, नारिकर और पूग इन तीनोंके सहित हिंतालशब्द तालभेदका वाचीभी है ॥ १६९ ॥ खर्जूर यह एक (पु॰) नाम खनूरवृक्षका है । केतकी यह एक (स्त्री॰) नाम केतकीका है। ताली यह एक (स्त्री•) नाम ताडके भेदका है। खर्जूरी यह एक (स्त्री॰) नाम खजरके भेदका है। ये तुणवृक्ष हैं। इति वनीषिधक्रीः॥४॥

अथ सिंहादिवर्गः ५।

सिंहो मृगेन्द्रः पश्चास्यो हयेक्षः केसरी हरिः।
" कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाश्चनः।
पुण्डरीकः पश्चनखित्रकायमृगद्धिषः॥ "
शार्ट्छद्वीपिनो व्यावे तरक्षुस्तु मृगादनः॥ १॥
वराहः स्करो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः।
दंश्री घोणी स्तब्धरोमा कोडो भूदार इत्यपि॥ २॥
कपिप्लवंगप्लवगशाखामृगवलीमुखाः।
मकेटो वानरः कीशो वनौका अय भल्लुके॥ ३॥
ऋक्षाऽच्छभल्लुका गण्डके खङ्गखाङ्गनौ।
लुलायो महिषो वाहद्विषकासरसेरिभाः॥ ४॥
श्चियां शिवा भूरिमायगोमायुमृगधूर्वकाः।
श्चृगालवञ्चककोष्टुफेरुफेरवजम्बुकाः॥ ५॥।

अथ सिंहादिवर्गः । सिंह, मृगेन्द्र, पश्चास्य, हर्यक्ष, केसरिन् (इन्नन्त), हिरि ये छः नाम सिंहके हैं। "कंठरिन, मृगरिपु, मृगदृष्टि, मृगारान, पुंडरिक, पश्चनख, चित्रकाय, मृगद्विष ये सब (पु॰) नाम सिंहके हें। "रार्छुल, द्वीपिन् (इन्नन्त), व्याघ्र ये तीन (पु॰) नाम बवेराके हैं। तर्छुल, द्वीपिन् (इन्नन्त), व्याघ्र ये तीन (पु॰) नाम बवेराके हैं। तर्छुल, मृगादन ये दो (पु॰) नाम चीतेके हैं॥ १॥ (वराह, सूकर, घृष्टि, कोल, पोत्रिन् (इन्नन्त), किरि, किटि, दंष्ट्रिन् (इन्नन्त), घोणिन् (इन्नन्त), स्तब्धरोमन् (नान्त), कोड, भूदार ये बारह (पु॰) नाम ज्रूकरके हें।॥ २॥ किपि, प्लवंग, प्लवंग, ज्ञाखामृग, वलीमुख, मर्कट, वानर, कीज्ञ, वनोकस् ये नव (पु॰) नाम वानरके हैं। तहां वनोकस्यब्द सकारान्त (पु॰) है। भल्लुक ॥३॥ ऋक्ष, अच्छ, भल्लूक ये चार (पु॰) नाम रिछके हें। गंडक, खङ्ग, खङ्गिन् ये तीन (पु॰) नाम गेंडके हें। तहां खङ्गिन्रचंबद (इन्नन्त पु॰) है। लुलाय, महिष, वाह-दिषद, कासर, सेरिभ ये पांच (पु॰) नाम मेंस्वाके हें। तहां वाहदिषद-शब्द तकारान्त (पु॰) है॥ ४॥ शिवा, मूरिमाय, गोमायु, मृगधूर्त्तक, जृगाल, वंचुक, कोष्ठ, फेर, फेरन, जंबुक ये दश नाम गीद्दके हैं। शिवा-

भेतुर्विद्याले मार्जारो वृषदं सक आखुमुक् ।
त्रयो गौधरगौधारगौधेया गोधिकात्मजे ॥ ६ ॥
श्वावित्तु शल्यस्तल्लोच्चि शळ्ळी शळ्ळं शळम् ।
वातप्रमीवीतमृगः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥ ७ ॥
मृगे कुरङ्गवातायुहरिणाजिनयोनयः ।
ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यमेणस्येणमुभे त्रिषु ॥ ८ ॥
कदळी कन्दळी चीनश्चमूरुप्रियकावि ।
समूरुश्चेति हरिणा अमी अजिनयोनयः ॥ ९ ॥
कुष्णसारकरुन्यङ्कुरङ्कुशम्बररौहिषाः ।
गोकर्णपृषत्तेणद्यरोहिताश्चमरो मृगाः ॥ १० ॥
गन्धवेः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।
इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः ॥ ११ ॥

इाब्द (स्त्री॰) दोष (पु॰) हैं ॥ ५ ॥ ओत्, बिहारू, मार्जार, वृषदं-क्रक, आख्भुज् (जान्त) ये पांच (पु॰) नाम बिलावुके हैं। गौधेर, गीधार, गोधिय ये तीन (पु॰) नाम गुहरा (चन्दनगोह) के हैं। यह काळे सर्पसे गोहमें पैदा होता है ॥ ६ ॥ श्वाविध (धान्त), शल्य ये दो (प॰) नाम शेहके हैं । शल्ली (स्त्री॰), शल्ल (न॰), शल (न॰) ये तीन नाम शहके रोमके हैं । वातप्रभी, वातमृग ये दो (पु॰) नाम वातमूगके हैं। कोक, ईहामूग, वृक य तीन (पु॰) नाम भेडियेके हैं ॥ ७ ॥ मृग, करंग, वातायु, हरिण, अजिनयोनि ये पांच (पु॰) नाम मृगके हैं। ऐणेयु यह एक नाम हिरिणीके चाम तथा मांसका है। हरि-णका चाम तथा मांस आदि एण कहाता है ये दोनों शब्द त्रिलिंगी हैं ॥ ८॥ कदली (स्त्री॰), कंदली (स्त्री॰), चीन (पु॰), चमूरु (पु॰), प्रियक (पु॰), समूरु (पु॰) ये छः हरिणके भेद और कृष्ण-सार आदि अनिनयोनि कहाते हैं ॥ ९ ॥ कृष्णसार, रुरु, न्यंक, रंकु, इांबर, रोहिष, गोकर्ण, पृषत, एण, ऋश्य, रोहित, चमर ये बारह (पु॰) नाम मृगोंके भेदके हैं ॥ १० ॥ गंधर्व, शरभ, राम, समर, गक्य, शश्र, सिंह आदि और गौ आदि ये सब (पु॰) नाम पशुजातिके हैं ॥ ११ ॥

" अधोगन्ता तु सनको हकः पुंष्यं उन्दुरः । "
उन्दुरु मूषिकोऽप्यासुर्गितिका बालम्षिका ।
सरटः कुकलासः स्यान्यस्त्री गृहगोधिका ॥ १२ ॥
छ्ता स्त्री तन्तुवायोणनाममकेटकाः समाः ।
नीलङ्गुस्तु कृमिः कर्णजलीकाः शतपद्यभे ॥ १३ ॥
वृश्चिकः शूककीटः स्यादिलद्रोणी तु वृश्चिके ।
सरावतः कुरुवाः कपोतोऽप अस्याद्यः ॥ १४ ॥
पत्री श्येन उल्कस्तु वायसारातिपेषकी ।
" दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः ।"
व्याष्ट्राटः स्याद्रद्राजः सञ्जरीटस्तु सञ्जनः ॥ १५ ॥
लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्याद्य चाषः किकीदिविः ।
कलिङ्गभृङ्गधूम्याटा अय स्याच्छतपत्रकः ॥ १६ ॥

" अधोगंत, खनक, वृक, पुंध्वज, उंद्वर ये पांच (पु॰) नाम क्षेषक श्लो-कके अनुसार मूसेके हैं। " उंदुरु, मूषक, आखु ये तीन (पु॰) नाम मुस्के हैं। गिरिका, बालमूषिका ये दो (स्त्री०) नाम छोटी मुस्तिके हैं। सरट, कुकलास य दो (पु॰) नाम गिरगटके हैं। मुसली, गृहगी-धिका ये दो (स्त्री॰) नाम छिपकछीके हैं ॥ १२ ॥ छूता, तंतुबाय, ऊर्णनाम, मर्कटक ये चार नाम मकडीके हैं। तहां लूताशब्द (स्त्री॰) होष (पु॰) हैं । नी लंगु, कृमि ये दो (पु॰) नाम छोटे की डेके हैं । कर्णजलीकम् (सकारान्त), शतपदी ये दो (स्त्री॰) नाम कानखलूरेके हैं ॥ १३ ॥ आगेके करुविकदान्दतक (पु॰) हैं । वृश्चिक, जूककीट ये दो नाम उनके खानेवाले कीडेके हैं। अलि, वृश्विक, द्रोण ये तीन नाम वीक्षके हैं। (पाराक्त, कल्पक, कपोत)ये तीन नाम कब्तरके हैं। शशादन ॥ १४ ॥ पत्रिन् (इन्नन्त), श्येन ये तीन नाम शिकरा (वाज) के हैं । उल्क, वायसाराति, वेचक ये तीन नाम उल्लेक हैं। दिवांध, की शिक, घूक, दिवाभीत, निज्ञाटन ये पांच नामभी उल्लूके हैं। व्याघाट, भरद्वाज ये दो नाम लवाविशेषके हैं । खंजरीट, खंजन ये दो नाम खंजन पक्षीके हैं ॥ १५ ॥ छोहपूछ, कंक ये दो नाम कंकपक्षीके हैं। चाष, किकी दिवि ये दो नाम नी छकंठ पक्षीके हैं। किछ ग, भृंग, धूम्याट ये

दार्वाघाटोऽथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ।
कक्ताकुस्तालकृष्टः कुकुटक्यस्माकुषः ॥ १७ ॥
चटकः कलिक्कः स्यात्तस्य स्त्री चटका तयोः ।
पुमपत्ये चाटकरः स्थपत्ये चटकेव सा ॥ १८ ॥
कर्करेटः करेटः स्यात्कृकणककरी समी ।
वनिष्रयः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि ॥ १९ ॥
काके तु करटारिष्टबलिपुष्टसकृत्प्रजाः ।
ध्वास्थात्मघोषपरभृद्धलिभुग्वायसा स्रापि ॥ २० ॥
" स एव च चिरंजीवी चैकदिष्टश्च मौकुलिः । "
द्रोणकाकस्तु काकोलो दात्यूहः कालकण्डकः ।
स्रातापिचिल्ली दाक्षाय्यगृष्ठी कीरशुकी समी ॥ २१ ॥
कुद् क्रीश्चोऽय बकः कहः पुष्कराहस्तु सारसः ।
कोकश्चकश्चकवाको रथाङ्गाहयनामकः ॥ २२ ॥

तीन नाम मस्तकचूड पक्षीके हैं । शतपत्रक ॥ १६ ॥ दार्वाघाट, ये दो नाम ख़टबढई वा कठफोराके हैं। सारंग, तोकक, चातक ये तीन नाम परियाके हैं । कृकवास, तामचुड, कुछुट, चरणायुष ये चार सम्बद्धाने हैं ॥ १७ ॥ चटक, कर्लावक थे दो नाम चिडीटके हैं यहां-तक (पु॰) हैं। चटका यह एक (स्त्री॰) नाम चिडीका है। चाट-केर यह एक (पु॰) नाम इनके पुरुषरूप बच्चेका है। और चींकली हो तो चटका इस (स्त्री॰) नामसे प्रसिद्ध है ॥ १८ ॥ कर्करेट्ट, करेट्ट ये दो (पु॰) नाम करढोंक पक्षीके हैं । कुकण, क्रकर ये (पु॰) नाम करेटु (तीतरविशेष) के हैं। आगेके शब्द धार्त्तराष्ट्रतक (पु०) हैं। वनप्रिय, परभृत, कोकिल, पिक ये चार नाम कोयलके हैं॥ १९॥ काक, करट, अरिष्ट, बल्चिपुष्ट, सक्कृत्प्रजस्, ध्वांक्ष, आत्मयोष, परभृत्, ब लिमुज्, वायस ये द्रा नाम काकके हैं ॥२०॥ " चिरक्जीविन, एकदृष्टि, मौकुछि ये तीन नामभी काकके हैं। द्रोणकाक, काकोछ ये दो नाम काले काकके हैं। दात्यूह, कालकण्ठक ये दो नाम जलकाकके हैं। आ-तापिन, चिह्न ये दो नाम चीरुहके हैं। दाक्षाय्य, गृघ्र ये दो नाम गीषके हैं। कीर, शुक ये दो नाम तोतेके हैं॥ २१ ॥ कुंच् , क्रींच ये दो नाम कादम्बः कछहंसः स्यादुक्तोशकुररी समी ।
हंसास्तु श्वेतगरुतश्रकाङ्गा मानसीकसः ॥ २६ ॥
राजहंसास्तु ते चश्चचरणेळीहितैः सिताः ।
मिलिनेमिल्लिकासास्त धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥
शरारिसाटराडिश्च बछाका बसकाण्डका ।
हंसस्य योषिद्वरटा सारसस्य तु छक्ष्मणा ॥ २५ ॥
जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्परोष्णी तैछपायिका ।
वर्षणा मिक्षका नीला सरघा मधुमिक्षका ॥ २६ ॥
पतिङ्किता पुत्तिका स्याहंशस्तु वनमिक्षका ।
दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्वन्धोली वरटा द्वयोः ॥ २७ ॥

कुञ्जके हैं। बक, कह्न ये दो नाम बगलेके हैं। प्रकरशह, सारस ये नाम सारसके हैं। कोक, चक्र, चक्रवाक, रैयांग ये चार नाम चक्रवाकके हैं ॥ २२ ॥ कादम्ब, कल्हंस ये दो नाम मधुर बोलनेवाले हंसके हैं । उ-त्क्रोश, कुरर ये दो नाम कुसीके हैं। हंस, श्वेतगरुत, चक्रांग, मानसी-कस् (सान्त) ये चार नाम इंसके हैं ॥ २३ ॥ जिन्होंका शरीर सुपेद हो चींच और पैर लाल हों वे राजहंस कहाते हैं। कुछ धूम्ररंग चींच और पैरोंवाले हंस महिकाक्ष कहाते हैं। काले रंगकी चोंच और पैरोंवाले हंस धार्तराष्ट्र कहाते हैं। यहांतक (पु॰) हैं ॥ २४ ॥ शरारि, आटि, आहि य तीन (स्त्री॰) नाम अहीपक्षीके हैं। बलाका, विसकंठिका ये दो (स्त्री॰) नाम बगलेके भेद् हैं। वरटा यह एक (स्त्री॰) नाम हंस-की स्त्रीका है। एक्पणा यह एक (स्त्री॰) नाम सारसकी स्त्रीका है ॥ २५ ॥ जतुका, अजिनपत्रा ये दो (स्त्री) नाम चामिचरी (चिम-गाद्र) के हैं । परोष्णी, तैल्पायिका ये दी (स्त्री॰) नाम तेल्डूवा (गीदड) के हैं। वर्षणा, मक्षिका, नीला ये तीन (स्त्री) नाम मक्खीके हैं। सरघा, मधुमक्षिका ये दो (स्त्री॰) नाम मधुकी मक्लीके हैं ॥२६॥ पतंगिका, पुत्तिका ये दे। (स्त्री॰) नाम मनुमक्खीके भदके हैं। दंश (पु॰), वनमक्षिका (स्त्री॰) ये दो नाम डांसके हैं। दंशी यह एक (स्त्री) नाम उन डांसाँकी छोटी जातिका है। गंधोली (स्त्री), वरटा ये दो नाम गाँधीणी (वर्रमक्खी) के हैं। तहां वरटाशब्द (पृ॰स्की॰)

१ कमलके सब नाम सारम्भे बाचक है। २ चक्रके सब नाम चक्रवाके साचक है

भृजारी झीरका चीरी झिछिका च समा इमाः ।
समी पतङ्गरूरुमी सद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ २८ ॥
मधुक्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ।
द्विरेफपुष्पलिङ्भृङ्गयद्पद्रअमराल्यः ॥ २९ ॥
मयूरो बहिणो बहीं नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यिप ॥ ३० ॥
केका वाणी मयूरस्य समी चन्द्रकमेचकी ।
शिखा चूला शिखण्डस्तु पिच्छबहें नपुंसके ॥ ३१ ॥
समे विहंगविहगविहंगमविहायसः ।
शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनाहिजाः ॥ ३२ ॥
पत्तित्रपत्रिशकुनिशकुन्तशकुनाहिजाः ॥ ३२ ॥
पत्तित्रपत्रिशक्तिराविविध्करपतत्रयः ॥ ३३ ॥
नीडोद्रवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसंगमाः ।
तेषां विशेषा हारीतो मद्वः कारण्डवः प्लवः ॥ ३४ ॥

हैं ॥ २७ ॥ मृंगारी, झीरका, चीरी, झिछिका ये चार (स्त्री॰) नाम चिलट (झींगुर) के हैं । पतंग, शलभ ये दो (पु॰) नाम पतंगके हैं । स्वद्योत, ज्योतिरिंगण ये दो (पु॰) नाम पट्वीजनेके हैं ॥ २८ ॥ मधुन्नत, मधुकर, मधुलह (हान्त), मधुप, अलिन (इन्नन्त), हिरेफ, पुष्पिल्ड , मृंग, षट्पद, अमर, अलि थे ग्यारह (पु॰) नाम भौरके हैं ॥ २९ ॥ मयूर, बहिण, बहिन (इन्नन्त), निल्कंट, भुजंगभुज् (जान्त), शिखा-बल, शिखिन (इन्नन्त), केकिन (इन्नन्त), भेधनादानुलासिन (इन्नन्त) ये नव (पु॰) नाम मोरके हैं ॥ ३० ॥ केका यह एक (स्त्री॰) नाम मोरकी वाणीका है । चन्द्रक, मेचक ये दो (पु॰) नाम मोरकी चन्दाके हैं । शिखा, चूडा ये दो (स्त्री॰) नाम मोरकी शिखाके हैं । शिखंड (पु॰), पिच्छ, बई ये तीन नाम मोरके पांखके हैं । तहां पिच्छ और बई-शब्द (न॰) हैं॥३१॥ खग, विहंग, विहंग, विहंगम, विहायम् (सान्त), शलुंति, पक्षिन (इन्नन्त), राकुनि, शकुंत, शकुन, हिज ॥३२॥ पतिन्त (इन्नन्त), पिन्द (इन्नन्त), पतिन (इन्नन्त), पता, पतत, पत्ररथ, अण्डज, नगीकम् (सान्त), वार्जन (इन्नन्त), विविद्य, वि,विष्कर, पतिन्न। ३३॥ निडोद्रव, गरुरमत् (तांत),

तितिरि: कुकुभो छावो जीवंजीवश्वकोरकः ।
कोयष्टिकष्टिष्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥ ३५ ॥
गरुत्पक्षच्छदाः पत्रं पतन्नं च तन्न्रहम् ।
स्त्री पक्षतिः पक्षमूछं चंचुस्त्रोटिरुमे स्त्रियौ ॥ ३६ ॥
पदीनोडुनिसंडीनान्येताः सगगतिकियाः ।
पेशी कोशो दिहीनेण्डं कुछायो नीडमस्त्रियाम् ॥ ३७ ॥
पोतः पाकोऽभेको डिम्मः पृथुकः शावकः शिशुः ।
स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्दं युग्मं तु युगुछं युगम् ॥ ३८ ॥

पित्सत् (तान्त), नभसंगम ये सत्ताईस (पु॰) नाम पक्षिमात्रके हैं। पक्षियोंके विषयमें विशेष कहते हैं । हारीत यह एक (पु॰) नाम तिलगरू पक्षीका है। मद्भ यह एक (पु॰) नाम जलकाकका है। कारंडव यह ्एक (पु॰) नाम करहुवा (बतकाविशेष) का है। प्र्व्य यह एक (पु॰) नाम पाणकाकका है ॥ ३४ ॥ तित्तिरि यह एक (पु॰) नाम तीतरका है। कुछुभ यह एक (पु॰) नाम वनके मुर्गेका है। छाव यह एक(पु॰) नाम बटेरपक्षीका है। जीवंजीव यह एक (पु॰) नाम मोरके पंखाँके समान पंखोंवाले पक्षीका है। चकोरक यह एक (पु॰) नाम चकोरका है। कोयष्टिक, टिट्टिमक ये दो (पु॰) नाम ट्टीहरी पक्षीके हैं। वर्त्तक यह एक (पु॰) नाम बतकका है। वित्तका, सारिका, कपिंजला येतीनी एक २ (स्त्री॰) नाम बतकाविशेषके हैं ॥ ३५ ॥ गस्त (प्र॰), पक्ष (पु॰), छद (पु॰ न॰), पत्र (न॰), पतत्र (न॰), तनुस्ह (न॰) ये छः नाम पंखके हैं। पक्षाति यह एक (स्त्री॰) नाम पक्षके मूळका है। चंचु, त्रोटि ये दो नाम पक्षीकी चोंचके हैं और दोनों शब्द (स्त्री॰) हैं ॥ ३६ ॥ प्रहीन, उद्दीन, संडीन ये तीनों (न०) नाम पक्षियोंके गम-नविशेषके हैं । पेशी (स्त्री॰), कोश (पु॰ न॰), अंह ये तीन नाम अंडेके हैं। तहां अंडराब्द (न॰) है। कुळाय (पु॰), नीड ये दो नाम पक्षियोंके घरके हैं। तहां नीडशब्द (पु॰ न॰) हैं ॥ ३७ ॥ पोत, पाक, अर्भक, डिंभ, पृथुक, शावक, शिशु वे छः (पु॰) नाम छोटे बालकके हैं । स्त्रीपुंस (पु॰), मिथुन, द्वन्द (दो न॰) ये तीन नाम स्त्रीपुरू-को जोडेके हैं । युग्म, युग्छ, युग ये तीन (न॰) नाम सुग्म अत्यात

सम्हो निवहन्यूहसंदोहविसरव्रजाः ।
स्तोमीयनिकरवातवारसंघातसंच्याः ॥ ३९ ॥
समुद्रायः समुद्रयः समवायश्रयो गणः ।
स्त्रियां तु संहतिर्नृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ॥ ४० ॥
वृन्दभेदाः समैवर्गः संघतायों तु जन्तुभिः ।
सजातीयैः कुछं यूयं तिरश्चां पुंनपुंसकम् ॥ ४१ ॥
पञ्चनां समजोऽन्येषां समाजोऽय सघमिणाम् ।
स्यान्निकायः पुञ्जराञ्ची त्त्करः कूटमिश्चयाम् ॥ ४२ ॥
कापोतशौकमायूरतैत्तिरादीनि तद्रणे ।
यहासक्ताः पिश्चमुगारुकेकास्ते यहाकाश्च ते ॥ ४३ ॥
इति सिंहादिवर्गः ॥ ५॥

जोडळोंके हैं ॥ ३८ ॥ समूह, निवह, व्यूह, सन्दोह, विसर, व्रज, स्तोम, ओघ, निकर, व्रात, वार, संघात, संचय ॥ ३९ ॥ समुदाय, समुद्य, समवाय, चय, गण, संहति, वृन्द, निकुरम्ब, कदम्बक ये बाईस नाम समूहके हैं। तहां संहतिशब्द (स्त्री॰) समूहसे गणतक (पु॰) शेष (न॰) हैं ॥ ४० ॥ वृन्दभेद अत्थीत समुदायविशेष कहते हैं । वर्ग यह एक (पु॰) नाम सजातीय प्राणी अथवा अप्राणियोंके समूहका है। जैसे मनुष्यवर्ग, देशेलवर्ग ये हैं । संघ, सार्थ ये दो (पु॰) नाम सजातीय और विजातीय प्राणियोंके समूहके हैं । जैसे पशु संघ है, विणक् सार्थ है । कुछ यह एक (न॰)नाम सजातीय प्राणियोंके समूहका है। जैसे विप्रकुछ हैं । यूथ यह एक नाम सजातीय तिरछे जन्तुओंके समूहका है। जैसे मृगयूथ है। तहां यूथशब्द (पु॰न॰) है ॥४१॥ समज यह एक (पु॰) नाम पश्चांके समहका है। पशुसे अन्योंका समृह समान कहाता है और (पु०) है। निकाय यह एक (पु॰) नाम समानधर्मवालोंके समूहका है। पुऋ (पु॰), राशि (पु॰ स्त्री॰), उत्कर, (पु॰) कुट ये चार नाम अन्न आदिकी राशिके हैं। तहां कूटशब्द (पु॰ न॰) है ॥ ४२ ॥ कापोत यह एक (न॰) नाम कबूतरोंके समूहका है । शौक यह एक (न॰) नाम तोतोंके समूहका है। मायूर यह एक (न॰) नाम मोरोंके समू-हका है। तैसिर यह एक (न॰) नाम तीतरोंके समूहका है। आदि-

अथ मनुष्यवर्गः ६।

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुषा मानवा नराः ।
स्यः पुमांतः पश्चलनाः पुरुषाः पूरुषा नरः ॥ १ ॥
स्वी योषिदवला योषा नारी सीमन्तिनी वधः ।
प्रतीपदिशिनी वामा विनता महिला तथा ॥ २ ॥
विशेषास्त्वक्रना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बनी ॥ ३ ॥
सुन्दरी रमणी रामा कोपना सैव भामिनी ।
वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा वरवर्णिनी ॥ ४ ॥

शब्दसे काक यह एक (न॰) नाम काकोंके समूहका है । घरके विषे पींजरे आदिमें स्थापित किये पक्षी और मृग इनको छेक और गृह्यक कहते हैं। ये दोनों शब्द (पु॰) हैं ॥ ४३ ॥ इति सिंहादिवर्गः ॥ ५ ॥ अथ मनुष्यवर्गः । मनुष्य, मानुष, मत्त्र्यं, मनुज, मानवं, नर, पुंछ, (सकारान्त), पञ्चजन, पुरुष, पूरुष, नृ (ऋकारान्त) य ग्यारह (पु॰) नाम मनुष्योंके हैं। आगेके स्त्रीशब्दसे उदक्या शब्दतक सब (स्त्री॰) हैं ॥ १ ॥ स्त्री, योषित्, अबला, योषा, नारी, सिमंतिनी, वधू, प्रतीपद-शिनी, वामा, वनिता, महिला ये ग्यारह नाम स्त्रीके हैं ॥ २ ॥ अंगना यह एक(स्त्री॰) नाम सुन्दर अंगींवाली स्त्रीका है। भीर यह एक नाम डरपोक स्त्रीका है। काभिनी यह एक नाम कामदेवसे युत हुई स्त्रीका है। वामलोचना यह एक नाम सुन्दर नेत्रीवाली स्त्रीका है। प्रमदा यह एक नाम बहुत कामके वेगवाली स्त्रीका है। मानिनी यह एक नाम नम्रतापु-र्वक कोपवाछी स्त्रीका है। कांता यह एक नाम मनके हरनेवाली स्त्रीका है। ल्ला यह एक नाम चंचला स्त्रीका है। नितंत्रिनी यह एक नाम सुन्दर कटिप्रान्तवाली स्त्रीका है ॥ ३ ॥ सुन्दरी यह एक नाम सुन्दर अंगोंवाली स्त्रीका है। रमणी यह एक नाम रमण करनेवाली स्त्रीका है। रामा यह एक नाम मुन्दर स्त्रीका है। कोफ्ना, मामिनी थे दो नाम को-क्वाछी स्त्रीके हैं। क्रारोहा, मत्तकाशिनी, उत्तमा, व्यवर्णिनी ये चार

कृताभिषेका महिषी भोनिन्पोऽन्या नृपिस्थः ।
पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ५ ॥
भायां जायाय पुंभूकि दाराः स्यात्त कुटुम्बिनी ।
पुरंश्री सुचरित्रा तु सती साध्वी पतित्रता ॥ ६ ॥
कृतसापिककाध्यूटाधिवित्राय स्वयंवरा ।
पतिवरा च वर्षाय कुछस्री कुछपाछिका ॥ ७ ॥
कन्या कुमारी गौरी तु निमकाञ्नागतातेवा ।
स्यान्मध्यमा दृषरजास्तरुणी युवितः समे ॥ ८ ॥
समाः स्नुषाजनीवध्वश्चिरिण्टी तु सुवासिनी ।
इच्छावती कामुका स्यादृषस्यन्ती तु कामुकी ॥ ९ ॥
कान्ताथिनी तु या याति संकेतं साऽभिसारिका ।
पुंश्रछी धिंशी बन्धक्यसती कुछटेत्वरी ॥ १० ॥

नाम बहुत गुणींवाली स्त्रीके हैं ॥ ४ ॥ महिषी यह एक नाम अभिषेक हुई रानीका है। भोगिनी यह एक नाम राजाकी अन्य रानियोंका है। पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधार्भणी ॥ ५ ॥ भार्या, जाया, दार ये सात नाम विवाही हुई स्त्रीके हैं। तहां दारशब्द (पु॰) बहुवचनान्त है। कुटुम्बिनी, पुरंशी ये दो नाम कुटुम्बवाली स्त्रीके हैं। सुचारित्रा, सती, साध्वी, पतिव्रता ये चार नाम पतिव्रता स्त्रीके हैं ॥ ६ ॥ कृतसापितका, अध्यूदा, अधिविन्ना ये तीन नाम अनेक विवाहवाले पुरुषकी पहली वि-वाही स्त्रीके हैं । स्वयंवरा, पतिंवरा, वर्या ये तीन नाम स्वयंवर करनेवाली स्त्रीके हैं। कुलस्त्री, कुलपालिका ये दो नाम कुलवाली स्त्रीके हैं॥ ७ ॥ कन्मा, कुमारी ये दो नाम कुवारी खीके हैं । गौरी, नग्निका, अनागता-र्त्तेश ये तीन नाम नहीं दीखे हुए रजवाली स्त्रीके हैं। मध्यमा, दृष्टरजस् (सान्त) ये दो नाम प्रथम दीखे हुए रजवाछी स्त्रीके हैं। तरुणी, यु-वाति ये दो नाम मध्यम अवस्थावास्त्री (जवान) स्त्रीके हैं ॥८॥ स्तुषा, जनी, वधू ये तीन नाम पुत्र आदिकी स्त्रीके हैं। चिरिटी, सुवासिनी ये दो नाम थोडे उठे यौवनवाछी विवाही स्त्रीके हैं। इच्छावती, कामुका ये दो नाम कामदेक्की इच्छावाली स्त्रीके हैं। वृषस्यती, कामुकी ये दो नाम वृष सीर अश्वकी तरह भोगकी इच्छावाळी स्त्रीके हैं ॥ ९ ॥ अभिसारिका यह एक

स्विरिणी पांपुछा च स्यादिशनी शिशुना विना ।
अवीरा निष्पतिषुता विन्यस्तानिषने समे ॥ ११ ॥
आछिः ससी वयस्याऽय पतिवत्नी समर्टका ।
वृद्धा पछिक्री प्राश्ची तु प्रज्ञा प्राञ्चा तु घीमती ॥ १२ ॥
शूद्री शूद्रस्य भायो स्याच्छूद्रा तज्जातिरेव च ।
आभीरी तु महाशूद्री जातिपुर्योगयोः समा ॥ १३ ॥
अर्थाणी स्वयमयो स्यात्सित्रिया सित्रियाण्याप ।
उपाध्यायाप्युपाध्यायी स्यादाचार्योपे च स्वतः ॥ १४ ॥
आचार्योनी तु पुंयोगे स्यादयी सित्रियी तथा ।
उपाध्यायान्युपाध्यायी पोटा खी पुंसलक्षणा ॥ १५ ॥

नाम पतिकी इच्छासे संकेतस्थानको जानेवाली स्त्रीका है। पुंश्वली, ध र्षिणी, बंधकी, असती, कुलटा, इत्वरी ॥ १० ॥ स्वरिणी, पांसुला वे आठ नाम जारिणी स्त्रीके हैं। अशिश्वी यह एक नाम विना बालकवाली स्त्रीका है। अवीरा यह एक नाम पतिपुत्रसे रहित स्त्रीका है। विश्वस्ता, विधवा ये दो नाम विधवा अर्थात् रंडा स्त्रीके हैं ॥ ११ ॥ आहि, सखी, वयस्या ये तीन नाम सखीके हैं । पतिवल्नी, सभद्रका ये दो नाम सुहागिन स्त्रीके हैं। बृद्धा, पालक्री ये दो नाम बढ़ी स्त्रीके हैं। प्राज्ञी, प्रज्ञा ये दो नाम थोडी समझवाली स्त्रीके हैं। प्राज्ञा, धीमती ये दो नाम बुद्धिवाली स्त्रीके हैं ॥ १२ ॥ ब्राद्री यह एक नाम ज़दकी स्त्रीका है। ज़द्रा यह एक नाम शूद्रकी अद्भनितवाली स्त्रीका है। आभीरी, महाशूद्री य दो नाम गोपालिका स्त्रीके हैं । जातिमें और प्रयोगमें महारूद्री ऐसाही रूप बनता है ॥ १३ ॥ अर्थाणी, अर्था ये दो नाम वनेनीके हैं । क्षत्रिया, क्षत्रियाणी ये दो नाम क्षत्रिय जातिसे उत्पन्न हुई स्त्रीके हैं। उपाध्याया, उपाध्यायी ये दो नाम पंडितानी स्त्रीके हैं । आचार्या यह एक नाम अपने आप मंत्रोंका अर्थ कहनेवाळीका है ॥१४॥ आचार्यानी यह एक नाम आचार्यकी स्त्रीका है । अयीं यह एक नाम वैश्यकी स्त्रीका है । क्षत्रियी यह एक नाम क्षत्रिय स्त्रीका है । उपा-ध्यायानी, उपाध्यायी ये दो नाम पढानेवाहेकी स्त्रीके हैं । श्रीटा वीरपत्नी वीरमायो वीरमाता तु वीरसः ।
जातापत्या प्रजाता च प्रस्ता च प्रस्तिका ॥ १६ ॥
स्त्री निमेका कोटवी स्याद्तीसंचारिके समे ।
कात्यायन्यर्घवृद्धा या काषायवसनाऽघवा ॥ १७ ॥
सेरन्त्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।
असिक्री स्यादवृद्धा या प्रेष्याऽन्तः पुरचारिणी ॥ १८ ॥
वारस्त्री गणिका वेश्या कपाजीवाऽथ सा जनैः ।
सत्कृता वारमुख्या स्यात्कुट्टनी शम्मछी समे ॥ १९ ॥
विप्रश्निका त्वीक्षणिका देवज्ञाऽय रजस्वछा ।
स्त्रीधार्मेण्यविरात्रेयी मछिनी पुष्पवत्यपि ॥ २० ॥
ऋतुमत्यप्युदक्यापि स्याद्रजः पुष्पमात्वम् ।
अद्याखुर्दे।हदवती निष्कछा विगतार्तवा ॥ २१ ॥

यह एक नाम पुरुषके लक्षणोंवाली स्त्रीका है ॥ १५ ॥ वीरपत्नी, वीरभार्या ये दो नाम वीरपुरुषकी स्त्रीके हैं। वीरमात्, वीरसु ये दो नाम वीरपुरुषकी माताके हैं। जातापत्या, प्रजाता, प्रमृता, प्रमृतिका ये चार नाम प्रमुता स्त्रीके हैं ॥ १६ ॥ कोटबी यह एक नाम नंगी स्त्रीका है । द्ती, संचारिका ये दो नाम द्तीके हैं । आधी बढ़ी रंगे हुए कपड़ोंवाली और पितसे रहित हुई इन तीन विशेषणींवाली स्त्री कात्यायनी कहाती है ॥ १७ ॥ सैरंघी यह एक नाम दूसरे कामकाजमें रहनेवाछी स्वतन्त्र और बालोंका गूंथना आदि कर्म करनेवाली स्त्रीका है। जो बूढी न हो आज्ञा-वर्तिनी हो और भीतरके स्थानमें रहनेवाळी हो वह स्त्री असिक्की कहाती है ॥ १८ ॥ वारस्री, गणिका, वेश्या, रूपाजीवा ये चार नाम वेश्याके हैं । वारमुख्या यह एक नाम पुरुषोंसे सत्कार करी गई वेश्याका है । कट्ट-नी, शम्मली ये दो नाम कुटनी स्त्रीके हैं ॥ १९ ॥ विप्रश्रिका, ईक्षणिका, दैवज्ञा ये तीन नाम राभ अराभ निरूपण करनेवाली स्त्रीके हैं। रजस्वला, खीर्घीमणी, अवि, आत्रेयी, मिछनी, पुष्पवती ॥ २० ॥ ऋतुमती, उद्-क्या ये आठ नाम रजस्वला स्त्रीके हैं। यहांतक (स्त्रीक) हैं। रजम् (सांत), पुष्प, आर्त्तव ये तीन (न॰) नाम स्त्रीके रजके हैं । अद्धालु, दोहद्वती ये दो (स्त्री॰) नाम गर्भके वरासे अन्न आदि विरोक्को चाहनेवाळी स्त्री-

आपन्नसत्ता स्याह्मविष्यन्सवेली च गाँभेणी !
गणिकादेस्तु गाणिक्यं गाभिणं योवतं गने ॥ २२ ॥
पुनभूदिं विष्कृद्धा द्विस्तस्या दिधिष्ठः पतिः ।
स तु द्विजोऽमेदिविष्ः सैव यस्य कुटुम्बिनी ॥ २३ ॥
कानीनः कन्यकाजातः सुतोऽय सुभगासुतः ।
सीभागिनेयः स्यात्पारस्रेणेयस्तु परस्रियाः ॥ २२ ॥
पैतृष्वसेयः स्यात्पेतृष्वसीयश्च पितृष्वसुः ।
सुतो मातृष्वसुश्चैवं वैमान्नेयो विमातृजः ॥ २५ ॥
अय बान्धिकनेयः स्याद्रन्धुलश्चासतीसुतः ।
कौलटेरः कौलटेयो भिक्षुकी तु सती यदि ॥ २६ ॥
तदा कौलटिनयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः ।
आत्मजस्तनयः सूतुः सुतः पुत्रः क्षियां त्वमी ॥ २७ ॥

के हैं। निष्कला, विगतार्तवा ये दो (स्त्री॰) नाम मासिक धर्मसे रहि-त हुई स्त्रीके हैं ॥२१॥ आफ्नसत्वा, गुर्विणी, अन्तर्वत्नी, गर्भिणी ये चार (स्त्री॰) नाम गर्भवती स्त्रीके हैं। गाणिक्य यह एक (न॰) नाम वेश्याओं के समृहका है। गार्भिण यह एक (न॰) नाम गर्भवितयोंके समृहका है। यौवत यह एक (न॰) नाम युवतियाँके समूहका है ॥ २२ ॥ पुनर्भू विधिषु ये दो (स्त्री॰) नाम दोवार विवाही स्त्रीके हैं । विधिषु यह एक (पु॰) नाम दोवार विवाही स्त्रीके पतिका है। अग्रेदिधिष् यह एक (पु॰) नाम दोवार विवाही स्त्रीके पति द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य हो उसका है ॥ २३ ॥ कानीन यह एक (पु॰) नाम कन्याके उत्पन्न हुए पुत्रका है । सुभगासुत, सौभागिनेय ये दो (पु॰) नाम सुभ-गाके पुत्रके हैं। पारक्षेणेय यह एक (पु॰) नाम दूसरेकी स्त्रीसे उत्पन्न हुए पुत्रका है ॥ २४ ॥ पैतृष्वसेय, पैतृष्वस्थि ये दो (पु॰) नाम भु-आके प्रत्रके हैं। मातृष्वसेय, मातृष्वस्त्रीय ये दो (पु॰) नाम माताकी बहनके पुत्रके हैं। वैमात्रेय यह एक (पु॰) नाम पिताकी दूसरी खीके पुत्रका है ॥ २५ ॥ बांधिकनेय, बंधुल, असतीमुत, कौल्टेर, कौल्टेय ये पांच (पु॰) नाम कुल्टा स्त्रीके पुत्रके हैं ॥ २६ ॥ भिक्षाके लिये कुलोंमें विचरनेवाली सती स्त्री हो उसका पुत्र कीलिंटनेय, कौल्टेय इन दो (पु॰)

वाहुदुहितरं सर्वेऽपत्यं तोकं तयोः समे ।
स्वजातं त्वीरसोरस्यौ तातस्तु जनकः पिता ॥ १८ ॥
जनियत्री प्रस्मोता जननी भागिनी स्वसा ।
ननान्दा तु स्वसा पत्युर्नेष्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥ २९ ॥
भागिस्तु ज्ञात्वर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।
प्रजावती ज्ञात्वजाया मातुलानी तु मातुली ॥ ३० ॥
पतिपत्न्योः प्रसः श्रद्धः श्रद्धारस्तु पिता तयोः ।
पितुज्रोता पितृन्यः स्यान्मातुज्ञीता तु मातुलः ॥ ३१ ॥
इयालाः स्युज्ञातरः पत्न्याः स्वामिनो देवृदेवरौ ।
स्वस्रीयो भागिनेयः स्याज्ञामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥

नामोंसे प्रसिद्ध है। आरमज, तनय, सूनु, सुत, पुत्र ये पांच (पु॰) नाम पुत्रके हैं । आत्मजा, तनया, मृनु, सुता, पुत्री ॥ २७ ॥ दुहिता ये छः (स्त्री॰) नाम पुत्रीके हैं। अपत्य, तोक ये दो (पु॰) नाम संतानके हैं । औरस, उरस्य ये दो (पु॰) नाम अपनी जातिकी विवाही हुई स्त्रीमें अपने सकाशसे उपने पुत्रके हैं। तात, जनक, पितृ (ऋकारान्त) ये तीन (पु॰) नाम पिताके हैं ॥ २८ ॥ जनयित्री, प्रमु, मातृ (ऋका-रान्त), जननी ये चार (स्त्री॰) नाम माताके हैं। भगिनी, स्वस् (ऋकारान्त) ये दो (स्त्री॰) नाम बहनके हैं। ननान्द (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री॰) नाम पतिकी बहन (ननद) का है। नप्त्री, पौत्री, सुता-रमजा ये तीन (स्त्री॰) नाम पोतीके हैं ॥२९॥ यातृ (ऋकारान्त) यह एक (स्त्री॰) नाम आपसमें दिवरानी जिठानीका है । प्रजावती, आतृजाया ये दो (स्त्री॰)नाम भाईकी स्त्री (भीजाई) के हैं। मातुलानी, मातुली ये दो (स्त्री॰) नाम मामाकी स्त्री (मामी) के हैं ॥ ३०॥ श्वश्रु यह एक (स्त्री॰) नाम पति और स्त्रीकी माता (सास) का है। श्रञ्जर यह एक (पु॰) नाम पति भीर स्त्रीके पिता (सुसर) का है। पितृन्य यह एक (पु॰) नाम पिताके भाई चचाका है। मातुल यह एक(पु॰) नाम माताके भाई (मामा) का ह ॥ ३१ ॥ श्याल यह एक (पु०) नाम अपनी स्त्रीके भाई (सांछ) का है । देव (ऋकारान्त), देवर ये दो (पु॰) नाम देवर अर्थात पतिके छोटे भाईके हैं । स्वस्नीय, भागिनेय

द्वितीयं काण्डं-मनुष्यवर्गः ६।

पितामहः पिरुपिता तित्पता प्रपितामहः ।

मातुर्मातामहाद्येवं सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥
समानोदर्यसोदर्यसगर्भ्यसहजाः समाः ॥ ३४ ॥
सगोत्रबान्धवद्यातिबन्धुस्वस्वजनाः समाः ॥ ३४ ॥
सातेयं बन्धुता तेवां क्रमाद्रावसमूहयोः ।
धवः प्रियः पतिर्भर्तां जारस्त्पपितः समी ॥ ३५ ॥
अमृते जारजः कुण्डो मृते भतीर गोलकः ।
आत्रीयो आतृजो आत्रभगिन्यो आतरावृभौ ॥ ३६ ॥
मातापितरौ पितरौ मातरिपतरौ प्रस्जनियतारौ ।
सश्चश्चशुरौ सञ्जरौ पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥ ३७ ॥

ये दो (पु॰) नाम बहनके पुत्र अर्थात् भानजेके हैं । जामात् यह एक (पु॰) नाम पुत्रीके पति (जमाई) का है ॥ ३२ ॥ पितामह, पितृपितृ ये दो (पु॰) नाम दादाके हैं। प्रापतामह यह एक (पु॰) नाम पितामहके पिता (परदादा) का है। मातामह यह एक (पु॰) नाम माताके पिता (नाना) का है। प्रमातामह यह एक (पु॰) नाम मातामहके पिता (परनाना) का है । सिंपंड, सनाभि य दो (पु॰) ्नाम सात पुरुष अवधि कुळके हैं ॥ ३३ ॥ समानोदर्य, सोद्र्य, सगभ्य, सहज ये चार (पु॰) नाम एक मातासे उत्पन्न संगे भाईके हैं। सगोत्र, बांधव, ज्ञाति, बंधु, स्व, स्वजन ये छः (पु॰) नाम अपने गोत्रवालेके हैं ॥ ३४ ॥ ज्ञातेय यह एक (न॰) नाम ज्ञातियों के समूहका है । बंधता यह एक (स्त्री॰) नाम बंधुओंके समूहका है। धव, प्रिय, पाते, भर्तु (ऋकारांत) ये चार (प्र॰) नाम पतिके हैं। जार, उपपति ये दो (पु॰) नाम जारपतिके हैं ॥३५॥ कुंड यह एक (पु॰) नाम पतिके विना मरनेपर जारसे उत्पन्न पुत्रका है। गोलक यह एक (पु॰) नाम पतिके मरनेवाद जारसे उपजे पुत्रका है । श्रात्रीय, श्रातृज ये दो (पु॰) नाम भाईके पुत्र (भतीजे) के हैं। श्रातरी यह एक (पु॰) नाम भाईबहनका है यहां भगिनीशब्दका एकशेष समास हो रहा है ॥ ३६ ॥ मातापितरी, पितरी, मातरपितरी, प्रमुजनियतारी ये चार (पु॰) नाम माता पिता दोनोंके है। श्रश्नश्चरारी, श्रद्धारी ये दो (पु॰) नाम साम्

दम्पती जम्पती जायापती मार्यापती च ती ।
गर्भाशयो जरायुः स्पादुल्वं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥
स्तिमासो वेजननो गर्भी भ्रूण इमी समी ।
तृतीयामकृतिः वण्टः द्वीवः पण्डो नपुंसके ॥ ३९ ॥
शिशुत्वं शेशवं बाल्यं तारुण्यं योवनं समे ।
स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ॥ ४० ॥
पिलतं जरसा शीक्ल्यं केशादी विस्तसा जरा ।
स्यादुत्तानशया हिम्मा स्तनपा च स्तनंधयी ॥ ४१ ॥
बालस्तु स्यान्माणवको वयस्यस्तरुणो युवा ।
प्रवयाः स्थिवरो वृद्धो जीनो जीणी जरन्नपि ॥ ४२ ॥
वर्षीयान्दशमी ज्यायान्पूर्वजस्त्वाग्रियोऽमजः ।
जधन्यजे स्युः कनिष्ठयवीयोवरजानुजाः ॥ ४३ ॥

और समुर दोनोंके हैं। पुत्री यह एक (पु॰) नाम पुत्रीपुत्रका है। यहां एकरोष समास है ॥ ३७ ॥ दम्पती, जम्पती, जायापती, भार्यापती ये चार (पु॰) नाम स्त्रीपतिके हैं । गर्भाशय (पु॰), जरायु (पु॰), उरुव (न॰) ये तीन नाम जेरके हैं। कलल यह एक नाम बीर्य और रक्तके समूहका है और (पु॰ न॰) है ॥ ३८ ॥ मृतिमास, वैज-नन ये दो (पु॰) नाम प्रसवमासके हैं । गर्भ, भ्रूण ये दो (पु॰) नाम गर्भके हैं। तृतीयाप्रकृति (स्त्री॰), षंड (पु॰), ऋीब, पंड (पु॰), नपुंसक ये पाँच नाम हिजडेके हैं । तहां क्कीब और नपुंसक ये दोनों शब्द (पु॰ न॰) हैं ॥ ३९ ॥ शिशुत्व, शैशव बाल्य ये तीन (न॰) नाम बालक अवस्थाके हैं। तारुण्य, योवन ये दो (न॰) नाम युवा अवस्थाके हैं । स्थाविर, वृद्धत्व, वार्द्धक ये तीन (न॰) नाम वृद्धाअवस्थाके हैं ॥४०॥ पिलत यह एक (न॰) नाम बालआदिमें बुढापेसे सुपेदपनेका है। विस्नसा, जरा ये दो (स्त्री॰) नाम बुढापेके हैं। उत्तानकाया, डिम्भा, स्तनपा, स्तनंधयी ये चार (स्त्री॰) नाम चूंचीसे दूध पीनेवाले बच्चेके हैं ॥ ४९ ॥ आगे तिलकालक शब्दतक सब शब्द (पु॰) हैं। बाल, माणक ये दो नाम बालक के हैं। वयस्य, तरुण, युवन् (नांत) ये तीन नाम युवाके हैं। प्रवयस् (सान्त), स्थावर, वृद्ध, जीन, जीर्ण, जरत् (तान्त) ये छः नाम बूढके हैं ॥ ४२ ॥ वर्षीयस् (सान्त), दशमिन् (इन्नन्त), ज्या- अमांसो दुर्बेळश्छातो बळवान्मांसळोऽत्तछः ।
तुन्दिळस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिळः ॥ ४४ ॥
अवटीटोऽवनाटश्चाऽवज्रटो नतनासिके ।
केशवः केशिकः केशी बिळनो बिळमः समी ॥ ४५ ॥
विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः खवीं हस्वश्च वामनः ।
खरणाः स्थात्खरणसो विग्रस्तु गतनासिकः ॥ ४६ ॥
खरणाः स्थात्खरणसः प्रज्ञः प्रगतजानुकः ।
ऊर्ध्वेद्धक्वेजानुः स्थात्संज्ञः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥
स्थादेडे बिधरः कुञ्जे गडुळः कुकरे कुणिः ।
पृशिरुत्पतनी श्रोणः पङ्गी मुण्डस्तु मुण्डिते ॥ ४८ ॥

यस् (सांत) ये तीन नाम अत्यन्त बूढेके हैं । पूर्वज, अग्रिय, अग्रज ये तीन नाम बढे भाईके हैं। जघन्यज, कनिष्ठ, यशीयम् (सान्त), अवरज, अनुज्ये पांच नाम छोटे भाईके हैं ॥४३॥ अमांस, दुर्बछ, छात ये तीन नाम दुर्बछके हैं । बलवत् (तान्त), मांसल, अंसल ये तीन नाम बलवान्के हैं । तुंदिल, तुंदिभ, तुंदिन (इन्नन्त), बृहत्कृक्षि, पिचंडिल ये पांच नाम बढे पेटवालेके हैं ॥४४॥ अवटीट, अवनाट, अवभ्रट, नतनासिक ये चार नाम चपटी नाक-वालेके हैं। केशव, केशिक, केशिन (इन्नन्त) ये तीन नाम सुन्दर बाल-वालेके हैं। बिलन, बिलम ये दो नाम बुढापेसे ढीली हुई चामवालेके हैं ॥ ४५ ॥ विकलांग, अपोगंड ये दो नाम आदिसेही कम अंगींवालेके हैं। खर्व, ऱ्हस्व, वामन ये तीन नाम वीनेके हैं । खरणस् (सान्त), खरणस ये दो नाम तीक्ष्ण (सुरल) नासिकावालेके हैं । विय्र, गतनासिक ये दो नाम नकटेके हैं ॥ ४६ ॥ खुरणस् (सान्त), खुरणस् ये दो नाम खुरकी तरह नाकवालेके हैं । प्रज्ञु, प्रगतजानुक ये दो नाम गोडोंमें बहुत अंतरवाहेके हैं। ऊर्ध्वक्र, ऊर्ध्वजानु ये दो नाम ठहरनेसे गोडे ऊप-रको रहे उसके हैं। संज्ञ, संहतजानुक ये दो नाम मिले हुए गोडोंवालेके हैं ॥ ४७ ॥ एड, बधिर ये दो नाम बहरेके हैं । कुब्न, गडुल ये दो नाम क्बंडेके हैं । कुकर, कृणि ये दो नाम रोग आदिसे दूषित हुए हाथोंका-हेके हैं। पृक्षि, अस्पतन ये दो नाम छोटे इारीरवाहेके हैं। श्रोण, प्ग् थे दो नाम पंगूके हैं। मुंड, मुंडित ये दो नाम शिर मुंडे हुएके हैं ॥४८॥

बिहरः केकरे खोडे सञ्जाक्षेष्ठ जरावराः ।
जडुलः कालकः पिप्लुस्तिलकस्तिलकालकः ॥ ४९ ॥
अनामयं स्यादारोग्यं किचित्ता रुक्मतिक्रिया ।
भेवजीवधभैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥ ५० ॥
स्त्री रुग्ठजा चोपतापरोगन्याधिगदामयाः ।
सयः शोषश्च यक्ष्मा च प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ ५१ ॥
स्त्री क्षुत् क्षुतं सवः पुंसि कासस्तु सवयुः पुमान् ।
शोफस्तु श्वययुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ ५२ ॥
किलासिस्मे कच्छ्वां तु पामपामे विचर्षिका ।
कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया विस्फोटः पिटकः स्त्रियाम् ॥५३॥

बिहर, केकर ये दो नाम कायरा (ऐचेताने) के हैं । खोड, खंज ये दो नाम लंगडेके हैं। उत्तानक्षय शब्दसे आदि ले खंजशब्दपर्यंत शब्द वा-च्यांलगी अर्थात तीनों लिंगी हैं। जहुल, कालक, पिए ये तीन नाम श्रीरमें काले एहसनवारेके हैं । तिरुक, तिरुकारक ये दो नाम इारीरमें उपने तिरुके हैं । यहांतक (पु॰) हैं ॥ ४९ ॥ अना-मय, भारोग्य ये दो (न॰) नाम आरोग्यंक हैं । चिकित्सा, रुक्प्रातिकिया ये दो (स्त्री०) नाम रोगके इलाजके हैं ! भेषज (न॰), औषध (न॰), भैषज्य (न॰), अगद (पु॰), जायु, (पु॰) ये पांच नाम औषधके हैं ॥ ५० ॥ रुज़, रुजा, उपताप, रोग, व्याधि, गद, आमय ये सात नाम रोगके हैं। रुज़ और रुजा (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं। क्षय, शोष, यक्ष्मन् (नांत) ये तीन (पु॰) नाम क्षयी रोगके हैं । प्रतिश्याय, पीनस ये दो (प्र॰) नाम पीनसरोगके हैं ॥५१॥ क्षत, क्षत (न॰) क्षव ये तीन नाम छींकके हैं। तहां क्षत्राब्द (स्त्री॰) क्षवक्षब्द (पु॰) है। कास, क्षवयु ये दो नाम खांसीके हैं और (पु॰) हैं। शोफ, श्वयथु, शोथ ये तीन (पु॰) नाम सूजनेके हैं। पादस्फोट (पु॰), विपादिका (स्त्री॰) ये दो नाम पादस्फोट (बिवाई) के हैं ॥ ५२ ॥ किलास, सिध्म (नान्त) ये दो (न॰) नाम सींपरोगके हैं । कच्छू, पामन् (नांत), पामा, विचर्चिका ये चार नाम खाजके हैं । तहां पामन्शब्द (५०) शेष (स्त्री०) हैं । कंड़ , खर्ज़ , कंडया ये तीन(स्त्री०)

त्रणोअस्त्रियामीर्ममरु: क्षीबे नाडीत्रणः घुमान् ।
कोठो मण्डलकं कुष्ठश्वित्रे दुर्नामकार्शसी ॥ ५४ ॥
आनाहस्तु निबन्धः स्याद् प्रहणीरुक् प्रवाहिका ।
' प्रच्छिदिका विभिन्न स्त्री पुमांस्तु वमधुः समाः ॥ ५५ ॥
व्याधिमेदा विद्रधिः स्त्री ज्वरमेहभगंदराः ।
" श्लीपदं पादवल्मीकं केशप्रस्तिनन्द्रलुप्तकः ।"
अरमरी मूत्रकुच्छ्रं स्यात्पूर्वे शुक्रावधिस्त्रिषु ॥ ५६ ॥
रोगहार्यगदंकारो भिषण्वैद्यौ चिकित्सके ।
वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात् ॥ ५७ ॥

नाम खुजलीके हैं। विस्फोट (पु॰) पिटक ये दो नाम फोडेके हैं। तहां फिकराब्द (पु॰स्त्री॰) है। (स्त्री॰) में फिका (फुंसी), (पु॰) में पिटकः ऐसा होता है ॥ ५३ ॥ व्रण, ईर्म, अरु ये तीन नाम घावके हैं । तहां ब्रणशब्द (पु॰ न॰) शेष शब्द (न॰) हैं । नाडीव्रण यह एक नाम नाडीव्रण (नसूर) का है और (पु॰) है । कोठ (पु॰), मंड-रुक (न॰) ये दो नाम गजकर्ण (कुछ) के हैं। कुछ, श्वित्र ये दो (न॰) नाम श्वेतकृष्ठके हैं। दुनीमक, अर्जस (सान्त) ये दो (न॰) नाम बवासीरके हैं ॥ ५४ ॥ आनाह, निबंध ये दो (पु॰) नाम मल मूत्र स्कृते अर्थात कब्जके हैं। यहणीरूज, प्रवाहिका ये दो (स्त्री०) नाम संग्रहणिके हैं। प्रच्छिविका (स्त्री॰), विभ, वमथु ये तीन नाम छर्दिके हैं। तहां विमञ्जब्द (स्त्री॰) और वमशुशब्द (पु॰) है ॥५५॥ विद्रिधि यह एक नाम विद्रिधिरोगका है और (स्त्री॰) है। ज्वर यह एक (पु॰) नाम ज्वरका है। मेह यह एक (पु॰) नाम प्रमेहका है। भगंदर यह एक (पु॰) नाम भगंदरका है। " श्लीपद, पादवल्मीक ये दो (न॰) नाम श्हीपदके हैं। केश्रघ, इन्द्रलुप्तक ये दो (पु॰) नाम इन्द्रलप्तके हैं। " अश्मरी (स्त्री॰) यह एक नाम पथरीरोगका है। मूत्र-कुच्छ यह एक (न॰) नाम मूत्रकुच्छरोगका है। शुक्रशब्दसे पूर्व याने मूर्कितफर्यंत राब्द वास्यिछंगी (त्रिरिंगी) हैं ॥ ५६॥ रोगहारिन, अग-दंकार, भिषज़ (जान्त), वैद्य, चिकित्सक ये पांच नाम वेद्यके हैं। वार्त्त, निरामय, कल्य ये तीन नाम रोगसे रहित हुए मनुष्यके हैं। उल्लाघ यह

ग्लानग्लास्त्र आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः । आतुरोऽभ्यामितोऽभ्यान्तः समी पामनकच्छुरौ ॥ ५८ ॥ दहुणो दहरोगी स्यादक्षोरोगयुतोऽक्षेसः । वातकी वातरोगी स्यात्सातिसारोऽतिसारकी ॥ ५९ ॥ स्युः क्किन्नाक्षे चुल्लचिल्लिपिल्लाः क्विन्नेऽिल्ण चाप्यमी । उन्मत्त उन्मादवित क्षेष्मलः क्षेष्मणः कफी ॥ ६० ॥ न्युक्तो भुन्ने कजा वृद्धनाभी तुन्दिलतुन्दिभी । किलासी सिष्मलोऽन्थोऽहङ् मूर्च्छाले मूर्तमूर्चिलतौं,॥ ६१ ॥ शुक्रं तेजोरेतसी च बीजवीर्येन्द्रियाणि च । मायुः पित्तं कफः क्षेष्मा स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥ ६२ ॥

एक नाम रोगसे मुक्त हुए मनुष्यका है ॥ ५७ ॥ ग्लान, ग्लास्त् ये दो नाम रोग आदिके वराकरके आनन्दराहितका है। आमयाविन (इक्नत), विकृत, व्याधित, अपटु, आतुर, अभ्यमित, अभ्यांत ये सात नाम रोगीके ैहैं । पामन, कर्कुर ये दो नाम पामरोगीके हैं ॥ ५८ ॥ दद्धण, दद्धरो-गिन (इन्नन्त) ये दो नाम दादरोगिके हैं। अर्शस यह एक नाम बना-सीर रोगीका है। वातिकन् (इन्नन्त), वातरोगिन् (इन्नन्त) ये दो नाम वातरोगीके हैं। सातिसार, अतिसारिकन् ये दो नाम अतिसार रोगीके हैं ॥ ५९ ॥ क्वित्राक्ष, चुळ, चिछ, पिछ ये चार नाम चिपडी (चुंदी) आंबोंवालेके हैं। उन्मत्त, उन्माद्वत् (मत्वन्त) ये दो नाम उन्मादरोगीके हैं। श्लेष्मल, श्लेष्मण, किफन (इन्नन्त) ये तीन नाम कफरोगिके हैं ॥ ६० ॥ न्युब्ज यह एक नाम रोगकरके अधोमुख हुए कुबढेका है। वृद्धनाभि, तुंदिल, तुंदिभ ये तीन नाम वात आदिसे ऊंची हुई नाभिवा-छेके हैं। किलासिन (इनन्त), सिध्मल ये दो नाम सींपरोगीके हैं। अंध, अहरू (शान्त) ये दो नाम अंधेके हैं । मूर्च्छाल, मूर्त्त, मूर्च्छत ये तीन नाम मूर्छावालेके हैं ॥ ६१ ॥ शुक्र, तेजसू (सान्त), रेतस् , बीज, वीर्य, इन्द्रिय ये छः(न॰) नाम वीरजके हैं । तहां तेजस् और रेतस्शब्द सकारान्त (न॰) हैं। मायु (पु॰), पित्त (न॰) ये दो नाम पित्तके हैं। कफ, श्रेष्मन् (नान्त) ये दो (पु॰) नाम कफके हैं। त्वच्, अष्ट-ग्धरा (स्त्री॰) ये दो नाम खालके हैं। तहां खच्दाब्द (स्त्री॰) है

पिशितं तरसं मांसं पछछं कव्यमामिषम् ।

उत्ततं शुष्कमांसं स्यात्तद्रळूरं त्रिलिङ्गकम् ॥ ६३ ॥

रुधिरेऽसृग्छोहितास्तरक्तस्तजशोणितम् ।

बुक्कात्रमांसं हृदयं हृन्मृदस्तु वृपा वृत्ता ॥ ६४ ॥

पश्चाद्त्रीवाशिरा मन्या नाही तु धमनिः शिरा ।

तिलकं छोम मस्तिष्कं गोदं किट्टं मलोऽखियाम् ॥ ६५ ॥

अन्त्रं पुरीतत् गुल्मस्तु श्लीहा पुंस्यय वस्तता ।

स्नायुः खियां कालखण्डयकृती तु समे इमे ॥ ६६ ॥

सृणिका स्यन्दिनी लाला दूषिका नेत्रयोमेलम् ।

" नासामलं तु सिङ्गाणं पिञ्जूषं कर्णयोमेलम् ।

गृतं प्रस्ताव उच्चारावस्करी शमलं शकृत् ॥ ६७ ॥

॥ ६२ ॥ पिशित, तरस, मांस, पलल, क्रव्य, आमिष ये छः (न॰) नाम मांसके हैं । उत्तप्त (न॰), ग्रुष्कमांस (न॰), वहूर ये तीन नाम सुखे मांसके हैं। यहां वख़र शब्द त्रिलिंगी है ॥ ६३ ॥ रुधिर, असूज्, लोहित, अस्र, रक्त, क्षतज, शोणित ये सात (न०) नाम रक्तके हैं। बुक्का (त्रि॰), अग्रमांस (न॰) ये दो नाम हृद्यके भीतर कमलके आकारवाले मांसभेदके हैं। हृदय, हृत ये दो (न॰) नाम हृदाके हैं। मेदस् (न॰), वपा (स्त्री॰), वसा)(स्त्री॰) ये तीन नाम मांसके उपजे स्त्रेह (चर्बी) के हैं ॥ ६४ ॥ मन्या यह एक (स्त्री॰) नाम नाडके विक्कले भागका है। नाडी, धमनी, शिरा ये तीन (स्त्री॰) नाम नाडीके हैं। तिलक, क्वोमन (नान्त) ये दो (न०) नाम मांसके पिंडविशेषके हैं । मस्तिष्क, गोई ये दो(न॰) नाम मस्तकमें उपजे घृतके आकारवाले चिकनाहटका है। किट्र (न॰), मल ये दो नाम मलके हैं। तहां मरू इाब्द (पु॰ न॰) है ॥ ६५ ॥ अंत्र (न॰), पुरीतत् (पु॰ न॰) ये दो नाम आतके हैं। गुल्म (पु॰), श्रीहन (नान्त) ये दो नाम वाई कोखमें स्थित मांसींपंड अर्थात् तिल्लीके हैं। तहां श्रीहनशब्द (पु॰) है। वस्त्रसा, स्त्रायु ये दो (स्त्री०) नाम अंग प्रत्यंग संधि इन्होंके बंधनरूप नसके हैं। कालखंड, यकृत् ये दो (न॰) नाम दाहिनी कोखके मांसके पिंडके हैं ॥६६॥ सृषिका, स्यन्दिनी, लाला ये तीन (स्त्री॰) नाम लारके पुरीषं गूथवर्षस्कमस्त्री विद्याविशो स्त्रियो ।
स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री कीकतं कुल्यमस्थि च ॥ ६८ ॥
स्याच्छरीरास्थ्रि कङ्कालः पृष्ठास्थ्रि तु कशेरुका ।
शिरोऽस्थिन करोटिः स्त्री पार्थास्थिन तु पशुका ॥ ६९ ॥
अङ्गं प्रतीकोऽवयवोपघनोऽथ कलेवरम् ।
गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥ ७० ॥
कायो देहः क्लीबपुंसोः स्त्रियां म्तिस्ततुस्तनः ।
पादाग्रं प्रपदं पादः पदङ्ग्रिश्वरणोऽस्त्रियाम् ॥ ७१ ॥
तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फी पुमान्पार्थिणस्त्रयोरधः ।
जङ्घा तु प्रसृता जानूरुपर्वाष्ठीवदिश्वयाम् ॥ ७२ ॥

हैं। दूषिका यह एक (स्त्री॰) नाम नेत्रोंकी गीडका है। " सिघाण यह एक (न॰) नाम नाकके मलका है। पिजूप यह एक (न॰) नाम कानेंकि मलका है। " मूत्र (न॰), प्रस्ताव (पु॰) ये दो नाम पिसाबके हैं। ভন্মাर (पু॰), अवस्कर (पु॰), হাদন্ত (ন॰), হাকুর (ন॰) ॥६७॥ पुरीष (न॰), गूथ वर्चस्क, विष्ठा, विज्ञु थे नव नाम विष्ठाके हैं । तहां गृथ और वर्चस्कराब्द (पु॰ न॰), विष्ठा और विश्वराबद (स्त्री॰) हैं कर्पर (पु॰), कपाल ये दो नाम खोपडीके हैं। तहां कपालकान्द (पु॰ न॰) है। कीकस, (कुल्य,) आस्थि ये तीन (न॰) नाम हड़ीके हैं ॥ ६८ ॥ कंकाल यह एक (पु॰) नाम इारीरकी हिंडियोंके पिंजरेका है । करोरुका यह एक (स्त्री॰) नाम पीठकी हड़ीका है। करोटि यह एक (स्त्री॰) नाम शिरकी हशका है। पर्शुका यह एक (स्त्री॰) नाम पसळीकी हडीका है ॥ ६९ ॥ अंग, प्रतीक, अवयव, अपघन ये चार नाम अंगोंके हैं। अंगराब्द (न०) रोष (प्र०) हैं। कलेवर, गात्र, वपुस् (सांत), संहनन, इारीर, वर्ष्मन् (नांत), विग्रह ॥ ७० ॥ काय, देह, मूर्ति, तनु, तनू ये बारह नाम शरीरके हैं। तहां कल्टेवरसे वर्ष्मन्शब्दः तक (न॰) हैं। विग्रह और काय (पु॰) हैं देहराब्द (पु॰ न॰) है। मूर्ति, तनु, तनू ये तीनी शब्द (स्त्री॰) हैं। पादाय, प्रपद ये दो (न॰) नाम पैरके अग्रभागके हैं । पाद, पत्, अंब्रि, चरण ये चार नाम पैरके हैं । तहां चरणशब्द (पु॰ न॰) राष (पु॰) हैं ॥७१॥ घटिका (स्त्री॰), गुल्फ- साविथ छीवे पुमान् रुस्तत्संविः पुंसि वक्षणः ।
गुदं त्वपानं पायुनी बस्तिनीभेरघो द्वयोः ॥ ७६ ॥
कटो ना श्रीणिफलकं काटिः श्रीणिः ककुन्नती ।
पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः छीवे तु जघनं पुरः ॥ ७४ ॥
कूपकी तु नितंबस्थी द्वयहीने कुकुन्दरे ।
स्त्रियां स्फिन्नी कटिप्रोथानुपस्था वह्यमाणयोः ॥ ७५ ॥
भगं योनिर्द्वयोः शिश्रो मेद्रं मेहनशेफसी ।
मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः पृष्ठवंशाघरे त्रिकम् ॥ ७६ ॥
पिचण्डकुक्षी जठरोदरं तुन्दं स्तनी कुन्नी ।
चुन्नुकं तु कुन्नागं स्यान्न ना कोडं भुजान्तरम् ॥ ७७ ॥

(पु॰ न॰) ये दो नाम टकनेके हैं। पाष्णि यह एक नाम एडीका है ओर (पु॰) है। जंघा, प्रमृता ये दो (स्त्री॰) नाम जांघके हैं। जानु, उद्दर्शन (नांत), अष्टीवत् (मत्वंत) ये तीन नाम गोडाकी संधि (घुटने) के हैं और (पु॰ न॰) हैं ॥ ७२ ॥ सिक्यू उक्त ये दो नाम गोडाके उपर भागके हैं। तहां साक्यिशब्द (न॰) है उरुशब्द (पु॰) है। वंक्षण यह एक नाम ऊह्नकी संधिका है और (पु॰) है। गुद (न॰), अपान (न॰), पायु ये तीन नाम गुदाके हैं तहां पायुशब्द (पु॰) है। बस्ति यह एक नाम नाभिके नीचे स्थानका है और (पु॰स्री॰) है॥७३॥ कट यह एक नाम काटेके फल्कका है और (पु॰) है। कटि, श्रोणि, ककुझती ये तीन (स्त्री॰) नाम कटिके हैं । नितम्ब यह एक (पु॰) नाम स्त्रीकी कटिके पश्चाद्भागका है। जधन यह एक (न॰) नाम स्त्रीकी कटिके अग्रभागका है ॥ ७४ ॥ कुकुन्दर यह एक नाम पृष्ठकंशसे अधो-भागमें विद्यमान गर्तीका है और (न॰) है। स्फिन्, कटिप्रीय (पु॰) ये दो नाम कटिमें स्थित मांसके पिंडों अर्थात कुलोंके हैं। स्फिच्राब्द (स्त्री॰) है। उपस्थ यह एक (पु॰) नाम योनि और लिंगका है॥७५॥ भग (न॰), योनि ये दो नाम स्त्रियोंकी योनिके हैं। तहां योनिशब्द (पु॰ स्त्री॰) है । शिश्न (पु॰), मेद्र (पु॰), मेहन (न॰), शेफस् (न॰) ये चार नाम छिंगके हैं । मुष्क, अंडकोश, वृषण ये तीन(पु॰) नाम अंडको शके हैं। त्रिक यह एक (न॰) नाम पीठके वंशके नीचे तीन हिश्योंकरके घटितस्थानका है ॥ ७६ ॥ पिचंड (पु॰), कुक्षि

खरो वत्सं च वक्षश्च पृष्ठं तु चरमं तनोः ।
स्कन्धो मुजिशरोंऽसोऽस्त्री सन्धी तस्यैव जञ्जणी ॥ ६८ ॥
बाहुमूछे डमे कक्षौ पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
मध्यमं चावछमं च मध्योऽस्त्री द्वौ परौ द्वयोः ॥ ७९ ॥
मुजबाहू मवेष्टो दोः स्यात्कफोणिस्तु कूपरः ।
अस्योपिर मगण्डः स्यात्मकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥
मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करमो बिहः ।
पश्चशाखः शयः पाणिस्तर्जनी स्यात्मदेशिनी ॥ ८१ ॥
अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः पुंस्यङ्गुष्ठः मदेशिनी ।
मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताः कमातु ॥ ८२ ॥

(पु॰), जठर (पु॰ न॰), उदर (न॰), तुद (न॰) ये पांच नाम पेटके हैं। स्तन, कुच ये दो (पु॰) नाम चूचियोंके हैं। चूचुक (पु॰न॰), कुचा-य (न॰) ये दो नाम चुचियोंके अग्रभागके हैं। क्रोड, भुजान्तर ॥७०॥ उरम् (सान्त), वत्स, वक्षम् (सान्त) ये पांच नाम छातीके हैं । तहां क्रोडशब्द (स्त्री॰ न॰) शेष (न॰) हैं । पृष्ठ यह एक (न॰) नाम शरीरकी पीठका है। स्कंध (पु॰), भुजिशरम् (सान्त न॰), अंस (पु॰ न॰) ये तीन नाम कंधेके हैं । जन्नु यह एक(न॰) नाम कंधोंकी सांधे अर्थात जोतोंका है ॥ ७८ ॥ बाहुमूरू (न॰), कक्ष (पु॰) य दो नाम कोखके हैं। पार्श्व यह एक नाम दोनों कांखोंके नीचेकी जगहका है और (पु॰ न॰) है । मध्यम, अवलग्न, मध्य ये तीन नाम कमरके हैं। तहां मध्यम आदि तीनों शब्द (पु॰ न॰) हैं। भुज बाहु शब्द (स्त्री॰पु॰) है।। ७९ ॥ मुज (भुजा), बाहु, प्रवेष्ट, दोस् (सान्त) ये चार नाम भुजाके हैं। भुज बाह्र राब्द (पु॰ स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं। कफोणि, कूर्पर ये दो (पु॰ स्त्री॰) नाम कुहनीके हैं। प्रगंड यह एक (पु॰) नाम ऋहनीके उपरहे स्थानका है । प्रकोष्ठ यह एक (पु॰) नाम कुहनीके नीचे भागका है ॥ ८० ॥ भणिबंध यह एक (पु०) नाम हाथ और प्रकोष्ठकी संधिका है। करम यह एक (पु॰) नाम मणिबंधसे लेके किनष्ठिका अंग्रलीपर्यंत हाथके बाहरले भागका है । पश्चशास्त्र इत्य, पाणि ये तीन (पु॰) नाम हायके हैं । तर्जनी, प्रदेशिनी ये दो (स्त्री॰) नाम अंग्रुठेके समीपकी अंग्रुलीके हैं ॥ ८१ ॥ अंग्रुली,

पुनर्भवः कररुहो नसोऽस्त्रीं नसरोऽस्त्रियाम् ।

मादेशतालगोकर्षास्तर्जन्यादियुते तते ॥ ८३ ॥

वङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिद्दीदशाङ्गुलः ।

पाणी चपेटमतलभइस्ता विस्तृताङ्गुली ॥ ८४ ॥

द्रौ संहती संहतलभतली वामदक्षिणी ।

पाणिनिकुन्जः प्रसृतिस्ती युतावक्षलः पुमान् ॥ ८५ ॥

पकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तो मुख्या तु बद्ध्या ।

सरित्रः स्यादरात्रस्तु निष्किनिष्ठेन मुख्नि ॥ ८६ ॥

व्यामो बाद्दोः सकरयोस्ततयोस्तियंगन्तरम् ।

ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥ ८७ ॥

करशाखा ये दो (स्त्री॰) नाम अंगुलीमात्रके हैं । अंगुष्ठ यह एक नाम अंगूठेका है और (पु॰) है। प्रदेशिनी (तर्जनी) यह एक (स्त्री॰) नाम अंगुठेके पासकी अंगुळीके हैं। मध्यमा यह एक (स्त्री॰) नाम बीचकी अंगुलीका है। अनामिका यह एक (स्त्री॰) नाम छोटी अंग्रहीके समीपवाली अंग्रहीका है। कनिष्ठिका यह एक (स्त्री) नाम छोटी अंगुलीका है। ये अंगुली क्रमसे जाननी चाहिये ॥ ८२ ॥ पुनर्भव (पु॰), कररुह (पु॰), नख, नखर ये चार नाम नखके हैं। तहां नख और नखरशब्द (पु॰ न॰) हैं। प्रादेश यह एक (पु॰) नाम तर्जनी अंग्रहीसे अंग्रहेपर्यंत विस्तारका है। ताल यह एक (पु॰) नाम मध्यमा अंगुळीसे अंगूठेपर्यतका है । गोकर्ण यह एक(पु॰) नाम अनामिका अंगुलीसे अंगुठेपर्यंत विस्तारका है ॥ ८३ ॥ वितस्ति (पु॰ स्त्री॰), द्वादशांगुरू (पु॰) ये दो नाम कनिष्ठिका अंगुरूसि अंगुठेपर्यंत विस्तारके हैं । चपेट, प्रतल, हस्त ये तीन (पु॰) नाम विस्तृत हुई अंगुलियोंवाछे हाथके हैं ॥ ८४ ॥ संहतल यह एक (पु॰) नाम दोनों हाथोंके मिळनेका है। प्रसाति यह एक (पु॰) नाम परसेका है। दो प्रमृतियोंकी अंजिल होती है। तहां अंजिल्हिश्बद (पु॰) है ॥ ८५ ॥ हस्त यह एक (पु॰) नाम अंगुलीके अग्रभागसे कुहनीपर्यंत लम्बे हाथ-का है। रात्ने यह एक (पु॰ स्त्री॰) नाम बंधी हुई मुडी सहित हाथका है। अरिल यह एक (पु॰ स्त्री॰) नाम छोटी अंगुरुसि वीनत हुए मुट्टीस-हित हाथका है ॥ ८६ ॥ व्याम यह एक (पु॰) नाम हाथोंसहित बाहु- कण्ठो गलोऽय श्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।
कम्बुशीवा त्रिरेला साञ्चरुषीया कृकाटिका ॥ ८८ ॥
वक्तास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।
क्रीबे ब्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका ॥ ८९ ॥
ओष्ठाधरी तु रदनच्छदी दशनवाससी ।
अषस्ताचिबुकं गण्डी कपोली तत्परा हनुः ॥ ९० ॥
रदना दशना दन्ता रदास्तालु तु काकुदम् ।
रसज्ञा रसना जिह्वा श्रान्तावोष्ठस्य सृक्षिणी ॥ ९१ ॥
ल्लाटमलिकं गोधिकध्वें दग्भ्यां भ्रुवी स्त्रियी ।
कूचेमस्त्री भ्रुवोर्मध्यं तारकाक्षणः कनीनिका ॥ ९२ ॥

ओंके मध्यका है। पौरुष यह एक नाम ऊपरको छम्ने हाथ किये मनुष्यके प्रमाणका है और त्रिलिंगी है ॥ ८७ ॥ कंठ, गल ये दो (पु॰) नाम कंठके हैं। कंठज्ञब्द (त्रि॰) भी है। ग्रीवा, शिरोधि, कंधरा ये तीन (स्त्री॰) नाम नाडके हैं । कंब्रुग्रीवा यह एक (स्त्री॰) नाम तीन रेखाओंसे युत हुई नाडका है। अबटु (पु॰ स्त्री॰), घाटा (स्त्री॰), कुकाटिका (स्त्री॰) ये तीन नाम नाड और शिरकी संधिके पश्चाद्भागके हैं ॥ ८८ ॥ वक्त्र, आस्य, वदन, तुंड, आनन, लपन, मुख ये सात (न॰) नाम मुखके हैं । ब्राण, गंधवहा, घोणा, नासा, नासिका ये पांच नाम नासिकाके हैं । घ्राणशब्द (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं ॥८९॥ ओष्ठ (पु॰), अधर (पु॰), रदनच्छद (पु॰), दशनवासस् (सान्त न॰) ये चार नाम ऑठके हैं । चिबुक यह एक (न॰) नाम ऑठके नीचे भागका है। गंड, कपोछ ये दो (पु॰) नाम गास्के हैं। हनु, यह एक (पु॰ स्त्री॰) नाम ठोढीका है ॥ ९० ॥ रदन, दशन, दन्त, रद ये चार(पु॰) नाम दांतोंके हैं। दशनशब्द (न॰) भी है। तालु, काकुद ये दो (न॰) नाम ताळुवाके हैं। रसज्ञा, रसना, जिह्वा ये तीन (स्त्री॰) नाम जीमके हैं । मृक्किणी यह एक (स्त्री॰) नाम दोनों ओठोंके प्रान्त-भागका है ॥ ९१ ॥ छछाट (न॰), मिछक (न॰), गोधि (पु॰) ये तीन नाम माथेके हैं। भू यह एक नाम भ्रुकुटिका है। भ्रूशब्द (स्त्री॰) है। कुर्च यह एक नाम अक्रुटियोंके मध्यभागका है और (पु॰ न॰) लोचनं नयनं नेलमीसणं चक्षुरिसणी ।

हम्ही चास्तु नेत्राम्सु रोदनं चास्तमश्रु च ॥ ९३ ॥

अपाङ्गी नेत्रयोरन्ती कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने ।

कर्णशब्दग्रही श्रोतं श्रीतः स्त्री श्रवणं श्रवः ॥ ९४ ॥

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्ष मूर्षा ना मस्तकोऽस्त्रियाम् ।

चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ॥ ९५ ॥

तहृन्दे केशिकं केश्यमलकाश्रूणंकुन्तलाः ।

ते ललाटे श्रमरकाः काकपक्षः शिखण्डकः ॥ ९६ ॥

कवरी केशवेशोऽय धम्मिलः संयताः कचाः ।

शिखा चूडा केशपाशी व्रतिनस्तु सटा जटा ॥ ९७ ॥

है। तारका यह एक (स्त्री॰) नाम आंखके तारेका है ॥ ९२॥ होचन, नयन, नेत्र, ईक्षण, चक्षुम, अक्षि, ह्यू (ज्ञान्त), दृष्टि ये आठ नाम नेत्रके हैं । तहां हर्ज़, दृष्टिज़ब्द (स्त्री॰) शेष (न॰) हैं । अस्तु, नेत्रा-म्बु, रोद्न, अस्त्र, अश्च ये पांच (न॰) नाम आंसुके हैं ॥९३॥ अपांग, यह एक (पु॰) नाम नेत्रोंके अंतका है। कटाक्ष यह एक (पु॰) नाम अपांगसे देखने और चेष्टा करनेका है। कर्ण (पु॰), शब्दयह (पु॰), श्रोत्र (न॰), श्रुति, श्रवण (पु॰ न॰), श्रवस् (सान्त न॰) ये छः नाम कानके हैं। तहां श्रुतिज्ञब्द (स्त्री॰) है ॥ ९४ ॥ उत्तमांग, शिरम् (सान्त), शीर्ष, मूर्द्धन्, मस्तक ये पांच नाम शिरके हैं। तहाँ मधेनुइन्ड (पु॰) है मस्तकशब्द (पु॰ न॰) है शेष (न॰) हैं। चिक्रर, कंतल, बाल, कच, केश, शिरोस्ह ये छ: (पु॰) नाम बालोंके हैं ॥ ९५ ॥ के जिक, केश्य ये दो (न॰) नाम बालों के समूहके हैं। अलक, चूर्णकृतल ये दो (पु॰) नाम टेढे बालोंके हैं। अमरक यह एक (पु॰) नाम छछाटपर झुके बाँछोंका है । काकपक्ष, शिखण्डक ये दो (पु॰) नाम जुल्लफोंके हैं ॥ ९६ ॥ कबरी (स्त्री॰), केश्वेश (पु॰) ये दो नाम बारू बांधनेकी रचनाके हैं । धम्मिल यह एक (पु॰) नाम मोती आदिसे गूंथे हुए बालोंके समूहका है। शिला, चूडा, केश-पाजी ये तीन (स्त्री॰) नाम चोटीके हैं। सटा, जटा ये दो (स्त्री॰) वेणिः प्रवेणी शीर्षण्यशिरस्यौ विश्वदे कचे ।
पाशः पक्षश्च इस्तश्च कछापार्थाः कचात्परे ॥ ९८ ॥
तनूरुहं रोम छोम तहृद्धौ इमश्च पुंमुखे ।
आकल्पवेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ ९९ ॥
दशैते त्रिष्वछंकर्ताऽछंकरिष्णुश्च मण्डितः ।
प्रसाधितोऽछंकृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥ १०० ॥
विश्राट्र श्राजिष्णुरोचिष्णु भूषणं स्यादछंकिया ।
अछंकारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् ॥ १०१ ॥
मण्डनं चाथ मुकुटं किरीटं पुंनपुंसकम् ।
चूडामणिः शिरोरतं तरछो हारमध्यगः ॥ १०२ ॥
वाछपाश्या पारितथ्या पत्रपाश्या छछाटिका ।
कर्णिका ताछपत्रं स्यात्कुण्डछं कर्णवेष्टनम् ॥ १०३ ॥

नाम जटाके हैं ॥ ९७ ॥ वेणि, प्रवेणी ये दो (स्त्री॰) नाम बालोंकी मीडिके हैं। शीर्षण्य, शिरस्य ये दो (पु॰)नाम सुन्दर बालोंके हैं। कचपारा, केशपारा. केञापक्ष, कुन्तलहस्त ये चार (प्र॰) नाम केञ समृहके वाचक हैं ॥९८॥ तनू-रुह, रोमन (नान्त), लोमन (नान्त) ये तीन (न०) नाम रोमके हैं। तनुरुहराब्द (पु॰) भी है। श्मश्रु (नांत) यह एक (न॰) नाम पुरुषकी डाढीका है । आकरुप (पु॰), वेष (पु॰), नेपथ्य (ন০), সনিকর্মন (ন০), সমাঘন (ন০) ये पांच নাম অভকুনকী शोभाके हैं ॥ ९९ ॥ आगेके अलंकत्ती आदि वक्ष्यमाण दश शब्द वाच्य-छिंगी हैं। अलंकर्तृ, अलंकरिष्णु ये दो नाम अलंकर्ताके हैं। मंडित, प्रसाधित, अलंकृत, भूषित, परिष्कृत ये पांच नाम अलंकृतके हैं ॥ १०० ॥ विश्राज्, भ्राजिष्णु, रोचिष्णु ये तीन नाम अत्यंत ज्ञोभावालेके हैं। भूषण (न॰), अलंकिया (स्त्री॰) ये दो नाम भूषणिक्रयाके हैं। अलंकार (पु॰), आभरण (न॰), परिष्कार (पु॰), विभूषण ॥ १०१ ॥ मंडन (दो न॰) ये पांच नाम गहनेके हैं । मुकुट (न॰), किरीट ये दो नाम मुकुटके हैं। तहां किरीटज्ञब्द (पु॰ न॰) है। चूडामणि (पु॰), हिारोरल (न॰) ये दो नाम शिरकी मणिके हैं । तरल यह एक (पु॰) नाम हारके मध्यगत नायकमणिका है ॥ १०२ ॥ वाळपाश्या, पारितथ्या

प्रैवेयकं कण्डभूषा लम्बनं स्याल्ललिका।
स्वर्णेः प्रालम्बकाञ्योरःस्त्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १०४ ॥
हारो मुक्तावली देवच्छन्दोसी शतयष्टिका।
हारभेदा यष्टिभेदाद्वच्छगुच्छाधेगोस्तनाः ॥ १०५ ॥
अर्थहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका।
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः ॥ १०६ ॥
आवापकः पारिहार्यः कटको वल्रयोऽस्त्रियाम्।
केयूरमङ्गदं तुल्ये अंग्रलीयकमूर्मिका॥ १०७ ॥

ये दो (स्त्री॰) नाम सीमंतभूषणके हैं। पत्रपाश्या, ललाटिका ये दो (स्त्री॰) नाम माथेके भूषण अर्थात् वैनेके हैं। कर्णिका यह एक (स्त्री॰) नाम कानके भूषणका है। तालपत्र यह एक (न॰) नाम कानोंमें पहर-नेके सवर्णके पत्तोंका है। कंडल, कर्णवेष्टन ये दो (न०) नाम कानीके कुंडलके हैं ॥ १०३ ॥ ग्रेवेयक (न०), कंठभूषा (स्त्री०) ये दो नाम कंठके भूषणके हैं। लंबन (न॰), ललंतिका (स्त्री॰) ये दो नाम कंठीके हैं। प्रालंबिका यह एक(स्त्री॰) नाम सोनेके कंठीका है। उरस्मुत्रिका यह एक (स्त्री॰) नाम मोतियोंकी कंठीका है ॥ १०४ ॥ हार (पु॰), मक्तावली (स्त्री॰) ये दो नाम मोतियोंके हारके हैं । देवच्छन्द यह एक (पु॰) नाम सो छडोंवाछे मोतियोंके हारका है। गुच्छ यह एक (पु॰) नाम छताके भेदसे बत्तीस छडोंके हारका है। गुच्छाई यह एक (पु॰) नाम चौवीस ल्डोंवाले हारका है । गोस्तन यह एक (पु॰) नाम चौसठ रुढोंवाले हारका है ॥ १०५ ॥ अर्द्धहार यह एक (प्र०) नाम बारह रुडोंवारे अर्द्धहारका है। माणक्क यह एक (पु॰) नाम तीस लडोंवाले हारका है। एकावली यह एक (स्त्री॰) नाम एक लड-वाले हारका है। नक्षत्रमाला यह एक (स्त्री॰) नाम सत्ताईस मोतियोंसे बनाये गये उसी एकावली हारके हैं ॥ १०६ ॥ आवायक (पु॰), पारि-हार्य (पु॰), कटक (पु॰ न॰), वरुय ये चार नाम पहुंचीके हैं। तहां वल्पशब्द (पु॰ न॰) है । केयूर, अंगद ये दो (पु॰ न॰) नाम बाजू-बन्दके हैं। अंगुरुधिक (पु॰न॰), ऊर्मिका(छी॰) ये दो नाम अंगुठी साक्षराङ्गुलिमुद्रा स्थात्कङ्कणं करमूषणम् ।
स्वीकत्वां मेखला काश्वी सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
स्वीकत्वां मेखला काश्वी सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
स्वीकत्वां मेखला काश्वी सप्तकी रशना तथा ॥ १०८ ॥
पदाङ्गुदं तुलाकोटिर्मश्रीरो नूपुरोऽस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
हंसकः पादकटकः किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।
त्वक्फलकृमिरोमाणि वस्त्रयोनिर्देश त्रिषु ॥ ११० ॥
वाल्कं सौमादि फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।
कौशेयं कृमिकोशोत्यं राङ्कवं मृगरोमजम् ॥ १११ ॥
अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।
तत्स्यादुद्रमनीयं यद्गीतयोवस्त्रयोर्युगम् ॥ ११२ ॥
पत्रोणं घौतकौशेयं बहुमूल्यं महाधनम् ।
सौमं दुकूलं स्याद्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥ ११३ ॥

र्भार छहेके हैं ॥१०७॥ अंगुरिमुदा यह एक (स्त्री०) नाम राम आदिके नामसे जहीं हुई अंगूठीका है। कंकण (पु॰न॰), करभूषण (न॰)येदो नाम हाथोंके कडूलोंके हैं। मेखला,कांची, सप्तकी, रज्ञाना ॥१०८॥ सारसन ये पांच नाम स्त्रियोंकी तागडीके हैं ! सारसनशब्द (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं। अंखल यह एक नाम पुरुषकी तागडीका है। तहां अंखलकान्द त्रि-हिंगी है। पादांग्रद (न॰), तुलाकोटि (स्त्री॰), मंजीर (पु॰ न॰), नुपुर ॥ १०९ ॥ हंसक (पु॰), पादकटक (पु॰) ये छः नाम पेछूरा झांझणा वा पाजेबके हैं। तहां नुपुरज्ञब्द (पु॰ न॰) है। किंकिणी, क्षुद्रघंटिका ये दो (स्त्री॰) नाम घूंघरूवाछी तागडीके हैं । त्वच्, फल, कृमि, रोम ये चौरों बस्त्रोंकी योनि हैं। वाल्कसे पावपर्यन्त दश शब्द त्रिलिंगी हैं ॥ ११० ॥ वाल्क अर्थात् वल्कल्से बना क्षीम अर्थात् अतसी आदिसे बना वस्त्र जानना । यह एक नाम वक्करूके वस्त्रका है । फारू, का-पीस, बादर ये तीन नाम रुई आदिके क्लके हैं। कीशेय यह एक नाम कृमियोंके कोशसे उपने वस्त्रका है। रांकव यह एक नाम मृग आदिके रोमसे बने हुए क्स्नका है ॥ १११ ॥ अनाहत, निष्प्रवाणि, तंत्रक, नवाम्बर ये चार नाम नये वस्त्रके हैं। उद्गमनीय यह एक (न॰) नाम धोये हुए दो वस्त्रींके जोडेका है ॥ ११२ ॥ पत्रोर्ण यह एक (न०) नाम धोये हुए

द्वितीयं काण्डं-मनुष्यवर्गः ६।

स्थिपां बहुत्वे वस्तस्य द्शाः स्युवेस्तयोद्धयोः ।
दैष्येमायाम आरोहः परिणाहा विशालता ॥ ११४ ॥
पटचरं जीर्णवस्तं समी नक्तककपेटा ।
वस्तमाच्छादनं वासश्चेलं वसनमंशुक्तम् ॥ ११५ ॥
सुचेलकः पटोऽस्त्री स्याद्धराशिः स्थूलशाटकः ।
निचोलः प्रच्छद्पटः समी रल्लककम्बली ॥ ११६ ॥
बन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोंशुके ।
द्वी प्रावारोत्तरासङ्गी समी बृहतिका तथा ॥ ११७ ॥
संव्यानमुत्तरीयं च चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।
नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ॥ ११८ ॥

कौरोय वस्त्रका है। महाधन यह एक (न॰) नाम बहुत मोलके वस्त्र अर्थात् दुशालेका है । क्षौम, दुकूल ये दो (न॰) नाम पाटके वस्त्रके हैं । निवीत, प्रावृत ये दो नाम प्रावृत (ढके हुए) बस्नके हैं और त्रिछिंगी हैं॥१९३॥ दशा यह एक नाम बस्त्रके दोनों किनारोंका है । तहां दशाशब्द बहुव-चनांत (स्त्री॰) है । दैर्घ्य (न॰), आयाम (पु॰), आरोह (पु॰) ये तीन नाम वस्त्रकी लम्बाईके हैं । परिणाह (पु॰), विशास्त्रता (स्त्री॰) ये दो नाम वस्त्रके विस्तारके हैं ॥ १९४ ॥ पटचर, जीर्णवस्त्र ये दो (न॰) नाम पुराने वस्त्रके हैं। नक्तक, कर्ष्ट ये दो (पु॰) नाम पुराने वस्रके दुकडेके हैं। वस्र, आच्छादन, वासस् (सांत), चैरु, वसन, अंशक ये छः (न०) नाम वस्त्रके हैं ॥ ११५ ॥ सुचेलक (पु०), पट ये दो नाम क्रोभन वस्त्रके हैं। तहां पटकाब्द (पु॰ न॰) है। वराशि (पु॰), स्थूलशाय्यः (त्रि॰) ये दो नाम मोटे वस्त्रके हैं। निचोल (त्रि॰), प्रच्छदप्ट (पु॰) ये दो नाम धीणा आदिके ढकनेके वस्त्रके हैं। रक्क, कंबल ये दो (पु॰) नाम कंबलके हैं ॥ ११६ ॥ अंतरीय, उपसंव्यान, परिधान, अधों कुक ये चार(न०) नाम शरीरके नीचे भागके वस्त्र पंजामा आदिके हैं। प्रावार (पु॰), उत्तरासंग (पु॰), बृहतिका (स्त्री॰) ॥ ११७ ॥ संव्यान (न॰), उत्तरीय (न॰) ये पांच नाम दुपट्टेके हैं। चोछ (पु॰), कूर्पासक ये दो नाम आंगीके हैं। तहाँ कूर्पा-सकराब्द (पु॰ न॰) है। नीशार यह एक (पु॰) नाम शीत और

अभरकोशः ।

अर्थोरुकं वरस्रीणां स्वाज्ञण्डातकमिस्त्रयाम् ।
स्यात्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्तोत्याप्रपदं हि यत् ॥ ११९ ॥
अस्त्री वितानमुद्धोचो दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मिन ।
प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्कारणी च सा ॥ १२० ॥
परिकर्मीगसंस्कारः स्यान्मार्ष्टिमार्जना मृजा ।
उद्दर्तनोत्सादने द्वे समे आष्ठाव आप्छवः ॥ १२१ ॥
स्नानं चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकोऽथ प्रबोधनम् ।
अनुबोधः पत्रछेखा पत्राङ्गुछिरिमे समे ॥ १२२ ॥
तमाछपत्रतिछकचित्रकाणि विशेषकम् ।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियामथ कुंकुमम् ॥ १२३ ॥
काश्मीरजन्माग्रिशिखं वरं बाह्मीकपीतने ।
रक्तसंकोचिषशुनं धीरं छोहितचन्दनम् ॥ १२४ ॥

वायुको निवारण करनेवाले ओढनेके वस्त्रका है ॥ ११८ ॥ चंडातक यह एक नाम स्त्रियोंके लहंगेका है और (पु॰ न॰) है । आप्रपदीन यह एक (त्रि॰) नाम जो वस्त्र पैरके अग्रभागपर्यंत हो उसका है ॥ ११९ ॥ वितान, उल्लोच (पु॰) ये दो नाम चंदोबा वस्त्रके हैं । तहां वितानशब्द (पु॰ न॰) है। दूष्य (न॰), पटकुटी (स्त्री॰) ये दो नाम डेरा तम्बूके हैं। प्रतिसीरा, जवनिका, तिरस्करिणी ये तीन (स्त्री॰) नाम पडदा (कनात) के हैं ॥ १२० ॥ परिकर्मन (नान्त न०), अंगसंस्कार (पु॰) ये दो नाम केशर आदिकरके शरीरमें संस्कारमात्रके हैं। मार्छि, मार्जना, मुजा ये तीन (स्त्री॰) नाम प्रोक्षण आदिकरके देहको निर्मेल करने अर्थात **थौंछनेके हैं ।** उद्दर्तन, उत्सादन ये दो (न॰) नाम उबटने मरुनेके हैं । आप्राव (पु॰), आप्रव (पु॰) ॥ १२१ ॥ स्त्रान (न॰) ये तीन नाम स्नानके हैं। चर्चा (स्त्री॰), चार्चिक्य (न॰), स्थासक (पु॰)येतोन नाम चन्दन आदिसे देहपर छेप करनेके हैं। प्रबोधन (न॰) अनुबोध (पु॰) ये दो नाम गत हुए गंघके हैं। पत्रलेखा, पत्रांगुलि ये दो (स्त्री॰) नाम कस्त्री कैसर आदिकरके कपोल आदिपर रची हुई पत्रके समान रेखाके हैं ॥ १२२ ॥ तमालपत्र (न॰), तिलक, चित्रक (न॰), विशे-षक ये चार नाम माथेमें कस्त्री आदिसे किये हुए तिलकके हैं। तिलक, विशेषक ये दो अब्द (पु॰ न॰) हैं । कुंकुम ॥ १२३ ॥ काश्मीरजन्मन छाप्ता राक्षा जतु क्रीबे याबोऽलक्तो हुमामयः।
लवक्नं देवकुसुमं श्रीसंज्ञमथ जायकम्॥ १२५॥
कालीयकं च कालानुसार्य चाथ समार्थकम्।
वंशकागुरुराजाहेलोहं कृमिजजोङ्गकम्॥ १२६॥
कालागुर्वगुरु स्थात्तु मङ्गल्या मिल्लगिन्ध यत्।
यक्षधूपः सर्जरसो रालसर्वरसाविष ॥ १२७॥
बहुक्योऽप्यथ वृक्षधूपकृतिमधूपकौ।
तुरुष्कः पिण्डकः सिक्को यावनोऽप्यथ पायसः॥ १२८॥
श्रीवासो वृक्षधूपोऽपि श्रीवेष्टसरलद्रवौ।
मृगनाभिमृगमदः कस्तूरी चाथ कोलकम्॥ १२९॥
कङ्कोलकं कोशफलमथ कर्षूरमिस्त्रयाम्।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताओ हिमवालुका॥ १३०॥

(नान्त), आग्नादीख, वर, बाहीक, पीतन, रक्त, संकोच, पिशुन, धीर, लोहितचन्दन ये ग्यारह (न•) नाम केज़रके हैं ॥ १२४ ॥ लाक्षा (स्त्री॰), राक्षा (स्त्री॰), जतु (न॰), याव (पु॰), अलक्त (पु॰), द्रमामय (पु॰) ये छः नाम लाखके हैं । लवंग, देवकुसुम, श्रीसंज्ञ ये तीन (न॰) नाम छैं। ने हैं । जायक ॥ १२५ ॥ कालीयक, कालानु-सार्य ये तीन (न॰) नाम पीले चन्दनके हैं । समार्थक, वंशिक, अगर, राजाही, लोह, कृमिज, जॉगक ये सात (न॰) नाम अगरके हैं। अगरू-शब्द (पु॰ न॰) है ॥ १२६ ॥ कालागुरु, अगरु ये दो (न॰) नाम काले अगरके हैं। मंगल्या यह एक (स्त्री॰) नाम मिक्कि समान गंध-वाळे अगरका है । यक्षपूप, सर्जरस, राल, सर्वरस ॥ १२७ ॥ बहुद्धप ये पांच (पु॰) नाम रालके हैं । वृक्षधूप, कुत्रिमधूपक ये दो (पु॰) नाम अनेक पदार्थींसे बनाये गये धूपके हैं। तुरुष्क, पिंडक, सिल्ह, यावन ये चार (पु॰) नाम लोवानके हैं । पायस ॥ १२८ ॥ श्रीवास, वृक्षपूप, श्रीवेष्ट, सरस्ट्रव ये पांच (पु॰) नाम द्वदास्के द्रक्के हैं। मृगनाभि (पु॰), मृगमद (पु॰), करतूरी (स्त्री॰) ये तीन नाम कस्तूरीके हैं । कोलक ॥ १२९ ॥ कंकोलक, कोशफल ये तीन (न॰) नाम कंकोलके हैं। कर्पूर, वनसार (पु॰), चन्द्रसंज्ञ (पु॰), सिताञ्र (पु॰), हिमबालुका

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम् ।
तेलपणिकगोशीर्षे हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १३१ ॥
तिलपणी तु पत्राङ्गं रक्षनं रक्तचन्दनम् ।
कुचन्दनं चाथ जातीकोशजातीफले समे ॥ १३२ ॥
कपूरागरुकस्त्रीकङ्कोलैयेसकदेमः ।
गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् ॥ १३३ ॥
चूर्णानि वासयोगाः स्युभीवितं वासितं त्रिषु ।
संस्कारो गन्धमाल्याद्यैयः स्यात्तद्धिवासनम् ॥ १३४ ॥
माल्यं मालास्रजौ मूर्भि केशमध्ये तु गर्भकः ।
प्रश्रष्टकं शिखालम्ब पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥ १३५ ॥

(स्त्री॰)ये पांच नाम कपूरके हैं। तहां कपूरशब्द (पु॰ न॰) है ॥१३०॥ गंधसार (पु॰), मलयज (पु॰ न॰), भद्रश्री (स्त्री॰), चन्दन ये चार नाम मल्यागिर चन्दनके हैं। तहां चन्दनशब्द (पु॰ न॰) है। तैलपिंक यह एक (न॰) नाम सुपेद शीतल चन्दनका है। गोशीर्ष यह एक (न०) नाम सुपेद कमल्के समान गन्धवाले चन्दनका है। हरिचन्दन यह एक नाम कपिछ। वर्णवाले चन्दनका है। और (पु॰ न॰) है ॥ १३१ ॥ तिल्पणी, पत्रांग, रंजन, रक्तचन्दन, कुचन्दन ये पांच नाम लालचन्दनके हैं । तिलपर्णीशब्द (स्त्री॰) शेष (न॰) हैं। जातीकोद्या, जातीफल ये दो (न॰) नाम जायफलके हैं। ॥ १३२ ॥ यक्षकर्दम यह एक (पु॰) नाम कर्पूर, अगर, कस्तूरी, कंको-छ इन्होंको पीसकर किये हुए लेफ्का है। गात्रानुलेपिनी (स्त्री॰), वर्ति (स्त्री॰), वर्णक (पु॰ न॰), विल्लेपन (न॰) ये चार नाम सुगंधि द्रव्योंके खबटनेके हैं ॥ १३३ ॥ चर्ण (न०), वासयोग (पु०) ये दो नाम चूर्णमात्रके हैं। भावित, वासित ये दो नाम गन्धद्रव्यकरके वासित करी वस्तुके हैं और त्रिछिंगी हैं। अधिवासन यह एक (न॰) नाम गन्ध और माल्य आदिकरके जो संस्कार किया जावे उसका है ॥ १३४॥ मास्य (न॰), माला (स्त्री॰), स्रजु (स्त्री॰) ये तीन नाम फलोंकी मालाके हैं। गर्भक यह एक (पु॰) नाम बालोंपर घारण करी मालाका ह। प्रश्रष्टक यह एक (न॰) नाम चोटीपर्यंत छम्बी मालाका है। छ- प्रालम्बम् जुलम्ब स्यात् कण्डा देकांक्षकं तु तत् ।
यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि शिखास्वापीड शेखरी ॥ १३६॥
रचना स्यात्परिस्यन्द आभोगः परिपूर्णता ।
उपधानं त्पबईः शय्यायां शयनीयवत् ॥ १३७॥
शयनं मश्रपर्यद्भपत्यद्भाः खद्वया समाः ।
गेन्दुकः कन्दुको दीपः प्रदीपः पीठमासनम् ॥ १३८॥
समुद्रकः संपुटकः प्रतिप्राहः पतद्वहः ।
प्रसाधनी कङ्कतिका पिष्टातः पटवासकः ॥ १३९॥
द्पेणे मुकुरादशीं व्यजनं तालवृन्तकम् ।

इति मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

टलामक यह एक (न०) नाम मस्तकपर्यंत धारण करी मालाका है ॥१३५॥ प्रालम्ब यह एक (न॰) नाम कंठसे सीधी और लम्बी मालाका है। वैक-क्षिक यह एक (न॰) नाम छातीपर तिरछी मालाका है। आपीड, शेखर ये दो (पु॰) नाम चोटीमें गूंथी हुई मालाके हैं ॥ १३६ ॥ रच-ना (स्त्री॰), परिस्यन्द (पु॰) ये दो नाम माला आदिकी रचनाके हैं। आभोग (पु॰), परिपूर्णता (स्त्री॰) ये दो नाम सव उपचारवाळींकी परिपूर्णताके हैं। उपधान (न०), उपबर्ह (पु०) ये दो नाप तिकयेके हैं। शय्या (स्त्री॰), शयनीय (न॰)॥ ९३७॥ शयन (न॰) ये तीन नाम शय्याके हैं। मंच, पर्यंक, पल्यंक, खट्टा ये चार नाम खाटके हैं। खदाशब्द (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं। गेंद्रुक, कन्द्रुक ये दें (पु॰) नाम छोटै ताकिये वा गेंदके हैं। दीप, प्रदीप य दो (पु॰) नाम दीफाके हैं। पीठ, आसन ये दो (न॰) नाम आसनके हैं ॥ १३८॥ समुद्रक, संपुटक ये दो (पु॰) नाम संपुट अर्थात् डिब्बेके हें । प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ये दो (पु॰) नाम पीकदानीके हैं । प्रसाधनी, कंकतिका य दो (स्त्री॰) नाम कंघीके हैं। पिष्टात, परवासक ये दो (पु॰) नाम बुकनीके हैं ॥१३९॥ द्र्पण (पु॰ न॰), मुकुर (पु॰), आद्री (पु॰) ये तीन नाम शि रोके हैं। व्यजन, ताल्वृंतक ये दो (न॰) नाम ताडके पत्तांसे बने हुए इतिमनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥ पंखेके हैं।

अय ब्रह्मवर्गः ७।

संतितगीत्रजननकुछान्यभिजनान्वयो ।
वंशोऽन्ववायः संतानो वर्णाः स्युक्तेस्वनाङ्यः ॥ १ ॥
विप्रसित्रयविद्शुद्राश्चातुर्वण्यमिति स्मृतम् ।
राजबीजी राजवंदयो बीज्यस्तु कुछसंभवः ॥ २ ॥
महाकुछकुछीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
आश्रमोऽस्त्री दिजात्यप्रजन्मभूदेववाडवाः ।
विप्रश्च ब्राह्मणोऽसी षट्कमा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥
विद्वान् विपश्चिद्दोषकाः सन्सुधीः कोविदो बुधः ।
धीरा मनीषी कः प्राक्तः संख्यावान् पंडितः कविः ॥ ५ ॥
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्श्वन्थवर्णो विचक्षणः ।
दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियद्छान्दसी समी ॥ ६ ॥

अथ ब्रह्मवर्गः । संतति, गोत्र, जनन, कुरु, अभिजन, अन्वय, वंदा, अन्व-वाय, संतान ये नव नाम वंशके हैं । तहां संततिशब्द (स्त्री॰), गोत्र जनन, कुल (न०) शेष (पु०) हैं। ब्राह्मण आदि वर्ण हैं ॥ १ ॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय, विद्या, क्राद्र य चारों वर्ण चातुर्वर्ण्य कहाते हैं । आगेके अग्निचित्राब्दतक (पु॰) हैं और आश्रमशब्द (पु॰ न॰) है। राजनी जिन्, राजवंश्य ये दो नाम राजवंद्रासे उत्पन्न हुएके हैं । बीज्य, कुलसंभव ये दो नाम कुलमात्रसे उत्पन्न हुएके हैं ॥ २ ॥ महाकुल, कुलीन, आर्य, सभ्य, सज्जन, साधु ये छः नाम सज्जनके हैं । ब्रह्मचारिन्, ग्रहिन्, वान-प्रस्थ, भिक्षु ये चार आश्रम हैं। तहां ब्रह्मचारिन् गृहिन् राब्द् (नका-रान्त पु॰) हैं ॥ ३ ॥ आश्रम यह एक नाम आश्रमका है । तहां आ श्रमशब्द (पु॰ न॰) है । हिजाति, अग्रजन्मन् (न।न्त), भूदेव, वाहव, विम, ब्राह्मण ये छः नाम ब्राह्मणके हैं। बट्कर्मन यह एक (नान्त पु॰) नाम यज्ञ आदिसे युक्त ब्राह्मणका है ॥ ४ ॥ विद्यस् (वस्वन्त), विपश्चित्, दोषज्ञ, सत् (तान्त), द्वधी, कोविद, वुष, धीर, मनीषिन (इत्रन्त), श, प्राज्ञ, संख्यावत् (मत्वन्त), पंडित, कवि ॥ ५ ॥ धीमत् (मत्वन्त), स्रि, कृतिन् (इक्नत), कृष्टि, छन्धवर्ण, विषक्षण, दूरदर्शिनं (इक्नत), · 🍋 /

" मीमांसको जैमिनीये वेदान्ती ब्रह्मवादिनि । वैशेषिके स्यादीलूक्यः सीगतः शून्यवादिनि ॥ नैयायिकस्त्रक्षपादः स्यात्स्याद्वादिक आहेकः । चार्वाकलीकायतिकी सत्कार्ये सांख्यकापिली ॥ " एपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्धरः । मन्त्रव्याख्याकृदाचार्ये आदेष्टा त्वध्वरे वृती ॥ " ॥ यष्टा च यजमानश्च स सोमवति दीक्षितः । इज्याशीलो यायज्ञको यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥ स गीष्पतीष्ट्या स्थपितः सोमपीथी तु सोमपाः । सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥

दीर्घदार्रीन् (इत्रन्त) ये बाईस नाम पंडितके हैं । श्रोत्रिय, छान्दस ये दो नाम वेदपाठीके हैं ॥ ६ ॥ " मीमांसक, जैमिनीय ये दो (पु०) नाम मीमांसा जास्त्रको जाननेवालेके हैं । वेदांतिन, ब्रह्मवादिन ये दो (इन्नन्त पु॰) नाम वेदान्तीके हैं । वशेषिक, ओळूक्य ये दो (पु॰) नाम सात पदार्थवादीके हैं। सौगत, शून्यवादिन (इन्नन्त) ये दो नाम ज्ञन्यवादीके हैं। नैयायिक, अक्षपाद ये दो (पु॰) नाम न्यायशास्त्रको जाननेवालेके हैं। वादिक, आईक ये दो नाम मोक्ष है अथवा नहीं है ऐसे कहनेवाछेके हैं। चार्वाक, लीकायतिक ये दो (पु॰) नाम देहारमवादि + बौद्धके हैं। सांख्य, कापिल ये दो नाम सांख्यको जाननेवालेके हैं।" खपा-ध्याय, अध्यापक ये दो नाम पढानेवाछेके हैं । गुरु यह एक नाम गर्भा-धान आदि कर्मीके करानेवाले पिता आदिका है। आचार्य यह एक नाम वेदकी व्याख्या करनेवालेका है। यज्ञविशेषमें ऋत्विजोंका आदेश ब्रितिन् (इन्नत) कहाता है ॥ ७ ॥ यष्ट्र (ऋकारान्त), यजमान ये तीन नाम यजमानके हैं । क्लिक यह एक नाम सोमयज्ञमें आदेश यजमानका है । इज्याशील, यायजूक ये दो नाम यजनशीलके हैं। यज्वन् (नान्त) यह एक नाम विधिसे यज्ञ करनेवालेका है ॥ ८ ॥ स्थपति यह एक बृहस्पतिके कहे विधिकरके यज्ञ करनेवालेका है । सोमपीथिन, सोमपा ये दो नाम सोमयज्ञ करनेवा छेके हैं । सर्ववेदम् (सान्त) यह एक नाम सर्वस्व दक्षिणावाले विश्वाजित् नामक यज्ञ करनेवालेका है ॥ ९ ॥

अन्वानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः ।
लब्धानुद्धः समावृत्तः सुत्वा त्वभिषवं कृते ॥ १० ॥
छात्रान्तेवासिनौ शिष्यं शैक्षाः प्राथमकिल्पकाः ।
एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
सतीर्थ्योस्त्वेकगुरवश्चितवानिष्मपित्रचित् ।
पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहान्ययम् ॥ १२ ॥
उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्याज्ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।
यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सन्ततन्तुमेखः कृतुः ॥ १३ ॥
पाठो होमश्चातिर्थीनां सपर्या तपणं बलिः ।
एते पश्च महायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥
समज्या परिवद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।
आस्थानी क्रीवमास्थानं स्वीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥

अनुचान यह एक नाम शिक्षा आदि अंगोंसे युत वेद अध्ययन करनेवालेका है। समावृत यह एक नाम गुरुसे गृहस्य आदि आश्रमकी प्राप्तिक हिये अनुजा पानेवालेका है। मुखन् (नान्त) यह एक नाम अभिषव स्नान किये हएका है ॥ १० ॥ छात्र, अंतेवासिन, शिष्य ये तीन नाम चेलेके हैं। तहां अंतेवासिनशब्द (इत्रन्त पु॰) है। रीक्ष, प्राथमकाल्पिक ये दो नाम नये पढनेवालेके हैं । सब्रह्मचारिन् (इत्रन्त) यह एक नाम आपसमें समान वेदवत आचारवालोंका है ॥११॥ सतीर्थ्य यह एक नाम एक गुरुके पास पढनेवालोंका है। अग्निचित् यद एक नाम अग्निको बटोरनेवालेका हैं। ऐतिह्य (न॰), इतिह ये दो नाम लोकपरम्पराके उपदेशके हैं। तहां इतिह यह अव्यय है ॥१२॥ उपज्ञा यह एक (स्त्री०) नाम पहले ज्ञानका है। उपक्रम यह एक (पु॰) नाम जानके आरंभ किथे हुएका है। यज्ञ, सव, अध्वर, याग, सप्ततन्तु, मख, कर् ये सात (पु॰) नाम यज्ञके हैं ॥१३॥ विधिसे वेद आदिका पढना ब्रह्मयज्ञ कहाता है । वेश्वदेवहाम करना देवयज्ञ कहाता है । घरमें आये अभ्यागतींको अन्न आदिकरके प्रसन्न करना मनु-ष्ययज्ञ कहाता है। पितरोंकी अन्न जल आदिसे तृति करना वित्रम्ब क-हाता है। बाळ करना भूतयज्ञ कहाता है। ये पांच महायज्ञ हैं ॥ ९४ ॥ समज्या, परिषत्, गोष्ठी, सभा, समिति, संसद् , आस्थानी, आस्थान, सदस् प्राग्वंशः प्राग्वविगेंहात्सदस्या विधिदिशिनः ।
सभासदः सभास्ताराः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
अध्वर्यूद्रावृहोतारो यजुःसामर्गिदः क्रमात् ।
आप्रीधाद्या धनैवीयां ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
वेदिः परिष्कृता भूमिः समे स्यण्डिलचत्वरे ।
चषालो यूपकटकः कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥
यूपायं तमे निर्मन्थयदारुणि त्वरणिद्वयोः ।
दिक्षणाप्रिगिहिपत्याहवनीयौ त्रयोऽप्रयः ॥ १९ ॥
अप्रित्रयमिदं त्रेता प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
समुद्यः परिचाय्योपचाय्यावग्रौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥

(सांत) ये नव नाम सभाके हैं । तहां आस्थानशब्द (न॰) है । सदस्-হাল্ব (स्त्री॰ न॰), হাঁদ (स्त्री॰) हैं ॥ १५ ॥ সাग्वंश यह एक (पु॰) नाम हिनके गेहसे पूर्वदेशमें सदस्य आदियोंके घरका है। सदस्य यह एक (पु॰) नाम वेदोक्त क्रियाकलापको देखनेवालेका है। सभासद् , सभारतार, सभ्य, सामाजिक ये चार (प्र॰) नाम सभ्योंके हैं। ॥१६॥ अध्वर्यु यह एक (पु॰) नाम यजुर्वेद्के जाननेवाले ऋत्विज्का है। उद्वात (ऋकारान्त) यह एक (प्र॰) नाम सामवेदको जाननेवाछे ऋ रिवजुका है । होत् (ऋकारान्त) यह एक (पु॰) नाम ऋग्वेदको जाननेवाले ऋत्विज्का है। ऋत्विज् (जान्त), याजक ये दो (पु॰) नाम यजमानने धन आदि देके जिन्होंको वरे उन्होंके हैं ॥ १७ ॥ वेदि यह एक (पु॰) नाम यज्ञके लिये डमरुके आकारकी बनाई पृथ्वीका है। स्थण्डिल, चत्वर ये दो (न॰) नाम यक्तके छिये संस्कार किये हुए पृथ्वीके भाग अर्थात चौत-रेंके हैं । चषाछ, यूपकटक ये दो (पु॰) नाम यज्ञालंभके शिरमें वछयके आकारवाले काठविद्रोषके हैं। कुंबा यह एक (स्त्री०) नाम यज्ञभूमिमें नीचजातिकी दृष्टिके निवारणके छिये बहुत बेष्ट्रन (आवरण) करनेका है ॥१८॥ यूपाय्र, तर्मन् (नांत) ये दो (न॰) नाम यज्ञखंभके अग्रमा-गके हैं। अराणे यह एक नाम आग्ने निकाछनेकी छकडियोंका है यह दाब्द (स्त्री ॰ पु॰) है । दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय ये तीन (पु॰) नाम यज्ञकी अग्निके हैं ॥ १९ ॥ त्रेता यह एक (स्त्री॰) नाम इन तीनों यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
तिसम्मानाय्योऽयाग्रायी स्वाहा च हुतभुविमया ॥ २१ ॥
ऋक् सामिधेनी घाट्या च या स्यादाग्रेसिमन्धने ।
गायत्रीप्रमुखं छन्दो हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
आमिक्षा सा भृतोष्णे या क्षीरे स्याद्धियोगतः ।
धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
पृषदाज्यं सद्ध्याज्ये परमान्नं तु पायसम् ।
हव्यकव्ये दैविपित्रये अन्ने पात्रं सुवादिकम् ॥ २४ ॥
ध्रुवोपभृज्जुहूनी तु सुवो भेदाः सुचः स्त्रियः ।
उपाकृतः पशुरसी योऽभिमन्त्रय क्रतो हतः ॥ २५॥

अग्नियोंका है। प्रणीत यह एक (पु॰) नाम मंत्र आदिसे संस्कार किये हुए अग्निका है। समूह्य, परिचाय्य, उपचाय्य ये तीन (पु॰) नाम य-इकी अग्निके स्थलविशेषके हैं ॥ २० ॥ आनाय्य यह एक (पु॰) नाम गाईपत्य अग्निसे ग्रहण कर जे। दक्षिणाग्नि स्थापित कराया जावे **उसका है। अग्रायी**, स्वाहा, हुतभुक्प्रिया ये तीन (स्त्री॰) नाम अ-ग्निकी स्त्रीके हैं ॥ २१ ॥ सामिधेनी, धाय्या ये दो (स्त्री॰) नाम अग्निका प्रज्विहतः करनेमें जो ऋचा पढी जावे उसके हैं । छन्दस् (सान्त) यह एक नाम गायत्री उष्णिक् आदि छन्दोंका है और क्वीब है। चर यह एक नाम अग्निविषे हुयमान अन्न आदिका है और (पु॰) है ॥ २२ ॥ आमिक्षा यह एक (स्त्री॰) नाम पकाये हुए गरम दूधमें दहीके योगस **उत्पन्न विकृतिका है ।** धवित्र यह एक (न॰) नाम मृगछालासे रचे पंखेका है ॥ २३ ॥ पृषदाज्य यह एक (न॰) नाम दहींसे मिले घतका हैं। परमात्र (पु॰), पायस (पु॰ न॰) ये दो नाम दूधकी खीरके हैं। हव्य यह एक (न॰) नाम देवताओं के अर्थ दिये जानेवा छे अन्नका है। कव्य यह एक (न॰) नाम पितरों के अर्थ दिये जानेवा है। पात्र यह एक (न॰) नाम स्त्रुव, चमसा आदिका है ॥२४॥ भ्रवा, उपभृत, जुहू (तीन स्त्री॰), सुव ये चार नाम स्नुच्के भेदके हैं। तहां स्नुच्झब्द (पु॰) है। उपाकृत यह एक (पु॰) नाम आभमंत्रित कर यज्ञमें हत परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्यकम् ।
वाच्यिल्ङ्काः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥
सात्राय्यं हिवरमे तु हुतं त्रिषु वषद् कृतम् ।
दीक्षान्तोऽवभृथो यश्चे तत्कर्माई तु यिश्चयम् ॥ २७ ॥
त्रिष्यय ऋतुकर्मेष्टं पूर्तं स्नातादि कर्मे यत् ।
अमृतं विघसो यश्चशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
त्यागो विहापितं दानमुस्सर्जनविसर्जने ।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहातः ।
मृतार्थे तदहे दानं त्रिषु स्यादीर्ध्वेदिहकम् ॥ ३० ॥
पितृदानं निवापः स्याच्छाद्धं तत्कर्मे शास्त्रतः ।
अन्वाहार्थे मासिकेंऽशोऽष्टमोऽद्धः कुतपोऽश्चियाम् ॥ ३१ ॥

फिये जानेवाले पराका है ॥ २५ ॥ परम्पराक, ज्ञामन, प्रोक्षण ये तीन (न॰) नाम वधके अर्थ यज्ञसम्बन्धीय परा मारनेके हैं । प्रमीत, उपस-म्पन्न, प्रोक्षित ये तीन नाम यज्ञके अर्थ हत हुए पशुमान्नके हैं और बाच्य-छिगी हैं। सान्नाय्य यह एक (न॰) नाम हिविविशेषका है। वषट्कृत यह एक नाम अग्निविषे होमे हुए याज्य आदिका है और वाच्यिलगी है ॥२६॥ अवभूथ यह एक (पु॰) नाम यज्ञमें दीक्षाके अंतमें स्नानविशेषका है। मित्रिय यह एक (त्रि॰) नाम यज्ञकर्मके योग्य वस्तुका है ॥ २७ ॥ इष्ट यह एक (न॰) नाम यज्ञके कर्मका है। पूर्ज यह एक (न॰) नाम बावडी कुआ आदि खातका है। अमृत यह एक (न॰) नाम यज्ञशेष प्ररोढाञ्च आदिका है। विघस यह एक (प्र॰) नाम देव और पितृ आदिके भक्तशेषका है ॥ २८ ॥ त्याग, विहापित, दान, उत्सर्जन, विसर्जन, विश्राणन, वितरण, स्पर्शन, प्रतिपादन ॥२९॥ प्रादेशन, निर्वपण, अफ्वर्जन, अंहति ये तेरह नाम दानके हैं । त्यागशब्द (पु॰) अंहति (क्री॰) रोष (न॰) हैं। भीर्घ्वदेहिक यह एक नाम भरणदिनसे आरंम कर द्रा दिनपर्यंत पिंडदान आदिका है और त्रिलिंगी है ॥३०॥ पितृदान (न॰), निवाप (पु॰) ये दो नाम पितरोंका उद्देश कर जो दान किया जावे उसके हैं। श्राद्ध यह (न॰) नाम शास्त्रसे पितृसंबंधी पर्येषणा परीष्टिश्चाऽन्वेषणा च गवेषणा ।
सानस्त्वध्येषणा याच्चाऽभिश्चास्तियांचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
षट् तु त्रिष्वध्येमघाँग्रें पाद्यं पादाय वारिणि ।
क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधानि ॥ ३३ ॥
स्युरावशिक आगन्तुरतिथिनां मृहागते ।
प्राप्त्र्णिकः प्राधुणकश्चाभ्युत्यानं तु गौरवम् ॥ ३४ ॥
पूजा नमस्याऽपचितिः सपयोचाँहेणाः समाः ।
वारिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याप्युपासना ॥ ३५ ॥
व्रज्याऽटाट्या पर्यटनं चर्या त्वीयोपथे स्थितिः ।
उपस्पर्शस्त्वाचमनमय मौनममाषणम् ॥ ३६ ॥

कर्मका है। अन्वाहार्य्य यह एक (न०) नाम मासिक अमावास्या श्रा-द्धका है। कुतप यह एक नाम दिनके आठवें भागका है और (प्र॰न॰) है ॥ ३१ ॥ पर्य्येषणा, परीष्टि ये दो (स्त्री॰) नाम श्राद्धमें ब्राह्मणके भाजनकी टहल वा भक्तिके हैं । अन्वेषणा, गवेषणा ये दो (स्त्री॰) नाम धर्मआदिको ढूंढनेके हैं। सान, अध्येषणा ये दो (स्त्री॰) नाम गुरु आ-दिसे प्रार्थनापूर्वक विनतीके हैं । याच्या, अभिज्ञास्ति, याचना, अर्थना ये चार (स्त्री॰) नाम याचनाके हैं ॥ ३२॥ अर्घ्य, पाद्य, आतिथ्य, आति-थेय, आवेशिक, आगंतु ये छः शब्द वाच्यांलंगी हैं । अर्घ्य यह एक नाम अति।थिकी पूजाके उपचारके अर्थ पानीका है। पाद्य यह एक पैरोंके अर्थ जो पानी हो उसका है। आतिथ्य यह एक नाम अतिथिके अर्थ अन्न आदिका है। आतिथेय यह एक नाम अतिथिमें जो साधु हो उसका है ॥ ३३ ॥ आवेशिक, आगंत्, अतिथि, गृहागत ये चार नाम घरमें आये हुए अतिथिके हैं। तहां अतिथिशब्द (पु॰) है। प्राप्ट्रिणिक, प्राप्ट्रिणक ये दो (पु॰) नाम भभ्यागतके हैं। अभ्युत्थान, गौरव ये दो (न॰) नाम उत्थानपूर्वक संस्कारके हैं ॥ ३४ ॥ पूजा, नमस्या, अपचिति, सप-र्य्या, अर्चा, अर्हणा ये छः (स्त्री॰) नाम पूजाके हैं । वरिवस्या, शुश्रुषा, परिचर्का, उपासना ये चार (स्त्री०) नाम उपासनाके हैं ॥ ३५ ॥ वज्या, अटा, अटचा, पर्यटन ये चार नाम चलनेके हैं । पर्यटनशब्द (न॰) शेष (स्त्री॰) हैं। वर्या यह एक (स्त्री॰) नाम ध्यान मौन आदि मार्गमें "प्राचेतसश्चादिकावः स्यान्मैत्रावरुषिश्च सः ।
वाल्मीकश्चाय गांधेयो विश्वामित्रश्च काँशिकः ॥
व्यासो द्वैपायनः पाराश्चयः सत्यवतीसुतः । "
आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽनृत्परिपाटी अनुक्रमः ।
पर्यायश्चातिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥ ३७ ॥
नियमो व्रतमश्ची तच्चोपवासादि पुण्यकम् ।
औपवस्तं तूपवासो विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८ ॥
स्याद्वह्मवर्चसं नृत्ताध्ययनिद्धरथाञ्चालः ।
पाठे ब्रह्माञ्जलिः पाठे विप्रुषो ब्रह्माबन्दवः ॥ ३९ ॥
ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं कल्पे विधिक्रमी ।
मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पोऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥ ४० ॥

स्थित होनेवालेका है। उपस्पर्श (पु॰), आचमन (न॰) ये दो नाम आचमनके हैं। मीन, अभाषण ये दो (न०) नाम नहीं बोल्नेके हैं ॥ ३६ ॥ " प्राचेतस् (सान्त), आदिकवि, मेत्रावरुणि, वाल्मीकि ये चार (प॰) नाम वाल्मीक मुनिके हैं । गाधेय, विश्वामित्र, कौशिक ये तीन (पु॰) नाम विश्वामित्रके हैं । व्यास, द्वैपायन, पाराशर्य, सत्यव-तीस्रुत ये चार (पु॰) नाम वेदव्यासके हैं । " आनुपूर्वी, आवृत्, परि-पाटि, अनुक्रम, पर्याय ये पांच नाम अनुक्रमके हैं । अनुक्रम, पर्याय(पु॰) क्रोष (स्त्री॰) हैं । अतिपात, पर्य्यय, उपात्यय ये तीन (पु॰) नाम अ-तिक्रमके हैं ॥ ३७ ॥ नियम (पु॰), ब्रत ये दो नाम ब्रतके हैं तहां व्रतः হাভ্র (पु॰ न॰) है । पुण्यक यह एक (न॰) नाम उपवास चान्द्रायण व्रत आदिका है। औपनस्त (न॰), उपनास (पु॰) ये दो नाम उपना सके हैं । विवेक यह एक (पु॰) नाम पृथक् . स्वह्मपपनेका है ॥ ३८ ॥ ब्रह्मवर्षस यह एक (न॰) नाम सदाचार पालन और वेदका अभ्यास इन दोनोंकी संपत्तिका है । ब्रह्माध्वाल यह एक (पु॰) नाम वेदके पा-ठकी आदिमें हाथोंकी ॐकारके उच्चारणपूर्वक अंजलिका है। ब्रह्माबेन्द्र यह एक (पु॰) नाम वेदके पाठमें मुखसे निकसे हुए नलके किनकींका है ॥ ३९ ॥ ब्रह्मासन यह एक (न॰) नाम ध्यान और योगके आस-नका है । कल्प, विधि, क्रम ये तीन (प०) नाम नियोगजास्त्रके हैं ।

संस्कारपूर्व ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ।
समे तु पादग्रहणमभिवादनिमत्युमे ॥ ११ ॥
भिक्षुः परिवाद कर्मन्दी पाराश्चर्यापे मस्करी ।
तपस्वी तापसः पारिकांश्ची वाचंग्यमो मुनिः ॥ १२ ॥
तपःक्रेशसहो दान्तो वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ।
ऋषयः सत्यवचसः स्नातकरत्वाप्रववती ॥ १३ ॥
ये निर्जितोन्द्रग्यमामा यतिनो यत्तग्र्य ते ।
यः स्थिण्डले व्रतवशाच्छेते स्थिण्डलशाय्यसौ ॥ ११ ॥
स्थाण्डलश्चाथ विरजस्तमसः स्युद्देयातिगाः ।
पवित्रः प्रयतः पूतः पाखण्डाः सर्वेलिङ्किनः ॥ १५ ॥

मुख्य यह एक (पु॰) नाम आद्यविधिका है । अनुकल्प यह एक (पु॰) नाम मुख्यसे निचे गीणका है ॥ ४० ॥ उपाकरण यह एक (न०) नाम संस्कारपूर्वक वेदके ग्रहण करनेका है। पादग्रहण, अभिवादन ये दो (न॰) नाम गोत्रकथनपूर्वक नमस्कारविशेषके हैं ॥ ४९ ॥ भिक्ष, परिवाज (जान्त), कर्मीदेन (इक्नत), पाराशरिन, मस्करिन (इक्नत) ये पांच (पु०) नाम संन्यासीके हैं । तपरिवन (इन्नन्त), तापस, पारिकांक्षिन (इन्नन्त) ये तीन (पु॰) नाम तप करनेवालेके हैं । वाचंयम, मुनि ये दो (पु॰) नाम परिमित बोलनेवालेके हैं ॥ ४२ ॥ दांत यह एक (पु॰) नाम तपके क्केशके सहनेवालेका है। वर्णिन् (इनन्त), ब्रह्मचारिन् (इनन्त) ये दो (पु॰) नाम ब्रह्मचारीके हैं । ऋषि, सत्यवचस् ये दो (पु॰) नाम अडापिके हैं। स्नातक, आप्रवज्ञतिन् (इन्नन्त) ये दो (पु॰) नाम वेद्ज्रती होके समावर्त्तन कियेहएका है ॥ ४३ ॥ यतिन (इन्नत), यति ये दो (पु॰) नाम इन्द्रियोंको जीतनेवालेके हैं। स्थंडिलशायिन (इन्नन्त), स्थांडिल ये दो (पु॰) नाम नियमके पूर्वक पृथ्वी विशेषपर सोने-वालेंके हैं ॥ ४४ ॥ विरजस्तमस् (सान्त), इयातिग ये दो (पु॰) नाम सत्वमें एक निष्ठावाले व्यास आदिकोंके हैं। पवित्र, प्रयत, पूत ये तीन (दुः) नाम पवित्रके हैं। पाखण्ड, सर्विछिगिन (इक्नत) ये दो पालाको दण्ड आषाढो वते राम्भस्तु वैणवः ।
अक्षी कमण्डलुः कुण्डी व्रतिनां सासनं वृषी ॥ ४६ ॥
अजिनं चर्म कृतिः स्त्री भैशं भिश्नाकदम्बक्षम् ।
स्वाध्यायः स्याज्यपः सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥ ४७ ॥
सर्वेनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वधमर्षणम् ।
दर्शक्ष पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ॥ ४८ ॥
शरीरसाधनापेशं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ।
नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ॥ ४९ ॥
" श्लौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु । "
उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोव्हते दक्षिणे करे ।
प्राचीनावीतमन्यस्मित्नवितं कण्ठलम्बतम् ॥ ५० ॥

(पु॰) नाम बीद्ध क्षपण आदि द्वष्ट शास्त्रवीतयोंके हैं ॥ ४५ ॥ आषाढ यह एक (पु॰) नाम ब्रह्मचारीके पलाशसंबन्धी दुण्डका है। रांभ यह एक (पु॰) नाम बांसके दण्डका है। कमण्डलु, कुण्डी (स्त्री॰) ये दो नाम ब्रितयोंके जलपात्रके हैं। तहां कमण्डल्ड्सब्द (पु॰ न॰) है। बृषी यह एक (स्त्री॰) नाम ब्रतियोंके आसनका है ॥ ४६ ॥ अजिन (न॰), चर्मन् (नांतन॰), कृत्ति ये तीन नाम मृगचर्म आदिके हैं। तहां कृत्तिशब्द (स्त्री॰) है । भैक्ष्य यह एक (न॰) नाम भिक्षाके समूहका है । स्वाध्या-य, जप ये दो (पु॰) नाम वेदके अभ्यासके हैं। मुत्या (स्त्री॰), अ भिषव (पु॰), सवन (न॰) ये तीन नाम सोमाभिषवके हैं ॥४७॥ अघमषेण यह एक नाम सब पापोंको नाज्ञ करनेवाले जापका है और त्रिछिंगी है। दर्श यह एक (पु॰) नाम कृष्णपक्षके अन्तमें होनेवाले यज्ञका है। पी-र्णमास यह एक (पु॰) नाम पौर्णमासीमें होनेवाले यज्ञका है ॥ ४८ ॥ यम यह एक (पु॰) नाम शरीरमात्र करके साधनके योग्य नित्यक-र्भका है। नियम यह एक (पु॰) नाम माटी और जल आदिसे साध्य कर्म अर्थात् नित्यप्रति कृत्रिम कर्मका है ॥ ४९ ॥ " क्षीर (न॰), म-द्राकरण (न॰), मुण्डन (न॰), वपन थे चार नाम क्षीरके हैं। तहां वपन-इब्द् त्रिलिंगी है । ११ **क्यांत** यह एक (न०) नाम दहिने हाथको उत्पर करके जनेऊ धारण किये जानेका है। प्राचीनावीत यह एक (न०) नाम

अङ्गुल्यये तीर्थे देवं स्वल्पाङ्गुल्योर्पृले कायम् ।

मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥ ५१ ॥

स्याद्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।

देवभूयादिकं तद्वत्कुच्छं सान्तपनादिकम् ॥ ५२ ॥

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽथ वीरहा ।

नष्टाप्रिः कुहना लोभान्मिथ्येयीपथकल्पना ॥ ५३ ॥

वात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ।

धर्मध्वजी लिङ्गचृत्तिरवकीणीं सतव्रतः ॥ ५८ ॥

सुप्ते यस्मित्रस्तमेति सुप्ते यस्मित्रदेति च ।

अंगुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ॥ ५५ ॥

वामहाय उपको करके जनेउ धारण किये जानेका है। निर्वात यह एक (न॰) नाम कंठमें लंबित किये जनेऊका है ॥ ५० ॥ देव यह एक (न॰) नाम अंगुलियोंके अग्रभागमें देवतीर्थका है। काय यह एक (न॰) नाम कनिष्टिका और अनामिका अंगुलियोंके मूलमें कायतीर्थका है। फिय यह एक (न॰) नाम अंगुठा और तर्जनी अंगुलीके मध्यमें पितृतीर्थका है । ब्राह्म यह एक (न॰) नाम अंगुरेकी मूलमें ब्राह्मती-र्थका है ॥ ५१ ॥ ब्रह्मभूय, ब्रह्मत्व, ब्रह्मसायुज्य ये तीन (न०) नाम ब्रह्मभावके हैं । देवभूय, देवत्व, देवसायुज्य ये तीन (न०) नाम देवभावके ैहें। कुच्छ़ यह एक (न॰) नाम सांतपन आदिका है ॥ ५२ ॥ **प्राय** यह एक नाम संन्यासपूर्वक भोजनके त्यागनेका है और (पु॰) है। वीरहन् (नकारान्त), नष्टाग्नि ये दो (पु॰) नाम नष्ट हुए आग्नवालेके हैं। क्हना यह एक (स्त्री॰) नाम लोभसे छल कपर करके ध्यान मोनका है ॥ ५३ ॥ ब्रास्थ यह एक (पु॰) नाम संस्कारसे हीन हुएका है। अस्वा-ध्याय यह एक (पु॰) नाम अपनी ज्ञाखाके अनुसार अध्ययनसे ज्ञून्य हुएका है। धर्मध्वजिन् (इक्न्त), छिगवृत्ति ये दो (पु॰) नाम जीवि-काके अर्थ जटा आदिको धारण करनेवाहेके हैं। अवकीणिन (इनन्त), क्षतत्रत ये दो (पु॰) नाम नष्ट हुए ब्रह्मचर्यवालेके हैं ॥ ५४ ॥ अभिनिर्मुक्त यह एक (पु॰) नाम जिसके सोते हुए सूर्य अस्त हो जावे उसका है। अभ्यु-दित यह एक (पु॰) नाम जिसके सोते हुए सूर्य उदय हो जावे उसका

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् । परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् विवाहोपयमौ समी ॥ ५६ ॥ तथा परिणयोद्धाहोपयामाः पाणिपीडनम् । ज्यवायो ग्राम्यधर्मी मैथुनं निधुवनं रतम् ॥ ५७ ॥ त्रिवर्गी धर्मकामार्थेश्चतुर्वर्भः समोक्षकैः । सब्छैस्तैश्चतुर्भद्रं जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥ ५८ ॥ इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥

अथ क्षत्रियवर्गः ८।

मूर्घाभिषिको राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् । राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृत्रृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥ राजा तु प्रणताश्चेषसामन्तः स्यादधीश्वरः । चक्रवती सार्वभौमो नृपे।ऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥

है ॥ ५५ ॥ परिवेत्र (ऋकारान्त) यह एक (पु॰) नाम बढे भाईका विवाह नहीं हो और छोटा भाई कर हे उसका है। परिवित्ति यह एक (पु॰) नाम उस परिवेत्ताके बढे भाईका है ॥ ५६ ॥ विवाह, उपयम, परिणय, उद्घाह, उपयाम, पाणिपीडन ये छः नाम विवाहके हैं । पाणिपी-डनज्ञब्द (न॰) ज्ञेष (पु॰) हैं । व्यवाय (पु॰), ग्राम्यधर्म (न॰), भैथुन (न॰), निधुवन (न॰), रत (न॰) ये पांच नाम स्त्रीसे भोगके हैं ॥ ५७ ॥ त्रिवर्ग यह एक (पु॰) नाम धर्म अर्थ काम इनके समूहका है। चतुर्वर्ग यह एक (पु॰) नाम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंके समूहका है। चतुर्भद्र यह एक (न०) नाम बल्लाहित धर्म, अर्थ, काम, मोक्षका है। जन्य यह एक (न॰) नाम वरके समान अवस्थावाले और प्रियज-इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥ नोंका है ॥ ५८ ॥ अथ क्षत्रियवर्गः । मूर्घाभिषिक्त, राजन्य, बाहुज, क्षत्रिय, विराज् ये पांच (पु॰) नाम क्षत्रियके हैं। राजन्, राज्(जान्त), पार्थिव, क्ष्माभृत्, नुष, भूष, महीक्षित् ये सात (पु॰) नाम राजाके हैं ॥१॥ अधीश्वर यह एक (पु॰) नाम सब देशोंके राजा जिसको प्रणाम करते हैं उस राजाका है। चक्रवर्तिन् (इक्नत्), सार्वभौम ये दो (पु॰) नाम सम्रद्रपर्धित पृ-

येनेष्टं राजस्येन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।
शास्ति यश्चाइया राज्ञः स सम्राड्य राजकम् ॥ ३ ॥
राजन्यकं च नृपतिस्तित्रयाणां गणे कमात् ।
मन्त्री धीसचिवाऽमात्योऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥
महामात्राः प्रघानानि पुरोधास्तु पुरोहितः ।
द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राद्धिवाकासदर्शकौ ॥ ५ ॥
प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्यद्वाःस्थितदर्शकाः ।
रिक्षवर्गस्त्वनीकस्योऽयाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥
स्यायुकोऽधिकृतो प्रामे गोपो प्रामेषु भूरिषु ।
भौरिकः कनकाध्यक्षो रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥
अन्तःपुरे त्विकृतः स्यादन्तविशेको जनः ।
सौविद्छाः कश्चिकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥

ध्वीके पतिके हैं। मण्डलेश्वर यह एक (पु॰) नाम थोडी पृथ्वीके पतिके हैं ॥२॥ सम्राज् (जान्त) और एक (५०) नाम जिसने राजसूय यज्ञ किया हो और बारह मण्डलांका स्वामी हो और जो अपनी आज्ञासे सब राजा-ऑको शिक्षा करता हो उसका है। राजक यह एक (न॰) नाम राजाओं के समूहका है ॥ ३ ॥ राजन्यक यह एक (न०) नाम क्षत्रियोंके समूहका है । मांत्रेन (इन्नन्त पु॰), धीसाचिव, अमात्य ये तीन (पु॰) नाम मंत्रीके हैं। कर्म्सिचव यह एक नाम कार्योंमें योजित किये मंत्रियोंका है ॥ ४ ॥ महामात्र (पु॰), प्रधान (पु॰ न॰) ये दो नाम मुख्यहूप राजसहाय-कोंके हैं। आगे शत्रुशब्दतक (पु॰) हैं। पुरोधम् (सान्त), पुरोहित ये दो नाम ऋण आदि व्यवहारोंके विषयमें वादी और प्रतिवादीसे निर्मित किये विवादोंको निर्णय करनेवालेके हैं। प्राइविवाक, अक्षदर्शक ये दो नाम न्याय करनेवाछे हाकिमके हैं ॥ ५ ॥ प्रतीहार, द्वारपाल, द्वास्य, हाःस्थित, दर्शक ये पांच नाम हारपालके हैं। रक्षिवर्ग, अनीकस्थ ये दो नाम राजाकी रक्षा करनेवाले समूहके हैं। अध्यक्ष, अधिकृत ये दो नाम अधि-कारीके हैं ॥ ६ ॥ स्थायुक यह एक नाम ग्रामके अध्यक्षका है । गोप यह एक नाम बहुतसे गामोंके अध्यक्षका है। भीरिक, कनकाध्यक्ष ये दो नाम सुवर्णके अधिकारीके हैं । रूप्याध्यक्ष, नैष्क्रिक ये दो नाम चांदीके कारीके हैं ॥ ७ ॥ अंतर्वेशिक यह एक नाम भीतरके महरूमें अधि-

षण्डो वर्षवरस्तुल्यो सेवकार्थ्यनुजीविनः ।
विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ९ ॥
उदासीनः परतरः पाष्णित्राहस्तु पृष्ठतः ।
रिपौ वैरिसपत्नारिद्धिषद्धेषणदुहेदः ॥ १० ॥
दिश्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशत्रवः ।
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्यिनः ॥ ११ ॥
वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सला सुदृत् ।
सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
यथाईवर्णः प्रणिधिरपसपेश्वरः स्पशः ।
चारश्च गृदपुरुषश्चातप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥

कृत पुरुषका है । सो विद्कु, कं चुिकन, स्थापत्य, सो विद ये चार नाम राजा-के सभीपमें वेतको धारण करनेवाले पुरुषोंके हैं ॥८॥ षंढ, वर्षवर ये दो नाम राजाके रनवासमें रहनेवाले हीजडोंके हैं । सेवक, आर्थेन् (इन्नन्त), अनुजीविन् (इन्नन्त) ये तीन नाम सेवकके हैं । शत्रु यह एक नाम अपने देशके पास रहनेवाले राजाका है । यहांतक (पु॰) हैं । मित्र यह एक (न॰) नाम अपने देशसे दूर रहनेवाले राजाका है ॥ ९ ॥ उदासीन यह एक (पु॰) नाम शत्रु और मित्रसे भिन्न राजाका है । पार्षिणग्राह यह एक (पु॰) नाम राजाके पृष्ठभागमें रहनेवाले राजाका है। रिप्र विरिन्, सपल, अरि, द्विष (तांत), द्वेषण, दुईट् ॥ १० ॥ द्विष् (षांत), विपक्ष, आहित, आमित्र, दस्यु, शात्रव, शत्रु, अभिघातिन् (इन्नन्त), पर, अराति, प्रत्यार्थन् (इत्रन्त), परिपन्थिन् (इत्रन्त) ये उन्नीस नाम वे-रीके हैं। अभित्रज्ञाब्द (न०) शेष (पु॰) हैं ॥ ११ ॥ वयस्य, स्त्रिग्ध, सक्यस् (सान्त) ये तीन (पु॰) नाम प्यारेके हैं । मित्र, सिख सुहृद् (दान्त) थे तीन नाम मित्रके हैं । मित्र (न॰) रोष (पु॰) हैं। सख्य, साप्तपदीन ये दो (न॰) नाम भैत्रीके हैं। अनुरोध (पु॰), अनुवर्तन (न॰) ये दो नाम अनुकूळताके हैं। ॥ १२ ॥ यथाईवर्ण, प्रणिधि, अपसर्प, चर, स्परा, चार, गृदपुरुष ये सात (पु॰) नाम गुप्तपुरुषके हैं। आप्त, प्रत्ययित ये दो नाम विशेष विश्वासीके सांवत्सरो ज्योतिषिको दैवज्ञगणकाविष ।
स्युमींहूर्तिकमीहूर्तज्ञानिकातीन्तिका अपि ॥ १४ ॥
तान्त्रिको ज्ञातिसद्धान्तः सत्री गृहपातिः समी ।
छिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चश्च छेखके ॥ १५ ॥
छिखिताक्षरिवन्यासे छिपिछिबिक्षमे ख्रियो ।
स्यारसंदेशहरो दूतो दूत्यं तद्भावकमणी ॥ १६ ॥
अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्यः पिथक इत्यपि ।
स्वाम्यमात्यसुद्धत्कोशराष्ट्रदुर्गवछानि च ॥ १७ ॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ।
संधिनी विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥

हैं और त्रिलिंगी हैं ॥१३॥ सांवत्सर, ज्योतिषिक, दैवज्ञ, गणक, मौहर्तिक, मौहूर्त्त, ज्ञानिन (इन्नन्त,) कार्त्तान्तिक ये आठ (पु॰) नाम ज्योतिषीके ैहें **॥१४॥ तांत्रिक, ज्ञातांसिद्धांत य दो (पु॰)** नाम शास्त्रको जाननेवालेके हैं। सन्निन् (इन्नन्त), गृहपति ये दो (पु॰) नाम घरके पात अर्थात सब कालमें अन्न आदिको दान करनेवालेके हैं। लिफिकर, अक्षरचण, अक्ष-रचञ्च, छेखक ये चार (पु॰) नाम छिखनेवालेके हैं ॥ १५ ॥ छिखित (न॰), अक्षरसंस्थान (न॰), लिपि, लिबि ये चार नाम लिखे हुए अक्षरोंके हैं । लिपि और लिबि ये दोनों राब्द (स्त्री॰) हैं । सन्देशहर, दूत ये दो (पु॰) नाम दूतके हैं। दूत्य यह एक (न॰) न्नाम उस दूतके भाव और कर्मका है ॥ १६ ॥ अध्वनीन, अध्वग, अध्वर्म्य, पांथ, पथिक ये पांच (पु॰) नाम मार्ग चलनेवालेके हैं। स्वामिन अर्थात् राजा, अमात्य अर्थात् मंत्री, सहत् अर्थात् मित्र, कोश अर्थात् खजाना, राष्ट्र अर्थात देशकी पृथ्वी, किला, सेना ॥ १७ ॥ ये सात राज्यके अंग हैं और प्रकृति कहाते हैं । अंगराब्द (न॰) है और पुरमें रहनेवालींके समूहको-भी प्रकृति कहते हैं। प्रकृतिशब्द (स्त्री॰) है। सुवर्ण आदि देकर शत्रु-ऑसे प्रीति उपनानेको संिव कहते हैं और संविशब्द (प्रः) है। विग्रह यह एक (पु॰) नाम दूसरेके राज्यमें आग्न रूगाने और छुटमार करनेका है। यान यह एक (न॰) नाम शत्रके प्रति जीतनेकी इच्छासे गमन करनेका है । आसन यह एक (न॰) नाम अपनी शक्तिके स्कनेपर

षडगुणाः शक्तयस्तिसः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः । स्यः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवगीं नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् । सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥ सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥ साहसं तु दमो दण्डः साम सान्त्वमथो समी । भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैयंत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥ पश्च त्रिष्वषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः । विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्त्या रहः ॥ २२ ॥ रहश्चोपांशु चालिङ्गे रहस्यं तद्भवे त्रिषु । समी विस्तरम्भविश्वासी श्रेषो श्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥

किछा बना कर रहनेका है । द्वैध यह एक (न॰) नाम बलवानके साथ सांधि अर्थात् मिलाप और निर्बलके साथ विग्रह करनेका है। आ-श्रय यह एक (पु॰) नाम शत्रुसे पीडित हुए राजाको बख्वान राजाके आश्रय हेनेका है ॥ १८ ॥ आगेके ये संधि आदि छः गुण हैं । प्रभाव. उत्साह, मंत्र इन्होंसे उपजी तीन शक्ति हैं। क्षय (पु॰), स्थान (न॰), वृद्धि (स्त्री॰) यह नीति जाननेवाळांके त्रिवर्ग हैं ॥ १९ ॥ प्रताप, प्र-भाव ये दो (प॰) नाम खजाना और सेनासे उपने तेजका है। उपाय यह एक (पु॰) नाम साम अर्थात् त्रिय वचन आदि, दान अर्थात् धन आदिका देना, भेद अर्थात इकट्टे मिले हुए शतुओंको भेदकर नष्ट करना और दण्ड इनका है ॥२०॥ साहस (न०), दम (पु०) दण्ड (पु०) ये तीन नाम दण्डके हैं। सामन् (नांत), सान्त्व ये दो (न॰) नाम मिलापके हैं। भेद, उपजाप ये दो (पु॰) नाम फूटके हैं। उपधा यह एक (स्त्री॰) नाम धर्म अर्थ काम और भय करके मंत्री आदिकी परीक्षा करनेका है ॥ २१ ॥अषदक्षीणसे आदि ले निःशलाका शब्दपर्यंत पांच शब्द (त्रिः) हैं। अषडक्षीण यह एक नाम तीसरे मनुष्यादिसे नहीं जाना जावे कितु दो जनोंहीसे किया जाय उस सम्मतिका है। विविक्त, विजन, छन्न, निः-शुक्राक, रहस् (सान्त न०) ॥२२॥ रहस् , उपांशु ये सात नाम एकान्तके हैं। तहां रहस् और उपांशु ये दोनों अव्यय हैं। रहस्य यह एक नाम एकान्तमें होनेवाहेका है और (त्रि॰) है। विश्रम, विश्वास ये दो (पु॰) नाम अन्नेषन्यायकल्पास्तु देशक्ष्णं समक्षसम् ।

युक्तमीपिकं छभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
न्याय्यं च त्रिषु षद् संप्रधारणा तु समर्थनम् ।

अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥
शिष्टिश्वाज्ञा च संस्था तु मर्योदा धारणा स्थितिः ।

आगोऽपराघो मन्तुश्च समे त्दानबन्धने ॥ २६ ॥
दिपाद्यो द्विगुणो दण्डो भागधेयः करो बिछः ।

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

उपायनमुपप्राह्ममुपहारस्तथोपदा ।

यौतकादि तु यदेयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥

विश्वासके हैं। श्रेष यह एक (पु॰) नाम यथोचित स्वरूपसे गिरनेका है ॥ २३ ॥ अभ्रेष (पु॰), न्याय (पु॰), कल्प (पु॰), देशरूप (न॰), समंजस (न॰) ये पांच नाम नीतिके हैं। युक्त, औपियक, लभ्य, भजमान, अभिनीत ॥ २४ ॥ न्याय्य ये छः नाम न्यायसे युक्त द्रव्य आदिके हैं और छहां इाब्द (त्रि॰) हैं । संप्रधारणा (स्त्री॰), समर्थन (न॰) ये दो नाम युक्त आर अयुक्त परीक्षाके हैं। अववाद (पु॰), निर्देश (पु॰), निदेश (पु॰), शासन (न॰) ॥ २५ ॥ शिष्टि (स्त्री॰), आज्ञा (स्त्री॰) ये छः नाम आज्ञाके हैं। संस्था, मर्यादा, धारणा, स्थिति ये चार (स्त्री॰) नाम न्यायमार्गकी स्थितिके हैं । आगस् (सान्त), अपराघ (पु॰), मंतु (पु॰) ये तीन नाम अप-राषके हैं । आगस्त्राब्द (न॰) है । उद्दान, बंधन ये दो (न॰) नाम बंधनके हैं ॥२६॥ द्विपाद्य यह एक (पु॰) नाम दुगुने दंडका है । भागधेय, कर, बिल ये तीन (पु॰) नाम राजग्राह्म भागके हैं । शुल्क यह एक नाम घाट आदिमें है जाने और छानेमें राजग्राह्य भाग अर्थात मह-सूछका है और (पु॰ न॰) है। प्राभृत, प्रदेशन ॥ २७ ॥ उपायन, उपग्राह्म, उपहार, उपदा ये छः नाम भेंटके हैं। उपदा (स्त्री॰) उपहार (पु॰) शेष (न॰) हैं । सुदाय (पु॰), हरण (न॰) ये दो नाम कन्यादानिवषे तत्नालस्तु तदात्वं स्यादुत्तरः काल आयतिः ।
सांदृष्टिकं फलं सच उद्केः फलगुत्तरम् ॥ २९ ॥
अदृष्टं विद्वतोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
महीभुजामिहभयं स्वपसप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
प्रिक्रया त्विधिकारः स्याचामरं तु प्रकीणकम् ।
नृपासनं यत्तद्भद्रासनं सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
हैमं छत्रं त्वातपत्रं राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो भृद्धारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
निवेशः शिविरं षण्टे सज्जनं तूपरक्षणम् ।
हस्त्यश्वरयपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥

तथा वरषधूको जो दिया जावे उसके हैं ॥ २८ ॥ तत्काल (पु॰),तदात्व (न॰) ये दो नाम वर्त्तमान कालके हैं। आयात यह एक (स्त्री॰) नाम आनेवाले कालका है। सांदृष्टिक यह एक(न॰) नाम तात्कालिक फलका है। उदर्क यह एक (पु॰) नाम भावि (होनेवाले) फलका है ॥२९॥ अदृष्ट यह एक (न॰) नाम अग्निके उत्पात और अत्यंत जलवृष्टिसे उत्पन्न भयका है । दृष्ट यह एक (न॰) नाम स्वदेश और परदेशसे उत्पन्न चोर आदिके भयका है। अहिभय यह एक (न॰) नाम राजाओंको अफ्ने सहायकसे उपने भयका है ॥३०॥ प्रिक्रया (स्त्री०), अधिकार (पु०) ये दो नाम व्यवस्था स्थापनके हैं। चामर, प्रकीर्णक ये दो (न॰) नाम चं-वरके हैं। नपासन, भद्रासन ये दो (न॰) नाम मणि आदिसे बने हुए राजाके आसनके हैं । सिंहासन यह एक (न॰) नाम सुवर्णसे रचे हुए आसनका है ॥ ३१ ॥ छत्र, आतपत्र ये दो (न०) नाम छत्रके हैं । नृपलक्ष्मन् (नान्त) यह एक (न॰) नाम राजाके छत्रका है। भद्रकुंभ, पूर्णकुंभ ये दो (पु॰) नाम पूरित कल्डाके हैं। भृद्गार (पु॰), कन कालुका (स्त्री॰) ये दो नाम सोनेसे बने हुए पात्रके हैं ॥ ३२ ॥ निवेश (पु॰), शिविर (न॰) ये दो नाम सेनाके निवासस्थानके हैं। सज्जन, उपरक्षण ये दो (न॰) नाम पहरा (गस्त) के हैं। हस्ती, घोडा, रय,

दन्ती दन्तावलो इस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।

मतङ्गलो गलो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥

इभः स्तम्बेरमः पद्मी यूथनायस्तु यूथपः ।

मदोत्कटो मदकलः कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥

प्रभिन्नो गर्लितो मत्तः समा उद्घान्तानिर्मदौ ।

हास्तिकं गलता वृन्दे करिणी घेनुका वशा ॥ ३६ ॥

गण्डः कटो मदो दानं वमथुः करशीकरः ।

कुम्भी तु पिण्डौ शिरसस्तयोर्मध्र्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥

अवग्रहो ललाटं स्यादीविका त्विस्कूटकम् ।

अपाङ्गदेशो निर्याणं कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥

प्यादा ये चार सेनाके अंग हैं ॥ ३३ ॥ दन्तिन् (इन्नन्त), दंतावरु, हस्तिन् (इन्नन्त), द्विरद, अनेकप, द्विप, मतंगज, गज, नाग, कुंजर, वारण, करिन् (इन्नन्त) ॥ ३४ ॥ इभ, स्तंबेरम, पांद्रान् (इन्नन्त) ये फ्ट्रह (पु॰) नाम हाथीके हैं । यूथनाथ, यूथप ये दो (पु॰) नाम हा-थियोंके समूहमें मुख्य हाथीके हैं। मदोत्कट, मदकल ये दो (प्र॰) नाम मद्से उन्मत्त हुए हार्थीके हैं। कलभ, करिशावक ये दो (पु॰) नाम हाथीके बच्चेके हैं ॥ ३५ ॥ प्रभिन्न, गर्जित, मत्त ये तीन (प्र॰) नाम झिरते हुए मदुवाले हाथिके हैं । उद्घान्त, निर्मद ये दो (पु॰) नाम मदसे रहित हाथीके हैं। हास्तिक (न॰), गजता (स्त्री॰) ये दो नाम हाथि-योंके समूहके हैं। कारणी, धेनुका, बशा ये तीन (स्त्री॰) नाम हथिनीके हैं ॥३६॥ गंड, कट ये दो (प्र॰) नाम हाथीके कपोलके हैं । मद (प्र॰), दान (न॰) ये दो नाम हार्थाके मदके पानीके हैं । वमशु, करजीकर ये दो (पु॰) नाम हाथीकी सूंडसे निकसे हुए पानीके किनकों के हैं। कुंभ यह एक (पु॰) नाम हाथींके दिारके पिंडोंका है। विदु यह एक (पु॰) नाम दोनों कुंभोंके मध्यके आकाशस्थानका है। तहां विदुश्बद (पु॰) है ॥ ३७ ॥ अवग्रह (पु॰) यह एक नाम हाथीके मस्तकका है। ईिषका (स्त्री॰), अक्षिक्टक (न॰) ये दो नाम हस्तिके नेत्रगोलके हैं। निर्याण अधःकुम्भस्य वाहित्यं प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
आसनं स्कन्धदेशः स्यात्पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥
पार्थभागः पक्षभागो दन्तभागस्तु योऽयतः ।
द्वी पूर्वपश्चाजङ्गादिदेशी गात्रावरे कमात् ॥ ४० ॥
तोत्रं वेणुकमालानं बन्धस्तम्भेऽय शृङ्कले ।
अन्दुको निगडोऽस्त्री स्यादंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥४१ ॥
दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्कल्पना सज्जना समे ।
प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः क्रुयो द्वयोः॥ ४२ ॥
वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं वारी तु गजबन्धनी ।
घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गाः ॥ ४३ ॥

थह एक (न॰) नाम हाथीके कटाक्षदेशका है। चूलिका यह एक(स्त्री॰) नाम हाथीके कर्णमूलका है ॥ ३८ ॥ वाहित्य यह एक (न॰) नाम हार्थिके कुंभके अधोभागका है। प्रतिमान यह एक (न॰) नाम वाहि-त्यके नीचे दंतोंके मध्यका है। आसन यह एक (न॰) नाम हायीके कंधेका है। पद्मक यह एक (न॰) नाम हाथीके बिद्दओं के समूहका है ॥ ३९ ॥ पक्षभाग यह एक (पु॰) नाम हाथीके पार्श्वभागका है । दन्त-भाग यह एक (पु॰) नाम हाथीके अग्रभागका है। गात्र यह एक (न॰) नाम हाथीके पूर्व जंघा आदि देशका है। अवर यह एक (न०) नाम हाथीके जंघा आदि पश्चाद्भागका है ॥ ४० ॥ तोत्र, वेणुक ये दो (न०) नाम चाबकके हैं। आलान यह एक (न॰) नाम बंधनके आधारस्तंभ (खूंटे) का है। श्रृंखल (त्रि॰), संदुक (पु॰), निगड ये तीन नाम सांकलके हैं और निगडराब्द (पु॰ न॰) है । अंकुश, सृणि ये दो नाम अंकुशके हैं। तहां अंकुराशब्द (पु॰ न॰) है और मृणिशब्द (स्त्री॰) है॥४१॥ दूष्या, कक्ष्या, वरत्रा ये तीन (स्त्री॰) नाम कमरबंधनके उपयोगी चर्मकी रस्सीके हैं। कल्पना, सज्जना ये दो (स्त्री॰) नाम मालिकको बैठानेके हिये हस्तीको सच्जी करनेके हैं। प्रवेणी (स्त्री॰), आस्तरण (न॰), वर्ण (पु॰), परिस्तोम (पु॰), कुथ ये पांच नाम हस्तीकी पाछरली वा झूलके हैं। तहां कुथज्ञब्द (पु॰ स्त्री॰) है ॥ ४२ ॥ वीत यह एक(पु॰) नाम युद्ध आदिको नहीं सहनेवाले हाथी घोडेका है। वारी यह एक (स्त्री॰) नाम हाथी बंधनकी पृथ्वीका है । घोटक, वीति, तुरग, तुरंग,

वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्ध्वससयः ।
आजानेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ११ ॥
वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाहिका ह्याः ।
ययुरश्वोऽश्वमेघीयो जवनस्तु जवाधिकः ॥ १५ ॥
पृष्ठचः स्थौरी सितः ककी रथ्यो वोटा रथस्य यः ।
बालः किशोरो वाम्यशा वढवा वाढवं गणे ॥ १६ ॥
त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
कश्यं तु मध्यमश्वानां हेषा हेषा च निस्वनः ॥ १७ ॥
निगालस्तु गलोदेशो वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।
आस्किन्दितं धौरितकं रेचितं विलातं प्लुतम् ॥ १८ ॥

अश्व, तुरंगम ॥ ४३ ॥ वाजिन (इनन्त), वाह, अर्वन् (नान्त), गंधर्व, ह्य, सेंधव, सप्ति ये तेरह (पु॰) नाम घोडेके हैं । आजानेय यह एक (पु॰) नाम सुन्दर जातिमें उत्पन्न हुए घोडेका है। विनीत यह एक (पु॰) नाम सुन्दर सीखे हुए घोडोंका है ॥ ४४ ॥ वनायुज यह एक (पु॰) नाम वनायुदेशमें उत्पन्न होनेवाले घोडोंका है। पारसीक यह एक (पु॰) नाम पारसदेशमें उत्पन्न हुए घोडेका है। कांबोज, बाल्हिक ये दो (पु॰) नाम घोडोंके भेदोंके हैं । ययु यह एक (पु॰) नाम अश्वमेघ यज्ञके हित घोडेका है। ज्यन यह एक (पु॰) नाम बहुत वेगवाले घो-डेका है ॥ ४५ ॥ पृष्ठच, स्थौरिन (इत्रन्त) ये दो (go) नाम जल आदिमें बोझको छे जानेवाछे घोडाँके हैं। कुर्क यह एक (पु॰) नाम सुपेद घोडेका है। रथ्य यह एक (पु॰) नाम रथमें जुतनेवाल घोडेका है। किशोर यह एक (पु॰) नाम घोडेके बचेका है। वामी, अश्वा, बडवा ये तीन (स्त्री॰) नाम घोडीके हैं। वाडव यह एक (न॰) नाम षोडियोंके समूहका है ॥ ४६ ॥ आश्वीन यह एक नाम घोडा एक दिनमें जितना च्छे उस मार्गका है और (त्रि॰) है । कश्य यह एक (न॰) नाम घोडाँके मध्यभागका है। हेषा, हेषा ये दो (स्त्री॰) नाम घोडेके राष्ट्र (हिनहिनाने) के हैं ॥ ४७ ॥ निगाछ यह एक (प्र॰) नाम षोडेके जोतेकी संधिका है। अश्वीय, आश्व ये दो (न॰) नाम घोडोंके समूहके हैं। आस्कृन्दित यह एक (न॰) नाम जहां वेगसे पीडित हुआ

गतयोऽम्ः पश्च धारा घोणा तु प्रोथमिखयाम् ।
किविका तु खलीनोऽस्त्री शफं क्वीबे खरः पुमाव् ॥ ४९ ॥
पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले वालहस्तश्च वालिधः ।
त्रिष्पावृत्तल्विती परावृत्ते मुदुर्भुवि ॥ ५० ॥
याने चिकिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
असौ पुष्परथश्वकयानं न समराय यत् ॥ ५१ ॥
कर्णीरथः प्रवहणं द्यनं च समं त्रयम् ।
क्वीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद्रन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥
शिविका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेङ्गादिका स्त्रियाम् ।
उभौ तु द्वेपवैयात्रौ द्वीपिचमीवृते रथे ॥ ५३ ॥

घोडा न सुने और न देखे उस गतिका है । घौरितक यह एक (न॰) नाम घोडेकी चतुराईसे सरल गतिका है। रोचित यह एक (न०) नाम घोडेकी दुल-की चारका है।वल्गित यह एक (न॰) नाम घोडेकी टेढी चारका है।प्रत यह एक (न॰) नाम घोडेकी चौकडी चालका है ॥४८॥ ये पांच गाते घारा (स्त्री॰) कहलाती हैं। प्रोथ यह एक नाम घोडेकी नासिकाका है तहां प्रोयशब्द (স্লা॰) नहीं है। कविका (স্লা॰), खलीन ये दो नाम घोडेकी छगामके हैं। तह! खळीनशब्द (पु॰ न॰) है । शफ, खुर ये दो नाम सुमके हैं । तहां शफराब्द (न॰) और खुरशब्द(पु॰)है ॥४९॥ पुच्छ, छूम (न॰), छांगूछ (न॰) ये तीन नाम पूंछके हैं। तहां पुच्छशब्द (पु॰न॰) है। वालहस्त, बारुधि ये दो (पु॰) नाम बार्लोके समृहसे युक्त पूछके अग्रभागके हैं। उपावत्त, ळुठित ये दो नाम घोडेके छोटनेके हैं और (त्रि॰) हैं ॥५०॥ ज्ञ-ताङ्क, स्यंद्न, रथ ये तीन (पु॰) नाम युद्धके अर्थ बने हुए रथके हैं, पुष्परथ यह एक (पु॰) नाम युद्धको छोड क्रीडाके लिये बनाये हुए रथका है ॥ ५१ ॥ कर्णीरथ (पु॰), प्रवहण (न॰) डयन (न॰) ये तीन नाम. वहरूके हैं। अनस् (सान्त), ज्ञाकट ये दो नाम गाडेके हैं। तहां अनस् शब्द (न॰) है और शकट शब्द (पु॰ न॰) है । गंत्री यह एक (स्त्री॰) नाम बेटोंसे जुतनेवां एथका है ॥ ५२ ॥ शिबिका (स्त्री॰), याप्यथान (न॰) ये दो नाम पालकीके हैं। दोला, प्रंखा ये दो नाम हिंडोलेके हैं और (स्त्री॰) हैं । आगे (त्रि॰) हैं । हैप, वैयात्र ये दो नाम सिह-

पाण्डुकम्बछतंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बछी ।
रये काम्बछवाद्याद्याः कम्बछादिभिरावृते ॥ ५४ ॥
त्रिषु द्वेपादयो रथ्या रयकत्या रयत्रजे ।
द्यः स्त्री क्रीबे यानमुखं स्याद्रयाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥
चक्रं रथाङ्गं तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्रिधः पुमान् ।
पिण्डिका नाभिरसायकीछके तु द्वयोरिषः ॥ ५६ ॥
रयगुतिर्वक्यो ना कूबरस्तु युगंधरः ॥
अनुकर्षो दावधःस्यं प्रासङ्गो ना युगाद्यगः ॥ ५७ ॥
सर्व स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम् ।
परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ ५८ ॥

की चामडेसे मढे हुए रथके हैं ॥ ५३ ॥ पांडुकंबिलन् (इनन्त) यह एक नाम सुपेद कंबलसे मढे हुए रथका है। कांबल यह एक नाम कंबलसे मढे हुए रथका है। वास्त्र यह एक नाम वस्त्रसे मढे हुए रथका है। आदिशः ब्दसे चार्म यह नाम चामसे मढे हुए रथका है ॥ ५४ ॥ हैप आदि ज्ञब्द (त्रि॰) हैं । रथ्या, रथकट्या ये दो (स्त्री॰) नाम रथोंके समूहके हैं । धुर्, यानमुख ये दो नाम रथ आदिकी धुरीके हैं । तहां धुरशब्द (स्त्री॰) और यानमुखज्ञाब्द (न॰) है । रथांग (न॰), अपस्कर (पु॰) ये दो नाम रथके अवयवमात्रके अर्थात् तांगेके हैं ॥ ५५ ॥ चक्र, रथांग ये दो (न॰) नाम रथके पहियोंके हैं । नेमि, प्रधि ये दो नाम रथके पहि-योंकी नेमिके हैं। तहां नेमिशब्द (स्त्री॰) और प्रधिशब्द (पु॰) है। पिंडिका, नाभि ये दो (स्त्री॰) नाम पहियोंके मध्यभागके हैं। काण यह एक नाम रथकी टहोद्र (कुलावे) का है । तहां भणिशब्द (पु॰स्ती॰) है ॥५६॥ रथगुप्ति (स्री॰), वरूथ (पु॰) ये दो नाम रथके लोहे आदिसे बनाये हए आच्छादन अर्थात् छत्रीके हैं। क्बर, युगंधर ये दो (पु॰) नाम रथकी **ढंढीके हैं। अनुकर्ष यह एक (पु॰) नाम रथके निष्के भागके काठका है।** प्रासंग यह एक नाम रथ आदिके जुआका है और (पु॰) है ॥ ५७ ॥ यान, युग्य, पत्र, धोरण ये चार (न०) नाम हस्ती घोडा आदि वाहनके हैं। वैनीतक यह एक नाम परंपराकी पालकी आदि वाहनका है और आघोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निवादिनः ।
नियन्ता प्राजिता यन्ता स्तः क्षत्ता च सारिथः ॥ ५९ ॥
सन्येष्टदक्षिणस्यौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।
रिथनः स्यन्दनारोहा अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥
भटा योषाश्च योद्धारः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥
बिल्नो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
परिषिस्यः परिचरः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
कश्चको वारबाणोऽस्त्री यत्तु मध्ये सकश्चकाः ।
बग्नंति तत्सारसनमधिकाङ्गोऽथ शिषकम् ॥ ६३ ॥
शीर्षण्यं च शिरस्त्रेऽथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
उरइछदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥

(पु॰ न॰) है ॥ ५८ ॥ आधारण हस्तिपक, हस्त्यारोह, निषादिन (इन्नत्) ये चार (पु॰) नाम हाथीवान्के हैं । नियन्तु (ऋ-कारान्त), प्राजित (ऋकारान्त), यंत (ऋकारान्त), सूत, क्षष्ट्र (ऋकारान्त), सारिथ ॥ ५९ ॥ सव्येष्ट, दक्षिणस्य ये आठ (पु॰) नाम सार्थिके हैं। रथिन, स्यंदनारोह ये दो (पु॰) नाम रथेंमें बैठ युद्ध करनेवालेके हैं । अश्वारोह, सादिन (इक्नत) ये दो (पु॰) नाम अश्व-पर बैठ युद्ध करनेवालेके हैं ॥ ६० ॥ भट, योध, योधृ (ऋकारान्त) ये तीन (पु॰) नाम युद्ध करनेवालेके हैं । सेनारक्ष, सैनिक ये दो (पु॰) नाम पहिरेसे सेनाकी रक्षा करनेवालोंके हैं। सैन्य, सेनिक ये दो (पु॰) नाम सेनामें संपूर्ण एकत्रित हुओंके हैं ॥ ६१ ॥ साहस्र, सहस्रिन् (इनन्त) ये दो (पु॰) नाम हजार सेनावालोंके हैं । परिधिस्य, परिचर ये दो (पु॰) नाम फौजके चारों ओर घूमनेवालोंके हैं । सेनानी, वाहिनीपित ये दो (पु॰) नाम सेनाके पातके हैं ॥ ६२ ॥ कञ्चक वारवाण (पु॰ न॰) ये दो नाम वखतरके हैं । तहां कञ्चकशब्द (पु॰ न॰) है । सारसन, (न॰) अधिकांग (पु॰) ये दो नाम कमरप्टीके हैं। शिर्षक ॥६३॥ ज्ञीर्षण्य, ज्ञिरस्त्र ये तीन (न॰) नाम टोफ्के हैं । तनुत्र (न॰), वर्मन् (नान्त न॰), दंशन (न॰), जरश्कद (पु॰), कंकटक (पु॰), जगर आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूटकङ्कटः ॥ ६५ ॥
प्रिष्वामुक्ताद्यो वर्मभृतां काविषकं गणे ।
पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥
पद्गश्च पदिकश्चाऽश्य पादातं पत्तिसंहातिः ।
शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥
कृतहस्तः सुप्रयोगविशिद्धः कृतपुंसवत् ।
अपराद्धपृषक्तोऽसौ छक्ष्याद्यश्चयुतसायकः ॥ ६८ ॥
धन्वी धनुष्पान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुर्धरः ।
स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥ ६९ ॥
याष्टीकपारश्चिकौ यष्टिपार्श्वधहेतिकौ ।
नीस्त्रिंशिकोऽसिहोतिः स्यात्समा प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥

⁽ पु॰), कवच ये सात नाम कवचके हैं। तहां कवचराब्द (पु॰ न॰) हैं ॥६४॥ आमुक्त, प्रतिमुक्त, पिनद्ध, अपिनद्ध ये चार नाम कञ्चुकको धारण करनेवालेके हैं। संनद्ध, वर्भित, सज्ज, दंशित, व्यूटकंकट ये पांच नाम कवचको धारण करनेवालेके हैं ॥ ६५॥ आमुक्त आदि शब्द (त्रि॰) हैं। कावचिक यह एक (न॰) नाम कवचको धारण करनेवाछोंके समू-हका है। पदाति, पत्ति, पद्ग, पादातिग, पदाति ॥ ६६ ॥ पद्ग, पदिक ये सात (पु॰) नाम प्यादेके हैं । पादात यह एक(न॰) नाम प्यादेंकि समृहका है। आगेके सांयुगीन शब्दतक (त्रि॰) हैं। शस्त्राजीव, कांड-पृष्ठ, आयुधीय, आयुधजीविन ये चार नाम शस्त्रसे जीविका करनेवाछेके हैं ॥ ६७ ॥ कृतहस्त, सुप्रयोगविशिख, कृतपुंख ये तीन नाम शरके फैंक-नेमें कुश्र अर्थात तिरन्दाजके हैं। अपराद्धपृषक यह एक नाम निशा-नसे चूकनेवालेका है ॥ ६८ ॥ धन्विन् (इक्नत), धनुष्मत् (मत्वन्त), धानुष्क, निषंगिन, अस्त्रिन, धनुर्धर ये छः (पु॰) नाम धनुषधारीके हैं । कांडवत् (मत्वन्त), कांडीर् ये दो नाम ज्ञास्को घारण करनेवालेके हैं। शाक्तीक, शक्तिहातिक ये दो नाम बरछीको धारण करनेवालेके हैं ॥६९॥ याष्टीक यह एक नाम छाठीवाछेका है । पारश्वधिक यह एक नाम फरसा-बालेका है। नैश्चिशिक यह एक नाम तलवारवालेका है। प्राप्तिक,कौंतिक

चर्मी फलकपाणिः स्यात्पताकी वैजयन्तिकः ।
अनुप्रवः सहायश्वाञ्ज्वचरोऽभिचरः समाः ॥ ७१ ॥
प्ररोगामेसरमष्टामतःसरप्ररःसराः ।
प्ररोगमः प्ररोगामी मन्दगामी तु मन्यरः ॥ ७२ ॥
जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ जङ्घाकरिकजाङ्किकौ ।
तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥
जय्यो यः शक्यते जेतुं जेयो जेतव्यमात्रके ।
जैत्रस्तु जेता यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥
सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।
कर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य कर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
स्यादुरस्वानुरसिलो रिथनो रिथको रथी ।
कामंगाम्यनुकामीनो हात्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥

ये दो (प॰) नाम भाळेसे ळडनेवाळेके हैं ॥ ७० ॥ चर्मिन् (इक्रत), फलकपाणि ये दो नाम ढालको धारण करनेवालेके हैं। पताकिन (इन्नत), वैजयंतिक ये दो नाम ध्वजा (निशान) को धारण करनेवालेके हैं। अनुष्ठव, सहाय, अनुचर, अभिचर ये चार नाम सेवकके हैं ॥ ७१ ॥ पुरोग, अञ्चेसर, प्रष्ठ, अग्रतःसर, पुरःसर, पुरोगम, पुरोगामिन (इत्रन्त) ये सात नाम आगे चलनेवालेके हैं। मन्दगामिन (इक्नत), मंथर ये दो नाम होेंछे २ चलनेवालेके हैं ॥७२॥ जंवाल, अतिजव ये दो नाम अत्यंत वेगसे चलनेवाहेके हैं। जंघाकरिक, जांधिक ये दो नाम जंघाके बलसे जीने-वाछेके हैं । तरस्विन् (इनन्त), त्वरित, वेगिन्(इनन्त), प्रजविन् (इनन्त), जवन, जव ये छः नाम शिघ्र चलनेवालेके हैं ॥ ७३ ॥ जय्य यह एक नाम जो शीघ्र जीतनेको शक्य हो उसका है। जेय यह एक नाम जीत-नेके योग्यका है। जैत्र, जेतृ (ऋकारान्त) ये दो नाम जीतनेवाछोंके हैं ॥ ७४ ॥ अभ्यमित्र्य, अभ्यमित्रीय, अभ्यमित्रीण ये तीन नाम इान्न-ऑके सन्मुख अपनी सामर्थ्यसे गमन करनेवाछेके हैं। ऊर्जखळ, ऊर्जस्विन (इनन्त) ये दो नाम अत्यंत पराक्रमीके हैं ॥ ७५ ॥ उरस्वत् (मत्वन्त), उर-सिल ये दो नाम सुन्दर छातीवालेके हैं । राधिन, राधिक, राधिन (इन्नन्त) ये तीन नाम रथके स्वामीके हैं। अनुकामीन यह एक नाम यथेच्छ गमः

शूरो वीरश्च विकान्तो जेता जिष्णुश्च जित्तरः ।
सांयुगीनो रणे साधुः शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीिकनी चम्ः ।
वक्षिनी बलं सेन्यं चकं चानीकमिस्त्रयाम् ॥ ७८ ॥
व्यूहस्तु बल्लिन्यासो भेदा दण्डादयो युषि ।
प्रत्यासारो व्यूहपार्षिणः सेन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥
एकेभैकरथा ज्यश्वा पत्तिः पश्चपदातिका ।
पत्त्यङ्गेस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
सेनामुखं गुल्मगणी वाहिनी पृतना चम्ः ।
अनीिकनी दशानीिकन्यसाहिण्यथ संपदि ॥ ८१ ॥

नशिलका है । अत्यंतीन यह एक नाम अत्यंत गमनशिलका है ॥ ७६ ॥ शूर, वीर, विकान्त ये तीन नाम शुरवीरके हैं । जेतृ (ऋकारान्त), जिष्णु, जित्वर ये तीन नाम जयशीलके हैं । सांयुगीन यह एक नाम युद्धकुशलका है। रास्त्राजीव आदिं राज्द (त्रि॰) हैं ॥ ७७ ॥ ध्वजिनी, वाहिनी, सेना, पुतना, अनीकिनी, चमु, वरूथिनी (ये स्त्री॰), बल, सैन्य, चक्र (ये न०), अनीक ये ग्यारह नाम सेनाके हैं। तहां अनीकज्ञब्द (पु॰ न॰) है ॥ ७८ ॥ व्यृह यह एक (पु॰) नाम सेनाके युद्धके लिये रचना विद्रो-षकरके स्थापन करनेका है । मुखभागमें रथ हीं पृष्ठभागमें घोडे हीं घो-डोंके पीछे प्यादे हों और दोनों पार्श्वीमें हाथी हों वह व्यूह कहाता है। व्युहके दंड मंडल आदि भेदविशेष युद्धमें हैं । प्रत्यासार, व्युहपार्षिण ये दो (पु॰) नाम व्यहके पृष्ठभागके हैं । प्रतिग्रह यह एक (पु॰) नाम सेनाके पृष्ठभागका है ॥ ७९ ॥ जहां एक हाथी हो एक रथ हो तीन घोडे और पांच प्यादे हों वह पत्ति कहाती है। पत्तिके अवयवींको तीन गुना-करके उत्तरोत्तर क्रमसे सेनामुख आदि होते हैं ॥ ८० ॥ तीन पत्तियोंका सेनामुख होता है। तीन सेनामुखोंका गुरूम होता है। तीन गुरुमोंका गण होता है। तीन गणोंकी वाहिनी होती है। तीन वाहिनियोंकी पतना होती है। तीन पुतनाओंकी चमू होती है। तीन चमुओंकी अनीकिनी होती है। तीन अनीिकनियोंकी दशानीिकनी और तीन दशानीिकानियोंकी एक अक्षोहिणी होती है । सेनामुख (न॰) गुरुम (पु॰ न॰) गण (पु॰)

संपत्तिः श्रीश्च छहमीश्च विपत्यां विपदापदी ।

आयुषं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथांस्त्रियी ॥ ८२ ॥

धनुश्चापी धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।

इष्वासोऽप्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥

कापिध्वलस्य गाण्डीवगाण्डिवी पुंनपुंसकी ।

कोटिरस्याटनी गोषे तले ज्याधातवारणे ॥ ८४ ॥

लस्तकस्तु धनुर्मध्यं मौवीं ज्या शिक्षिनी गुणः ।

स्यात्रस्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपश्चकम् ॥ ८५ ॥

लक्षं लक्ष्यं शर्रव्यं च शराभ्यास जपासनम् ।

पृषत्कबाणविश्वित्ता अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥

और शेष (स्त्री॰) हैं। संपत् ॥ ८१ ॥ संपत्ति, श्री, लक्ष्मी ये चार (स्त्री॰) नाम संपत्तिके हैं । विपत्ति, विपद्, आपर् ये तीन (स्त्री॰) नाम विपत्तिके हैं। आयुध, प्रहरण, शस्त्र, अस्त्र ये चार (न०) नाम हथियारके हैं। तहां रास्त्र और अस्त्रशब्द (न॰) हैं ॥ ८२ ॥ धनुस् (सान्त पु॰ न॰), चाप (पु॰ न॰), धन्त्रन् (नान्त न॰), ज्ञारासन (न॰), कोदंड (न॰), कार्म्रक (न॰), इष्वास (प्र॰) ये सात नाम धनुषके हैं। कालपृष्ठ यह एक (न॰) नाम कर्णके धनुषका है ॥ ८३ ॥ गांडीव, गांडिव ये दो नाम अर्जुनके धनुषके हैं और दोनों शब्द (पु॰ न॰) हैं । कोटि, अटनी ये दो (स्त्री॰) नाम धनुषके प्रान्तके हैं। गोधा, तला ये दो (स्त्री॰ न॰) नाम धनुषकी डोरीके शब्दको दूर कर-नेके लिये चमडेके बंधविशेषके हैं ॥ ८४ ॥ लस्तक यह एक (पु॰) नाम धनुषके मध्यभागका है । मौवीं, ज्या, जिनिन, ग्रण ये चार नाम धनुषकी डोरीके हैं। गुणशब्द (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं। प्रत्याहीट, आलीट, समपद, वैशाख, मंडल ये पांच भेद धनुषको धारण करनेवालोंकी स्थितिके हैं । वैशाखशब्द (पु॰) शेष (न॰) हैं ॥८५॥ छक्ष, छक्ष्य, शरव्य ये तीन (न॰) नाम वेधके हैं। ज्ञराभ्यास (पु॰), उपासन (न॰) ये दो नाम ज्ञर फैंकनेके अभ्यासके हैं। पुषत्क, बाण, विशिष्ट, अजिह्मग, खग, आञ्चग कलम्बमार्गणशराः पत्नी रोप इषुर्द्वयोः ।
प्रक्षेडनास्तु नाराचाः पद्मी वाजिख्यूत्तरे ॥ ८७ ॥
निरस्तः प्रहिते बाणे विषाक्ते दिग्धांलिसकी ।
त्णोपासङ्गत्रणीरनिषङ्गा इषुधिद्वयोः ॥ ८८ ॥
त्ण्यां खङ्गे तु निखिशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।
कीक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥
सकः खङ्गादिमुष्टी स्यान्मेखला तन्निबन्धनम् ।
फलकोऽस्त्री फलं चर्म संप्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥
हुघणो मुद्ररघनी स्यादीली करवालिका ।
भिन्दिपालः सृगस्तुल्यो परिघः परिघातिनः ॥ ९१ ॥
दयोः कुठारः स्विधितः परशुश्च परश्वधः ।
स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥

॥८६॥कछंब,मार्गण, शर, पत्रिन् (इन्नत्त), रोप, इषु ये बारह (पु॰) नाम बाणके हैं। तहां इष्शब्द (पु॰ स्त्री॰) है। प्रक्ष्वेडन, नाराच ये दो (पु॰) नाम छोहेसे बने हुए बाणके हैं। पक्ष, वाज ये दो (पु॰) नाम कंकपक्षी आदिके पंखके हैं। निरस्तज्ञब्दसे आदि लेकर लिसक ज्ञब्दपर्यंत (त्रि॰) हैं ॥ ८७ ॥ निरस्त यह एक नाम छोडे हुए बाणका है । विषाक्त, दिग्घ, लिसक ये तीन नाम विषसे युक्त किये बाणके हैं । तूण, उपासङ्ग, तूणीर, निषंग, इषुधि, तूणी ये छः नाम बाणके घर (तरकस) के हैं । तहां इषुधिशब्द (पु॰ स्त्री॰) तूणीशब्द (स्त्री॰) शेष (पु॰) हैं ॥८८॥ खड़, निश्चित्रा, चन्द्रहास, असिरिष्टि, कौक्षेयक, मंडलाय, करवाल, कृपाण ये नव (पु॰) नाम तल्वारके हैं ॥ ८९ ॥ रसरु यह एक (पु॰) नाम तल्यारके आदिकी मूठका है। मेखला यह एक (स्त्री॰) नाम तल्वार आदिके म्यानका है। फलक, फल (न०), चर्मन् (नान्त न०) ये तीन नाम ढारूके हैं। तहां फलकशब्द (पु॰ न॰) है। संग्राह यह एक(पु॰) नाम ढाल्की मूठका है ॥ ९० ॥ द्रघण, मुद्गर, घन ये तीन (पु०) नाम मद्भरके हैं। ईली, करवालिका ये दो (स्त्री॰) नाम खाँडके हैं। भिन्दिपाल, सूग बे दो (पु॰) नाम गोफियाके हैं। परिष, परिवातिन ये दो (पु॰) नाम छोहेसे बंधे हुए हाथके प्रमाण ढंढेके हैं ॥ ९१ ॥ क्ठार, स्वधिति, पर्शु, परश्चथ ये चार नाम कुल्हाढेके हैं । तहां कुठार वा पुंति शल्यं शंकुर्ना सर्वेद्धा तोमरोऽखियाम् ।
प्रासस्तु कुन्तः कोणस्तु ख्रियः पाल्यिश्रकोटयः ॥ ९३ ॥
सर्वाभिसारः सर्वेद्धः सर्वसत्रहनार्थकः ।
छोहाभिसारोऽख्यभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥
यत्सेनयाभिगमनमरी तदभिषेणनम् ।
यात्रा त्रज्याऽभिनियांणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
स्यादासारः प्रसरणं प्रचकं चिछतार्थकम् ।
अहितान्त्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥
वैताछिका बोधकराश्चाकिका घाण्टिकार्थकाः ।
स्युमोगधास्तु मगधा बन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

आदि राब्द (पु॰ स्त्री॰) परश्रघ (पु॰) है । शस्त्री, सिसपुत्री, श्रुरिका, असिधेनुका ये चार (स्त्री०) नाम छूरीके हैं ॥ ९२ ॥ शल्य, शंकु ये दो नाम बाणके अग्रभागके हैं । तहां शल्यशब्द (पु॰ न॰) और इंक़्इनब्द (पु॰) हैं । सर्वेछा (स्त्री॰), तोमर ये दो नाम गुरगुंजरास्त्रके हैं। तहां तोमरशब्द (पु॰ न॰ है। प्रास, कुन्त ये दो (पु॰) नाम भाले-के हैं। कोण, पालि, अश्रि, कोटि ये चार नाम तलवार आदिके प्रान्त-भागके हैं। कोणशब्द (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं ॥ ९३ ॥ सर्वाभिसार (पु॰), सर्वींघ (पु॰), सर्वसन्नहन (न॰) ये तीन नाम चतुरंग सेनाके जमावके हैं। होहाभिसार यह एक (पु॰) नाम शस्त्रोंको धारनेवाही राजाओंको महानवमीके दिन नीराजनसमयमें ज्ञास आदिकी समर्पण छक्षणावासी विधि-का है ॥ ९४ ॥ अभिषेणन यह एक (न॰) नाम शत्रुके समीप सेना-सहित सन्मुख गमनका है । यात्रा (स्त्री॰), द्रज्या (स्त्री॰), अभिनिर्याण (न॰), प्रस्थान (न॰), गमन (न॰), गम (पु॰) ये छः नाम गमन-के हैं ॥ ९५॥ आसार (पु॰), प्रसरण (न॰) ये दो नाम सेनाकी सब ओरकी व्याप्तिके हैं। प्रचक्र, चिल्लत ये दो (न॰) नाम चलती हुई सेनाके हैं। अभिक्रम यह एक (पु॰) नाम युद्धभें राज्ञुओं के प्रति मयर-हित श्रुवीरके गमनका है॥ ९६॥ वैतालिक, बोधकर ये दो (पु॰) नाम राजाओंको स्तुतिकरके प्रभातमें चठानेवालोंके हैं। चाक्रिक, घांटिक ये दो (पु॰) नाम बन्दिविशेषके हैं । मागध, मगध, बंदिन् (इक्नत्), स्तृतिपाठक ये चार (प्र॰) नाम राजाकी स्तृति करनेवालेके हैं ॥ ९७ ॥ संशतकास्तु समयात्संत्रामाद् निवर्तिनः ।
रेणुर्द्रयोः स्त्रियां घूछिः पांसुनी न द्रयो रजः ॥ ९८॥
चूणें सोदः समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।
पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमास्त्रियाम् ॥ ९९॥
सा वीराशंसनं युद्धभूमियोऽतिभयप्रदा ।
अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहं पूर्विका स्त्रियाम् ॥ १००॥
आहोपुरुषिका द्रपीद्या स्यात्संभावनात्मिन ।
अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहं कारः ॥ १०१॥
द्रविणं तरः सहोबल शौर्याणि स्थाम शुष्पं च ।
शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वितिशक्तिता ॥ १०२॥
वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।
युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३॥

संशासक यह एक (पु॰) नाम सौगद्से युद्धमेंसे नहीं मुख मोडनेवाले का है। रेणु, धूलि, पांस, रजस ये चार नाम धूलके हैं। तहां रेणुशब्द ্ (पु॰ প্রা॰) है। ঘূল্তিহান্তর (স্ত্রা॰) पांसुহান্তর (पु॰) है। रजसूহान्त्र (सकारान्त न०) है ॥ ९८ ॥ चूर्ण (पु॰ न०), क्षोद् (पु॰) ये दो नाम पीसे हुए रजके हैं । सम्रात्पंज, पिंजल ये दो (पु॰) नाम अत्यन्त आकुल हुई सेना आदिके हैं। पताका (स्त्री॰), वैजयंती (स्त्री॰), केतन (न॰) ध्वज ये चार नाम ध्वजाके हैं। तहां ध्वजशब्द (पु॰ न॰) है॥९९॥वीराञ्चंसन यह एक (न०)नाम अत्यंत भय देनेवाछी युद्धभूमिका है। अहं प्रिका यह एक नाम में पहले में पहले ऐसा आग्रह पूर्वक युद्धादिक रनेका है।तहां अहंपूर्विकाञ्चद (स्त्री॰) है॥१००॥ आहोपुरुषिका यह एक(स्त्री॰) नाम गर्वसे अपने विषें सामर्थ्य प्रकट करनेका है । अहअहमिका यह एक (स्त्री॰) नाम आपसमें अहंकारका है ॥ १०१ ॥ द्रविण, तरस् (सान्त), सहस् , बल, शौर्य्य, स्थामन्, शुष्म, शक्ति, पराक्रम, प्राण ये दश नाम परा-क्रमके हैं। तहां शक्ति (स्री०) पराक्रम, प्राण (पु०) शेष (न०) हैं। विक्रम (प॰), अतिशक्तिता (स्त्री॰) ये दो नाम अत्यंत शक्तिके हैं ॥ १०२ ॥ वीरपान यह एक (पु॰) नाम वर्त्तमान युद्धमें परिश्रमकी शान्तिके लिये तथा होनेवाले युद्धमें उत्साह बढानेके लिये मदिरा भीनेका है।

मृथमास्कन्दनं संख्वं समीकं सांपराधिकम् ।

अस्त्रियां समरानीकरणाः कछहितप्रही ॥ १०४ ॥

संमहाराभिसं । तकिष्ठसंस्कोटसंयुगाः ।

अभ्यामर्दसमाधातसंप्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥

समुदायः स्त्रियः संयत्सिमित्याजिसमिद्युधः ।

नियुद्धं बाहुयुद्धेथ तुमुळं रणसंकुळे ॥ १०६ ॥

स्वेडा तु सिंहनादः स्यात्करिणां घटना घटा ।

ऋन्दनं योधसंरावो वृहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥

विस्फारो धनुषः स्वानः पटहाडम्बरी समी ।

प्रसमं तु बळात्कारो हठोऽथ स्विळतं छळम् ॥ १०८ ॥

अजन्यं क्रीवमृत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।

मूच्छी तु करमळं मोहोऽप्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥

युद्ध, आयोधन, जन्य, प्रधन, प्रविदारण ॥ १०३ ॥ मृध, आस्कंदन, संख्य, समीक, सांपरायिक (यहांतक न॰ हैं), समर, अनीक, रण, कलह, विग्रह ॥ १०४ ॥ संप्रहार, अभिसंपात, कलि, संस्फोट, संयुग, अभ्यामर्द, समाघात, संग्राम, अभ्यागम, आहव ॥ १०५ ॥ समुदाय यहांतक (पु॰) हैं, संयत् (पु॰ स्त्री॰), समिति, आजि, समित्, युव् ये चार नाम (स्त्री॰) हैं। इस प्रकार ये इकतीस नाम युद्धके हैं। नियुद्ध, बाहुयुद्ध ये दो (न॰) नाम बाहुयुद्धके हैं। तुमुल यह एक (न॰) नाम युद्धके विषें आपसमें बहुत पीढ़ाका है ॥ १०६ ॥ क्वेडा (स्त्री०), सिंह-नाद (पु॰) ये दो नाम वीरोंके सिंहराब्दके समान राब्दिविशेषके हैं। घटा यह एक (स्त्री॰) नाम हस्तियोंके युद्धमें संघट्टनका है। ऋन्दन यह एक (न॰) नाम योद्धाओं के आक्रोशपूर्वक शब्दका है। बृंहित यह एक (न॰) नाम हस्तियोंके गर्जनेका है ॥ १०७ ॥ विस्फार यह एक (पु॰) नाम घनुषके शब्दका है। पटह, आडंबर ये दो (पु॰) नाम संप्रामकी ध्वनि अर्थात् जुझाऊ नगाडेके हैं। प्रसम (न॰), बलात्कार (पु॰), हठ (पु॰) ये तीन नाम हठके हैं । स्वस्ति, छल ये दो (न॰) नाम युद्धमें धोखा देनेके हैं ॥ १०८ ॥ अजन्य (पु॰ न॰), उत्पात (पु॰ 🎉 🔠 उपसर्ग (पु॰) ये तीन नाम उत्पातके हैं। मूर्छा (स्त्री॰), कश्मक

मभ्यवस्कन्दनं तम्यासादनं विजयो जयः ।
वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनियातनं च सा ॥ ११० ॥
प्रद्रावोद्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
मपक्रमोऽपयानं च रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥
पराजितपराभूतो त्रिषु नष्टतिरोहितो ।
प्रमापणं निवहणं निकारणं विश्वारणम् ॥ ११२ ॥
प्रवासनं परासनं निष्दनं निर्हिसनम् ।
निवासनं संज्ञपनं निर्श्रन्यनमपासनम् ॥ ११३ ॥
निर्दार्शणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
विदायणं विश्वसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
उद्यासनप्रमथनक्रथनोज्ञासनानि च ।
आस्प्रभाषेञ्जविश्वरघातोन्मायवधा अपि)॥ ११५ ॥

⁽ न॰), मोह (पु॰) ये तीन नाम मूर्छांके हैं। अवमर्द (पु॰), पीडन (न॰) ये दो नाम खेती आदिसे संपन्न हुए देशको परचक्रसे पीडा हो-नेके हैं ॥ १०९ ॥ अभ्यवस्कन्दन, अभ्यासादन ये दो (न०) नाम जानके सन्मुख जानेके अथवा जालोंसे उसकी हिम्मत तोड देनेके हैं। विजय, जय ये दो (पु॰) नाम जयके हैं । वैरद्याद्ध (स्त्री॰), प्रतीकार (पु॰), बैरनिर्यातन (न॰) य तीन नाम बैरको दूर करनेके हैं॥११०॥ प्रद्राव, खद्राव, संद्राव, संदाव, विद्रव, द्रव, अफ्क्रम, अपयान ये आठ नाम भागनेके हैं। तहां अपयान (न॰) शेष (पु॰) हैं। पराजय यह एक (पु॰) नाम रणमें भंगका है ॥ १११ ॥ पराजित, पराभूत ये दो नाम निर्जित (हारे हुए) के हैं । नष्ट, तिरोहित ये दो नाम छिपे हुएके हैं और पराजित आदि चारों शब्द (त्रि॰) हैं। प्रमापण, निबर्हण, निका-रण, विज्ञारण ॥ ११२ ॥ प्रवासन, परासन, निषूद्न, निहिंसन, निर्वा-सन, संज्ञपन, निर्प्रथन, अपासन ॥ ११३ ॥ निस्तर्हण, निहनन, क्षणन, परिवर्जन, निर्वापण, विशसन, मारण, प्रतिवातन ॥ १९४ ॥ उद्वासन, प्रमथन, ऋथन, उज्जासन यहांतक (न॰) और आगेके (पु॰) हैं। आलंम, पिज, विशर, यात, उन्माय, वध ये तीस नाम मारनेके हैं॥११५॥

स्यात्पश्चता कालचभी दिष्टान्तः प्रल्योऽत्ययः।
अन्तो नाशो द्रयोग्नेत्युर्मरणं निषनोञ्ज्ञियाम् ॥ ११६ ॥
परासुप्राप्तपश्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः ।
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते चिता चित्या चितिः क्षियाम् ॥ ११७ ॥
कवन्थोऽस्त्री कियायुक्तमपमूर्षकलेवरम् ।
इमशानं स्यात्पितृवनं कुणपः शवमित्रयाम् ॥ ११८ ॥
प्रमहोपमहौ बन्द्यां कारा स्याद्वन्थनालये ।
पुंति भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥
आयुर्जीवितकालो ना जीवातुर्जीवनीषधम् ।
इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

अथ वैद्यवर्गः ९ । ऊरव्या ऊरुजा वर्षा वैद्या भूमिस्पृद्यो विद्यः । आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥१॥

पंचता, कालधर्म, दिष्टान्त, प्रलय, अत्यय, अन्त, नाहा, मृत्यु, मरण, निधन ये दृश नाम मरणके हैं। तहां निधनशब्द (पु॰ न॰) पश्चता (स्त्री॰) मृत्यु (स्त्री॰ पु॰) मरण (न॰) और शेष (पु॰) हें॥ ११६॥ परासु, प्राप्तपञ्चत्व, परेत, प्रेत, संस्थित, मृत, प्रमीत येसात नाम मरे हुएके हैं और (न्नि॰) हैं। चिता, चित्या, चिति ये तीन नाम चिताके हैं और (स्त्री॰) हैं॥ ११७॥ कबंध यह एक नाम शिरसे रहित युद्ध करते हुए घडका है और (पु॰ न॰) है। शमरान, पितृवन ये दो (पु॰) नाम प्रेतभूमिके हैं। कुणप (पु॰), शव ये दो नाम मुद्देंके हैं। तहां शवशब्द (पु॰न०) है॥११८॥ प्रमह (पु॰), उपमह (पु॰), बन्दी (स्त्री॰) ये तीन नाम केदके हैं। कारा यह एक (स्त्री॰) नाम जेलखानेका है। असु, प्राप्त ये दो (पु॰) नाम प्राप्तके हैं। तहां प्रापशब्द बहुवचनांत (पु॰) है। असुशब्द विकल्पकरके बहुवचनांत है। जीव (पु॰), असुधारण (न॰) ये दो नाम प्राप्पारणके हैं॥ ११९॥ आयुस् यह एक (न॰) नाम उमरका है। जीवातु यह एक (पु॰) नाम जीवनकी औषधका है। इति क्षत्रियवर्गः॥ ८॥ अथ वैश्यवर्गः। प्रत्रां स्त्रीयवर्गः॥ ८॥ अथ वैश्यवर्गः। प्रत्रां स्त्रां स्त्रां स्त्रीयवर्गः॥ ८॥ अथ वैश्यवर्गः। प्रत्रां स्त्रां स्त्रां

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाषिज्यं चेति वृत्तयः ।
सेवा श्ववृत्तिरवृतं कृषिरुञ्छिश्चछं त्वृतम् ॥ २ ॥
द्वे याचितायाचितयोर्थयासंख्यं मृतामृते ।
सत्त्यावृतं विषय्भावः स्यादृणं पर्युद्श्वनम् ॥ ३ ॥
उद्धारोऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।
याच्ज्यातं याचितकं नियमादापित्यकम् ॥ ४ ॥
उत्तमणीधमणीं द्वी प्रयोक्तुशाहकौ क्रमात् ।
कुसीदको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः ॥ ५ ॥

नाम वैश्यके हैं। आजीव (पु॰), जीविका (स्त्री॰), वार्ता (स्त्री॰), वृत्ति (स्त्री॰), वर्त्तन (न॰), जीवन (न॰) ये छः नाम जीविकामात्रके हैं ॥१॥ कृषि (स्त्री॰) अर्थात खेती करना, पशुपाल्य (न॰) अर्थात गौ आ-दिकी रक्षा करना, वाणिज्य (न॰) अर्थात् खरीद्ना बेचना ये तीन वृत्ति वैश्यकी हैं । तहां कृषिशब्द (स्त्री॰) है । सेवा, श्ववृत्ति अर्थात् कृत्तेकी वृत्ति ये दो (स्त्री॰) नाम सेवाके हैं। यह निन्दनीय है। अनृत (न॰), कृषि (स्त्री ॰) ये दो नाम खेती करनेके हैं । और जीवोंकी हिंसा होने-से खेतीभी निंदनीय है। उञ्छ यह एक (पु॰) नाम दुकान आदिमें पढे हुए दानोंको इकट्टे करनेका है। शिल यह एक (न०) नाम खेत आदिके खामीके त्यागे हुए अन्नके दानोंको ग्रहण करनेका है। ये दोनों ऋत (न॰) कहलाते हैं ॥२॥ मृत यह एक (न॰) नाम मांगने वालेको अन्न दिये जानेका है। अमृत यह एक (न॰) नाम विना मांग-नेवालेको अन्न आदि देनेका है। सत्यानत यह एक (न०) नाम खरी-दना बेचना आदि वाणिज्यका है। क्योंकि इसमें कुछ सत्य और कुछ झूंठ बोलना पढता है। ऋण (न॰), पर्य्युदंचन (न॰) ॥ ३ ॥ उद्घार (पु॰) ये तीन नाम कर्जेंके हैं । अर्थप्रयोग (पु॰), कुसीद (न॰), वृद्धिजीविका (स्त्री॰) ये तीन नाम व्याजके हैं। याचितक यह एक (न॰) नाम मांगनेसे प्राप्त हुएका है। आपभित्यक यह एक (न॰) नाम नियमसे प्राप्त हुएका है ॥ ४ ॥ उत्तमर्ण यह एक (पु॰) नाम साहुकारका है। अधमर्ण यह एक (पु॰) नाम कर्जदारका है। क़सीदक, वार्धिषक, वृद्धचाजीव, वार्धिष ये चार (प्र०) नाम व्याजखोरके हैं ॥६॥ सेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवछः ।
सेत्रं वैहेषशाल्यं श्रीहिशाल्युद्भवोषितम् ॥ ६ ॥
यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिमवनं हि यत् ।
तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुमङ्गा द्विरूपता ॥ ७ ॥
मौद्रीनकोद्भवीणादिशेषधान्योद्भवसमम् ।
" शाकसेत्रादिकं शाकशाकटं शाकशाकिनम् । "
बीजाकृतं द्वतृष्टुष्टं सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥
त्रिगुणाकृतं द्वतियाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
द्विगुणाकृतं तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥
द्रोणाढकादिवापादी द्रीणिकादिककादयः ।
स्वारीवापस्तु स्वारीक उत्तमणोदयस्तिषु ॥ १० ॥

क्षेत्राजीव, कर्षक, कृषिक, कृषीवल ये चार (पु॰) नाम खेती करनेवा-हेके हैं । आगेके शब्द (त्रि॰) हैं । ब्रेहेय, यह एक नाम ब्रीहि अन उपजनेके खेतका है। शाल्य यह एक नाम शालिचांवल उपजनेके खेतका है ॥ ६ ॥ यन्य यह एक नाम जब उपजनेके खेतका है । यवक्य यह एक नाम अल्पनव उपजनेके खेतका है। षष्टिक्य यह एक नाम साठी अर्थात साठ रात्रियोंमें जो पके उस चांवलोंके खेतका है। तिल्य, तैलीन ये दो नाम तिल उपजनेके खेतके हैं। माष्य, माषीण ये दो नाम उडद उपज-नेके खेतके हैं। उम्य, औमीन ये दो नाम अरुसी उपजनेके खेतके हैं। अणव्य, आणवीन ये दो नाम अण अन्नविशेष उपजनेके खेतके हैं। भंग्य, भागीन ये दो नाम भाग उपजनेके खेतके हैं ॥७॥ मौद्रीन यह एक नाम मूंग उपजनेके खेतका है। कोद्रवीण यह एक नाम कोदू उपजनेके खेतका है। चाणकीन यह एक नाम चने उपजनेके खेतका है। गौधूमीन यह एक नाम गेहं उपजनेके खेतका है। ऐसे अन्यभी जानने। " शाकशाकट, शाक-शाकिन ये दो नाम शाक उपजनेके खेतके हैं। " बीजाकृत यह एक नाम पहले बोया पीछे जोते ऐसे खेतका है। सीत्य, कृष्ट, हल्य ये तीन नाम जुते हुए खेतके हैं ॥८॥ त्रिगुणाकृत, तृतीयाकृत, त्रिहस्य, त्रिसीस्य ये चार नाम तीन वार जोते हुए खेतके हैं। हिगुणाकृत, दितीयाकृत, दिहल्य, हिसीत्य, शंबाकृत ये पांच नाम दो वार जुते हुए खेतके हैं ॥ ९ ॥ द्रोण आदि परिमित अन्नके बोये जाने आदिमें द्रीणादिक होते हैं। जैसे-द्री- पुंनपुंसकयोर्वमः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।
कैदारकं स्यात्केदार्य क्षेत्रं केदारिकं गणे ॥ ११ ॥
छोष्टानि छेष्टवः पुंसि कोटिको छोष्टभेदनः ।
माजनं तोदनं तोत्रं सनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥
दात्रं छवित्रमाबन्धो योत्रं योक्त्रमयो फलम् ।
निरीशं कुटकं फालः कृषको लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
गोदारणं च तीरोऽय शम्या स्त्री युगकीलकः ।
ईवा लाङ्गलदण्डः स्यात्सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
पुंसि मोधः सलेदारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।
आशुवींहिः पाटलः स्यान्छितशुक्यवी समी ॥ १५ ॥

णिक यह एक नाम जिसमें द्रोणभर अन्न बोया जावे उस खेतका है। आढिकक यह एक नाम आढकभर अन्न बोया जावे उस खेतका है। प्रास्थिक यह एक नाम प्रस्थभर अन्न बोया जावे उस खेतका है । आदि-इन्दिसे द्रौणिक आदि परिमित अन्न जिस कढावमें पक सके उसकेभी हैं। खारीक यह एक नाम खारीभर अन्न जिसमें बोया जाय उस खेतका है। उत्तमणीसे आदि हे खारीकशब्दपर्यंत (त्रि॰) हैं ॥१०॥ वप्र, केदार, (पु॰), क्षेत्र (न॰) ये तीन नाम खेतके हैं । तहां वप्रशब्द (पु॰ न॰) हैं। केदारक, कैदार्थ्य, कैदार, केदारिक ये चार (न॰) नाम खेतके समूहके हैं ॥ ११ ॥ लोष्ट (पु॰ न॰), हेष्टु ये दो नाम माटीके दुकडेके हैं। तहां छेष्ट्राब्द (पु॰) है। कोटिश, छोष्टमेदन ये दो (पु॰) नाम मारीके डेले फोडनेकी मोगरीके हैं। प्राजन, तोदन, तोत्र ये तीन(न०) नाम चानक तथा संक्षिते हैं । खनित्र, अवदारण ये दो (न॰) नाम कुदार या कसीके हैं ॥ १२ ॥ दात्र, रुवित्र ये दो (न०) नाम दरांतीके हैं। आवंध (पु॰), योत्र (न॰), योक्त्र (न॰) ये तीन नाम जोतेके रस्सीके हैं। फल, निरीज्ञ, कुटक, फाल (पु॰ न॰), कुषक (पु॰) ये पांच नाम जोतनेके हरकी कुराके समीप जो काठ है उसके हैं। लांगल, हल ॥१३॥ गोदारण, सीर ये चार नाम हलके हैं । सीरकाद (पु॰) होष (न॰) हैं । क्रम्या, युग-कीलक (पु॰) ये दो नाम कीलके हैं। तहां शम्याशब्द (स्त्री॰) है। ईपा (स्री॰), छांगछदंड (पु॰) ये दो नाम हरिशके हैं । सीता यह एक (स्री॰) नाम हरूकी रेखाका है ॥ १४ ॥ मेथि (पु॰), खलेदारु (न॰) ये दो नाम तोक्पस्तु तत्र इस्ति कछायस्तु सतीनकः ।

हरेणुरेणुकी चास्मिन्कोरदूबस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥

मङ्गल्यको मसूरोऽय मङ्गुष्ठकमयुष्ठकौ ।

वनमुद्रे सर्वये तु द्वी तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥

सिद्धार्थस्त्वेष धवछो गोषूमः सुमनः समौ ।

स्याद्यावकस्तु कुल्मापश्चणको हरिमन्यकः ॥ १८ ॥

द्वी तिछे तिछपेजश्च तिछपिअश्च निष्फछे ।

सवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी ॥ १९ ॥

स्वियो कंगुप्रियंगू द्वे अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

मातुछानी तु भङ्गायां त्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्कणिशं सस्यमअरी ।

धान्यं त्रीहिः स्तम्बकरिः स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥ २१ ॥

बैल आदि बांधनेके काष्टसंदके हैं । आशु, ब्रीहि, पाटल ये तीन (प्र॰) नाम ब्रीहिके हैं । शित्र क्रुक, यव ये दो (पु॰) नाम जवींके हैं ॥ १५ ॥ तोक्म यह एक (प्र॰) नाम हरे जवका है। कलाय, सतीनक, हरेणु, रेणुक ये चार (पु॰) नाम मटरके हैं। कोरदूष, कोद्रव ये दो (पु॰) नाम कोदूके हैं ॥ १६ ॥ मंगल्यक, मसूर ये दो (पु॰) नाम मसरके हैं । मकुष्टक, मथुष्टक, वनसुद्ध ये तीन (पु॰) नाम मोठके हैं। सर्षप, तंतुभ, कदंबक ये तीन (पु॰) नाम सरसींके हैं ॥ १७ ॥ सिद्धार्थ यह एक (प्र॰) नाम सुपेद सरसोंका है। गोधूम, सुमन ये दो (पु॰) नाम गेहूंके हैं। यावक, कुल्माष ये दो (पु॰) नाम आधे फो हुए जब आदि वा कुछथीके हैं। चणक, हरिमंथक ये दो (yº) नाम चनोंके हैं ॥ १८ ॥ तिल्पेज, तिल्पिज ये दो (पु॰) नाम फलर हित तिळ अर्थात रानतिळके हैं। क्षव (प्र॰), क्षताभिजनन (पु॰), राजिका (ह्यी॰), कृष्णिका (ह्यी॰), आसुरी (ह्यी॰) ये पांच नाम राईके हैं ॥ १९ ॥ कंग्र, प्रियंग्र ये दो नाम कांगनीके हैं और (श्ली०) हैं। अतसी, उमा, क्षमा ये तीन (स्त्री॰) नाम अल्सीके हैं। मातुलानी, भंगा ये दो (स्त्री॰) नाम सनके हैं। अणु यह एक नाम ब्रीहिक भेवका है और (प॰) है ॥ २० ॥ किञार यह एक (प॰) नाम किञारी

नाही नालं च काण्डोऽस्य पढाछोऽस्त्री स निष्पछः । कडद्भरो बुसं छीवे धान्यत्विच तुषः पुमान् ॥ २२ ॥ शूकोऽस्त्री सहस्णतीक्ष्णात्रे शमी शिम्बा त्रिपृत्तरे । ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुडीकृतम् ॥ २३ ॥ माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः । शाख्यः कछमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥ तृणधान्यानि नीवाराः स्त्री गवेधुगेवेधुका । अयोगं मुसछोऽस्त्री स्यादुद्वस्त्रसमुख्यस्य ॥ २५ ॥

अन्नका है। इसका अग्रभाग सुईके समान होता है। कणिश यह एक (न॰ पु॰) नाम खेतीके नये शिर अथवा बालका है। धान्य (न॰), ब्रीहि (पु॰), स्तंबकरि (पु॰) य तीन नाम ब्रीहि जव आदिके हैं। स्तंब यह एक (पु॰) नाम तृण जव आदिके गुच्छेका है ॥२१॥ नाडी (स्त्री॰), नाल (न॰) ये दो नाम इस गुच्छेके कांडके हैं। पलाल यह एक नाम फल्पहित कांडका है और (पु॰न॰) है। कडंगर (पु॰), बुस ये दो नाम भूसके हैं। तहां बुसराब्द (न०) है। तुष यह एक नाम अन्नके छिछके (भूसी) का है और (पु॰) है ॥ २२ ॥ ज्ञूक यह एक नाम महीन चिकना तीक्ष्ण और पैना ऐसे अग्रभागवाले जब आदिका है और (पु॰ न॰) है। शमी, शिबा ये दो (स्त्री॰) नाम संगरीके हैं। आगे ऋदा आदि चारों शब्द वाच्यिलंगी हैं। ऋद, आवसित ये दो नाम तृषसे अलग किये अन्नके हैं । पूत, बहुलीकृत ये दो नाम छाज आदिसे शुद्ध किये अन्नके हैं। यहांतक (त्रि॰) हैं ॥ २३ ॥ उडद मूंग आदि रामीघान्य कहाते हैं। जब गहूं आदि जूकघान्य कहाते हैं। बडी नाछ-वाला और बहुत पानीसे उपजा ऐसा ब्रीहिविशेष कलम कहलाता है। करूम आदि और साठ रात्रिमें फानेवारू ये सब चावरू शार्क कहाते हैं। ये सन माष आदिशब्द (पु॰) हैं ॥२४॥ नीवार, श्यामाक आदि (पु॰) नाम तृषाधान्यके हैं। गवेधु, गवेधुका ये दो नाम मुनिजनोंके अन्नके हैं और (स्त्री॰) हैं । अयोग्र (न॰), मुसल ये दो नाम मूसलके हैं। तहाँ मूसळ्शन्द (पु॰ न॰) है । उद्बर, उर्जूबरु ये दो (न॰) नाम ओख-

प्रस्फोटनं शूर्पमञ्जी चालनी तिततः पुमान् ।
स्यूतमसेवी कण्डोलिपिटी कटिकिलिअकी ॥ २६ ॥
समानी रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।
पौरोगवस्तद्ध्यक्षः सूपकारास्तु बल्लवाः ॥ २७ ॥
आरालिका आन्धिसकाः सूदा औदिनिका गुणाः ।
आपूर्पिकः कान्दिविको मध्यकार इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
अञ्चमन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरिनिका ।
अङ्गारधानिकाऽङ्गारशकटचिप हसन्त्यिप ॥ २९ ॥
हसन्यप्यथ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम् ।
क्रीबेऽम्बरीषं श्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥
अल्लारः स्यान्मणिकः कर्कर्यालुर्गलनिका ।
पिठरः स्याल्युखा कुण्डं कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

हीके हैं ॥ २५ ॥ प्रस्फोटन (न॰), शूर्प ये दो नाम छाजके हैं । तहां जुर्पेञ्चल (पु॰ न॰) है । चालनी (स्त्री॰), तितल ये दो नाम चालनीके हैं। तहां तितच शब्द (पु॰) है। स्यूत, प्रसेव ये दो (पु॰) नाम बोरेके हैं। कंडोल, फिर ये दो (पु॰) नाम फिरारी के हैं। कट, किलिजक ये दो (पु॰) नाम छबढेके हैं ॥२६॥ रसवती (स्त्री॰) पाकस्थान (न॰), महानस (पु॰न॰) ये तीन नाम पाकशालाके हैं। पोरोगव यह एक नाम पाकशालाके मालिकका है । मूफार, बहुव ॥२७॥ आरालिक, आंधासक, सूद, औद-निक, गुण ये सात (पु॰) नाम रसोइयेके हैं। आपूरिक, कांदिवक, मध्यकार ये तीन नाम पकवान बनानेवालेके हैं। तहां पौरोगव आदि और भक्ष्यकारपर्यंत राज्द (त्रि॰) हैं ॥ २८ ॥ अश्मन्त (न॰), उद्धान (ন০), अधिश्रयणी (स्त्री॰), चुल्लि (स्त्री॰), अंतिका (स्त्री॰) ये पांच नाम चूल्हेके हैं। अंगारधानिका, अंगारशकटी, हसंती ॥ २९ ॥ हसनी ये चार (स्त्री॰) नाम अंगीठीके हैं । अंगार, अलात, उल्मुक ये तीन नाम अंगारेके हैं। तहां अंगार शब्द (पु॰ न॰) शेष (न॰) हैं। अंबरीष, आष्ट्र ये दो नाम चने आदिके भूननेके पात्रके हैं। तहां अंबरीष হাল্ব (ন১) और প্রাছ ফুল্ব (पু০) है। कुन्तु, खेदनी (स्त्री०) ये दो नाम मदिरा आदिके भट्टीके हैं। तहां कन्द्रशब्द (पु॰ श्री॰) हे ॥३०॥ अळंजर, मणिक ये दो (पु॰) नाम बढे मटकेके हैं। कर्करी, आल, गलंतिका घटः कुटनिपावस्तं शरावो वर्षमानकः ।
ऋजीषं पिष्टपचनं कंसोऽस्त्री पानमाजनम् ॥ ३२ ॥
कुत्ः कृतोः स्रेहपात्रं सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।
सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥
द्विः कम्बः खजाका च स्यात्तद्दीरुहस्तकः ।
अस्त्री शाकं हरितकं शिग्ररस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥
कल्लम्बश्च कडम्बश्च वेषवार उपस्करः ।
तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लम्य वेष्ट्रजम् ॥ ३५ ॥
मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।
जीरको जरणोऽजाजी कणा कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥

ये तीन (स्त्री॰) नाम झारीके हैं। पिठर (पु॰), स्थाली (स्त्री॰), उखा (स्त्री॰), कुंड (न॰) ये चार नाम टोकनीके हैं। कल्हा ॥३१॥ घट, कुट, निप ये चार नाम कळहोके हैं । तहां कळहाहाब्द (त्रि॰) है । घट शब्द (पु॰ स्त्री॰) रोष (पु॰) हैं । शराव, वर्द्धमानक (पु॰) ये दो नाम सकोरके हैं। तहां शरावशब्द (पु॰ न॰) है। ऋजीष, पिष्ठपचन ये दो (न॰) नाम तवा कढाईके हैं। कंस, पानमाजन (न॰) ये दो नाम दूध आदि पीनेके पात्रके हैं । तहां कंसज्ञब्द (पु॰ न॰) है ॥३२॥ कुत यह एक (स्त्री॰) नाम चामसे बने तेल आदिकी कुप्पीका है। कुतुप यह एक नाम छोटी कुप्पीका है और (पु॰) है। ये सब पूर्वीक्त पात्र आवपन आदि संज्ञक हैं । आवपन, भौड, पात्र, अमत्र, भाजन ये पांच (न॰) नाम बर्त्तनके हैं। पात्रशब्द (पु॰) भी पाया जाता है 🛮 ३३ 🛮 दर्वि, कंबि, खजाका ये तीन (स्त्री॰) नाम कडछीके हैं। तर्दू (पु॰), दारुहस्तक (पु॰) ये दो नाम काठकी कडछाके हैं। शाक (प्र॰ न॰), हरितक (न॰), शिष्ट (पु॰) ये तीन नाम बथवा आदि शाकके हैं ॥३४॥ कलंब, कलंब ये दो (पु॰) नाम शाककी नालके हैं। वेषवार, उपस्कर ये दो (पु॰) नाम मसालेके हैं । तितिन्डीक (न॰), चुक्र (पु॰ न॰), वृक्षाम्छ (न॰) ये तीन नाम खटाईके हैं । वेळ्ळ ॥ ३५ ॥ मरीच, कोलक, कृष्ण, उत्रण, धर्मफ्तन ये छः (न०) नाम मिरचके हैं । जीरक (पु॰), जरण (पु॰), अजाजी (स्त्री॰), कणा

सुषरी कारवी पृथ्वी पृथुः काळोपकुश्विका ।

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्पाद्य छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३० ॥

कुरतुम्बरु च धान्याकमय शुण्ठी महीषधम् ।

श्वीनपुंसकयोविश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥

आरनाळकसीवीरकुल्माषाभिष्ठतानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्छकुअळानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥

सहस्रवेधि जतुकं बाढीकं हिंगु रामठम् ।

तत्यत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कबरी पृथुः ॥ ४० ॥

निशाख्या काश्वनी पीता हरिद्रा वरविणनी ।

सामुद्रं यत्तु छवणमक्षीबं विश्वरं च तत् ॥ ४१ ॥

सैन्धवोऽस्त्री शीतिशिवं माणिमन्यं च सिन्धुजे ।

रौमकं वसुकं पाक्यं विद्वं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥

(क्री०) ये चार नाम जीरेके हैं ॥ ३६ ॥ सुषवी, कारवी, पृथ्वी, पृथु, काला, उपकुष्टिका ये छः (स्री०) नाम काले जीरेके हैं । आर्रक, ज्ञृङ्गेंबर ये दो (न०) नाम अद्रखके हैं । छत्रा (स्री०), वितुत्रक (न०)॥ ३७॥ कुस्तुंबर (न०), धान्याक (न०) ये चार नाम धन्यें के हैं । ग्रुंठी (स्री०), महीषध (न०), विश्व, नागर (न०), विश्वमेषज (न०) ये पांच नाम सींठके हैं । तहां विश्वशब्द (स्री० न०) है ॥ ३८॥ आरनालक, सोवीर, कुल्माषाभिषुत, अवंतिसोम, धान्याम्ल, कुंजल, कांजिक ये सात (न०) नाम कांजीके हैं ॥ ३९॥ सहस्रवेधि, जितुक, बाल्हीक, हिंगु, रामठ ये पांच (न०) नाम हींगके हैं । हिंगुशब्द (पु०) भी है । कारवी, पृथ्वी, बाल्यका, कबरी, पृथु ये पांच (स्री०) नाम हींगुपत्रिके हैं ॥ ४०॥ निशा, काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी ये पांच (स्री०) नाम हल्दीके हैं । अक्षीब, विश्वर ये दो (न०) नाम सामुद्रनमकके हैं ॥ ४१॥ सैंघव, शितिहाव, माणिमंथ, सिंधुज ये चार नाम सैंघे नमकके हैं । तहां सैंघवशब्द (पु०न०) शेष (न०) हैं । रीमक, वसुक ये दो (न०) नाम सामर नमकके हैं । पाक्य, बिंड ये दो (न०) नाम सारी

शतके सब नाम हल्दीके वाचक होते हैं।

सौवर्चलेऽक्षरुचके तिलकं तत्र मेचके ।

मत्त्यंडी फाणितं खण्डविकारः शकरा सिता ॥ ४३ ॥

कूर्चिका क्षीरविकातः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
शृलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यमुख्यं तु पैठरम् ।

प्रणीतमुपसंपत्रं प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥ ४५ ॥

स्यात्पिच्छलं तु विजिलं संमुष्टं शोधितं समे ।

चिक्कणं मसुणं स्निग्धं तुल्ये भावितवासिते ॥ ४६ ॥

आपकं पौलिरभ्यूषो लाजाः पुंभूम्नि चासताः ।

पृथुकः स्याचिपिटको घाना अष्टयवे स्त्रियः ॥ ४७ ॥

नमकके हैं ॥ ४२ ॥ सौवर्चल, अक्ष, रुचक ये तीन (न०) नाम मध्र नमकके हैं। तिलक यह एक (न॰) नाम काले नमकका है। मत्स्यण्डी (स्त्री॰), फाणित (न॰) ये दो नाम रानके हैं। शर्करा, सिता ये दो (स्त्री॰) नाम खांड और मिश्रीके हैं ॥ ४३ ॥ कूचिका यह एक (स्त्री॰) नाम दही आदिसे बनी दूधकी विकृतिका है। रसाला, मार्जिता ये दो (स्त्री॰) नाम दही, शहद, सांड, मिरच और अदरख आदिसे बनाये शिखरनका है। तेमन, निष्ठान ये दो (न०) नाम दही आदि व्यक्तन (कढीविशेष) के हैं। इससे आगे वासितपर्यित सब शब्द (त्रि॰) हैं ॥ ४४ ॥ ज्ञुलाकृत, भटित्र, ज्ञुल्य ये तीन नाम ज्ञूलकरके पकाये हुए मांस आदिके हैं । उख्य, पैठर ये दो नाम टोकनीमें फ्काये अन्न आदिके हैं। प्रणीत, उपसम्पन्न ये दो नाम रस आदिसे सम्पन्न किये व्यन्तन आदिके हैं। प्रयस्त, सुसंस्कृत ये दो नाम जतन करके घृतमें पकाये पक-वानके हैं ॥ ४५ ॥ पिच्छिल, विजिल ये दो नाम मण्डसे युत हुई दही आदि अर्थात महाके हैं। संप्रष्ट, शोधित ये दो नाम विने हुए अन्न आदिके हैं। चिक्कण, मसुण, सिग्ध ये तीन नाम चिकनेके हैं। भावित, वासित ये दो नाम जीरे आदिसे अधिवासित (छैंकि हुए) के हैं। यहां-तक (त्रि॰) हैं ॥ ४६ ॥ आफ्का (न॰), पौछि (पु॰), अम्यूष (पु॰) ये तीन नाम पूरी आदिके हैं। लाज यह एक नाम धानकी खीलका है। अक्षत यह एक नाम गीले जब चावल इन दोनोंका है। ये दोनों शब्द बहवच-

पूरोऽपूरः पिष्टकः स्यात्करम्भो द्विसक्तवः ।
भिःसा स्त्री भक्तमन्थोऽस्त्रमोदनोऽस्त्री स दीदिविः ॥ ४८ ॥
भिस्सटा दिग्वका सर्वरसाग्रे मण्डमिस्त्रयाम् ।
मासराचामनिस्नावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥ ४९ ॥
यवागूरुण्णिका आणा विछेपी तरहा च सा ।
" स्रक्षणाभ्यक्षने तेलं कृसरस्तु तिलोदनः । "
गन्यं त्रिषु गवां सर्वं गोविड् गोमयमस्त्रियाम् ॥ ५० ॥
तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री दुग्धं क्षीरं पयः समम् ।
पयस्यमाज्यद्घ्यादि द्रप्तं दिध घनेतरत् ॥ ५१ ॥
घृतमाज्यं हिवः सिपनंबनीतं नवोद्धतम् ।
तत्तु हेयंगवीनं यद्ध्योगोदोहोद्धवं घृतम् ॥ ५२ ॥

नांत (पु॰) हैं। पृथुक, चिपिटक ये दो (पु॰) नाम चांवळोंके मुरमुरांके हैं। घाना यह एक नाम जवोंकी घानीका है और बहुवचनान्त तथा (स्त्री॰) है ॥४७॥ पूप, अपूप, पिष्टक ये तीन (पु॰) नाम मालपुवेके हैं। करम्भ(पु॰) यह एक नाम दहीसे युत हुए सत्तुओंका है । भिस्सा, भक्त (न॰), अन्यस् (न॰), अन्न (न॰), ओद्न, दीदिवि (पु॰) ये छः नाम अन्नके है।तहां ओद्न शब्द (पु॰न॰) और मिस्साशब्द (स्त्री॰) है ॥४८॥ मिःसटा, दग्धिका ये दो (बी॰)नाम जले हुए अञ्चके हैं । मण्ड यह एक नाम सब द्रव्योंके द्रव अर्थात् झोळका है और (पु॰ न॰) है। मासर, आचाम, निस्नाव ये तीन (१०) नाम चांवल आदिके मांडके हैं ॥ ४९ ॥ यवागू, उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला ये पांच (स्त्री॰) नाम गुडयानी और फ्तला भात (रूपसी आदि) के हैं। " मक्षण, अभ्यंजन ये दो (न०) नाम तेरुके हैं । कूसर यह एक (पु॰) नाम तिलोंसहित चांवलोंका है । " गव्य यह एक नाम गौके दूध आदिका है और (त्रि॰) है। गोविज् (ज्ञान्त), गो-मय ये दो नाम गोबरके हैं और दोनों शब्द (पु॰न॰) हैं ॥ ५० ॥ करीष यह एक नाम अरने उपलेका है और (पु॰ न॰) है । दुग्य, क्षीर, प्यस् (सान्त) ये तीन (न॰) नाम दूधके हैं। प्यस्य यह एक (न॰) नाम द्धके विकार दही आदिका है। द्रप्स यह एक (न॰) नाम पतले दहीं का है ॥ ५१ ॥ घृत, आज्य, हिवस् (सान्त), सर्पिस् (सान्त) ये चार दण्डाहतं काल्झेयमरिष्टमापे गोरसः ।
तकं ह्यदिष्टमियतं पादाम्न्यधीम्नु निर्जलम् ॥ ५६ ॥
मण्डं दिधिमवं मस्तु पीयूषोऽभिनवं पयः ।
अश्रनाया बुभुष्ता क्षुद् शासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
सपीतिः स्त्री तुल्यपानं सिर्धः स्त्री सहमोजनम् ।
उदन्या तु पिपासा तृद् तथीं जिधिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
जेमनं लेह आहारो निधासो न्याद इत्यपि ।
सीहित्यं तर्पणं तृतिः फेला भुक्तसमुद्धितम् ॥ ५६ ॥

(न॰) नाम घृतके हैं। नवनीत, नवोदृत ये दो (न॰) नाम नौनी (मक्खन) के हैं । हैयंगवीन यह एक (न॰) नाम पहले दिनके दूधसे निकासे हुए नीना घतका है ॥ ५२ ॥ दण्डाहत, काल्डोय, अरिष्ट, गोरस ये चार नाम रवाईसे विलोये गये गोरसके हैं। तहां गोरस (पु॰) और शेष (न॰) हैं। तक यह एक (न॰) नाम चीथाई भाग पानी मिलाकर रवाईसे मथित किये मठेका है। उदक्षित यह एक (न॰) नाम आधा पानी मिछाकर खाईसे विछोये गयेका है। मियत यह एक (न॰) नाम पानी नहीं मिलाया जावे और रवाईसे मियत किये जानेवालेका है ॥ ५३ ॥ मस्तु यह एक (न०) नाम दहीके पानीका है। पीयूष यह एक (पु॰) नाम नवीन व्याई हुई गौके सात दिन भीत-रके दूधका है। अज्ञानाया, बुभुक्षा, क्षुघू ये तीन (स्त्री॰) नाम भूंखके हैं। ग्रास, कवल ये दो नाम ग्रासके हैं और (पु॰) हैं॥ ५४ ॥संपीति, तुरुयपान (न॰) ये नाम सहपानके हैं । तहां सपीतिशब्द (स्त्री॰) है । सिग्ध, सहभोजन (न॰) ये दो नाम सहभोजनके हैं । तहां सिग्धशब्द (स्त्री॰) है । उदन्या, पिपासा, तृष् (षान्त), तर्ष ये चार नाम तृषाके हैं। तहां तर्षशब्द (पु॰) और शेष (स्त्री॰) हैं। जग्ध (स्त्री॰), भोजन (न॰) ॥ ५५ ॥ जेमन (न॰), हेह (पु॰), आहार (पु॰), निघास (पु॰), न्याद (पु॰) ये सात नाम भोजनके हैं। सौहित्य (न॰), तर्पण (नं॰), तृप्ति (स्त्री॰) ये तीन नाम तृप्तिके हैं। केला यह एक (स्त्री) नाम पहले खाके पीछे छोडेका है ॥ ६६ ॥

कामं प्रकामं पर्यातं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।
गोपे गोपालगोतं स्पगोधुगाभीरबल्लवाः ॥ ५७ ॥
गोमिहिष्यादिकं पादबन्धनं द्वी गवीश्वरे ।
गोमिनगोमी गोकुलं तु गोधनं स्पादवां वर्जे ॥ ५८ ॥
विष्वाशितं गवीनं तद्रावो यत्राशिताः पुरा ।
उक्षा भद्रो बलीवदं ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
अनद्वान्सीरभेयो गौरुक्ष्णां संहतिरीक्षकम् ।
गव्या गोत्रा गवां वत्सधेन्वोवात्सकधेनुके ॥ ६० ॥
वृषो महान्महोक्षः स्याहृद्धोक्षस्तु जरद्भवः ।
उत्पन्न उक्षा जातोक्षः सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥
शक्तित्तरिस्तु वत्सः स्याह्म्यवत्सत्तरी समी ।
आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः षण्डो गोपितिरिट्चरः ॥ ६२ ॥

काम,प्रकाम, पर्याप्त, निकाम, इष्ट, यथेप्सित ये छः नाम यथेप्सित (चाह) कें हैं और सब क्रियाविशेषण हैं और क्रियाविशेषण सर्वदा (न॰) द्वितीयाके एकवचनमें रहता है। गोप, गोपाल, गोसंख्य, गोध, गाभीर, बह्नव ये छः (go) नाम गोपालके हें ॥ ५७ ॥ पादबंधन यह एक (नo) नाम गी भैंस आदिका है। गोमत् (मलन्त), गोमिन (इन्नन्त) ये दो (पु॰) नाम गायोंके मालिकके हैं। गोकुल, गोधन ये दो (न॰) नाम गायोंके समृहके हैं ॥ ५८ ॥ आशितंगवीन यह एक नाम जहां गो पहले चरती हों उस स्थानका है यह शब्द (त्रि॰) है । उक्षन, भद्र, बळीवर्द, ऋषम, वृषभ, वृष ॥ ५९ ॥ अनहुह् (हान्त), सीरभेय, गो ये नव (पु॰) नाम बैस्के हैं। तहां उक्षन्शब्द नकारान्त (पु॰) है। ओक्षक यह एक नाम बैलोंके समूहका है। गव्या, गोत्रा ये दो (स्त्री॰) नाम गायोंके समूहके हैं। वात्सक यह एक (न॰) नाम बछडेके समूहका है। वैनुक यह एक (न॰) नाम धेनुओंके समूहका है ॥ ६० ॥ महोक्ष यह एक (पु॰) नाम बढ़े बैलका है। बृद्धोक्ष, जरद्रव ये दो (पु॰) नाम बूढ़े बैलके हैं। जातोक्ष यह एक (पु॰) नाम बैछभावको प्राप्त हुए बछडेका है। तर्णक यह एक (पु॰) नाम तन्काल उपने बछडेका है ॥ ६१ ॥ शक्तकरि, चत्स ये दो (पु॰) नाम बछडेके हैं । दुम्य, वत्सतर ये दो (पु॰) नाम स्कन्धदेशे त्वस्य वहः सास्रा तु गळकम्बलः ।
स्यात्रस्तितस्तु नस्योतः प्रष्ठवाद् युगपार्थगः ॥ ६६ ॥
युगादीनां तु बोढारो युग्यप्रासङ्गचशाकटाः ।
स्वनति तेन तद्दोढाऽस्येदं हाळिकसिरिकी ॥ ६८ ॥
धूर्वहे धुर्यधीरयधुरीणाः सधुरंधराः ।
स्भावकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥
बर्जुन्यस्या रोहिणी स्यादुत्तमा गोषु नैचिकी ।
वर्णीदिभेदात्संज्ञाः स्युः शबळीधवळादयः ॥ ६७ ॥

जवान बछडेके हैं। आर्षभ्य यह एक (पु॰) नाम गोपतिपनेके योग्य बैलका है । षंड, गोपति, इट्चर ये तीन (पु॰) नाम सांडके हैं ॥ ६२ ॥ वह यह एक (प्रः) नाम बैठके कंधेका है । सास्ता (स्त्री॰), गर्ठकं बल (पु॰) ये दो नाम गोंके कंठमें छंबी चामके हैं। निस्तित, नस्योत ये दो (पु॰) नाम नथे हुए बलके हैं । प्रष्ठवाह, युगपार्श्वग ये दो (पु॰) नाम बैलको ढीला करनेके लिये कंधेपर बंधे हुए काठ-वाछे बैछके हैं ॥ ६३ ॥ युग्य यह एक (पु॰) नाम जोडीमें जा-नेवाले बैलका है । प्रासङ्ग्य यह एक (पु॰) नाम जुएके ले जानेवाले बैलका है । शाकट यह एक (पु॰) नाम गाडीको हे जानेवाले बैलका है। हाल्कि, सेरिक ये दो (पु॰) नाम हलसे खोदनेवाले बैलके हैं ॥ ६४ ॥ धूर्वह, धुर्य, घौरेय, धुराण, धुरंधर ये पांच (पु॰) नाम धुरमें वहनेवाले (जोत) बैलके हैं । एकधुरीण, एकधुर, एकधुरावह ये तीन (पु॰) नाम एक धुरको छ जानेवाल बैलके हैं ॥६५ ॥ सर्वधुरीण यह एक (पु॰) नाम सब धुरोंको छे जानेवाछे बैछका है। आगेके शब्द समांसमीनातक (स्त्री॰) हैं। माहेयी, सौरभेयी, गो, उस्रा, मात्र, बाक्किणी ॥ ६६ ॥ अर्जुनी, अद्भया रोहिणी ये नव नाम गोंके हैं। नैचि-की यह एक नाम उत्तम गौका है। वर्णके अवयव आदि भेदसे शब्छी धवला आदि संज्ञा हैं । चित्रवर्णवाली शबली होती है । सुपेदवर्ण-वाळी घवळा होती है । ऐसे लम्बकर्णी आदिभी जाननी ॥ ६७ ॥ दिहायनी दिवर्षा गौरकान्दा त्वेकहायनी ।
चतुरन्दा चतुर्होयण्येवं ज्यन्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥
वशा वन्ध्याऽवतोका तु स्रवद्गभोऽय संधिनी ।
आकान्ता वृषयेणाय वेहद्रभोपधातिनी ॥ ६९ ॥
काल्योपसयी प्रजने प्रष्टीही बालगभिणी ।
स्यादचण्डी तु सुकरा बहुस्तिः परेष्टुका ॥ ७० ॥
चिरप्रस्ता बष्कयणी घेतुः स्यात्रवस्तिका ।
सुत्रता सुखसंदोह्या पीनोध्री पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥
द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा घेतुष्या बन्धके स्थिता ।
समांसमीना सा येव प्रतिवर्ष प्रस्पते ॥ ७२ ॥
ऊधस्तु क्वीबमापीनं समी शिवककीलकी ।
न पुंसि दाम संदानं पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥

हिहायनी यह एक नाम दो वर्षकी ऊमरवाली बछियाका है। एक-हायनी यह एक नाम एक वर्षकी ऊमरवाली बिछयाका है । चतुर्हीयणी यह एक नाम चार वर्षकी ऊमरवाली गोका है। त्रिहायणी यह एक नाम तीन वर्षकी ऊमरवाछी गोका है ॥ ६८ ॥ वशा, वनध्या ये दो नाम वांझके हैं । अवतोका, स्रवद्गर्भा ये दो नाम अकस्मात् पतित हुए गर्भ-वार्छीके हैं। संधिनी यह एक नाम बरके संग मैथनके अर्थ जानेवारी गीका है। वेहत यह एक नाम बैलके संग भेशन करनेसे भर्गको नाजन-वाली भौका है ॥ ६९ ॥ काल्या, उपसर्या ये दो नाम गर्भको ग्रहण कर-नेमें प्राप्त समयवाली गौका है । प्रष्टोही यह एक नाम बालाही गर्भवाली हो जाय उस गौका है। अचण्डी, सुकरा ये दो नाम सीधी गोके हैं। बहसूति, परेष्ट्रका ये दो नाम बहुतवार व्याई हुई गौके हैं॥७०॥ चिरप्रसता, बष्कयणी ये दो नाम बहुतकालसे व्यानेवाली गीके हैं। धेन, नवस्तिका ये दो नाम नवीन व्याई हुई गौके हैं। सुक्रता, सुखसंदोह्या थे दो नाम सुन्दरशील स्वभाववाली गौके हैं। पीनोन्नी, पीवरस्तनी ये दो नाम मोटे थनोंवांछी गोके हैं॥ ७९॥ द्रोणक्षीरा, द्रोणद्रग्धा ये दो नाम द्रोण अर्थात एक हजार चौवीस तोछे दूध देनेवाछी गीके हैं। धेनुष्या यह एक नाम गिरवाँ रखी हुई गोका है। समांसमीना यह एक नाम प्रतिवर्ष व्याने-वाकी गीका है। यहांतक (स्त्री॰) हैं॥ ७२॥ उत्थस् (सान्त), वैशासमन्यमन्यानमन्यानो मन्यदण्डके ।
कुठरो दण्डविष्कम्भो मन्यनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥
छष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः करमः शिशुः।
करभाः स्युः शृङ्कलका दारवैः पादवन्यनैः ॥ ७५ ॥
अजा छागी शुभच्छागवस्तच्छगलका अजे ।
मेद्रोरञ्जोरणोणायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥
छष्ट्रोरञ्जाजवन्दे स्यादीष्ट्रकीरञ्जकाजकम् ।
चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥
वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पण्याजीवो द्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥

आपीन ये दो नाम गीके थनके हैं और (न०) हैं। शिवक, कीलक ये दो (पु॰) नाम खूंटेके हैं। दामन (नान्त), सन्दान (न॰) ये दो नाम बांधनेकी रज्जूके हैं। तहां दामन्शब्द (स्त्री॰ न॰) है। दामनी यह एक नाम जिससे बैंस आदि पशु बंधे उस रज्जूका है ॥ ७३ ॥ वेशास्त्र, मन्थ, मन्थान, माथेन्, मंथदण्डक ये पांच (पु॰) नाम मन्थनदण्डा अर्थात् रईके हैं। तहां मथिन्ञब्द नकारान्त (पु॰) है। कुठर, दण्डविष्कम्भ ये दो (पु॰) नाम जिसमें रई बांधी जावे उस खंभेके हैं। मन्यनी, गर्गरी ये दो (स्त्री॰) नाम दही मथनेके पात्रके हैं ॥ ७४ ॥ उष्ट्र, क्रमेलक, मय, महांग येचार (पु॰) नाम ऊंटके हैं । करम यह एक (पु॰) नाम अंदेके बचेका है। ग्रांबलक यह एक (पु॰) नाम काउसे बंधे हुए अंदेके बच्चेका है ॥ ७५ ॥ अजा, छागी ये दो (स्त्री०) नाम बकरीके हैं । शुभ, छाग, बस्त, छागलक, अज ये पांच (पु॰) नाम बकरेके हैं । भेड़, उरञ्र, खरण, ऊर्णायु, मेष, वृष्णि, ऐडक थे सात (पु॰) नाम भेडके हैं । अवि यहभी नाम भेडका है ॥ ७६ ॥ ओष्ट्रक यह एक (न॰) नाम छंटोंके समूहका है। और अक यह एक (न॰) नाम भेडोंके समूहका है। आजक यह एक (न॰) नाम बकरियोंके समूहका है । चक्रीवत्, बालेय, रासम, गर्दम, खर ये पांच (पु॰) नाम गधेके हैं ॥ ७७ ॥ वैदे-हंक, सार्थवाह, नैगम, वाणिज, विणज् (जान्त), पण्याजीव, आप-णिक, क्रयविक्रयिक ये आठ (पु॰) नाम क्रयविक्रय करनेवाले साहका-

विकेता स्याद्धिकयिकः क्रायिककियकौ समी ।
वाणिज्यं तु विणज्या स्यान्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
नीवी परिपणो मूळवनं लामोऽधिकं फलम् ।
परिदानं परीवतों नैमेयनिमयाविष ॥ ८० ॥
प्रमानुपनिधिन्यांसः प्रतिदानं तद्पंणम् ।
क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतन्यमात्रके ॥ ८१ ॥
विकेयं पणितन्यं च पण्यं क्रय्यादयिश्चषु ।
छीवे सत्यापनं सत्यंकारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
विपणो विकयः संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु ।
विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः ॥ ८३ ॥

रके हैं ॥ ७८ ॥ विक्रेत् (ऋकारान्त), विक्रयिक ये दो (पु॰) नाम बेचनेवालेके हैं। क्रायिक, ऋयिक ये दो (पु॰) नाम खरीदनेवालेके हैं। वाणिज्य (न॰), विणिज्या (स्त्री॰) ये दो नाम व्यवहारके हैं । मुल्य (न॰), वस्त्र (पु॰), अवक्रय (पु॰) ये तीन नाम मोलके हैं ॥७९॥ नीवी (स्त्री॰), परिपण (पु॰ न॰), मूलधन (न॰) ये तीन नाम ऋयः विक्रय आदि व्यवहारमें मूलधनके हैं। लाभ यह एक (पु॰) नाम नफेका है। परिदान (न॰), परीवर्त्त (पु॰), नैमेय (पु॰), निमय (पु॰) ये चार नाम परिवर्त्तन अर्थात् छैनदैनके हैं ॥ ८० ॥ उपनिधि, न्यास ये दो (पु॰) नाम धरोहरके हैं । प्रतिदान यह एक (न०) नाम धरोहर फेर देनेका है । ऋय यह एक नाम दुका-नमें फैलाये हुए द्रव्यका है । केय यह एक नाम केतव्यमात्र (खरी-दनेके योग्य) का है ॥ ८१ ॥ विक्रेय, पणितव्य, पण्य य तीन नाम बेचनेके योग्य वस्तुके हैं। क्रय्य आदि शब्द (त्रि॰) हैं। सत्यापन (न॰), सत्यंकार (पु॰), सत्याकृति ये तीन नाम निश्चय मुझे खरीदना है इस प्रकार सत्य करने अर्थात् बयाना देनेके हैं। तहां सत्याकृति शब्द (स्त्री॰) है ॥ ८२ ॥ विपण, विक्रय ये दो (पु॰) नाम विक्रनेके हैं । एक शब्दसे छेके अष्टादश शब्दपर्यंत संख्याशब्द संख्येयमें वर्त्तमान हुए (त्रि॰) हैं । जैसे-' एका शाटी, एकः पटः, एकं वस्त्रम्, दश स्त्रियः, दश पुरुषाः, दश कुछानि । ऐसे जानना । विशतिसे आरंभ

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तस्तासु चानवतेः ख्रियः ।

पंक्तेः शतसहस्नादि क्रमादशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

यौतवं द्ववं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।

मानं तुलांगुलिप्रस्येगुंकाः पश्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥

ते वोडशाक्षः कर्षोऽस्री पलं कर्षचतुष्टयम् ।

सुवर्णविस्तौ हेम्रोऽस्रे कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥

तुला ख्रियां पलशतं भारः स्याद्विशतिस्तुलाः ।

आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्कार्षिके ताम्रिके पणः ।

सिक्रयामाटकद्रोणी खारी वाहो निकुश्चकः ॥ ८८ ॥

कर परार्द्धपर्यन्त सब संख्या सब कालमें संख्येय और संख्यामें एकवचनांत होती है। जैसे-'एकोनविंशतिः पटाः' ॥८३॥ संख्यार्थमें वर्त्तमान विंशति आदि संख्याका दिवचन बहुवचन होता है। जैसे-'द्वे विशती' यह पद है। विश्वतिशब्दसे छेके नवतिशब्दपर्यंत संख्यावाचकशब्द (स्त्री॰) हैं। पंक्ति अर्थात दश संख्यासे लेकर दश्यनी संख्याके क्रमसे शत सहस्र आदि होते हैं। जैसे-एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, रुक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्डुद, अब्ज, स्वर्व, निस्वर्व, महापद्म, शंकु, जळाधि, अन्त्य, मध्य, परार्द्ध ऐसे दश्युणा-त्तर संज्ञा हैं ॥ ८४ ॥ योतव, द्वय, पाय्य ये तीन (न॰) शब्द परिमा-णवाचक हैं। तुलामान, अंगुलिमान, प्रस्थमान इन्होंकरके उसकी नाप तोल होती है। पांच चिरमटियोंका आद्यमाषक होता है। यह (पु॰) है॥ ८५ ॥ सोल्ह माषककी अक्ष (पु॰) और कर्ष होता है। तहां कर्षशब्द (पु॰ न॰) है । चार कर्षींका पर होता है। यह शब्द (न॰) हैं। सुवर्ण, बिस्त ये दो (पु॰ न॰) नाम अस्सी रत्तीभर सोनेके हैं। सोनेका दो पळ कुरुविस्त कहाता है। यह शब्द (पु॰) है ॥ ८६॥ तुलाशब्द (स्त्री॰) है । सौ प्लोंकी तुला होती है । भार यह एक (पु॰) नाम वीस तुलाओंके भारका है। आचित यह एक (पु॰ न॰) नाम द्श भारींका है। गांडेसे चल सकनेवालाभी भार आचित कहाता है॥ ८७॥ कार्षापण, कार्षिक ये दो (पु॰) नाम रुपयेके हैं । पण यह एक (पु॰) नाम ताबेके कर्षप्रमाण पैसेका है । आगे आढक और द्रोणशब्द (पु॰

कुडवः प्रस्य इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।
पादस्तुरीयो भागः स्यादंशभागौ तु वण्टके ॥ ८९ ॥
द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्यं घनं वसु ।
हिरण्यं द्रविणं द्यम्नपर्थरीविभवा आपि ॥ ९० ॥
स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमकप्ये कृताकृते ।
ताभ्यां यदन्यत्तकुप्यं कप्यं तद्वयमाहतम् ॥ ९१ ॥
गारुत्मतं मरकतमश्मगभीं हिरिन्मणिः ।
शोरणरत्नं छोहितकः पद्मरागोऽथ मौक्तिकम् ॥ ९२ ॥
मुक्ताऽथ विद्वमः पुंसि प्रवाछं पुंनपुंसकम् ।
रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेपि च ॥ ९३ ॥

नः) हैं । आढक, द्रोण, खारी (स्त्रीः), वाह (पुः), निकंचक (पु॰) ॥ ८८ ॥ कुडव (पु॰), प्रस्थ (पु॰) आदि शब्द अलग २ परिमाणके वाचक हैं। तहां चार पढ़ोंका कुडव, चार कुडवोंका प्रस्थ, चार प्रस्थोंका आढक, चार आढकोंका द्रोण, दो द्रोणोंका शर्प, डेढ श्र-र्पकी खारी और दो क्पेंकि दोणी इसीको भार कहते हैं। और चार भारका वाह इस प्रकार तोल है ! पाद यह एक (पु॰) नाम रूपये आ-दिके चौथाई भागका है। अंश, भाग, वंटक ये तीन (पु॰) नाम भाग-मात्रके हैं ॥ ८९ ॥ द्रव्य, वित्त, स्वाप्तेय, रिक्य ऋक्य, धन, वस्र, हिरण्य, द्रविण, ग्रुम्न यहांतक (न॰) हैं, अर्थ (पु॰), वि(पु॰), विभव(पु॰) ये तेरह नाम धनके हैं ॥ ९० ॥ कोश (पु॰ 上 हिरण्य-(न॰) ये दो नाम घडे और अनघडे हुए सोने चांदीके हैं। 🖫 प्य यह एक (न०) नाम घडे तथा अनघडे हुए तांबे आदिका है। रूप्ये भाह एक (न०) नाम तामा चांदी मिलाके बने हुएका है ॥ ९१ ॥ गौरुत्मत (न०), मरकत (न॰), अश्मगर्भ (पु॰), हरिन्मणि (पु॰) ये चार नाम पन्नेके हैं। शोणरत्न (न॰), छोहितक (पु॰), पद्मराग (पु॰) ये तीन नाम माणिकके हैं। माँक्तिक (न०)॥ ९२॥ मुक्ता (स्त्री०) ये दो नाम मोतीके हैं । विद्वम, प्रवाल ये दो नाम मूंगेके हैं । तहां विद्वमशब्द (पु॰) और प्रवालशब्द (पु॰ न॰) है। रल (न॰), मणि ये दो नाम मर-कत आदि मणिके हैं। तहां मणिज्ञब्द (पु॰ स्त्री॰) है और येही दो

स्वर्ण सुवर्ण कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
तपनीयं शातकुम्भं गाङ्क्रमं भर्म कर्नुरम् ॥ ९४ ॥
चामीकरं जातकपं महारजतकाश्वने ।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
अलंकारसुवर्ण यच्छुङ्गीकनकमित्यदः ।
दुर्वर्ण रजतं कप्यं सर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामय ताम्रकम् ।
शुल्बं म्लेच्छमुसं द्वचष्टवरिष्टोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी ।
अश्मसारोऽय मण्ड्रं सिंहाणमिप तन्मले ॥ ९८ ॥
सर्व च तैजसं लोहं विकारस्त्वयसः कुशी ।
स्रारः काचोऽय चपलो रसः स्त्रश्च पारदे ॥ ९९ ॥

नाम मोती और मूंगेके हैं ॥ ९३ ॥ स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेमन् (नान्त), हाटक, तपनीय, शातकुंम, गांगय, भर्मन् (नान्त), कर्बुर् ॥ ९४ ॥ चामीकर, जातक्रप, महारजत, कांचन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद् ये उन्नीस नाम सोनेके हैं। तहां अष्टापद्शब्द (पु॰ न॰) है ॥ ९५ ॥ जृंगीकनक यह एक (पु॰ न॰) नाम सोनेके गहनेका है। दुर्वर्ण, रजत, रूप्य, खर्जूर, श्वेत ये पांच (न॰) नाम चांदीके हैं॥ ९६ ॥ शिति, आरक्ट ये दो नाम पित्तलके हैं। तहां शितिशब्द (स्नि॰) आरक्ट शब्द (पु॰न॰) है। ताम्रक, शुल्ब, म्लेच्छमुख, द्वयष्ट, वरिष्ट, उद्धम्बर ये छः (न॰) नाम तांचेके हैं॥ ९७ ॥ लोह, शख्रक, तीक्ष्ण, पिंड, काला-यस, अयस, अश्मसार ये सात नाम लोहेके हैं। लोहशब्द (पु॰न॰) अश्मसार (पु॰) शेष (न॰) हैं। मंदूर (पु॰न॰), सिहाण (न॰) ये दो नाम लोहके मेलके हैं॥ ९८ ॥ लोह यह एक (न॰) नाम सोने चांदी आदिका है। कुशी यह एक (स्त्री॰) नाम लोहेके विकारका है। शार, काच ये दो (पु॰) नाम कांचके हैं। चपल (पु॰), रस (पु॰), स्त (पु॰ न॰), पारद (पु॰न॰) ये चार नाम पारेके हैं॥ ९९ ॥

गवलं माहिषं शृङ्कमञ्चकं गिरिजामले ।
स्रोतोअनं तु सीवीरं कापोताअनयामुने ॥ १०० ॥
तुत्थाअनं शिक्षित्रीवं वितुत्रकमयूरके ।
कर्परी दार्विकाकायोद्भवं तुत्यं रसाअनम् ॥ १०१ ॥
रसगर्भ तार्ह्यशैलं गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।
सीगन्धिकश्च चक्षुष्याकुलाल्यो तु कुलत्यका ॥ १०२ ॥
रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाअनम् ।
पिअरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥
गैरेयमर्थ्य गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।
बोलगन्धरसप्राणिपण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
दिण्डीरोन्धिकपः फेनः सिन्दूरं नागसंभवम् ।
नागसीसकयोगेष्टवप्राणि त्रपु पिञ्चटम् ॥ १०५ ॥

गवल यह एक (न॰) नाम मैंसेके सींगका है। अअक, गिरिजामल ये दो (न॰) नाम भोडलके हैं। स्रोतोंजन, सीवीर, कापोतांजन, यामुन ये चार (न॰) नाम मुर्मेके हैं॥ १००॥ तुत्थाञ्चन, शिवित्रीव, वितुत्रक, मयूरक, कर्परी (छी॰) ये पांच (न०) नाम नोले थायेके हैं। दारहल्दीके क्वाथमें समान भाग बकरीका दूध मिलाकर संस्कार करनेसे तुत्थाञ्चन, रसाञ्चन (दोनों न॰) आदिक होता है॥१०१॥ रसगर्भ, तार्क्यशैल, येभी दो (न०) नाम रसा-ञ्चनके हैं। गंधाश्मन (नान्त), गंधिक, सोंगंधिक ये तीन (पु॰) नाम गंधकके हैं। चक्षाच्या, कुलाली, कुलियका ये तीन (छी०) नाम नीले मुर्मेके हैं॥१०२॥रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पुष्पक, कुमुमांजन ये चार (न०) नाम जस्तके फूलके हैं। पिजर, पीतन, ताल, आल, हरिताल ये पांच (न०) नाम हरकालके हैं॥१०३॥ गैरेय, अर्थ्य, गिरिज, अश्मज, शिलाजतु ये पांच (न०) नाम हरकालके हैं॥१०३॥ गैरेय, अर्थ्य, गिरिज, अश्मज, शिलाजतु ये पांच (पु॰) नाम शिलाजीतके हैं। बोल, गंधरस, प्राण, पिंड, गोपरस ये पांच (पु॰) नाम समुद्रझागके हैं। सिन्दूर, नागसंभव ये दो (न०) नाम सिद्रके हैं। नाग, सीसक, योगेष्ट, वप्न ये चार (न०) नाम सीसके हैं। अपु०

रङ्गबङ्गे अय पिचुस्त्छोऽय कमछोत्तरम् ।
स्यात्कुपुम्भं विहाशिसं महारजनिमत्यपि ॥ १०६॥
मेषकम्बल ऊर्णायुः शशोर्ण शशलोमनि ।
मधु सीद्रं मासिकादि मधुन्छिष्टं तु सिक्यकम् ॥ १०७॥
मनःशिला मनोग्रुसा मनोहा नागजिहिका ।
नैपाली कुनटी गोला यवसारो यवामजः ॥ १०८॥
पाक्योऽय सर्जिकाक्षारः कापोतः सुस्ववर्चकः ।
सीवर्चलं स्याद्वकं त्वक्सीरी वंशरोचना ॥ १०९॥
शिग्रुजं स्वेतमिरचं मोरटं मूलमैक्षवम् ।
ग्रान्थकं पिप्पलीमूलं चिकाशिर इत्यपि ॥ ११०॥
गोलोमी भूतकेशो ना पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।
त्रिकटु त्र्यूषणं न्योषं त्रिफला तु फलित्रकम् ॥ ११९॥
इति वैद्यवर्गः ॥ ९॥

फ्टिट **॥ १०५ ॥ रंग, वंग ये चार (न०) नाम रांगके हैं ।** फ्लु, तूल, ये दो (प॰) नाम कपासके हैं । कमलोत्तर, कुसुंभ, विद्विशिख, महार-जन ये चार (न॰) नाम कसूमके हैं ॥ १०६ ॥ मेषकंबल, ऊर्णायु वे दो (पु॰) नाम कंबलके हैं । शशोर्ण, शशलोमन् (नान्त) ये दो(न॰) नाम शशाके रोमके हैं । मधु, क्षीद्र, माक्षिक ये तीन (न॰) नाम शहदके हैं । मध्चिष्ठष्ट, सिक्थक ये दो (न०) नाम मोमके हैं ॥ १०७ ॥ मनःशिला, मनोग्रप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका ये चार (स्त्री॰) नाम मनिश्लके हैं । नैपाली, कुनटी, गोला ये तीन (स्त्री॰) नाम नहपाली मनशिलके हैं । यवक्षार, यवाग्रज ॥ १०८ ॥ पाक्य ये तीन (पु॰) नाम जवास्वारके हैं। सर्जिकाक्षार, कापोत, सु**खव**र्षक ये तीन (पु॰) नाम[,] सज्जीखारके हैं । सौवर्षछ, रूचक ये दो (न॰) नाम खारके भेदके हैं। त्वकृक्षीरी, वंदारोचना ये दो (स्त्री॰) नाम वंसलोचनके हैं ॥ १०९ ॥ शियुज, श्वेनमरिच ये दो (न०) नाम सहींजनेके बीज अथवा खेतिमरचके हैं। मोरट यह एक (न०) नाम ईखकी जडका है । य्रन्थिक, पिप्पलीयूल, चटिकाशिरस (सान्त) वे तीन (न॰) नाम पीफ्लामुळके हैं ॥ ११० ॥ गोलोमी (स्त्री॰), मत-

अब शृद्धकीः १०।

श्रुद्राश्चावरवर्णाश्च वृष्णश्च जधन्यजाः । आ चण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्टकरणाद्यः ॥ १ ॥ श्रुद्राविश्चोस्तु करणोऽम्बद्यो वैश्याद्विजन्मनोः । श्रुद्राक्षत्रिययोश्यो मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥ माहिषोयोक्षत्रिययोः सत्ताऽयोशुद्रयोः सुतः । श्राह्मण्यां क्षत्रियात्स्युतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥ रयकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य संभवः । स्याञ्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृष्लेन यः ॥ ४ ॥

केश यह दो नाम जयमांसीके हैं। तहां भूतकेशशब्द (पु॰) है। पत्रांग, रक्तचन्दन ये दो (न॰) नाम पतंगके हैं । त्रिकटु, त्र्यूषण, व्योष येतीन (न॰) नाम त्रिकुटाके हैं। त्रिफला (स्त्री॰) फलत्रिक (न॰) ये दो नाम त्रिफलाके हैं ॥ १११ ॥ इति वेश्यवर्गः ॥ ९ ॥ अय ज्ञादनर्गः । ज्ञाद, अवरवर्ण, वृष्ठ, जघन्यज ये चार (प्र०) नाम शुद्रके हैं। चण्डालपर्यित अंबष्ठकरण आदि कहाते हैं ॥ १ ॥ और ये शब्द (पु॰) हैं। शूद्रकी स्त्रीमें वैश्यसे उत्पन्न हुआ पुत्र करण कहाता है। वह छिखनेसे आजीविकावाला होता है। वैश्यकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपजा पुत्र अंगष्ठ कहाता है। वह चिकित्सासे आजीविका करनेवाला होता है। ज़द्रकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपना पुत्र उग्न कहाता है। वह अख वृत्तिवाळा है । क्षत्रियकी स्त्रीमें वश्यसे उपना मागव कहाता है। वह राजा आदिकी स्तुति करनेवाला होता है ॥ २ ॥ वेश्यकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपजा माहिष कहाता है। वह ज्योतिष, शाकुन, स्वरशास्त्र इन्होंसे वृत्ति करनेवाला होता है । क्षत्रियकी स्त्रीमें ज्राइसे उपना क्षत्र कहाता है। वह सेवा करता है। ब्राह्मणकी स्त्रीमें क्षत्रियसे उपना सूत कहाता है। उसकी हाथी बांघना, घोडा फेरना, सारथीपना ये आजी-विका हैं। ब्राह्मणकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजा विदेहक कहाता है। उसकी चौसठ कळाकर्मकी शिक्षा करना आजीविकों है ॥३॥ शुद्रकी स्त्रीमें वैश्यसे उपजी पुत्रीमें वेश्यकी स्त्री और क्षत्रियसे उपने पुत्रसे उत्पन्न हुआ पुत्र स्वकार कहासा है । उसका कर्म रथ बनाना और ईधन बेचना आदि है । ब्राह्म-

र्कारः शिल्पी संहतेस्तेर्द्रयोः श्रेणिः सजातिभिः ।
कुल्कः स्यात्कुलश्रेष्ठी मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
कुम्मकारः कुल्लालः स्यात्प्रवायस्तु लेपकः ।
तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्त्रप्रवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥
रङ्गाजीवश्चित्रकरः शस्त्रमाजीऽसिधावकः ।
पाद्कुस्रमेकारः स्याद्र्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
नाहीधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।
स्याच्छांखिकः काम्बविकः शौल्यिकस्ताम्बुकृहकः ॥ ८ ॥
तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा स्थकारस्तु काष्ठतद् ।
ग्रामाधीनो ग्रामतसः कौटतसोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
धुरी मुण्डी दिवाकीर्तिनापितांतावसायिनः ।
निर्णेजकः स्याद्रजकः शौण्डको मण्डहारकः ॥ १० ॥

णकी स्त्रीमें शदसे उपना पुत्र चण्डाळ कहाता है। उसकी आजीविका मरे हुएके वस्त्र छेनेकी है। पीछेके शब्द (पु॰) हैं और क्षत्तशब्द ऋका-रान्त है ॥४॥ कारु, शिल्फ्न (इन्नन्त) ये दो (प्र॰) नाम चित्रकार आदिके हैं। खाती, ज़ुराहा, नाई, धोबी, चमार ये पांच कारुशिली हैं। श्रोणि, यह एक नाम सजातीय समूहका है और (पु॰ स्त्री॰) है। आगेके शब्द देवलतक (पु॰) हैं । कुलक, कुलश्रेष्ठिन (इन्नन्त) ये दो नाम शिल्पिकल-प्रधानके हैं। मालाकार, मालिक ये दो नाम मालीके हैं॥ ५॥ कुम्भकार, क्छाल ये दो नाम कुम्हारके हैं। पैलगंड, लेफ्क ये दो नाम लेफ्कारके हैं। तन्तुवाय, कुविंद ये दो नाम जुलाहेके हैं। तुत्रवाय, सौचिक ये दो नाम छी-भीके हैं ॥६॥ रंगाजीव, चित्रकर ये दो नाम छोड़गरके हैं। राख्यमार्ज, आस् धावक ये दो नाम शिक्छीगरके हैं। पादकृत, चर्मकार ये दो नाम चमारके हैं। व्योकार, छोहकारक ये दो नाम छहारके हैं ॥७॥ नाडींघम, स्वर्णकार, 🐫 कळाद, स्वमकारक ये चार नाम सुनारके हैं। शांखिक, कांबविक ये दो नाम शंखके चूढे आदि बनानेवालेके हैं। शौल्बिक, ताम्रकुट्टक ये दो नाम तांबके पात्र बनानेवाखेके हैं ॥ ८ ॥ तक्षन (नान्त), वर्द्धिक, त्वष्ट (ऋकारान्त), रथकार, काष्ठतक्ष् ये पांच नाम स्वातिके हैं। ग्रामतक्ष यह एक नाम गामके खातीका है। कौदतक्ष यह एक नाम अपने आधीन स्रातीका है ॥ ९ ॥ क्षरिन् (इन्नन्त), मंडिन् (इन्नन्त), दिवाकीर्ति, जाबाद्धः स्याद्जाजीवो देवाजीवस्तु देवद्धः ।
स्यान्माया शाम्बरी मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥ ११ ॥
शेद्धान्निस्तु शेन्न्या जायाजीवाः क्रशान्तिनः ।
भरता इत्यपि नटाश्चारणास्तु क्रशीन्नवाः ॥ १२ ॥
मादिङ्गिका मौराजिकाः पाणिवादास्तु पाणिषाः ।
वेणुष्माः स्युर्वेणविका वीणावादास्तु विणिकाः ॥ १३ ॥
जीवान्तकः शाक्कानिको द्वी वागुरिकजान्निको ।
वैतासिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् ॥ १४ ॥
भृतको भृतिभुक् कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।
वार्तावहो वैविषको भारवाहस्तु भारिकः ॥ १५ ॥
विवर्णः पामरा नीचः प्राक्कतश्च पृथाजनः ।
निहीनोऽपसदो जान्मः श्चन्नकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥

नापित, अंतावसायिन (इन्नन्त) ये पांच नाम नाईके हैं । निर्णेजक, रजक ये दो नाम धोनिक हैं । शौंदिक, मंडहारक ये दो नाम कलालके हैं ॥१०॥ जाबार, अजाजीव ये दो नाम बकरी पालनेवालेके हैं । देवाजीव, देवल ये दो नाम देक्ताकी सेवासे जीविका करनेवालेके हैं। यहांतक (प्र॰) हैं। माया, ज्ञांबरी ये दो (स्त्री॰) नाम इन्द्रजालके हैं। आगेके राज्द विश्वकद्भतक (पु॰) हैं। मायाकार, प्रतिहारक ये दो नाम मायावीके हैं ॥ ११ ॥ शैलालिन (इनन्त), शैलुष, जायाजीव, कुशाश्विन (इनन्त), भरत, नट ये छः नाम नटके हैं। चारण, कुज़ीलव ये दो नाम कल्यकोंके हैं ॥ १२ ॥ मार्दीगिक, मीरिजिक ये दो नाम मृद्द्ग बजानेवालेके हैं । पा-णिवाद, पाणिघ ये दो नाम हाथसे ताल बजानेवालेके हैं । वेणुध्म, वेण-विक ये दो नाम बांसुरी बजानेवालेके हैं। वीणावाद, विणिक ये दो नाम नीमा बजानेवालेके हैं॥ १३ ॥ जीवांतक, ज्ञाकृतिक ये दो नाम पारधीके ैहैं I वाग्रारिक, जालिक ये दो नाम जाल्स्से मृगको बांधनेवालेके हैं I वैतं-सिक, कौटिक, मांसिक ये तीन नाम मांस बेचनेवालेके हैं ॥ १४ ॥ भृतक, भृतिभुज् (जान्त), कर्मकर, वैतनिक ये चार नाम नौकरके हैं। वार्त्तावह, वैविधक ये दो नाम संदेसा छेजानेवारेके हैं। भारवाह, भारिक ये दो नाम बो**झबा**रुके हैं ॥ १५ ॥ विवर्ण, पामर, नीच, प्राकृत, पृथग्जन, निहीन, भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
नियोज्यिकिकरप्रैष्यमुजिष्यपिरचारकाः ॥ १७ ॥
पराचितपिरस्कन्दपरजातपरैधिताः ।
मन्दस्तुन्दपिरमुज आछस्यः शितकोऽछसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥
दक्षे तु चतुरपेशछपटवः सूत्यान उष्णश्च ।
चण्डाछप्रवमातङ्गदिवाकीर्तिजनंगमाः ॥ १९ ॥
निवादश्वपचावन्तेवासिचाण्डाछपुकसाः ।
भेदाः किरातशबरपुछिन्दा म्छेच्छजातयः ॥ २० ॥
व्याघो मृगवधाजीवो मृगयुर्छुव्धकोऽपि सः ।
कौछेयकः सारमेयः कुक्करो मृगदंशकः ॥ २१ ॥
शुनको भषकः श्वा स्यादछकस्तु स योगितः ।
श्वा विश्वकद्वर्मुगयाकुश्वछः सरमा शुनी ॥ २२ ॥
विद्वरः सूकरो ग्राम्यो वर्करस्तरुषः पशुः ।
आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया श्वियाम् ॥ २३ ॥

अपसद्, जाल्म, क्षुष्ठक, इतर ये दृश नाम नीचके हैं ॥ १६ ॥ मृत्य, दृासेर, दृासेय, दृास, गोप्यक, चेटक, नियोज्य, किंकर, प्रेष्य, मुजिष्य, परिचारक ये ग्यारह नाम दृासके हें ॥ १७ ॥ पराचित, परिस्कन्द, परजात, परे चित ये चार नाम दूसरोंसे वर्डित कियेके हें । मन्द, तुंद, परिमृज, आरूर, शीतक, अलस, अनुष्ण ये छः नाम आलस्यके हें ॥ १८ ॥ दक्ष, चतुर, पेशल, पहु, सूत्यान, उष्ण ये छः नाम चतुरके हें । चंडाल, प्रव, मातंग, दिवाकीर्ति, जनंगम ॥१९॥ निषाद, श्वपच, अन्तेवासिन् (इन्न्त), चंडाल, पुक्कस ये दृश नाम चंडालके हें)। किरात, शबर, पुलिन्द ये तीन भेद म्लेच्छ जातिके हें ॥ २० ॥ व्याघ, मृगवघाजीव, मृगयु, खुक्थक ये चार नाम व्याघके हें । कोलेयक, सारमेय, कुक्कर, मृगद् श्वक ॥ २१ ॥ शुनक, भवक, श्वन् (नांत) ये सात नाम कुत्तेके हें । अलके यह एक नाम उन्मत्त (पागल) कुत्तेका है । विश्वकद्व यह एक नाम उन्मत्त (पागल) कुत्तेका है । विश्वकद्व यह एक नाम कुत्तीका है । यहांतक (पु०) हैं । सरमा यह एक (स्त्रि०) नाम कुत्तीका है ॥ २२ ॥ विट्चर यह एक (पु०) नाम गामके श्वक

दिसणार्श्वेन्थयोगादिसणेमी कुरङ्गकः ।
चौरैकागारिकस्तेनद्रयुतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटचरमिन्छ्चाः ।
चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं छोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥
वीतंसस्त्पकरणं बन्धने मृगपिसणाम् ।
उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद्रागुरा मृगवन्धनी ॥ २६ ॥
शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिष्ठ वटी गुणः ।
उद्घाटनं घटीयन्त्रं सिन्छनोद्राहनं प्रहेः ॥ २० ॥
पुंसि वेमा वायदंडः सूत्राणि नारि तन्तवः ।
वाणिन्यूतिः स्त्रियो तुल्ये पुस्तं छेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥

रका है। वर्कर यह एक (प्र॰) नाम जवान पशु बकरे आदिका है। आच्छोदन (न॰), मृगव्य (न॰), आखेट (पु॰), मृगया ये चार नाम क्रिकारके हैं। तहां मृगयाशब्द (स्त्री॰) है ॥ २३ ॥ दक्षिणेर्मन् (नांत) यह एक (पु॰) नाम शिकारीके हाथसे दहने अंगमें घाववाछे मृगका है। चौर, ऐकागारिक, स्तेन, दस्यु, तस्कर, मोषक ॥ २४ ॥ प्रतिरोधिन (इन्नत्), परास्कंदिन (इन्नत), पाटचर, मनिम्छूच ये दश (प्र॰) नाम चोरके हैं। चीरिका (स्त्री॰), स्तैन्य (न॰), चीर्य्य (न॰), स्तेय (न॰) ये चार नाम चोरीके हैं। छोष्त्र यह एक (न॰) नाम चोरी किये धनका है ॥ २५ ॥ वीतंस यह एक (पु॰) नाम मृगपक्षियोंके बन्धनके लिये पाइ। और जाल आदिका है। उन्माथ (पु॰), कूटयंत्र (न॰) ये दो नाम मृग और पक्षियोंको बांधनेके लिये छल्से रखनेके यंत्र अर्थात फन्देके हैं। वागुरा, मृगबन्धनी ये दो (स्त्री॰) नाम मृग बांधनेकी रज्जु (जाल)-का है ॥ २६ ॥ शुरुव (न॰), वराटक (न॰), रज्ज़, वटी, गुण (पु॰) ये पांच नाम रज्जुके हैं तहां रज्जुज़ब्द (स्त्री॰) और वटी (त्रि॰) है । उद्घाटन, घटीयंत्र ये दो (न॰) नाम सहस्के हैं ॥२७॥ वेमन् (नांत), वायदण्ड (प्र॰) ये दो नाम कपडा वननेके दण्डके हैं । वेमन्शब्द (पु॰-न॰) है। सूत्र (न॰), तंत् ये दो नाम सतके हैं। तहां तंतुराब्द (पु॰) है। वाणि, ब्यूति ये दो नाम बुननेके हैं और (स्त्री॰) हैं। पुस्त यह एक (न॰) नाम प्रत्तिकाकर्म (छोपने आदि) का है ॥ २८ ॥ पाश्चालिका पुत्रिका स्याद्धस्तदन्तादिमिः कृता ।
जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥ २९ ॥
पिटकः पेटकः पेटा मंजूषाऽय विहङ्गिका ।
भारयष्टिस्तदालम्ब शिक्यं काचोऽय पादुका ॥ ३० ॥
पाद्रपानस्त्री सैवानुपदीना पदायता ।
नधी वधी वरत्रा स्यादश्वादेस्ताहनी कशा ॥ ३१ ॥
चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ।
नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ॥ ३२ ॥
वश्चनः पत्रपरशुरीषिका त्लिका समे ।
तैजसावर्तनी मूषा भस्ना चम्प्रसेविका ॥ ३३ ॥
आस्फोटनी वेधनिका कृपाणी कर्तरी समे ।
वृक्षादनी वृक्षभेदी टङ्कः पाषाणदारणः ॥ ३४ ॥

पांचालिका यह एक (स्त्री॰) नाम कपडा और दन्त आदिसे बनाई पुत्त-क्षिकाका है। जातुष यह एक नाम छाखके विकारका है। त्रापुष यह एक नाम रिंगेके विकारका है। ये दोनों शब्द (त्रि॰) हैं॥ २९॥ पिटक (पु॰), पेटक (पु॰), पेटा (स्त्री॰), मंजूषा (स्त्री॰) ये चार नाम सन्द्रकके हैं । विहंगिका, भारयष्टि ये दो (स्त्री॰) नाम छींकेकी लक-डीके हैं। शिक्य (न॰), काच (पु॰) ये दो नाम उस एकडीमें लटके हुए छींकेके हैं। पादुका ॥३०॥ पादू, उपानइ ये तीन नाम जूतीके हैं और (स्त्री॰) हैं । अनुपदीना यह एक (स्त्री॰) नाम पैरके समान विस्तार-वाछी जूतीका है। नधी, वघी, वरत्रा ये तीन (स्त्री॰) नाम चामरज्जूके हैं। कशा यह एक (स्त्री॰) नाम घोडे आदिके ताडनेकी रज्जू अर्थातः चानुकका है ॥ ३१ ॥ चांडालिका, कण्डोलवीणा, चंडालवलकी ये तीन (स्री०) नाम नीच जातिके बीणाके हैं। नाराची, एषणिका ये दो (स्त्री॰) नाम कांटे तराजुके हैं । शाण, निकष, कष ये तीन (पु॰) नाम कसोटीके हैं ॥३२॥ त्रश्चन, पत्रपर्शु ये दो (पु॰) नाम कानस (रेती) के हैं । ईषिका, तुलिका ये दो (स्त्री॰) नाम सलाई के भेदके हैं । मूषा यह एक (स्री॰) नाम सोना आदि गलानेके पात्राविशेषका है । भस्रा, चर्मप्रसेविका ये दो (स्त्री॰) नाम धौंकनीके हैं ॥ ३३ ॥ आरफोटनी, वेधानेका ये दो त्रकचोऽस्त्री करपत्रमारा चर्मप्रभेदिका ।
स्मीं स्थूणाऽयः प्रतिया शिल्पं कर्म कछादिकम् ॥ ३५ ॥
(प्रतिमानं प्रतिविम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।
प्रतिकृतिरची पुंसि प्रतिनिधिक्षपमानोषमानं स्यात् ॥ ३६ ॥
वाच्यछिङ्गा समस्तुल्यः सद्दशः सद्दशः सद्दशः ।
साधारणः समानश्च स्युक्तरपदे त्वमी ॥ ३७ ॥
विभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोषमादयः ।
कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्भ वेतनम् ॥ ३८ ॥
भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ।
(सुरा इल्डिप्रिया हाला परिस्नुद्रकणात्मजा ॥ ३९ ॥

(स्त्री॰) नाम मणि आदि वेधनेके अस्त्रिविशेष अर्थात् वर्मेके हैं। कृपाणी, कर्त्तरी ये दो (स्त्री॰) नाम सोने आदिको काटनेकी कैंचीके हैं । वृक्षा-दनी (स्त्री॰), वृक्षभेदिन (इन्नन्त पु॰) ये दो नाम वृक्षको काटनेके छिये जास्त्रविज्ञेष (कुल्हाडी) के हैं । टंक, पाषाणदारण ये दो (प्र०) नाम टांकीके हैं ॥ ३४ ॥ ऋकच, करपत्र (न०) ये दो नाम करींत (आरे) के हैं । तहां अकचराब्द (पु॰ न॰) है । आरा, चर्मप्रमेदिका ये दो (स्त्री॰) नाम चाम काटनेके आरीके हैं, सूमीं, स्यूणा, अयः-प्रतिमा ये तीन (स्त्री॰) नाम छोहेकी प्रतिमाके हैं । शिल्प यह एक (न॰) नाम कला आदि कर्मका है ॥ ३५ ॥ (प्रातिमान (न॰), प्रति-बिंब (न॰) , प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृति, अर्चा, प्रति-निधि ये आठ नाम प्रतिमाके हैं)। तहां प्रतिनिधिशब्द (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं । उपमा (स्त्री॰), उपमान (न॰) ये दो नाम उपित करनेके हैं ॥ ३६ ॥ आगेके इाब्द वाच्याहिंगी हैं । सम, तुल्य, सदक्ष, सद्द्य, सद्द्य (ज्ञान्त) , साधारण, समान ये सात नाम समानके हैं और उत्तरपदमें स्थित हुए निम, संकाश आदि शब्द वाच्य-छिंगी अर्थात् त्रिछिंगी हैं॥ ३७ ॥ निम, संकादा, नीकादा, प्रतीकादा, उपमा आदि शब्द तुस्यके पर्याय हैं । कर्मण्या (स्त्री॰), विधा (स्त्री॰), मृत्या (स्त्री॰), मृति (स्त्री॰), भर्मन् (नान्त न॰), वेतन (न॰)॥ ३८ ॥ भरण्य (न॰), भरण (न॰), मूल्य गन्धोत्तमामसन्नेराकादम्बर्गः परिस्ता ।

मादिरा कश्यमधे चाप्यवदंशस्तु भक्षणम् ॥ ४० ॥

शुण्डापानं मदस्यानं मधुवारा मधुकमाः ।

मध्यासवो माधवको मधु माध्यीकमद्दयोः ॥ ४१ ॥

मेरेयमासवः सीधुमेंदको जगलः समी ।
संधानं स्यादाभिषवः किण्वं पुंसि तु नम्रदृः ॥ ४२ ॥

कारोत्तरः सुरामण्ड आपानं पानगोष्ठिका ।

चषकोऽस्त्री पानपानं सरकोऽप्यनुतर्षणम् ॥ ४३ ॥

धूर्तोऽसदेवी कितवोऽसधूर्तो द्यतकृत्समाः ।

स्युर्लभकाः प्रतिभुवः सभिका द्यतकारकाः ॥ ४४ ॥

(न॰), निर्वेश (पु॰), पण (पु॰) ये ग्यारह नाम मजदूरीके ैंहैं । सरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्नुत, वरुणात्मना ॥ ३९ ॥ गंधोत्तमा, प्रसन्ना, इरा, कादंबरी, परिस्तुता, मदिरा, कश्य, मद्य ये तैरह नाम मदि-राके हैं। तहां कश्य और मदा (न०) शेष (स्त्री०) हैं। अवदंश यह एक (पु॰) नाम मदिरापानकी रुचि बढानेके छिये जो व्यञ्जन खाया जावे अर्त्थात् भुने हुए चने, दाल, मोठ आदिका है ॥ ४० ॥ झुंडापान, मदस्थान ये दो (न॰) नाम मदिसके घरके हैं। मधुवार, मधुक्रम ये दो (प्र॰) नाम मधुपानकी परिपारीके हैं । मध्वासव (प्र॰), माधवक (पु॰), मधु (न॰), माघ्वीक ये चार नाम महुआके पुष्पोंसे बनी हुई मिर्तिक हैं। तहां माध्वीकशब्द (पु॰ न॰) है ॥ ४१ ॥ मैरेय (न॰), आसव (पु॰), सीधु (पु॰ न॰) ये तीन नाम ईख और शाक आदिसे बनी मदिराके हैं। मेद्क, जगल ये दो (पु॰) नाम मदिराके काढे आ-दिके हैं। संघान (न॰), अभिषव (पु॰) ये दो नाम मदिराके संघा-नके हैं। किण्व (न॰), नग्नह ये दो नाम चांक्ल आदिसे बने मदिराके बीबको हैं। तहां नग्रहुशब्द (पु॰) है ॥ ४२ ॥ कारोत्तर यह एक (पु॰) नाम मदिराके मंडका है । आपान (न॰), पानगोष्ठिका (स्त्री॰) ये दो नाम मदिरा पीनेकी सभाके हैं। चषक, पानपात्र (न॰) ये दो नाम मदिराके पात्रके हैं । तहां चष्कराब्द (पु॰ न॰) है । सरक (पु॰ न॰), अनुतर्षण (न॰) ये दो नाम मदिराके पानके हैं ॥ ४३ ॥ धूर्त, अक्षदेविन् (इनन्त), कितव, अक्षधूर्त्त, ब्युतकृत् ये पांच (पु॰) नाम यूतोऽश्चियामस्रवती कैतवं पण इत्यपि ।
पणोऽसेषु ग्डहोसास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥ ४५ ॥
परिणायस्तु शारीणां समन्तात्रयनेऽश्चियाम् ।
अष्टापदं शारिफलं प्राणिद्यतं समाद्वयः ॥ ४६ ॥
उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ।
ताद्धम्योदन्यतो वृत्ताव्द्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ॥ ४७ ॥
इति श्रद्धवर्गः ॥ १० ॥

इत्यमरसिंहकृती नामिळिङ्गानुशासने । द्वितीयः काण्डा भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १॥ इत्यमरसिंहकृती नामिळिङ्गानुशासने द्वितीयं काण्डं समाप्तम् ॥ २॥

खुवार्शके हैं। छप्रक, प्रतिभू ये दो (पु॰) नाम जामिनके हैं। सिभक, बूतकारक ये दो (पु॰) नाम जुवा खिलानेवाले अर्थात फडबाजके हें। अश्वात अक्षवती (खी॰), कतव (न॰), पण (पु॰) ये चार नाम जुवेके हैं। तहां बूतकाब्द (पु॰ न॰) है। पण, गलह ये दो (पु॰) नाम बाजीके हें। अश्व, देवन, पाशक ये तीन (पु॰) नाम पाशाक हैं॥ ४५॥ परिणाय यह एक (पु॰) नाम चौपडकी गोटोंको इधर चलनेका है। अष्टापद, शारिफल ये दो (पु॰ न॰) नाम सारीपट (चौपड) के हैं। समाह्वय यह एक (पु॰) नाम मेंदा और मुर्गा आविको लडानेसे हारजीतका है॥ ४६॥ यहां ज्ञादवर्गमें कुम्भकार मालाकार आदि शब्द बहुन जगह पुद्धिगमेंही कहे हैं आर विशेष्यार्लगसे खीरिंग नपुंसकिंगमेंभी जान लेने चाहिये॥ ४५॥ इति ज्ञादवर्गः॥१०॥

इस प्रकार अमरसिंहकृत नामिंछगानुशासनमें अंगोसिहित भूमि आदि दितीयकांड समाप्त हुआ ॥ १ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीग्रामनिवासि-गोडवंशावतस-विविधशा-स्वप्रमपंडित-श्रीबुध-शिवसहायपुत्र-रिवद्त्तशास्त्रिराजवैद्यविरिचतायामा-गरानगरवास्तव्यगुर्जरिवप्रकुछोद्भवज्योतिर्विद्यालमुकुन्द्मट्टसूरिसूनुरामेश्वरम-ट्रेन संशोधितायां अमरकोशार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां द्वितीयः कांडः

समाप्तः ॥ २ ॥

तृतीयं काण्डम्।

अथ विद्योष्यनिव्रवर्गः १।

विशेष्यनिष्ठः संकीर्णेनीनार्थैरव्यंयरिष ।
लिङ्गादिसंग्रहेर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥ १ ॥
स्त्रीदाराद्येयद्विशेष्यं याद्दशैः प्रस्तुतं पदैः ।
गुणद्रव्यित्रयाशन्दास्तया स्युस्तस्य भेदकाः ॥ २ ॥
सुकृती पुण्यवान् धन्यो महेच्छस्तु महाशयः ।
हृदयाद्यः सुहृदयो महोत्साहो महोद्यमः ॥ ३ ॥

अथ विशेष्यिनवर्गः । इस सामान्य तृतीयकांडमें विशेष्यिनव्र जिसमं विशेषणोंका वर्णन है, जैसे सुकृती आदि । संकीर्ण जिसमें विशेषण तो है परन्त उन विशेषणींके विशेष्य कई अर्थीमें हो सक्ते हैं, जैसे 'कर्मपरा-यण १ जो शब्द है वह शिल्पविद्या पढाना आदि अनेक काममें जो चतुर हो उसको कह सक्ते हैं। नानार्थ जिसमें एकही शब्दके अनेक अर्थ हैं, जैसे 'अब्द ? यह एक नाम बादलका और वर्षका है। अव्यय जिसमें अव्ययों के अर्थ हैं । छिगादिसंग्रह जिसमें प्रत्ययों से छिगका ज्ञान होता है। इन नामोंवाले वर्गीके द्वारा पूर्वोक्त स्वर्ग आदि वर्गीसे संबंध रखनेवाले ऐसे वर्ग कहे जॉवेंगे ॥ १ ॥ इस शास्त्रमें जैसे स्त्री आदि भेदकरके बहधा िंगका निर्णय है तैसेही यहांभी हो इस अमको दूर करनेके लिये व्यापक खक्षण कहते हैं। जैसे स्त्री, दार, आदि पदोंसे विशेष्य बनता है उसी प्रकार उसके गुण द्रव्य क्रियावाचक शब्द विशेषण बनते हैं। अर्थात् जैसा विशेष्य होगा उसी हिंग और वचनका उसका विशेषण होगा। आगे उदाहरणमें सुकृती आदि गुण द्रव्य क्रियावाचक विशेषण हैं इनको विशे-ष्यके लिंगके अनुसार किये तो इस प्रकार हुए । जैसे- ' सुकृतिनी स्त्री, सुकृतिनो दाराः, सुकृति कुलम् । जैसे-दंदिनी स्त्री, दंदिनो दाराः, वृंडि कुछम् । जैसे-पाचिका स्त्री, पाचका दाराः, पाचकं कुछम् । ऐसे हैं ॥ २ ॥ आगे आहतरूक्षण शब्दतक सब शब्द त्रिछिंगी हैं । सुकृतिन् (इल्न्त), पुण्यवत् (मत्वन्त), धन्य ये तीन नाम भाग्यवान्के हैं। महेच्छ, महांशय ये दो नाम खदारिकत्तवालेके हैं। इद्यालु, प्रवीणे निपुणाभिक्षविक्षानिष्णातिशिक्षताः ।
विक्षानिकः कृतमुलः कृती कुशल इत्यिष ॥ ४ ॥
पूज्यः प्रतीक्ष्यः संश्वायकः संश्वापक्षमानसः ।
दक्षिणीयो दक्षिणाईस्तत्र दक्षिण्य इत्यिष ॥ ५ ॥
स्युवेदान्यस्थूललक्ष्यदानशीण्डा बहुप्रदे ।
जैवातकः स्यादायुष्मानन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥ ६ ॥
परीक्षकः कारणिको वरदस्तु समर्थकः ।
हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना इष्टमानसः ॥ ७ ॥
दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
दक्षिणे सरलोदारी सुकलो दातुभोक्तिर ॥ ८ ॥
तत्परे प्रसितासक्ताविष्टायोद्यक्त उत्सुकः ।
प्रतीते प्रथितस्यात्वित्तविक्षात्विश्वताः ॥ ९ ॥

सुहृद्य ये दो नाम सुन्दर हृदयवालेके हैं । महोत्साह, महोद्यम ये दो नाम उद्यमीके हैं ॥ ३ ॥ प्रवीण, निपुण, अभिज्ञ, विज्ञ, निष्णात, शिक्षित, वैज्ञानिक, कृतमुख, कृतिन् (इनन्त), कुश्रू ये दश नाम चत्रके हैं ॥ ४ ॥ पूज्य, प्रतीक्ष्य ये दो नाम पूज्यके हैं । सांशायक, संश यापन्नमानस ये दो नाम संशयवाछेके हैं। दक्षिणीय, दक्षिणाई, दक्षिण्य ये तीन दक्षिणाके योग्यके हैं ॥ ५ ॥ वदान्य, स्यूछछक्ष्य, दानशीण्ड, बहु-प्रद् ये चार नाम अधिकदानीके हैं । जिवातृक, आयुष्मत् (मत्वन्त) ये दौ नाम बढ़ी आयुत्रालेके हैं। अन्तर्शाणि, शास्त्रविद् (दान्त) ये दो नाम शास्त्रको जाननेवाले (शास्त्री) के हैं ॥ ६ ॥ परीक्षक, कारणिक ये दो नाम परीक्षा करनेवालेके हैं। वरद, समर्द्धक ये दो नाम वर देनेवालेके हैं। हर्षमाण, विकुर्वाण, प्रमनस् (सान्त), इष्टमानस् ये चार नाम प्रसन्न मन-वालेके हैं ॥ ७ ॥ दुर्मनस्, विमनस्, अन्तर्मनस् ये तीन नाम व्याकुलचि-त्तवाले अर्थात् उदासके हैं और सान्त हैं। उत्क, उन्मनस् (सांत) ये दो नाम उत्कण्ठावालेके हैं। दक्षिण, सरल, उदार ये तीन नाम सरलिय-त्तवालके हैं। पुकल यह एक नाम दाता भोक्ताका है ॥ ८ ॥ तत्पर, प्रास्नि . त. आसक्त ये तीन नाम किसी विषयमें छगे हुएके हैं। इष्टार्थों सक्त, जत्सक ये दो नाम जयोगनाहेके हैं । प्रशत, प्राथत, ख्यात, क्यात, गुणै: प्रतीते तु कृतस्य सणाहितस्य सणी ।

इस्य आद्यो घनी स्वामी त्वीश्वरः पितरीशिता ॥ १० ॥
अधिभूनीयको नेता प्रभुः परिवृद्धोऽधिपः ।
अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्कुट्टम्बच्यापृतस्तु यः ॥ ११ ॥
स्यादम्यागारिकस्तस्मिन्नुवाधिश्च पुमानयम् ।
वराङ्गक्रपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः ॥ १२ ॥
निर्वार्थः कार्यकर्ता यः संपन्नः सत्वसंपदा ।
अवाचि मूकोऽथ मनोजवसः पित्रसंनिभः ॥ १३ ॥
सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः ।
स्याद्यासुः कारुणिकः कृपासुः स्रतः समाः ।
स्याद्यासुः कारुणिकः कृपासुः स्रतः समाः ।
स्वतन्त्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः ॥ १५ ॥

विज्ञात, विश्वत ये छः नाम विख्यातके हैं ॥ ९ ॥ कृत्रस्थण, भाहितलक्षण सुकृतीसे लेकर यहांतक सब शब्द विशेषण होनेसे त्रिकिंगी हैं। इनका छिंग विशेष्यके समान रहता है। ये दो नाम धन जोर्य आदिसे विख्यातके हैं। इभ्य, आढच, धनिन् (इन्नन्त) ये तीन (पु॰) नाम धनवालेके हैं। स्वामिन् (इन्नन्त) , ईश्वर, पति, ईशित् (ऋकारान्त) ॥ १० ॥ अधिभू, नायक, नेतृ (ऋकारान्त) , प्रभु, परिवृद्ध, अधिप ये द्श (पु॰) नाम खामीके हैं। अधिकर्द्धि, समृद्ध ये दो (त्रि॰) नाम सुसम्पन्न (भरे पूरे) के हैं ! कुटुम्बव्यापृत ॥ ११ ॥ अभ्यागारिक, उपाधि य तीन (पु॰) नाम कुटुंबपोषकके हैं। तहां खपाधिशब्द (पु॰) है । सिहसहनन यह एक (पु॰) नाम उत्तम अंग और करपवालका है॥ १२॥ निर्वार्थ यह एक (बि॰) नाम विकल अवस्थामॅभी चित्त छगाकर कार्य करनेवालेका है। अवाच्, मूक ये हो (রি॰) नाम गूगेके हैं । मनोजनस, पितृसन्निम ये दो (রি॰) नाम पिताके समानके हैं ॥ १३ ॥ कूकुद यह एक (पु॰) नाम सत्कार-पूर्वक अलंकृत करी कन्याको देनेवालेका है। आगे वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि॰) हैं । छक्ष्मीवत् (मत्वन्त), छक्ष्मण, श्रीष्ठ, श्रीमत् (मत्वन्त), वे चार नाम छक्ष्मीवालेके हैं। स्निग्ध, वस्सल ये दो नाम स्नेहिके हैं॥१४॥ वयाछ, कारुणिक, क्रुपाछ, सूरत ये चार नाम द्यावानके हैं। स्वतंत्र,

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नायवानिष ।
अधीनो निन्न आयत्तोऽस्वच्छन्दो गृह्यकोऽप्यसी ॥ १६ ॥
सलपः स्याद्धकरो दिषेसूत्रश्चिरिक्षयः ।
जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्कुण्ठो मन्दः कियास बः ॥ १७ ॥
कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः कियावान्कर्मसूद्यतः ।
स कार्मः कर्मशीलो यः कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥ १८ ॥
भरण्यभुक्षमंकरः कर्मकारस्तु तिक्रयः ।
अपस्रातो मृतस्रात आमिवाशी तु शौष्कुलः ॥ १९ ॥
वुभुक्षितः स्यात्सुधितो जिघत्सुरशनायितः ।
परात्रः परिण्डादो भक्षको घरमरोऽद्यरः ॥ २० ॥
आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवार्जिते ।
उभौ त्वारमंभारः कुक्षिभारः स्वोदरपूरके ॥ २१ ॥

अपावृत, स्वेरिन् (इन्नन्त) , स्वच्छन्द, निरवग्रह ये पांच नाम स्वतंत्र (अपराधीन) के हैं ॥ १५ ॥ परतंत्र, पराधीन, परवत् (मत्वन्त), नाय-वत् (मत्वन्त) ये चार नाम पराधीनके हैं । अधीन, निघ्न, आयत्त, अस्व-च्छन्द, गृह्यक ये पांच नाम आधीनके हैं ॥ १६ ॥ खलपू, बहुकर ये दो नाम बुहारनेवालके हैं । दीर्घसूत्र, चिरिक्रिय ये दो नाम बहुत देरमें काम करनेवालेके हैं। जालम, असमीक्ष्यकारिन (इन्नन्त) ये दो नाम विना विचारे करनेवालेके हैं। कुण्ठ यह एक नाम आल्सीका है ॥ १७ ॥ कर्म-क्षम, अलंकमींण ये दो नाम कर्ममें समर्थके हैं। क्रियावत् (मत्वन्त) यह एक नाम कर्मीमें लगे हुएका है। कार्म, कर्मशील ये दो नाम सर्वदा कर्ममें लगे हुएके हैं। कर्मशूर, कर्मठ ये दो नाम यत्नसे कार्यको पूरा कर-नेवाछेके हैं ॥ १८ ॥ भरण्यभुज् (जान्त), कर्मकर ये दो नाम तनखा लेके काम करनेवालेके हैं। कर्मकार यह एक नाम विना तनला काम करनेवारेका है। अफ्नात, मृतस्नात ये दो नाम मरेके छिये स्नान करने-वालेके हैं। आमिषाञ्चित् (इक्न्त), शोष्कृल ये दो नाम मच्छका मांस खानेवाळेके हैं ॥ १९ ॥ बुभुक्षित, क्षचित, जिचरप्र, अश्लायित ये पार नाम भूखेके हैं। पराञ्च, परपिंडाद ये दो नाम पराये अञ्चको खानेवाछेके हैं । मक्षक, वस्मर, अन्नर ये तीन नाम खानेवालेके हैं ॥ २० ॥ आयुन,

सर्वात्रीनस्तु सर्वात्रभोजी गृझस्तु गर्धनः ।
छन्धोऽभिछाषुकस्तृष्णक् समी छोलुपछोलुभी ॥ २२ ॥
स्रोन्मादस्तृन्मदिष्णुः स्यादिनितः समुद्धतः ।
मत्ते श्रीण्डोत्कटक्षीबाः कामुके किमताऽनुकः ॥ २३ ॥
कन्नः कामयिताऽभीकः कमनः कामनोऽभिकः ।
विधेयो विनयग्राही वचने स्थित आश्रवः ॥ २४ ॥
वश्यः प्रणेयो निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।
घृष्टे घृष्णिग्वयातश्र प्रगल्भः प्रतिभान्वते ॥ २५ ॥
स्याद्धृष्टे तु शालीनो विलक्षो विस्मयान्वते ।
अधीरे कातरस्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ॥ २६ ॥
आशंसुराशांसितारे गृहयालुप्रहीतिर ।
श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते पत्रयालुस्तु पातुके ॥ २७ ॥

औदिरिक ये दो नाम भूखसे बहुत पीडित हुएके हैं। आत्मंभरि, कुक्षिमरि ये दो नाम अपने पेटको भरनेवाछेके हैं ॥ २१ ॥ सर्वान्नीन, सर्वान्नभोजिन (इक़्त) ये दो नाम परमहंस आदिके हैं। गृध्न, गर्धन ये दो नाम आ कांक्षावालेके हैं। लुब्ध, अभिलाषुक, तृष्णज् (जान्त) ये तीन नाम लो-भिक हैं। छोछप, छोछुभ ये दो नाम अत्यंत छोभीके हैं ॥२२॥ सोनमाद, उन्मदिष्णु ये दो नाम पागलकं हैं। अविनीत, समुद्धत ये दो नाम अन्या-थीके हैं । मत्त, शौंड, उत्कट, क्षीब ये चार नाम मतवालेके हैं । कामुक, कमित्र (ऋकारान्त), अनुक ॥ २३ ॥ कम्र, कामियत् (ऋकारान्त), अभीक, कमन, कामन, अभिक ये नव नाम कामवालेके हैं। विधेय, विन यग्राहिन (इन्नन्त), वचनेस्थित, आश्रव ये चार नाम आज्ञाकारीके हैं. ॥ २४ ॥ वश्य, प्रणेय ये दो नाम वहा हुएके हैं । निभृत, विनीत, प्रश्रित ये तीन नाम नम्रके हैं। घृष्ट, घृष्णक्, वियात ये तीन नाम ढीठके हैं। प्रगल्भ, प्रतिभान्वित ये दो नाम प्रतिभासहित अर्थात् बुद्धिमान्के हैं॥२५॥ भग्नष्ट, शालीन ये दो नाम लजासहितके हैं। विलक्ष, विस्मयान्वित ये दो नाम पराये धर्मशील आदिको देख आश्चर्य करनेवालेके हैं। अधीर, कातर ये दो नाम कायरके हैं। त्रस्त, भीरु, भीरुक, भीलुक ये चार नाम डरपो-कके हैं ॥ २६ ॥ आशंद्ध, आशंसितृ (ऋकारान्त) ये दो नाम कहने

लजाशीलेऽपत्रिपिष्णुर्वन्दारुरिभवादके ।

शरारुषीतुको हिंसः स्पाद्विष्णुस्तु वर्धनः ॥ २८ ॥

तर्पातिष्णुस्तुत्पतिताऽलंकारिष्णुस्तु मण्डनः ।

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥ २९ ॥

निराकारिष्णुः क्षिग्नः स्यान्तान्द्रक्षिग्यस्तु मेदुरः ।

श्वाता तु विदुरो विन्दुर्विकासी तु विकस्वरः ॥ ३० ॥

विस्त्वरो विस्मरः प्रसारी च विसारिणि ।

सहिष्णुः सहनः सन्ता तितिश्चः क्षमिता क्षमी ॥ ३१ ॥

कोधनोऽमर्षणः कोपी चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।

जागकको जागरिता घूणितः प्रचलायितः ॥ ३२ ॥

बार्छ वा इच्छाशीलके हैं। गृहयालु, ग्रहीत् (ऋकारान्त) ये दो नाम छेनेवारेके हैं। श्रद्धाल यह एक नाम श्रद्धावारेका है। प्रायाल, पातक ये दो नाम गिरनेवालेके हैं॥२७॥ लजाशील, अपत्रिवणु ये दो नाम लोक-ळाजवारेके हैं। वन्दारु, अभिवादक ये दो नाम वन्दन करनेवारेके हैं। इारार, घातुक, हिस्र ये तीन नाम हिंसा करनेवालेके हैं । विधिष्ण, वर्धन ये दो नाम बढनेवारेके हैं ॥ २८ ॥ उत्पतिष्णु, उत्पतित्र (ऋकारान्त) ये दो नाम उन्नलनेवालके हैं। अलंक।रिष्णु, मंडन ये दो नाम गहना पहर-नेवालेके हैं । भूष्णु, भविष्णु, भवितृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम होनेवालेके हैं। वर्त्तिष्णु, वर्त्तन ये दो नाम वर्त्ताव करनेवालेके हैं॥ २९॥ निराक-रिष्णु, क्षिप्त ये दो नाम तिरस्कार करनेवालेके हैं। मेद्दर यह एक नाम सान्द्रित्राध (चिकने) का है । ज्ञात (ऋकारान्त), विदुर, विन्दु ये तीन नाम ज्ञाताके हैं। विकासिन (इन्नन्त), विकस्वर ये दो नाम खिल-नेवाळेके हैं ॥ ३० ॥ विसत्वर, विसमर, प्रसारिन् (इनन्त), विसारिन् (इन्नन्त) ये चार नाम फैलनेवालेके हैं । सहिष्णु, सहन, क्षन्त (ऋका-रान्त), तितिक्षु, क्षमितृ (ऋकारान्त), क्षमिन् (इन्नत) ये छः नाम क्षमा करनेवालेके हैं ॥ ३१ ॥ क्रोधन, अमर्थण, क्रोपिन (इन्नत) येतीन नाम क्रोधीके हैं। चंड, अत्यंतकोफ्न ये दो नाम अत्यंत क्रोधीके हैं। जागरूक, जागरित (ऋकारान्त) ये दो नाम जागनेवाछेके हैं। घूर्णित, अवलायित ये दो नाम नींद्से घूणित (धुरीटे छेनेवाले) के हैं ॥ ३२ ॥

स्वप्रक् शयालुर्निद्रालुर्निद्रालशियती समी ।
पराङ्मुखः पराचीनः स्याद्वाङप्यधोमुखः ॥ ३३ ।
देवानश्राति देवद्रथङ् विष्वद्रधङ् विष्वगश्राति ।
यः सहाश्राति सम्यङ् स स तिर्थङ् यस्तिरोश्राति ॥ ३४ ॥
वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समी ।
वाचोयुक्तिपटुर्वागमी वावदूकोऽतिवक्तिरि ॥ ३५ ॥
स्याजलपाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगद्देवाक् ।
दुर्मुखे मुखराबद्धमुखी शक्तः प्रियंवदे ॥ ३६ ॥
लोहरुः स्यादस्फुटवागगद्देवादी तु कद्भदः ।
समी कुवादकुचरी स्यादसीम्यस्वरोस्वरः ॥ ३७ ॥
रवणः शब्दना नान्दीवादी नान्दीकरः समी ।
जहोऽद्ध एडमूकस्तु वक्तं श्रोतुर्माशिक्षते ॥ ३८ ॥

स्वप्रज् (जान्त), श्रायालु, निद्रालु य तीन नाम नींद्वालेके हैं । निद्राण, शियत ये दो नाम शयन करते हुएके हैं। पराङ्मुख, पराचीन ये दो नाम विमुखके हैं। अवाच् (चान्त), अधोमुख ये दा नाम नीचे मुखवालेके हैं ॥ ३३ ॥ देवद्रचंस् (चान्त) यह एक नाम देवताओंको पूजनेवाछेका है। विष्यद्रश्चं (चान्त) यह एक नाम सब ओरको चलनेवालका है। सध्यंच् (चान्त) यह एक नाम साथ चलनेवालेका है । तिर्य्यंच् यह एक नाम तिरछे चलनेवालेका है ॥ ३४ ॥ वद्, वदावद, वक्तृ (ऋकारान्त) ये तीन नाम वक्ताके हैं। वार्गाञ्ज, वाक्पति ये दो नाम सुन्दर वाणी बोल नेवाधेके हैं। वाचोयुक्तिपटु, वाग्मिन् (इन्नन्त) य दो नाम न्यायसे बोछ-नेवालेके हैं। वावदूक, अतिवक्तृ (ऋकारान्त) ये दो नाम बहुत बोलने-बालेके हैं ॥ ३५ ॥ जल्पाक, वाचाल, वाचाट, बहुमह्मवाच् (चान्त) ये चार नाम अवाच्य बोलनेवालेके हैं । दुर्भुख, मुखर, अबद्धमुख ये तीन नाम अभियवादीके हैं। शक्क, प्रियंवद ये दो नाम प्रियवादीके हैं ॥३६॥ छोह्छ, अस्फुटवाच् (चान्त) ये दो नाम अस्पष्ट बोलनेवालेके हैं। गर्धवादित् (इत्रन्त), कहद ये दो नाम निन्दित बोलनेवालेके हैं । कुवाद, कुच्य ये दो नाम दोषकथनक्षील (दुराई करनेवाले) के हैं । असीम्यस्वर, अस्वर ये दो नाम काकके स्त्ररके समान हुरे बोलनेवालेके हैं ॥ ३७ ॥ रवण, शब्दन ये दो नाम शब्दकर्त्ताके हैं। नांदीवादिन (इवन्त), नान्दीकर बे तृष्णींशीलस्तु तृष्णीको नम्रोऽवासा दिगम्बरे ।
निष्कासितोऽवकृष्टः स्यादपष्यस्तस्तु विकृतः ॥ ३९ ॥
आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यादापितः साधितः समी ।
प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः ॥ ४० ॥
निकृतः स्यादिपकृतो विप्रलब्धस्तु विश्वतः ।
मनोहतः प्रतिहतः प्रतिनद्धो हतश्च सः ॥ ४१ ॥
अधिक्षितः प्रतिक्षितो बद्धे कीलितसंयतो ।
आपन्न आपत्प्राक्षः स्यात्कादिशीको भयद्भतः ॥ ४२ ॥
आक्षारितः क्षारितोऽभिश्वस्ते संकष्ठकोऽस्थिरे ।
व्यसनातीपरक्तौ द्वौ विहस्तव्याकुलौ समी ॥ ४३ ॥
विक्ववो विद्वलः स्यात्तु विवशोऽरिष्टदुष्ट्यीः ।
कश्यः कशाई संनद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥ ४४ ॥

दो नाम स्तुतिविशेष करनेवालेके हैं । जड, अज्ञ ये दो नाम अत्यंत मूढके हैं। एडमूक यह एक नाम गूंगे बहिरेका है ॥३८॥ तृष्णींशील, तृष्णीक ये दो नाम चुपके रहनेवालेके हैं । नग्न, अवासस् (सान्त), दिगंबर ये तीन नाम नंगेके हैं । निष्कासित, अवकृष्ट ये दो नाम निकासे हुएके हैं । अपध्वस्त, धिकृत ये दो नाम झिडके हुए वा धिकार करे गयेके हैं ॥३९॥ आत्तर्गर्व, आभभूत ये दो नाम भग्न हुए गर्ववालेके हैं। दापित, साधित, ये दो नाम धनादि देकर वरा किये गयेके हैं । प्रत्यादिष्ट, निरस्त, प्रत्या-ख्यात, निराकृत ये चार नाम त्यागे हुएके हैं ॥ ४० ॥ निकृत, विप्रकृत ये दो नाम निकाले हुए वा विवर्णीकृतके हैं । विप्रलब्ध, वंचित ये दो नाम ठगे हुएके हैं । मनोहत, प्रतिहत, प्रतिबद्ध, हत ये चार नाम टूटे मनवा-लेके हैं ॥ ४१ ॥ अधिक्षिप्त, प्रतिक्षित ये दो नाम आक्षेप किये मनुष्यके हैं । बद्ध, की छित, संयत ये तीन नाम रज़ आदिसे बंधे हुएके हैं । आप-न्न, आपरपाप्त ये दो नाम आपदमें पडे हुएके हैं। कांदिशीक, भयद्वत ये दो नाम भयसे भागे हुएके हैं ॥ ४२ ॥ आक्षारित, क्षारित, अभिज्ञस्त ये तीन नाम लोकापवादसे दूषित हुएके हैं । संकप्तक, अस्थिर ये दो नाम वश्वल प्रकृतिवालके हैं। व्यसनात, उपरक्त ये दो नाम व्यस्तिसे पाडित हुएके हैं। विहस्त, व्याकुल ये दो नाम व्याकुल हुएके हैं। ४३ ॥ विक्रव,

देख्ये त्विश्वगतो वध्यः शिषंच्छेद्य इमी समी ।
विष्यो विषेण यो वध्यो मुसल्यो मुसल्ये मुसल्ये ।। ४५ ॥
शिक्षिदानोऽकुष्णकर्मा चपलश्चिकुरः समी ।
दोषैकदृक् पुरोभागी निकृतस्त्वनृज्जः शटः ॥ ४६ ॥
कर्णजपः सूचकः स्यात्पिशुनो दुर्जनः खलः ।
नृशंसो घातुकः ऋरः पापो घूतस्तु वश्चकः ॥ ४७ ॥
अत्रे मूहयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।
कद्ये कुपणक्षुद्रिकंपचानमितंपचाः ॥ ४८ ॥
निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो द्रिद्रो दुर्गतोऽपि सः ।
वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ ॥ ४९ ॥

विह्वल ये दो नाम शोकआदिसे अंगभद्गको प्राप्त हुएके हैं । विवश, अरि-ष्टदुष्ट्यी ये दो नाम आसन्नमरणसे दुष्ट बुद्धि हो जानेवालेके हैं। कश्य, कशाई ये दो नाम वेतसे मारने योग्यके हैं । आतताथिन (इन्नन्त-) यह एक नाम वर्भ आदिसे सावधान हो मारनेकी इच्छावालेका है ॥४४॥ द्वेष्य, अक्षिगत ये दो नाम वैरके योग्यके हैं। वध्य, शिर्षच्छेद्य ये दो नाम शिर काटनेके योग्यके हैं । विष्य यह एक नाम विषसे मारने योग्यका है । मसल्य यह एक नाम मूसल्से मारने योग्यका है ॥ ४५ ॥ शिश्विदान, अकृष्णकर्भन् (नान्त) ये दो नाम पुण्यकर्भवार्छके हैं । चप्रछ, चिक्रर ये दो नाम विना विचारे शीघ्र वध आदि करनेवालेके हैं। दोषैकदर्श(शान्त), पुरोभागिन (इत्रन्त) ये दो नाम दोषमात्रको देखनेवालेके हैं । निकृत, अनृज, शठ ये तीन नाम टेढे अन्तः वरणवास्के अर्थात् कपटीके हैं ॥४६॥ कर्णेजप, सूचक ये दो नाम चुगलखोरके हैं। पिशुन, दुर्जन, खल ये तीन नाम आपसमें वैर करानेवाछेके हैं। नृशंस, घातुक, ऋर, पाप ये चार नाम द्रोही पुरुषके हैं। धूर्त, वश्वक ये दो नाम धूर्त्तके हैं॥ ४७॥ अज्ञ, मूढ, यथाजात, मूर्ख, वैधेय, बाल्डिश ये पांच नाम मूर्खके हैं। कद्ये, क्रपण, श्रद्र, किंपचान, मितंपच ये पांच नाम स्त्री पुत्र आदिको पीडित कर छोमसे घन संचय करनेवालेके हैं ॥ ४८ ॥ निःस्व, दुविंघ, द्विन, द्रिद्र, दुर्गत ये पांच नाम द्रिक्ते हैं। वनीयक, याचनक, मार्गण, याचक, अ- अहंकारवानहंयुः शुभंयुस्तु शुभान्वितः । दिव्योपपादुका देवा नृगवाद्या जरायुजाः ॥ ५०॥ स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः पश्चिसपीदयोऽण्डजाः । इति प्राणिवर्गः ।

डाद्धेदस्तरगुल्माद्या डद्भिदुद्भिज्जमृद्भिदम् ॥ ५१ ॥ धुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोमनम् । कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोश्चं मंखु मञ्जुलम् ॥ ५२ ॥ तदासेचनकं तृत्तेनीस्त्यन्तो यस्य दर्शनात् । अभीष्टेऽभीिप्ततं इद्यं दियतं वल्लमं प्रियम् ॥ ५३ ॥ निकृष्टप्रतिकृष्टावरेफयाप्यावमाधमाः । कुप्यकुत्सितावद्यसेटमहाणकाः समाः ॥ ५४ ॥ मलीमसं तु मलिनं कचरं मलदृषितम् । ५५ ॥ पृतं पवित्रं मेध्यं च विधं तु विमलायकम् ॥ ५५ ॥

थिन् (इन्नन्त) ये पांच नाम याचकके हैं ॥४९॥ अहंकारवत् (मत्नन्त), अहंयुस ये दो नाम अहंकारीके हैं। शुभंयुस्, शुभान्वित ये दो नाम शुभसे युत हु-एके हैं। दिव्योपपादुक यह एक नाम अपने मातापिताके विना अपने भाग्यके गुणोंसे आकाशमें उत्पन्न होनेवालोंका है । जरायुज यह एक नाम मनुष्य गो घोडे आदिका है॥५०॥ खेर्ज यह एक नाम कीडे डांस आदिका है। अंडज यह एक नाम पक्षि सर्प आदिका है॥ यहां प्राणिवर्ग समा-प्त हुआ 🛊 ॥ उद्भिद् यह एक (पु॰) नाम वृक्ष वेल आदिका है। खर्भिट, खर्भिज, खद्भित ये तीन नाम खद्भिद्के हैं ॥ ५१ ॥ आगेसे अतिशोभनतक सब शब्द (त्रि॰) हैं । सुन्द्र, रुचिर, चारु, सुषम, सायु, शोभन, कान्त, मनोरम, रुच्य, मनाज्ञ, मंजु, मंजुल ये बारह नाम सुन्दरके हैं ॥ ५२ ॥ आसेचनक यह एक नाम जिसको देखनेसे दृष्टि और मनकी तृप्तिका अन्त न हो और जो बहुत वार देखने पर्भी अधिक प्रीतिको उत्पन्न करे उस परम सुन्दरका है। अभीष्ट, अभीप्सत, हृद्य, द्यित, बहुभ, प्रिक ये छः नाम प्रियके हैं ॥ ५३ ॥ निकुष्ट,-प्रतिकृष्ट, अर्वन् (नान्त), रेक्, याप्य, अवम, अधम, कुपूय, कुत्सित, अवद्य, खेट, गर्ह्य, अणक ये तेरह नाम दृष्टके हैं ॥ ५४ ॥ मलीमस, मिलन, कञ्चर, मलदृषित ये चार नाम निर्णिकं शोधितं सृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।
असारं फल्यु शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥ ५६ ॥
क्षीवे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तामोत्तमाः ।
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवहींऽनवराध्यवत् ॥ ५७ ॥
पगध्यात्रप्राग्रद्धरप्राप्र्याप्र्याप्रीयमप्रियम् ।
श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कछः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने ॥ ५८ ॥
स्युरुत्तरपदे व्यात्रपुङ्गवर्षभकुक्षराः ।
सिंहशार्दूछनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ॥ ५९ ॥
अप्राप्र्यं दयहीने दे अप्रधानोपसर्जने ।
विशङ्कटं पृथु बृहद्दिशान्तं पृथुन्नं महत् ॥ ६० ॥
वहोरुविपुन्नं पीनपीन्नी तु स्यून्नपीवरे ।
स्तोकाल्पक्षुन्नकाः सूक्ष्मं स्न्रहणं दश्चं कृशं तन् ॥ ६१ ॥

मलवालेके हैं । पूत, पवित्र, मेध्य ये तीन नाम पवित्रके हैं । वीध यह एक नाम स्वभावते निर्मलका है ॥ ५५ ॥ निर्णिक्त, शोधित, मृष्ट, निःशोध्य, अनवस्कर ये पांच नाम निर्भलके हैं। असार, फह्यु ये दो नाम निर्बलके हैं । शन्य, विशक, तुच्छ, रिक्तक ये चार नाम रीतेके हैं ॥ ५६ ॥ प्रधा-न, प्रमुख, प्रवेक, अनुत्तम, उत्तम, मुख्य, वर्य, वरेण्य, प्रवर्ह, अनवराध्ये ॥५७॥ परार्ध्य, अग्र, प्राग्रहर, प्राग्रय, अग्रय, अग्रिय, आग्रीय ये सञ्चह नाम श्रधानके हैं । तहां प्रधानकाब्द (न०) है । श्रेयस (सान्त), श्रेष्ठ, पु-ष्करु, सत्तम, अतिशोभन ये पांच नाम अत्यन्त शोभनके हैं॥५८॥ व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्टूल, नाग आदि शब्द श्रेष्ठ अर्थको कह-नेवाछे (पु॰) हैं और उत्तरपदमें रहते हैं। जैसे-'पुरुषोयं व्याघ्र इव पुरु-षव्याघः । अर्थात् पुरुषश्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ अप्राज्य (त्रि॰), अप्रधान, उपसर्जन ये तीन नाम अप्रधानके हैं। तहां अप्रधान और उपसर्जन ये दो शब्द (न०) हैं। आगेके तनुशब्दतक (त्रि०) हैं। विशंकट, प्रथु, बृहत्, विशास, प्रथुस, महत् ॥ ६० ॥ वड्, उरु, विपुरु ये नव नाम बढेके हैं। पीन, पीवन (नान्त), स्थूल, पीवर ये चार नाम मोटेके हैं। स्तोक, अस्प, श्रृष्टक ये तीन नाम अल्पके हैं। सूक्ष्म, श्रृष्ट्ण, दश्र, क्रुज्ज,

स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि छवछेशकणाणवः ।

सत्यस्पेऽस्पिष्ठमस्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ॥ ६२ ॥

प्रमूतं प्रचुरं प्राज्यमद्श्रं षहुछं षहु ।

पुरुद्दः पुरु भूथिष्ठं रफारं भूयश्च भूरि च ॥ ६३ ॥

परःशताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात् ।

गणनीये तु गणेयं संख्याते गणितमय समं सर्वम् ॥ ६४ ॥

विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तिनिखिछाखिछानि निःशेषम् ।

समग्रं सकछं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके ॥ ६५ ॥

घनं निरन्तरं सान्द्रं पेछवं विरछं तनु ।

समीपे निकटासन्नसंनिकृष्टसनीडवत् ॥ ६६ ॥

सदेशाभ्याशसविधसमयीदसवेशवत् ।

उपकण्डान्तिकाभ्यणीभ्यशा अप्यभितोऽव्ययम् ॥ ६७ ॥

तनु ॥६१॥ मात्रा, त्रुटि, छव, छेश, कण, अणु ये ग्यारह नाम मूक्ष्मके हैं। तहां मात्रा और त्रुटि शब्द (स्त्री॰) और छव आदि शब्द (पु॰) शेष (त्रि॰) हैं। आगके वर्गान्ततक सब शब्द (त्रि॰) हैं। अल्पिष्ठ, अल्पीयस् (सान्त), कनीयस् (सान्त), अणीयस् (सान्त) ये चार नाम अत्यंत अल्पके हैं ॥६२॥ प्रभूत, प्रचुर, प्राज्य, अद्भ्र, बहुल, बहु, पुरुहू, पुरु, भूयिष्ठ, स्फार, भूयस् (सान्त), भूरि ये बारह नाम बहुतके हैं ॥६३॥ परःशत यह एक नाम १००० से अधिक संख्यावालोंका है। परःसहस्र यह एक नाम १००० से अधिक संख्यावालोंका है। परःसहस्र यह एक नाम १००० से अधिक संख्यावालोंका है। ऐसेही अन्यभी जानना। गणनीय, गणेय ये दो नाम गिनने योग्यके हैं। संख्यात, गणित ये दो नाम गिने हुएके हैं। इस ॥ दिश्व। वन्त्र, अशेष, कृत्स्त्र, समस्त, निस्तिल, अस्तिल, निःशेष, समग्र, सकल, पूर्ण, अखंद, अनूनक ये बारह नाम समग्रके हैं। ६६॥ वन, निरंतर, सान्द्र ये तीन नाम सघनके हैं। पेख्य, विरल, तनु ये तीन नाम विरल (अलग २) के हैं। समीप, निकट, आसन्न, सिन्नकृष्ट, सनीड ॥ ६६॥ सदेश, अभ्याश, सिवध, समर्थाद, सवेश, उपकंठ, अतिक, अभ्यर्ण, अभ्यश्न, अभितस् ये पंत्रह नाम सभीपके हैं। तहां अभितस् यह अव्यय है। ॥६५॥ सिवश, अभितस् ये पंत्रह नाम सभीपके हैं। तहां अभितस् यह अव्यय है। ॥६५॥

संसक्ते त्वव्यवहितमपदान्तरामित्यपि ।
नेदिष्ठमन्तिकतमं स्याद्रं वित्रकृष्टकम् ॥ ६८ ॥
दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरं दीर्घमायतम् ।
वर्तुं निस्तळं वृत्तं वन्धुरं तृत्रतानतम् ॥ ६९ ॥
छच्चत्रांग्ल्ञवतोदयो। च्छ्रतास्तुङ्ग्रेऽथ वामने ।
न्यङ्नीचलर्वहस्वाः स्युरवायेऽवनतानतम् ॥ ७० ॥
अराळं वृज्ञिनं जिह्ममूर्मिमस्तुञ्जितं नतम् ।
आविद्धं कुटिळं भुत्रं वेद्धितं वक्रमित्यपि ॥ ७१ ॥
ऋजावजिह्मप्रगुणौ व्यस्ते त्वत्रग्रुणाकुळौ ।
शाश्वतस्तु ध्ववो नित्यसदातनसनातनाः ॥ ७२ ॥
स्थास्तुः स्थिरतरः स्थेयानेकद्भपतया तु यः ।
काळव्यापी स कूटस्थः स्थावरो जङ्गमेतरः ॥ ७३ ॥

संसक्त, अन्यविहत, अपदांतर ये तीन नाम मिले हुएके हैं। निद्षु, अंतिकतम ये दो नाम अत्यंत निकटके हैं। दूर, विप्रकृष्टक ये दो नाम दूरके हैं। ६८ ॥ दवीयस् (सान्त), दिवष्ट, सुदूर ये तीन नाम अत्यंत दूरके हैं। दीर्घ, आयत ये दो नाम लंबेके हैं। वर्चल, निस्तल, वृक्त ये तीन नाम गोलके हैं। बंधुर यह एक नाम जो स्वभावसे ऊंचा हो और उपाधिके भेदसे कुछ नीचा हो जावे उसका है। ६९ ॥ उच्च, प्रांगु, उन्नत, उद्य, उन्ल्लित, तुंग ये छः नाम उन्नेके हैं। वामन, न्यच्, नीच, खर्व, इस्व ये पांच नाम वीनेके हैं। अवाग्र, अवनत, आनत ये तीन नाम नीचेको सख्वालेके हैं। ७० ॥ अराल, वृजिन, जिह्म, ऊर्मिमत, कुंचित, नत, आविद्ध, कुटिल, सुग्र, वेद्धित, वक्र ये ग्यारह नाम टेढेके हैं॥ ७१ ॥ ऋजु, अजिह्म, प्रगुण ये तीन नाम सीधेके हैं। व्यस्त, अप्रगुण, आकुल ये तीन नाम आकुलके हैं। शास्तत, ध्रुव, नित्य, सदातन, सनान्तन ये पांच नाम नित्यके हैं। ७२ ॥ स्थास्तु, स्थिरतर, स्थेयस् (सान्त) ये तीन नाम अत्यंत स्थिरके हैं। कृटस्थ यह एक नाम एक स्वभाव करके कालके व्यापक आकाश आविद्धा है। स्थावर, जंगमेतर ये दो नाम

चिरणु जङ्गमचरं त्रसमङ्गं चराचरस् ।

चक्षनं कम्पनं कम्भं चकं छोळं चळाचळम् ॥ ७८ ॥

चश्रकं तरळं चैव पारिष्ठवपारिष्ठवे ।

आतिरिक्तः समिषको दृढसंधिस्तु संहतः ॥ ७५ ॥

कर्कशं किठनं क्र्रं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।

जठरं मूर्तिमन्मूर्ते प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥ ७६ ॥

पुराणे प्रतनप्रत्तप्रतातनिरंतनाः ।

प्रत्यशेऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ॥ ७७ ॥

नूत्तश्च सुकुमारं तु कोमळं मृदुळं मृदु ।

अन्वगन्वसमनुगेऽनुपदं छीबमव्ययम् ॥ ७८ ॥

प्रत्यसं स्यादैन्द्रियकमप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकांग्रकायनाविषे ॥ ७९ ॥

अप्येकसर्ग एकाद्रयोऽप्येकायनग्तोऽपि सः ।

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथाखियाम् ॥ ८० ॥

अचरके हैं ॥ ७३ ॥ चरिष्णु, जंगम, चर, त्रस, अंग, चराचर ये छः नाम चरके हैं । चलन, कम्पन, कंप्र, चल, लोल, चलाचल ॥७४॥ चश्र्वल, तरल, पारिष्ठव, परिष्ठव ये सात नाम चलके हैं । अतिरिक्त, समधिक ये दो नाम अधिक के हैं । इडसंधि, संहत ये दो नाम इडसंधान अर्थात बढे मिलापिके हैं ॥ ७५ ॥ कर्कश, कठिन, ऋर, कठोर, निष्ठुर, इड, जठर, मूर्तिमत्, मूर्त्त ये नव नाम कठिनके हैं । प्रवृद्ध, प्रोढ, एधित ये तीन नाम प्रवृद्धके हैं ॥ ७६ ॥ पुराण, प्रतन, प्रतन, पुरातन, चिरंतन ये पांच नाम प्रवृद्धके हैं । प्रत्यम्र, अभिनव, नन्य, नवीन, नृतन, नव ॥ ७७ ॥ नृत ये सात नाम नवीनके हैं । सुकुमार, कोमल, मृदुल, मृदु ये चार नाम कोम- एके हैं । अन्वय् (चान्त), अन्वक्ष, अनुग, अनुपद ये चार नाम पीछके हैं । तहां अनुपद शब्द (न०) तथा अन्यय है ॥ ७८ ॥ प्रत्यक्ष, ऐन्द्रियक ये दो नाम इन्द्रियोंसे माह्य प्रत्यक्षके हैं । अप्रत्यक्ष, अतीन्द्रिय ये दो नाम अप्रत्यक्ष अर्थात् इन्द्रियोंसे अग्राह्य धर्म आदिके हैं । एकतान, अनन्यवृद्धि, एकाम, एकाम, एकामन ॥ ७९ ॥ एकसर्ग, एकाम्य, एकायनत्त ये सात नाम एकामके हैं । आदि, पूर्व, पौरस्त्य, प्रथम, आव्य ये पांच नाम आवके

अन्तो जयन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।

मोघं निरथेकं स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्यणम् ॥ ८१ ॥

साधारणं तु सामान्यमेकाकी त्वेक एककः ।

भिन्नार्थेका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतराविष ॥ ८२ ॥

उज्ञावचं नैकभेदमुज्ञण्डमविद्यम्वितम् ।

अकंतुदस्तु मर्मस्पृगवाधं तु निरगैन्छम् ॥ ८३ ॥

प्रसव्यं प्रतिकून्नं स्यादपसव्यमपष्टु च ।

वामं शरीरं सव्यं स्यादपसव्यमपष्टु च ।

संकटं ना तु संबाधः किन्नं तृ दक्षिणम् ॥ ८९ ॥

संकिणिं संकुन्नकिणिं मुण्डितं परिवापितम् ॥ ८५ ॥

ग्रंथितं संदितं हव्यं विसृतं विस्तृतं ततम् ।

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्पात्रप्रातिष्ठिते समे ॥ ८६ ॥

हैं। तहां आदिशब्द (पु॰) है ॥८०॥ अंत, जवन्य, चरम, अन्त्य, पा-· श्चात्य, पश्चिम ये छः नाम अन्तके हैं । तहां अन्तराब्द (पु॰ न॰) है । मोघ, निरर्थक ये दो नाम व्यर्थक हैं। स्पष्ट, स्फूट, प्रव्यक्त, उल्बण ये चार नाम स्पष्टके हैं ॥ ८१ ॥ साधारण, सामान्य ये दो नाम साधार-णके हैं । एकाकिन (इन्नन्त), एक, एकक ये तीन नाम अकेले अर्थात असहायकके हैं । भिन्न, अन्यतर, एक, त्व, अन्य, इतर ये छः नाम भि-क्रके वाचक हैं ॥ ८२ ॥ उच्चावच, नैकमेद ये दो नाम बहुत प्रकारके हैं । उच्चंड, अविलम्बित ये दो नाम जल्दीके हैं । असंतुद, मर्मस्पूज् (शान्त) ये दो नाम मर्भभेदीके हैं । अबाध, निर्गेष्ठ ये दो नाम निर्वाध (बेरोक) के हैं ॥ ८३ ॥ प्रसन्य, प्रतिकृत्न, अपसन्य, अपृष्ट ये चार नाम विपरीतके हैं॥ ४ ॥ सन्य यह एक नाम वाम इारीरका है। अपसन्य यह एक नाम दाहिने शरीरका है। संकट, संबाघ ये दो नाम अल्प अवकाशवाले मार्ग आदिके हैं। तहां संबाधशब्द (पु॰) है। कल्छि, गहन ये दो नाम दुःखसे अधिगम्यके हैं । संकीर्ण, संकुछ, आकीर्ण ये तीन नाम अत्यन्त मिले हुएके हैं। मुंडित, परिवापित य दो नाम मुण्डितके हैं॥८५॥ ग्रंथित, संदित, दृब्ध ये तीन नाम गुंफित अर्थात पुहे हुएके हैं। विसृत, विस्तृत, तत ये तीन नाम फैले हुएके हैं। अन्तर्गत, विस्मृत ये दो नाम

वेछितमेंसिताधृतपिकताकिम्पता धुते ।

नुत्तनुत्रास्तिनष्ठपृताविद्धिकतेरिताः समाः ॥ ८७ ॥

प्रिशिसं तु निष्ट्यं स्वितं स्वितायकेम् ।

प्रवृद्धमसृते न्यस्तिनसृष्टे गुणिताहते ॥ ८८ ॥

निदिग्घोपिचते यूद्युत्ते गुण्ठितकिवते ।

दुतावदीणें उद्गूणोंद्यते काचितिशिक्यते ॥ ८९ ॥

प्राणप्राते दिग्धिष्ठते समुदक्तोद्धते समे ।

वेष्ठितं स्याद्द्वस्यतं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥ ९० ॥

रुग्णं भुग्नेऽथ निशितक्ष्मुतशातानि तेजिते ।

स्यादिनाशोन्भुसं पकं हीणहीती तु छज्जिते ॥ ९१ ॥

वृत्ते तु वृतव्यावृत्ती संयोजित उपाहितः ।

प्राप्यं गम्यं समासाद्यं स्यत्रं रीणं स्नृतं स्नृतम् ॥ ९२ ॥

विस्मृत अर्थात् भूछे हुएके हैं । प्राप्त, प्रणिहित ये दो नाम छब्के हैं॥८६॥ वेद्धित,प्रेंखित,आधूत,चिलत, आकंपित, धुत ये छः नाम कुछ कंपित हुएके हैं । नुत्त, नुन्न, अस्त, निष्ठचूत, आविद्ध, क्षिप्त, ईरित ये सात नाम प्रेरितके हैं॥८७॥परिक्षिप्त, निवृत ये दो नाम कोट आदिसे सब ओर घिरे हुएके हैं। मूमित, मुमित ये दो नाम चुराये हुएके हैं। प्रवृद्ध, प्रसृत ये दो नाम फैले हुएके हैं। न्यस्त, निसृष्ट ये दो नाम फेंके हुएके हैं। गुणित, आहत ये दो नाम गुणा किये हुएके हैं ॥ ५८ ॥ निद्ग्धि, उपिक्त ये दो नाम समृद्ध हुएके हैं। गूढ, गुप्त ये दो नाम गुप्तके हैं। गुंठित, ह्यापित ये दो नाम धूळिसे लिप्त हुएके हैं। द्वत, अवदीर्ण ये दो नाम पिघले हुएके हैं। उद्र्ण, उद्यत ये दो नाम उठाये हुए राख्य आदिके हैं। काचित, शिक्यित ये दो नाम छींकेपर घरे हुएके हैं ॥ ८९ ॥ ब्राण, ब्रात ये दो नाम सूंचे हुएके हैं। दिग्ध, लिस ये दो नाम विलिसके हैं। समुद्क्त, जब्त ये दो नाम कुआ आदिसे निकाले हुए जल आदिके हैं। वेष्टित, वलियत, संवति, रुद्ध, आवृत ये पांच नाम धिरे हुएके हैं ॥ ९० ॥ रुग्ण, भुम्न ये वो नाम ट्रेट हुएके हैं। निश्चित, क्ष्युत, शात, तेजित ये चार नाम शाम आदिसे तीक्ष्ण किये शस्त्र आदिके हैं। पक्त यह एक नाम पके हुएका है। द्वीण, द्वीत, लिनत ये तीन नाम लिनत हुएके हैं ॥ ९१ ॥ इत्त, बूत, व्यावृत्त ये तीन नाम किये हुए वरणवास्त्रेके हैं। संयोजित, उपाह्निक

संगृदः स्यात्मंक छितो ज्वगीतः स्यातगईणः ।
विविधः स्याद्व द्विधो नानाक्ष्यः पृथिवधः ॥ ९३ ॥
अवरीणो धिकृतश्राप्यवध्यस्तो ज्वच्यितः ।
अनायासकृतं फाण्टं स्वनितं ध्वनितं समे ॥ ९४ ॥
बद्धे संदानितं मृतमुद्दितं संदितं सितम् ।
निष्पेके क्रियतं पाके सीराज्यहविषां शृतम् ॥ ९५ ॥
निर्वाणो मुनिवह्वचादौ निर्वातस्तु गते अनिछे ।
पकं परिणते गूनं हन्ने मीढं तु मूत्रिते ॥ ९६ ॥
पुष्टे तु पुषितं सोढे क्षान्तमुद्दान्तमुद्दते ।
दान्तस्तु दिमते क्षान्तः शमिते प्रार्थिते अदितः ॥ ९७ ॥

ये दो नाम मिलाये हुएके हैं। प्राप्य, गम्य, समासाद्य ये तीन नाम प्राप्त होनेके योग्यके हैं। स्यन्न, रीण, स्तुत, ख़ुत ये चार नाम प्रख़ुत अर्थात वहते हुएके हैं ॥ ९२ ॥ संगूढ, संकल्पित ये दो नाम जोडे हुए अंक आदिके हैं। अश्गीत, ख्यातगर्हण ये दो नाम निन्दितके हैं। विविध, बहुविघं, नानारूप, पृथम्बिघ ये चार नाम अनेक प्रकारके हैं ॥ ९३ ॥ अवरीण, धिक्कत ये दो नाम निद्तिमात्रके हैं । अवध्वस्त, अवचूर्णित ये दो नाम चूर्ण किये हुएके हैं। फांट यह एक नाम विना परिश्रम किये कायका है । स्वनित, ध्वनित ये दो नाम शाब्दतके हैं ॥ ९४ ॥ बद्ध, संदानित, मूत, उद्दित, संदित, सित ये छः नाम बंचे हुएके हैं। निष्पक्क, कथित ये दो नाम सकल रीतिसे पके हुए काथ आदिके हैं। जात यह एक नाम फे हुए दूध घृत आदिका है ॥ ९५ ॥ निर्वाण यह एक नाम मुनि और अग्निविषयमें मुक्त और बुझनेके अर्थमें है। जैसे-'निर्वाणो मुनि:, निर्मुक्त इत्यर्थः । निर्वाणो विद्धः । अर्थात् बुझी हुई अग्नि । निर्वात यह एक नाम वायुरहितका है। पक्ष, परिणत ये दो नाम पके हुएके हैं। गून, हन्न ये दो नाम विष्ठा त्यागवालेके हैं। मीट, मूत्रित ये दो नाम मूत्र कर खुकनेके हैं ॥ ९६ ॥ पुष्ट, पुषित ये दो नाम मोटके हैं। सोढ, क्षान्त ये दो नाम क्षमाको प्राप्त हुएके हैं । उद्घात, उद्गत ये दो नाम वमन करके गेरे हुए अन्न आदिके हैं। दांत, दिमत ये दो नाम इन्द्रिय जीतेक हैं। शांत, शमित थे दो नाम शान्त हुएके हैं। प्राधित, आर्दत इतस्तु इपिते छन्नरछादिते पूजितेश्वतः ।
पूर्णस्तु पूरिते छिष्टः छिसितेश्वसिते सितः ॥ ९८ ॥
पुष्टप्छुष्टोषिता दग्वे तष्टत्वष्टी तनूकृते ।
विधितच्छिद्रिती विद्धे विश्ववित्ती विचारिते ॥ ९९ ॥
निष्प्रमे विगतारोकी विछीने विद्युतद्धती ।
सिद्धे निर्वृत्तिनिष्पन्नी दारिते मिन्नभेदिती ॥ १०० ॥
ऊतं स्यूतमुतं चेति त्रितयं तन्तुसन्तते ।
स्याद्दितं नमस्यितं नमसितमपचायितार्चितापिचतम् ॥१०१॥
वरिवसिते वरिवस्यितमुपायितं चोपचरितं च ।
संतापितसंतती धूपितचूपायिती च दूनश्च ॥ १०२ ॥
इष्टे मत्तस्तृतः प्रकृतः प्रमुद्दितः प्रीतः ।
छित्रं छातं छूनं कृतं दातं दितं छितं वृक्षम् ॥ १०३ ॥

ये दो नाम याचित अर्थात् मांगे हुएके हैं ॥ ९७ ॥ ज्ञप्त, ज्ञप्त, ये दो नाम जाने हुएके हैं। छन्न, छादित ये दो नाम ढके हुएके हैं । पूजित, अंचित ये दो नाम पूजित कियेके हैं । पूर्ण, पूरित ये दो नाम पूर्णके हैं। क्रिष्ट, क्रिशित ये दो नाम क्रेशको प्राप्त हुएके हैं। अवसित, सित ये दो नाम समाप्तके हैं ॥ ९८ ॥ प्रष्ट, प्रष्ट, उषित, दग्ध ये चार नाम जले हुएके हैं। तष्ट, त्वष्ट, तनूकृत ये तीन नाम छीलकर अल्प चनाए हुएके हैं । वेधित, छिद्रित, विद्ध ये तीन नाम छेदेहुएके हैं । विन्न, वित्त, विचारित ये तीन नाम विचारे हुएके हैं ॥ ९९ ॥ निष्प्रम, विगत, अरोक ये तीन नाम दीप्तिरहितके हैं । विछीन, विद्वत, द्वत ये तीन नाम द्रवीमूत अर्थात् पिघले हुए घृतादिके हैं। सिद्ध, निर्वृत्त, निष्पन्न ये तीन नाम सिद्ध हुएके हैं । दारित, भिन्न, भेदित ये तीन नाम फाढे हुएके हैं ॥१००॥ उत, स्यूत, उत ये तीन नाम तंतुओंके प्रबन्ध अर्थात बीने हुएके हैं । अहित, नमस्यित, नमसित, अपचायित, अधिनत, अपित ये छः नाम अधितके हैं ॥ १०१ ॥ वरिवसित, वरिवस्थित, उपासित, उपचरित ये चार नाम शुश्रुषितके हैं । संतापित, संतप्त, धूपित, धूपायित, दून ये पांच नाम संतापितके हैं ॥ १०२ ॥ इष्ट, मस्त, तृप्त, प्रहन्न, प्रमुद्ति, भीत ये छः नाम प्रमुद्तिके हैं। छिन्न, छात, रून, कृत्त, दात, दित, छित, वृक्ण ये आठ नाम खंडित (कटे) के हैं ॥ १०३ ॥

स्नस्तं ध्वस्तं अष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गिछतम् ।
छन्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च ॥ १०४॥
अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं सृगितम् ।
आर्द्रं सार्द्रं क्रिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत्तं च ॥ १०५॥
त्रातं त्राणं रिक्षतमितं गोपायितं च ग्रुतं च ।
अवगणितमयमतावज्ञातेवमानितं च परिभूते ॥ १०६॥
त्यक्तं हीनं विघुतं समुज्ज्ञितं धूतमुत्रपृष्टे ।
उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं छपितम् ॥१०७॥
बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवितावगते ।
उद्यक्तिसुरिकृतमङ्गिकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥ १०८॥
संगीणविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम् ।
ईिछतशस्तपणायितपनायितपणुतपणितपनितानि ॥ १०९॥
आपि गीणविणिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि ।
भाक्षेतचितिछीडमत्यवितिगिछितस्वादितप्तातम् ॥ ११०॥

स्नस्त, ध्रष्ट, स्वन्न, पन्न, च्युत, गहित ये सात नाम च्युत अर्थात् चुए हुएके हैं। छन्ध, प्राप्त, विन्न, भावित, आसादित, भूत ये छः नाम प्राप्त हुएके हैं। १०४॥ अन्वेषित, गवेषित, अन्विष्ट, मार्गित, मृगित ये पांच नाम ढूंढे हुएके हैं। आई, साई, क्षिन्न, तिमित, स्तिमत, समुन्न, उत्त ये सात नाम गीछे हुएके हैं॥ १०५॥ न्नात, न्नाण, रिक्ति, अवित, गोपायित, ग्रुप्त ये छः नाम रिक्षितके हैं। अवगणित, अवमत, अवज्ञात, अवमानित, परिभूत ये पांच नाम अवमानितके हैं॥ १०६॥ त्यक्त, हीन, विधुत, समुज्ज्ञित, धूत, उत्सृष्ट ये छः नाम त्यागे हुएके हैं। उक्त, भाषित, अदित, जिल्पत, आख्यात, अभिहित, छित, ये छः नाम कहे हुएके हैं॥ १०७॥ बुद्ध, बुधित, मनित, विदित, प्रतिपन्न, अवसित, अवगत ये छः नाम अवगत (जाने हुए) के हैं। उर्राक्तत, उररीकृत, अंगीकृत, आश्रुत, प्रतिज्ञात॥ १०८॥ संगीर्ण, विदित, संश्वत, समाहित, उपश्चत, अपश्चत, प्रतिज्ञात॥ १०८॥ संगीर्ण, विदित, संश्वत, समाहित, उपश्चत, अपगित, प्रतिज्ञात ॥ १०८॥ संगीर्ण, विदित, संश्वत, समाहित, उपश्चत, अपगति, प्रतात्व, प्रतात्व, प्रतात्व, प्राप्त, प्राप्त, प्रता, प्राप्त, प्राप्त, प्रता, प्राप्त, प्राप्त, प्राप्त, प्रता, प्राप्त, प्राप्त,

अभ्यवहतान्नजम्बमस्तम्छस्ताशितं भुक्ते । क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठमेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठवंहिष्ठाः ॥ १११ ॥ क्षिप्रक्षुद्रामीप्सितपृथुपीवरबहुळमकवोर्थाः । साधिष्ठद्राधिष्ठस्केष्ठगरिष्ठद्वसिष्ठवृन्दिष्ठाः ॥ ११२ ॥ बाढव्यायतबहुगुठवामनवृन्दारकातिशये ।

इति विशेष्यनिव्रवर्गः ॥ १ ॥

अथ संकीर्णवर्गः २।

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुत्रयेत् । कर्मे किया तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥ १ ॥ साकल्यासङ्गवचने पारायणपरायणे । यहच्छा स्वैरिता हेतुज्ञून्या त्वास्या विलक्षणम् ॥ २ ॥

स्तृत ये बारह नाम स्तृति कियेके हैं । मक्षित, चींवत, छीढ, प्रत्यवस्ति, गिल्ति, खादित, प्सात ॥ ११० ॥ अभ्यवहृत, अन्न, जग्घ, प्रस्त, ग्ल्स्त, अशित, भक्त ये चोदह नाम खाये हुएके हैं । क्षेपिष्ठ, क्षोदिष्ठ, प्रेष्ठ, व-रिष्ठ, स्थविष्ठ, बंहिष्ठ ॥१११॥ ये शब्द ऋमसे अत्यन्त क्षिप्र, अत्यन्त क्षद्र, अत्यन्त अभीष्मित, अत्यन्त पृथु, अत्यन्त पीवर इन अर्थीके वाचक हैं। अर्थात् क्षेपिष्ठ यह एक नाम अत्यन्त क्षिप्रका है। ऐसे अन्यभी जानने I साधिष्ठ, द्राधिष्ठ, स्फेष्ठ, गरिष्ठ, द्वसिष्ठ, वृन्दिष्ठ ॥ ११२ ॥ ये शब्द ऋमसे बाढ, व्यायत, बहु, गुरु, वामन, वृन्दारक इन्होंके अतिशयमें वर्त्तते हैं। जैसे-अतिरायेन बाढः साधिष्ठः इत्यादि । इति विरोष्यनिष्ठवर्गः ॥१॥ अथ संकीणवर्गः । प्रविकथित दोनों कोडोंमें स्वर्ग आदि नाम अपने २ सजातीय वर्गमें कहे गये हैं और तीसरे कांडमेंभी विशेष्यनिव्वर्गमें सुकृतिन आदि ज्ञब्द विशेष्यनिघ्नके अनुसार कहे गये। अब पूर्वीक्त दोनीं मिछ न जांय इस आपितके भयसे जो पहले नहीं कहे हैं उन्होंके संग्रहके लिये संकीर्णवर्गका आरंभ है। इस वर्गमें वक्ष्यमाण किंगसंग्रहको उक्तरीतिसे प्रकृतिका अर्थ और प्रत्ययका अर्थ और कहीं २ रूपभेद करके छिंगका विचार करना । कर्मन् (नांत न०), ऋया (ह्या०) ये दो नाम क्रियाके हैं । अपरस्पर यह एक (त्रि॰) नाम ऋियाके निरन्तर होनेका है ॥ १ ॥ पारायण यह एक (न॰) नाम साकल्य (सम्पूर्ण) वचनका है । परा-

श्रमयस्तु शमः शान्तिदान्तिस्तु दमयो दमः । अवदानं कमे वृत्तं काम्यदानं प्रवारणम् ॥ ३ ॥ वशक्रया संवननं मूछकमे तु कामेणम् । विधूननं विधुवनं तर्पणं प्रीणनावनम् ॥ ४ ॥ पर्यातिः स्यात्परित्राणं इस्त्रधारणमित्यपि । सेवनं सीवनं स्यूतिर्विद्रः स्फुटनं भिदा ॥ ५ ॥ आक्रोशनमभीषङ्गः संवेदो वेदना न ना । संमूर्छनमभिन्यातियोच्ना भिक्षाऽर्यनाऽदेना ॥ ६ ॥ वर्षनं छेदनेऽय द्वे आनन्दनसभाजने । आप्रच्छन्नमथान्नायः संप्रदायः सये सिया ॥ ७ ॥

यण यह एक (त्रि॰) नाम आसंग वचनका है। यहच्छा, स्विरिता ये दो (स्त्री॰) नाम स्वतन्त्रताके हैं । विरुक्षण यह एक (स्त्री॰) नाम कारणरहित स्थितिका है ॥ २ ॥ शमथ (पु॰), शम (पु॰), शांति (स्त्री॰) ये तीन नाम चित्तकी शांतिके हैं। दांति (स्त्री॰), दमथ (पु॰), दम (पु॰) ये तीन नाम इन्द्रियोंके रोकनेके हैं। अवदान यह एक (न॰) नाम पहिले हो गये चरित्रका है। प्रवारण यह एक (न॰) नाम काम्य अर्थात् तुलापुरुष आदि दानका है ॥ ३ ॥ वद्गक्रिया (स्त्री॰), संवनन (न॰) ये दो नाम मणि मंत्र आदिकरके वशीकरणके हैं। कार्भण यह एक (न॰) नाम ओषधियोंके मूळोंसे **उद्या**टन आदि कर्मका है । विधूनन, विधुवन ये दो (न॰) नाम कंपनके हैं। तर्पण, प्रीणन, अवन ये तीन (न०) नाम तृप्तिके हैं ॥ ४॥ पर्याप्ति (स्त्री॰), परित्राण (न॰), हस्तधारण (न॰) ये तीन नाम मारनेके छिये उद्युक्त हुएके निवारणके हैं। सेवन (न०), सीवन (न०), स्यति (स्त्री॰) ये तिन नाम सुईके कर्म अर्थात सींवनेके हैं। विदर (प॰), स्फुटन (न॰), भिदा (स्त्री॰) ये तीन नाम फूटनेके हैं ॥ ५ ॥ आक्रो-इान (न॰), अभीषंग (पु॰) ये दो नाम गा**छी देनेके हैं। संवेद** (पु॰), वेदना ये दो नाम अनुभक्ते हैं। तहां वेदनाशब्द (स्त्री॰ न॰) है। संगुच्छन (न॰), अभिन्याप्ति (स्त्री॰) ये दो नाम सब ओरसे न्याप्ति-के हैं। याच्या, भिक्षा, अर्थना, अर्दना ये चार (स्त्री॰) नाम मांगनेके हैं ॥ ६ ॥ वर्धन, छेदन ये दो (न०) नाम काटनेके

गहे गहो दशः कान्ती रहणकाने रणः कने ।

व्यघो देधे पचा पाके इसे इती परो दृती ॥ ८ ॥

ओषः प्लोचे नयो नावे ज्यानिनीं अमो अमी ।

रफातिर्वृद्धी मया रूपाती स्पृष्टिः पृक्षी स्नदः स्रवे ॥ ९ ॥

एघा समृद्धी स्फुरने स्फुरना गमिती गमा ।

प्रसृतिः प्रस्वे अयोते प्रधारः क्रुमयः क्रुमे ॥ १० ॥

उत्कर्षोऽतिशये संधिः स्रेने विषय माअये ।

क्षिपायां क्षेपणं गीजिंगिरी ग्रुरणमुद्धमे ॥ ११ ॥

हैं । आनंदन, सभाजन, आप्रच्छन्न ये तीन (न॰) नाम स्वागत आदि कुक्क पूछनेसे उत्पन्न हुए आनन्दके हैं । आम्नाय, संप्रदाय ये दो (पु॰) नाम गुरुकी परंपरासे प्राप्त हुए उपदेशके हैं। क्षय (पु॰), क्षिया (स्त्री॰) ये दो नाम क्षयके हैं ॥ ७ ॥ ब्रह, ब्राह ये दो (पु॰) नाम ब्रहणके हैं। वज्ञ (प्र॰), कांति (स्त्री॰) ये दो नाम इच्छाके हैं। रक्ष्ण (प्र॰), त्राण (न॰) ये दो नाम रक्षाके हैं। रण, क्रण ये दो (पु॰) नाम शब्द करनेके हैं । व्यघ, वेध ये दो (पु॰) नाम वेधनेके हैं। पचा (स्त्री॰), पाक (पु॰) ये दो नाम पाकके हैं। हव (पु॰), हात (स्त्री॰) ये दो नाम बुलानेके हैं । वर (पु॰), वृति (स्त्री॰) ये दो नाम वरदानके हैं ॥ ८ ॥ ओष, प्रोष ये दो (प्र॰) नाम दाहके हैं। नय, नाय ये दो (पु॰) नाम नीतिके हैं। ज्यानि, जीर्णि ये दो (स्त्री॰) नाम जीर्णपनेके हैं । अम (प्र०), अमि (स्त्री०) ये दो नाम आंतिके हैं । स्फाति, बृद्धि ये दो (स्त्रीः) नाम बृद्धिके हैं। प्रथा, ख्याति ये दो (स्त्री॰) नाम ख्यातिके हैं । स्पृष्टि, पृक्ति ये दो (स्त्री॰) नाम स्पर्शके हैं। स्नव, स्नव ये दो (प्र॰) नाम प्रस्नवण (झरने) के हैं॥ ९ ॥ एथा, समृद्धि ये दो (स्त्री॰) नाम वृद्धिके हैं । स्फुरण (न॰), स्फुरणा (स्त्री॰) ये दो नाम फरकनेके हैं। प्रमिति, प्रमा ये दो (स्त्री॰) नाम यथार्थ ज्ञानके हैं। प्रसूति (खी॰), प्रसव (पु॰) थे दो नाम गर्भमोचनके हैं। श्र्योत, प्राघार ये दो (पु॰) नाम वृत आदिके टफानेमें हैं। इसय, इस ये दो (प्र॰) नाम ग्लानिके हैं ॥ १० ॥ जत्कर्ष, अतिहाय ये दो (प्र॰) नाम उत्कर्ष (बढाई) के हैं । संधि (खी॰), श्चेष (प्र॰) ये दो नाम छत्राय उन्नये आयः अपने जयने जयः ।
निगादो निगदे मादो मद इद्वेम उद्दूजमे ॥ १२ ॥
विमर्दनं परिमछोऽभ्युपपित्ततुम्रहः ।
निग्रहस्तद्विरुद्धः स्थाद्विभयोगस्विभन्नहः ॥ १६ ॥
मुष्टियन्यस्तु संमाहो हिभ्ये हमरिष्छयो ।
बन्धनं प्रसितिश्वारः स्थादेः स्मष्टोपतसरि ॥ १४ ॥
निकारो विम्रकारः स्थादाकारस्तिक्क हङ्कितम् ।
परिणामो विकारो द्वे समे विकृतिविक्रिये ॥ १५ ॥
अपहारस्त्वपत्रयः समाहारः समुख्यः ।
प्रत्याहार उपादानं विहारस्तु परिक्रमः ॥ १६ ॥

मिलापके हैं। विषय, आश्रय ये दो (प्र॰) नाम आश्रयके हैं। क्षिण (स्त्री॰), खेप्रण (न॰) ये दो नाम प्रेरणा (आज्ञा) के हैं। गीणि, गिरि ये दो (स्त्री॰) नाम निगलनेके हैं । गुरुष (न॰), उद्यम (पु॰) ये दो नाम भार आदि उठानेके उद्यमके हैं ॥ ११ ॥ उन्नाय, उन्नय ये दो (पु॰) नाम उठानेके हैं । श्राय (पु॰), श्रयण (न॰) ये दो नाम सेवाके हैं। जयन (न॰), जय (पु॰) ये दो नाम जयके हैं। निगाद, निगद् ये दो (पु॰) नाम कथनके हैं। माद, मद् ये दो (पु॰) नाम मद्के हैं । उद्देग, उद्भ्रम ये दो (पु॰) नाम उद्देगके हैं ॥ १२ ॥ विम-र्दन (न॰), परिमछ (पु॰) ये दो नाम केसर आदिसे किये मर्दनके हैं। अभ्युपपत्ति (स्त्री॰), अनुग्रह (पु॰) ये दो नाम अनुग्रहके हैं। निम्रह यह एक (पु॰) नाम अनंगीकारका है । अभियोग, अभिग्रह ये दो (पु॰) नाम कल्हमें पुकारनेके हैं ॥ १३ ॥ मुष्टिबंघ, संग्राह ये दो (पु॰) नाम मुद्दीसे दृढ पकडनेके हैं । डिंब, डमर, विद्वय ये तीन (पु॰) नाम प्रख्यके हैं। बंधन (न॰), प्रासिति (स्त्री॰), चार (पु॰) ये तीन नाम बंधनके हैं। स्पर्श, स्पष्ट (ऋकारान्त), उपतप्तु (ऋकारान्त) ये तीन (पु॰)नाम उपताप नामक रोगविशेषके हैं ॥१४॥ निकार, विप्रकार ये दो (प्र॰) नाम अफारके हैं । आकार, इंग (दो पु॰), इंगित (न॰) वे तीन (पु॰) नाम अभिप्रायके अनुदूष चेष्टित कियेके हैं। पारेणाम, विकार ये दो (पु॰) नाम प्रकृति बद्छनेके हैं । प्रकृति, विकिया ये दो (स्त्री॰) नाम विरुद्ध करनेके हैं ॥ १५ ॥ अपहार, अपचय ये दो (पु॰) नाम व्यभिद्वारोऽभिग्रहणं निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
वनुद्वारोऽजुकारः स्याद्यंस्यापगमे व्ययः ॥ १७ ॥
प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यारप्रवहो गमनं बहिः ।
वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ ॥ १८ ॥
हिंसाकमाभिवारः स्याज्ञानयी जागरा द्वयोः ।
विन्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपन्नोऽन्तिकाश्रये ॥ १९ ॥
निर्वेश उपभोगः स्यात्परिसर्पः परिक्रिया ।
विद्युरं तु प्रविक्षेषेऽभिप्रायद्यन्द आश्रयः ॥ २० ॥
संक्षेपणं समसनं पर्यवस्या विरोधनम् ।
परिसर्या परीसारः स्यादास्या त्वासना स्यितिः ॥ २१ ॥

अपहरण (छीन छेने) के हैं ! समाहार, समुचय ये दो (पु॰) नाम इकट्रेके हैं। प्रत्याहार (पु॰), उपादान (न॰) ये दो नाम इन्द्रियोंके स्वीचनेके हैं। विहार, परिक्रम ये दो (पु॰) नाम सैर करनेके हैं ॥१६॥ अभिहार (पु॰), अभिग्रहण (न॰) ये दो नाम चोरी करनेके हैं। निर्हार (पु॰), अभ्यवकर्षण (न॰) ये दो नाम शिल्प आदि निकास-नेके हैं। अनुहार, अनुकार ये दो (पु॰) नाम नकल करनेके हैं। व्यय यह एक (पु॰) नाम खर्चका है ॥ १७ ॥ प्रवाह (पु॰), प्रवृत्ति (स्त्री॰) ये दो नाम पानी आदिकी निरंतर गतिके हैं। प्रवह यह एक (पु॰) नाम बाहिर वह निकसनेका है। वियाम, वियम, याम, यम, संयाम, संयम ये छः (पु॰) नाम संयमके हैं ॥ १८ ॥ हिसाकर्मन् (नान्त) यह एक (न॰) नाम मारणा आदि अभिचारका है। नागर्थ्या (स्त्री॰), नागरा ये दो नाम जागनेके हैं। तहां जाग-राइब्द (पु॰ स्त्री॰) है । विन्न, अंतराय, प्रत्यूह ये तीन (पु॰) नाम विज्ञके हैं। उपन्न यह एक (पु॰) नाम समीपभूत आश्रयका है ॥ १९ ॥ निर्वेदा, उपमोग ये दो (पु॰) नाम उपभोगके हैं। परिसर्प (पु॰), परिक्रिया (स्त्री॰) ये दो नाम परिजन आदिसे विरे हुएके हैं। विद्यर (न॰), प्रविश्वेष (प॰) ये दो नाम अत्यंत वियोगके हैं। अभि-प्राय, छन्द्र, आश्य ये तीन (पु॰) नाम अभिप्रायके हैं ॥ २०॥ संक्षे-पण, समसन ये दो (न॰) नाम संक्षेप के हैं। पर्यवस्था (स्त्री॰), विस्तारो विश्रहो व्यासः स च शब्दस्य विस्तरः ।
संवाइनं मर्दनं स्याद्धिनाशः स्याद्दर्शनम् ॥ २२ ॥
संस्तवः स्यात्परिचयः प्रसरस्तु विसर्पणम् ।
नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्संनिधिः संनिकर्षणम् ॥ २३ ॥
छवोऽभिछावो छवने निष्पावः पवने पवः ।
प्रस्तावः स्याद्वसरस्त्रसरः स्त्रवेष्टनम् ॥ २४ ॥
प्रजनः स्यादुपसरः प्रश्रयप्रणयौ समौ ।
धीशक्तिनिष्क्रमोऽस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥ २५ ॥
प्रस्तुक्तमः प्रयोगार्थः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
स्याद्भ्यादानमुद्धात आरम्भः संश्रमस्त्वरा ॥ २६ ॥

विरोधन (न॰) ये दो नाम विरोधके हैं । परिसर्या (स्त्री॰), परीसार (पु॰) ये दो नाम सब ओर फैले हुएके हैं। आस्या, आसना, स्थिति के तीन (स्त्री॰) नाम आसनके हैं ॥ २१ ॥ विस्तार, विग्रह, व्यास ये तीन (प्र॰) नाम विस्तारके हैं। विस्तर यह एक (प्र॰) नाम शब्दसंबंधी विस्तारका है। संवाहन, मर्दन ये दो (न०) नाम अंगमर्दनके हैं। विनाज (पु॰), अदर्शन (न॰) ये दो नाम छोपके हैं ॥ २२ ॥ संस्तव, परि-चय ये दो (प्र॰) नाम परिचयके हैं। प्रसर (प्र॰), विसर्पण (न॰) ये दो नाम घाव आदिके फैलनेके हैं। नीवाक, प्रयाम ये दो (प०) नाम घन घान्य आदिके संग्रहके हैं । सन्निधि (पु॰), सन्निकर्षण (न॰) ये दो नाम पढ़ोंसके हैं ॥ २३ ॥ छव: अभिलाव, लवन ये तीन (पु॰) नाम अन्न आदिको काटनेके हैं। निष्पाव (पु॰), पवन (न॰), पव (पु॰) ये तीन नाम अन्न आदिको पवित्र करनेके हैं। प्रस्ताव, अवसर ये दो (पु॰) नाम प्रसंगके हैं। त्रसर (पु॰), सूत्रवेष्टन (न॰) ये वो नाम जुलाहेके बनाये सूत्रवेष्टनाविशेषके हैं ॥ २४ ॥ प्रजन, उपसर ये दो (प्र॰) नाम गर्भग्रहणके हैं। प्रश्रय, प्रणय ये दो (प्र॰) नाम प्रेमके हैं। धीदाक्ति (स्त्री॰), निष्क्रम ये दो नाम बुद्धिकी सामर्थ्यके हैं। तहां निष्कमशब्द (पु॰ न॰) है । संक्रम, दुर्गसंचर ये दो (पु॰) नाम दुर्गमार्गके हैं ॥ २५ ॥ प्रत्युक्तम, प्रयोग ये दो (पु॰) नाम युद्धके अर्थ अत्यंत उद्योगके हैं। प्रक्रम, उपक्रम ये दो (पु॰) नाम प्रथमारं-

प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्मोऽननायस्तु निपातनम् । उप्णाविप्रदंशस्यनुभवः समाख्यमो विख्येपनम् ॥ २७ ॥ विश्रावस्तु प्रतिस्थानिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥ विश्रावस्तु प्रतिस्थानिरवेक्षा प्रतिजागरः ॥ २८ ॥ निपाठनिपठी पाठे तेमस्तेमी समुन्दने । आदीनवास्त्रवी क्षेत्रे मेळके सङ्गसंगमी ॥ २९ ॥ संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः । परिरम्भः परिष्वङ्गः संक्षेत्र उपगृहनम् ॥ ३० ॥ निवेजनं तु निष्यानं दर्शनाखोकनेक्षणम् । प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥ प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ॥ ३१ ॥

भके हैं। अभ्यादान (न॰), उद्घात (प॰), आरंभ (प॰) ये तीन नाम आरंभमात्रके हैं। संभ्रम (पु॰), त्वरा (स्त्री॰) ये दो नाम संवे-गके हैं ॥ २६ ॥ प्रतिबंध, प्रतिष्ठंभ ये दो (पु॰) नाम कार्थके रूकनेके ैहैं | अवनाय (पु॰), निपातन (न॰) ये दो नाम नीचेको गिरनेके हैं | **उप**लंभ, अनुभव ये दो (पु॰) नाम साक्षात्कारके हैं । समालंभ (पु॰), विलेपन (न॰) ये दो नाम केंसर आदिसे किये लेफो हैं ॥ २७ ॥ विप्र-छंभ, विप्रयोग ये दो (पु॰) नाम वियोगके हैं । विलंभ (पु॰), अति-सर्जन (न॰) ये दो नाम अत्यंत दानके हैं। विश्राव (पु॰), प्रति-ख्याति (स्त्री॰) ये दो नाम अत्यंत प्रसिद्धिके हैं। अवेक्षा (स्त्री॰), प्रतिजागर (प्र॰) ये दो नाम वस्तुओंको देखनेके हैं ॥ २८ ॥ निपाठ, निपठ, पाठ ये तीन (प्र॰) नाम पठनके हैं । तेम (प्र॰), स्तेम (प्र॰), समंदन (न॰) ये तीन नाम आर्द्रीभाव (गीछे करने) के हैं । आदी-नव, आस्त्रव, क्लेश ये तीन (प्र॰) नाम क्लेशके हैं । मेलक, संग, संगम ये तीन (पु॰) नाम संगम (मेळ) के हैं ॥ २९ ॥ संवीक्षण (न॰), विचयन (न॰), मार्गण (न॰), मृगणा (स्त्री॰), मृग (पु॰) ये पांच नाम तात्पर्यसे वस्तुओंके ढूंढनेके हैं। परिरंभ (पु॰), परिष्वंग (पु॰), संक्षेष (पु॰), उपगृहन (न॰) ये चार नाम आर्छिंगनके हैं: ॥ ३० ॥ निर्वर्णन, निध्यान, दर्शन, आलोकन, ईक्षण ये पांच (न०)

उपशायो विशायश्व सर्योवश्वयनार्वकी ।

अर्तनं च ऋतीया च हजीया च चुजार्यकाः ॥ ३२ ॥
स्याद्यत्यासो विषयोसो व्यत्ययद्य विषयेये ।

पर्यायोऽतिक्रमस्तिस्मन्नतिपात उपात्ययः ॥ ३३ ॥
प्रेषणं यत्समाह्य तत्र स्यात्मितशासनम् ।
स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूमिद्धिजन्मनाम् ॥ ३४ ॥
निधाय तक्ष्यते यत्र काष्ठे काष्ठं स उद्घनः ।
स्तम्बन्नस्तु स्तम्बचनः स्तम्बो येन निहन्यते ॥ ३५ ॥
आविधो विष्यते येन तत्र विष्यक्समे निषः ।
उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्योत्क्षेपणार्यकौ ॥ ३६ ॥
निगारोद्वारविक्षावोद्याहास्तु गरणादिषु ॥ ३७ ॥

नाम निरंतर देखनेके हैं। प्रत्याख्यान (न॰), निरसन (न॰), प्रत्या-देश (पु॰), निराकृति (स्त्री॰) ये चार नाम निराकरणके हैं ॥ ३१॥ उफ्शाय, विशाय ये दो (पु॰) नाम पहर आदिके अनुसार शयनके हैं । अर्त्तन (न॰), ऋतीया (स्त्री॰), इणीया (स्त्री॰), घृणा (स्त्री॰) ये चार नाम करुणाके हैं ॥ ३२ ॥ व्यत्यास, विपर्यास, व्यत्यय, विपर्य्यय ये चार (पु॰) नाम व्यतिक्रम (उल्लट पुल्ट) के हैं। फ्यांय, अतिक्रम, अतिपात, उपात्यय ये चार (पु॰) नाम अतिक्रमके हैं ॥ ३३ ॥ प्रति-शासन यह एक (न॰) नाम नौकर आदिको बुलाके प्रेरित करनेका है। संस्ताव यह एक (पु॰) नाम यज्ञोंमें वेदको गानेवाले ब्राह्मणीके स्तवन-वेदाका है ॥ ३४ ॥ उद्धन यह एक (पु॰) नाम जिस काठपर काठको स्थापित कर छीला जावे उस काठका है। स्तंबन्न, स्तंबचन ये दो (पु॰) नाम खुरफे हैं ॥ ३५॥ आविध यह एक (पु॰) नाम जिस करके वेधा जावे सस शस्त्रविशेष अर्थात् वर्मेका है। निघ यह एक (पु॰) नाम सब ओरसे समानकप दक्षका है। उत्कार, निकार ये दो (पु॰) नाम अन्नको उपर निकालनेके हैं ॥ ३६ ॥ निगार यह एक (पु॰) नाम निगलनेका है। उद्गार यह एक (पु॰) नाम वमनका है। विश्वाव यह एक (पु॰) नाम छींकका है। उद्ग्राह यह एक (पु॰) नाम ऊपरको करके प्रहण

आरत्यवरितिषेत्रतय छपरामेऽवास्त्रियां तु निष्ठेयः ।
निष्ठ्यतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनिष्ठत्यमित्रानि ॥ ३८ ॥
जवने जूतिः सातिस्त्ववसाने स्याद्य ज्वरे जूतिः ।
उदजस्तु पशुप्रेरणमकरितित्याद्यः आपे ॥ ३९ ॥
गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दिमित्यौपगवकादिकम् ।
आपूपिकं आष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम् ॥ ४० ॥
माणवानां तु माणव्यं सहायानां सहायता ।
हल्या हलानां ब्राह्मण्यवादव्ये तु द्विजन्मनाम् ॥ ४१ ॥
दे पशुकानां पृष्ठानां पार्श्व पृष्ठचमनुक्रमात् ।
स्लानां सिल्नी सल्याप्यथ मानुष्यकं नृणाम् ॥ ४२ ॥

करनेका है ॥ ३७ ॥ आरति, अवराति, विराति, उपराम ये चार नाम उप-रामके हैं । उपराम (पु॰) शेष (स्त्री॰) हैं । निष्ठेव, निष्ठचूति(स्त्री॰), निष्ठेव (न॰), निष्ठीवन (न॰) ये चार नाम थुकनेके हैं । तहां निष्ठे-बज्ञब्द (पु॰ न॰) है ॥ ३८ ॥ जवन (न॰), ज़ति (स्त्री॰) ये दो नाम वेगके हैं। साति (स्त्री॰), अवसान (न॰) ये दो नाम अंतके हैं। ज्वर (पु॰), ज़ूर्ति (स्त्री॰) ये दो नाम ज्वरके हैं। उदज यह एक (पु॰) नाम पशुओंके प्रेरणाका है। अकरणि (पु॰), अजननि, अवग्राह, नियाह आदि शब्द शाफ्के वाचक हैं ॥ ३९ ॥ अपत्यार्थ प्रत्ययांत औप-गव आदि शब्दोंसे "उसका समूह" इस अर्थमें औपगवक आदि जानने। जैसे–' उपगोरपत्यानि प्रमांसः औपगवास्तेषां सम्रहः औपगवऋम्' और यह एक (न॰) नाम उपगुकी संतानोंके समूहका है। आपूरिक यह एक (न॰) नाम जहरूप अपूप अर्थात् मालपुरे आदिके समृहका है । शाष्कुलिक यह एक (न॰) नाम शब्कुली अर्थात पूरियोंके समूहका है ॥ ४० ॥ माणव्य यह एक (न॰) नाम माणव अर्थात् बाल्कोंके समूहका है। सहायता यह एक (खी॰) नाम सहायोंके समूहका है। हल्या यह एक (स्री॰) नाम हर्कोंके समूहका है। ब्राह्मण्य, वाडव्य ये दो (न॰) नाम बाह्मणोंके समूहके हैं ॥ ४१ ॥ पार्श्व यह एक (न॰) नाम पर्यका अर्थात् अस्थिविद्रोपके समूहका है। पृष्ठच यह एक (न॰) नाम पृष्ठींके समृहका है। खिल्मी, खल्या ये दो (खी॰) नाम खलाँके समृहके हैं। श्रामता जनता घूम्या पाश्या नल्या पृथकपृथक् । अपि साहस्रकारीववामेषापँववादिकम् ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २॥

अथ नानार्थवर्गः १।

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेषात्र कीर्तिताः । भूरिप्रयोगा य येषु पर्यायेष्वापि तेषु ते ॥ १ ॥ आकाशे त्रिदिवे नाको छोकस्तु भुवने जने । पद्ये यशसि च श्लोकः शरे खड्डे च सायकः ॥ २ ॥

मानुष्यक यह एक (न॰) नाम मनुष्योंके समूहका है ॥ ४२ ॥ ग्रामता यह एक (स्त्री॰) नाम ग्रामोंके समूहका है । जनता यह एक (स्त्री॰) नाम जनोंके समूहका है। धूम्या यह एक (स्त्री॰) नाम धूमेंकि समू-हका है। पाश्या यह एक (स्त्री०) नाम पाशों के समूहका है। गल्या थह एक (स्त्री॰) नाम गरु अर्थात् बृहत्कार्शीके समूहका है। साहस्र यह एक (न॰) नाम सहस्रोंके समूहका है । कारीष यह एक (न॰) नाम करीष अर्थात सुके हुए गोबरके आरनींके समूहका है। वार्मण यह एक (न॰) नाम वर्म अर्थात् कवचौंके समूहका है । आथर्वण यह एक (न॰) नाम अथर्वणींके समूहका है। चार्मण यह एक नाम चर्मीके समूहका है ॥ ४३ ॥ इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥ अथ नानार्थवर्गः । जो यह कहो कि किसिल्ये अनेकार्यीका आरंम किया जाता है। क्योंकि वे शब्द तो पूर्वीक्त वर्गीमें कहे गये हैं और जो थहांभी कहे जावेंगे तो पहले क्यों कहे हैं ? तहां कहते हैं कि यहां वक्ष्य-माण कांत आदि वर्गीमें कितनेही अनेक अर्थवाले कहे हैं और प्रागुक्त पर्य्यायों में नहीं और बहुतसे प्रयोग कवियोंने काव्य आदिकों में अधिक-तासे कहे हैं वेही पूर्वीक्त पर्यायोंमें दीखते हैं। जैसे नाकशब्द पूर्व कहे क्गोंमें स्वर्ग और आकाशका वाची कहा है वह फिर यहां कहा जावेगा और जंबुक शब्द गीद्डके नामोंमें कहा है और वरुणके नामोंमें नहीं इस ख्यि यहां फिर कहा जावेगा ॥ १ ॥ नाक यह एक (पु॰) नाम आ-काश और स्वर्गका है। छोक यह एक (पु॰) नाम स्वर्ग आदिका और

जनका है। श्लोक यह एक(पु॰) नाम अनुष्टुप् आदि पद्य और यहाका

जम्बुकी क्रोष्ट्रक्की पृथुकी विपिटार्मकी ।

बाखोकी दर्जनधोती भरीपटहमानकी ॥ ३ ॥

उत्सक्की नागवर्षक्योरके: क्छक्कोऽक्कापवादयोः ।

तक्षको नागवर्षक्योरके: स्फटिकसूर्ययोः ॥ ३ ॥

मारुते वेधिस अप्ने पुंसि कः कं शिरोम्बुनोः ।

स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संसेपे मक्तसिक्यके ॥ ५ ॥

उल्ले करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः ।

कमण्डली च करकः सुगते च विनायकः ॥ ६ ॥

किष्कुईस्ते वितस्ती च शूककीटे च वृश्चिकः ।

मतिकूले मतीकलिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥ ७ ॥

स्याङ्गतिकं तु भूनिम्ये कत्तृणे भूस्त्रणेऽपि च ।

ज्योत्सिकायां च घोषे च कोशातक्यथ कट्फले ॥ ८ ॥

है। सायक यह एक (प्र॰) नाम शर और तळवारका है ॥ २ ॥ जंबुक यह एक (पु॰) नाम गीदड और वरुणका है । पृथुक यह एक (पु॰) नाम भुने चावल और बालकका है। आलोक यह एक (पु॰) नाम दीखना और प्रकाशका है। आनक यह एक (पु॰) नाम भेरी और मृदंगका है ॥ ३ ॥ अंक यह एक (पु॰) नाम गोद और चिह्नका है । कलंक यह एक (पु॰) नाम चिह्न और अपवादका है। तक्षक यह एक (पु॰) नाम नागका और बढईका है । अर्क यह एक (पु॰) नाम स्फटि-कमणि और सूर्यका है ॥४॥ क यह एक नाम वायु, ब्रह्मा, सूर्य इन्होंका है और (पु॰) है और यही (न॰) वाची नाम शिर और जलका है। पुराक यह एक (पु॰) नाम तुच्छ अन्न और अन्नके अवयवका है ॥५॥ पेचक यह एक नाम सङ्घ और हाथीकी पुच्छके मुख्के गुदाच्छादक मॉ-सका है। करक यह एक (पु॰ न॰) नाम कमंडल और चकारसे आ-काशसे वर्षे हुए ओड़ेका है। विनायक यह एक (पु॰) नाम गृद्धका और पकारसे गणेहाका है ॥ ६ ॥ किष्कु यह एक (पु॰) नाम हाय और विख्रतका है । वृश्चिक यह एक (पु॰) नाम जूककीडा और चका- रसे विच्लूका है । प्रतीक यह शब्द प्रतिकृष्टका वाची (त्रि॰) है और अवयवका वाची (प्र॰) है ॥ ७ ॥ भूतिक यह एक(न॰) नाम चिरा• सिते च सदिरे सोमबस्कः स्यादय सिक्क ।
तिलकल्के च पिण्याको बाहीकं रामठेअप च ॥ ९ ॥
महेन्द्रगुग्गुळ्ळ्कच्यालमाहिषु कीशिकः ।
रुक्तापश्रङ्कास्वादङ्कः स्वरूपेअप क्षुळ्ळकिष्ठु॥ १० ॥
नैवादकः शशाङ्केअप स्रोऽप्यश्वस्य वर्तकः ।
व्याग्नेअप पुण्डरीको ना यवान्यामपि दीपकः ॥ ११ ॥
शालावृकाः कपिक्रोष्ट्रश्वानः स्वर्णेअप गैरिकम् ।
पीडार्थेअप व्यलीकं स्यादलीकं त्विभियेऽनृते ॥ १२ ॥
शीलान्वयावनृके द्वे शत्के शकलवल्कले ।
साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥ १३ ॥

यता और गंध तृणविशेषका है। कोशातकी यह एक (खी॰) नाम कडवी तोरई भीर ऊंगाका है ॥ ८ ॥ सोमवल्क यह एक (पु॰) नाम कायफल और सुपेद खैरका है। पिण्याक यह एक (पु॰ न॰) नाम भण्यभेदका और स्नेहराहित तिलोंके चर्णका है। बाल्हीक यह एक (न०) नाम हींगका और चकारसे बाल्हीक देशका और घोडेका है ॥ ९ ॥ कोशिक यह एक (पु॰) नाम इन्द्र, गुगल, उङ्क, सर्पग्राही, विश्वामित्र और नीरेका है। आतंक यह एक (पु॰) नाम रोग, ताप, इांका, भय इन्होंका है। क्षष्टक यह एक नाम खल्पका और अपिशब्दसे नीच, दार-द्रका है और (त्रि॰) है ॥ १० ॥ जैवातक यह एक नाम चन्द्रमाका और अपिशब्दसे दीर्घाय और कुशाका है और (त्रि॰) है। वर्सक यह एक (पु॰) नाम अश्वके ख़ुरका और अपिशब्दसे बतक पक्षीका है। पुंडरीक यह एक नाम (पु॰) वाची भगेराका और अपिशब्दसे (न॰) बाची सुपेद कमलका है। दीफा यह एक (पु॰) नाम अनमानका और अपि-शब्दसे प्रकाशका है ॥ ११ ॥ शालावृक यह एक (प्र॰) नाम वानर, गीदड, कुत्ता इन्होंका है। गैरिक यह एक (न॰) नाम सोनेका और अफिशन्द्रसे गेक्का है। व्यक्षीक यह एक (न॰) नाम अप्रियका और पीढाका है। अलीक यह एक (न॰) नाम अप्रिय और झठका है ॥ १२ ॥ अनुक यह एक (न०) नाम स्वभावका और वंद्राका है। शक्त यह (न॰) नाम खंद और छाछका है। निष्क यह एक नाम दीनारेऽपि च निकासी कल्कीऽसी अवहेनसीः। दम्भेप्यय पिनाकी अबी शृंहर्शकर धन्वनी: ॥ १८ ॥ धनका त करेण्यां च मेथेजाले च काढिका । कारिका यातनाष्ट्रस्योः कर्णिका कर्णमुच्छे ॥ १५ ॥ करिहस्तेंऽगुलौ पद्मबीजकोश्यां त्रिषुत्तरे । वृंदारकी कपिमुख्यावेके मुख्यान्यकेवलाः ॥ १६॥ स्याद्याम्भिकः कौकुटिको यश्रादूरेरितेश्लणः। लालाटिकः प्रभोगोलदर्शी कायोक्षमश्च यः ॥ १७ ॥ " भूभृत्रितम्बवछंयचकेषु कटकोऽख्रियास् । सुच्यप्रे क्षद्रशत्री च रोमहर्षे च कण्टकः ॥ पाकी पक्तिशिश मध्यरहे नेतरि नायकः। पर्यक्रः स्यात्परिकरे स्याद्वयांबेजेपे च खुन्वकः ॥ पेटकस्त्रिषु बृन्दोपि गुरी देश्ये च देशिकः । खेटकी ग्रामफलकी घीवरेऽपि च जॉलिकः ॥ पुष्परेणी च किञ्जल्कः शुल्कोऽसी स्त्रीधनऽपि च । स्यात्कञ्जीचेऽप्युत्कलिका वार्षकं भाववृन्दयोः॥

सोनेक १०८ कर्षीका, सुवर्णका, छातीक गहनेका, परुभर सोनेका ॥१३॥ और व्यवहारके अनुसार द्रव्यभेदका है और (पु॰ न॰) है कहक यह एक (पु॰न॰) नाम विष्ठा और पाप और पासंदका है। पिनाक यह एक (पु॰न॰) नाम विष्ठा और पाप और पासंदका है। पिनाक यह एक (पु॰न॰) नाम त्रिश्चल और महादेक धनुक्का है॥ १४॥ धेनुका यह एक (खी॰) नाम हथनीका और क्कारसे नर्वान व्याई हुई गोका है। का-छिका यह एक (खी॰) नाम मेचके समृहका और क्कारसे कार्टिका-देविका है। कारिका यह एक (खी॰) नाम नरकयातनाका और विव-रणक्षेत्रका है। कारिका यह एक (खी॰) नाम कानकी तरकी, हा-धीकी संदेक अग्रमान, अंग्रली, कम्बद्धी बीजका गुच्छा इन्होंका है। १९॥ इससे आगे और खातशब्दीस पहुँछे शब्द (त्रि॰) हैं। वृन्दा-रक यह एक नाम देवताका, इपयालेका और बुख्यका है। एकशब्द मुख्य, अन्य और केवल इन्होंका वाषक है। इस्ती की हुटिक यह एक नाम माया-

करिण्यां चापि गणिका दारकी बाछभेदकी । अन्धेऽप्यनेडम्कः स्यादृक्की द्रपोरमदारणी ॥ " इति कान्ताः ।

भयुलस्तिट्करज्वालास्त्रिकाणी शिलीमुखी । शङ्को निधी ललाटासिप्र कम्बी न स्त्रीन्द्रियेऽपि खम् ॥ १८ ॥ धृणिज्वाले अपि शिले—

इति खान्ताः । शैछवृक्षी नगावगी ।

माशुगी वायुविशिखी शराकविहगाः खगाः ॥ १९ ॥ पतङ्गी पिसस्यों च पूगः क्रमुकवृन्दयोः । पश्चायोऽपि मृगा वेगः प्रवाहजवयोरिप ॥ २० ॥ परागः कौसुमे रेजी स्नानीयादी रजस्यिप । गजेऽपि नागमातङ्गावपाङ्गस्तिष्ठकेऽपि च ॥ २१ ॥

वीका और जो समीप प्रेरित किये नेत्रीवाटा हो उसका है। ठालाटिक यह एक नाम स्वामीके मस्तकको देखनेवालेका और कार्य करनेमें असम-र्थका है ॥ १७ ॥ यहां ककारांत शब्द समाप्त हुए ॥ मयूख यह एक (पु॰) नाम शोभा, किरण, ज्वाला इन्होंका है। शिलीमुख यह एक (पु॰) नाम भौरिका और बाणका है। शंख यह एक (पु॰) नाम खजाना, मस्तककी हुडी और शंख इन्होंका है। जब शंखवाची है तब (पु॰ न॰) है । ख़ यह एक (न॰) नाम इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, ज्ञन्यबिन्दु, भाकारा, संवेदन, देवलोक, कल्याण **इन्हों**का वाची है ॥ १८ ॥ शिखा यह एक (स्त्री॰) नाम किरणका और चोटीका है ॥ यहां खकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नग, अग ये दोनों (पु॰) नाम पर्व-तके और वृक्षके हैं। आञ्चग यह एक(पु॰) नाम वायुका और बाणका है। खग यह एक (पु॰) नाम बाण, पक्षी और सूर्यका है॥ १९॥ पतंग यह एक (पु॰) नाम पक्षी, सूर्य और शालियावलके भेदका है। पूग यह एक (पु॰) नाम सुपारीके वृक्ष और समूहका है। मृगु यह एक (पु॰) नाम पशुका, मृगशिरका और ढूंढनेका है। बेग यह एक (पु॰) नाम प्रवाहका और वेगका है और अपिशब्दसे विष्ठाको गुदास बाहिर निकासनेका है ॥ २० ॥ <u>पराग</u> यह एक (पु॰) नाम फूलसंबंधी रेणु

सर्गः स्वभावनिर्माक्षिनिश्चयाध्यायसृष्टिषु ।
योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥ २२ ॥
भोगः सुस्ते स्व्यादिशृतावहेश्च फणकाययोः ।
चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥ २३ ॥
कपौ च प्लवगः शापे त्वभिषङ्गः पराभवे ।
यानाद्यङ्गे युगः पुंसि युगं युग्मे कृतादिषु ॥ २४ ॥
स्वर्गेषुपशुवाग्वत्रदिस्नेत्रघृषिभ्जले ।
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौलिङ्गं चिद्वशेफसोः ॥ २५ ॥
शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च वराङ्गं मूर्घगुद्धयोः ।
भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्यत्नाकिकीर्तिषु ॥ २६ ॥
इति गान्ताः ।

सीर स्नानके योग्य गंधके चूर्णविशेषका है और अधिशब्दसे उपरागका है। नाग, मातंग ये दो (पु॰) नाम हस्तीके और अपिशब्दसे सर्प, नागकेसर, "पानवेळ आदिके हैं । अ<u>पांग</u> यह एक (पु॰) नाम तिलक्का, और अपि-शब्दसे नेत्रके अन्तभाग और अंगहीनका है ॥२१॥ सर्ना यह एक (पु॰) नाम स्वभाव, त्याग, निश्चय, अध्याय, मृष्टि इन्होंका है । <u>योग</u> यह एक (पु॰) नाम कवच, उपाय, ध्यान, संगति, युक्ति इन्होंका है ॥ २२ ॥ भोग यह एक (पु॰) नाम सुख, पण्यस्त्री हस्ती घोडे आदिका मूल्य, चालन वा भरना, सर्पके फण और शरीर इनका है । सारंगु यह एक नाम पर्मेया और हिरणका (पु॰) है और शबलका वाची (त्रि॰) है ॥२३॥ प्रवगु यह एक (पु॰) नाम धानर और चकारसे मेंडक और सारिध आदिका है। अभिषंग यह एक (पु॰) नाम शापका और तिरस्कारका है। युग् यह एक नाम रथ गांडे आदिके अवयवमें (पु॰) है जीर जोडा और सत्ययुग आदिका वाची (न॰) है ॥ २४ ॥ गो यह एक नाम -स्वर्ग, बाण, प्रु, वाणी, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, पानी इन्होंका है भीर प्रयोगके अनुसार (स्त्री॰) और (पु॰) है। छिंग यह एक (न॰) नाम चिद्रका और हिंगईन्द्रियका है ॥ २५ ॥ जूंग यह एक (न॰) नाम प्रधानपना, शिखर और चकारसे पशुके सींगका है। वरांग यह एक (न०) नाम शिरका और योनिका है। <u>भग</u>्यहं

परिषः परिघातेऽखेऽध्योधो वृन्देऽम्मसां रंथे । मूल्ये पूजाविषावधींऽहो दुःसव्यसनेष्ययम् ॥ २७ ॥ त्रिष्यिष्टेऽल्ये छर्चुः—

इाति घान्ताः।

काचाः शिक्यमृद्धेदद्दशुजः ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपश्चः पावके श्रुचिः ॥ २८ ॥ मास्यमात्ये चात्युपघे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु । अभिष्वङ्के स्पृहायां च गभस्ती च रुचिः ख्रियाम् ॥ २९ ॥

इति चान्ताः।

" प्रसन्ने भहुकेऽप्यच्छो गुच्छः स्तबकहारयोः । परिघानाश्यके कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥ १॥ "

इति क्षेपकर्छान्ताः।

एक(न॰) नाम लक्ष्मी, काम, ऐश्वर्य्य, वीर्य, यत, अर्क, कीर्ति इन्होंका है ॥ २६ ॥ यहां गकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ परिघ यह एक (पु॰) नाम छोहेकी लाठीका और अपिशब्दसे योगभेदका है। ओघ यह एक (पु॰) नाम समूह और पानीके प्रवाहका है । अर्घ यह एक (प्र॰) नाम मोलका और पूजाके जलका है । अध यह एक (न॰) नाम पाप, दुःस अर्थात् बुढापा मरण आदि, व्यसन अर्थात् विकार जूला खेळने आदिका है ॥ २७ ॥ रुघु यह एक नाम मनोवांछित और अस्पका है और (त्रि॰) है ॥ यहां घकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ काच यह एक (पु॰) नाम छींका, कांच, नेत्ररोग इन्होंका है । प्रपश्च यह एक (पु॰) नाम विपरीतपनेका और विस्तारका है। शुभु यह एक नाम अग्निका ॥ २८ ॥ और आषाढ महीना, मंत्री तथा शुद्ध चित्तवालेका है और (पु॰) है। पवित्रमें और शुक्रवर्णमें (त्रि॰) है। रुचि यह एक नाम मिलाप, बहुत इच्छा, किरण इन्होंका है और (स्त्री॰) है और चकारसे शोभाका है ॥ २९ ॥ यहां चकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ " अच्छ यह एक (पु॰) नाम रीछ, प्रसन्न और अपिशब्द्से स्फटिकका है। गुच्छ यह एक (पु॰) नाम गुच्छेका और हारका है। क्च्छ यह एक नाम बोती आदि पहिरनेके वस्त्रका किनारा, नाक्का अंग विशेष, जळप्रायदेश इम्हेंका

केकितार्श्याविश्वजी दन्यविश्वाक्षका द्वित्राः । अजा विष्णुहरस्क्षामा मोझाध्वनिवहा वजाः ॥ ३० ॥ धर्मराजी जिनयमी कुओ दन्तेत्रपि न क्षियम् । वछजे क्षेत्रपूर्द्वारे वछजा वस्तुदर्शना ॥ २१ ॥ समे हमांशे रणेऽप्याजिः प्रजा स्यास्यन्तती जने । अन्जी शंखशशाद्वी च स्वके निस्ये विश्वं विश्व ॥ ३२ ॥ इति जान्ताः ।

पुंस्यात्मिन मनीचे च क्षेत्रको सञ्चालिक्षकः । संज्ञा स्याचेत्रणा नाम हस्ताधिश्वायसूचता ॥ ३३ ॥ इति ञान्ताः । काकेभगण्डी करटी गुजगण्डकटी कटी । शिपिनिष्टस्तु सल्ती दुश्यमेणि महेश्वरे ॥ ३४ ॥

है । तहां वस्त्र वाची (पु॰) है और तट नौकाङ्गादिवाची (त्रि॰) है ।" **यहां** छकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ अहिभुज् यह एक (पु॰) नाम मोरका और गरुड (और नोरे) का है। द्विन यह एक (पु॰) नाव दांत, शाह्मप, पक्षी इन्होंका है। अज यह एक (पु॰) नाम विष्णु, महादेव, बकरा इन्होंका है। ब्रज यह एक (पु॰) नाम गौओंका स्थान, मार्ग, समूह इनका है ॥ ३० ॥ धर्मराज यह एक (पु॰) नाम जिन अशीत बुद्धहेनता और यसदेवता और युधिष्ठिरका है। कुंज यह एक नाम इस्तीके दांतका और निकुन्जका है और (पु॰ न॰) है। वळज यह एक (न॰) नाम खेल और नगरके द्वारका है। वलजा यह एक (स्त्री॰) नाम सुन्दर स्त्रीका है ॥ ३१ ॥ आजि यह एक (स्त्री॰) नाम समानक्रप पृथ्वीमागका ओर युद्धका है। प्रजा यह एक (स्त्री॰) नाम संतानका और जनका है। अञ्ज यह एक (पु॰) नाम शंखका और चन्द्रमाका है। तिज यह एक 💐 म अपना और मित्यका है । तहां निजञ्जब्द (त्रि॰) है ॥ ३२ ॥ यहां नकारांत शब्द समाप्त हुए ॥ क्षेत्रज्ञ यह एक नाम आरमाका वाची (पु॰) है और कुश्लका वाची (ति॰) है । संज्ञा यह एक (खी॰) नाम इंदि, नाम और हाथ भैंहि छोचन आदिसे अर्थकी सूचना करनेका है। गायत्री और सूर्यकी खीकोसी कहते हैं ॥३३॥ यहां सकारान्त राज्य समास हुए ॥ करट यह एक (पु॰) नाम काकका और हाथीके क्रेसेक्का है ।

देवशिल्पिन्यपि तथा दिष्टं दैवेऽपि न इयोः ।
रसे कटुः कट्टकार्ये त्रिषु मत्सरतीरूणयोः ॥ ३५ ॥
रिष्टं क्षेमाशुमामावेष्वरिष्टे तु शुमाशुमे ।
मायानिश्चलयन्त्रेषु कैतवानृतराशिषु ॥ ३६ ॥
नयोषने शैलशृष्टे सीराङ्के कूटमित्रयाम् ।
स्क्ष्मेलायां त्रिटः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे संश्येऽपि सा ॥ ३७ ॥
न्यार्ष्टुत्कर्षाश्रयः कोत्यो मूले लग्नचे जटा ।
न्युष्टिः फले समृद्धी च दृष्टिर्मानेऽिष्ण दर्भने ॥ ३८ ॥
इष्टिर्मागेन्छयोः सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ।
कष्टे तु कुच्छ्रगहने दक्षामन्दागदेषु च ॥ ३९ ॥

कट यह एक (पु॰) नाम हाथीके कपोछका और कटिका और चटाईका हैं। शिपिविष्टु यह एक (पु॰) नाम बालोंसे रहित शिखाला, दुष्ट-चामवां और महादेवका है ॥३४॥ त्वष्टु (ऋकारान्त) यह एक (पु॰) नाम विश्वकर्माका और अपिशब्दसे सूर्येविशेष तथा खातीका है। दिष्ट यह एक नाम दैवका वाची (न॰) है और कालका वाची (पु॰) है l क़र यह एक नाम रसका वाची (पु॰) है और अकार्यका वाची (न॰) हैं। मत्सर और तीक्ष्णका वाची (त्रि॰) है।। ३५॥ रिष्ट यह एक (न॰) नाम कुराल, अमंगल, अञ्चभके अभावका है। आर्ष्ट यह एक नाम ग्राम अञ्चलका है। सोवडका घर, मदिरा और मरणके चिन्हकाभी है ॥ ३६ ॥कूट यह एक नाम माया, निश्चलयंत्र, कपट, झठ, समूह, लोहेका समूह, पर्वतका शिखर, हलका अंग इन्होंका है। तहां कूटशब्द (पु॰ न॰) है। बुटियह एक नाम छोटी इलायचीका है और (स्त्री॰) है और कालभेद, लेश, सन्देह इन्होंका है ॥ ३७ ॥ कोटि यह एक (स्त्री॰) नाम धनुषके अग्रभाग, प्रकर्ष, कोण, संख्याभेद इन्होंका है। जटा यह एक (स्त्री॰) नाम मूल, मिले हुए बाल, जटामांसी इन्होंका है। व्युष्टि यह एक (खी॰) नाम फलका और समृद्धिका है। दृष्टि यह एक (स्त्री॰) नाम ज्ञान, आंख, देखना इन्होंका है ॥ ३८ ॥ इष्टि यह एक (स्त्री॰) नाम यक्का और इच्छाका है। मृष्ट यह एक नाम निश्चय और बहुतका है और (त्रि॰) है। कष्ट यह एक नाम दुःखका और दुःखसे प्राप्त हो

पदुर्दी वाच्यलिङ्गी च-

इति टान्ताः।

नीलकण्ठः भिवेऽपि च । पुंचि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुस्लोऽन्तर्गृहं तथा ॥ ४०॥ निष्ठा निष्पत्तिनाभान्ताः काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि । त्रिषु ज्येष्ठोऽतिभस्तेऽपि कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ॥ ४१॥

इति ठान्ताः।

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्याद्वडो गोलेक्षुपाकयोः । सर्पमांसात्पञ्च व्याडौ गोभूवाचस्त्वडा इक्षाः ॥ ४२ ॥ क्वेडा वंश्वशलाकाऽपि नाडी नालेऽपि षटक्षणे । काण्डोऽस्त्री दण्डवाणार्ववर्गावसरवारिषु ॥ ४३ ॥

सकनेवाळी वस्तुका है ॥ ३९ ॥ पटु यह एक नाम चतुर, तीक्ष्ण, रोगहीन इन्होंका है। कष्ट और पद्ध ये दोनों शब्द वाच्यिष्टिंगी हैं॥ यहां का-रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ नीस्कंठ यह एक (पु॰) नाम महादेवका और अपिशन्द्से मोरका है । <u>कोष्ठ</u> यह एक (पु॰) नाम पेटके भीतर अन्नके मकानका, कुठीलेका और भीतरके घरका है ॥ ४० ॥ निष्ठा यह एक (स्त्री॰) नाम सिद्धि, नहीं दीखना, नाश इन्होंका है। काष्टा यह एक (स्त्री॰) नाम उत्कर्ष, स्थिति और दशाका है। ज्येष्ठ यह एक नाम अत्यंत उत्तमका है और अपिशब्दसे अत्यंत वृद्ध, बढा और जेठ मही-नेका है और (त्रि॰) है। कनिष्ठ यह एक (त्रि॰) नाम बालकका और अस्पका है ॥४१॥ यहां ठकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ दंड यह एक नाम ळाठीका और अपिशब्दसे मानभेद और दंढका है और (प्र॰न॰) है। गुढ यह एक (पु॰) नाम गोलेका और गुडका है। व्याड यह एक (न॰) नाम सर्पके मांसको खानेवाछे और पशुका है । इंडा और इका ये दो (बी॰) नाम गी, पृथ्वी, वाणी इन्होंके हैं और इका यह एक नाम बुधकी खीकाभी है ॥ धर ॥ क्ष्वेडा यह एक (खी॰) नाम वंशकी सलाई और अपिशब्दसे विषका है। तहां विषका वाची (पु॰) है। नाडी यह एक (स्त्री॰) नाम नालका और छः क्षणपरिमित कालका अर्थात घडीका है। कांड यह एक नाम दंड, बाण, घोडा, वर्ग, अवसर, स्याद्राण्डमशामरणेऽमत्रे म्हन्ताः ।
इति हान्ताः ।
भृशप्रतिव्रश्रोकां म्हां भृशकुन्छ्योः ॥ ४४ ॥
शक्ताम्युकी त्रिष्ठ हटी व्युकी वित्यस्त संहतो ।
इति हान्ताः ।
भृणोऽभेके हीणगुर्भे बाको बहिस्को करे ॥ ४५ ॥
कणोऽतिस्को धान्यांशे संघाते मसये गणः ।
पणो धृतादिष्तुमुद्दे भूती मूल्ये धनेऽभि च ॥ ४६ ॥
मीर्व्या हव्यात्रिते सत्त्वश्रीयसंध्यादिके ग्रुणः ।
निर्व्यापारिस्यती कालविश्लेषोत्सवयोः श्रुणः ॥ ४५ ॥
वर्णो हिजादी शुक्लादी स्तुको वर्णे तु वाञ्चरे ।
वर्षो मास्करेऽपि स्याद्देणभेदेऽपि च निष्ठु ॥ ४८ ॥

पानी इन्होंका है और (पु॰ न॰) है ॥ ४३ ॥ मांड यह एक (न॰) नाम घोड़ेके भूषण, पात्र, मूलकूप केश्यके धनका है ॥ यहां डकारान्त सकद समाप्त हुए ॥ बाढ् यह एक (व॰) नाम अत्यंतका और मित्रज्ञाका है । प्रगाढ़ यह एक (न॰) नाम अत्यंतका और दुःखका है ॥ ४४ ॥ इइ यह एक (त्रि॰) नाम समर्थका और स्यूखका है। व्यूढ यह एक(त्रि॰) नाम धरोहरका और समूहका है ॥ यहां दकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ भूम यह एक (प्र॰) नाम बालकका और स्त्रीके गर्भका है। बाग्र यह एक (पु॰) नाम बल्कि पुत्रका और शरका है ॥ ४५॥ कण यह स्क (९०) नाम अत्यंत कोटेका और अन्नके अंशका है। गुण यह एक (पु॰) नाम समूहका ख़ीर महादेवके गणका है । पुष यह एक (पु॰) नाम जूआ आदि की बाजी, वेतन, मोछ, घन और अपिशन्दसे खरीदनेके योग्य ज्ञाक आदिका है ॥ ४६ ॥ गुणु यह एक (४०) नाम धनुषकी होरी, रस गंध आदि, सत्व, रज, तम, भतुरपना, संधि विग्रह आहि इन्होंका है। क्षण यहएक (🛭) नाम 🖫 नाप रहता, काळ्विशेष, जस्स इन्हेंका है ॥ ४७ ॥ वर्ष सह एक (पु॰) नाम आ-इण आदि अर्थ, सुपेद आदि हा, खुति इन्होंका है और अक्षका वाची (पु॰ न॰) है। सुरुप यह एक (पु॰) नाम सूर्यका और अपिस्क्रिको

स्थाणुः शर्वोऽप्यथ द्रोमः काकेन्याकी रने रणः ।

प्रामणीनीपिते पुंसि के मुमाधिपे त्रिष्ठ ॥ ४९ ॥

ऊर्णा मेषादिलोझि स्थादावर्ते चान्तरा सुवोः ।

हरिणी स्थान्सुगी हेममिला हरिता च या ॥ ५० ॥

त्रिष्ठ पाण्डी च हरिषः स्थूषा स्वस्थेऽपि बेहमवः ।

तृष्णे स्यूहापियासे हे खुगुप्साकरूके घुने ॥ ५१ ॥

वणिक्यथे च विपक्तिः सुरा सस्यक् च वाक्ती ।

करेणुरिभ्यां की नेभे द्रविनं तु वक्तं घवम् ॥ ५३ ॥

शरणं गृहरिक्षत्रोः श्रीपर्णं कमकेऽभि च ।

विवाभिमरलोहेषु बीहणं क्रीवे खरे चिषु ॥ ५३ ॥

सूर्यके सारथिका है। और कपिछ वर्ण, संध्याका राग इन्होंका वाचक (त्रि॰) है ॥ ४८ ॥ स्थाणु यह एक (पु॰) नाम महानेतृका और स्तंभ आदिका है। द्रोण यह एक (पु॰) नाम द्रोणाचार्य, वोळविशेष, काक इन्होंका है। रण यह एक (पु॰) नाम युद्धका और शब्दका है। ग्रामणी अह पूक नाम नाईका वाची (पु॰) है। अत्यंत उत्तम और गामके मास्टि कुका वाश्री (नि॰) है ॥ ४९ ॥ ऊर्णा यह एक (स्त्री॰) नाम मेंडा आदिके रोम, अकुटियोंके घेरका है। हरिणी यह एक (स्त्री॰) नाम सूरी, सोनेकी सूर्ति, हरे वर्णवाळी इन्होंका है ॥ ५० ॥ हरिण यह सुक नाम पांडर वर्णका और चकारसे मुगके भेदका है और (ति॰) है। स्थाना यह एक (खी॰) नाम मकानके स्तंभ और अपिशब्दसे छोहेकी प्रतिमाका है। कृष्ण यह एक (स्त्री॰) नाम इच्हाका और तुषाका है। घूमा यह प्रक (स्त्री) नाम निन्दाका और दयाका है। ५१॥ विपास सह पुक् (स्त्री॰) नाम बाजारकी मुक्की और दुकानका है । वारुणी पुह् एक (ह्नी॰) ज्ञाम महिराका और पश्चिम बिजाका है। करेण यह एक नाम हथिन्रीका वाची (स्त्री॰) और हाधीका वासी (प्र॰) है। दिनिस यह एक (पु॰ न्॰) नाम बलका और घनका है ॥ ५२ ॥ इत्प सह एक (न०) नाम घरका और रक्षा करनेवाटेका है। श्रीपर्ण यह पूक (त॰) तास कमक्का और चकारसे अर्नीका है। तीक्ष्य यह पुक्र साम क्रिय, यह, छोड़ा इन्होंका (त०) है और तीक्ष्मका वाची (त्रि॰) है

प्रमाणं हेतुमयीदाशास्त्रेयत्ताप्रमादृषु ।
करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वापि ॥ ५४ ॥
प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचम्गतौ ।
घण्टापयेऽय वान्तात्रे समुद्गिरणमुत्रये ॥ ५५॥
अतिस्त्रषु विषाणं स्यात्पशुघृङ्गेमदन्तयोः ।
प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्या प्रह्ने ना तु चतुष्पये ॥ ५६ ॥
संकीर्णो निचिताशुद्धौ विरिणं शून्यमूषरम् ।
" सेतौ च वरणो वेणी नदीभेदे कचोच्चये ।"

इति णान्ताः।

देवसूर्यों विवस्वन्ती सरस्वन्ती नदार्णवी ॥ ५७ ॥ पिसताक्ष्यों गरुत्मन्ती शकुन्ती भासपिसणी । अम्युत्पाती धूमकेत् जीमूती मेघपर्वती ॥ ५८ ॥

॥५३॥ प्रमाण यह एक (न॰) नाम हेतु, मयीदा, शास्त्र, परिच्छेद, ज्ञाता इन्होंका है। कुरण यह एक (न॰) नाम कियाकी सिद्धिमें प्रकृष्ट कार-णका है और क्षेत्र, अंग, इन्द्रिय इन्होंका है ॥५४॥ संसरण यह एक (न॰)। नाम प्राणियोंके जन्मका, निर्बाध सेनाके गमनका और चौहटका है। समुद्गिरण यह एक (न॰) नाम उच्टी किये अन्नका और जलके पात्र आदिको उत्पर लानेका है ॥ ५५ ॥ इससे आगे वक्ष्यमाण शब्द (त्रि॰) हैं । विषाण यह एक नाम पशुके सींगका और हाथीके दंतका हैं । प्रवण यह एक नाम ऋमसे डूंघी पृथ्वीका और नम्रका है और चौराहे-का वाचक (पु॰) है ॥ ५६ ॥ संकीर्ण यह एक नाम व्यापक और अशु-द्धका है। विरिण यह एक नाम ज्ञून्यका और उत्पर पृथ्वीका है। "वरण यह एक (पु॰) नाम पुल, वेणी, नदीका भेद और बालोंके समूहका है॥" यहां प्रकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ विवस्वत् (तान्त) यह एक (पु॰) नाम देवताका और सूर्यका है । सरस्वत् (मत्वन्त) यह एक (पु॰) नाम नदका और समुद्रका है ॥ ५७ ॥ गरुत्मत् (मत्वन्त) यह एक (पु॰) नाम फ्लोका और गरुडका है। शकुंत यह एक (पु॰) नाम गीधका और पक्षीका है। धूमकेत यह एक (प्र॰) नाम अग्निका और उत्पा-

इस्ती तु पाणिनसन्ने मरुती पवनामरी ।

यन्ता हस्तिपके सूते भर्ती धातरि पोष्टरि ॥ ५९ ॥

यानपान्ने शिशी पोतः मेतः माण्यन्तरे मृते ।

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः पार्थिवे तनये सुतः ॥ ६० ॥
स्थपतिः कारुभेदेऽपि मृभुद्धमिषरे तृपे ।

मूर्घामिषिक्तो भूपेपि ऋतुः खीकुसुमेऽपि च ॥ ६१ ॥

विष्णावप्यजिताव्यक्ती स्तस्त्वष्टरि सारयी ।

व्यक्तः प्राक्नेऽपि द्द्यान्तावुमी शास्त्रनिद्शेने ॥ ६२ ॥

क्षत्ता स्यात्सारयी द्वाःस्ये क्षत्रियायां च शूद्रजे ।

वृत्तान्तः स्यात्मकरणे मकारे कात्स्न्यवार्तयोः ॥ ६३ ॥

तका है। जीमृत यह एक (पु॰) नाम मेघका और पर्वतका है॥ ५८॥ हस्त यह एक (पु॰) नाम हाथका और हस्त नक्षत्रका है। मस्त यह एक (go) नाम पत्रनका और देवतोंका है । यंतृ (ऋकारान्त) यह एक नाम हाथीवानका और सारथीका है। भर्त (ऋकारान्त पु॰) यह एक नाम धारकका और मालिकका है ॥ ५९ ॥ पोत यह एक (पु॰) नाम यानके पात्र अर्थात् ड्रंगी आदिका और बालकका है। प्रेत यह एक (पु॰) नाम भूतका और मरे हुएका है । केतु यह एक (पु॰) नाम केतु ग्रहका और ध्वजाका है। सुत यह एक (पु॰) नाम राजाका और पुत्रका है ॥ ६० ॥ स्थपति यह एक (पु॰) नाम शिल्पीका और अपिशब्दसे नीवोष्टे यज्ञको करनेवालेका है। भूभृत यह एक (पु॰) नाम पर्वतका और राजाका है। मूर्घीभिषिक्त यह एक (पु॰) नाम राजाका और अपिशब्दसे प्रधानका है। ऋतु यह एक (पु॰) नाम स्त्रीको फूछ आनेका और हेमंत आदि ऋतुओंका है ॥ ६१ ॥ अजित, अन्यक्त ये दो (पु॰) नाम विष्णुके ओर महादेवके हैं। सूत यह एक (पु॰) नाम खातीका और सारथीका है। व्यक्त यह एक (त्रि॰) नाम पंडितका और स्फुटका है। दृष्टांत .यह एक (पु॰) नाम न्याय आदि शास्त्रका और उदाहरणका है ॥ ६२ ॥ स्त्र (ऋकारान्त प्र॰) यह एक नाम सारथी, द्वारपाछ और क्षत्रियकी स्त्रीमें शूदसे उत्पन्न बारू-कका है। वृत्तान्त यह एक (पु॰) नाम प्रकरण, प्रकार, स्करूपना, वार्त्ती

वानतेः समरे इत्यस्माननी हाई के पक्षेः ।
कृत्तान्तो यमिस्द्वान्ति सहम् तानि सहमाः ।
कृत्तान्तो यमिस्द्वान्ति सहम् तानि सहमाः ।
कृत्यादि रसरक्षाई महम् तानि सहमाः ।
इत्द्रियाण्यरमिक्किः क्षान्त्योगिक्ष भातवः ॥ ६५ ॥
कृत्याप्यरमार्थकोः सक्किक्किः क्षाक्ष्रिमान्ये ।
कास्सामध्येकोः सक्किक्किः क्षाक्ष्रिमान्ये ।
विस्तार सङ्घ्येत्रस्ति स्वित्र स्वाकित्यकाः ।
समार्चिमोरप्यितिः स्वाकित्यक्षिः ॥ ६५ ॥
विस्तार पद्मानुष्को द्योजीतिः सामान्यवान्येः ॥ ६५ ॥
वितः पीदायनुष्को द्योजीतिः सामान्यवान्ये ।
प्रचारस्यन्दयो तिक्वितिर्दिम्बमवासयोः ॥ ६८ ॥
उद्येजीकाने प्रातिक्षेत्रा त्वित्र स्वाविष्ये युगे ।
वीणाभेदे अपि महती भूतिभूत्यानि संपदि ॥ ६८ ॥

इन्होंका है ॥ ६३ ॥ ऑर्कित यह एक (पु॰) नाम युद्ध, नाचनेका स्थान, हारकापुर इन्होंका है। क्रुतन्ति यह एक (पु॰) नाम धर्मराज, ासिद्धान्त, प्राक्तन कर्म, पाप इन्होंका है ॥ ६४ ॥ धातु यह एक (पु॰) नाम कफ आदि, रस रक्त आदि, पृथ्वी पानी अग्नि वायु आकारा इन्हेंकि गंध आदि गुण, आंख आदि इन्दियां, मनाश्रेष्ठ आदि, शब्दयोनि इन्होंका हैं ॥ ६६ ॥ ग्रुद्धान्त् यह एक (पु॰) नाम स्थानके भीतरकी कक्षा, राजवा-नीविशेष, रनवास और आशीचके अन्तका है। शक्ति यह एक (ब्री॰) नाम बरक्रीका और सामर्थ्यका है। आग्रेके वार्त्तीशहरतक सन शहर (ब्री॰) हैं । मूर्ति यह एक नाम कठिनपनेका और ब्रुग्रीरका है ॥६६॥ झत्ति यह एक (स्त्री॰) नाम किस्तारका और वेलका है। वसति यह एक नाम राजिका और मकानका है। अपिचिति यह एक नाम क्षयका और पूजाका है। साबि यह एक नाम झनका और अन्तका है॥ ६७ ॥ सर्वि यह एक ताम पीढ़ाका और धनुषकी कोटिका है। जाति यह एक नाम सामान्यका और जन्मका है। रीति यह एक नाम प्रचारका और क्षिरनेका है । ईति यह एक नाम निष्ठव याने आविदान्न आदिका और भवासका है ॥६८॥ प्राप्ति यह एक नाम उदयका और क्रामका है । बेता

नदीनगर्योनीगांगी मीगंदैस्पय सँगरें।
सङ्गे समायां समितिः संयंगसांगि मिती ॥ ७० ॥
रवरिनिश्च शस्त्रं च वृद्धित्यासां च हेत्यः।
जगती जगति च्छन्दोविशेषेऽपि मिताविषे ॥ ७१ ॥
पंक्तिर्छन्दोऽपि दश्मं स्यात्ममावैऽपि चायतिः।
पक्तिगती च मूछे तुं पंसतिः पंसमेदयोः ॥ ७२ ॥
प्रकृतियोगिछिश्चे च केश्वियाद्याश्च वृत्तयः।
सिकताः स्युर्वालुकापि वेदे अवसि च श्रुतिः॥ ७३ ॥
विनता जनितात्यर्थानुरागायां च योगिति।
ग्रुतिः भितिन्युद्वासंऽपि वृतिर्घारणधर्ययोः॥ ७४ ॥
वृहती श्चद्रवातीनी छन्दोभेदो महत्यपि।
वासिता स्रीकारिण्योश्च वाती वृत्ती जनश्चती ॥ ७५ ॥

यह एक नाम तीनी अग्निका और त्रेतायुगका है। महती यह एक नाम नारद्की वीणा और बढे ग्रुणसे युक्त स्त्रीका है। भूति यह एक नाम भस्मका और संपतका है ॥ ६९ ॥ भोगवती यह एक नाम नदीका और नागोंकी नगरीका है। सभिति यह एक नाम युद्ध, संग, समा इन्होंका है। क्षिति यह एक नाम क्षय, वास, पृथ्वी इन्होंका है॥ ७० ॥ हेतियह एक नाम सूर्यकी प्रमा, शख, अग्निकी ज्वाला इन्होंका है। जगती यह एक नाम होकका, जगतिहान्दका और पृथ्वीका है ॥७१॥ पंक्ति यह एक नाम पंक्तिछन्दका और पंक्तिका है। आयति यह एक नाम प्रभावका, उत्त-रकालका जीर छंबाईका है। पत्ति यह एक नाम गतिका और वीरमैदंका है। फ्शति यह एक नाम पक्षकी आदिकी तिथिका और पिच्छके मूलका है ॥ ७२ ॥ प्रकृति यह एक नाम छिगका और योनिका है । वृत्ति यह एक नाम विश्वामित्रकी बहनकी बनाई कौशिकी नदी और आर्रमेटी और जी-विका आदिका है। सिकता यह एक नाम वाहू, वालुकामय प्रदेश, राकर इन्होंका है। श्रुति यह एक नाम वेदका और कानका है ॥७३॥ विनता यह एक नाम बहुत प्यारी खीका है। गुप्ति यह एक नाम पृथ्वी-के छिद्रका और रक्षाका है। घृति यह एक नाम धारणका और धैय्य-का है ॥ ७४ ॥ बृहती बह एक नाम कटेळीविशेषका, छंदोभेदका और मोटी वस्तुका है। वासिता यह एक नाम स्त्रीका सीर हथिनीका है। वार्त फल्गुन्यरोगे च जिष्यपु च घृतास्ते ।
कल्पीतं कप्यदेश्रीनिमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ॥ ७६ ॥
श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्थुगपर्यातयोः कृतम् ।
अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ॥ ७७ ॥
युक्ते क्ष्मादावृते सूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ।
वृत्तं पद्ये चरित्रे जिष्वतीते दृढनिस्तले ॥ ७८ ॥
महद्राज्यं चावगीतं जन्ये स्याद्रहिते त्रिषु ।
श्रेतं कप्येऽपि रजतं हेन्नि कप्ये सितं त्रिषु ॥ ७९ ॥
जिष्वतो जगदिङ्गेऽपि रक्तं नील्यादिरागि च ।
अवदातः सिते पीते शुद्धे बद्धार्जुनौ सितौ ॥ ८० ॥

वार्त्ता यह एक नाम वृत्तिका और मनुष्योंकी बात सुननेका है। यहांतक (स्त्री॰) हैं ॥ ७५ ॥ वार्त्त यह एक नाम असारका वाची (न॰) है रोगरहितका वाची (त्रि॰) है। घृत यह एक (न॰) नाम धी, और जलका है। अमृत् यह एक (न॰) नाम जल, धी, अमृत और यज्ञशेषका है । कलघीत यह एक (न॰) नाम चौदी का और सोनेका है । निमित्त यह एक (न॰) नाम कारणका और चिन्हका है ॥ ७६ ॥ श्रुत यह एक (न॰) नाम शास्त्रका और निश्चयका है। कृत यह एक (न॰) नाम सत्ययुगका और पूर्ण-ताका है । अत्याहित यह एक (न॰) नाम बहुत भयका और साहसकर्मका है ॥ ७७ ॥ भूत यह एक (न॰) नाम न्याय्य, पृथ्वी आदि पञ्चमहाभूत, सत्य, प्राणी, अतिकांत और समान इन्होंका है और समान-वाचक (त्रि॰) है। वृत्त यह एक नाम श्लोक और चरित्रका वाचक (न॰) हैं। अतीतकार, दृढं और गोरुका वाचक (त्रि॰) है ॥७८॥ महत् यह एक (न॰) नाम राज्यका और बढेका है। बढेका वाची (त्रि॰) है। अवगीत यह एक नाम जनोंके अपवादका और निदितका (त्रि॰) है। खेत यह एक (न॰) नाम चांद्रिका और सुपेद रंगका है। रजत यह एक (न॰) नाम सोना और चादीका है। ग्रुभ्रका वाची (त्रि॰) है ॥ ७९ ॥ इससे आगे तकारान्त शब्द (त्रि॰) हैं। जगत् यह एक नाम जंगमका और छोकका है। रक्त यह एक नाम नीले आदिसे रंगे हुए और लालरंगका है। अवदात यह एक नाम सुपेद, पीला, शुद्ध इन्होंका है । सित यह एक नाम सुपेद और बद्धका युक्तेऽतिसंस्कृते मर्पिण्यभिनीतोष संस्कृतम् ।
कृत्रिमे छस्रणोपेतेऽप्यनन्तोऽनवधाविष ॥ ८१ ॥
स्याते हृष्टे प्रतीतोभिजातस्तु कुछ्जे नुषे ।
विविक्ती पूर्तावजनी मूर्किती मूढसोष्ट्रमी ॥ ८२ ॥
द्वी चाम्छपरुषी शुक्ती शिती घवछमेषकी ।
सत्ये साधी विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यिति च सत् ॥ ८३ ॥
पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽप्रतः कृते ।
निवातावाश्रयावाती शस्त्राभेधं च वर्म यत् ॥ ८४ ॥
जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुष्टिकृता उत्थितास्त्वमी ।
वृद्धिमत्मोद्यतोत्पन्ना बाहती सादर्गाचिती ॥ ८५ ॥
हित तान्ताः ।
वर्थोभिषयरैवस्तुप्रयोजनिवृत्तिषु ।
निपानागमयोस्तीर्थसृषिकुष्टे ज्ञे गुरी ॥ ८६ ॥

है ॥ ८० ॥ अभिनीत यह एक नाम योग्य, बहुत उत्तम, भूषित किया और क्षमावालेका है। संस्कृत यह एक नाम बनाये हुए घाट आदिका और शास्त्रके छक्षणसे युक्तका है। अनंत यह एक नाम मर्यादासे रहितका और शेषनागका है ॥८१॥ प्रतीत यह एक नाम प्रसिद्धका और आनन्दितका है। अभिजात यह एक नाम कुछीनका और पंडितका है। विविक्त यह एक नाम पवित्रका और एकान्तका है। मूर्छित यह एक नाम मूढका और वृद्धिसे युत हुएका है ॥८२॥ शुक्त यह एक नाम खट्टेका और कठोरका है। शिति यह एक नाम सुपेदका और कालेका है। सत् (तान्त) यह एक नाम सत्य, साधु, विद्यमान, बहुत उत्तम, योग्य इन्होंका है ॥८३॥ पुरस्कृत यह एक नाम पूजित, शत्रुओंसे पीडित और अगाडी किये हुएका है। निवात यह एक नाम आश्रयका और वातसे रहित स्थानका है और नो राखोंसे नहीं कट सके उस कवचकाभी है ॥ ८४ ॥ उच्छित यह एक नाम जत्मन, गर्वित, प्रवृद्ध इन्होंका है । जिस्थत यह एक नाम वृद्धिवाका, अधिक उद्यत हुआ, उत्पन्न इन्होंका है। आहत यह एक नाम आद्रसाहितका और सत्कार किये हुएका है ॥ ८५ ॥ यहां तकारान्त और (त्रि॰) इन्द्र समाप्त हुए ॥ अर्थ यह एक (पु॰) नाम वाच्य, धन, चीज, समयोखिषु शिक्तियं संबद्धार्थे हितेशेष च । दशमीस्यो सीर्णरागद्यद्धी वीर्थापदव्यपि ॥ ८७ ॥ आस्यानीयसयोरास्या अस्योश्वदी सानुमानयोः । "शासद्विषयोग्नेन्यः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ । "

इति यान्ताः।

अभिप्रायवशी छन्दावन्दी जीमूतवत्सरी ॥ ८८ ॥ अपवादी तु निन्दाक्के दायादी सुतवान्धवी । पादा रहम्यंत्रितुर्याशाश्वन्द्राप्टयक्कीस्तमोतुदः ॥ ८९ ॥ निर्वादो जनवादेऽपि शादो जम्बाछश्रष्पयोः । आरावे रुदिते त्रातय्योक्कन्दो दारुणे रणे ॥ ९० ॥

प्रयोजन, निवर्त्तन इन्होंका है। तीर्थ यह एक (न॰) नाम कृष्के पासका जलाशय, बौद्धशास्त्रसे अन्य शास्त्र और मुनियोंसे सेवित किये जल तथा गुरु इन्होंका है ॥ ८६ ॥ समर्थ यह एक नाम इास्तिवाला, संबंधयुक्त अर्थ, हितकारी इन्होंका है और (त्रि॰) है। दर्शमीस्थ यह एक (प्र॰) नाम क्षीण हुए रसवालेका और अत्यंत बूढेका है। वीथि यह एक (स्त्री॰) नाम मार्गका और पंक्तिका है ॥ ८७ ॥ आस्था यह यह एक (स्त्री॰) नाम सभा और यतका है। प्रस्थ यह एक (पु॰ न॰) नाम पर्वतकी शिखरका और परिमाणविशेषका है। "प्रथ यह एक (पु॰) नाम शास्त्रका और द्रव्यका है। संस्था यह एक (स्त्री॰) नाम आधार, स्थिति, मरना इन्होंका है "॥ यहां थकारान्त राब्द् समाप्त हुए ॥ क्रुन्द् यह एक (पु॰) नाम अभिप्रायका और आधीनका है। अबंद यह एक (पु॰) नाम बाद्रका और वर्षका है ॥ ८८ ॥ अपवाद यह एक (पु॰) नाम निन्दाका और आज्ञाका है। दायाद यह एक (पु॰) नाम पुत्रका और भाईका है। <u>पाद</u> यह एक (पु॰) नाम किरण, पैर, चौथाई भाग इन्होंका है। तुमोत्तद् यह एक (पु॰) नाम चन्द्रमा, सूर्य, आग्न इन्होंका हैं ॥ ८९ ॥ निर्वाद यह एक (पु॰) नाम छोककी निन्दा और सिद्धानी अर्थात् निर्णय किथेका है। शाद यह एक (पु॰) नाम की वहका और बाछतृणका है। आक्रन्द यह एक (५०) नाम आर्त्त शबंद, रुद्दित, रह्कि,

स्यात्मसादोऽनुरागेऽपि सूदः स्याद्धाः निर्मा गोष्ठाध्यसेऽपि मोनिन्दो हर्नेऽप्यामोदनगदः ॥ ९१ ॥ प्राधान्ये राजिङक्के च दृषाक्के ककुदोऽक्कियाम् । स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाकियाकाराजिनामसु ॥ ९२ ॥ धर्मे रहस्यपनिषत्स्याहती वत्तरे शरत् । पर्दं व्यवसितत्राणस्थानछक्ष्माङ्विवस्तुषु ॥ ९३ ॥ गोष्पदं सेविते माने प्रतिष्ठाकृत्यमास्पदम् । त्रिष्विष्ठमधुरी स्वाद् मृद् चातीक्ष्णकोमस्त्री ॥ ९४ ॥ मूदाल्यापद्वनिभोग्या मन्दाः स्युद्धी तु शारदी । पर्याप्रतिभी विद्वत्सुप्रगल्भी विशारदी ॥ ९५ ॥

इति दान्ताः।

दारुण कर्म, भयानक युद्ध इन्होंका है ॥ ९० ॥ प्रसाद यह एक (५०) नाम अनुग्रह, प्रसन्नता और काव्यगुण इन्होंका है। सूद यह एक (पु॰) नाम व्यक्तनका और रसोइयाका है। गोविन्द यह एक (पु॰) नाम गोपाल, बृहस्पति, कृष्ण इन्होंका ह । आमोद, मद ये दो (पु०) नाम आनन्दके और अत्यन्त निर्हार गंधके हैं ॥ ९१ ॥ ककुद् यह एक नाम प्रधान, राजियन्ह, बेलका अंग इन्होंका है और (पु० न॰) है। संविद् (दान्त) यह एक नाम ज्ञान, संभाषण, कर्मका नियम, युद्ध, संज्ञा इन्होंका है और (स्त्री०) है ॥ ९२ ॥ उपनि-षद् (दान्त श्री॰) यह एक नाम वेदांत, धर्म और एकान्तका है। **शरत् यह एक (स्त्री॰)** नाम ऋतु, संवत्सर इन्होंका है <u>। पद</u> यह एक (न॰) नाम व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पेर, वस्तु इन्होंका है ॥ ९३ ॥ गोष्पद यह एक (न०) नाम गौओंसे सेवित किये देशका और खुरके प्रमाणका है। आस्पद यह एक (न॰) नाम स्थानका और कृत्यका है। इससे भागे वर्गकी समाप्तिपर्यंत दकारान्त शब्द (त्रि॰) हैं। स्वाद्ध यह एक नाम मनोवांद्वितका और मधुरका है। मृद्ध यह एक नाम अतीक्ष्ण-का और कोमलका है ॥ ९४ ॥ मन्द् यह एक नाम मूढ, अल्प, मूर्ख, निर्भाग्य इन्होंका है। शारद यह एक नाम नवीनका और अमगरमका है । विशारत यह एक नाम पण्डितका और प्रगल्भका है ॥१५॥ यहाँ वकाः व्यामो वटक त्यमोबादत्सेषः काम दलविः ।
पर्यादार्थ मार्गेश विद्वती विवधी च सी ॥ ९६ ॥
परिषियोश्वियतरोः सासायामुपस्यके ।
बन्धकं व्यसनं चेतःपीढाषिष्ठानमाषयः ॥ ९७ ॥
स्यः समर्थननीवाकनियमाश्व समापयः ।
दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्मकृत्यादिविन्धरे ॥ ९८ ॥
मुख्यानुयायिनि क्षिशी प्रकृतस्यानुवर्तने ।
विध्विष्णी चन्द्रमसि परिच्छेदे बिछेऽविधः ॥ ९९ ॥
विधिविधाने देवेऽपि प्रजिधिः प्रार्थने चरे ।
बचनृद्धी पण्डितेपि स्कन्धः समुद्रमेऽपि च ॥ १०० ॥
देशे नद्विशेषेऽव्धी सिन्धुनी सरिति स्त्रियाम् ।
विधा विधी प्रकारे च साधू रम्येऽपि च त्रिषु ॥ १०१ ॥

रान्त शब्द समाप्त हुए॥ न्यय्रोध यह एक (पु॰) नाम व्याम अर्थात् पसारी हुई दोनों भुजाओंका और वहवृक्षका है । उत्सेध यह एक (पु॰) नाम शरीरका और **उन्न**तिका है । विवय, वीवध ये दो (पु॰) नाम ध्यान आदिके और मार्गके हैं ॥ ९६ ॥ परिधि यह एक (पु॰) नाम यज्ञमें वर्त्ततेके यज्ञियशास्त्राका और उपसूर्य्यका है। आधि यह एक (पु॰) नाम गहने घरी चीज, व्यसन, चित्तकी पीडा, अध्यास इन्होंका है ॥ ९७ ॥ समाधि यह एक (पु॰) नाम समर्थन अर्थात् शंकाका परि-हार वा सनाधान, वचनका प्रभाव, अंगीकार इन्होंका है। अनुबन्ध यह एक (पु॰) नाम दोषके उत्पादनका और इत्संज्ञक याने छोप करके अंदर्शनशील अक्षरका ॥ ९८ ॥ मुख्य अर्थात् माता पिता और गुरुकी आज्ञा पाटन करनेवाछा बाटक और प्रकृतिके पद्की निवृत्तिका अभाव इन्होंका है। विधु यह एक (पु॰) नाम विष्णु और चन्द्रमाका है। अवधि यह एक (पु॰) नाम परिच्छेद, बिल और कारका है ॥ ९९ ॥ विधि यह एक (प्र॰) नाम विधानका और दैवका है । प्रिवाधि यह एक (पु॰) नाम प्रार्थनाका और चरका है। बुध और वृद्ध ये दो (पु॰) नाम पंदितके हैं और इध यह नाम प्रहका नाम और रृद्ध बूढेका नाम ऐसेभी हैं। स्कन्ध यह एक (५०) नाम समूहका और राजाका है ॥१००॥ सिंह यह वयुर्जामा खुमा खी न सुषा छेपोऽस्तं खुही । संधा प्रतिक्षा मधीदा श्रद्धा संप्रत्ययः स्पृद्धा ॥ १०२ ॥ मधु मध्ये पुष्परसे बीट्रेडप्यन्यं तमस्यि । अतस्त्रिषु समुन्नद्धी पण्डितंमन्यगर्विती ॥ १०३ ॥ ब्रह्मबन्धुरिधसेपे निर्देशेऽथावलम्बितः । अविद्रोऽप्यवष्टन्थः प्रसिद्धी ख्यातस्थिती ॥ १०४ ॥

इति धान्ताः ।

स्पैवदी चित्रभान् भान् रिमदिवाकरी। भूतात्मानी घातृदेही मूर्खनीची पृथग्जनी॥ १०५॥

एक (पु॰) नाम देश, नदविशेष अटक आदि और । समुद्रका वाची (पु॰) है और नदीका वाची (स्त्री०) है। विधा यह एक (स्त्री०) नाम विधिका और प्रकारका है। साधु यह एक नाम सज्जनका और रमणीकका है और (त्रिः) है ॥ १०१ ॥ वधू यह एक नाम भार्योका, पुत्रकी पती-का और स्त्रीमात्रका है और (स्त्री॰) है। सुधा यह एक (स्त्री॰) नाम अमृतका और थोहरके वृक्षका है। संधा यह एक (स्त्री॰) नाम प्रतिज्ञा और मर्यादाका है। श्रद्धा यह एक (स्त्री॰) नाम श्रद्धाका और इच्छाका ह ॥ १०२ ॥ मधु यह एक (न०) नाम मदिरा, पुष्पींका रस, शहद इन्होंका है। अंध यह एक (न॰) नाम अंधेरेका और अंधे पुरु क्का है। इससे परे धकारान्त वगपय्यीत शब्द (त्रि॰) हैं। ससुन्नद्ध यह एक नाम आपेको पंडित माननेवालेका और गर्ववालेका है ॥ १०३ ॥ ब्रह्मबन्धु यह एक नाम निदाके प्रयोगका और ब्राह्मणींकी आज्ञाका है । अवष्टब्ध यह एक नाम आश्रितका और सन्निहितका है। प्रसिद्ध यह एक नाम विख्यातका और भूषित हुएका है ॥ १०४ ॥ यहां घकारान्त इाब्द समाप्त हुए ॥ आगेके शब्द राजा शब्दतक (प्र॰) हैं ! चित्रभानु यह एक नाम सूर्यका और अग्रिका है। भानु यह एक नाम किरणका और सूर्य्यका है। भूतात्मन (नांत) यह एक नाम प्रझाजीका और देहका है। प्रथानन यह एक नाम मुर्खका और नीचका है ॥१०५॥

यावाणी शैल्पाषाणी पत्रिणी शरपिसणी ।
तरुशेली शिस्तरिणी शिखिनी विद्विविष्णी ॥ १०६ ॥
प्रतियत्नावुभी लिप्सोपप्रहावय सादिना ।
द्वी सारियह्यारोही वाजिनोऽश्वेषु पिक्षणः ॥ १०७ ॥
कुलेप्यभिजनो जन्मभूम्यामप्यथ हायनाः ।
वर्षाचित्रीहिभेदाश्च चन्द्राप्र्यका विरोचनाः ॥ १०८ ॥
कुशेऽपि वृजिनो विश्वकर्माकसुरशिल्पिनोः ।
आत्मा यत्नो धृतिर्वेद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च ॥ १०९ ॥
शको घातुकमत्तेभो वर्षुकान्दो घनाघनः ।
घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ॥ ११० ॥
अभिमानोऽशिदिदंपे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ।
इनः सूर्ये प्रभी राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृषे ॥ १११ ॥

ब्रावन (नांत) यह एक नाम पर्वत और पत्थरका है। पत्रिन (इत्रन्त) यह एक नाम शरका और पक्षीका है। शिखरिन (इन्नन्त) यह एक नाम वृक्षका और पर्वतका है। शिखिन यह एक नाम अग्निका और मोरका है ॥ १०६ ॥ प्रतियत यह एक नाम इच्छाका और अनुकूछका है। सादिन (इन्नत) यह एक नाम सार्थीका और घोडेके सवारका हैं। वाजिन यह एक (इत्रन्त) नाम घोडेका और पक्षीका है ॥ १०७॥ अभिजन यह एक नाम कुलका और जन्मभूमिका है। हायन यह एक नाम वर्ष, किरण, ब्रीहिभेद इन्होंका है । विशेचन यह एक नाम चन्द्रमा, आग्नि, सुर्य्य इन्होंका है ॥ १०८ ॥ वृजिन यह एक नाम क्केशका और पापका है। विश्वकर्मन् (नांत) यह एक नाम सूर्य्यका और देवताओं के शिल्पीका है। आत्मन (नांत) यह एक नाम यत्न, धीरजपना, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, शरीर इन्होंका है ॥ १०९ ॥ घनाघन यह एक नाम इन्द्र, उन्मत्त हुआ खूनी हाथी, वर्षनेवाला बादल इन्होंका है । घन यह एक नाम मेघ, कठिनपना इन्होंका वाचक (पु॰) है। कठिनका और निरन्तरका वाचक (त्रि॰) है ॥ ११०॥ अभिमान यह एक नाम द्रव्य प्रु कुल और गुण आदिसे उपजा गर्व, ज्ञान, नरमाई, हिंसा इन्होंका है। इन यह एक नाम सूर्य्य और मालिकका है। राजन (नान्त) यह

वाणिन्यो नर्तकीद्रस्यो स्ववन्त्यामिय वाहिनी ।

हादिन्यो वज्रति वन्दायामिय कामिनी ॥ १९२ ॥

त्वग्देहयोरिय ततुः स्नाऽघोजिहिकायि च ।

क्रतुविस्तारयोरस्री वितानं त्रिषु तुच्छके ॥ ११३ ॥

मन्देथ केतनं कृत्ये केतानुपनिमन्त्रणे ।
वेदस्तत्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः ॥ ११४ ॥

वत्साहने च हिंसायां स्चने चापि गन्धनम् ।
आतश्चनं प्रतीवापजवनाप्ययनार्थकम् ॥ ११५ ॥

व्यञ्जनं छाञ्छनं रमश्चनिष्ठानावयवेष्वि ।

स्यात्कौछीनं छोकवादे युद्धे पर्विष्मिणाम् ॥ ११६ ॥

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने ।

अवकारो स्थिती स्थानं क्रीढादाविष देवनम् ॥ ११७ ॥

एक नाम चन्द्रमा, क्षत्रिय, राजा इन्होंका है ॥ १११ ॥ वाणिनी यह एक (स्त्री॰) नाम नाचनेवालीका और दुतीका है। वाहिनी यह एक (स्त्री॰) नाम नदीका और सेनाका है। ह्रादिनी यह एक (स्त्री॰) नाम वज्रका और बिजलीका है। कामिनी यह एक (स्त्री॰) नाम वंदा-वृक्षका ओर सुन्दर स्त्रीका है ॥ ११२ ॥ तनु यह एक (स्त्री॰) नाम खालका और देहका है। सूना यह एक (स्त्री॰) नाम गलघंटिकाका और वधस्थानका है। वितान यह एक नाम यज्ञ और विस्तारका है और (पु॰न॰) है । तुच्छका और मन्दका वाचक (त्रि॰) है ॥१९३॥ केतन यह एक (न॰) नाम कृत्य, ध्वजा, निवास, भित्रोंका नौता इन्होंका है । ब्रह्मन् (नान्त) यह एक (न०) नाम वेद, चैतन्य, तप इन्होंका वाचक (न॰) है। ब्रह्मन् (नान्त) यह एक (पु॰) नाम ब्राह्मण आर ब्रह्माका वाचक है ॥ ११४ ॥ गंधन यह एक (न०) नाम उत्साह, हिंसा और आज्ञयके प्रकाजाका है । आतंचन यह एक नाम द्व आदिमें तक आदिका जामन देना, वेग, प्रष्टाई इन्होंका है ॥ ११५ ॥ व्यञ्जन यह एक (न॰) नाम चिह्न, डाढी, मूंछ, ज्ञाक आदि, अंग, अवयव इन्होंका है । कोलीन यह एक (पु॰) नाम लोकका अपवाद, सर्प पक्षी पशु आदिका युद्ध, कुलीनपना इन्होंका है ॥ ११६ ॥ उद्यान यह एक

उत्यानं पीरुषे तन्त्रे संनिविधोद्गमेऽपि च । ११८॥

मारणे मृतसंस्कारे मती द्रव्येऽघंदापने ।

निर्वर्त्तनोपकरणानुत्रज्यासु च साधनम् ॥ ११९॥

निर्यातनं वैरशुद्धी दाने न्यासापणेऽपि च ।

व्यसनं विपदि श्रंशे दोषे कामजकोपजे ॥ १२०॥

पक्ष्मासिखोद्धि किञ्चल्के तत्त्वाद्यंशेऽप्यणीयासि ।

तियिभेदे सणे पर्व वर्त्य नेत्रच्छदेऽघ्यनि ॥ १२१॥

अकार्यग्रह्मो कीपीनं मैशुनं संमत्ती रते ।

प्रमानं प्रमात्मा धीः प्रकानं बुद्धिचिद्धयोः ॥ १२२॥

प्रस्नं पुष्पफछयोर्निधनं कुछनाशयोः ।

कन्दने रोदनाहाने वर्ष्य देहप्रमाणयोः ॥ १२३॥

(न॰) नाम ग्रह आदिका निकसना, उपवन और प्रयोजनका है। स्थान यह एक (न॰) नाम अवकाशका और स्थितिका है । देवन यह एक (पु॰ न॰) नाम क्रांडाका व्यवहार, जीतनेकी इच्छा इन्होंका है ॥ ११७ ॥ आगेके शब्द वनतक (न०) हैं। उत्थान यह एक (न०) नाम पौरुष, तंत्र, बेठे हुएको उठाना और मलरोग इन्होंका है। व्युत्थान यह एक (न॰) नाम तिरस्कार, विरोधका करना, अफ्ने आधीन कृत्य इन्होंका है ॥११८॥ साधन यह एक नाम मारण अर्थात पाराका साधन, मृतसंस्कार, अग्निदाह, गमन, धन, धनका देना, धनका निष्पादन, उपाय, अनुगमन इन्होंका है ॥ ११९ ॥ निर्यातन यह एक नाम वैरकी शुद्धि, त्याग, धरोहरका देना इन्होंका है। व्यसन यह एक नाम विपद, नाजा, पतन, कामज दोष, क्रोधज दोष इन्होंका है ॥१२०॥ पक्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम आंखोंके रोम, केसर, बहुत अल्प सूत्र आदिका अंश इन्होंका है। पर्वत (नान्त) यह एक नाम तिथियोंका भेद अर्त्यात् अष्टमी अमावस आदिका और उत्सवका है। वर्ग्भन् (नान्त) यह एक नाम टकनेका और मार्गका है ॥ १२१ ॥ कीपीन यह एक नाम अकार्यका और मुद् रिंगका है। मेथुन यह एक नाम भार्या आदिके संबंधका और खीसंगका है। प्रधान यह एक नाम परमात्मा और बुद्धिका है। प्रज्ञान यह एक नाम बुद्धिका और चिन्हका है ॥ १२२ ॥ प्रसून यह एक नाम फूछका गृहदेहितिद्यभावा धामान्यथं चतुष्यदे । संनिवेते च संस्थानं छद्दमं चिद्धप्रधानयोः ॥ १२४ ॥ आच्छादने संपिधानमप्रधानमस्योग । आराधनं साधने स्याद्वाती तोषके प्रपे च ॥ १२५ ॥ अधिष्ठानं चकपुरप्रभावाध्यासने स्वपि । रतं स्वजाति अष्ठे प्रपे वने सिंग्ड क्वानने ॥ १२६ ॥ तिल्नं विरत्ने स्ताके वाष्यिक त्रं तयोत्तरे । समानास्यत्समेके स्यः पिशुनी सलस्यकी ॥ १२७ ॥ हीनन्यूनावृनगहीं वेगिशूरी तरस्विनी । अभिपन्नी प्रपादी भिग्रस्तव्यापद्रताविष ॥ १२८ ॥

इति नान्ताः।

और फलका है। निधन यह एक नाम कुलका और नाइका है। ऋन्दन यह एक नाम रोनेका और बुलानेका है। वर्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम ज्ञरीरका और प्रमाणका है ॥ १२३ ॥ धामन् (नान्त) यह एक नाम **शरीर, किरण, प्रभाव इन्होंका है । संस्थान यह एक नाम चौराहैका और** अवयवके विभागका है। लक्ष्मन् (नान्त) यह एक नाम चिन्हका आर प्रधानका है ॥ १२४ ॥ संपिधान, अपवारण ये दो नाम आच्छादन-के हैं । आराधन यह एक नाम साधन, लाम, संतोष इन्होंका है ॥१२५॥ अधिष्ठान यह एक नाम रथका पहिया, नगर, प्रभाव, आक्रमण इन्हींका है। रत यह एक नाम अपनी जातिमें श्रेष्ठका और मणि आदिका है। वन यह एक नाम जलका और वनका है। यहांतक (न०) हैं ॥१२६॥ आगे नान्ततक (त्रि॰) हैं। तिलन यह एक नाम विरलका और बहुत अरुफा है । तिलिनशब्द वाच्यालिंगी है। इससे उपरान्त मौतवर्गपर्यंत शब्द (त्रि॰) हैं। समान यह एक नाम पंडित, समान, एक इन्होंका है। पिंद्युन यह एक नाम खलका और निन्दकका है ॥ १२७ ॥ होन, न्यून ये दो नाम अल्प्के और निन्दाके योग्यके हैं । तरस्विन् (इन्नन्त) यह एक नाम वेगवालेका और शूरवीरका है। अभिपन्न यह एक नाम अपरा-ध्वाला, राज्ञसे आक्रांत हुआ और विपत्यक्तवाला इन्हींका है ॥ १२८॥

कलापो भूषणे बहैं त्णीरे संहतावि । परिच्छदे परीवापः पर्युत्ती सल्लिस्थती ॥ १२९ ॥ गोधुग्गोष्ठपती गोपौ हरिबण्णू तृषाकपी । बाष्पमूष्माश्च कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्रयम् ॥ १३० ॥ तल्पं शय्यादृद्रिषु स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् । प्राप्तकपस्वकपाभिकपा बुधमनोङ्गयोः ॥ १३१ ॥ भेद्यलिङ्गा अमी कूमी वीणाभेदश्च कच्छपी । " कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेंऽशके ।"

इति पान्ताः।

रवर्णे पुंचि रेफः स्यात्कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः ॥ १३२ ॥ इति फान्ताः ।

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गन्धवी दिव्यगायने । कम्बुनी वस्त्रये शङ्खे द्विजिह्नौ सर्पसूचकी ॥ १३३ ॥

यहां नकारान्त शब्द समाप्त हुए ॥ कलाप यह एक (पु॰) नाम गहना, मोरकी पंख, तरकस, समुदाय, आभूषण इन्होंका है। परीवाप यह एक (पु॰) नाम वस्त्रमंडप आदिकी सामग्री, सब ओरसे वपन, पानी-की स्थिति इन्होंका है ॥१२९॥ गोप यह एक (पु॰) नाम गोको दोहने-वालेका और गोजालाके मालिकका है। वृषाकिपयह एक (पु॰) नाम महा-देवका और विष्णुका है। बाष्प यह एक (पु॰) नाम ऊष्माका और आं-स्का है। किश्पु यह एक (पु॰ न॰) नाम अन्नका और आच्छादनका हैं ॥ १३० ॥ तल्प यह एक (पु०न०) नाम शय्या, अटारी, स्त्री इन्हों-का है। विटप यह एक नाम तृणोंका गुच्छा, विस्तार, शाखा इन्होंका है और (पु॰न॰) है। प्राप्तरूप, स्वरूप अभिरूप, ये तीन नाम पांडतके और मनोहरके हैं। ये सब वाच्यिछिंगी हैं ॥ १३१॥ कच्छपी यह एक नाम कछवीका और वीणाक भेदका है। " कुतप यह एक नाम मृगके रोमोंसे बने वस्त्रका ओर दिनके आठवें अंशका है। " यहां कारान्त राज्द समाप्त हुए ॥ रेफ यह एक नाम रवर्णका वाचक (पु॰) और कुरिसतका वाची (त्रि॰) है ॥ १३२ ॥ यहां फान्त शब्द समाप्त हुए ॥ गंघर्व यह एक (पु॰) नाम मरणजन्मके बीचमें स्थित हुआ प्राणी, घोडा, प्रवेडिन्यलिङ्गः प्रागाहः पुंबहुत्वेडिंग पूर्वेजान् ।

इति बान्ताः ।
कुम्मी घटेभमूर्थाञ्चां छिमी तु शिशुबालिश्ची ॥ १३८ ॥
स्तम्भी स्थूणाजडीभावो शंभू ब्रह्मित्रलोचनो ।
कुक्षिश्चणाभेका गर्भा विस्नम्भः प्रणयेडिंग च ॥ १३५ ॥
स्याद्रेयी दुन्दुभिः पुंसि स्याद्क्षे दुन्दुभिः ख्रियाम् ।
स्यान्महारजने क्वीं कुसुम्भं करके पुमान् ॥ १३६ ॥
क्षित्रयेडिंग च नाभिनी सुरिभगीवे च ख्रियाम् ।
सभा संसदि सम्ये च त्रिष्वध्यक्षेपि व्ह्वभः ॥ १३७ ॥
इति भान्ताः ।

विश्वावसु आदि, गायन इन्होंका है। कंबु यह एक (पु॰) नाम कङ्कणका और शंखका है । द्विजिह्न यह एक (पु॰) नाम सर्पका और चुगल्खोरका है ॥ १३३ ॥ पूर्व यह एक नाम पूर्व दिशाका वाची (त्रि॰) है और पितामह आदि पूर्व लोगोंका वाची (पु॰) और बहुवचनान्त है॥ यहां बान्त राज्द समाप्त हुए ॥ कुंभ यह एक (त्रि॰) नाम घट, हस्तीके र्शिका भाग इन्होंका है । डिभ यह एक (पु॰) नाम अत्यंत बालकका और मूर्बका है ॥ १३४ ॥ स्तंभ यह एक (पु॰) नाम घरके थंबेका और र्जिडफ्नेका है। शंभु यह एक (पु॰) नाम ब्रह्माका ओर महादेवका है। गर्भ यह एक (पु॰) नाम कुक्षि, गर्भमें स्थित प्राणी, बालक इन्होंका है । विस्नंभ यह एक (पु॰) नाम विनयका और विश्वासका है ॥५३५॥ दुंदुभि यह एक नाम भेरीका वाचक (पु॰) और बालककी डफली आ-दिका वाचक (स्त्री॰) है। कुसुंभ यह एक नाम कस्मका वाचक (न॰) और कमंडलुका वाचक (पु॰) है ॥ १३६ ॥ नामि यह एक नाम क्षत्रि-यका वाचक (पु॰) और मुख्य, राजा, चक्रका मध्यभाग, प्राणीका अंग इन्होंका वाचक (पु॰ स्त्री॰) है। सुरिम यह एक नाम गौका वाचक (स्त्री॰) और वसंत चमेलीके फूल आदिका वाचक (न॰) है। सभा यह एक (स्त्री॰) नाम सभाका और सभ्यका है। बहुन यह एक नाम मालिकका और कुलीन घोडेका है और (त्रि॰) है ॥ १३७ ॥

किरणप्रमही रहमी किपिनेकी हुवंगमी ।
इच्छामनोभवी कामी श्रीयोद्धोगी पराक्रमी ॥ १३८॥
घर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावायारसोमपाः ।
उपायपूर्व व्यारम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ॥ १३९॥
विजवपयः पुरं वेदो निगमो नागरो विजक् ।
नेगमी ही बळे रामो नीखचारुसिते त्रिष्ठ ॥ १४०॥
शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि प्रामः क्रान्ती च विक्रमः ।
स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे जिह्नस्तु क्रुटिछेऽछसे ॥ १४१॥
" उष्णेऽपि घर्मश्रेष्टाछङ्कारे ज्ञान्ती च विक्रमः । "
गुल्मा रक्स्तम्बसेनाश्च जामिः स्वसृकुछिखयोः ।
शितिक्षान्त्योः क्षमा गुक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥ १४२॥

यहां भांत शब्द समाप्त हुए ॥ रश्मि यह एक (पु॰) नाम किरणका और घोडे आदिके बांघनेकी रस्सी अर्थात लगामका है। प्रवंगम यह एक (पु॰) नाम वानरका और भेंडकका है। काम यह एक (पु॰) नाम इच्छाका और कामदेवका है। पराक्रम यह एक (पु॰) नाम शूरवीरप नेका और उद्योगका है ॥ १३८ ॥ धर्म यह एक (पु॰) नाम पुण्य, धर्मराज, न्याय, स्वभाव, आचार, सोमको पीनेवाला इन्होंका है। उपक्रम यह एक (पु॰) नाम उपायपूर्वक आरंभ, नौकरका इिल और परीक्षाका उपाय, चिकित्सा इन्होंका है ॥१३९॥ निगम यह एक (प्०) नाम व्यवहार, नगर, वेद इन्होंका है । नेगम यह एक (पु॰) नाम नगरमें होनेवाछेका और वश्यका है। राम यह एक नाम बल्देवजीका वाचक (पु॰) और नीछ, सुन्दर, सुपेद इन्होंका वाचक (त्रि॰) है और राम यह नाम रामचन्द्र परशुरामकाभी है ॥ १४० ॥ याम यह एक (पु॰) नाम गांवका, **शब्द**आं-दिपूर्वक ग्रामशन्द समूहका और स्वरविशेषका है। विक्रम यह एक (पू०) नाम क्रांतिका सीर पराक्रमका है। स्तोम यह एक (पु॰) नाम स्तोत्र, यह, समूह इन्होंका है। जिह्म यह एक (पु॰) नाम कुटिलका और आलसका है॥१४१॥ "वर्म यह एक (पु॰) नाम वामका और पसीनेका है। विश्रम बह एक (पु॰) नाम गहनेका और अंतिका है।" गुल्म यह एक (पु॰) नाम गुरमरोग, तिक्किरोग, तृणगुच्छा, सेना इन्होंका है। जामि यह एक त्रिषु श्यामी हरित्कृष्णी श्यामा स्थाच्छारिया निशा । स्थामं पुच्छपुण्ड्राश्वमूषामाधान्यकेतुषु ॥ १४३ ॥ स्थमप्यात्मप्याद्ये मधाने मधमस्त्रिषु । वामी वल्जुमतीपी हावधमी न्यूनकुत्तिती ॥ १४४ ॥ जीर्ज च परिमुक्तं च यातयाममिदं हयम्।

इति मान्ताः।

तुरङ्गगरुढी ताक्ष्यों निस्रयापचयी क्षयी ॥ १४५ ॥ श्रुव्यों देवरत्त्र्यासी आहम्यी आहजदिषी । पर्जन्यी रसद्ब्देन्द्री स्याद्येः स्वामिवैत्रययोः ॥ १४६ ॥ तिष्यः पुष्ये कस्त्रियुगे पर्यायोऽवसरे ऋमे । प्रत्ययोऽधीनज्ञापश्चज्ञानविश्वासहेतुषु ॥ १४७ ॥

(स्त्री॰) नाम बहनका ओर कुलकी स्त्रीका है । क्षमा यह एक (स्त्री॰) नाम पृथ्वीका और सहनक्शिलताका है। क्षम यह एक नाम योग्यका वाचक (न॰) है और समर्थका और हितका वाचक (न्नि॰) है ॥१४२॥ श्याम यह एक नाम हरे और काले रंगका है और (त्रि॰) है। श्यामा यह एक (स्त्री॰) नाम शतावरीका और रात्रिका है। एकाम यह एक (न॰) नाम पुंछ, घोडा आदिकोंके मस्तकका चित्र, घोडेका गहना, प्रधानपना, ध्वजा इन्होंका है ॥ १४३ ॥ सूक्ष्म यह एक (न॰) नाम छिगदेह और अल्फ्या है । प्रथम यह एक नाम आदिमें होनेवाछेका और प्रधानका है और इसको आदि लेकर वर्गपर्यंत सब शब्द (त्रि॰) हैं। वाम यह एक नाम टेढेका और विपरीतका है। अधम यह एक नाम न्युनका और नीचका है ॥१४४॥ यातयाम यह एक नाम पुरानेका और मोजन करके बचे हुएका है ॥ यहां मान्त शब्द समाप्त हुए ॥ तार्क्य यह एक नाम घोडेका और गरुडका है । इसको आदि छेकर विषयशब्दतक (पु॰) हैं। क्षय यह एक नाम घरका और नाज्ञका है ॥ १४५॥ श्रार्य यह एक नाम देवरका और श्यां छेका है। भ्रातृच्य यह एक नाम भाईके पुत्र अर्थात् भतीजेका और राज्ञका है। पर्जन्य यह एक नाम शब्द करते हुए बादलका और इन्द्रका है । अर्थ यह एक नाम मास्टि-कका और वैश्यका है ॥ १४६ ॥ तिष्य यह एक नाम पुष्यनक्षत्रका और रन्ध्रे शब्देऽयानुशयो दीर्घद्रेषानुतापयोः ।
स्यूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते ॥ १४८ ॥
समयाः शपथाचारकाल्सिद्धान्तसंविदः ।
व्यसनान्यशुभं देवं विपदित्यनयास्त्रयः ॥ १४९ ॥
अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि ।
युद्धायत्योः संपरायः पूज्यस्तु श्रशुरेऽपि च ॥ १५० ॥
पश्चादवस्थायि बलं समवायश्च संनयौ ।
संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः प्रणयास्त्वमी ॥ १५१ ॥
विस्तम्भयाच्ञाप्रेमाणो विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ।
विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ १५२ ॥
निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री सभायां च प्रतिश्रयः ।
प्रायो भूइयन्तगमने मन्युद्धिन्ये कतौ कृष्टि ॥ १५३ ॥

कलियुगका है। पर्याय यह एक नाम अवसरका और क्रमका है। प्रत्यय यह एक नाम आधीन, श्रापथ, ज्ञान, विश्वास, हेत्, छिद्र, शब्द इन्होंका है ॥ १४७ ॥ अनुराय यह एक नाम बहुत दिनके वैरका और पश्चात्ता-का है। स्थूलोच्चय यह एक नाम न्यूनका और हाथियोंकी मध्यम गतिका है ॥१४८॥ समय यह एक नाम शपय, सौगंघ, आचार, काल, सिद्धान्त, श्रेष्ठ भाषा इन्होंका है। अनय यह एक नाम व्यसन, अशुभ देव, विपत् इन्होंका है ॥ १४९ ॥ अत्यय यह एक नःम अतिक्रम, कष्ट, दोष, दंड इन्होंका है । संपराय यह एक नाम आपत्, युद्ध, उत्तरकाल इन्होंका है । पूज्य यह एक नाम पूजाके योग्यका और श्वसुरेका है ॥ १५० ॥ अव-स्थायि यह एक नाम सेनाके पृष्ठभागमें जो सेना स्थित हो उसके पीछे स्थित हुई सेनाका है। समवाय यह एक नाम समूहका और सन्नायका है। संस्त्याय यह एक नाम समूह, स्थान, विस्तार इन्होंका है। प्रणय यह एक नाम विश्वास, याच्ञा, प्रेम इन्होंका है ॥ १५१ ॥ समुच्छ्रय यह एक नाम वैरका और उन्नतिका है । विषय यह एक नाम मच्छ आदि तथा जल आदि जाना हुआ वस्तु और शब्द, स्पर्श, ह्रप, गंध इन्होंका है ॥ १५२ ॥ कषाय यह एक नाम काथके रसका और विलेपन आदिका है और (पु॰ न॰) है। प्रतिश्रव रहस्योपस्ययोर्ध्रहं सत्यं अयवतथ्ययोः ।

वीर्यं वर्छे प्रभावे च द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ॥ १५४ ॥

विष्ण्यं स्थाने गृहे भेगी भाग्यं कर्म शुगाशुभम् ।

कशेरुहेन्नोगोन्नेयं विश्वस्या दन्तिकाऽपि च ॥ १५५ ॥

वृषाकपायी श्रीगौर्योरिभक्षा नामशोभयोः ।

व्यासम्मो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं सम्प्रधारणम् ॥ १५६ ॥

वपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव कियाः ।

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिविम्बमनातपः ॥ १५७ ॥

कस्या प्रकेषि हम्योदेः काञ्च्यां मध्येभवन्यने ।

कृत्या कियादेवतयोस्त्रिष्ठ भेदो धनादिभिः ॥ १५८ ॥

यह एक (न॰) नाम सभाका और समीप गमनका है। प्राय यह एक (पु॰) नाम बहुतका और अन्नत्यागका है। मन्यु यह एक (पु॰) नाम दीनपना, यज्ञ, ऋोध इन्होंका है ॥ १५३ ॥ गुह्य यह एक (न॰) नाम गुप्तका और गुदालिंगका है। सत्य यह एक (न॰) नाम सीगः न्यका और सचका है। वीर्य यह एक (न॰) नाम बलका और प्रभा-वका है। द्रव्य यह एक (न॰) नाम सत्वका और गुणोंके आश्रयका है ॥ १५४ ॥ धिष्ण्य यह एक (न०) नाम स्थान, स्त्री, नक्षत्र, अग्नि इन्होंका है। भाग्य यह एक (न॰) नाम अञ्चभ कर्मका है। गांगेय यह एक (न॰) नाम करोरका और जमालगोटेकी जडका है। विशुल्या यह एक (स्त्री॰) नाम जमालगोटेकी जडका और गिलोयका है॥१५५॥ वृषाकपायी यह एक (स्त्री॰) नाम छक्ष्मीका और गौरीका है। अभिख्या यह एक (स्त्री) नाम नामका और शोभाका है। क्रिया यह एक (स्त्री॰) नाम आरंभ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, संप्रधारण ॥ १५६ ॥ उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ये नव प्रकारकी क्रियाका है। छाया यह एक (स्री॰) नाम सूर्यप्रिया, कांति, प्रतिबिंब, अनातप इन चारीं अर्थींका वाची है ॥ १५७ ॥ कक्ष्या यह एक (स्त्री॰) नाम हवेली आदिके भीतरका मकान, तागडी, हस्तिबंधनका मध्यमाग इन्होंका है । कृत्या यह एक (स्त्री॰) नाम किया, देवता इन्होंका वाचक (त्रि॰) है और घन, स्त्री, पृथ्वी आदिसे मेदन करनेके योग्य जो परदेशगत पुरुष आदि उस-का वाचक वाच्यांलगी है। आगेके शब्द वर्गान्ततक (त्रि॰) हैं॥ १५८॥ जन्यं स्याजनवादेऽपि जपन्योन्त्येऽधमेऽपि च ।
गर्जाहीयी च वक्तव्यी कल्यी सज्जित्रायसी ॥ १५६ ॥
आत्मवाननपेतार्थाद्ध्यीं पुष्पं तु चार्विष ।
कृष्यं मशस्तक्येऽपि वदान्यो वस्तुवागिष ॥ १६० ॥
न्याय्येपि मध्यं सीम्यं तु सुन्दरं तोमदैषते ।

इति यान्ताः।

निवहावसरी वारी संस्तरी प्रस्तराऽध्वरी ॥ १६१ ॥
गुरू गीष्पतिपित्राची द्वापरी युगसंश्रयी ।
प्रकारी भेदसादृश्ये आकाराविङ्गिताकृती ॥ १६२ ॥
किशाक सस्यश्रुशेषु मक धन्वधराधरी ।
अद्रयो हुमशैलाकोः स्नीस्तनान्दी पयोधरी ॥ १६३ ॥

जन्य यह एक नाम निन्दित वादका और युद्ध आदिका है। जवन्य यह एक नाम चंडाल आदि और नीचका है । वक्तव्य यह एक नाम निन्दाके योग्यका ओर आधीनका है। कल्य यह एक नाम सामग्रीसहितका ओर आरोग्यका है ॥ १५९ ॥ अर्थ्य यह एक नाम बुद्धिमान्दा और प्रयो-जनसे युक्त पुरुषका है। पुण्य यह एक नाम सुन्दरका और सुकृतधर्मका है। रूप्य यह एक नाम सुन्दर रूपका और रुपेया तथा अदारफी आदिका है। वदान्य यह एक नाम टेढा बोळनेवाळेका और दाताका है ॥ १६०॥ न्याय्य यह एक नाम उचितका और अवलग्नका है। सौम्य यह एक नाम मुन्दर, मृगशिर नक्षत्र, बुध इन्होंका है ॥ यहां यान्त ज्ञब्द समाप्त हुए ॥ आगे वारसे दुरोदरशब्दतक (पु॰)हैं। जहां भेद है दिखावेंगे। वार यह एक नाम समूहका और अवसरका है। संस्तर यह एक नाम डामकी दाय्या और यज्ञका है ॥ १६१ ॥ गुरु यह एक नाम बृहस्पतिका और फ्ता आदिका है। द्वापर यह एक नाम युगका और संशयका है। प्रकार यह एक नाम भेदका और सहशपनेका है। आकार यह एक नाम चेष्टाका और आकृतिका है ॥ १६२ ॥ किंजार यह एक नाम खेतीके तुपिको-षका है। मरु यह एक नाम बागडदेशका और पर्वतका है। अदि यह एक नाम वृक्ष, प्रश्लेत, सूर्य्य इन्होंका है। प्योधर यह एक नाम स्त्रियोंकी चूचियोंका और बादलका है ॥ १६३ ॥ प्यान्तारिक्षणया गुन्ना बिक्स्सांसमः स्ताः ।

मदरा अञ्चनारीकम्याना अकाः कवा अपि ॥ १६४ ॥

अजातस्त्रक्षो गीः किकेऽप्यश्मभुनं च स्वरी ।

स्वर्णेऽपि राः परिकरः वर्षक्षपरिवारयोः ॥ १६५ ॥

मुक्ताश्चदी च तारः स्थान्छारो वाया च तु जितु ।

कर्नुरेऽय प्रतिज्ञाजिसंविदापत्तु संगरः ॥ १६६ ॥

वेदमेदे गुप्तवादे मन्त्रो मित्रो रवावि ।

मत्तेषु यूपत्तप्देऽपि स्वरुगुद्दोऽप्यवस्करः ॥ १६७ ॥

आहम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणांच गर्जिते ।

आमिहारोऽभियोगे च चौर्ये संज्ञहनेऽपि च ॥ १६८ ॥

स्थाजक्रमे परीवारः सङ्गकोशे परिच्छदे ।

विष्टरो विटपी दर्भगृष्टिः पीठाद्यमासनम् ॥ १६९ ॥

वृत्र यह एक नाम अंधेरा, राष्ट्र, दानव इन्होंका है। कर एक नाम बिक, हाथ, किरण इन्होंका है। प्रदर यह एक नाम भंग, स्त्रीका प्रदर्शेग, बाण इन्होंका है। अस्त्र यह एक नाम वालोंका और कोणका है॥१६४॥ तुबर यह एक नाम समयमें नहीं उपजे सींगींवाले बैलका और समयमें नहीं डपजी मूंछ दाढीवाले पुरुषका है। र यह एक नाम धनका और सोने-का है। परिकर यह एक नाम पछंगका और कुटुंबका है ॥१६५॥ तार यह एक नाम मोतियोंकी ग्राद्धिका, तिरना ऊंचाशब्द और चांदीका है । शार यह एक नाम वायुका वाचक (पु॰) और कर्नुरवर्णका वाचक वाच्यिलगी है। संगर यह एक नाम प्रतिज्ञा, युद्ध, क्रियाका करना, दुःख इन्होंका है ॥ १६६ ॥ मंत्र यह एक नाम वनिषद्शेषका, ग्रुप्तबात और देव आदिको साधने और वेद्भेदका है। मित्र यह एक नाम सूर्यका वाचक (पु०) हैं और प्रियका वाचक (न॰) है। स्वरु यह एक नाम यज्ञके थंभके संदका और वज्रका है। अवस्कर यह एक नाम ग्रुप्तका और मस्का है ॥ १६७ ॥ आढंबर यह एक नाम बाजेके शब्दका और हस्तियोंकी गर्ब-नाका है । अभिहार यह एक नाम अभिहरण, चौरकर्म, कवच आदिको धारण करना इन्होंका है ॥ १६८ ॥ परीवार यह एक नाम जंगमविशेष, तस्वारका म्यान, उपकरण, सामग्री इन्होंका है। विष्टर यह एक नाम द्वारि द्वाःस्ये प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे ।
विषुष्ठे नकुछे विष्णी बद्धनी पिङ्गले त्रिषु ॥ १७० ॥
सारो बछे स्थिरांशे च न्याय्ये छीवं वरे त्रिषु ।
दुरोदरो झूतकारे पणे झूते दुरोदरम् ॥ १७२ ॥
महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ।
मत्तरोऽन्यशुभद्देषे तद्दत्कृपणयोखिषु ॥ १७२ ॥
देवाहृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु छीवं मनाक्षिये ।
वंशांकुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घट च ना ॥ १७३ ॥
ना चम् जघने हस्तस्त्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम् ।
यमानिलेन्द्रचन्द्राकविष्णुसिंहांशुवाजिषु ॥ १७४ ॥
शुकाहिकपिभेकेषु हारिनी कपिले त्रिषु ।
श्रकरा कर्परांशेपि यात्रा स्याद्यापने गतौ ॥ १७५ ॥

वृक्ष, डामकी मुष्टि अर्थात् चौवीस डाम और काठ आदिसे बने हुए आ-सन आदिका है ॥ १६९ ॥ प्रतीहार यह एक नाम द्वारका और द्वारपर स्थित हुए पुरुषका है। प्रतीहारी यह एक नाम द्वारपर स्थित हुई स्त्रीका है और यह शब्द (स्त्री०) है। इन्प्रत्ययान्त नहीं है। बभ्रु यह एक नाम मोटे नौलेका और विष्णुका वाचक (पु॰) है ओर पिंगलका वाची (রি০) है ॥१७०॥ सार यह एक नाम बल, स्थिर अंदा, इन्होंका वाची (पु॰) है । योग्यका वाची (न॰) है । और श्रेष्ठका वाची (त्रि॰) है । दुरो-द्र यह एक नाम जुवारीका वाचक (पु॰) और दावका और जुवाका वा-चक (न॰) है ॥ १७१ ॥ कान्तार यह एक नाम बढे वनका और दुर्गम मार्गका है और (पु॰ न॰) है। मत्सर यह एक नाम दूसरेकी संपत्तिको नहीं सहनेका वाचक (पु॰) और कृपणका वाचक (त्रि॰) है ॥ १७२ ॥ वर यह एक नाम देवतासे वाञ्छा पानेका वाचक (पु॰) और श्रेष्ठका वाचक (त्रि॰) है और इष्टका और प्रियका वाची (न॰) है। करीर यह एक नाम बौसके अंकुरका वाची (पु॰ न॰) और वृक्षके मेंदका और घटका वाची (पु॰) है ॥ १७३ ॥ प्रतिसर यह एक नाम सेनाके पश्चाद्वागका वाची (पु॰) और मंगलके लिये हाथमें बांघे हुए कांगनेका वाची (न०) है। हरि यह एक नाम यम, बाय, इन्द्र, च-न्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोडा ॥ १७४ ॥ तोता, सर्प, वामर,

इरा भ्वाक्सुराप्सु स्यात्तन्द्री निद्राप्रमीलयोः । धात्री स्यादुपमातार्थपे शितिरप्यामलक्यपि ॥ १७६ ॥ धाद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरधा कण्टकारिका । त्रिषु क्र्रेरधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रं मात्रा परिच्छदे ॥ १७७ ॥ अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कास्त्रचंऽवधारणे । आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रं कल्जं श्रोणिभार्ययोः ॥ १७८ ॥ योग्यभाजनयोः पात्रं पत्रं वाहनपक्षयोः । निदेशप्रन्थयोः शास्त्रं शस्त्रमायुधलोहयोः ॥ १७९ ॥ स्याज्यटांशुकयोनेत्रं क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः । मुखाये कोलहल्योः पोत्रं गोत्रं तु नान्नि च ॥ १८० ॥

भैंडक इन्होंका वाची (पु॰) और कपिछरंगका वाची (त्रि॰) है। क्तरा यह एक (स्त्री॰) नाम कंकर और खांड आदिका है। यात्रा यह एक (स्त्री॰) नाम सवारीका आर गमनका है ॥ १७५॥ इरा यह एक (स्त्री॰) नाम पृथ्वी, वाणी, मदिरा, पानी इन्होंका है। तन्द्री यह एक (स्त्री॰) नाम नींद्का और तन्द्राका है। धात्री यह एक (स्त्री॰) नाम धायमाता, पृथ्वी, आंवला इन्होंका है ॥ १७६ ॥ क्षद्रा यह एक (स्त्री०) नाम हीनअंगवाकी, नटनी, वेश्या, मधुमाखी, छोटी कटेळी इन्होंका है। क्षद्र यह एक नाम ऋर, नीच, अल्प इन्होंका वाची (त्रि॰) है। मात्रा यह एक (स्त्री॰) नाम परिच्छद ॥ १७७ ॥ अल्प, परिमाण इन्होंका है । आगे मात्रशब्दसे क्षीरशब्दतक (न॰) हैं । मात्र यह एक नाम सकटत्वका और निश्चयका है । चित्र यह एक नाम तसबीर और आश्चर्यका है । कलत्र यह एक नाम कटिका और भार्याका है । पात्र यह एक नाम योग्यका और पात्रका है ॥१७८॥ पत्र यह एक नाम वाहनका और पक्षका है। शास्त्र यह एक नाम आज्ञाका और शास्त्र अर्थात् व्याकरण आदि शास्त्रका है। शस्त्र यह एक नाम हथियारका और छोहेका है ॥ १७९ ॥ नेत्र यह एक नाम वृक्षकी जडका और वस्त्रके भेद तथा आंखका है। क्षेत्र यह एक नाम भार्याका और श्रीरका है। पोत्र यह एक नाम श्रूकर और हलके अग्रभागका है। सञ्जमान्छाद्ने यज्ञे सदादाने वनेऽपि च ।

श्रांतरं विषये कायेऽप्यम्बरं व्योम्नि वासिस ॥ १८१ ॥

वक्रं राष्ट्रेऽप्यक्षरं तु मोक्षेऽपि क्षीरमप्तु च ।

स्वणेंऽपि भूरिचन्द्री द्वी द्वारमाञ्जिप गोपुरम् ॥ १८२ ॥

गुहादम्भी गहरे दे रहोऽन्तिकमुपह्नरे ।

पुराऽधिकमुपर्यत्राण्यगारे नगरे पुरम् ॥ १८३ ॥

मन्दिरं चाथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ।

द्रोऽस्त्रियां भये श्रम्रे वज्रोऽस्त्री हीरके पवी ॥ १८४ ॥

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे ।

शौशीरश्चामरे दण्डेऽप्यौशीरं शयनासने ॥ १८५ ॥

पुष्करं करिहस्ताये वाद्यभाण्डमुखे जले ।

व्योम्नि सङ्गफले पद्मे तीथौंषधिविशेषयोः ॥ १८६ ॥

गोत्र यह एक नाम कुलका और नामका है ॥ १८० ॥ सत्र यह एक नाम आच्छादन, यज्ञ, सदावर्त्त, वन इन्होंका है । अनिर यह एक नाम विषय, श्रीरा, चौराहा इन्होंका है। अंबर यह एक नाम आकाशका और वस्त्र-का है ॥ १८१ ॥ चक्र यह एक नाम देशका और रथके पहियका है । अक्षर यह एक नाम मोक्षका और परब्रह्मका है । क्षीर यह एक नाम पानीका और दूधका है। भूरि, चन्द्र ये दो (पु॰) नाम सोनेके और अपिशब्दसे भूरि यह नाम परमात्माका और चन्द्र यह नाम कपूर आदिका है। गोपुर यह एक (न॰) नाम द्वारमात्रका और मोथेका है ॥ १८२ ॥ गहर यह एक (न॰) नाम गुफाका और पाखंडका है । उपहर यह एक (न॰) नाम एकांतका और समीपका है। अग्र यह एक (न॰) नाम अगाडी, अधिक, ऊपर इन्होंका है। पुर यह एक (न॰) नाम नगरका और मन्दिरका है ॥ १८३ ॥ राष्ट्र यह एक नाम देशका और उपद्रवका है और (पु॰ न॰) है। दर यह एक नाम भयका और छिद्रका है और (पु॰ न॰) है । वज्र यह एक नाम हीरेका और इन्द्रके वज्रका है और (पु॰ न॰) है ॥ १८४ ॥ तंत्र यह एक (न॰) नाम प्रधान, सिद्धान्त, सूत्रको वननेका औजार, परिच्छद इन्होंका है । औशीर यह एक नाम चमरका और दंडका वाची (पु॰) और शय्याका, आसनका वाची (न॰) है ॥ १८५ ॥ पुष्कर यह एक (न॰) नाम हाथीकी संद्रके

अन्तरमवकाशाविषपिरघानान्ति भिदेताद्थ्यें ।
छिद्रात्मीयिवनाबिहरवसरमध्येऽन्तरात्मिन च ॥ १८७ ॥
मुस्तेऽपि पिठरं राजकशेरुण्यपि नागरम् ।
शावरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् ॥ १८८ ॥
गौरोऽरुणे सिते पीते व्रणकार्येप्यरुष्करः ।
जठरः कठिनेऽपि स्याद्धस्ताद्दि चाघरः ॥ १८९ ॥
अनाकुलेऽपि चेकायो व्ययो व्यासक्त आकुले ।
उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यादनुत्तरः ॥ १९० ॥
एषां विपर्यये श्रेष्ठे दूरानात्मोत्तमाः पराः ।
स्वादुप्रियौ तु मधुरी क्ररी कठिननिर्दयौ ॥ १९१ ॥
उदारो दाल्महतोरितरस्त्वन्यनीचयोः ।
मन्दस्वच्छन्दयोः स्वरः शुश्रमुद्दीतशुक्कयोः ॥ १९२ ॥
इति रान्ताः ।

अग्रभाग, बाजा, बर्त्तनका मुख, पानी, आकाश, तळवारका मध्यभाग, कमल, तिर्थ, औषधिविशेष इन्होंका है ॥ १८६ ॥ अंतर यह एक (न०) नाम अवकारा, अवधि, परिधान, अन्तार्ध, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीय, बाहिर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा इन्होंका है ॥ १८७ ॥ पिठर यह एक (न॰) नाम नागरमोथेका और दिध मथनेकी खाईका है। नागर यह एक (न॰) नाम राजकशेस्का और सींठका है। शार्वर यह एक नाम गाढे अंधेरेका और मारनेवालेका है और वाच्यिलंगी है। आगेकेभी वर्गा-न्ततक सब राब्द (त्रि॰) हैं ॥ १८८ ॥ गौर यह एक नाम अरुण, सुपेद, पीला इन्होंका है। अरुष्कर यह एक नाम घाव करनेवालेका और भिलावेका है। जठर यह एक नाम कठिनका और पेटका है। अधर यह एक नाम नीचेका और होठका है ॥ १८९ ॥ एकाग्र यह एक नाम स्व-स्थका और एकतानका है। व्यप्र यह एक नाम बिगडे हुए चित्तवालेका भीर आकुलका है। एत्तर यह एक नाम ऊपर, उदीच्य, श्रेष्ठ इन्होंका है। अनुत्तर यह एक नाम ऊपर आदि इन तीनोंसे विपरीतपनेका और श्रेष्ठका है ॥ १९० ॥ पर यह एक नाम दूर, दूसरा, उत्तम इन्होंका है । मधुर यह एक नाम स्वादुका और प्रियका है। ऋर यह एक नाम कठो-नका और निर्दयका है ॥ १९१ ॥ उदार यह एक नाम दाताका और च्डा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

हमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥ १९३ ॥

कृतान्तानेहसोः कालश्चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।
स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥ १९४ ॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गले स्त्रियाम् ।
स्योल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः ॥ १९५ ॥
वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसपयोः ॥ १९६ ॥

मलोऽस्त्री पापविद्किद्दान्यस्त्री शूलं रुगायुधम् ।

शङ्कावपि द्वयोः कीलः पालिः स्वयश्च्यङ्कपङ्क्तिषु ॥ १९७ ॥

बढेका है। इतर यह एक नाम अन्यका और नीचका है। खैर यह एक नाम मन्दका और स्वाधीनका है। ग्रुष्ट्र यह एक नाम प्रकाशितका और सुपेदका है ॥ १९२ ॥ यहां रान्त शब्द समाप्त हुए ॥ मोलि यह एक (त्रि॰) नाम चोटी, मुकुट, बंधे हुए बाल इन्होंका है। पीलु यह एक (पु॰) नाम वृक्षविशेष, हस्ती, बाण, पुष्प इन्होंका है ॥ १९३ ॥ काल यह एक (पु॰) नाम धर्मराजका और समयका है। काळ यह एक (पु॰) नाम कलियुगका और कलहका है । कमल यह एक (पु॰ न॰) नाम मृगविद्येष, जलकमल इन्होंका है। कंबल यह एक (पु॰) नाम कंबल नाम ऊनके कपडेका और नागराजका है ॥ १९४ ॥ बिल यह एक नाम बिहर्दत्यका, करका और भेटका वाची (पु॰) है और त्वचाके संको-चका वाची (स्त्री॰) ह । बल यह एक नाम स्थूलपना, सामर्थ्य, सेना इन्होंका वाची (न॰) है और काकका और हरूका वाची (पु॰) है ॥ १९५ ॥ वातूल यह एक नाम वातिके समूहका वाची (पु॰) और वातके विकारको नहीं सहनेवाछ प्राणीका वाची (त्रि॰) है। व्याल यह एक नाम शठका वाची वाच्यिछिगी और सिंह, मेडिया आदिका और सर्पका वाची (पु॰) है ॥ १९६॥ मल यह एक नाम पाप, विष्ठा, पसीना आदि इन्होंका वाची (पु॰ न॰) है। जूल यह एक नाम रोग, हथियार इन्होंका वाची (पु॰ न॰) है। कील यह एक नाम शंकुका और अग्निक तेजका है और (पु॰ स्त्री॰) है। पाछि यह एक

कला शिल्पे कालभेदेऽप्याली सल्यावली अपि । अव्ध्यम्बुविकृती वेला कालमर्थादयोरापि ॥ १९८ ॥ बहुलाः कृतिका गावो बहुलोऽमी शितौ त्रिषु । लीला विलासिकययोरुपला सर्करापि च ॥ १९९ ॥ शोणितेऽम्भिस कीलालं मूलमाखे शिफाभयोः । जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि ॥ २०० ॥ शीलं स्वभावे सहृत्ते सस्ये हेतुकृते फलम् । छिद्नेत्ररुजोः क्रीवं समूहे पटलं न ना ॥ २०१ ॥ अधःस्वरूपयोरस्ना तलं स्याचामिषे पलम् । और्वानलेऽपि पातालं चैलं वस्नेऽघमे त्रिषु ॥ २०२ ॥

नाम कानकी छत्ता, पंक्ति, चिन्ह इन्होंका है और (स्त्री॰) है ॥१९७॥ कला यह एक (स्त्री॰) नाम शिल्फा और कालके भेदका है। आली यह एक (स्त्री॰) नाम सखीका और पंक्तिका है। केला यह एक (स्त्री॰) नाम चन्द्रमाके उदय आदिसे समुद्रके पानीकी वृद्धि और अवृद्धि अर्थात् ज्वारभाटाः, कालमर्थादा इन्होंका है ॥ १९८ ॥ बहुला यह एक (स्त्री॰) नाम कृत्तिकाओंका और गीओंका है । बहुल यह एक नाम अग्निका वाची (पु॰) और कृष्णवर्णका वाची (त्रि॰) है। छीला यह एक (स्त्री॰) नाम भोगका और क्रियाका है I उपला यह एक (स्त्री॰) नाम खांडका और पत्थरका है ॥ १९९ ॥ कीलाल यह एक (पु॰ न॰) नाम रक्तका और पानीका है। आगेके नाम कुशलशब्दतक (न॰) हैं । मूल यह एक नाम पहला, जह, मूलनक्षत्र इन्होंका है। जाल यह एक नाम समूह, सन, सूतका बना रज्जुबंध, झरोखा, विना खिळी काळिका इन्होंका है ॥ २००॥ शील यह एक नाम स्वभाव, सहत्त इन्होंका है। फल यह एक नाम वृक्ष आदिके फलका और कार्यके फलका और त्रिफला आदिका है । परळ यह एक नाम घरका छादन, नेत्रकी पीडा इन्होंका वाचक (न॰) है और समूह-का वाची प्रलक्ष्य (पु॰) नहीं है ॥ २०१ ॥ तल यह एक नाम नीचे का और स्वरूपवाची (पु॰ न॰) है। पछ यह एक नाम परभरका और मांसका है। पाताल यह एक नाम वडवाग्निका और पातालका है। चेल यह

कुकूछं शङ्कुभिः कीणें श्रेष्ठं ना तु तुषानछे । निर्णीते केवलिमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्रयोः ॥ २०३ ॥ पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु । प्रवालमङ्कुरेष्टपश्ची त्रिषु स्थूलं जढेशपि च ॥ २०४ ॥ करालो दन्तुरे तुङ्गे चारौ दक्षे च पेशलः । मूर्सेर्ऽभेकेशपि बालः स्यालोलश्चलस्रवृष्णयोः ॥ २०५ ॥

इति लान्ताः।

दवदावी वनारण्यवद्गी जन्महरी भवी ।
मन्त्री सहायः सचिवी पतिशाखिनरा घवाः ॥ २०६ ॥
अवयः शैल्रमेषाकी आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः ।
भावः सत्तास्वभावाभित्रायचेष्टात्मजन्मसु ॥ २०७ ॥

एक नाम वस्त्रका और नीचका है और नीचका वाची (त्रि॰) है ॥२०२॥ कुकूल यह एक नाम कीलोंसे आच्छादित छिद्रका और तुषकी अग्निका है। केवल यह एक नाम निश्चितका वाची (न॰) और एकका और संपूर्णका वाची (त्रि॰) है ॥ २०३ ॥ कुशल यह एक नाम सामर्थ्य, क्षेम, पुण्य इन्होंका वाची (न॰) और शिक्षाका वाची (त्रि॰) है। प्रवाल यह एक नाम अंकुरका और मूंगेका वाची (पु॰न॰) है। स्थूल यह एक नाम जडका और मोटेका है और (त्रि॰) है।। २०४ ॥ कराल यह एक (त्रि॰) नाम ऊंचे दांतींवाहेका और ऊंचेका है। पेशल यह एक (त्रि॰) नाम शतुका और चतुरका है । बाल यह एक (त्रि॰) नाम मूर्खका ओर बाल्कका है। लोल यह एक (त्रि॰) नाम चश्रालका और तृष्णावालेका है ॥ २०५॥ यहां लांत राज्द समाप्त हुए॥ दव, दाव ये दो (·go) नाम वनके और वनकी अग्निके हैं । भव यह एक (go) नाम जन्मका और महादेवका है। सिचव यह एक (पु॰) नोंम मंत्रीका स्रोर सहायका है । धव यह एक (पु॰) नाम पति, घववृक्ष, मनुष्य इन्होंका है ॥ २०६ ॥ अवि यह एक (पु॰) नाम पर्वत, मेंडा, सूर्य इन्होंका है । हव यह एक (पु॰) नाम आज्ञा, आह्वान, यज्ञ इन्होंका है। भाव यह एक (पु॰) नाम सत्ता, स्वभाव, अभिन्नाय, स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने ।

वाविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावापि निह्नवः ॥ २०८ ॥

उत्सेकामर्थयोरिच्छाप्रसरे मह उत्सवः ।

वनुभावः प्रभावे च सतां च मितिनिश्चये ॥ २०९ ॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाछोपल्लब्धये ।

श्रुद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारश्वो मतः ॥ २१० ॥

श्रुवो भभेदे छीवं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु ।

स्वो कातावात्मानि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां घने ॥२११॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च ।

शिवा गौरीफेरवयोद्देन्द्रं कलह्युग्मयोः ॥ २१२ ॥

द्रव्यासुव्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु ।

श्रीवं नपुंसकं षण्टे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥ २१३ ॥

इति वान्ताः ।

चेष्टा, आत्मा, जन्म इन्होंका है ॥ २०७ ॥ प्रसव यह एक (पु॰) नाम जरपत्ति, फल, पुष्प, गर्भमोचन इन्होंका है । निह्नव यह एक (पु॰) नाम अविश्वास, अपलाप (बकवाद), ज्ञाठपना इन्होंका हे ॥ २०८ ॥ उत्सव यह एक (प्र॰) नाम उद्गति (उपरको उठाना), कोप, इच्छाका वेग, आनन्दका अवसर इन्होंका है। अनुभाव यह एक (पु॰) नाम ं प्रभाव, सत्पुरुषोंकी बुद्धिका निश्चय इन्होंका है ॥ २०९ ॥ प्रभव यह एक (पु॰) नाम जन्मका हेत् और प्रथम ज्ञानका स्थान इन्होंका है । पारक्ष यह एक नाम कुद्रकी स्त्रीमें ब्राह्मणसे उपने पुत्रका और कास्त्रका हैं और (पु॰) है || २१० || ध्रुव यह एक नाम ध्रुव तारेका वाची (पु॰) है निश्चयका वाची (न॰) है और नित्यका वाची (त्रि॰) है। स्व यह एक नाम सगोत्रीका और आत्माका वाची (पु॰) है । अपने संबंधवां हेका वाची (त्रि॰ है और धनका वाची (पु॰ न॰) है ॥ २११ ॥ नीवी यह एक (स्त्री॰) नाम स्त्रीकी काँको वस्त्रबंधनका और मूलद्रव्यका है। शिवा यह एक (स्त्री॰) नाम पार्वतीका और गीदडीका है। इन्द्र यह एक (न॰) नाम कळहका और जोडेका है ॥ २१२ ॥ सत्व यह एक नाम वस्तु,

द्वी विशो वैश्यमनुषी द्वी चराभिमरी स्पशी ।
द्वी राशी पुश्रमेषाची द्वी वंशी कुलमस्करी ॥ २१४ ॥
रहःप्रकाशी वीकाशी निवेशी भृतिभागयोः ।
कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोखिषु ॥ २१५ ॥
पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्कुशमप्यु च ।
दशाऽवस्थानेकविषाप्याशा तृष्णापि चायता ॥ २१६ ॥
वशा श्री करिषी च स्याद् दृग्हाने ज्ञातरि त्रिषु ।
स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृषाविष ॥ २१७ ॥
प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि शिशावज्ञे च बालिशः ।
कोशोऽस्त्री कुद्रमले खड्गिपधानेऽथींघदिव्ययोः ॥ २१८ ॥
इति शान्ताः ।

प्राण, वीर्यकी अधिकता इन्होंका वाची (न॰) और प्राणीका वाची (पु॰ न॰) है । क्कीब यह एक नाम हीजडेका वाची (न॰) और अ-उसका वाची वाच्यां छंगी है ॥ २१३ ॥ यहां वान्त शब्द समाप्त हुए ॥ बिश् (शान्त) यह एक (पु॰) नाम वैश्यका और मनुष्यका है। स्पन्न यह एक (पु॰) नाम गृढ पुरुषका और युद्धका है। राशि यह एक (पु॰) नाम समूहका और मेष आदि राशिका है । वंश यह एक (पु॰) नाम कुरुका और बांसका है ॥ २१४ ॥ वीकाश यह एक (पु॰) नाम एकान्तका और प्रकाशका है। निर्वेश यह एक (पु॰) नाम तनखाका और भागका है। कीनाश यह एक नाम यमका वाची (पु॰) है। क्षद्र-रोगका और किसानका वाची (त्रि॰) है ॥ २१५ ॥ अपदेश यह एक (पु॰) नाम पद, रुक्ष्य, निमित्त इन्होंका है । कुञ यह एक (पु॰न॰) नाम डामका और रामचन्द्रके पुत्रका है। दशा यह एक (स्त्री•) नाम अनेक प्रकारकी बाल्य आदि अवस्थाका और वस्त्रके अंतका है। आजा यह एक (स्त्री॰) नाम लंबी तृष्णाका और दिशाका है ॥ २१६ ॥ वशा यह एक (स्त्री॰) नाम स्त्रीका और हथिनीका है। दश् (शान्त) यह एक नाम ज्ञानका और ज्ञाताका वाची (त्रि॰) है। हाष्ट्रका वाची (स्त्री॰) है। कर्कश यह एक (त्रि॰) नाम विवेकरहित, कठोर, दुष्ट स्पर्शवाला इन्होंका है ॥ २१७ ॥ प्रकाश यह एक (त्रि॰) नाम अखंत सुरमत्स्यावनिमिषौ पुरुषावात्ममानवौ ॥ २१९ ॥
काकमत्स्यात्स्याौ घ्वाक्सी कसौ तु तृषवीरुधी ।
अभीषुः प्रग्रहे रङ्मौ प्रेषः प्रेषणमर्दने ॥ २२० ॥
पक्षः सहायेऽप्युष्णीषः शिरोवेष्टिकरीटयोः ।
शुक्रले मूषिके श्रष्ठे सुकृते वृषमे वृषः ॥ २२१ ॥
खूतेऽसे आरिफलकेऽप्याकर्षोऽयाक्षमिन्द्रिये ।
ना ध्ताङ्को कर्षचके व्यवहारे कलिद्धमे ॥ २२२ ॥
कर्ष्वाता करीषाग्रिः कर्ष्ः कुल्याभिधायिनी ।
पुंभावे तिक्रयायां च पौरुषं विषमप्सु च ॥ २२३ ॥
उपादानेऽप्यामिषं स्याद्पराधेऽपि किल्बिषम् ।
स्यादृष्टी लोकधात्वंशे वरसरे वर्षमित्रियाम् ॥ २२४ ॥

प्रसिद्धका और घामका है। बालिश यह एक (त्रि॰) नाम बालकका और मूर्खका है। कोश यह एक नाम फूलकी कली, तलवारका घर, र्घनसमूह, शक्यमेद इन्होंका है और (पु॰न॰) है ॥२१८॥ यहां शान्त इाब्द् समाप्त हुए ll अनिमिष यह एक (पु॰) नाम देवताका और भच्छका है। पुरुष यह एक (पु॰) नाम आत्माका और मनुष्यका है ॥ २१९ ॥ ध्वांक्ष यह एक (पु॰) नाम काकका और बगला आदिका है। कक्ष यह एक (पु॰) नाम तृणका और वेलका है। अभीषु यह एक (पु॰) नाम घोडे आदिकी रस्तीका और किरणका है। प्रेष यहे एक (पु॰) नाम प्रेषणका और मर्दनका है ॥ २२० ॥ पक्ष यह एक (पु॰) नाम सहायका और पन्द्रह दिनोंका है । उच्छीष यह एक (पु॰-न॰) नाम शिरकी पगढी आदिका और मुकुटका है। वृष यह एक (पु॰) नाम वीर्यवाला, मूषा, श्रेष्ठ, सुकृत, बैल इन्होंका है ॥ २२१ ॥ आकर्ष यह एक (पु॰) नाम जूवा, पाञ्चा, जूवाकी पीठिका इन्होंका है । अक्ष यह एक नाम इन्द्रियका वाची (न॰) है और जूवाका अंग, कर्ष (तोष्ठ), चक्र, व्यवहार, बहेडा इन्होंका वाची (पु॰) है ॥ २२२ ॥ कर्ष् यह एक नाम वात और अरनेकी अग्निका वाची (पु॰) और कर्षू नदीका वाची (स्त्री॰) है। पौरुष यह एक (न॰) नाम पुरुषपनेका और पुरुषके कर्मका है। विष यह एक (न) नाम पानीका और जहरका है ॥ २२३ ॥ आमिष यह एक

प्रेक्षा वृत्येक्षणं प्रज्ञा भिक्षा सेवार्थना भृतिः । त्विट् शोभापि त्रिषु परे न्यक्षं कात्स्न्येनिकृष्टयोः ॥ २२५ ॥ प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षो रूक्षस्त्वप्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ २२६ ॥

इति षान्ताः ।
रिविश्वेतच्छदौ हंसौ सूर्यवही विभावस् ।
वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥ २२७ ॥
शृंगारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।
गुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे ॥ २२८ ॥
देवभेदेऽनळ रश्मौ वस् रत्ने धने वसु ।
विष्णौ च वेधाः स्त्री त्वाशीहिंताशंसाहिदंष्ट्योः ॥ २२९ ॥

(पु॰ न॰) नाम उपादानका और उत्कोच (रिशवत) का है । किल्बिष यह एक (न॰) नाम अपराधका और रोगका है। वर्ष यह एक नाम वर्षा, जम्बूद्वीपका अंश भरतखंड आदि, संवत्सर इन्होंका है और (पु॰ न॰) है ॥ २२४ ॥ प्रेक्षा यह एक (स्त्री॰) नाम नाच देख-नेका और बुद्धिका है। भिक्षा यह एक (स्त्री॰) नाम सेवा, मांगना, तनखा इन्होंका है। त्विष् (पान्त) यह एक (स्त्री) नाम ज्ञोभाका और कांतिका है। वक्ष्यमाण तीन शब्द वाच्यिलिंगी हैं। न्यक्ष यह एक नाम संपूर्णपनेका और नीचेका है ॥ २२५ ॥ अध्यक्ष यह एक नाम प्रत्यक्ष और अधिकृतका है। रूक्ष यह एक नाम प्रेमरहितका और रूखेका हैं ॥ २२६ ॥ यहां षान्त शब्द समाप्त हुए ॥ हंस यह एक (पु॰) नाम सूर्यका और हंसविशेषका है । विभावसु यह एक (पु॰) नाम सूर्यका और अग्निका है। वत्स यह एक (पु॰) नाम गौके बच्चेका और वर्षका है। दिवौ-कस्यह एक (पु॰) नाम पपेयेका और देवताओंका है ॥२२७॥ रस यह एक (पु॰) नाम शृंगार आदि, विष, वीर्य, गुण, प्रीति, द्रव इन्होंका है। उत्तंस, अवतंस ये दो (पु॰ न॰) नाम कानके गहनेके और शिरके गह-नेके हैं ॥२२८॥ वसु यह एक नाम देवता (वसुदेवता), अग्नि, किरण इन्हों-का वाची (पु॰) है। रत्नका और धनका वाची (न॰) है। वेधस् (सान्त) यह एक (पु॰) नाम विष्णुका और ब्रह्माका है । आशिख यह एक (स्त्री ?) नाम हितकी चाहनाका और सर्फकी ढाढका है ॥२२९॥ ठालसे प्रार्थनीत्सुक्ये हिंसा चौर्यादिकर्म च ।
प्रस्तशापि भूद्यावो रोदस्यो रोदसी च ते ॥ २३० ॥
ज्वालाभासी न पुंस्यिक्ज्योतिर्मद्योत्तर्मद्योत्तर्मद्यात्व ।
पापापराध्योरागः सगवाल्यादिनोर्वयः ॥ २३१ ॥
तेजःपुरीवयोर्वचों महस्तूत्सवतेजसोः ।
रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे राही ध्वान्ते गुणे तमः ॥ २३२ ॥
छन्दः पद्येऽभिलाचे च तपः कृच्छादिकर्म च ।
सहो बलं सहा मागों नमः सं श्रावणो नभाः ॥ २३३ ॥
ओकः सद्माश्रयश्चीकाः पयः सीरं पयोऽम्ब च ।
ओजो दीती बले स्नोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥ २३४ ॥

छाछसा यह एक (स्त्री०) नाम प्रार्थनाका और आनन्दका है। हिंसा यह एक (स्त्री॰) नाम चोरी और मारना आदि कर्मका है। प्रसू यह एक (स्त्री ॰) नाम माताका और घोडीका है। रोद्मु (सान्त-न॰), रोदसी (स्त्री॰) ये दो नाम पृथ्वी आकाशके हैं ॥ २३०॥ अचिस् यह एक नाम ज्वालाका और प्रकाशका है और(पु॰) नहीं है। ज्योतिस् यह एक (न॰) नाम नक्षत्र, प्रकादा, दृष्टि इन्होंका है। आगस् यह एक (न॰) नाम पापका और अपराधका है । वयस् यह एक(न॰) नाम पक्षीका और बाल्य योवन अवस्था आदिका है ॥२३१॥ वर्चम यह एक (न॰) नाम तेजका और विष्ठाका है। महस् यह एक (न॰) नाम उत्सवका और तेजका है। रजस् यह एक (न॰) नाम रजोगुणका और स्त्रीके फूलका है। तमस् यह एक (न॰) नाम राहु, अंधेरा, तमो-गुण इन्होंका है ॥ २३२ ॥ छन्दम् यह एक (न॰) नाम गायत्री आदि छन्दका और इच्छाका है । तपस् यह एक (न॰) नाम सांतपन और चान्द्रायण आदि व्रतका है। सहस् यह एक नाम बलका वाची (न॰) है और मार्गका वाची (पु॰) है । नभस यह एक नाम आका-ज्ञका वाची (न॰) और श्रावणका वाची (पु॰) है ॥२३३॥ ओकस् यह एक नाम मकानका वाची (न॰) और आश्रयका वाची (पु॰) है। पयस् यह एक (न॰) नाम दूधका और पानीका है। ओजम् यह एक (न॰) नाम कांतिका और बखका है। स्रोतस् यह एक (न॰) नाम इन्द्रियका और

तेजः प्रभावे दीती च बल्ले शुक्रेऽप्यतिश्रपु ।
विद्वान्विदंश्य बीभत्तो हिंस्रेऽप्यतिश्रय त्वमी ॥ २३५ ॥
वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्कनीयांस्तु युवाल्वयोः ।
वरीयांऽस्तूरुवरयोः साधीबान्साधुबाढयोः ॥ २३६ ॥
इति सान्ताः ।
दल्लेऽपि बर्ह निबेन्सोपरागार्कादयो यहाः ।

दछेऽपि वह निर्वेन्घोपरागाकोदयो यहाः । द्रायोपीडे काथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥ २३७ ॥ तुल्लासुत्रेऽखादिरश्मो प्रयाहः प्रयहोऽपि च । पत्नीपरिजनादानमूल्लशापाः परियहाः ॥ २३८ ॥ दारेषु च गृहाः श्रोण्यामप्यारोहो वरिक्षयाः । व्यूहो वृन्देऽप्यहिर्वेतेऽप्यप्रीन्द्रकोस्तमोऽपहाः ॥ २३९ ॥

नदीके बेगका है ॥ २३४ ॥ तेजस् यह एक (न०) नाम प्रभाव, तेज, बरू, वीर्य इन्होंका है। इससे आगे सकारान्त शब्दोंकी समाप्तिपर्य्यन्त सब शब्द (त्रि॰) हैं। विद्वस् यह एक नाम जाननेवालेका और आरमज्ञानीका हैं । बीभत्स यह एक नाम ऋरका और रसभेदका है । ये वक्ष्यमाण(आगे कहे जानेवाले) ज्यायस्से लेकर साधीयस्त्रब्द पर्य्यन्त अतिशयके वाची हैं ॥ २३५ ॥ ज्यायस् यह एक नाम अत्यन्त वृद्धका और अत्यंत स्तृतिके योग्यका है । कनीयस् यह एक नाम अत्यंत जवानका और अत्यंत अरुपका है। वरीयम् यह एक नाम अत्यंत बडेका और अत्यंत श्रेष्ठका है। साधी-यस् यह एक नाम अत्यंत साघुका और अत्यंत प्रतिज्ञावालेका है ॥२३६॥ यहां सान्त शब्द समाप्त हुए ॥ बई यह एक (पु॰ न॰) नाम फ्लेका, और मोरके पंसका है। यह यह एक (पु॰) नाम आग्रहविशेष, ग्रहण, सूर्य आदि यह इन्होंका है। आगेके वर्गान्ततक सब शब्द (पु॰) हैं। निव्यूह यह एक नाम दार, मुकुट, काथका रस, घर आदिकी भीतिमें गाढी हुई दो कीले इन्होंका है ॥ २३७ ॥ प्रयाह, प्रयह ये दो नाम तराजूकी डोरी और घोडे आदिकी रस्सी इन्होंका है। परिग्रह यह एक नाम भार्या, कुटुम्ब, अंगीकार, मूल, शाप इन्होंका है ॥ २३८ ॥ गृह यह एक नाम स्त्रीका वाची बहुक्चनान्त (पु॰) है और मकानका वाची (न॰) है। आरोह यह एक नाम उत्तम स्त्रीकी कटिका और हाथीके

परिच्छदे नृपाईंऽर्थे परिवहीं-इति हान्ताः ।

ऽव्ययाः परे । आडीषदर्थेऽभिव्यासी सीमार्थे धातुयोगने ॥ २४० ॥ आ प्रमृद्धाः स्मृती वाक्येऽप्यास्तु स्यात्कोपपीढयोः । पापकुत्सेषदर्थे कु धिङ् निर्भत्सनिन्दयोः ॥ २४१ ॥ चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुखये । स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादी प्रकर्षे छड्डनेऽप्यति ॥ २४२ ॥ स्वित्मश्रे च वितके च तु स्याद्धेदेऽबधारणे ॥ सकुत्सहैकवारे चाप्याराह्रसमीपयोः ॥ २४३ ॥

चढनेका है। व्यूह यह एक नाम समूहका और सेनाके स्थित करनेका है। अहि यह एक नाम वृत्राक्षरका और सर्पका है। तमीपह यह एक नाम अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य इन्होंका है ॥ २३९ ॥ परिवर्ह यह एक नाम राजाके योग्य सुपेद छत्र आदिका और चंदोवा वस्त्र आदिका है ॥ यहां हान्त शब्द समाप्त हुए ॥ इससे आगे अव्यय हैं । आङ् यह एक नाम ईषद्र्थ अर्थात् थोडा, अभिव्याप्ति, सीमार्थ, धातुयोगज इन्होंका वाची अव्यय है और इसका डकार अनुबंधके लिये है । ईषद्धीं आपिंगल अधीत् कुछ पिंगल है। अभिन्याप्तिमें जैसे-' आ सत्यलोकात ' अर्थात सत्यलोकको अभिन्याप्त होके । सीमार्थमें जैसे-' आसमुद्रं राजदंडः ' अर्थात समुद्रतक राजदंड है। धातुयोगमें जैसे-' आहरति भ् अर्थात् आक्रमण करता है ॥ २४० ॥ जो प्रगृह्यसंज्ञक आ है वह स्मरणमें और वाक्यके पूरनेमें है । आः यह कोपमें और पीडामें वर्त्तता है। कु यह पाप, निन्दा, थोडा इन्होंमें वर्त्तता है। धिक् यह झिडकनेमें और निन्दामें वर्त्तता है॥ २४१ ॥ च यह अन्वाचय, समाहार, इतरेतर, समुच्चय इन्होंमें वर्त्तता है । स्वस्ति यह आशीर्वाद, कुश्रूल, पुण्य आदि इन्होंमें वर्त्तता है । अति यह अत्यंतीमें और छंघनमें वर्त्तता है ॥ २४२ ॥ स्वित् यह प्रश्नमें और तर्कमें वर्त्तता है। तुयह निश्चयमें और भेदमें वर्त्तता है। सकृत यह सहार्थमें और एकवारमें वर्त्तता है।आरात यह एक नाम दूरका और समीपका है॥२४३॥ प्रतीच्यां चरमे पश्चादुताप्यर्थविकल्पयोः ।
पुनः सहार्थयोः शश्वत्साक्षात्प्रत्यक्षतुस्ययोः ॥ २४४ ॥
स्वेदानुकम्पासंतोषविस्मयामन्त्रणे वत ।
हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषाद्योः ॥ २४५ ॥
प्राति प्रतिनिची वीप्सालक्षणादी प्रयोगतः ।
इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमातिषु ॥ २४६ ॥
प्राच्यां पुरस्तात्प्रयमे पुरार्थेऽप्रत इत्यपि ।
यावत्तावच्च साकल्येऽवधी मानेऽवधारणे ॥ २४० ॥
मङ्गलानन्तरारम्भप्रश्रकात्स्येष्ययो अथ ।
वृथा निरर्थकाविध्योनीनाऽनेकोभयार्थयोः ॥ २४८ ॥
नृष्ट्रलायां विकल्पे च पश्चात्सादृश्ययोरन् ।
प्रश्रावधारणाऽनुज्ञानुनयामन्त्रणे ननु ॥ २४९ ॥
गहीसमुच्चयप्रश्रशङ्कासंभावनास्वपि ।
उपमायां विकल्पे वा सामि त्वधे जुगुप्सिते ॥ २५० ॥

पश्चात यह एक नाम पश्चिम दिशाका और अन्त्यका है। उत यह एक नाम समुचयका और विकल्पका है । शश्वत् यह एक नाम वारं-वारका और सहार्थका है । साक्षात् यह एक नाम प्रत्यक्षका और तुल्यका है ॥ २४४ ॥ बत यह एक नाम खेद, द्या, संतोष, आश्चर्य, ग्रप्त बोलना इन्होंका है । हंत यह एक नाम आनन्द, दया, वाक्यका आरंभ, विषाद इन्होंका है ॥ २४५ ॥ प्रति यह एक नाम प्रतिनिधि, व्याप्त होनेकी इच्छा, रूक्षणा, इत्थंभूत आख्यान आदि इन्होंका शिष्टप्रयोगके अनुसार है। इति यह एक नाम हेतु, प्रकरण, प्रकाश, निश्वय, समाप्ति इन्होंका है ॥ २४६ ॥ पुरस्तात् यह एक नाम पूर्विद्शा, प्रथम, बीता हुआ, अगाडी इन्होंका है। यावत्, तावत् ये दो नाम सकरूपना, अवधि, परिमाण, नि-श्रय इन्होंका है ॥ २४७ ॥ अथो, अथ ये दो नाम, मंगल, अनंतर, आरंभ, प्रश्न, सकलपना इन्होंका है। वृथा यह एक नाम निरर्थकका और विधिसे हीनका है । नाना यह एक नाम अनेकार्थका ओर उभयार्थका है ॥ २४८ ॥ नु यह एक नाम पूछनेका और विकल्पका है। अनु यह एक नाम पिछेका और सहज्ञपनेका है। ननु यह एक नाम प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, सान्त्वन, संबोधन इन्होंका है ॥२४९॥ अपि यह एक नाम निन्दा, अमा सह समीपे च कं वारिणि च मूर्धनि ।
इवेत्थमयंयोरेवं नूनं तर्केऽर्यनिश्चय ॥ २५१ ॥
तृष्णीमयं सुखे जोषं कि पृच्छायां जुगुप्सने ।
नाम प्राकाश्यसंभाव्यकोषोपगपकुत्सने ॥ २५२ ॥
अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम् ।
हुं वितर्के परिप्रश्ने समयान्तिकमध्ययोः ॥ २५३ ॥
पुनरप्रथमे भेदे निर्निश्चयनिषेधयोः ।
स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा ॥ २५४ ॥
ऊर्यूरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम् ।
स्वर्गे परे च लोके स्वर्गातीसंभाव्ययोः किल ॥ २५५ ॥
निषेधवाक्यालंकारंजिज्ञासानुनये खलु ।
समीपोभयतः शीव्रसाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ २५६ ॥

समुच्चय, प्रश्न, शंका, संभावना इन्होंका है। वा यह एक नाम उपमाका और विकल्का है। सामि यह एक नाम आधेका और निन्दाका है॥२५०॥ अमा यह एक नाम साथका और समीपका है। कं यह एक नाम पानी-का और शिरका है। एवं यह एक नाम सदशफ्नेका और निश्चयका है। नूनं यह एक नाम तर्कका और अर्थके निश्चयका है ॥ २५१ ॥ तूष्णीं यह एक नाम मीनका है। जोषं यह एक नाम सुखका है। किं यह एक नाम पुंछनेका और निन्दाका है । नाम यह एक नाम प्रकाशफ्ना, कथंचिद्र्थ, क्रोघ, वैरसिहत अंगीकार, निन्दा इन्होंका है ॥२५२॥ अलं यह एक नाम परिपूर्णता, गहना, सामर्थ्य, निवारण इन्होंका है। हुं यह एक नाम वितर्कः का और प्रश्नका है । समया यह एक नाम समीपका और मध्यका है ॥२५३॥ पुनर् यह एक नाम वारंवार और भेदका है । निर् यह एक नाम निश्चयका और निषेधका है। पुरा यह एक नाम प्रबंध, बहुत दिनोंका बीता हुआ, समीप आनेवाला इन्होंका है ॥ २५४ ॥ उररी, उरी, उररी ये तीन नाम विस्तारके और अंगीकारनेके हैं। खर यह एक नाम स्वर्गका और परछोकका है। किल यह एक नाम वार्ताका और संभाव्य-का है ॥ २५५ ॥ ख़्लू यह एक नाम निषेध, वाक्यकी शोभा, जाननेकी नामप्राकाश्ययोः प्रादुर्मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि । तिरोऽन्तर्थौ तिर्यगर्थे हा विषादशुगर्तिषु ॥ २५७ ॥ अहहेत्यद्धते खेदे हि हेताववधारणे ।

इति नानार्थवर्गः ॥ ३ ॥

अथ अव्ययवर्गः १।

विरायविररात्रायचिरस्याद्याश्चिरार्थकाः ।
मृद्धः पुनः पुनः शश्वदमीक्ष्णमसकृत्समाः ॥ १ ॥
स्नाग्झिटत्यञ्जसाह्नाय द्राङ् मङ्श्च सपदि द्वते ।
बछवत्सुष्ठु किमुत स्वत्यतीव च निर्भरे ॥ २ ॥
पृथिवनान्तरेणते हिरुङ् नाना च वर्जने ।
यत्तद्यतस्ततो हेतावसाकल्ये तु चिञ्चन ॥ ३ ॥
कदाचिज्ञातु सार्षे तु सार्कं सत्रा समं सह ।
आनुकूल्यार्थकं प्राध्यं व्यर्थके तु वृथा मुघा ॥ १ ॥

इच्छा, नम्रपना इन्होंका है। अभितस् यह एक नाम समीप, दोनों तरफसे, श्रीघ्र, सकलपना, सन्मुख इन्होंका है॥२५६॥ प्रादुर् यह एक नाम नामका और प्रकाशपनेका है। मिथस् यह एक नाम आपसका और एकान्तका है। तिरस् यह एक नाम अंतर्धानका और तिरछेपनेका है। हा यह एक नाम विषाद, शोक, पीडा इन्होंका है॥२५७॥ अहह यह एक नाम अद्भुतका और खेदका है। हि यह एक नाम हेतुका और निश्चयका है। इति नानार्थवर्गः॥३॥

अथ अव्ययवर्गः । चिराय, चिररात्राय, चिरस्य, चिरण, चिरात, चिरं ये छः चिर अर्थात् बहुत देरके नाम हैं । मुहुस, पुनः, पुनर, शक्षत, अमीक्षणं, असकृत् ये पाचों नाम वारंवारके हैं और अर्थसे समान हैं ॥ १ ॥ स्नाक्, झटिति, अंजसा, अद्वाय, द्राक्, मंक्षु, सपिद् ये सात नाम शीक्रके हैं । बळवत्, सुष्टु, किमुत, सु, अति, इव ये छः नाम अतिश्यके हैं ॥२॥ पृथक्, विना, अन्तरेण, ऋते, हिरुक्, नाना ये छः नाम वर्जनेके अर्थमें हैं । यत्, तत्, यतः, ततः ये चारों नाम कारणवाचक हैं । चित्, चन ये दो नाम असंपूर्णवाचक हैं ॥३॥ कदाचित्, जातु ये दो नाम किसी

आहो उताहो किमृत विकल्प कि किमृत च !
तु हि च स्म ह वै पादपूरणे पूजने स्वति ॥ ५ ॥
दिवादीत्यथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।
तिर्यगर्थे साचि तिरोऽप्यथ संबोधनार्थकाः ॥ ६ ॥
स्युः प्याद पाडक्क हे हे भोः समया निकषा हिरुक् ।
अतिर्वेते तु सहसा स्यात्पुरः पुरतोऽमतः ॥ ७ ॥
स्वाहा देनहविदीने श्रीषद् वीषद् वषद् स्वधा ।
किंचिदीषन्मनागल्पे मेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ ८ ॥
व वा यथा तथेवैवं साम्येऽहो ही च विस्मये ।
मोने तु तूर्णी तूष्णीकां सद्यः सपिद तत्क्षणे ॥ ९ ॥
दिष्ट्या समुपजाषं चेत्यानन्देऽथान्तरऽन्तरा ।
अन्तरेण च मध्ये स्युः मसहा तु हटार्थकम् ॥ १० ॥

कालके हैं। सार्ध, साकं, सत्रा, समं, सह ये पांच नाम साथके हैं। प्राध्वं यह एक नाम अनुकूलपनेका है। वृथा, मुधा ये दो नाम व्यर्थके हैं ॥४॥ आहो, उताहो, कियुत, किं, कियु, उत ये छः नाम विकल्फे हैं।तु, हि, च, स्म, ह,वैये छः नाम श्लोकके पादको परण करनेमें वर्त्तते हैं । सु, अति ये दा नाम पूजनके हैं ॥ ६ ॥ दिवा यह एक नाम दिनका है। दोषा, नक्तं ये दो नाम रात्रिके हैं। साचि, तिरस् ये दो नाम तिरछेके हैं ॥ ६ ॥ प्यार्, पार, अंग, हे, हे, भोस् ये छः नाम संबोधनके हैं। समया, निकषा, हिसक् ये तीन नाम समीपपनेक हैं । सहसा यह एक नाम नहीं तर्कित किये (अकस्मात)-का है। पुरः, पुरतः, अग्रतः ये तीन नाम अगाडीके हैं॥ ७ ॥ स्वाहा, श्रीषर्, वीषर्, वषर्, स्वधा इन्होंमें आदिके चार नाम देवताओंके अर्थ हविदीनविशेषके हैं और खधा यह एक नाम पितरोंके अर्थ देनेमें प्रसिद्ध है। किश्वित, ईपत, मनाक् ये तीन नाम अल्पके हैं। प्रेत्य, असुत्र ये दो नाम अन्यजनमके हैं ॥८॥ व, वा, यथा, तथा, इव, एवं ये छः नाम तस्यके हैं। अहो, ही ये दो नाम आश्चर्यके हैं। तूष्णीं, तूष्णीकां ये दो नाम मीन अर्थात् चुपकेके हैं। सद्यः, सपदि ये दो नाम तत्कारके हैं ॥ ९ ॥ दिष्ट्या, समुपनोषं ये दो नाम आनन्दके हैं। अंतरे, अंतरा, अंतरेण ये युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थानेऽभीक्षं शश्वदनारते ।
अभावे नह्य नो नापि मास्म मार्छं च वारणे ॥ ११ ॥
पक्षान्तरे चेद्यदि च तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।
प्राकाश्ये प्रादुराविः स्थादोमेवं परमं मते ॥ १२ ॥
समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वागित्यपि ।
अकामानुमतौ काममस्योपगमेऽस्तु च ॥ १३ ॥
ननु च स्याद्विरोधोक्तौ कञ्चित्कामप्रवेदने ।
निःषमं दुःषमं गह्यं यथास्वं तु यथायथम् ॥ १४ ॥
मृषा मिथ्या च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ।
स्युरेवं तु पुनर्वे वेत्यवधारणवाचकाः ॥ १५ ॥
प्रागतीतार्थकं नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।
संवद्वर्षेऽवरे त्ववागामेवं स्वयमात्मना ॥ १६ ॥

तीन नाम मध्यके हैं । प्रसह्य यह एक नाम हठका है ॥१०॥ सांप्रतं,स्थाने , ये दो नाम युक्तके हैं । अभीक्ष्णं, शश्वत् ये दो नाम निरंतरके हैं । नाहि, अ, नो, न ये चार नाम अभावके हैं । मारम, मा, अछं ये तीन नाम मने करनेके हैं ॥ ११ ॥ चेत्, यदि ये दो नाम अन्यपक्षके हें । अद्धा, अंजसा ये दो नाम तत्वेक हैं। प्रादुस्, आविस् ये दो नाम स्पष्टपनेक हैं। ॐ, एवं, परमं ये तीन नाम अंगीकारके हैं ॥ १२ ॥ समंततः, परितः, सर्वतः, विष्वक् ये चार नाम सब ओरके हैं । कामं यह एक नाम विना इच्छा अनुमतिका है । अस्तु यह एक नाम गुणोंमें दोष आरोपण करनेका और अंगीकारका है।।१३॥ ननु यह एक नाम विरोधवचनका है। कचित् यह एक नाम वांछितको पूछनेका है। निःषमं, दुःषमं ये दो नाम निन्दा-के योग्यके हैं । यथास्वं, यथायथं ये दो नाम यथायोग्यके हैं ॥ १८॥ मृषा, मिथ्या ये दो नाम असत्यके हैं । यथार्थ, यथातथं ये दो नाम सत्यके हैं । एवं, तु, पुनर्, वे, वा ये पांच नाम निश्चयके हैं ॥ १५॥ प्राक् यह एक नाम शिते हुएका ह । नूनं, अवश्यं ये दो नाम निश्चयके हैं। संवत् यह एक नाम वर्षका है । अवीक् यह एक नाम पीछेका है । आं, एवं ये दो नाम अंगीकारके हैं। स्वयं यह एक नाम अपनेका है ॥ १६॥

अल्पे नीचैर्महत्युच्चैः प्रायो भूम्न्यहते अनैः ।
सना नित्ये बहिबाह्ये स्मातीतेऽस्तमद्भेने ॥ १७ ॥
अस्ति सत्त्वे रुषोक्तावु ऊं प्रश्नेऽनुनये त्विय ।
हुं तर्के स्यादुषा रात्रेरवसाने नमो नती ॥ १८ ॥
पुनरर्थेऽङ्ग निन्दायां दुष्ठु सुष्ठु प्रशंसने।
सायं साये प्रगे प्रातः प्रभाते निकषाऽन्तिके ॥ १९ ॥
परुत्परार्थेषमोऽन्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।
अद्यात्राह्वचथ पूर्वेऽहीत्यादी पूर्वोत्तरापरात् ॥ २० ॥
तथाऽधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्यराद्यः।
उभयद्यश्वोभयेद्यः पर त्विह परेद्यवि ॥ २१ ॥

नीचेस् यह एक नाम अल्फा है। उच्चेस् यह एक नाम बढेका और उंचेका है। प्रायः यह एक नाम बहुतका है। शनैस् यह एक नाम ही-लेका है। सना यह एक नाम नित्यका है। बहिस् यह एक नाम बाहरका है। सम यह एक नाम बीते हुएका है। अस्तं यह एक नाम द्र्ननेक अभा-वका है ॥ १७॥ अस्ति यह एक नाम सत्वका और प्रसिद्धका है । उ यह एक नाम कोफ्के वचनका है। ऊं यह एक नाम प्रश्नका है। अयि यह एक नाम अनुनयका है । हुं यह एक नाम तर्कका है । उषा यह एक नाम रात्रिके अन्तका है। नमस् यह एक नाम प्रणामका है ॥ १८॥ अंग यह एक नाम वारंवारका है। दुष्ठ यह एक नाम निन्दाका है। सुष्ठ यह एक नाम प्रशंसाका है। सायं यह एक नाम सांझका है। प्रगे, प्रातर् ये दो नाम अभातके हैं। निकषा यह एक नाम समीक्का है ॥१९॥ वरुत् यह एक नाम 'पहले वर्षका है। परारि यह एक नाम पहलेसे पहले वर्षका है। ऐषम यह एक नाम वर्त्तमान वर्षका है। अद्य यह एक नाम इस दिनका है। पूर्व-चुस् यह एक नाम पहले दिनका है । उत्तरेद्धम् यह एक नाम अगले दि-नका है। अपरेग्रस यह एक नाम अपर दिनका है। अधरेग्रस यह एक नाम निचे दिनका है। अन्येग्रुस् यह एक नाम अन्य दिनका है। अन्य-तरेशुस् यह एक नाम अन्यतर दिनका है। इतरेशुस् यह एक नाम इतर अर्थात् अन्यदिनका है ॥ २० ॥ उभयग्रम् , उभयग्रम् ये दो नाम दोनों ह्यो गतेऽनागतेऽद्वि स्वः परश्वस्तु परेऽहिन । तदा तदानीं युगपदेकदा सर्वदा सदा ॥ २२ ॥ एतर्हि संप्रतीदानीमधुना सांप्रतं तथा । दिग्देशकाले पूर्वादी प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥ २३ ॥

इत्यव्ययवर्गः ॥ ४ ॥

अथ छिंगादिसंग्रहवर्गः ५।

सिंडिङ्गशास्त्रः सत्रादिकृत्तद्धितसमासनैः। अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोत्रयेत्॥१॥

दिनोंके हैं। परेदावि यह एक नाम परिदेनका है ॥ २१ ॥ ह्यस् यह एक नाम बीते हुए दिनका ह । श्वस् यह एक नाम अगले दिनका है। परश्वस् यह एक नाम परसों दिनका है। तदा, तदानों ये दो नाम तिस कालके हैं। युगपत, एकदा ये दो नाम एक कालके हैं। सर्वदा, सदा ये दो नाम सब कालके हैं। २२ ॥ एतिई, संप्रति, इदानीं, अधुना, सांप्रतं, ये पाँच नाम इस कालके हैं। तथा यह समुच्चयार्थक है। प्राक् यह एक नाम पूर्वदिशा, पूर्वदेश, पूर्वकाल इन्होंका है। उदक् यह एक नाम उत्तर दिशा, उत्तर देश, उत्तर कालका है। प्रत्यक् यह एक नाम पश्चिम दिशा, पश्चिम देश, पश्चिम काल इन्होंका है। अर्वाक् यह एक नाम दक्षिण दिशा, दक्षिण देश, दिश्षण काल इन्होंका है। २३॥ इति अन्ययवर्गः॥ ४॥

अय िंगादिसंग्रहवर्गः । िंग्रशास्त्र अर्थात् पाणिनिआदिसे कहे हुए िंग्रानुशासनसहित सन् आदि प्रत्ययोंसे बने हुए चिकीषी आदि शब्दोंसे और कृदंतसे बने हुए श्वपाक आदि शब्दोंसे और तिद्धित प्रत्ययोंसे बने हुए अण् आद्यंत शब्दोंसे और समाससे उपने अदंतोत्तरपद हिंगु आदिसे कहे हुए शब्दोंसे और बहुधा करक पहले नहीं कहे हुए शब्दोंसे यह संग्रह किया जाता है । इस संग्रहवर्गमें संकीर्णवर्गकी तरह िंगको विचारना । उनमें प्रकृतिक अर्थसे जसे—" अर्द्धचीः पुंसि च " और प्रत्ययके अर्थसे क्या—" स्त्रियां क्तिन् " आर " प्रकृत्यथांदीः " इस आद्यशब्दि किया-विशेषण सर्वदा नपुंसकलिंग आर एकवचनमें रहता है । जिसे—" शोभनं लिङ्गशेषविधिव्यीपी विशेषेयेधवाधितः ।
स्त्रियामीदृद्धिरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च ॥ २ ॥
नाम विद्युन्निशावङ्घीवीणादिग्भूनदीहियाम् ।
अदन्तिद्विगुरेकार्थो न स पात्रयुगादिभिः ॥ ३ ॥
तल् वृन्दे येनिकटचत्रा वरमैयुनिकादिवुन् ।
स्त्रीभावादावनिक्तिण्ण्वुल्णच्ण्युच्ययव्युजिञङ्निशाः ॥ ४ ॥

'पचित '' आदि ॥ १ ॥ सन् आदि, कृत् , तद्धित, समास इन्होंसे उत्पन्न विषयवाला पूर्वीक्त शब्दोंके लिंगसे जो अन्यिकिंग है वह लिंग शेष है। उसकी विधिव्यापी अर्थात् अपने विषयकी व्यापक है। जो पहले कही गई भीर यहां कहीं गई विशेषविधियोंसे बाधित न हो तबही व्यापी हो सक्ता है। क्योंकि अपवादविषय छोडकर उत्सर्ग सब स्थानोंमें होता है। इसलिये लिंग विशेषविधिक्रप उत्सर्गभूतके स्वर्ग आदि वर्ग अपवाद जानने उचित हैं । ईकारान्त, ऊकारान्त, एकस्वरवाला (थ), और योनि अर्थात् भगतिहत प्राणियोंका नाम ये सब (स्त्री॰) हैं। जैसे-"धी, श्री, भू, भू, माता, दुहिता, धेनु ^१ इत्यादि शब्द जानने और दार**श्**द तो विशे-षवचनके बलसे (पु॰) वाची है ॥ २ ॥ विद्युत् अर्थात् तिंडत्, मिशा अर्थात् रात्रि, वळी अर्थात् व्रतति, वीणा अर्थात् विपंची, दिश् अर्थात् दिशा, भू अर्थात् पृथ्वी, नदी अर्थात् तरंगिणी, ह्री अर्थात् लज्जा इन राव्देंिके नाम और मूळ आदि अदंत शब्दोंकरके जो समाहार अर्थवाळा हिरासमास ये (स्त्री॰) हैं । जैसे-" पंचानां मूलानां समाहारः पंचमूली " आदि जा-नने । पात्र और युग ये दोनों उत्तरपदमें हैं जिन्होंके ऐसा अदंत हिगु (स्त्री॰) नहीं है । जैसे-"पंचानां पात्राणां समाहारः पश्चपात्रम् , चतुर्णी युगानां समाहारश्चतुर्युगम् " इत्यादि अन्यभी जानने । जैसे-" त्रिभुव-नम् "॥ ३॥ भाव आदि अर्थमें तल् प्रत्यय है वह (स्त्री॰) है। जैसे-" शुक्रता, ब्राह्मणता " ये हैं । समूहअर्थमें य, इन्, कटचच्, त्र ये चार प्रत्यय (स्त्री॰) हैं । जैसे-" पाश्या, खिख्नी, रथकटचा, गोत्रा" ऐसे जानने । वैरअर्थमें और भेशुनअर्थमें जो वुन् प्रत्यय है वह (स्त्री॰) है । जैसे-" अश्वमहिषिका, काकोळूकिका, अत्रिभरद्वाजिका " ऐसे जानने I आदिशब्दसे वीप्साअर्थमें वुन्का ग्रहण है । स्त्रियां इसका अधिकार कर माव आदिमें जो अनि, किन्, ण्वुल, णच्, ण्वुच्, क्यप्, युझ, इच्, अङ्, उणादिषु निकरीश्व ङयाबुङन्तं चलं स्थिरम्।
तक्तीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टा पाछ्या ण दिक् ॥ ५ ॥
घञो ञः सा क्रियाऽस्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी।
इयेनंपाता च मृगया तेलंपाता स्वधित दिक् ॥ ६ ॥
स्वी स्थात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि।
लक्का शेफालिका टीका धातकी पश्चिकाऽऽदकी ॥ ७ ॥
सिप्रका सारिका हिका प्राचिकोल्का पिपीलिका।
तिन्दुकी कणिका भङ्किः सुरङ्कास्चिमादयः॥ ८ ॥

निश ये प्रत्यय विहित हैं वे (स्त्री॰) हैं। जैसे "अकरणि, कृति, प्रच्छिदिका, व्यावकोशी, शायिका, ब्रज्या, कारणा आसना, वापि, आजिपचा, ग्लानि, क्रिया" आदि शब्द (स्त्री॰) हैं ॥४॥ उणादिकोंमें नि, ऊ, ई ये तीन प्रत्यय (स्त्री॰) होते हैं। जैसे-"श्रेणि, श्रोणि; चमू, कर्षू, तंत्री" आदि अन्यमी जानने । डीपू, आपू, ऊङ् प्रत्ययांत जो जंगम और स्थावर हो वह (स्त्री॰) है जैसे-" नारी, दिावा, ब्रह्मवधू, कदली, माला, कर्कन्धू आदि जानने । ब्रह्मिष्ट आदि प्रहरण जो कीडामें हो उस अर्थमें विहित ण-प्रत्यय (स्त्री॰) होता है। जैसे-दांडा, मौसला, मौष्टा, पाछवा ऐसे अन्यभी जानने ॥ ५ ॥ वह घञन्तवाच्य दंडपताका आदि क्रिया फाल्ग्रनिका-याम् इस अर्थमें घञंतसे विहित जो ञ प्रत्यय है वह (स्त्री॰) होता है। जैसे-दांदपाता फाल्युनी, श्येनंपाता मृगया, तैलंपाता स्वधा ऐसे अन्यभी जानने ॥ ६ ॥ जो अल्फ्पनेमें कहनेकी इच्छा हो तब मृणाली आदि शब्द (स्त्री॰) होते हैं। जैसे-मृणाली, वंशी आदि अन्यभी जानने। लंका अर्थात् राक्षसकी पुरी, रोफालिका अर्थात् रांभाल्, टीका अर्थात् विषमपदोंका व्याख्यान करना, धातकी अर्धात् घवनृक्ष, पंजिका अर्थात् निःशेष पदव्याख्या, आढकी अर्थात् अर्हर ॥ ७ ॥ सिधका अर्थात् वृक्षमेद, सारिका अर्थात् मैना, हिका अर्थात् हिचकी, प्राचिका अर्थात् वनकी मासी, उल्का अर्थात् तेनका समूह, पिपीलिका अर्थात् कीडी, तिंदुकी अर्थात् टेंभरनी वृक्ष, कणिका अर्थात् परिमाण, भंगि अर्थीत कुटिल्पनेका भेद, सुरंगा अर्थात सुरंग, सृचि अर्थात सुई, माढि. पिच्छावितण्डाकाकिण्यश्र्णिः शाणी द्वणी दरत्। सातिः कन्या तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभापि च ॥ ९ ॥ श्रष्ठरी चर्चरी पारी होरा छट्टा च सिध्मछा। छाक्षा छिक्षा च गण्ड्षा गृष्ठसी चमसी मसी ॥ १० ॥ इति स्त्रीछिङ्कसंग्रहः।

पुंस्ते सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः । स्वर्गयागाद्रिमेघान्धिद्धकालासिश्वरारयः ॥ ११ ॥ करगण्डोष्ठदोर्देन्तकण्ठकेशनखस्तनाः । अद्वाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥ १२ ॥

अर्थात् पत्रशिरा ॥ ८ ॥ पिच्छा अर्थात् शंभलका निर्यास, वितंडा अर्थात वादभेद, काकिणी अर्थात दमडी, चूर्णि अर्थात् चूर्णिका, शाणी अर्थात् सनका बस्रविशेष, द्वणी अर्थात् कानकी जलोका, दरत् अर्थात् म्लेच्छजा-ति, साति अर्थात् दान और अन्त, कंथा अर्थात् वस्त्रविशेष और मार्थकी मींत, आसंदी अर्थात् आसनभेद वेतका आसन, नामि अर्थात् संदी, राजसभा अर्थात राजाओंकी सभा ॥ ९ ॥ झळ्ठरी अर्थात बाजाविशेष, चर्चरी अर्थात हाथोंका शब्द अथवा आनन्दकी क्रीडा, पारी अर्थात हाथीके पैरकी रज्ज़, होरा अर्थात राज्ञिका आधा भाग, छटा अर्थात गामका चिड़ा, सिध्मला अर्थात् सूखी मछली, लाक्षा अर्थात् लाख, छिक्षा अर्थात छीख, गंड्षा अर्थात पानी आदिसे मुखको पूरना, गृष्ठसी अर्थात् वातरोगभेद, चमसी अर्थात् यज्ञपात्रभेद प्रणीतापात्र, मसी अर्थात् स्याही ॥ १० ॥ यहां स्त्रीिंछगवाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ तुषित, साध्य आदि अनुचर इन्होंसहित देवता और देत्योंके पर्यायवाची शब्द (पु॰) हैं । स्वर्गके नाक, त्रिदिव आदि पर्य्याय; यागके यज्ञ, मस्व आदि पर्यायः अद्रिके पर्वत, अद्रि आदि पर्यायः मेघके घन आदि पर्यायः अब्धिके समुद्र आदि पर्यायः द्वके जाखी आदि पर्यायः कालके दिष्ट, समय आदि पर्यायः असिके खड्ग आदि पर्यायः शरके बाण आदि पर्याः यः अरिके रात् आदि पर्य्याय ॥ ११ ॥ करके रश्मि, पाणि आदि पर्य्यायः गंडके कपोल आदि पर्यायः ओष्ठके दन्तच्छद आदि पर्यायः दोष्कं बाह आदि पर्यायः दन्तके रद आदि पर्यायः कठके गरू आदि पर्यायः केशके श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अवाधिताः । क्रिकेडलतुवस्त्विन हित्वा तुरुविरामकाः ॥ १३ ॥ क्षणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अय । प्रथनयसटोपान्ता मोत्राख्याश्चरणाद्वयाः ॥ १४ ॥

कच आदि पर्यायः नस्वके करहह आदि पर्यायः स्तनके कुच आदि पर्याय य सब भेदोंसहित राब्द (पु॰) हैं। अह और अह ये हैं अन्तमें जिन्हों-के वे शब्द (पु॰) बाची हैं। जैसे-पूर्वाह्न, अपराह्न, ह्रचह आदि जानने। क्ष्वेड अर्थात विषविशेषके वाची सीराष्ट्रिक आदि शब्द (प्र॰) हैं । रात्र है अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और आदिमें नहीं है संख्यावाचक शब्द जिन्होंके वे शब्द (पु॰) हैं । जैसे-अहोरात्र, सर्वरात्र आदि जानने और संख्या हैं आदिमें जिन्होंके वे पश्चरात्र आदि ज्ञब्द (न०) हैं ॥१२॥ श्रीवेष्ट आदि शब्द निर्यास (गोंद वा सार) वाचक हैं वे और असू, अनु ये प्रत्यय हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द और विशेषवचनसे नहीं बाधित किये ऐसे ये सब शब्द (पु॰) हैं । जैसे-श्रीवेष्ट, सरल, चन्द्रमाः, कृष्णवरमी आदि अन्यभीजानने । कहोरु, जतु, वस्तु इन शब्दोंको छोड तु और रु ये हैं अन्तमें जिन्होंके वे शब्द (पु॰)हैं । जसे-हेतु, सेतु, धातु आदि अन्यभी जानने ॥१३॥ क, ष, ण, म, म, र ये छः अक्षर अन्त्यके समीप हैं जिन्होंके वे और नहीं बाधित किये अदंत शब्द (पु॰) हैं। जैसे-अंक, लोक, स्फटिक आदि और ओष, प्लोष, माष, प्रक्ष आदि और पाषाण, गुण, किरण आदि और कीस्तुभ, दर्भंग शलभ आदि और होम, ग्राम, गुल्म, व्यायाम आदि और झुईर, सीकर, कर आदि ये सब शब्द (पु॰) वाची हैं और शुल्क वरूक आदि, वर्षा आदि, विषाण आदि, कुसुंभ आदि, पद्म आदि, अजिर आदि ये सब राब्द विशेष्यचनसे बाधित हुए (पु॰) नहीं हैं। प, थ, न, य, स, ट ये छः वर्ण हैं अन्त्यके समीप जिन्होंके वे शब्द नहीं बाधित किये (पु॰) वाची हैं। जैसे-यूप, बाष्प, कलाप आदि और वेपयु, रोमंथ आदि और इन, धन, भानु आदि और आय, व्यय, जायु, तंतुवाय आदि और रस, हास आदि और पट आदि ये सब शब्द (पु॰) हैं और कृतप आदि, वन आदि, मगया आदि, बिस आदि, किरीट आदि ये शब्द विशेषसूत्रोंसे बाधित हैं। गोत्र अर्थात वंश उसमें हैं संज्ञा जिन्होंकी वे गोत्रके आदि पुरुष जो प्रवराध्यायमें पठित हैं और जो अन्यभी अपत्यप्रत्ययके विना नाम्न्यकर्ति भावे च घञजब्नक्णघायुचः ।
ल्युः कर्तरीमिनज् भावे को चोः किः मादितोऽन्यतः ॥ १५ ॥
दन्देऽधवडवावश्ववडवा न समाहते ।
कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च ॥ १६ ॥
वटकश्चानुवाकश्च रक्षकश्च कुडङ्गकः ।
पुंस्तो न्यूङ्कः समुद्रश्च विटपष्ट्रधटाः खटाः ॥ १७ ॥
कोद्यारघट्टहृश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत् ।
गड्डः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः ॥ १८ ॥

गोत्रवाचित्वकरके छोकमें प्रसिद्ध हैं वे सब (पु॰) हैं। जैसे-भरद्वाज, कश्यप, वरस आदि जानने । वेदकी शाखाकी संज्ञावाले शब्द (पु०) हैं । जैसे-कठ, बहुच आदि शब्द जानने ॥ १४ ॥ संज्ञा, कारक, भाव इन्होंमें विहित किये घझ, अच्, अप्, नङ्, ण, घ, अथुच् ये सात प्रत्यय (पु॰) हैं। जैसे-प्राप्त, वेद, प्रपात, भाव, माघ, पाक, त्याग आदिः जय, चय, नय आदिः कर, गर, छत्र, प्छव आदिः यज्ञ, प्रश्न आदिः न्याद, रस आदिः उरश्छद आदि और वेपशु आदि ये सब शब्द (पु॰) हैं। क-त्तीमें नन्द्यादिसे हुआ ल्युप्रत्यय (पु॰) है । जैसे-नन्दन, रमण, मधुसू-दन आदि अन्यभी जानने । भावमें पुशु आदिसे हुआ इमनिच् प्रत्यय(पु॰) है । जैसे-प्रथिमा, महिमा आदि अन्यभी जानने । भावमें हुआ कप्रत्यय (पु॰) है । जैसे-आख़ूत्य, प्रस्य आदि अन्यभी जानने । प्रादिकोंसे और अन्यसे परे जो घुसंज्ञक धातु उससे विहित किया कि-प्रत्यय (पु॰) है। जैसे-प्रिध, निधि आदि; जलाधे आदि अन्यभी जानने ॥ १५॥ समाहारसे अन्य इन्द्रसमासमें अश्ववडवी शब्द (पु॰) है। सूर्य और चन्द्रमाका पर्यायपूर्वक कान्तराब्द और अयम् अर्थात् लोहका वाचक शब्द है पूर्व जिसके ऐसा कान्त शब्द (पु॰) है। जैसे-सूर्यकान्त, अर्ककान्त, चन्द्रकान्त, इन्दुकान्त, सोमकान्त, अयस्कान्त, छोहकान्त आदि अन्यभी जानने ॥ १६ ॥ वटक अर्थात् पीठीका वडा, अनुवाक अर्थात् वेदका अवयव, रहक अर्थात् कंबल, कुडंगक अर्थात् वृक्षलताका वन, पुंख अर्थात् बाणका अवयव, न्यूंख अर्थात् सामवेदमें निपातित ॐकार, समुद्ग अर्थात् संपुटक, विट अर्थात् धूर्त्त, पट्ट अर्थात् पंटला, घट अर्थात् तुला, खट अर्थात् अंघा कुवा आदि ॥ १७ ॥ कोट्ट अर्थात किलकी भीत, अरवट्ट अर्थात हितसीमन्तहारितो रोमन्थोद्गीयमुद्धदाः । कासमदीञ्चदः कुन्दः फेनस्त्पी सयूपकी ॥ १९ ॥ आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षरकेदराः । पूरक्षरप्रचुकाश्च गोर्छाईगुळ्डुक्काः ॥ २० ॥ वेतालभल्लमळाश्च पुरोडाशोऽपि पहिशः । कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥ २१ ॥ इति पुंळिक्कशेषः ।

द्विहीनेऽन्यच खारण्यपर्णश्वश्रहिमोदकम् । श्रीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम् ॥ २२ ॥

अरहटका कूवा, हट्ट अर्थात् दुकान, पिंड अर्थात् माटी आदिका गोला, गोंड अर्थात नामि, पिचंड अर्थात् पेट, गडु अर्थात् गलगंड, करंड अर्थात् नास आदिकी बनाई हुई करंडी, लगुड अर्थात् लाठी, वरंड अर्थात् मुखरोग, किण अर्थात मांसकी ग्रंथिका भेद, घुण अर्थात घुन ॥१८॥ द्यति अर्थात् चाम, सीमंत अर्थात केशोंका वेश, हरित् अर्थात् पाछाशवर्ण, रोमंथ अर्थात् पशु-ओंके चर्वितका चावना, उद्गीथ अर्थात् सामवेद्, बुद्बुद् अर्थात् जळविकार, कासमर्द अर्थात् कसोंदी, अर्द्धद अर्थात् दशकरोड, कुन्द अर्थात् शिल्पभांड, फेन अर्थात् झाग, स्तूप अर्थात् वड् आदि, यूप अर्थात् यज्ञस्तंभ, यूप अ र्थात् माळपुआ ॥१९॥ आतप अर्थात् घाम, क्षत्रियका वाची नाभि, कुणप अर्थात् मुर्दो, क्षर् अर्थात् उस्तरा, केदर अर्थात् व्यवहार पदार्थ, पूर अर्थात् जलका प्रवाह, श्लरप्र अर्थात् बाणभेद, चुक्र अर्थात् चूका शाक, गोल अर्थात् गोला, हिंगुल अर्थात् सिगरफ, प्रहत्क अर्थात् आस्मा ॥ २० ॥ वेताल अर्थात भूतोंसे अधिष्ठित किया मुदी, भक्क अर्थात रीछ, मक्क अर्थात बाहुओंसे युद्ध करनेवाला, पुरोडाश अर्थात् हिमेर्यत, पट्टिश अर्थात् हथि-यारिविशेष, कुल्माष अर्थात् आधा सिजाया जव, रभस अर्थात् आनन्द, कटाह अर्थात् कडाही, पतद्यह अर्थात् पीकदानी ये सब झब्द (पु॰) वाची हैं ॥ २१ ॥ यहां पु्रिं छुगरोष समाप्त हुआ ॥ अब (न०) का अधिकार है। बाधितसे जो अन्य है वही (न॰) वाची है। ख अर्थात् आकारा, अरण्य अर्थात् वन, पणं अर्थात् पत्ता, श्वत्र अर्थात् छिद्र, हिम अर्थात् जाडा, उदक अर्थात् जल, शीत अर्थात् सीला, उष्ण अर्थात् गर्म,

फल्हेमगुल्बलोहसुखदुःखन्नुभागुमम् । जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥ २३ ॥ कोट्याः शतादिसंख्पाऽन्या वा लक्षा नियुतं च तत् । द्वाक्यमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तारे ॥ २४ ॥ त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम् । पात्राद्यदन्तिरेकाथो द्विगुलेक्यानुसारतः ॥ २५ ॥ द्वन्द्वेकत्वाव्ययीभावौ पयः संख्याव्ययात्परः । षष्ठ्याञ्जाया बहुनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा ॥ २६ ॥

मांस अर्थात् कवाव, रुधिर अर्थात् छोह्, मुख अर्थात् मुंह, अक्षि अर्थात् आंख, द्रविण अर्थात धन, बल अर्थात सेना ॥ २२ ॥ फल अर्थात कैंय आदि, हेम अर्थात् सोना, ग्रुल्ब अर्थात् तांबा, छोह अर्थात् छोहा, मुख, दुःख, शुभ, अशुभ, जलपुष्प अर्थात् कमलके फूल आदि, लवण अर्थात् नमक, व्यन्त्रन अर्थात दिध तक आदि पदार्थ,अनुलेपन अर्थात केसर आ-दिका तिलक ॥ २३ ॥ कोटिझब्दके विना जो शत आदि संख्यावाचक शब्द हैं वे (न॰) हैं और लक्षशब्द विकल्पसे (न॰) है इस लिये (स्त्री॰) में रुक्षा बनता है । रुक्षका पर्य्याय नियुत है । असंत, इसंत, उसंत और अन्नन्त ऐसे शब्द दो खरोंबाले (न॰) वाची हैं। जैसे-पयम, सर्पिस, वपुस, शर्मन् आदि शब्द (न०) हैं । कर्त्तासे अन्यमें जो अनांत है वह (न॰) है । जैसे-गमन, मरण, दान आदि अन्यभी जा-नने । और कर्त्तामें रमण आदि (पु॰) हैं ॥ २४ ॥ त्रांत राब्द (न॰) हैं । जैसे∽गात्र, पात्र, वस्त्र आदि अन्यभी जानने । स ओर छ उपघामें हैं जिन्होंके वे शब्द (न॰) हैं। जैसे-बिस, कुल आदि अन्यभी (न॰) जानने और जो प्रागुक्त अर्थात् पूर्वमें कहे हुओंसे शेष हैं वेही (न॰) हैं और जो बाधित हैं वे पुत्र, वृक्ष, हंस, कंस, शिला, काल आदि (पु॰) और (स्त्री॰) हैं। संख्या है पूर्व जिसके ऐसा रात्रशब्द (न॰) है। जैसे-त्रिरात्र, पश्चरात्र ये (न॰) हैं । और संख्यासे रहित पूर्ववाले अ र्द्धरात्र आदि शब्द (पु॰) हैं । पात्र आदि अदंत शब्दोंसे एकार्थ हिसु शिष्टप्रयोगके अनुसारसे जानना । इसवास्ते पंचमूळी, त्रिलोकी येभी ठीक बन सक्ते हैं ॥ २५ ॥ इन्द्रसमासका एकत्व और अव्ययीमाव (न॰) शालार्थापि पराराजामनुष्पार्थादराजकात् । दासीसमं नृपसमं रक्षःसभिमा दिशः ॥ २७ ॥ उपक्षोपक्रमान्तश्च तद्।दित्वप्रकाशने । कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥ २८ ॥ भावे नणकाचिद्वचोऽन्ये समूहे भावकर्मणोः । अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः ॥ २९ ॥ कियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके । चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्म योजनम् ॥ ३० ॥

होता है। जैसे-पाणिपाद, शिरोग्रीव आदि और अधिस्त्रि, उपगंग आदि। संख्यासे और अव्ययसे परे पथिन शब्द (न०) होता है। जैसे-द्विपय, त्रिपथ, विपथ, कापथ आदि । समासमें षष्ठीविभक्त्यन्तसे परे छायाशब्द (न॰) है जो छाया बहुतोंकी हो तो । जैसे-विच्छाय अर्थात् पक्षियोंकी छाया है। यहां वि नाम पक्षियोंका है। समूहके विषयमें सभाशब्द (न॰) है। जैसे-दासीसभ, स्त्रीसभ आदि हैं ॥ २६॥ शालानामवाली और अपिशब्दसे समूह नामवाली जो सभा है वह राजशब्दके पर्यायोंसे वर्जित और मनुष्यके पर्यायसे वर्जित शब्दके संग (न०) है। जैसे-इनसम, प्रभूसभ, रक्षःसभ, पिशाचसभ आदि शब्द (न॰) हैं ॥ २७ ॥ उपज्ञा और उपक्रमके आदिपनेको प्रकाशित करनेमें उपज्ञान्त और उपक्रमान्त समास (न॰) है । जैसे-कोपज्ञ, क अर्थात् ब्रह्माकी उपज्ञा अर्थात् प्रजा, कोफ्कम अर्थात् लोक । उशीनरोंके नामोंके मध्यमं पष्टी विभक्तिस भो कंथाशब्द (न०) है। जैसे-सौशमिकंथ आदि हैं ॥ २८ ॥ न, ण, क, चित् इन प्रस्थयोंसे अन्य जो तव्य आदि अदंत धातु प्रत्यय हैं वे भावमें विहित किये (न॰) हैं। जैसे-भवितव्य, भाव्य, सहित, भक्त आदि हैं । समूह, भाव, कर्म इन अर्थीमें विहित किये अदंत प्रत्यय (न॰) वाची हैं।जैसे-भैक्ष अर्थात् भिक्षाओंका समूह, गोत्व अर्थात् गौओंका समूह, चीर्य अर्थात चोरका कर्म आदि । पुण्य और सुदिन शब्दसे परे अहन्शब्द (न॰) है। जैसे-पुण्याह, सुदिनाह ये हैं ॥ २९ ॥ ऋयाओं के और अव्ययोंके विशेषण शब्द (न०) और एकवचन हैं । जैसे-मन्दं क्वतिः सुखदं प्रातः आदि अन्यभी जानने । उक्य अर्थात् सामभेद, तौटक अर्थात् वृत्तमेद, बोच अर्थात उपमुक्त किये फलसे बचा हुआ, पिच्छ अर्थात

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृती कवेः । माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरिपञ्चरम् ॥ ३१ ॥ छोकायतं हरिबाछं विदछस्थाछवाहिकम् ।

इति नपुंसकसंग्रहः।

पुंनपुंसकयोः शेषोऽर्धर्चिषण्याककण्टकाः ॥ ३२ ॥ मोदकस्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः । पातकोद्योगचरकतमालामलका नदः ॥ ३३ ॥

कुष्टं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्त्रेडितं क्षेमकुद्दिमम् । संगमं शतमानामेशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥ ३४ ॥

मोरकी पांख, गृहस्थूण अर्थात् घरमें थांभ, तिरीट अर्थात् वेष्टन, मर्भ अर्थात् संधिस्थान, योजन अर्थात् चार कोश् ॥ ३० ॥ राजसूय अर्थात् यज्ञविशेष, वाजपेय अर्थात् यज्ञविशेष, गद्य अर्थात् पदसमूह, पद्य अर्थात् श्लोक, माणिक्य अर्थात् माणिकरत्, भाष्य अर्थात् पदार्थका विवरण, सिन्द्र अर्थोत् छालचूर्णे, चीर अर्थात् वस्त्र, चीवर अर्थात् मुनिवास, पिंजर अर्थात् पिंजरा ॥३१॥ लोकायत अर्थात् चार्वाक शास्त्र, हरिताल अर्थात् हरताल, विदल अर्थात बांसके छिलकोंका बनाया पात्रविशेष, स्थाल अर्थात पात्र-भेद, बाल्हिक अर्थात् केशर आदि ॥ यहां (न०) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्तहुआ ॥ उक्तसे शेष रहे शब्द (पु॰न॰) हैं। अर्धच् अर्थात् ऋचाका आधा भाग, पिण्याक अर्थात् तिलोंका कल्क, कंटक अर्थात् कांटा ॥३२॥ मोद्क अर्थात् छर्, तंडक अर्थात् उपताप, टंक अर्थात् टांकी, शाटक अर्थात् शाटीविशेष, कर्पटे अर्थात् वस्त्रभेद, अर्बुद अर्थात् संख्याभेद, पातक अर्थात् ब्रह्महत्या आदि, उद्योग अर्थात् उत्साह, चरक अर्थात् वैद्यकशास्त्र, तमाछ अर्थात् वृक्षभेद्, आमलक अर्थात् आंक्ला, नड अर्थात् नग्राल ॥ ३३ ॥ कुष्ट अर्थात् कोढरोग, मुंड अर्थात् शिर, शिधु अर्थात् मदिरा, दुस्त अर्थात् भुना हुआ मांस, क्ष्वेडित अर्थात् वीर पुरुषका किया सिंहनाद, क्षेम अर्थात् कुरुल, कुट्टिम अर्थात् भीतिका भेद्, संगम अर्थात् संयोग, ज्ञतमान अर्थात तोछविशेष, अर्म अर्थात नेत्ररोगका भेद, शंबछ अर्थात वर्णभेद, अव्यय अर्थात् स्वर् आदि निपात, तांडव अर्थात् नृत्यभेद् ॥३४॥

कवियं कन्दकापीसं पारावारं युगंधरम् । यूपं प्रयीवपात्रीवे यूषं चमसचिकसौ ॥ ३५ ॥ अर्धचोदौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् । तत्रोक्तमिह छोकेऽपि तत्रेदस्त्यस्तु शेषवत् ॥ ३६ ॥

इति पुंनपुंसकसंग्रहवर्गः।

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः । जातिभेदाः पुमारूयाश्च स्त्रीयोगेः सह मह्नकः ॥ ३७॥ ऊर्मिवराटकः स्वातिर्धर्णको झाटिल्पेनुः । मूषा सृपाटी कर्कन्धूयेष्टिः शाटी कटी कुटी ॥ ३८॥

इति स्त्रीपुंसरोषसंग्रहवर्गः।

कविय अर्थात् लगाम, कन्द अर्थात् कमलिनीकी मूल आदि, कार्पास **अर्थात् कपास्, पारावार् अर्थात् जलसमूह, युगंघर अर्थात् लहोद्र, यूप** अर्थोत् यज्ञस्तंम, प्रग्रीव अर्थात् वृक्षका शिर, पात्रीव अर्थात् यज्ञपात्रभेदः युष अर्थात् मांड, चमस् अर्थात् चमसा, चिक्रस् अर्थात् पात्रभेद् ॥ ३५ ॥ इस अर्धर्चादि वर्गमें जो घृत आदि शब्द (पु॰) वाची पाणिनि आदिने कहे हैं वह रीति वैदिक है अर्थात वेदमें प्रसिद्ध है। इस कारण यहां नहीं कहे। वे छोकमेंभी हैं तो शिष्टप्रयोगसे जानना उचित है ॥ ३६ ॥ यहां (पु॰ न॰) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ अपत्यप्रत्ययान्त इाब्द (स्त्री॰ पु॰) हैं । जैसे-औपगव, औपगवीं । दो चार छः परींवाले प्राणी और सर्पवाची ऐसे जातिभेद (स्त्री॰ पु॰) हैं । जैसे-मानुष मा-नुषी, ब्राह्मण ब्राह्मणी, मृग मृगी, भूंग भूंगी, उरग उरगी, नाग नागी ! स्त्रियोंके साथ पुरुषवाचक शब्द (स्त्री॰ पु॰) है। जैसे इन्द्र इन्द्राणी, मातुल मातुली । मह्नक आदि ज्ञाब्द (स्त्री॰ पु॰) हैं । जैसे-मह्नक म-हिका ॥ ३७ ॥ अभि अर्थात् तरंग, वराटक अर्थात् कोडी, स्वाति अर्थात् नक्षत्र, वर्णक अर्थात् चन्दन, झाटिल अर्थात् मोखावृक्ष, मनु अर्थात् मंत्र, मूषा अर्थात् विदयाः, सुपाटी अर्थात् परिमाणभेदः, कर्कन्ध् अर्थात् बदवेरीः, याष्ट्र अर्थात् छाठी, शाटी अर्थात् घोती, कटी अर्थात् कड, कटी अर्थात् स्त्रीनपुंसकयोभीविक्रययोः ष्यत्र कविञ्च वुञ् । जीवित्यमीविती मेत्री मेत्र्यं वुञ् प्राग्नदाहृतः ॥ ३९ ॥ षष्ठचन्तप्राक्षदाः सेनाछायाशालासुरानिशाः । स्याद्वा तृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक् ॥ ४० ॥ आवत्रन्तोत्तरपदो द्विग्रश्चापुंसि नश्च छुप् । त्रिसद्दं च त्रिसद्दी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ॥ ४१ ॥ इति स्त्रीनपुंसकशेषः ।

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाहिमी । इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः ।

परं छिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ॥ ४२ ॥ अर्थोन्ताः प्राद्यलंपातापत्रपूर्वाः परोपगाः । तद्वितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ॥ ४३ ॥

घरका कोठा ये सन शब्द (स्त्री॰ पु॰) हैं ॥ ३८ ॥ यहां (स्त्री॰पु॰) वाची शब्दोंका संग्रहवर्ग समाप्त हुआ ॥ भावमें और कर्ममें वर्त्तमान ष्यञ्ज प्रत्यय और वुञ्ज प्रत्यय कहीं २ (स्त्री॰ पु॰) हैं । जैसे-ओचित्य औचिती, मैज्य मेत्री, मैथुनिक मेथुनिका ॥ ३९ ॥ तत्पुरुष समासमें षष्ठी-विभक्त्यंत पद है पूर्व जिन्होंके ऐसे सेना, छाया, शाला, सुरा, निशा ये হাত্র (স্লা॰) और(न॰)हैं । जैसे-नृसेन नृसेना, कुडचच्छाय कुडच-च्छाया, गोज्ञाल गोज्ञाला, यवसुर यवसुरा, श्वनिज्ञा श्वनिज्ञा आदि अन्यभी जानने ॥ ४० ॥ आवंत शब्द और अन्नन्त शब्द हैं उत्तर पद्में जिसके ऐसा हिए समास (स्त्री॰ न॰) है । जैसे-त्रिखट्ट त्रिखट्टी, त्रितक्ष त्रितक्षी । तक्षन्शब्दके अन्तका नकार छुप्त हो रहा है ॥४१॥ यहां(स्त्री०-न॰) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ पात्र, पट, वाट, पेट, कुवल, दार्डिम ये शब्द (त्रि॰) हैं । जसे-पात्रः पात्री पात्रम्, पुटः पुटी पुटम्, वाटः वाटी वाटम्, पेटः पेटी पेटम्, कुवलः कुवली कुवलम्, दाडिमः दाडिमी दाडिमम् ॥ यहां (त्रि॰) वाची शब्दोंका संग्रह समाप्त हुआ ॥ उभय-पद्प्रधान समासमें और इतरेतर इन्द्रसमासमें अग्रिम पद्का छिंग होता है। जैसे कुक्कुटमयूर्यी, मयुरीकुक्कुटो, धान्यार्थ, सर्पभीति आदि अन्यभी जानने ॥ ४२ ॥ अर्थान्त अर्थात् अर्थ शब्द है अन्तमें जिसके और आंदि

बहुब्रीहिरदिङ्नाष्ट्रामुन्नेयं तदुदाहतम् । ग्रुबद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ॥ ४४ ॥

अलं, प्राप्त, आपन्न ये हैं पूर्वमें जिन्होंके वे शब्द विशेष्यके लिंगको प्राप्त होते हैं । जैसे-' हिजायः सुपः भर्यात हिजके लिये दाल है, 'हिजार्या यवागुः अर्थात दिजके लिये यवागू है, ' दिजार्थ पयः । अर्थात् दिजके हिये द्व है I ' अतिमालो हारः [?] अर्थात् मालाको **उ**ह्नंपन करनेवाला यह हार है, ' अतिमारा इयम् । अर्थात् माराको उद्घंघन करनेवारी यह माला है, ' अतिमालमिदम् । अर्थात् मालाको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है। ' अलंकुमारिरयम् ' अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह पुरुष है, ' अलंकुमारी इयम् १ अर्थात् कुमारीको उद्घंपन करनेवाली यह र्स्ना है, ' अलंकुमारि इदम् ' अर्थात् कुमारीको उल्लंघन करनेवाला यह कुल है। ' प्राप्तजीविको दिजः । अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला दिज है, ' प्राप्तजीविका स्त्री ' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, 'प्राप्तजीविक कुछम् । अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाळा कुछ है । ' आपन्नजीविको हिजः। अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाला दिन है, 'आफ्नजीविका स्त्री ' अर्थात् प्राप्त हुई जीविकावाली स्त्री है, ' आपन्नजीविक कुरुम् ' अर्थात प्राप्त हुई जीविकावाळा कुळ है। तिद्धित है अर्थ जिसका ऐसा द्विया समास वाच्य-हिंगी है। जैसे-' पश्चकपालः प्ररोढाशः । अर्थात् पांच कपालों में संस्कृत किया प्रोडाश ह, 'पश्चकपाछं हविः । अर्थात् पाच कपाछोंमें संस्कृत किया घृत है। संख्यावाचिश्व, सर्वनामसंज्ञक शब्द, संख्यांत शब्द ये सब विशेष्यके छिंगके समान होते हैं। जैसे-' एकः पुमान । अर्थात एक पुरुष है, 'एकं कुटम् 'एक कुल है। 'हा पुमांसी ' अर्थात् दो पुरुष हैं, ' हे स्त्रियों ' अर्थात दो स्त्री हैं । ' सर्वों देशः ' अर्थात संपूर्ण देश है, ' सर्वा नदी ' अर्थात् संपूर्ण नदी है, ' सर्व जलम् ' अर्थात् संपूर्ण पानी है । ' परमसर्वः प्रमान ? अर्थात् परमसर्व प्ररुष है, ' परमसर्वा स्त्री अर्थात् परमसर्वेद्धप स्त्री है, ' परमसर्व कुलम् ' अर्थात् परमसर्वेद्धप कुल है॥४३॥ दिशशब्दसे वर्जित नामवालींका बहबीहि अन्यके लिगके समान होता है। जैसे-'बृद्धभार्यः' अर्थात् बूढी है भार्या जिसकी वह पुरुष है। ग्रुणके योग-करके, द्रव्यके योगकरके और क्रियाके योगकरके जो उपाधि विशेषण हैं **ब**सकरके धार्भिमें प्रवृत्त हुए धार्मिलिंगभाज होते हैं । जैसे-'गंधवती पृथिवीर कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि । अणायन्तास्तेन रक्तायर्थे नानार्थभेदकाः ॥ १५ ॥ षट्संज्ञकाञ्जिषु समा युष्पदस्मतिङ्क्ययम् । परं विरोधे श्रेषं तु द्वेयं शिष्टप्रयोगतः ॥ १६ ॥

इति छिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

अर्थात् गंधवाछी पृथिवी है, 'गंधवानश्मा भर्यात् गंधवाछा पर्वत है, ' गंधवत् कुसुमं ' अर्थात् गंघवाला फूल है । ' दंडिनी स्त्री ' अर्थात् दंडवारी स्त्री है। 'पाचिका स्त्री ' अर्थात पाक करनेवाली स्त्री है ॥ ४४ ॥ कर्त्तामें और असंज्ञामें कृत्पत्यय विशेष्यके छिंगको भजते हैं । जैसे-'कर्ताप्रमान भ्अर्थात् करनेवाला पुरुष है, 'कर्त्री स्त्री भर्थात् करनेवाली खी है, ' कर्त कुलम् । अर्थात् करनेवाला कुल है । कर्ममें और कत्तीम वर्त्तमान हुए कृत्यप्रत्यय परके छिगके समान होते हैं । जैसे-'क-र्त्तव्या भक्तिः । अर्थात् करनेयोग्य भक्ति है, 'कर्त्तव्यो धर्मस्त्याः अर्थात् तुझको धर्म करना योग्य है। 'वास्तव्योयम् ' अर्थात् यह वसनेके योग्य है, ' वास्तव्या सा । अर्थात् वह स्त्री वसनेके योग्य है, ' वास्तव्यं तत् । अर्थात् वह कुछ वसनेके योग्य है। " तेन रक्तम् " आदि अर्थमें अण् आदि तद्धित प्रत्ययांत अनेकार्थविशेषणभूत विशेष्यके लिंगके समान होते हैं। जैसे-' कौसुंभी ज्ञाटी ? अर्थात कुसुंभासे रंगी हुई घोती है, 'कौसुंभः पटः भ् अर्थात् कुसुंभासे रंगा हुआ वस्त्र है, ' कौसुंभं वासः भ् अर्थात् कुछंभासे रंगा हुआ वासस् अर्थात् वस्त्र है ॥ ४५ ॥ षट्संज्ञक अर्थात् षान्त और नांत संख्यावाले शब्द, कातिशब्द, युष्मद्शब्द, अस्मद्शब्द, तिब्पत्यय, अव्यय ये सब तीनों छिगेमिं समान हैं । जैसे-'षडिमे' अर्थात् ये छः पुरुष हैं, 'षडिमाः । अर्थात् ये छः स्त्री हैं, 'षडिमानि अर्थात् ये छः कुल हैं। ऐसे अन्यभी जानने । 'कात पुरुषाः ' कितने पुरुष हैं, ' काति स्त्रियः । अर्थात् कितनी स्त्रियां हैं, ' काति कुछानि । अर्थात् कित्ने क्छ हैं। 'तं पुमान । अर्थात् तू पुरुष है, 'तं स्त्री । अर्थात् तू स्त्री है, 'त्वं कुरुम् ' अर्थात् तू कुरु है। ' अहं स्त्री ' अर्थात् भें स्त्री हूं, ' अहं पुरुषः ग अर्थात् में पुरुष हूं, ' अहं कुछम् ग अर्थात् में कुछ हूं। ' स्थाछी भवति । अर्थात् स्थाली है, ' घटो भवति । अर्थात् घट है, ' पात्रं भवति ।

इत्यमरसिंहकृती नामिळक्कानुशासने | सामान्यकाण्डस्तृतीयः साक्क एव समर्थितः ॥ १ ॥ इति श्रीसमरसिंहकृती नामिळगानुशासने तृतीयंकाण्डं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

अर्थात् पात्र है। ' उच्चैः पुरुषः ' अर्थात् उचा पुरुष है, ' उच्चैः स्त्री ' अर्थात् उची स्त्री है, ' उच्चैः कुलम् ' अर्थात् उचा कुल है। विमितिषेषमें परका लिंग होता है। जैसे—' मानुषीयम् ' अर्थात् यह मनुष्यकी स्त्री है, ' मानुषीयम् ' अर्थात् यह मनुष्य है। यहां नहीं कहा हुआ शिष्ट अर्थात् महाकवि माध्यकार आदिके प्रयोगोंसे जानना उचित है॥ ४६॥ इति लिङ्गादिसंग्रहकाः॥ ५॥

इस प्रकार अमरसिंहके किये नामिंखगानुशासनेमें अंगोंसिहित सा-मान्य कोड तीसरा निरूपित किया ॥ १ ॥

इति श्रीरोहतकप्रदेशान्तर्गत-वेरीयामनिवासि-गोडवंशावतंस-विविध-शास्त्रपरमपंडित-श्रीशिवसहायपुत्र-रिवदत्तशास्त्रिराजवैद्यावरिष्यत-यामागरानगरबास्तव्य-ज्योतिर्विद्याल्युकुन्द्मष्टसूरिस्नु-पंडितरा-मेस्बरमेट्टन संशोधितायाममरकोशार्थप्रकाशिकायो भाषाध-कायो तृतीयकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥



सभाषामरकोशस्य

अकारादिवर्णानुक्रमेष शृञ्दानुक्रमणिका.

शब्दः १८४ श्लोक	इाब्द:	पृष्ठम् स्र	कः शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
अ.	अक्षांति	४२ २		मन्थ ७७	
अ२७४ ११		१ १८६	३ अभि	मुखी ७३	४२
अंश१८१ ८९	अक्षि	२८२ २	२ अप्रि	शेख१२६	
अंशु २१ ३३	अक्षिकूटक.	१४८ ई	८ असि	क्षे जा . { ८६ ८९	
अंशुक१२५ ११	अक्षिगत	२०२ ४		52 g	136
अंशुमती ८५ ११	अक्षीव	७२ ३	१ ब्राइय	त्पातः $\left\{ egin{array}{c} 28 \\ 238 \end{array} ight.$	30
अंशुमत्फला. ८५ ११	अक्षाव र	199 8	9		
अंस११८ ७८	अक्षोट	७१ २	९ अश	{ २०४ २५८	46
अंसल१११ ४४	अक्षोहिणी	948 6			
अंहति१३५ ३०	अखंड		6 97	ە ۋۇ 1	•
अंहस् २६ २३	अखात		6 100	तमन्१३०	
अकरणि२२१ ३९	अखिल	२०५ ६	५ अभर	:सर १५५	-
अक्पार ४८ १	अग	२२६ १	९ अग्रत	ास्.	480
अकुष्णकर्मन्. २०२ ४६	अगद	992 4	० अग्रा	१८९ मां १९ मां	£~
(७६ ५८	अगदंकार	99₹ ५	ua i		•
१७२ ४३	अगम	٠. ६७ ٢	अभि	य	42
अध्य १८० ८६ १९३ ४५	अगस्त्य	95 3	॰ अबी	य२०४	46
(२६५ २२	अगाध	43 9		देघिषू९०७	
अक्षत१७२ ४७	ं अगार .	६३ ५		TT944	
अक्षदर्शक१४२ ५	अगुरु	9२७ १			
अक्षदेविन्१९२ ४४	अगुवशिश्रपा	. ७७ ६	٦	ि २६	२३
अक्षवृती१९२ ४४	अभायी	१३४ २	३ अघ	'''' र् २२८	
अक्षर२५८ १८	् अभि	92 4	६ अध	र्मण१३९	४८
मक्षरचुंचु१४४ १५	अप्रिकण	१२ ६	. 1	ન ૧ ૭ફ	•
अक्षरचण१४४ १५	अभिचित्	9३२ १	18	(99	90
अक्षरसंस्थान. १४४ १६	अग्निज्वाला-	29 9	२४ अंक	‴ र्वे ३२३	R
अक्षवती१९३ ४५	अग्रित्रय	933 3	• अंकु		
अक्षामकीलक.१५२ ५६	अग्रिभू	•		श१४ ९	
and the same of th			- /	- ',	

शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	र्वे हैं।	। श्लोकः	जिल्ह:	पृष्ठम्	मोकः
अंकोट	69	२९	अच्छ	٠ ٧٠	, J.R.	अंजनाव	ती. १६	e e
अंच्य	३८	4	अच्छम	g 🤫	18	अंजिल	999	
	(998	90	1			1	£ 22	•
अंग्र	{ २७३	9	अच्युता	यज. (२४	अंजसा	े रिष४	
. i	(२७५		आस	∫ 9 0€	: ७६	अटंनी	946	83
	६३			∵ { १७८ ∵′ { २२९		अटरूप	८३	१०३
अंगद	१२३	900	ľ	का. ८९	१३९	अटवी	६६	8
अंग्ला	ुं9६	4	अजगर	1	4	अटा	१३६	३६
	. } 9 € . , } 9 6	₹	अजगव		•	भट्ट	∮ €₹	
अंग्विक्षेप	80	36		و ۽ و			े र २४८	•
	र. १२६			T ९०		अव्या		• •
	Ko			t ८६	•	अणक	२०३	
	१६९			Is	٠,	अणव्य	₹۶	
	२०			69		अणि	945	
	नेका.१६९			90८			٠ ٩	
	f. ৬ ५	1		ەەلا		अणायस्	३०५	•
	- 29			1920		अणु	. { १६७ . { २०५	२० ८०
	टी. १६९			२३५			909	
	२९			१३९	J		996	•
	२१२		अजिनपः		२६	or or magn	(49	•
	7. 960	- 1		नि. ९६		अंडज		_
	998		अजिर	. { ₹₹ ₹4८	93		[२०३	49
	३३८			(,,,,	10.1		٠٠٠٠ ﴿٢	
બસુલાવળ અં<u>ગુ</u>ષ્ટું		1		२०६ 			२७३	
7		1		٠٠٠٩٧٠	- 1		. 49	
अधि				३९ ८७	1	अ तस ा .	१६७ :	
अंधिनामक	-	- 1	A.4.C		- 1		रह९ व	
अधिवहि ष		- 1	यह	. {२०० '२०२	36	अति		t
अर्चंडी .	900	90			56			
अच्छ .	﴿لا	9		२९ २११	9	आतेक्रम.	∫२२०३ }२५२ १	<u>ا</u> ک
अच्छा .	40	. 1	• 12	9 §		_	९ ० 9	•
अचिक्ण.	२६६ :	f		i. 66	7 1	-	९४ १ ९४ १	-
•	• •	• 1			.44	ন।বে শ্চাস •	.,, 55 1	40

इाब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	सब्दः	<u>पृष्ठम्</u> नः १५५	श्लोकः	शब्दः	प्रथम्	स्रोकः
			अत्यंसी					
अतिजव .		-	अत्यय -	ु १६३	998		954	
अतिथि .		_	-11.14	१ ३५३	340		१९६	
अतिनिर्हारि	न्. ३०	90	į.	JR		अधिरीहि	णी. ६४	36
अतिनु .			1	२०५	•	अषिवास	न. १२८	१३४
अतिपथिन्,	ξ∘	9 €		त२३८		अधिविस	ī. 908	9
'अतिपात्त.	∮ १३७	३७		२०		अधिश्रय	गी. १६९	₹ \$
બાલમાત.	ी २२०	३३		२७०		अधिष्ठान	२४७	१२६
अ ति प्रसिद्ध	. २६४	196	i .	२७०		अधीन	999	9 €
अतिमात्र .	9¥	1 90'		२०५		अधीर	996	२६
अतिमुक्त .	62	: ७२		392		अधी श्वर	989	3
अनिमुक्तक	. 6 9	२६	1	नंदन. ४		अधुना	२७६	२३
अतिरिक्त .	306	94	1	૧૧૪		अष्टृष्ट	99८	२६
अतिवक्तः.	₹00	, ३५	1 .	१४७		अधों शुक	924	996
अतिवाद .	३४	18	1	ss		अघोक्षज	Ę	29
अतिविषा.				२७४		अधोमुव	ন ४५	3
अतिवेल .	9t	5 60	अद्भत	{ ×3 ×6	90	अधोमुख	२००	₹₹
भातिशक्ति	ता. १६	, १० २				DESTINA	∫ ३४२	Ę
	(9)	لا ﴿ وَع َ		994		अध्यक् -	∵ { १४२ ∵ { २६६	2-26
व्यति श य.	1 29'	4 99		२७५		अध्यवस	ाय. ४३	28
अतिशस्त	२३१	3 83	अदि	{ ६४ २५४	, 963	अध्यात्म	२५१	3,20
अतिशोभ	•			(२२० गार्दन्, ५		अध्यापव	F 33,9	9
अतिसंस्कृ						अध्याहा	र २९	३
अतिसर्जन	. २ 9	९ २८	अधम	{ २०३ { २५१	, 388 , 70	अध्युद्धा	وه و	
अतिसार्रि				ર્ય ૧૬૪		अध्येषण	T 938	३२
अतिसौर भ				•		अध्वग	388	90
अतीक्ष्ण			अधर	•••• { १२० •••• { २५०	369	अध्यन्	59	28
अतीत				स्२७'		अध्वनी	7 9×8	
अतीतनी			1 -	ति दे १९।		अध्वन्य	983	. 3A
अर्ती दिय			ı	तंग १५३	-	अध्वर	१३३	१ १३
अतीव				जर अंत	•		933	
अतिका			1	5त१४३			३६	
अत्यंतको			1	भ्रस २ ०'		1 .	1	
- 12 446 341		. ,,	-1070	A 4444 P		•		•

							
शब्दः		श्लोकः	शब्दः			शब्दः	पृष्टम् श्लोकः
अनच्छ अनदुह्	५० १७५		अनीक	6 141	308	अनुभाव.	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
अनंत	१५ ४५ २३९	9 8 63	ĺ	9४२ } } 9५६	\$ 62	अनुमति अनुयोग	२३ ८ ३४ १०
अनंता≺	40	२ ९२	अनु अनुक	२७०	२४९	अनुरोघ अनुलाप अनुलेपन	१४३ १२ ३५ १६ २८३ २३
अनन्यज	८९ ९२ ७	946	अनुकर्ष	४९ १५२ १३७	9 C 4 G	अनुवर्तन अनुवाक अनुशय	
अनन्यवृत्ति.		68	, -	ोन. १५५		अनुष्ण	
	२५२		, –	२ १७	•	अनुहार	
अनर्थक	३६	२०	अनुक्रम	१३७		अनुक	२२४ १३
अनल	१२	40		, ¥9	-	अनुचान	-
अनवधानता	. ૪રૂ	३०	अनुग			अनुनक	२०५ ६५
अनवरत	38	६९	अनुग्रह			अनुप	46 90
अनवस्कर्		•	अनुचर	-		अन्ह	२१ ३२
अनवरार्ध्य .			अनुज	,990	४३	अनृजु	२०२ ४६
अनस् अनागतार्तन	11.9 ° 8	٤ ،	अनुजीवि अनुतर्षण	न्…१४३ ।१९२		अनृत	\\ 3 \(\ \ \ \ 3 \(\ \ \ \ \ \ \ \ \
अनात्तप अनादर			अनुताप	} ४२ १२५२		अनेकप अनेहस्	२२ ९
अनामय				-		अनोकह	६७ ५
अनामिका. अनायास क		८२ ९४	अनुत्तर	२०४ २५९	990	अंत	}१६३ ११६ '' }२०८ ८१
अनारत	… ૧૪	६ ६९	अनुनय	२७५		ं अंतःपुर	
अनार्यातिक	, ९ ०	, १४ई	अनुपद	३०४	20	अंतक	१३ ६२
अनाहत .			1 -	ना १९०	₹ 9	अंतर	२५९ १८७
अनिमिष .	-			98	•	अंतरा	२७३ १०
अनिरुद्ध .	4	१८	, -	944		ì	वसस्व.२४८ १३२
अनिङ्	{ 13	१९ ६५		२४२ १२६		अंतराय अंतराळ	•
आनेश	98	Ę\$	अनुभव	२१९	२७	अंतरिक्ष	94 9

शब्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्दः प्रधम श्लोकः	शब्दः १९४५ स्रोकः
अंतरीय ४९ ८	अन्येश्रसः २७५२१	1 (
अंतरीय१२५ १९७	अन्वक्२०७ ७८	अपराजिता. है २३ १०४ ९१ १४९
अंतरे२७३ १०	अन्वक्ष२०७ ७८	_
अंतरेण.	अन्वय३३० ९	अपराद्धपृषस्क.१५४ ६८
अतरण.) २७३ १०	अन्ववाय१३० १	अपराध१४६ २६
्अंतर्गत२०८ ८६	अन्वाहार्य१३५ ३१	अपरेग्रुस्२७५ २०
अंतर्घा १८ १२	अन्विष्ट२९२ ९०५	अपर्णा ९ ३९
अंतर्धि ૧८ ૧૨	अन्वेषणा१३६ ३२	अपलाप ३५ १७
अंतर्हार ६३ १४	अन्वेषित२१२ १०५	अपवर्ग ३९ ७
अंतर्भनस्१९५ ८	अप् (आप). ४८ ३	अपवर्जन१३५ ३०
अंतर्वत्नी१०७ २२	अपकारगी ३४ १४	अपवाद. } ३४ १३
अंतर्वाणि१९५ ६ अंतर्वेशिक१४२ ८	अपक्रम१६२ १९१	ेरि४० ८९
अंतावसायिन् १८६ १०	अपघन११६७०	अपवारण. र १८ १२
अंतिक२०५ ६७	अपचय२१६ १६	अपवारण. रेरु७ १२५
आंतिकतम२०६ ६८	अपचायित२१९ १०९	अपशब्द ३२ २
आंतिका१६९ २९	अपचित२११ १०१	अपषु२०८ ८४
अंतेवासिन् } १३२ ११	अपचितिः { १३६ ३५	अपसद१८७ १६
	•	अपनर्ष१४३ १३
अंत्य२०८ ८१	अपटु११४ ५८	अपसन्य२०८ ८४
अंत्र११५ ६६ अंद्रक१४९ ४१	अपत्य,१०८ ३८	अपस्कर१५२ ५५ अपस्नात१९७ १९
	अपत्रपा ४२ २३	अपहार११६ १६
अंघ }११४ ६१ २४३ १०३ अंधकारि ८३६	अपत्रपिष्णु१९९ २८	अपापित ४८ २
्रिक्ष १०३	अपय ६० १७	- S929 SW
अंधकारियु, ८ ३६ अंधकार, ४५ ३	अपयिन् ६० १७	अपीग \
अंधतमस ४५ ३	अपद्गितर२०६ ६८)
अंधस्१७३ ४८	अपदिश १६ ५	भगान } १३ ६७ ११७ ७३
अंधु ५३ २६	अपदेश $\left\{ \begin{array}{l} & \forall \xi & \xi \xi \\ \xi & \xi & \xi \end{cases} \right\}$	अपामार्ग ८१ ८८
अस्त {१७३ ४८ २१३ १११		अपाद्वत१९६ १५
	अपध्यस्त२०१ ३९	अपासन १६२ ११३
बन्य२०८ ८२	भपभंश ३२ २	अपि२७३ ३५०
अन्यतर२०८ ८२ अन्यतरेषुस्. २७५ २१	अपयान१६२ १११	अपिधान १८ १३
-1.41135 10. 12. 13 .	अपरस्पर२१३ १	अपिनद्ध१५४ ६५

शब्दः पृष्टम् स्रोकः	३ ब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकः
अपूप१७३ ४८	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः अभिमहण२१७ १७	अभिशस्त२०१ ४३
अषोगंड१११ ४६	अभिघातिन् १४३ ११	अभिशस्ति. १३६ ३२
अप्पति १३ ६४	अभिचर१५५ ७१	अभिशाप ३४ ११
अप्पित १२ ५९	अभिचार२१७ १९	अभिषंग२२७ २४
अप्रकांड ६८ ९	1 , (93. 9	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
अप्रगुण२०६ ७२	अमिजन. २४४ १०८	अभिषव.
अप्रत्यक्ष२०७ ७९	अभिजात२३९ ८२	अभिवेणन१५९ ९५
अप्रधान२०४ ६०	अभिज्ञ१९५ ४	अभिष्ठत२१२ ११०
अप्रहत ५७ ५		अभिसंपात. १६१ १०५
अमाभ्य२०४ ६०	अभितस्. रुष् ६७	अभिसारिका. १०४ १०
अप्तरस्. } ४ ११	· - ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` ` `	
, "",) 33 44	अभिधान ३३ ८	अभिहार.
अकळ ६७ ७	अभिध्या ४२ २४	अभिहित२१२ १०७
अबद्ध ३६ २०	अभिनय ४० १६	अभीक१९८ २४
अबद्धमुख२०० ३६	अभिनय२०७ ७७	(2102 0
अवला१०३ २	अभिनवोद्भिद्, ६७ ४	अमीह्णम्. २७४ ११
अबाध२०८ ८३	अभानेर्मुक्त. १४० ५५	
अञ्ज र १८ १४ २२९ ३२	अभिनियाण, १५९ ९५	अभीप्सित. रे१३ ११३ ११२
रेश रेश इर	अमिनीत. रिश्वह २४ २३९ ८१	(रगई ग्रह
अञ्जयोनि ५ १७)२३९ ८१	अभीर ८३ १००
अब्द २६ २० २४० ८८) आभपन्न२४७ १२८	अभीरुपत्री. ८३ १०३
अब्द र २४० ८८	अभिप्राय२१७ २०	अभीषंग२१४ ६
(२५१ १४६	अभिमृत२०१ ४०	अभीषु३६५ २२०
अध्य 🕽 ४८ १	अभिमर२६४ २१४	अभीष्ट२०३ ५३
्रिपे१ १४६ अभ्यः २४२ १०१	89 83	अभ्यय२०५ ६७
अञ्चिकप१८३ १०५		अ भ्यंतर १७ ६
अत्रहाण्य ४० १४	अभियाद २१६ १३	अभ्यमित११४ ५८
अभय ९३ १६४		अभ्यमित्रीणः १५५ ७५
अभया ७६ ५९	अभिकाव,२१८ २४	अभ्यामित्रीयः १५५ ७५
अभाषण१३६ ३६	अभिलाच ४३ २८	अभ्यमित्रयः १५५ ७५
अभिक१९८ २४	मिलावुक. १९८ २२	बभ्यर्ण२०५ ६७
अभिक्रम१५९ ९६	अभिवादक. १९९ २८	अभ्याईत२३९ ८ ३
अभिख्या२५३ १५६	अभिवादन. १३८ ४१	अभ्यवकर्षण २१७ १७
आभिष्रह२१६ १३	अभिव्याति. २१४ ६	अभ्यवस्कंदन. १६२ ११०

	पृष्ठम् -	क्षेकः	सन्दः	पृष्ठम् १	होकः	प्र न्	पृष्ठम् स्रोकः
सभ्यवहत.				२३	c .		86 4
अभ्या ख्या		. 1	अमावास्य	ा २३	દ		₹° '\$
अभ्यागम .	9ξ9	904	अमित्र	9¥₹	19		मेका. ८९ १४०
अभ्यामा रिक	•		अमुत्र	२७३	6		7 ct 3x9
अभ्यादान.	•	1	अमृणारु	९३	3 É &	1	७९ ७३
अभ्यांत .				(99	49	अम्छिका	AR RS
अभ्यामर्द .	9 € 9	9 0 4		२९	Ę	अय	२७ २७
अभ्याश	•		अमृत	_	ર	अयन	्र २४ १३
अभ्यासाद		•		, वहर वहर			6 42 12
अभ्युत्थान	-		}	१३८	२ ७६	अयस्	962 96
अभ्युदित				(७६	•	अयःप्रति	•
अभ्युपगम	२९	4	अमृता	•	48	Į.	ा…१६४ ३
अभ्यपपि				(20	८२	अपि	२७५ १८
अभ्यूष	-		अमृतांघ	स् ४	6	अयोम	•
~,	1 94	3	अमोघा-	€ 04	48	अयोघन	• •
अभ्र	ەو ∫.	Ę	जनाया-) c8	9 06	1	۶۴ ود
अभ्रक	9८३	900	अंबर	∫ .95	3	अरघट्ट	२८१ १८
अभ्रपुष्प			1	" १२५८	969	अरणि	१३३ १९
अभ्रमातंग			अंबरीष	۶۶ و	-	अरण्य	ξξ 9
अश्रमु		8	अंबष्ठ	۶۵۹ مور	२ ७९	-	(101 11
अभ्रम् वहर		88	अंबष्टा .	1 -	•		ते ६६ १
अभि	٠ ٢٠		7481	29		अरहिन	۶۵ ۶ ۹ و
अभ्रिय	30		अंवा	४०		बरर	ÉR 30
अभ्रेष	986		अंगिका		_	अरलु	७६ ५७
असम	96		अ ष्ट्रा अंबु		* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	असविंद	
अमर		٠ د د	अ <u>ब</u> ुकण अंबुकण	-	. 33	अशाति	
अमरावर्त		٠ ٧٤	अंबुज	yv	7.7	अराल	
अमर्त्य		8 6	अंबभृत		ų. V	अरि	१४३ १०
अमर्ष	Y	•	अमुख्य अंबुदेता		30	अरित्र	
अभूषण	98	•	अनुनता	• • • •	•	अरिमेद	94 4
अमा	२७	_					(€1/4/
अमास	93		अभ्रम्		•	अरिष्ठ.	• •
मसात्य	9 K		अमोदा	•			(ww §2
न्यूड्स (स्त	₹ 0	7º	1 - 4 - 45 - 41			٠	, =

200E:	पृष्ठम् स्रोकः	शब्द:	प्रथम	श्रीक:	l steet.	पृष्ठम्	aliant.
3	1.99 7WC	अर्णस्	86	*	1 41-42	604	रहा ना
अरिष्ट	96.20	अर्तन	२३०		अर्वन् .	{ १५० १२०३	88 42
1	10x 43	अति	२३६	-			
	्रि३० ३६		969	•	अवाक्.	{ ४९ { २७४	96
आरष्टदुष्टध	ी. २०१ ४४	अर्थ .	" { २३९			993	
£	₹9 ₹5				अर्शस	***338	49
अरुण	२9 ३ २ ३9 94	्रथमा.		ξ	अशेष्रि	92	
	(२३२ ४८	अर्थप्रयो	ग …१६४	8	अशोरीग	युत्त. ११४	
अरुणा	८३ ९९	अर्थशास	· ३२	Կ	अर्हणा		
अरुंतुद	…२०८ ८३	7.66	∫ १४३	9	अलक		•
अरुष्कर.	∫ ७३ ४२	आयन्.		४९	अलका		•
	रि१९ १८९		(923	9 ex	अलक्त	9२७	१२५
	११३ ५४	j	" 🕽 ૨५૪	9 6 0	। : अलक्ष्मी	४ ७	ર '
अरोक	२११ १००	अदेना	२१४	Ę	अलगर्द	४Ę	
अर्क	 	अदित	२१०	९७		•	
अर्कवर्ण .	(२२२ ४ ८• ८९	अर्घ	ુ ૧૮	• •	अलकारप	णु { १२२ १९९	२९
		_	Į 9¢	3 €	अछंकर्तृ	9२२	900
	60 60) _	८४		अलंकर्मी	ण१९७	96
अर्गल े	Ex 30	1 -	4º		अलंकार	9२२	303
	२२८ २७	l	२३	-		१२२	
अध्य .	१३६ ३३	अर्घर्च	२८५		भलंकिय	ा…१२२	303
अर्चा	र् १३६ ३५	अर्धहार			अलंजर	9६९	₹ १
	(32) 44	अधादक	१२६	ı	अलं	ुरु७१	२५३
	{२ ११ १०१ {२३९ ८५	अर्बेद	· { २८२ · · { २८५	99		' र् २७४	
	∫ 12 €0		(२८५	44	अलर्क	{ 100 100	63
अर्चिस्	रिरहें बेहें १	अर्भक	909		- (- (- (- (- (- (- (- (- (- (336)	२ २
	60 60	अर्भ	२८५	1	अस्स	966	16
_	(३१ १३	अर्थ	963	9	अलात	9ĘS	३०
अर्जुन	११ १३	थर्षमन्	" { २५े३		अलाब्	९२	94E
अर्धुनी .	48, 3£0	_	ەچ	1		90	18
_	906 60	अर्वा अर्याणी	۲۰۰۰،	. 1	अछि	300	
WIVIEL	्रिट १ १७ २३४ ५७	અવાળા અ દ્ય િ	y o y	,		(२६९	
	C'14 3 4 ,	બ ષ્≀ .	۲۰۰۴	12	जालक	980	34

	37	स्राकः
अस्यः पृष्ठम् श्लोकः शब्दः पृष्ठम् श्लोकः शब्दः पृ		
अर्किद ६३ १२ अयदाह ९३ १६५ अवलंबित२		.4
अलीक२२४ १२ अवहारण१६६ १२ अवस्मुज		-
अल्प२०४ ६३ अवर्हीर्ण२०९ ८९	K É ,	२५
अल्प२०४ ६३ अवर्दार्ण२०९ ८९ अल्पतनु१११ ४८ अवद्य२०३ ५४	R 0	22
अल्पमारिष ८९ १३६ अवधारण२५७ १७८ अवश्यम्२		
'अल्पसरस् ५३ २८ अवधि२४२ ९९ अवश्याय	98	16
अल्पिष्ठ२०५ ६२ अवध्वस्त२१० ९४ अवष्टव्य२१	53	908
अल्पीयस्२०५ ६२ अवन२१४ ४ अवसर२		
अवकर ६४ १८ अवनत२०६ ७० अवसान२	२१	३९
अवकीर्णिन्. १४० ५४ अवनाट१११ ४५		
अवक्रष्ट२०१ ३९ अवनाय२१९ २७ अवसितः 🗸 २		
2	93	906
अवकाशन १७ ७ अवान १७ ३ अवक्रय१७९ ७९ अवंतिसोम१७१ ३९ अवस्कर. रि	15 44	द् <i>ष</i> १६७
अवमणित २१२ १०६ अवंध्य ६७ ६ अवस्था		
अवगत२१२ १०८ अवमृथ१३५ २७ अवहार		
अवगीतः {२१० ९३ अवभ्रष्ट१११ ४५ अवहित्या		
अवम२०३ ५४ अवहेलन		
अवमह १९ ११ अवमत२७५ १०६ अवाक् १ अवमर्द१६१ १०९	९६	93
अवग्राह १७ ११ अवमानना ४२ २३ अवाक्पुष्पी.		
अवस्थित२१० ९४ अवमानित२१२ १०६ अवाय२	οĘ	90
अवज्ञा ४२ २३ अवयव११६ ७० अवाची	94	3
अवज्ञात२१२ १०६ अवर१४९ ४० अवाच्य		
अवट ४५ २ अवरज११० ४३ अवार	४९	6
अवटीट१११ ४५ अवराति२२१ ३८ अवासस्२	00	३९
अवह१२० ८८ अवरवर्ष१८५ १	٥٤	20
अवह१२०८८ अचरवर्ष१८५.१ अवरांस२६६ २२८ अचरीण२१० ९४	६२	२०७
अवतमस ४५ ३ अवरोघ ६३ १२ अविम	७८	Ę
अवतोका१७७ ६९ अवरीधन ६२ ११ अवित२		
अवहंश१९२ ४० अवरोह ६८ ११ अविद्या		
३१ १३ अवर्ण ३४ १३ अविनीत?		
अवदातः १२३८ ८० अवलक्षः ३१ १६ अविरत	34	É

क्रम्:	पृष्ठम् ।	होकः	क्ष ंदः	पृष्ठम् -	होकः	शब्द:	पृष्ठम्	होकः
			স শ	१४९	४३		४२	
अविकंबित	` रे २०८	૮રૂ	अञ्चल र्णक	७ ४	RR	असूम्घरा	998	६२
अविस्पष्ट			अश्वस्थ	७०	२ १	असृज		•
अवी चि	४७	9	अश्वयुग्	98	२१	असौम्यस	वर. २००	३७
अवीरा	40 f	33	अ म वडव	…२८१	9€	अस्त	{	₹
अवेक्षा	…२१९	२८	अश्वा		-		-	
अञ्चल	२३५	६२	अश्वाभरण				२७५	
अञ्चलरा	-		अश्वारोह	-	•	अस्ति	२७५	
अव्यंडा	29	-	अभिन्			अस्तु	२७४	-
अध्यथा.	∫ ७६	५९	अश्विनी			अस	940	-
अव्यथा.	1 80	386	अभिनीसुत			अस्यि	•	•
अन्यय		-	अश्वीय			1	۹۰۰۰،۹۰۹	•
	ा…२०६	•	अष्डक्षीण			3	च्. २००	
=	१७४		अष्टापद.	∫१८२	84		्र १२ ११५ ७२१	३३
-	11. 990		l			अस्त	7 117	€ 8
	99		अष्टीवत्	•			(२५५	35%.
	२१३		असकृत्			Į.	93	
	904		असती			1	939	-
_	२८३			900	-		₹9९७	-
_	२०५	•	1	૭૪		1	٠ لا	-
	60			कारिन्३९			२००	
	हिणी. ८१			२०४			यि. १४०	•
	969			940		1	२०३	-
	१८३			१०६ ३१		_	89	
	٠ ٤٢		1 -	२ा फ. १८६			ान्. २०३	
	989		1 .	n. 104 57. 940		1	२२	
	८६		_	37e		1	का. १६०	
	913		. •	378			.π. 9ξ≈	
	18		,	9 ફ ३			39	
अञ्चात अश्रि				१६३		1	२१	
	121			'Y			२२	
	३५			,,,, ४२		1	२ ०	
A1-08150			#, Y		-			

श्रम्	पृष्ठम्	श्रीकः	\$14°	१ ष्टम्	湖南:	शस्य	प्रधम्	स्रोकः
अहह	२७२	: २५८	अभिष	×₹४	34.	आजीव	9Ę₹	3
अहार्य	ફ ४	3		· 90	Y	आजृ	Y'0	₹
ग्रहि	{ ४५ { ३६८	Ę	आखु	50	13	आहा	3×€	? .Ę
			आखुमु ज्	र् ९६	Ę	आक्ष	203	48
	9¥₹		आखे ट	966	२३	गाटि	\$9	₹ ५
	দ্য … ४७		आख्या	३३	6	ancias.	{ 9 5 9 { 2 4 4	306
'अहिमय	3&A	३०	आस्यात	२१२	1.0			
	935		आख्यावि	का. ३२	4	आहि	९९	२५
अहेर	८३	909	आगंतु	१३६	३४	आहक	960	LL
अहो	२७३	9	आगम	Ęw	4		9 ६५	
-	२४			{ १४६ ∵ { २६७		याहकी	. {	980
अद्वाय	२७२	ર	नानस्	`` ो २६७	२३ १			
	आ.		आगू	२९	4		१९६	
आ (आ	:). २६९	२४१	ł	१३३			₽₹و	
आ	३७४	94	आमहार्या	णेका. २५	38	i .	२२४	•
	२०९		आप्रहायप	गी… २०	२३		5x4	
आकर	﴿ وَ	હ	आङ्	२६९	२४०		ब्. २०१	
आकर्ष	२६५	२२२		8º	٠,	आतप	्र २१ "{२८२	३४
आकल्प	9२२	99	आंगिरस	२०	२४		-	
	{ 396	94	आचमन	१३६	₹		3¥6	
आकार	. {२१६ . {२५४	9 63	आचाम	१७३	44		¥0	
	ति ४४	- 1	आचार्य	939	6		۹۵	
_	I ३३		आचार्यो	باه و	38		93€	
	94	í	आचार्यान	٢٠٠٠٩ و٠٠	34		935	
_	३०८	1	आचित	920	85		938	
	२ ०६	- 1		1 96	33		३८	
•	२५४		आच्छाद्न	1. { 96 1984	994		₹09 1	
	,3४०		_	斯…88	•	-	63 5 39	
	Ęw		_	966	- 1		 : vol	
	३४		-	302	- 1			
	298			940	**	आत्मन्	`{ २४४ [:]	₹¥! ta€
	₹¥	• 1			ι			
-	1209		आजि	. { 3€3 . { 3 €3	35	आत्मभू	{ v	~ ~ . ? :
-11411.991	4434 7 - 1			£ ,,,	7,			, , , ,

इसदः पृष्टम् श्लोकः	ज्ञनः पृष्ठम् स्रोकः	शब्दः
वात्मंभरि१९७ २१	आनाच्य१३४ २१	आभीरपङ्घी
आत्रेषी१०६ २०	आनाह११३ ५५	आभीरी
आधर्वण२२२ ४३	आनुपूर्वी१३७ ३७	आभील
आहरी१२९ ३४०	आंधसिक१६९ २८	आमीग
आदि२०७ ८०	आन्वीक्षिकी३२ ५	आमगंघिन्••
आदिकारण २७ २८	आपक१७२ ४७	आमनस्य
आदितेय ४ ८	आपमा ५४ ३०	आमय
5 8 6	आपण ६१२	आमयाविन्.
आदित्यः 	आपणिक १७८ ७८	आमलक
ः (२० २८	आपत्प्राप्त २०१ ४२	आमलकी
आदिनव२१९ २९	आपट्१५७ ८२	आमिक्षा
आहृतरे३९ ८५	आपन्न२०१ ४२	आमिष
आच२०७ ८०	आपन्नसत्त्वा. १०७ २२	•
आद्यमाषक १८० ८५	आपमित्यक. १६४ ४	आमिषाशिन्
आधून१९७ २१	आपान१९२ ४३	आमुक्त
आयोत२२३ ३	आपीड१२९ १३६	आमोदः -{
माधार ५३ २९	आपीन१७७ ७३	आमादः ≺
आर्थि { ४३ २८ २४२ ९७	[988 86	आमोदिन्
	आप्पिकः {१६९ २८	1
आधृत२०९ ८७	आप्त१४३ १३	आम्नाय. 🗧
आंबीरण१५३ ५९	आप्य ४८ ५	आम्र
आध्यान ४३ २९	आप्यायन२४५ ११५	आम्रातक
आ नक { ३८ ६ २२३ ३	आप्रच्छन्न२१४ ७	आम्रेडित
(२२३ ३	आप्रपद१२६ ११९	आयत
आनकदुंदु भि १ २३	आप्रपदीन१२६ ११९	आयतन
बानव२०६ ७०	आप्रव१२६ १२१	आयति-
अनिद्ध 🔐 ३८ ४	आप्रवद्गतिन्. १३८ ४३	1
आनन१२० ८९	आष्ठाव१२६ १२१	आयत्त
आनंद २७ २५	आवंघ१६६ १३	आयाम
आ नंद् यु २७ २५	आभरण१२२ १०१	वायुध
जामंद्रन२१४ ७ 🕆	आभावण ३४ १५	आयुधिक
आमर्त२३६ ६४	आभास्तर ४ १०	आयुषीय
आनॉय ५१ १६	ं आभीर१७५ ५७	अभुष्मत्

,		415			,		11
शब्द:	१ ९म् स्ट्राह्म	श्रसः	ुः पृष्ठम्	eder.	57.00	, Ton	200
	.१६३ १२०	·	989		आश्च		
	.960 103		3x		}	13	
	.922 90	1		18	}		
•	., ७० बुड्	बार्ल	{ ξυ	8	आशा-		FRAE
आस्त्रालक.	•	1 .	به ا ۱۰ م			मवीन.१७५	
	રર૧, ર્ટ	आहिम	र ३८	4	1	ख ४ ६	1
आरंग	216 28	आली	•		,	_ં રફ્લ	- •
आरव	३६ २३	आलीव	940	८५)	•	•
	159 34	आलु	۶۶	39	બાર્યું	n. } }	*
असात्	३६९ २४	- 1	·२२३		}		*
आराधन	२४७ १२	- 1	ल२१९		आशुग		
आराम	६६ २	i -	990		271816	 १णिक्	£ 35
आराहिक	१६९ २८			•		g	
आराव	३६ २३	(Ę		1	, 9 , 9	
अरिवत	७१ २४		त१६८				
	११२ ५०	1	Y		आश्र	l····{≤3 38	4 99
अहोह	∫१२५ ११ }२६८ २३	द्ध आवाप	क १ २३		্রাপ্ত	ाज्ञ ३	2 40
			5 Y			{ ? ! { 99	۹ ب
	Ex 30	i			आश्र	هو 🕽 …	८ २४
	७९ ७४		र्ह }२०। है: }२०।	६ ८७ ६ ८७	आश्रुर	r29	
_	१०६ २१				आष	94	0 86
	२१२ १०		, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,			थ ६	
	१७१ ३५	आति।				युक २	
आर्थ	\ 80 38 \ 80 38	आवि	र्२७			शन २	
_		ग्राह्म	•	•	1 -	क्षेय १	
	*** S &c	आवुर				Pr94	
	46 6	arther.	•		आवा	₹ { १३	4 35
	184 E	आहत	٠.,٠٠٠				
	9¢₹ \$1	. -4144				₹q°	
-			वि ०५५,६			93 193 193	2 35 c
	€9 		क्ष१३	६ दे ड	414	7 € } 7 € }	19 38
आक्वाल.	<u>,</u> 43 3' <u>,3</u> 66:8	क्षांश	तेर १ ९				

श ्रा कः पृष्ठम् होकः	शब्दः	पृष्ठम् श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम् श्लोकः
यासंदी२७९ ९	आसान	३३ ८	1	
अश्वक्ष२०५ ६६		₹.	₹	1 16 5
आस्व१९२ ४२	इकु	९३ १६३	इंदर्ह	68 84
आसादित२१२ १०४	42	(· ca sc	इंद्रयव	७८ ६७
		८३ १०४	I	९२ १५६
आसार	इक्षुगंघा.	\$ 58 330	इंड्सुरस	66 66
आसुरी१६७ १९		(९३ १६३	1	૭૮ ફંટ
आसेचनक. २०३ ५३	इक्षुर	८३ १०४	_	90 KC
आस्कंदन१६१ १०४	इस्वाकु	९२ १५६		99 90
आस्कंदित१५० ४८	•	(२०७ ७४	1	4 97
आस्तरण१४९ ४२	इंग •	'''र्रिशेद १५	1 -	६ २०
आस्था२४० ८८	इंगित		ے۔	§ ₹• c
आस्थान१३२ १५	इंगुदी	७४ ४६	इंद्रिय···	र् ११४ ६२
आस्यानी१३२ १५	इच्छा		1 -	३० ८
आस्पद२४१ ९४		ी१०४ ९	इंघन	६८ १३
आस्पोट ८० ८०	1 -	छ१३१ ८	इम	१४८ ३५
बास्फोटनी. १९० ३४	इट्चर	•	इम्य	996 90
आस्कोटा 🗧 ७८ ७०	इंडा	२३१ ४२	इरंमद	90 90
आस्कोटा.		960 38		१ १९२ ४०
आस्य१२० ८९	इतर	₹२०८ ८२	इरा …	र् २५७ १७६
आस्या२१७ २१		२०८ ८२ २५९ १९२	इस्रा	૧૨૧ ૪૨
आसव२१९ २९	इत्तरेखुस्	२७५ २१	इल्वछाः	२० २३
आहत { ३६ २१ २०९ ८८	इति	२७० २४६	I	રહરૂ ૬
आह्व१६१ १०५	इतिह	१३२ १२	इष	२५ १७
आह्वनीय१३३ १९	इतिहास	३२ ४	£3	وى ١٧٥٠٠٠٠
आहार१७४ ५६	इत्वरी	9 08 90	इचुवि	33 348
आहाव ५३ २६	इदानीम्			1934 26
अगहितलक्षणः १९६ १०	इध्य	६८ १३	₹ ह	1 304 40
आहेब ४६ ९	इन	**** 333	1 .	43 964
आहो२७३ ५	इंदिरा	७ २९	1 -	30 7 3
आहोपुरिका.१६० १०१	इंदीवर	५५ ३७	1	r 994: \$
आह्रय ३३ ७	इंदीपरी	८३ ५००		२३० ३९
आहा ३३ ८	13	···· 96 '93	,	१५७ ८३
.н. 👣	19			- •

इवीर११५ १५५ इंघ्यी ४२ २४ इंघ्यी११२ १०९ इंग्रिल११२ १०९ इंग्रिल१५८ ९१ इंग्रिल१५८ ९१ इंग्रिल१५८ ९१ इंग्रिल१५८ ९१ इंग्रिल१५८ ९१ इंग्रिल१५८ १५	१९ १६ १३ १०५ १२८
हेशा १९९ ३१ हेशिंग १०६ २० हेशिंग १९२ १९० हेशिंग १९३ १९० हेशिंग १९३ १९० हेशिंग १९३ १९० हेशिंग १९३ १९० हेशां १९३ १०० हेशां १९४ १००	२३ १०५ १२८
रेशिंगका १०६ २० इंडिस २०६ २० १४५ इंडिस २०६ ४० इंडिस २०६ १० इंडिस २६	१०५ १२८
हैंडित२१२ १९० हमाया. १०० १४५ हति२१६ ६८ हमाया. १३ १६० हमात२१४ १४ ह्यां२१४ १४ ह्यां४२४ १४ ह्यां४२ १४ ह्यां४४ १४	२२८
हाहत२१२ ४४० हीति२१६ ६८ छ्वा२०६ ८७ हीरीत२०९ ८७ हीरीत२०९ ८७ होति२०९ ८७ हेवीं२०९ ८७ होति२०९ ८७ छवार२०८ ८२ छवार२०८ ८२ छवार२०५ ८२ छवार२०८ ८२	•
होती२०९ ८७ होती२०९ ८७ होती२०९ ८७ होती२०९ ८७ होती२०९ ८७ होती२०१ १५५ होती२०१ १५५ होती२०१ १०९ होती२०१ १०९ होती२०१ १० होती२०१ १७	६३
हिंची११२ १४ हेची११२ १४ हेची४२ २४ हेची११२ १०९ हेची११२ १०९ हेची११८ ९१ हेची१५८ ९१ हेची१५८ ९१ हेची१५८ ९१ हेची१५८ ९१	
इतार११६ ५५ इतार११६ ५५ इतार११६ ६७ उत्तार११६ ६७ उत्तार११६ ६७ उत्तार१९६	40
हैंचा ४२ २४ उचावच२०८ ८३ उत्तमांग१२१ उचे: श्रवस १० ४८ उचे प्रेट ३४ १२ उचे स्	4
हें छित११२ १०९ उसे:श्रवस् १० ४८ हें छी१५८ ९१ छसेस्२७५ १७ हें हो ८ ३२	¥
हें१८ ९१ उचे पुर ३४ १२ उत्तर १२९९ के१८ ११९ उत्तरा १६	94
देश १ ३२ डिवेस२७५ १७ उत्तरा १६	
25 ···· 35	350
C de	
auth minds	
वास्कृत. र ३३९ ८५ वित्रकृतरवर	20
इश्वर १९ ट्यासन१६२ ११५ टलान ११	34
्रेक्स १३८ चंडच्चल ४० १७ चत्तानश्य११०	83
डेंक१६४ २ जिल्ला व्याप१६६	
कर्म वार्यंतस्इ	
र्भार्ति व्यापार्थि । । । वह ।	-
क्रिय अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ वर्ष अर्थ वर्ष अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ	-
इंकिंग १ ०६० ३३ एडील१०१ ३७ व्यापान्य१०१	
रीहा ४२ २७ (२११ १०१ उत्पक्षर३९	
इंहाम्य ९६ ७ उत रे २७० २४४ उत्पत्त रे १	₹ ७
द.	146
च२७५ १८ वताही२७३ ५ वत्पळ्ञारिवाः ८५	
उक्त११२ १०७ उत्क१९५ ८ उत्पात१६१	
चित्ता ३२ १ वत्कट {८८ १३४ वत्कुळ ६७	
वन्य१८४ हे॰ रिकट हेरे वस हेर्न	
वसन्१७५ ५९ वस्कंटा ४३ २९ वसर्जन१३५	- ₹ ₹
. MAI MA	
सहस्य१७२ इप सम्बद्ध२१५ ११ विस्तर्य हे २६३	₹6

शन्दः	y y	(स्रोकः	Siegi	_{११ भ} पृष्ठम्	श्रीकर	37200	
उत्सादन			-			7	पृष्ठम् श्लोकः
	∫ 83	•	उद्दीच्य	{ }€		उचत	Ros cs
डलाइ.	🐧 aki			∫ 6 0		उवम	294 99
उत्सं इन	२४५	994	उद्देवर .	{ ₁∠₹		उद्यान .	्री ६७ ३ • १२४५ ११७
उत्साह्व	र्धन ४१	96	स देखा प	र्णी ९०	•	उ बु क	11984 4
उत्सुक	994	,	उद्खल			उसोग	२८५ ३३
उत्स् ष्ट्	२१२	9.6	उद्गत	२१०		उड़	52 30
उत् सेघ	} €0			र १ २ ४		उइर्तन	926 923
-//14 **	'' रे २४२	98	उद्गाह	૧૪			186 3€
उदक्	२७६	२३	उद्गात	933	1	उद्घान्त	1 230 80
उदक	§ 80	४	उद्गार	२२०		उद्दासन	9 ६२ 994
ં વધા	'`रे २८२	· २२	उद्गी थ	२८२	٠ .	उद्राह	989 40
उदक्या	9∘€	39	डद्गु र्ण	२०९	- '	उद्देग	∫ ९४ १६९
उदमं	२०६	90	उद्माह	३२०	Ì		ં ફે ર૧ફ ૧૨
उद ज्	२२१	39	उ ट्घ	···· २७	• (उंदुरु	९७ १२
उदिष	४८		उद्घ न	२२०		उन्नत	२०६ ७०
खदंत	३३	9		969	• • •		२०६ ६९
उदन्या	9 <i>७</i> ४	44	उद्घात	38		उन्नद	•••र३९ ८५
उद् न्वत्	४८	9	उद्दान	9४€	•]	उभय	२१६ १२
उद् पान	५३	२६	उद्दाल	৩২	• •	उन्नाय	२१६ १२
उदय	٠٠٠ ٤٤	2	उद्दित	29•	٠,	उन्मत्त	. { 138 € 0
उदर ू	ee e	60	उद्दाव	१६२	· 1	ब्रह्म विश्वा	े १ १४ ६० १९८ २३
	••••३४७		उद्धं	y'y	- 1	उन्मनस् उन्मनस्	
	۴۶		उद्ध	8 ^t	36	•	6 9 CD 9 0 0 L
•	90x		उद्गात	عوج	२६	उन्माय	रिश्टें रहे
	،, ३३	1	उद्धान	9 ξ ९	29	उन्माद	···· ४२ २६
उदान	9 ą	eş e	उद्दार	૧૬૪	1	=	338 Eo
खारं	1.994	6	च ढ्रुत	३०९	_ 1		
i, j	6334	364	उद्भव	२८			The \$ 200
	····\$%\$	- 1	च दिज	…२०३	49	उपकार्या	···· 42 34
_	•••• . ३३		ভ ক্রিভ্ ু	२०३	49		- f. 20 124
		•	उद्भिद ः	२०३	43	७ पशु चिक	1 { 269 36
उदात्रा ।	98	3	उद्भम	२१६			٠٠٠٨ ، ١٥٩ ع

राष्ट्रांचुन्यम्बिकाः

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठस्	लोकः	शब्द:	पृष्टम् स्रोकः
	. १३२		उपमात	٠٠٠٤ ٢٠٠٠	.49€	उपस्थ	
उपक्रमः •	र् २१८ २५०	રફ	उपमान	••••\$9	₹ €	उषस्पर्श	
			उपयम	••••3*8.3	48	खंबहार.	{१४६ २८ {२६० १९५
	٠ ﴿ لا		उपकाम	383		1	
उपगत जगमन	२१२		डप्रक्त			उपहर	=
उपग्रहम उपग्रह	२ १९ १६३			`रे २०१	•	उपांशु	१४५ २३
उपमह उपमाह्य	• •		-	380			₽¥ 3,5P P
उपन्नास उपन्न	290		उपराग	२४		ल्पाकृत	
_	299		उपराम	२२१	-	उपात्यय	्री३७ ३७ ' १३० ३३
	933		उपार	246			1398 98
	209		ਤ ਖਲ	به چې		उपदान-	
	49			र्था••••३२			
ভ ণ জা प	984		उपलाब्य उपले भ	२८ २१९		51114	{ ४३ २८ ¶९६ १२
उपज्ञा	9३२		}	२६१		1	य१३१ ७
उपतप्तृ	२१६	38	उपवन	•		1	यार५०५ १४
उपताप	993	49	1 -	40	•	1	यानी-१०५ १५
उ पत्यक	T •••• ξε	0	उपवर्ह	939		उपाध्य	व्यो र् १०५ १४
उपदा	981	६ २८	उपवास			1	(103 13 (104 3 13
ज्ञास्तर.	{ १४ ^९ २५,	१ २१				i	तुष्टयः १४५ २०
	-		0.444	····93°	40	डपायन	
	929	-	उपशल्य	٠٠٠٠ ફ ٦	s २०	1	म ३४ १ ४
	•••• ¥		डपशाय	२२	> ३२	l	त१५१ ५०
_	•••• ३		उ पश्चत	···· २ १	२ ५०९	उपासं	#94C CC
_	i96		उपसंव्य	ान१२'	4 394	े ज्ञपास	न१५७ ८६
	द्२४ [.] कर ६		उपसंपन्न	्र १३′	५ २६ २ ४५	उपास	ना१३६ ३५
	तर ६ ह ३		31013	, j 30.	२ ४५	उपारि	ति२११ १०२
	90		1 -	و توبه		खपाई	त. {. २४ १० २०९ ९ २
_	92	-	, i	•••ः १६		` I 🛌	-
उपस्त	93	४ २५	उपस्जे	₹ ···.₹°	•		
उपभोग	ાન્સ્યુ	७ २०	1 ' -	f90		1 -	क्ता ९२ १५७
ल्पा	{ 39	\$ 38	डपसूर्यव		.१ ३३		घात ३३ 💲
A 1411	···' } 9 ९	9 36	ं उपस्का	<i>و و ، ، ، ه</i>	० देपू	उसक्	ष्ट ••••१६५ ८

इन्दः	पृष्टम् र	: 神徳	सम्ब	पृष्ठम् -	लेक	100 :	पृष्ठम् स्रोकः
उभय शुस्	364	21	उहाच	····9·93	44	अवर्ष न्	39€ 65
टभवेगुस्	405	21	उह्याच	••••9२६	986	ऊर्ज	२५ १८
	5 5	36	उद्योक	···· 85	Ę	उर्जस्व ल	344 64
वस्। •••	· } 3 € ø	२०	उशनस्	٠٠ ३٥	२५	डर्जीस्वन्	944 64
डमापति	···· c	३६	उज्ञीर	···· 93	3 € &	उर्णनाभ	९७ १३
सम्य	٠٠٠٠٩ ६ ٢	•	टक्णा	•••• ሪጓ	9.6	ভৰ্ণা	२३३ ५०
स्टरः स् त्रिष	हा. १९३	308	उपर्जु घ	•••• १२	40	ज्याचि	{ 108 100
स्रग	•••• ४ ६	L	उ षस्	•••• २२	२		•
राज	9७८	७ ६	उषा	२७५	16		•••• ३८, ५
स्था स्य	٠٠ ٩٥	380	उ षापीत	6			333 80
चरम्र	3७८	७६	उ षित	299		उर्ध्वश्च	····333 RA
चररी	363		उठ्र	902		किंम ••	\ xc x
	•••२१२			5 24			" रे २८६ ३८
खरम् छद्	•	•	aon	ام عدد العدد		l	१२३ १०७
उरस्	996		ज्ञास्त्रका			ऊमिमत्	•
उरासिल	٠٠٠٠٩ ٢ ٢	७६	1 _	esF		ड् ष	40 X
उरस्य	306	२८	उद्योव	····368		ऊषण	१७० ३६
उरस्वान्		•		ग्ग्यहरू मग्ग्य		उपर	५७ ६
उठ	•••दे०४	•	उ ष्णक	ग•••• २५ २५		उपवत्	به ۱۰۰۰ ب
उद् क	٠٠٠٠ نوم	_	उस्र			1	···· २५ १९
उर्वत	٠٠٠. ٧७		l	••• २१ ••• ३७६		डह	२९ ३
रुवेझी 	•••• 99		1001	•	44		ग्रु .
उदीं	•••• 40		 	ऊ .		ऋक्य	
उंची द	٠٠٠٠		अ त	339		-)	99 39
	ک <u>ې</u>		उधस्	960	-	ऋक्ष •	४६ ५७ ९५ ४
	•••• ९७		उन	२ ४७			•
उस्तल	53 f		डम् •	२७५		1	ा ८९ १३७ का८४ ११०
••-	ह ७२ ५०	_	कररी	eof	_	1 -	
	*** 49		उत्तरम	q & 3		ऋज् ऋजीव	
उस्का	₹७८	6	जरी =1	₹७१		1	२०६ <i>७</i> २
उल्मुक			जरीकृत -	۶۲۶ موه		মতু কলাট	
स्टब्स	390		उत्	996	,	1	(त 9⊌ 9•
चल्क् ण	२०८	63	अव्य	••••₹₹	1.	⁾ ऋण	वह्र र े

antigraphus.

ग्रन्दः पृष्टम् शिकः	शन्दः . १९४५ शोकः	शब्दः १९५ शिकः
अत ∫ ३६ ३२	एकषुरीण१७६ ६५	एकावाकुक८६ १२१
6 3 4 8 4	एकपदी ५९ १५	२७१ २५१
ऋतीया२२० ३२	एकपिंग १४ ७३	२७३ ९
- रिक्ष १३	एकपष्टिकाः १२३ १७६	एवम् २७४ १३
ऋतु रह २०	एकसर्ग२०७ ८०	₹98 34
[२३५ ६१	एकहायनी१७७ ६८	
ऋतुमती१०६ २१	एकाकिन्२०८ ८२	1 2 ' ' ' '
ऋते२७२ ३	पकाय∫२०७ ७९	₫.
ऋत्विज्१३३ १७	एकाय {२५८ ३९०	ऐकागारिक १८९ २४
ऋद१६८ २३	एकाड्य२०७ ८०	एंगुद ६९ १८
羽尾 ・・・・ とり 99マ	एकांत १४ ७०	रेण ९६ ८
ऋमु ४८	एकाच्दा१७८ ६८	एणय ९६ ८
ऋभुक्षिन् १० ४७	एकायन२०७ ७९	ऐतिहा१३२ १२
ऋस्य ••• ९६ १०	एकायनगत. २०७ ७०	ऐदियक२०७ ७९
्र ३७ ९ 	एकावली १२३ १०६	ऐरावण १० ४९
ऋषम १७५ ५९	एकाष्टील ८० ८१	ऐरावत १६३
(२०४ ५९	एकाष्टीला ८१ ८५	ऐरावत १६३
ऋषि१३८ ४३	एड१११ ४८	ऐरावती १७ ९
ऋष्यकेतु ७ २८	एडक ः१७८ ७६	ऐलविक १४ ७३
(/ 9 / 10	एडगज ९० १४७	ऐक्रेप ८६ १२१
ऋष्यमोक्ताः { ८३ १०१	एडमूक२०० ३८	ऐश्वर्य ९ ३८
प्.	एड्क ६१ ४	ऐषमस्२७५ २०
(२०८ ८२	एण ९६ १०	मो.
एक २०८ ८२	एत ३१ ३७	ओकस्२६७ २३४
(२२५ १६	एताई२७६ २३	(399
एकक२०८ ८२	एव ६८ १३	ओष मार्च १०२ ३९
रकगुरु१३२ १२	एधस् ६८ १३	(२२८-२७
इकतान२०७ ७९	एवा२१५ १०	ओंकार ३२ ४
रकताल ३८ ३	एवित२०७ ७६	ओजस्२६७ २३४
एकदंत ९ ४९	एनस् २६ २६	ओं ह्रपुष्प ७९ ७६
एकदा२७६ ३२	एरंड ७५ ५३	ओषु ••• ९६∞६ः।
एकपुर१७६ ६५	एका ८७ १२५	ओहन१७३ ४८
रकषुरावहः१७६ ६५	एलापणी ८९ १४०	वीम्२७४ १२
		e de la companya de

श्रव्यः	पृष्टम्	श्लोकः	कृत्यः	. व्यव	होकः	शब्द:	पृष्टम्	लोक:
ऒप	214	9	BENEŽI	J 489	**	कटिपोथ	990	40
ऒषधी	٠٠٠٠ ξ٥	Ę	1137(**	'{ २४९	346	कर्टी	२८६	36
ओषधीश	96	38	প্ৰ	90	36		<u>ر ع</u> ٠	9
ओष्ठ	120	80.	कंकटक	**** # £	ÉA	कट्ट	<	
	औ.		कंकण	१२४	- (_	. ६२३०	३५
औसक	ړی و	Ę٥		ī9 २ ९	135	कटुतुंबी	९२	346
औचिति	₹८७	३९	नकाल	33€		कटुरोहिण	29	64
औचित्य	وي ج	३९	कंकोलक	9२७	१३०	कर्कल	•••• ৬३	80
औत्तानप	।दि. १९	२०	कंगु	€ ب	२०	कटुंग	٠ ७६	4 €
औस्सुक्य	२६७	२३०	कच	9२१	९५	काठिंजर	60	७९
औदनिक	۶۶ و	२८	कचर	•••३०३	44	कठिन	२०७	७६
औदरिक	9९७	21	क चित्			कठिलक	९२	१५४
	ह२२ १		कस्क .	. } 40	90	कठोर	२०७	⊌Ę
औपयिव	····386	२४		وي } "		कडंगर	٠٠٩ € ८	२२
	وع و		٠ ـ	٠ ५٦		कडंब	٠٠٠.٩७٥	
औरभ्रक	962	७७	1	386		कडार	···· ₹9	•
	902	-	कच्छू	993		ĺ	१ २०५	
	कि. १३५	30	कच्छुर	338		कण	१ २३२	४६
अ ौर्व			कच्छुरा	63		}	[/3	` e c
औशीर	340	964	कंचुक -	{ ४६		कणा …	`` ` { 9 %	३६
औषध	\$ 40	१३५	-	ं` हे १५३		1	£	
4	۶۶ } ۱۹۶۶ }	40	, पाषु । पार	[982		कणिका.	र्व २७८	ì
भाष्ट्रक	9 ७८	७७	1	6330	_	कणिश	٠٠٠.٩ξ७	29
	क.		कट •	366	२ ७	कंटक	२८५	
क				(१२९	3.8	कंटकारिक		
कंस				(कंटाकिफ	5 1919	6 3
	₹ ६	•	कटक •	''{ १९३		कंठ	93	
क्कृद	३४१		कटभी	99		कंठम्वा		
-	994			6 48		कंडुरा	69	
ककुभ्			कटंभरा	\ \ \ \ \ \ \	-	1 -	993	•
নজুম •	…{ ३० ७४		कटाक्ष	939	98	कंड्या	993	
7.4	(00	100	कटाह			कंडील	۰٩ € ٩	
कक्ष •	… તું વેં _{દ્ર} ે	1 990	काट	99	७४	1	णा. १९०	
	/							

सन्त्रं हुन प्रशेषका

श्रन्हः	पृष्टम् स्रोकः	इन्दः पृष्टम् होकः	शब्दः पृष्टम् श्लोकः
करूण	··· 58 54	कंबरा१२० ८ट	केमेठ ••• ५२ २१
क्या	•••• ३३ ६	कम्यकाजातः १०७ २४	कमठी \cdots ५३ ३४
कद् ध्वन्	· ξο .98	क्रम्या१०४ ८	कमण्डलु १३९ ४६
क ्ंव	····' @≸. Ŗ <u>\$</u>	कंपट क्रिक्ट ४३ है ०	कमन१९८ २४
क दंबक	J. 9 0₹ ¥0	कपर्द ८ ३७	C. 86 3
	[] to Je	कपदिन् ८ ३४	कमल ८५ ४०
कद्र	७५ ५०	कपाट ६४ ३७	८२६० १९४
कदर्य	२०२ ४८	कपाल ११६ ६८	कमला ७ २८
कदली	६५ ११३	ृकपालभृत् ८ ३४	कमलासन ५ १७
	"र्रे ९६ ९	कपि ९५३	कमलोत्तर१८४ १०६
,	२७२ ४	कपिकच्छु ८१ ८७	कमित१९८ २३ कंप ४५ ३८
कदुष्ण —–		कपित्य ७०२१	कंप ४५ ३८ कंपन२०७ ७४
कहु		ुकपिल • ३१ १६	कंप्र२०७ ७४
कड़द	•	ि १६ ४	(926 995
क नक	१८२ ९४	कपिला. 🕇 ७७ ६३	कंबल १२६० १९४
	क्ष. १४२ ७	८६ १२०	कंबलियाह्यक. १५१ ५२
-		किपविल्ली ८२ ९७	कंबि१७० ३४
**	7 68 66	किपिश ••• ३१ १६	==
क निष्ट…	∫ ११० ४३ '`	७१ २७	कंबु … { २४८ १३३
		कपीतन… ≺ ७४ ४३ ८७७ ६३	कंब्रुयीवा१२० ८८
_	११८ ८२	1	कब्र१९८ २४
	(19२० ९ २	कपोत ९७ १४	₹9 ₹₹
कनीयस्.	्रि०५ ६ २ `्रे२६८ २ ३६	कपोतपालिकाः ६३ १५	कर 🗸 १४६ २७
कंया	२७९ ५	कपोर्तांब्रि ८८ १२९ कपोछ १२० ९०	(66 EX
	€ 92 340	1	कारक र २२३ ६
कद्•••	रिर८६ ३५	कफ११४ ६२	करका १८ १२
कंदर	···		68 80
	£ 100. 00		करजः ८८ १३९
कं द् राल.	्रिष्ठ ४३	कबंध···· { ४८ ४ १६३ ११८	
कंदर्प	•••• ७ २६	(29 939	(9/ 30
कंदली	નેન	कबरी १२१ ९७	कारट र् २२९ ३४
कंडु	१६९ ३७	(909 80	अध्या रिश्ने
कंडुक	11.1999 196	काम२७१ २५१	करण रे ३३४ ५४

सन्दः	पृष्ठम्	क्षाकः	*** :	पृष्ठम् -	होषः	ज्ञनः	पृष्ठम् -	होक:
करंड	269	36	कर्करी	٠٠٠٩ ६९٠٠٠	3.1	कर्मण्या	****363	36
करतीया	*** 48	३३	कर्करेड	56	99	कर्मदिब्	₩3₹€	78
करपत्र	383	34	_	(90	38€	कर्मशील	••••390	16
करभ ••	396 306 }"	63	कर्कश्च	. ४ २०७	⊌ €	_ ~	••••9	
arinee	१२४ १२४	904	_	6462	410	कर्मसचि	इ१४ २	R
~_	66			•••• ९२		कर्मार	•••• ९३	160
•	१७३	•	कर्चूर	•••• ९२		कर्मेंद्रिय	३०	8
			कर्चूरक	66	_	कर्ष	960	εĘ
-	999		कर्ण	353		कर्षक		
	9 წ. აძი т≖			कस्. ९७		कर्षफल	•	-
	እያ ያነጡ ያህ		कर्ण्धार		93	कर्ष्	२६५	
			कर्णप्र	···· २ ६ ६		कल	રૂં હ	
_	386		कणवेष्टन	••••9२२		कलकल	३७	२५
	38 ?]	-	कर्णिका	्र १२२	903		1 98	96
-	ې ۲ <u>६</u> ماد، –		ì	' ो २२५ [••• ७६	34	काळका		×
•	ክ ७ ५		1	949	•	कलत्र	३५७	300
	····३ ६२ 		कर्णेजप			कळवौत	२३८	
	ात∙∙∙∙ ३ ६ ३		1 .	990		कलंब •) 942 	26
	986			···· 88				
_	٠٠٠٠٩٧٥		l .	_		कलम	986	
	ାର୍ଡ ି ୯୧		कर्पट…	· { 3<3		कलम	9 € ८	
कारशाव	क. १४८		कर्पर			कलंबी	٠ ९२	
करीर •	… { ७९ ∵ { २५६		1 -		•	कल्ख	•… ९७	
करीय	se		कर्परी	••••\$		कुलल	990	
करण	8	-	कर्र	••••१०		कलिक		
करणा		•	कार्यूर		-	करुश	••••१६९	
करेड	•••• 9	८१९	कार्धर -	११ १६ भू	90	कलरम	٠٠ ८२	-
कर्णु	••••दे		3	وة عود ك	38	कलहंस	९९	
क्रोटि			1	_		斯勒克	9 69	. 5.R
कर्क	. پا و ر	•	कर्मकर-	{ 9 co	98		{. عُرُّ {. عُرُّهُ	. 44
नर्फेटक	•		1	۷۶۹۰۰۰۰ ت	. 90	কুন্তা •	े रेह १	. 384 1384
कर्नेटी		२ वंदेर २ ३ इ	कर्मक्षम			कलाद		
ककेषू	{ १२८	7 7 7 E 8'2	कर्मठ				18 1	-
	\$ 10	7 7~	1 January	3	***	· salatara,		

MANAGEMENT

STATE OF THE PROPERTY.	1	
प्रत्य भोकः	det fein bad sien:	
कळाप२४८ अ२.९	क्रविका: •••१५ ४९	काकुद े१२० ५१
कळ्य१६७ १६	क्षत्रिय ः२८६.३५	कान्त्रंदु ः रे७३ हिंदे
काल {१६१ १०५	कमोष्णः २२ ३५	काको दुंबरिका. ७७. ६१
	कार्य१३४ विक	काकीवर ४६ ७
कालिका ६९ १६	काइत१९० ३१	काकोल. { ४७ १०
कार्टिंग. 	कश्महं ॰२०१ ४४	काकाल र १८३१
	किञ्चपु 🗸 २४८ 🤭 ३००	कांक्षा " 🐗 ४२ २७
कक्रिहुम ७६, ५८	क्रोर२८०ा १३	कांक्षी ८८ १३१
काङिमारक. ७५ ४८	काञ्चेरका११६ ६९	(964 98
कालिल२०८ ८५	कश्मल१६१ १०९	काष र १९० वे
वःकुष र ६ २३ ५० १४	(340 80	काष २ १९० ३०
	कार्य ४ १९२ ४०	काचस्थाली७५ ५४
कळेबर११६ ७०	कर्य १९२ ४० २०१ ४४	काचित२०९ ८९
कल्क२२५ १४	काष१९० ३२	कौंचन१८२ ९५
् २६,३%		कांचनाह्य ७७ ६५
कल्प १३० ४०	क्षाय { ३० ९ २५२ ३५३	कांचनी१७३ 😭
946.80	(कांची,१२४ १०८
(188:58	कष्ट ४८ ४ २३० ३९	कांजिक१७१ ३९
कल्पना१४९ ४२		
कल्पवृक्ष ११ ५३	कस्तूरी१२७ १२९	कांड२३१ ४३
कल्पात २६ २२	कर्क ९८ २२	कांडपृष्ठ१५४ ६७
कल्मम २६ २३	कांस्यताल ३८ ४	कांडवत्१५४ ६९
कल्माव ३१ १७	कार्क ९८ २०	कांडीर१५४ ६९
कल्प { २६ % ११३ ५७ २५४ ४५९	काकींचची ८२ ९८	कांडेक्षु ८३ १०४
कर्ल्य 🖁 ११३ ५७	कोकतिंदुक ७३ ३९	कातर् १९४ २६
	कोकनौसिका. ८६ ११८	कात्याममी { १०६ १७
कर्त्या ३५ १ ४	काकपञ्च१२१ ९६	AL 306 & 1411
कल्याण २७ ३५	काकपीलुक ७३, ३९	कादंब ९९ ३३
कहील 🔐 ४९ 😜	काकमाची ९१ १५१	कादंबरी१९२ 💥
कल्हार ५५ ई ६	काकमुद्रों ८५ ११३	कादंबिनी १७ द
कवच१५३ ६५	कांकली ३७ २ *	कादवेयं ४५ 😹
कर्वल१७४ ५४	काकांगी ८६ ११८	कानन ६६ १
40 24	काकिणी२०९९	कार्वीन १०७ २×
किला र्रे १३० है	काकु ३४ ५३	कानन ६६ १ कानीन १०७ २४ कात २०३ ५२
किला र् १९० रेप	CAN COLOR BURGER	FOR CARTER SAFE

अस्दः - पृष्टम् स्रोक्रः	क्रम्कः 👵 पृष्टम् श्लीकः	क्रम्बः पृष्टम् स्टीकः
कांवलक ८७ १२८		कार्निक१८० ८८
कांवा१०३ ३ः	कार्य { ११६ ७१	
	कायस्था ७६ ५९	93 ६ २
कतिहर { १५६ १७२	कारण २७ २८	काला ने ३१ १४
कांतारक ९३ १६३	कारणा ४७ ३	(२६० १९४
कांतार्थिनी. १०४ १०	कारणिक१९५ ७	काळक११२ ४९
	कास्डव१०० दे४	कालकंठक ९८ २१
कौति { १९ १७	कारंभा ७६ ५६	कालकृट ४७ १०
कांदविक १६९ २८	' '	कालखंड११५ ६६
कांदिशीक२०१ ४२) c4 191 91 142	कालधर्म१६३ ११६
काष्य ६० १६	कारवा न १७१ ३७	कालपृष्ट१५७ ८३
कापोत. ११३० ४३	कारवी र १९११२ १७१३७ १७१४०	कामग्रेकिस ्रि १०
कातायः र् १८४ ३०८	कारवह ९२ १५४	कालमेषिका. { ८५ ९०
कापोतांजन. १८३ १००	कारा१६३ ११९	कालमेषी ८२ ९६
७ २६ ४३ २८	कारिका२२५ १५	कालशेय१७४ ५३
काम ५३ २८	कारीष२२२ ४३	कालसूत्र ४७ २
काम १७५ ५७	काद१८६ ५	कालस्कंध- ि ७३ ३८
6440 150	कारुणिक १९६ १५	
कामंगामिन, १५५ ७६	कारण्य ४१ १८	काला
कामन१९८ २४	कारोत्तर १९२ ४३	काला ८४ १०९
कामपाल ६ २४	कार्तरवर१८२ ९५	I .
कामम्२७४ १३	कार्तोतिक१४४ १४	कालागुर१२७ १२७
कामियह१९८ २४	कार्तिक २५ ३७	काकानुसार्यः १२७।१२६
कामिनीः {१०३ ३	कार्तिकिक २५ १८	1
•	कार्तिकेय ९ ४३	कालायस१८२ ९८
कामृक१९८ २३	काल्स्य२५७ १७८	1
कामुका१०४ ९	कार्पास { १२४ १११	काछिंदी ५४ ३२
कांगुकी१०४ ९		
कांपिस्य ९० १४६	कार्यासी ८५ ११६	काही ९ ३८
कविक१५२ ५४	कार्म१९७ १८	काकीयकः { ८२ १०१
कांबविक१८६ ८	कार्मण२१४ ४	कास्पक ८८ १३५
कविष्ण१५० ४५	कार्भुक१५७ ८३	कास्या१७७ ७०
काबोजी ८९ १३८		काविषक,१५४ ६६
काम्यदान२१४ 🎨	कार्यापण१८० ८८	ाकावाचकार १६

शब्दः पृष्ठम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकाः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकाः
कावेसी ५४ ३५		कीर का. १८ २१
	किण२८१ १८	कीर्ति ' '३४ ११
काञ ९३ १६२	किणिही ८१ ८९	कील { १२ ६०
काश्मरी ७२ ३५	किण्व१९२ ४२	! _
काइमर्य ७२ ३६	कितव { १९२ ४४	कीलक१७७ ७३
काश्मीर ९० १४५		कीलाल
काइमीरजन्मन् १२६ १२४	किन्नर र ११	6741 722
काश्यापे २१ ३२	किन्नरेश १४ ७२	कीलित२०१ ४२
काश्यपी ५७ २	· ·	कीश ९५ ३
काष्ट ६८ १३	किम् {२७१ २५२	कु { ५७ ३ २६९ २४९
काष्ट्रक्हाल ५० १३	किमु २७३ ५	कुकर१११ ४८
काष्ट्रतक्ष्१८६ ९	. •	कुर्कुदर११७ ७५
काष्टा र १५ १	किमुत · · · { २७२ २	कुक्छ२६२ २०३
वाष्ट्रा ५३ ४१	किंपचान२०२ ४८	कुहुर ९८ १७
काष्ट्रीबुवाहिनी ५० ३३	किंपुरुष १५ ७४	कुक्रम१०१ ३५
काष्टीला ८५ ११३	किरण ••• २१३३	८८ १३१
कास११२ ५२	किरात१८८ २०	चुहर १८८ १३१
कासमर्द२८२ १९	किराततियतः ९० १४३	कुक्षि१९७ ७७
कासर ९५ ४	किर्दि • • • ९५ २	कुक्षिमारे१९७ २३
कासार ५३ २८	किरीट१२२ १०२	कुंकुम१२६ १२३
कासू२३६ ६६	किमीर ३१ १७	कुब११७ ७७
किंवदंती ३३ ७	किल२७१ २५५	कुषंदन१२८ १३२
(किलास११२ ५३	कुचर२०० ३७
किंशारुः { २५४ १६३	किलासिन्११४ ६१ किलिंशक१६९ २६	कुचाम,१९७ ७७
किंशुक ७१ २९	1	कुंचित२०६७३
किकीदिवि९७ १६	किल्बियः { २६२३	Į –
किंकर१८८ १७	किशोर१५० ४६	कुंज { ६६ ८
किंकिणी१२४ ११०	किप्कु२२३ ७	
किचित१७३८	किसलय ६९ १४	कुंजर ११४८ ६४
किंचुलक ५२ २२	कीकस११६६८	कुंजराशन ७० २०
किंजस्क ग्रा ५६ ४५	कीचक ९३ १६१	
किटि ••• ९५ २	कीनाशः२६४ २१५	स्क्रेक१७१ ३६

राम्बङ्गा विकास									
अन्दः पृष्टम् श्लोकः	शबः	पृष्टम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम् श्लोकः				
कुट { १७० ३३	कुत्र्हरू कुत्रहरू	१७० ४३		कुमूदिनी कुमुद्रव	···· ५५ ३९ ···· ५८ ९				
कुटक१६६ १३	कुत्सा	३४	13	कुमुद्दती	ऽइ ४४				
कुटन ७७ ६६ कुटनट. र ५६ ५७	कुत्सित	२०३ ∫्९४		कुंबा	१३३ १४				
चुटिल२०६ ७१]	∫ 9 ४९	૪૨ ૽	कुंभ …	र् १४८ ३७ रि४९ १३४				
कुटि { ६१ ६ २८६ ३८	कुहाल कुनटी	9८४	906	i -	،٩८ ६ ق				
कुटुंबन्यापृतः १९६ ११	कुनाशक कुंत	८१ १५९		कुमसभव कुंभिका	···· १९ २० ···				
कुटुंबिनी१०४ ६	कुंतल कुंतल	939	९५	कुंभी कंभी	٠٠٠ و١ ١٠٠٠				
कुट्टनी१०६ १९ कुट्टिम२८५ ३४	कुंद	√ ७९ √ ८६		कुंभीर कुंभोलूख					
कुठर१७८ ७४	at a r	८२८२	95	कुरंग	٠٠٠				
कुठार१५८ ९२ कुठेरक ८० ७९	कंदुरु कुंदु र की			कुरंगक कुरंटक.	१८९ २४ ∫ ७९ ७४				
कुडंगक२८१ १७ कुडव१८१ ८९	कुप्य कुप्य	२०३ १८१	48 48	कुरबक	₹ ७९ ७५ ७९ ७५				
कुड्मल ६९ १६	ु कुबेर ↔	J 98	৬	कुरर	९९ २३				
कुड्य ६१ ४	कुबेरक	" े १६ ••• ८७	३ १२ ७	कुरुविद कुरुविस्त	97 949. 960 66				
₹394) २८२ २०	कुबेराक्षी कुञ्ज	•••• હફ	44 80	कुल	{ १०२ ४१ { १३० १				
कुणि र्वा ४८ : कुंठ१९७ ३७	कुमार	િ ૧	४३		्र ७३ ३९ -{ ९२ १५५				
कुंड १९९३६ १६९३१	कुमारक	60	२५ ७३	कुलटा	908 90				
कुंडल १२२ १०३	कुमारी	J 308	6	कुलत्थिक	T963 903				
कुंबलिन ४६ ७ कुंदी१३९ ४६	कुमुद …	{ 9 8 9 %	इ ३७	कुलपालि कुलश्रेष्ठिन	काः १०४ <i>५</i> इ१८६ ५				
कुतम ४३ ३१ कुतुक्र ४३ ३१	कुमुद्रम्य	٧٤	9	कुलसंभव	930 2				
कृतुम ४३ ३१	कुमुद्दबाध कुमुद्दिका	व १८ ७३	१३ ४०	कुला कुलाय	303 30				

शब्द:	पृष्टम् स्रोक	: शब्द:	पृष्ठम्	क्षेत्रः	that:	पृष्ठम्	被兩:
	····9 ८ ६	कुमृति	••• ४३		कृतपुं य	948	ĘC
কুকালী	963 903		969		कृतमाल		
कु लिश	٠٠٠. ١٩٩ ٢٥	कुहना	•••980		कृतमुख		
'कुली	٠٠٠. ८२ ٩४	कुहर	••• ४५		कुत्रलक्षण		
कुछीन .	१३० ३	कुह	••• २४	9	कृतसा पति	का१०४	•
	५२ २३	कुकुद	·••••98	38	कुतहस्त .	948	٤٤.
कुल्माष.	∫ १६७ १८ २८२ २१		(1 98	ĘЭ
_			५ १०२	४२	कृतांत	`[२३६	ÉR
_	मणुत १७१ ३९		(२३०	३७	कुताभिषेव		
	••••११६८	कुटयंत्र	9 68	₹६		(130	Ę
कुल्या	48 38		ालि. ७४		क्रतिन्	`र्वे १९५	૪
कुवल	्रिट ७ ४२	1 *	३०६		कृत .	२११	9 0 3
नुव लय	۲۵ هم عربی ۱۳۰۰ می	1 -	•… ५३			93,	
-	२०० ३७]	ر لاع		कृतिवासस		
•	926 €	कूपक	٠٠٠ ٢٥	92	कृत्या .	-	
~	···		ه و و ک مووو	७२	कुत्रिमधूप		
•	€ 88 988	कुबर	942	40	कुत्झ		
ङ्ग …	1258 295		9२०		कुपण .		
	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	कुर्भशीर्ष	۰ ९۰	१४२	कृषा .	४ ९	96
कुशल	र् १९५ ४	कुचिका	१७२	ጸጸ	कृपाण .	946	65
	6141 100	कूर्दन	४४	३३	क्रपाणी .	,१९०	३४
कुशी सरीकर	१८२ ९९ १८७ १२	कर्पर	996	८०	कृपालु .		
•	44 80	क्र पीसक	9२५	996	कृपीटयो नि	र १ २	५६
कुराशय	८७ १२६	कूर्म	•••• ५२	२१	क्रीम		
কছ	1 993 48	क्ल	٠ ٧٩	•	क्रमिकोशो		
35	₹ 993 48 ₹ 264 38	कृष्मांड	•••• ९२	944	क्रमिन्न .		
	1 { 8 8	कुकण	96	98	क्रमित्र		
	9 ફે૪ ૬	कुकलास	९७	93	क्रश		
	٠٠٠ ६९ ٩७	क्रकवाकु	९८	30	क्रशानु .	१२	40
	963 903	कुकाटिव	हा. ३२०	4	कुञ्चानुरतस्	į Z	4.2
	७ २७	-) xc	8	कुशाश्विन्.		
		So ∡ão	{	43	कुषक .		
ज्ञुन …	} 9८४ .9•€ { २४९ 9३€	ক্তব	२३८	. 9 Ø	কুৰি 👙	…J∳x	₹ -

क्रांविक 1 ६ ५ ६ कांविल 1 5 ६ ६ १ ६ कांविल 1 5 ६ ६ ६ कांविल 1 5 ६ ६ १ १ कांविल 1 5 ६ १ ६	海峡:	पृष्ठम्	क्षेकः	ज़ब्द:	पृष्टम्	क्षकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोक:
कहा	कृषिक	१६५	Ę	-	∫ {	.44	ĺ		83
कहा	कृषीवल	٠٠٠،٩ ﴿ ٢	Ę	कश्च	f 333	84	कोटि…	··- 348	
केला १९ १९ केला १९१ १९१ १९१ १९१ १९१ १९१ १९१ १९१ १९१				केसवेश	9₹9	90			
क्रिया 999 ४५ कोडि २८९ १८ कोठि 993 ५४ कोठि 994 ९६ कोठि 994 ९६ कोठि 994 ९६ कोठि 994 ९६ कोठि 994 ९४ कोठि 994 ९६ कोठि 994 ९४ कोठि 99	कृष्टि	930	Ę	केशांबुना	म ८६	122			93 3
कुष्णा		(- 4	16	केशिक.	999	48		••••३६६	33
क्रिका १६ १६ केसर १६ १६ केसर १६ १६ १६ केसर १६ १७ केरव १६ १९ केरव १६ १९ १९ केरव १६ १९ १९ १९ केरव १६ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९	25.00 1	1 38		केशिन्	999	አጸ			-
कृष्णपालपाल. ७८ ६७ कृष्णपाला ८२ ९६ कृष्णपाला ८२ ९६ कृष्णाला ८२ ९६ कृष्णाला ८२ ९८ कृष्णाला ९२ ९८ कृष्णाला ९३ १५ कृष्णाला ९६ १५ कृष्णाला १६ १५ कृषणाला १६ १६	S			किशिनी	29	17 €	कोठ	•	•
कुष्णफला ८२ ९६ कुष्णका ८२ ९६ कुष्णका ८२ ९८ कुष्णका ८६ १५ कुष्णका ९६ १५ कुष्णका ९६ १५ कुष्णका १६ १० केतव १६६ ११ केतव १५ ३७ केतव १६१ ११ केतव १५ ३७ केतव १५ ३७ केतव १५ ३७ केतव १६० केतव १६० केतव १६६ ११ केतव १६०							कोण		
कुष्णभेदी ८१ ८६ कुष्णला ८२ ८६ कुष्णला ८२ ९८ कुष्णला हित३१ १६ कुष्णला हित३१ १६ कुष्णला हित३१ १६ कुष्णला हित३१ १६ कुष्णला ८६ १५ कुष्णला १६ १० केतव १६ ११			•	केसर	-		कोहंड		
कुष्णला ८२ ९८ कृष्णलाहित ३१ १६ कृष्णलाहित ३१ १६ कृष्णवार्तमंन ११ १५ कृष्णवार्तमंन १६ १५ कृष्णवार्तमंन १६ १५ कृष्णवार ९६ १० कृष्णवा ८२ ९६ कृषणवा ९६ ११ कृषणवा ९६ ११ कृषणवा ९६ ११ कृषणवा ९६ ११ कृषणवा १६ ११			-	,	99				•
कुष्णला हित ३१ १६ केडर्य ७३ ४० कोणना १९९ ३२ केडर्य ७३ ४० कोणना १९९ ३२ कोणना १६ १० केतव १९६ ११ केदार्य १६६ ११ कोरम १९६ ११ कोरम १९१ १९			•	2-0-		•		•	-
कृष्णवस्मिन् १२ ५७ केडर्य ७३ ४० कोमिन्१९९ ३२ कोमिन्१९९ ३२ कोमिल१९९ ३२ कोमिल१९९ ३२ कोमिल१९९ ३२ कोमिल१९९ ३१ कोमिल१९९ १९ कोमिल१९९ कोमिल१९९ कोमिल१९९ कोमिल१९९ १९९ कोमिल१९९ १९० कोमिल१९९ १९९ वोमिल१९९ १९९ १९९ १९९ वोमिल१९९ वोम						1			•
कुष्णावत्सन्त ५३ ५७ केतव ६४ ३० कोमल २०७ ७८ कोयाहिक १९ १६ कोरांगी ८७ १२५ केता १६६ ११ केदार्य १६६ ११ केदार्य १६६ ११ कोरांगी ८७ १२५ केता १०० ३१ केदार्य १५ ३७ केता १०० ३१ केदार्य १५ ३७ केता १०० ३० केता १०० ३० केता १०० ३० केता १४ १९४ केता १४ १४ केता कात १४ १४ केता १४	_ `				•	i			
क्रिज्ञा ९६ १९ क्रिज्ञा ९६ १९ केतव १६६ १९					-				•
कृष्णा ८२ ९६ किहार्य १६६ ११ केहार्य १६६ ११ केहार्य १६६ ११ केहार्य १५ ३७ केहार्य १५ ११ केहार्य १५ १६ केहार्य १५ १६ केहार्य १६६ ११ केहार्य १६८ ११ केहार्य १६८ ११ केहार्य १६८ ११ केहार्य १६८ ११		•		कैतव ••	} ४२	۶٥ ×٩	_		
कृष्ण १६ १६ किसार १६६ ११ केसार १६६ ११ केसार १९६ ११ केसार १९३५ १६ केसा १९३५ केसा १९३६ केसा १९६६ केसा १९३६		९६	30	-	•				•
केलर १२ ४९ केलर १२ ४९ केलरा १०० ३१ केलिन १०० ३० केलली १४ १७० केलला १५ १०० केलला १६ ११०० केलला १६ ११०० केलला १६ ११०० केलला १६ ११०० केलला १६ ११०००००००००००००००००००००००००००००	-		•					•	•
केका		•		_			_		
किका	_		- 1	-			411.4	•	
केतकी ९४ ९७० केतकी ९४ ९७० केतक १९६० ९९ केत्र २३५ ६० केदर २८२ २० केदर २८२ २० केत्र १६६ १९ केतिपातक ५० १३ केत्र १६६ १९ केतिपातक ५० १३ केत्र १६६ १९ केतिपातक ५० १३ केत्र १२३ १०७ केति १६२ २०३ केति १६२ १०३ केति १६२ १०३			•				कोल …	, ,	
केतन			`			- 1		६ ९५	ર
केतन रिश्प १९४ वैतस्य २९ ६ कोलिदल २८ १३० केदर२८२ २० केदर१६ १९ कोलिय१६ १९ कोलिय१६ १९ कोला१६ १९ कोला१६ १९ कोला१६ १९ कोला१६ १९ कोला१६ १९ कोला१६ १० कोला१६० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०		ć	_		-	- 1	कोलक.		
केदर२८२ २० केदर१२१ ९६ केदर१२१ १६ केदर१६६ ११ कोक१६६ ११ कोक१६६ ११ कोक१६६ १० कोक१६६ २०३ कोक१६६ २०३ कोक१६६ २०३ कोक१६६ २०३ कोक१६६ २०३ कोक१६६ २०३ कोक१६६ १०३ कोक१६९ १०० ३६ कोक१६९ १०० ३६ कोक१६९ १०० ३६	केतन	3 3 % 4	992			•	_		
केदर२८२ २० केइय१२१ ९६ कोलावही ८२ ९७ कोलातक५० १३ कोलातक५० १३ कोलातक५० १३ कोलातक५० १३ कोलातक५० १३ कोलातक५० १३ कोलातक५६ २०३ कोलातक५६ २०३ कोलातक५६ २०३ कोलातक५६ २०३ कोलातक५६ १०४ कोलिलाहा५३ १०४ कोलिलाहा५३ १०४ कोलिलाहा५३ १०४ कोलातक५३ १०४ कोलातक५५ १०४ कोलातक	केत	٠٠٠.٩3 ٩	Eo		• •	• 1			
केदार१६६ ११ केनिपातक५० १३ केयूर१२३ १०७ केलि ४३ ३२ केवल१६२ २०३ केवल१६२ १०४ केवल१६२ १०४ केवल१६२ १०४ केवल१६२ १०४	_	-	٠ ١			- 1	_		
किनिपातक ५० १३ के स्वर १२ १२ के स्वर १२ १०७ के सकत १६ ४२ के सकत १६ ४२ के सकत १६ ४२ के सकत १६ ४२ के सकत १६ २०३ के सकत १८ १२ के सिकल १८ ४९ के सिकल १८ ४९ के सिकल १८ १३ के सकत १८ १३ के सकत १८ १३ के सकत १८ १३		-	`		(0 e	۱۵ ۱			
केयूर १२३ १०७ कोंकनद ५६ ४२ कोंकि ७२ ३६ कोंकि ४३ ३२ कोंकनदच्छिति. ३१ १५ कोंकिट १६४ कोंकिट १८ ४९ कोंकिट १८ ४९ कोंकिट १८ ४९ कोंकिटास ८३ १०४ कोंकिट १८ १३ कोंका १८ १३				कोक ·	" { 	२२		•	-
केलि ४३ ३२ कोकनदच्छवि. ३९ १५ कोविद १३० ५ केवल १६२ २०३ कोकिल ९८ ४९ कोविदार ७० ३२ कोकिल ८३ १०४ कोविदार ५० ३२ कोविस ६८ १३ कोश ५०९ ११				कोकनद	٠ ५६	४२		•	
केवल१६२ २०३ को किल ९८ ४९ को विदार ७० २२ केवा१२१ ९५ को किलाक्ष८३ १०४ केवापणी ८१ ८९ कोटर ६८ १३ कोवा४ १८१ ९१				i	•				
केश१२१ ९५ कोवर ६८ १३ कोश १८१ ९१		-	_	1				•	
केशपर्णी ८९ ८९ कोटर ६८ १३ कोश १८९ ९१	केश	939	94	1 _	•	308			
	कशपणी	29	68		•	•	कोश ·	969	
	केशपाशी	939	90	नाटवी	9∘€	90			₹96

STATE OF THE PARTY.

शन्दः पृष्ठम् स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम् श्लोकः	शन्दः १४म् होकः
कोशकल१२७ १३०		.9 68 999	कोहु ग्रा ९५ ५
कोझातकाः २२३ ८ 🖰	केंद्रब	१६१ १०७ २४६ १२३	कोष्ट्रविक्रान्तः ८२ ९३
कोष्ठ२३१ ४०			कोड्डी ८४ ३१०
कोष्ण २२ ३५	•	. ४४ ३५	कोंच ९८ २२
कौक्कृटिक३२५ १७	1	.930 Ro	क्रींचदारण ९ ४३
कौक्षेयक१५८ ८६	क्रमक	१४.३६९	क्रम२१५ १०
कौटतक्ष१८६ ९	3.	68.386	क्रमथ१२५ १०
कौटिक१८७ १४)	.902 by	क्रिय२१२ १०५
कौणप १३ ६२	1 -	39 306.7	क्रिमाध११४ ६०
कौतुक ··· ४३ ३%		968 68	क्रिशित२११ ९८
कौतूहल ४३ ३१	क्रय्य •		किष्ट र ३५ ३९
कोद्रवीण१६५८	1	१९५ ६३	किष्ट र २११ ९४
कौंति ८६ १२०	1	१३ ६२	क्वीतक ८४ १०९
कौतिक१५४ ७०	, _	१३ ६२	क्रीतिकका८२ ९४
कौषीन२४६ १२२	1	968 68	ह्यीब {११० २.९
कोमुदी १८ १६	क्रिया ••••	{ ३१२ {२५३ १ ५७	क्केंग२१९ २९
कौमोदकी · · · ७३०	कियावत	986 36	क्रोम ••••११ ६५
कोलटिनेय१०७ २७			30 38
कोलटेय. {१०७ २६	कोडा ····	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	कण { २१५ ८
11333 } 900 20		९८ २२	कणन ३७ २४
कौलटेर१०७ २६		१२५ २२	क्रायित२१० ९५
कौलीन२४५ ११६		४२ २६	क्राण ३७ २४
कौलेयक१८८ २१		४४ ३५	क्षण ४४ ३८
कोशिक. { ४२ ३४ १०		२०२ ४७	क्षण र ४५ ३८
स्त्रीय १२८ १० (११६ १०	क्रूर ⋯≺	२०७ ७६	८२३२ ४७
कीशेय१२४ १११	,	८२५९ वे९१	क्षणदा २३ ४
कोस्तुम ७ ३० क्रकच१९१ ३५	1	968 69	क्षणन१६२ १११
		969 29	क्षणप्रभा १७ ९
क्रकर	कोड	{	श्रुतज११५ हिस स्रतव्रत१४० ५४
कर्तुं१३२ १३		४३ २६	1 _
क्रतुष्यंश्चिनः ८ ३६:	1	१९९ ३२	श्रृष्ट गर्भ १९
क्रबुमुज् ४९		Ęo 92	निर्म हर
	1 started at	· •	F . A . 32.

शब्दः पृष्ठम श्लोकः	शब्दः पृष्टम् स्रोकः	अन्दः पृष्ठम् श्लोकः
(93, 3	क्षीवन्१९८ २३	(956 99
क्षत्रिय · · · र्रे १४१ १	86.8	क्षेत्र १२५७ १८०
क्षत्रिया१०५ १४	क्षीर १७३ ५१	20 29
क्षत्रियी१०५ ३५	(२५८ १८६	क्षत्रक र २२९ दे इ
क्षत्रियाणी१०५ १४	क्षीरितिकाति. १७२ ४४	क्षेत्राजीय१६५ ६
क्षपा … २३ ४	क्षीरविदारि, ८४ ३.३०	क्षण२१५ ११
क्ष्याकर १८ 🕈 ५	्रेक्षीरज्ञुङ्का ··· ८४ ११०	क्षपणी ५० १३
क्षम२५० १४२	क्षीरावी ८३ १००	क्षेपिष्ठ२१३ १११
क्षमा२५० ३४२	क्षीरिका ७४ ४५	२७ २६
क्षमित्र१९९३१	क्षीरोद ४८ २	हिम ८७ १२८ १ २८५ ३ ४
क्षामिन्१९९३१	क्षीरोदतनया ७ २९	
क्षंत्र१९९३१	्श्चर११२ ५२	क्षाण ५७ २ 'क्षाद१६० ९९
् २६ २२ ११२ ५१	क्षुत११२ ५२	क्षोदिष्ठ२१३ ३११
क्षय र १४५ १९	क्षुताभिजनन १६७ १९	क्षेद्र१८४ ३०७
२१४ ७	ं ह्याइ {२०२ ४८ ं ह्याइ {२१३ ७३२	1 62 00
८२५१ १४५	सुद्ध ४ २१६ ७३३ २५७ १७७	क्षीम १२४ ११३
क्षव } ११२ ५२	क्षुद्रघंटिका. १२४ ११०	क्ष्णुत२०९ ९१
(160.12	क्षुदशंख ५२ २३	स्मा ५७ ३
क्षवथु११२ ५२	(८२ ९४	हमामृत् { ६४ १
क्षांत२१० ९७	क्षदा र २५७ १७७	(101)
क्षांति ४२ २४ क्षार१८२ ९९	ेक्षद्रीडमत्स्यसंघात५१।१९	्रह्मेड ४६९
क्षार१८२ ९९ क्षारक ६९ १६	्रक्ष च १७४ ५४	ं ह्वेडा र १६१ १०७
क्षारमः स्थापन	⊹क्षुधित१९७ २०	(,4, 04
क्षारित२०१ ४३	े क्षप ६७ ८	होडित२८५ ३४ स्व.
	्रश्चमा१६७ २०	(94 9
क्षिति र २३७ ७०	क्षर २८३ १०४	ख २२६ १८
क्षिपा२१५ ११	क्षरक ७३ ४०	े
क्षिप्त२०९ ८७	क्षुरम२८२ २०	(१०० ३२
क्षिमु१९९ ३०	क्षरिन्१८६ १०	खग १५७ ८६
98 86	१८७ १६	(२२६ १५
क्षिम गार्चित्रवर्षे प्रवर	. @	खगेश्वर ८३१
क्षिया २१४ ७	(358 10	स्रजाका१७० देख

शब्दः पृष्ठम् स्त्रीकाः	शब्दः	पृष्टम् 🤻	कि:	प्र व्दः	पृष्ठम् स्हे	कः
सर्ज११२ ४९	खलीन	949		M dam /-	999 ¥	8 1
खेलन ९७ प्रेर	बकु	२७१ ३	• 1		(902 X	0
खंजरीट ९७ १५	खलेदार	988	94	गण	, ,,	9
बर२८१ १७	खल्या		,		८१३२ ४	7
खट्टी१२९ १३८	खात	•••• ५३ ः	20		····388 3	
197 S 84 8	खादित	२१२	330	गणदेवता.) •
खन ११५८ ८५	खारी	1960	20	गणनीय	,२०५	7,
खिति ९५ ४	खारीक	۲۶ و برو	7 .	गणरात्र	•	į
खंड र् १८ १६	खा रीवा	प ••• १६५	3.	मण्डप	60 6	
(५६ ४२	बिल	٢٥	4	•		
खंडपरमु ८ ३३	खुर •	5 4	350	यणाधिप	5 9	
खंडविकार. १७२ ४३	201	्रे १५१		गणिका.	,	9.3 3.5
खदिर ७५ ४९	कुरणस्	999	80 į	मणिका वि	• •	ĘĘ
खदिरा ८९ १४१	. B	939		गणित	•••३०५ु।	• •
खद्योत१०० २८	खेट	२०३		गणेय		₹ ४
खनि ६६७	खिय	५३		गंड …		30
-खीनत्र१६६ १२	खेला	···· &&		गह …	``	१७
खपुर ९४ १६९	~	992		गंडक	94 3	S
खर	. स्यात	364		गंडकारी	65 5) A 3
स्वरणस्१११ ४६	-	हेण. २१०	•	गंडशैल	٤٢	Ę
खरणस१११ ४६	स्याति	२१५	9	गंडाली	९२ '	148
खरपुष्पा ८९ १३९		ग.		गंडीर	९२	340
खरमंजरी ८१ ८९	ં નાનન	٠٠٠٠ علا	9	गंडूपद	५२	२२
खराश्वा ८५ ११	गंगा	AA	३१	गंडूपदी	५२	२४
•	ं गंगाधर	c	₹ €	गंडूषा	२७९	90
	যাজ	385		गतनासि	事。 999	κÉ
नवर्जुर १९८१ ९६	ः गजता	386	- 1	े गद	992	63
खर्जुरी ९४ १७	गजबंध	ति१४९	•	गद्य	२८५	₹9
. Lasa ve	गजभह		323	ગંત્રી	343	*
सर्व र र र र र र र र र र र र र र र र र र	गजागर	_	83	गंघ	२९ ः	
खल२०२ ४७	गजा	٠ ६٦		गंधकुटी		
सलपु१९७ १७				गंधन	_ ;	334
खालेंनी२२१ ४२	गडु	261	36	' गधनाकुर	श्री८५	178
	,					•

शब्दः		श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	सब्दः	• पृष्टम्	स्रोकः
	} ७६ ७७	45	गरुडाम	1 २१	37	गवाक्षी	93	348
गेषफली.	\ 60	ÉR	गरुत्	9 • 9	3.6	गशीश्वर	904	46
मंधमादन .	٤٤	3		10	33	गवेषु	986	२५
गंधमूली .	९२	148	गरुत्मत्.	₹ 900		गवेषुका		
गंघरस .	१८३	30x	-	८ २३४		गवेषणा	93 €	
	(8	• •	गर्गरी	992	•	गवेषित	२१२	-
. •		44	गर्जित	99		गव्य	9७₹	40
गंधर्व				1 386	• •	गन्या	964	
	340		गर्त	A.A.		गव्यति	бо	•
	•		गर्दभ	Sof				
गंधर्वहस्तक			गर्द भांड	<i>७४</i>	•		{ ६६ २०८	
मंधवह	•	- 1	गर्द्भ	986		गहर	. { ६५ . : { २५८	Ę
गंधवहा .			गर्भ	. ₹ 390	३९	□(Q ₹	'' रे २५८	१८३
गंधवाह .				' र् २४९		गांगेय	र १८२	
गंधसार .			गर्भक	१२८			'' रे २५३	
गंधाश्मन्	•	,	गर्भागार	६२		ł	دو	
गंधिक .	-	,	गर्भाशय	990	,	गाढ	JR	
गांधनी .		- 1	गर्भिणी	,900	i		9 00	
गंधोत्तमा)		तेनी १७७	,	गंडिव		
	९९	1	गर्मृत्	۶۶		गांडीव	940	S.A.
_	२१		मर्ब	४ 9		गात्र	∫ 99€	90
	Y9		गर्नित	२४३			. 2 388	
	949		गहण	३४		गात्रानुले	क्ती. १२८	
	۶۲۶	-	गर्ह्य	२०३	_	मान	३्७	
_	७२	-	गहाँचादिन	ां२००	₹७.	गांचार	३७	
	··· 49		गल	,9२०	23	गाधकी	<i>§</i> ७५	88
	२०९		गलकंबल	१७६	६३	(1) (T410)	{ ७५ { १३३	२२
	…२२०	-	गलंतिका	٠٩٤٩	₹9	गावत्मत	969	९२
	४६		गिकत	۶۴۶	308	गाभिण	₽۰۰ و	२२
	७८	६९	गलोहेश	940	28	गाईपत्य	9₹₹	98
	२१३	995	गल्या	२२२	४३	गालव	, ७२	३ ३
गरी .	७८	ę٩	गवय	٠ ٩٤	99	गिर	३२	3
गरह .	c	₹9	गवल	१८३	900	ھھ	{ €४ { २१५	3 .
		39						

Andrew Control

शुद्धः	पृष्टम्	क्षाक:	श्रन्दः	पृष्टम्	क्रोकः	SER :	पृष्टम् क्षीकः
गिरिकणी.	.,. ८३	908	गुद	,990	***	वृत्रसी	२७९ १०
गिरिका .	<i>وې</i>	12	गुंह	.,,, ९३	352	गृष्टि	९१ १५१
गिरिज .	9८३	1 ak	र्गुंदा	1 09	44		(६१ ४
शिरिजा ,	٠ ٩	#o	341	} ९३	360	गृह	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
गिरिजामल	. १८३	900	गुस	्र १०९	68		८२६८ २३९
मिरिमहिका	७७	ĘĘ	!	‴ रे २१२	308	1 -	का ९७ १२
गिरिश .	c	३३	गुप्तवाद	२५५	१६७	गृह्यति	988 94
गिरीश .	८	३३	गुति	२३७	98	गृह्यालु	
मिलित .	२१२	330	गुरण	२१५	33.	गृहस्थ्प	
_	३७	२५		१०	२४	गृहागत	
गीर्ण .	२१२	990	गुरु		७ १६२	गृहाराम	
मीर्णि.	२१५	99	। गुर्विणी	900	4 4	l	हणी ६३ १३
गीर्वाण .	¥	9	गुल्फ	99€	७२	गृहिन्	१३० ३
गीष्पति .	••••	२४	' 35' ''	ĘC	9	गृह्यक .	्र १०२ ४३
गुग्गुलु .	७२	३४	j	994	ξĘ		(1/0.14
गुच्छ	∮ 9 ₹₹		गुल्म	·· 🕇 948	69	गेंदुक	१२९ १३८
-	रे १६७			(२५०	१४२	गह	ÉJ &
गुच्छक .	٠ ٤٩		गुल्मिनी	६८	8	गैरिक.	\$ ₹₹ ८
~	१२३		गुत्राक	९४	366		''' १२२४ १२
गुंजा .	८२		गुह	۰ ۶	४३	गैरेय	१८३ १०४
•	२३१		गुहा .	्र ६५			१७५ ६०
गुडपुष्प .		२७	36	{ ८२	९३	गो •	٠٠٠٠ ١ عود وو ٠
गृहफल .		२८	मुह्य	२५३	348		८२२७ २५
गुडा .		904	गुह्यक	¥	33	गोकंटव	ह ···· ८३ ९९
गुड्ची .	۰۰۰ ۵۰	_	गुद्धकेश	र १४	69	मोकर्ण	्रिह १०
	7 3 4		गूड	२०९	८९	Ī	'''`} ११९ ८३
	940		गृदपाद	४६	19	गोकर्णी	Co CR
गुण	7 368	•	गूरपुरुष	१४३	93	गोकुल	
	129		ग्य	338	\$6	गोक्षरव	5 ···· ८३ ९९
	्र २३ ३	6.8.0	गृन	₹9	98	गोचर	30 £
गुणबुक्षक	٠ ٢٠	35	गृजन	99	384	गोजिह	7 ···· ८६ १३९
गुणित		. 66	БЯ	990			৭২ গ্রহ
गुंडित	३०९	4	एम	\$6			263 34
4	_						

शब्द:	5.5	म् स्रोकः	शब्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्टम् स्रोकः
	(6	8 9	गोमिन्	· · ·		;	\$ 36
गोत्र	···. \	• 9	गोरस	368	५३	गोरी .	{ 908 S
2-6	्रे २ ५		गोर्द	994	Ę٧	गौष्टीन	49 93
	भेद् १		गोल	२८२	२०	यं य	२५७ १७९
गोत्रा	٠ { ٩٧	७३	गोलक	909	२६	मं थि	९३ १६२
	ण१६		गोला	9८४	9.6	श्रंथिक	968 990
			गोलीढ	७३	३९	मंथित	२०८ ८६
गोंदुह्	{ २४	, ,७ ८ १३ ०		(८३	902	मंथिप ण	८८ १३५
गोधन	اه و	4 46	गोलामी	. d 93	346	मंथिल	्र ७३ ३७
	9 41		م.ند				(95 99
	दी ८६	!	गावद्दना	۰ ৬ξ		मस्त	. ∫ ३६ २०
गोधी			गोविड्	•			''रे २१३ १११
गोधिक	ा ५२	. २२	गोविंद	{ ₹	36	na	्रवेष्ठ ९
गोधिक		Ę		(481		मह	
गोध्म	१६७	12	गोशाल	२८७	& 0	ग्रामीहः	
	ሬሬ	727.	गोशीर्ष 	9२८	٠, ٠	मह्यार्य्य सम्बन्धि	११३ ५५ २१ ३०
गोनस	٠٠ ४५	X .	गोष्ठ गोरमञ्	٠٠ ५९		नहारा प्रहीतृ	९३ ३० १९८ २७
	ी १४२	•	गाष्ट्रपात गोष्टी	२४८	44.	•	≀\c
-4114 ··	خ عوم معرف	पुष्ठ । १३०				याम	. { २५० १४१
गोपाति	१७५	प्रदेश । इंदे	गान्धान गोप्पद			यामणी	२३३ ४९
गोपस	9८३	9 9 9	गान्य गे संख्य	२४१ १७५	88.		9८६ ९
	६३		गरस्य गोस्तन	-	, 0		२२२ ४३
	त२ <i>१</i> २		ोस्तनी	•	10)		9८६ ९
	१७५		ार्यानक ग्रिस्थानक		, ,		६४ २०
गोपी			ौतम				८२ ९४
	६३		_	•	· 3	गम्य .	३५ १९
गोपुर		• •		•	₹ इ	गम्यधर्म .	989 40
•	(२५८	962 3	. ~		1		६ ४ ३
गोप्यक		, ,		•	ં સ	ावन्	
गोमत्	१७५		ìt		३ ४ _{ग्र}		(२४४ ३०६
गोमय	१७३			1	°्।श्र ८९	ास .	१७४ ५४
गोमायु	٩५		ारव .	१३६ ३		ह	े ५२ २१ १२०५
-	·	- •			, • ,		रे२१४ ८

शब्द:	पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः	पृष्टम् श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम् श्लोकः
वाहिन्	७० २१	घातुक	∫ 955 ₹6	चक्रकारक	66 976
श्रीवा	930 66	यापुराः	∵ } २०२ ४७	चक्रपर्शि	६ २०
श्रीष्म	२५ १८	घास	९४ १६७	चक्रमदेक.	९০ ३४७
य ेवयक	१२३ १०४	घुटिका	११६ ७२	चक्रयान	949 49
ग्लस्त	२१३ १११	घुण	२८१ १८	चकला	९३ १६०
ग्लह	१९३ ४५	घ् णित	१९९ ३२	चक्रवर्तिन्	१४१ २
ग्लान	998 40		89 96	चऋवर्तिर्न	ो ९१ १५३
ग्लास्नु	998 40	घृणा	५ २२० ३२ ८२३३ ५९	चक्रवाक	९८ २२
ਾ ਲੀ	96 98	घणि	३१ ३३	चक्रवाल.	∫ 9७ ६
	घ.	1-	9७३ ५२	1	रे ६५ ६५
घट	१७० ३२	घृत .	∵्रे २३८ ७६	चक्रांग	९९ २३
घटना	9 ६१ १०७		९५ २	्चक्रांगी 	پې دی
घटा	१६१ १०७	घाटक	१४९ ४३	चिकिन्	४६ ७
घटीयंत्र	929 20		१२० ८९		૧૭૮ ૭૭
घंटा	७३ ३ ९	घोणिन्	९५ २		स् ४६ ७
घंटा पथ	६º १८	, घोंटा .	•३ हु७ १३ १४ (```	चक्षुष्	१२१ ९३
घंटापाः	टिलि ७३ ३९	घोर	४१ ३०	चसुष्या	१८३ १०२
घंटाख	1 CX 90V	्रापार चोष	६४ २०	चंचल	२०७ ७५
	900	्रं घोषक ्	८६ ११५	चंच ला •	96 8
	३८ ४	् घोषणा -	•	चंचु	
घन .	3	1	(93 0 69	!	·· } 909 ₹.Ę
	₹ ₹	घ्राण .		चटक	९८ १८
•	(288 99	• घ्राणत	ર્ણા રુંગ્યુ	्च चटका	९८ १८
घनस	४८ ५	व्रात	२०९ ९०	चटिका	झेरस्.१८४ ११०
घनसा	र१२७ १ ३	a	च	चणक	१६७ १८
धना घ	न२४४ ११	॰ च	∫ २७३ ५	चंड	१९९ ३२
धर्म	∫ ४४ ३३		'''` <u>र</u> े २६९ २४'	101	८७ १२८
чч	🕽 २५० ३४	२ चकोर	क१०१ ३५ १९ ७ २ ९	चंडांशु	२१ ३१
घरमर			89 10	चडात	७९ ७६
घस	२२ २		९८ २२	चंडातव	•
घाटा	१२० ८८	母系	र्रे १५२ ५६	चंडाल	र् १८५ ४
घांटिव	F948 80		१९६ ७८	•	(100 1)
घात	१६२ ११	4 [रिश्वेष्ट १८	.१ चंडाल	बह्नको. १९० ३२

शब्दः पृष्टम् श्लोक	: शब्द: पृष्टम् स्रोक	: शब्द: पृष्टम् स्रोकः
चंडिका ९३९	चमसी२७९ १०	चलाचल२०७ ७४
चतुःशाल ६१ ६	चम् र् १५६ ७८	1
चतुर१८८ १९	1 7 (375 29	चिक्ति { १५९ ९६ २०९ ८७
चतुरंगुल ७० २३	चम्र ९६ ९	चिवका ८२ ९८
चतुरानन ५ १६	चंपक ७७ ६३	चव्य ८२ ९८
चतुर्भद्र१४१ ५८	चय र ६१ ३	चवक१९२ ४३
चतुर्भुज ६ २०	, J 305 80	चपाल१३३ १८
चतुर्वर्ग१४१ ५८	चर { १४३ १३ १२०७ ७४	चाक्रिक १५९ ९७
चतुष्पथ ६० १७		चांगेरी ८९ १४०
चटुर्हायणी१७७ ६८	1	चाटकेर ९८ १८
चरवर { ह३ १३ १३३ १८	चरण :११६ ७१ चरणायध ९८ १७	चौडाल१८८ २०
• • •	चरम२०८ ८१	चांडलिका१९० ३२
चन२७२ ३	चरमध्याभृत. ६५ २	चातक ९८ १७
चंदन१२८ १३१	चराचर२०७ ७४	चातुर्वर्ण्य १३० २
चंद्र	1 •	चाप१५७ ८३
चंद्र १० १४६ २५८ १८२	चर१३४ २२	चामर१४७ ३१
चंदक१०० ३१	चर्चरी२७९ १०	चामीकर१८२ ४५
चंद्रमागा ५४ ३४		चांग्रेग ∫ ७७ ६३
चंद्रमस् १८ १३	चर्चा { २८ २ १२६ १२२	चिषय ७७ ६३
चंद्रवाला ८७ १२५	,	चार र् १४३ १३
चंद्रशेखर ८ ३२	चर्मन् ११२ ४७	(२१६ १४
चंद्रसंज्ञ१२७ १३०	चर्मकवा९० १४३	चारटी ९० १४६
चंदहास१५८ ८९	चर्मकार१८६ ७	चारण१८७ १२
चंद्रिका १८ १६	चर्मप्रभेदिकाः १९१ ३५	चारु२०३ ५२
) 38 £6	चर्मप्रसेविका. १९० ३३	चार्चिक्य १२६ १२२
चपल ८ १८२ ९९	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	चारूमी१६९ २६
८२०२ ४३	चॉमेन् र १५५ ७१	चाष ९७ १६
चपला 🔰 १७ ९	चर्या१३६ ३६	चिकित्सक ११३ ५७
चपला { १७ ९	चर्वित२१२ ११०	चिकित्सा११२ ५०
चपट११९ ८४	चल ∫ ৬৬ ৭	चिका ∫ १२१ ९५
चमर ९६ १०	(200 08	चिकुर { १२१ ९५
चमरिक ७० २२ चमस२८६ ३५	चलदल ७० २०	चिक्रण१७२ ४६
चमस२८६ ३५	चलन२०७ ७४	चिक्स२८६ ३५

शक्षकुममणिकाः

शब्दः पृष्टम् श्लोकः	ज्ञान्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम स्रोकः
चिंचा ७४ ४३	चिरस्य२७२ ९	चेतस् २८३१
चित र् ३८१	चिराय२७२ १	चैत्य ६२७
चित रूष्ट्र इ	चिरिटी१०४ १	चंत्र २५ १५
चिता१६३ ११७	चिरिबिल्व ७४ ४७	चेत्ररथ १४ ७३
चिति१६३ ११७	चिलिचिम ५१ १८	चैत्रिक २५ १५
चित्र २८ ३१	चिछ र ११४ ६०	चेल {१२५ ११५ २६१ २०२
चित्तविश्रम ४२ २६ चित्तसमुत्रति, ४९ २२	विद्व १९ १७	6 // 93%
चित्तसमुत्रातः इत्र २२ चित्ताभागः २८ २	चीन ९६ ९	चोच {२८४ ३०
चित्या१६३ ११७	चीर२८५३१	चोरपूप्पी ८७ १२६
(39 10	चीरी९०० २८	बोल१२५ ११८
चित्र ४१ १९	चीवर२८५ ३१	चौर१८९ २४
(२५७ १७८	(28 189	चौरिका१८९ २५
(64 48	चुक र १७० ३५	चौर्य१८९ २५
चित्रक ८० ८० १२६ १२३	(२८२ २०	च्युत२१२ १०४
११२६ १२३ चित्रकर१८६ ७	चुकिका ८९ १४०	₹.
चित्रकृत् ७१ २७	चुह्न११४ ६० चुह्नि१६९ २९	छगलक१७८ ५६
चित्रतंडुला ८४ १०६	चुक्ति१६९ २९	छगलात्री ८९ १३७
चित्रपणीं ८१ ९२	(900 39	छत्र१४७ ३२
ि १२ ५९	चडा र १२१ ९७	S 8 30 %
चित्रभातुः { २१३०	च्छामाणि१२२ ३०२	छत्रा १४ १६७
(२४३ १०५	चंडाला ९३ १६०	छत्राकी ८५ ११५
चित्रशिखंडिज. २० २४	चूत ७२ ३३	(64 38
चित्रशिसंडिन्. २० २७	चर्ण { १२८ १३४	छद १ १०१ ३६
चित्रा		छदन ६९ १४
	चूर्णकुंतल१२१ ९६	छदिस ६३ १४
चिंता ४३ २९	चुर्णि३७९ ९	क्रमन् ४३ ३०
विपिटक१७२ ४७	च्लिका१४८ ३८	छंद रिश्ध २०
चितुक१२० ९०	चेटक१८८ १७	(100 00
चिरक्रिय१९७ १७	चेत्२७४ १२	कंदसं १३४ २२
चित्रंतन२०७ ७७	चेतकी ७६ ५९	6142 144
चिरमस्ता१७७ ७१ चिररात्राय२७२ १	चेतन २८ ३०	34 ⋅ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹
19(()A 4797]	ंचितना कक्क, दे€ी	(711.76

शब्द:	पृष्टम्	श्लोक:	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोक:
छल	9 € 9	906	जघम्यज	(३३	
छीं	∫ 98	90	١.,	े १ १८५	9	जनार्दन		98
911	रे ४१	३४	जंगम	२०७	४थ	जनाश्रय		
छाग	9७८	७६	जंगमेतर	२०६	७३	जानि	•	३ 0
छागी	9७८	७६	जंघा	998	७२ ू	जनी	_	943
छात	∫999	ጻጸ	जंघाकरि	क. १५५	७३	3111	ું કુ ૧૦૪	8
	१२ ३ १	१०३	जंघाल	944	७३	जनुस्	∙∙∙∙ २८	३०
छात्र	१३२	99		F & C	33	जंतु	•••• २८	३०
छादित — ' —	₹99	36	जटा	و ۶۶ ک	90	जंतुक्ल	•••• ७०	२ २
छांदस	१३०	Ę		(२३०	३८	जन्मन्	२८	३०
छाया	२५३	940	जटान्ट		30	जन्मिन्	२८	३०
छित े	२११	१०३		, 26	338		(323	46
छिद	۶۶	₹ ,	जटिन् जटिसा	, ७२	३२	जन्य	ेर्न १६० (२५४	903
छिदित	२११	९९	जाटछ।	66	१३४	जन्यु	36	
গ্রিন্ন	२११		स्ट्रा	२०७ ,√२०७	હું છું હુદ્દ ,	-	9 { \$	•
গ্রিন্স হ हा	60		VIO		968	जपापुच्य	७९	७६
छुरिका 	946	९२		1 98	99	जंपती	990	₹ ₹८'
छेक	१०२	४३	जड	· } २००	36	जंबाल	٠٠٠ ٧٩	९ ८ ९
छेदन	२१४	9	जडुल	992	88	- A	(69	े २४
	ज∙	i	जतु	१२७	924	जबार	\{ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	७१
जगत्	\$ 40		जतुक	969	४०	जंब	७०	98
	'' रे २३८	60	जतुका	99	२६	-	(94	4
जगती	\$ 40	Ę	जतुकृत्	९१	•	जंबुक	ी २२३	3
	·· { २३७	99	जतुका	९१	943	তাঁৰ	७०	93
जगत्प्राण	9 3	६५	जञ्ज	996	30	जंभ	७३	२४
जगर	9५३	₹8	जनक	٥٠٠.٠٠	₹८	जंभभेदिन	90	४६
जगरू	982	४२	जनगम	946	39	जंभल	७१	•
जग्ध	२१३	399	जनता	२५२	83		७३	
जगिष	…,૧૭૪	44		_	30	• • • •	(60	•
		७४	जनन	. ﴿ 43 °	9	जय	र् १६२	990
जघेनफल	ī	E 3	जननी	٥٠٠ و	२९		८ २ १ ६	92
जधन्य	. ·				2	जयन .	२१६	92
-1-4-04-10	े र १४४	949	जनयित्री	306	२९	जयंत .	90	४९
							•	

सम्बातुकमणिकाः

शब्द:	पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकः
जयती	७७ ६५	जवनिका १२६ १२०	जार१०९ ३५
जया ु	به وه د	जहुतनया ५४ ३१	49 98
जय्य	944 BR	जागरा२१७ १९	जाल १२६१ २००
जरण	१७० ३६	जागरित१९९ ३२	जालक ६९ १६
जरत्	१९० ४२	जागहक१९९ ३२	जालिका१८७ १४
जरद्भव	१७५ ६१	जागर्या२१७ १९	जाली ८६ ११८
जरा	990 89	जागुलिक ५३ ११	जाल्म र १८७ १६
•	११० ३८	जिधिक१५५ ७३	ी १९७ १७ जिघत्सु१९७ २ ०
जरायुज 🗸	२०३ ५०	जात र २८ ३१	2 0
	४८ ३	रेश ८४	
_	५२ २०	ं जातरूप१८२ ९५	जित्वर१५६ ७७ जिन ५ १३
	••• 30 G	, जातवेदस् १२ ५६	
जलनिधि •		जातापत्या. १०६ १६	बिन्धु र १९६ ७७
जलनिर्गम .		२८३१	1 308 199
ज लनी ली -	=	ंजातिर ७८ ७२	17184 3 240 989
जलपुष्प • जलप्राय •		(२३६ ६८८	जिह्मग ४६ ८
	=	जाती ७० १९	जिह्वा१२० ९१
जरमुक् जरूवारः		जातीकोश१२८ १३२ जातीफळ१२८ १३२	जीन११० ४२
जलभाविन् जलभाविन्	• •	•	900
जलशामन् जलश्रामितः	-	जातु …२७२ ४ जातुष …,१९० २९	जीमूत ७८ ६९
जलाधार .		जातोक्ष१७५ ६१	रिवेश ५८
•	र् ५३ २५	्जानु११६ ७२	जीरक१७० ३६ जीर्ण११० ४२
जलाज्ञय.	र् ९३ १६४	जाबाल१८७ ११	2.0
जलेच्छ्वास		जामात१०८ ३२	जीर्णवस्त्र १२५ ११५ जीर्णि २१५ ९
जलौकस्	५२ २२	जामि२५० १४२	
जलौका	५२ २२	जबिव ७० १९	जीय १ २० २४
	२०० ३६	ं जांबनढ१८२ ९५	(98 88
जल्पित	२१२ १०५	जायक१२७ १२५	
জন	े १४ ६८ ११५ ७३	जाया१०४ ६	जीवंजीव१०१ ३५
	(111 44	जायाजीव१८७ १२	1 x 3
जवन		जायापती११० ३८	जीवन र १६३ १
	८२२१ ३९	जायु११२ ५०	जीवनी ९० १४२
	२२	-	-

शब्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकः
जीवनीया ९० १४२	ज्ञार१९९ ३०	झावुक ७३ ४०
जीवनीषघ१६३ १२०	ज्ञातेय१०९ ३५	
_	ज्ञान २९ ६	झिटी ····{ ७९ ७४ ७९ ७५
जीवंतिका. $\left\{ egin{array}{cccc} \mathcal{L} & \mathcal{L} & \mathcal{L} \\ \mathcal{L} & \mathcal{L} & \mathcal{L} \end{array} ight.$	ज्ञानिन्१४४ १४	क्षिष्ठिका१०० २८
जीवंती ९० १४२	ज्या र ५७ २	झीरुका ····\$०० २८
जीवा ९० १४२	ज्या रे १५७ ८५	₹.
जीवातु१६३ १२०	ज्याघातवारण.१५७ ८४	टंका १९० ३४
जीवांतक १८७ १४	ज्यानि२१५ ९	टका ''''र् २८५ ३३
जीविका१६३ १	\$ 990 8€	टिष्टिम१०१ ३५
र्जावितकाल. १६३ १२०	ज्यायस् रह८ २३६	टीका२७८ ७
जुगुप्सा ३४ १३	1 / - 1 - 2	दुदुक ७६ ५६
जुंग ८९ १३७	ज्येष्ठ { २३१ ४१	ह.
जुदू १३४ २५	ज्योतिरिंगण, १०० २८	डमर …२१६ १४
ज़ूति२२१ ३९	ज्योतिषिकः १४४ १४	डमरु ३९८
जूर्ति२२१३९	ज्योतिष्मती ९१ १५०	डयन१५१ ५२
ज़ंभ ४४ ३५	ज्योतिस्२६७ २३१	डहु ७६ ६०
जुंमण ४४ ३५	ज्योत्का • १८ १६	हिंहिम ३९ ८
(abb inv	ज्यौत्स्त्री • • • १३ ५	डिंहीर१८३ १०५
जेट र १५६ ७७	ु ११३ ५६	हिंच२१६ १४
जेमन१७४ ५६	ज्वर { २२१ ३९	डिम १९१३८
जेय१५५ ७४	ज्वलन १२ ५६	विम र् २४९ १३४
নীস १५५ ৩४	क्वाल १२ ६०	डिंभा११० ४१
16 18	劉.	हुंहुम ४६ ५
जैवातक. र १९५ ६	शंशावात १३ ६६	डुछि ५२ २४
२२४ ११	शटामला ८७ ३२७	ਫ.
जोंगक१२७ १२६	इटिति ···२७२ २	डका ३८ ६
जीवम्२७१ २५२	झर ६५ ५	त.
ज्ञा१३० ५	झर्सर ३९८	, 1
इपित२११ ९८	शहरी२७९ १०	
क्षेत्र२११ ६८	झव ५३ ५७	· ·
कासि २८ १	क्षण ८६ ११७	तक्षन्१८६ ९
ज्ञातसिद्धांत. १४४ १५	झाटल ७३ ३९	
शांति१०९ ३४	साटल२८६ ३८	
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	काटाल ,,रट् रूट	तडाग ५३ २८

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम् स्रोकः
तिहत् १७ ९	तंत्र२५८ १८४	तरपण्य .	40 99
तांडेखत् १७ ७	तंत्रक१२४ ११२	 तर ङ	∫ १२२ १०२
तडक२८५ ३३	तंत्रिका ८० ८२		रे २०७ ७५
तंडुल ८४ १०६	तिहाँ ७ १	तरछा •	१७३ ५०
तंडुलीय ८९ १३६	. १२५७ ४७६	तरस्	∫ १३ ६७
तत } ३८ ४	तप् २५ १९	•	रे १६० १०२
(२०८ ८६	तपःक्वेशसह् १३८ ४३	तरस •	994
ततस्२७२ ३	तपन र २१ ३१	तरस्विन्.	∫ १५५ ७३ } २४७ १२८
तत्काल१४७ २९	(89)		
तस्य ३९९	47177 301.0		
तत्पर१९५ ९	तपस् { २५ १५		६७ ५ १ १ ० ४२
तथा२७३ ९	तपस्य २५ १५		908 8
तथागत ५ १३	तपस्त्रिन्१३८ ४२		३ ९ ३
तथ्य ३६ २२	तपस्विनी ८८ १३४	तर्कविद्या	
तद्२७२३			७७ ६५
तहा२७६ २२	(30 38	C A	996 69
तदात्व१४७ २९	तमस् 🕻 ४५ ३	•	१७५ ६१
तहानीम्२७६ २२	२६७ २३२		१७ ० ३४
तनय१०७ २७	तमस्विनी २३ ४		१८२ १४ शिहर १४
998 69	13 19 }	तर्भण	र १७४ ५६
तनु २०४ ६१	तमाल १२८५ ३३		(298 8
284 993	तमालपत्र१२६ १२३	तर्मन् •	१३३ १९
तनुत्र१५३ ६४	तमिस्र ४५ ३		8३ २८
तत्र११६७१	तमिस्रा २३ ४	तर्ष …	र्वे १७४ ५५
तनुष्ठत२११ ९९	तमी २३ ५		1340 68
तनुनपाद् १२ ५६	तमोनुद्२४० ८९	तल …	र्रे २६१ २०२
19.9 38	तमापह२६८ २३९	तलिन •	२४७ १२७
तन्दह १ १२२ ९९	तरक्ष ९५ १	तल्प •	२४८ १३१
(9 9 3 9 19	तरंग ४८ ५	तहज •	२७ २७
तंतु ११८९ २८	तरांगिणी ५४ ३०	तष्ट •	२११ ९९
तंतुम१६७ १७	(२१ ३०	तस्कर •	9८९ २४
. (219 93	तरणि ४९ १०	तौडव ····	∫ ३९ १०
तंतुवाय. { १८६ ६	८ ७९ ७३	(1194	१२८५ ३४

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोक:	शब्दः	पृष्ठम् स्रोकः
तात१०८ २८	ताली	1 60	920		७३ ४०
तांत्रिक१४४ १५	alol	{ 98	300		992 88
तापस१३८ ४२	ताळु -	१२०	99	तिलक ⋯∹	
तापसतर ७४ ४६	_	२७०	२४७		१२६ १२३
तापिच्छ ७८ ६८	_	३ ०			१७२ ४३
तामरस ५५ ४०		(32	9	तिलकालक.	
तामलकी ८७ १२७	तिक्तक.	रे ९२	344		.१२८ १३२
तामसी २३ ५	तिसत्राक	93	२५	तिलिपेंज	
तांबुलवहीं ८६ १२०	तिग्म •	२२	३५	तिलपेज 🕠	
	तिङ्सुबंतच	य. ३२	ર	ति।लेत्स	४ ६ ५
तांब्ली ८६ १२०		9 € ९	२६	तिल्य	.१६५ ७
ताम्रक१८२ ९७	तितिक्षा •	_		तिल्व	७२ ३३
ताम्रकणीं १६ ५	तितिश्च •			तिष्य	१९ २२
ताम्रकुटुक१८६ ८	तितिरि				२५१ १४७
ताम्रच्ड ९८ १७		२२		तिष्यफला • •	७६ ५७
तार { ३७ २	तिनिश ••		j	. !	२२ ३५
तारकजित् ९ ४२	तितिडी •		83	तक्ष्ण	१८२ ९८
,	तितिडीक.		٠ ١		८२३३ ५३
तारकाः… { १९ २१	^ 1	., vş	- :	तीक्ष्णगंधकः	७२ ३१.
:	~	•	- 1		४९ ७
तारा १९२१	तिंदुकी •		!	तीर्थ	१४० ५१
तारुण्य११० ४०		·•• 49		1	१२३९ ८६
तार्स्य { २५१ १४५	तिभिंगिल •		i	तीत्र	
स्विष्य वश्य		२ इ २		तीव्रवेदना•••	
ताक्येशैल१८३ १०२	तिामर	٠٠ لال	₹ ;		२६९ २४३
38 8	तिरस् ····	∫२७२	२५७		२७३ ५ ८२७४ १ ५
ताल ९४ १६८	141/4	१ २७३	Ę	. (109 26
ताल १४ १६८	तिरस्करिणी	. १२६	920	तुंग {	₹0€ ७०
(364 364)	तिरस्क्रिया-	89	२२	तुंगी	. ८९ १३९
तालपत्र१२२ १०३	तिरीट	७ २	33	•	.२०४ ५६
तालपणीं ८७ १२३	18416	२८४	30	. <u> </u>	१२० ८ ९
तालम्लिका८६ ११९	तिरोधान •			•	24 998
तालवृंतक १२९ १४०	तिरोहित	१६२	992	CHEGITI. 2	८९ १३९
तालांक ६ २५	विर्यच्	300	३४	तुंडी	

ज्ञब्दः	पृष्टम्	श्लोकः	सन्दः	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः
तुत्था … {	૮ર	९५	तूण	946	66	तेजित	209	99
J		924	त्णी	940	65	तेम	299	2.9
तुत्थांजन …	.१८३	303	त्रुणीर	٠٠٩ ५८	23	तमन	३७२	ጸጸ
•	.196		तूद	৬३	x 3	तेजस	१८२	\$ \$
तुंदपरिमृज			त्र्र्ण	98	६८	1 -	नी- १९०	३ ३
• •	.999		त्छ	∫्७३	४२	तैसिर	१०२	
CIE# ****	999		त् _{लिका}	ૂ કેડક	906	तैलपणिव	358	353
	338	41	, ,	३९० २५५		तैलपायिव	FT \$\$	२६
A1700	999	88	त्वर ज्यानिकी		3 64	तैलंगता	…२७८	Ę
·	338	ξg	तृष्णीक	وه ج ۶	३९	तैलीन	१ ६५	9
~	८७	320			३९	तेष.	•••• २५	34
_	.१८६	Ę	तृष्णीम्	२७३ २०३	8	तोक	30 f	२८
	.9 € 9	308	तृष्णास् तृष	२७३ ९४	9 6 6	तोकक	56	30
तुंबी …	. ९२	948	त्रणहुम	98	900	तोक्म	३६७	9 €
_	186		-	····9 & C	२५	तोटक	२८४	३०
- .	386	· •	त्याचा त्याध्यज	93	9 6 0	तोत्र …	\$ 388	83
•	186	·	तृणराज	98	986	(1)-1	े १ १६६	92
•	. 94	७४	त्यारा ज्य		£9	तोदन	3 ξ ξ	32
तुरासाह्	90	80	तृ ण्या	98	9 8 6	तोमर	٠٠٠٠٩ ٢٩	९३
तुरुष्क · · ·	.920	926	_	त१६५	9	तोय	४८	ሄ
3	.१८०	८७	_	इति. ११०	38	तोयापिष्पर	ही ८५	333
तुलाकोटि …	.१२४		त्यात्रात्य ः तृप्त	299	903	तोरण	६३	3 8
तुलामान ···	.960	८५	रहित	9 <i>w</i>	48	तौर्यत्रिक	३९	30
तुल्य	.989	३७	GICI	ि ४२	२ ७	त्यक्त	२१२	300
त्ल्यपान · · ·	8 0 8.	44	तृष् ···	· } 968	44	त्याग	₩3₹५	२९
• .	. ३०	8	तृष्णक्	986	२ २	त्रपा	•••• ४२	२३
तुवरिका · · ·	. 46	933	तृष्णा	२३३	49	त्रपु∙⋯	१८३	304
ans ∫	७६	40	तेज	984	- 1	त्रयी	३२	•
तुष {	१६८	२२	तेजन	९३	9 6 9	त्रस	२०७	
ANII ∫	98	96	तेजनक	९३	9 62	त्रसर	२१८	
त्तुषार {	38	38	तेजनी	20	૮રૂ	त्रस्त	982	२६
तुषित …	, & '	90	तेजस् …	\$ 338	६२	त्राण •••	्र २१२	
तुहिन …	. 38	36	11-165	' र् २६८	२३५	1	े रिश्	4

शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्टम्	श्लोकः
त्रात	२१२			٠٠٠. دلا			द्.	
त्रापुष	990	२ ९	त्रिसंध्य	२२	३	दंश	٠٠ ٩٩	२७
त्रायंती	59	940	त्रिसीत्य	984	9	दंशन	943	Ę∀.
त्रायमाण	\$9	340	त्रिस्रोतस्	48	३ १	दंशित	948	
त्रास	×9	29	त्रिहल्य	१६५	9	दंशी	९९	२७
किक	∫ ३९	90	त्रिहायणी	900	६८	दंष्ट्रिन्		ર
त्रिक …	{ 330	७६	_		१२५	दक्ष	9८८	38
त्रिककुद्	٠٠ ६५	ર	त्रुटि		•	दक्षिण	994	C
त्रिकटु	*********	111		(२३०	•	दक्षिणस्थ	94३	Ę۰
त्रिका	٠ ٢٦	२७	त्रेता		२० '	दक्षिणा	٠٠٠ ٩٤	9
विक्ट	٠٠٠٠ ۶۴	ર		909		ं दक्षिणार्श	रे१३३	988
4	२८७	,	त्रशट त्र्यंबक		३६ ३५	ं दक्षिणारु	9८९	२४
त्रिखट्टी	०२८७	४९	_		•	् दक्षिणाई	१९६	4
ात्रेगुणाक <u>ु</u>	त१६५	8		38 ·····		दक्षिणीय	984	4
त्रितक्ष	२८७	શ્રુ	म्बूपण स्व	२०८		दक्षिणेमन	۶۵۴]	२४
त्रितक्षी	२८७	83		307İ		दक्षिण्य	984	4
त्रिदश	···· ४	৩	, ·			दग्ध	२११	99
	i 8	Ę	,	····		दग्धिका	१७३	४९
त्रिदिव		έ	्र त्व नत्ता र	-	•		(39	३१
त्रिदिवैश		o	त्वच् ••	{ ec €c	52 37	ं दं ड	1 107	7.1
त्रिपथगा	···· 48	₹१	त्वच	66	138	i .	न २३१	४२
त्रिपुटाः	\$ 28	306		९३	350		(१४५	
1430111	'` } ८७	354	त्वरा	38	•		•••• १३	•
ात्रेपुरांत <i>व</i>	···· ¿	રૂપ					३२	
त्रिफला	9 ८४	333	स्वरित	. 8 344	५२ ७३		म. १७८	
त्रिभंडी	ex	306	त्वरितोदि	त ३६	२ ०	दंडाहत	…૧७૪	५३
	•••• २३	४	বেছ		99	दहुन्न	۰۰۰۰ ९۰	380
त्रिलोचन	···· ¿	३४		_	9	दह्रण	338	
त्रिवर्ग	1 2 383	40	्रतक्ष्ट्र	 	३५	, –	3 38	
_	£ 12.2	12	1 _	1 22	2 ~	द्धित्य		
	۰۰۰۰ ξ			$\left\{ 2\xi \right\}$	२२५		७०	
त्रिविष्टप		Ę		२३	३०		१७३्	
1 त्रष्टृत्	۰۰۰۰ ۲۶	306	त्सरु	946	९ o	द्नुज	٠ ٢	35

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम् होकः
दंत१२०९१	दर्वीकर	४६	6	दानवारि	४ ९
दंतधावन ७५ ४९	दर्श •	ु २३		दानशौंड	१९५ ६
दंतभाग१४९ ४०		ंं` रे १३९		दांत	ु १३८ ४३
दंतशठ ि ७० २९	दर्शन			į	े १२१० ९७
(0) (0	दल	۰۰۰، ۶۹		दांति	२१४ ३
दंतराठा ८९ १४०	द व	२६२		दापित	२०१ ४०
दंतावल१४८ ३४	दविष्ठ	२०६		दाम	१७७ ७३
दंतिका ९० १४४	दवीयस्	•	•	दामनी	300 63
दंतिन्१४८ ३४	दशन	۰۰۰۹۹۰۰۰	89	दामोदर	٠٠٠, ६ ٩٥
दंदश्क ४६ ८	1 -	सस्. १ २० ५	९० १४	दांभिक	२२५ १७
दभ्र२०४ ६१	दशबरू दशमिन्	-	8ई 10	दायाद	२४० ८९
दम { १४५ २१ २१४ ३	! ' '	ष२४०	८७	दारद	80 99
	यसमार	् । । १२५	338	दाराः दारित	9og €
दमय२१४३ दमित२१०९७	दशा .	{ ३६४		दास्त	२११ १०० ६८ १३
दमित२१०९७ इमनस् १२५९	t	किनी १५६		दारु •	} ६८ १३ } ७५ ५३
दंपती ११० ३८	t.	∫ १४३	99	टारुण	٠٠.، ٢٦ ٩٥
दं भ ४३ ३०	दस्यु	{ ໑໒૬			T 63 967
दंभोली ३ १ ५ ०	दस्र	99	48	1	क्त१७० ३४
दम्य१७५ ६२	दहन	۶۶			ट ९८ १७
दया ४१ १८	ì	_{mh} ∫ S	४०	दार्विका	८६ ११९
दयाङ्१९६ १५	दाक्षाय	ه ∫ اس	23	दावी	८३ १०२
दयित२०३ ५३	दाक्षाय	q ९८		दाव	२६२ २०६
(89 29	टाहिम	 १२८७	६४	दाविक	••• ५५ ३६
दर रूप्ट १८४				दाश	49 94
दगत्२७९ ९		पुष्पक. ७५		दाशपुर	८८ १३१
दरिद२०२ ४९	-	ता२७८	•	. हास	926 99
दरी ६५ ६	दात	و و ج		्रदासी	৩९ ७४
दर्दुर ५२ २४	दात्यूह		. २१ . १३		न …२८४ २७
दर्पेक ७२६	दात्र	१६६ (१३५		दासय	9८८ १७
दर्पण१२९ १४०	दान	384	•	, दासर	366 36
दर्भ ९४ १६६		1986		दिगंबर	२०१ दु९
दर्वि१७० ३४	े दानव	٠ ٢	१ १२	ं दिग्गज	¢ €

शब्द:	पृष्टम् श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम् श्लोकः
दिग्ध	1946 66	दीप	929	936	दुर्जन	२०२ ४७
ाष्-ध	'' र्रे २०९ ९०	दीपक	२२४	3 9	दुर्दिन	१८ १२
दित	२११ १०३	दीप्ति	٠ २१	३४	दुर्नामक	११२ ५४
दितिसुत	५ १२	दीप्य	٠٠٠٠ د٢	333	दुर्नामन्	ধৃষ্ ২৬
दि धिषु	१०७ २३	द्धीर्घ	२∙६	६९	दुर्बल	१११ ४४
दिधिष्	१०७ २३	ं दीर्घकोर्	शेका. ५२	२५	दुर्मनस्	994 6
दिन	३२ २		न्१३०		दुर्मुख	२०० ३६
दिर्नात	२२ ३	दीर्घपृष्ठ			दुर्वर्ण	१८२ ९६
दिष्	{ 8 €	ं दीर्घवृंत	٠٠٠. ७ξ	40	दुर्विघ	२०२ ४९
_	-	दिर्घसूत्र	996	90	दुईट्	१४३ १०
	२२ २		····		दु≉्यवन	ეი ჯა
	T 90 84	: ਭਾਸ਼	∫ ४७	•	दुष्कृत	२६ २३
दिवा	• •	3.4	ॅं <u>ो</u> २८३		। द्ष्टु	२७५ १९
दिवाकर		दुःप्रधर्षि	णी ८५	338	दुष्पत्र	८७ १२८
दिवाकी	ति.	ु दुःषमम्	ર્૭૪	3.8	दुहित्द	१०८ २८
दिविषद्		दुःस्पर्श		8.9	ं द्त	38
-	(~ 10	दुः स्पर्शा			द्ती	१०६ १७
दिवीकस्	ि २६६ २२७	दुक्ल	१२४		द्य	१४४ १६
दिव्यगाः	यन. २४८ १३३	दुग्घ	१७३	-	दून	२११ १०२
	गढुक.२०३ ५०	् दु।ग्यक		•	दूर	२∙६ ६८
दिश	94 9	दुहुम	89	385	क्रम् । स्था	ं १३० ६
दिश्य	१६ २	दुंदुभि -	∫ ₹		दूर्वी	९२ १५८
	(२२ १		(,		ं दूषिका	११५ ६७
दिष्ट	रे २७ २८	्रहुरध्य	٠ ६٠		दूष्य	१२६ १२०
_	८्२३० ३५	1 =_	T ८३		ं दूप्या	१४९ ४२
दिष्टांत	१६३ १११	. –	٠٠٠٠ ٦٤	•	i	98 00
दिष्ट्या	२७३ १०	दुरोदर	२५६		ं द ढ .	४२०७ ७६
दी क्षां त	१३५ २७	दुर्ग	१४१	४ १७		(२३२ ४६
दीक्षित	<u>-</u>	दुर्गत	३०	२ ४९	ट ढसंघि	२०७ ७५
दीदिवि		डुर्ग ति		-	दति	२८२ १९
दीधिति	``	दुर्गेघ	३		हब्ध	२०८ ८६
दीन जीवन	२०२ ४९	टुर्गसं च			ं ट्रडा	्र १२१ ९३
दीनार	३२५ १४	े दुर्गा	•••	९ ३९	ह्यू	रे २६४ २१७

राष्ट्राडुक्रमणिका-

शब्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्द:	पृष्टम् स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम् श्लोकः
दृषद् ६५ ४		(४० १३	युम्न .	969 90
दृष्ट १४७ ३०	देवी	८० ८३	बृत .	१९३ ४५
दृष्टरजस्१०४ ८	_	८८ १३३	ग्तकारक.	१९२ ४४
द्यांत े २३५ ६२		१०८ ३२	यूतकृत्	१९२ ४४
दृष्टि र् १२१ ९३		40 6	बोस्	∫ ४६
^{६।८} रे २३० ३८	· _	१४६ २४	418	रे १५ १
દષ્ટેંલું ૨૪ ૧		99€ ७9	्योत .	२१ ३४
まれ し	देहली .	६३ १३	द्रप्स	१७३ ५१
(80 15	दितेय . • • •	५ १२	 इव	∮ ४३ ३ २
देवकीनंदन ६ २१	दैत्य .	५ १२		' १ १६२ १११
देवकुसुम१२७ १२५	1 _	२० २५	द्रवंती	69 64
देवखातक ५३ २७	दैत्या .	८७ १२३	!	१६० १०२
देवखातबिल. ६५ ६	दैत्यारि .	६ १९	द्विण	े १८१ ९० • २३३ ५२
•		२५२ १५३		`े २३३ <i>५</i> २ े २८२ २२
देवजग्धक ९४ १६६	. दैर्घ्य	924 998	1	(969 90
देवतरु ११ ५३	ं दैव	₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ ₹ 	्रहब्य	. रेपेड १५४
देवता ४९	५ ५ ••••	११३४ २४	्र द्राक्	२७२ २
देवताड ७८ ६९	देवज्ञ	388 38	ारः इक्षा	८४ १०७
देवत्व१४० ५२		१०६ २०	दाधिष्ट	२१३ ११२
देवदारु ७५ ५४	् ५५३ ॥	•	दाविडक	
देवबङ्२०० ३४	, देवत	}	्रह्म इ.	Ęu Կ
देवन १९३ ४५			्ड ह्रिकिलिम	
देववह्रम ७१ २४ - देववह्रम ७१ २५	दोला	्र ८२ ९५ '} १५१ ५३	्रहाकालम् - द्रु द्यण	946 89
	-7100	•	्द्रुवन हुणी	२७९ ९
4.2			્કુગા	
4 1 11 10 11 11 11	1 ' -	२७३ ६	:	98 66
4114	दोषैकदश्		्ंद्रुत .	> 333 300
देवयोनि ४ ११	दोस्	•> >pp	,	२७२ २
देवर१०८ ३२	दोहद	४२ २७	हुम	Ęw y
देवल१८७ ११	1 -	१०६ २१	1	१२ . १२७ १२५
देवशिल्पन् २३० ३५	ग्रुस्	94 2	द्रुमामय द्रुमोत्पळ	
देवसभा ११ ५१	शुति	99 96	. •	96 40
देवसायुज्य१४० ५२	ŧ	ी २१ ३४	दुवय	
देवाजीव१८७ ११	बुमणि	२१ ३०	दृहिण	4 90

शब्दः पृष्टम्	श्लोकः	ज्ञब्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः पृष्टम् श्लोक
(90		इिरेफ	900		धन्वयास ८१ ९१
द्रोण 🕇 १८०	66	हिष्	१४३	99	धन्विन्१५४ ६९
_ (२३३	-	द्विषत्	••••१४३	90	धमन ९३ १६२
द्रोणकाक ९८		द्वि सी त्य	••••٩६५	\$	धमनि ११५ ६५
द्रोणक्षीरा१७७		द्वि हल्य	9 € 5	9	धमनी ८८ १३०
द्रोणदुग्धा१७७		द्विहायनी	960	٩٤	धम्मिल१२१ ९७
द्रोणी { ५०	99	, दीप	४९	6	धर ६४ १
-		द्वीपवती	48	३०	घरणि ५७ २
द्रोहचिंतन २९		दीपिन्	९५	9	धरा ५७ २
द्रौणिक१६५		द्वेषण	૧૪રૂ	90	घरित्री • ५७ २
दंह { १०१ २६३	२८ २९२	द्वेष्य	२०२	84	(२६ २४
६२५२ इयातिम१३८		है घ	988	96	ં ધર્મ ≺ ફરફ
द्यास्य१४२		द्वैप	949	५३	(२५० १३०
द्वाःस्थित१४२	•	द्वेमातुर	8	४१	धर्मचिता ४३ २८
द्वादशांगुल११९		द्रचष्ट	9८२	९७	धर्मध्यजिन, १४१ ५४
द्राह्यात्मन् २०		ı	ਬ.		धर्मपत्तन१७० ३६
मादशास्त्रग्रास्त्रयुः २०		घट	२८१	90	ू (५ १३
द्वापर { २५४	. ५ . १६२		٠ ७९		धर्मराज. 🚽 १२ ६१
द्वार् ६३		धन	969	९०	(229 39
द्वार ६३		धनंजय	१२	५६	धर्मसंहिता ३३ ६० धर्षिणी१०४ १०
द्वारपाल१४२	•	धनद	···· 38	७२	•
द्विगुणाकृत. १६५	•	धनहरी	८७		धव ····{ १०९ ३५ २६२ २०।
- (900	•		38	७२	धवल ३१ १३
द्विज { २२९		धानेन्	१९६	90	धवला१७६ ६७
द्विजराज १८		धनिष्ठा	95		धवित्र१३४ २३
द्विजा ८६	-	धनु	७२		((0 9 3
द्विजाति१३०		_	৬২	-	वातकीः { २७८७
द्विजिद्व२४८		धनुर्धर	••••948		6 88 4
दितीया१०४		•	948	- 1	घातु
द्वितीयाकृत. १६५		धनुस्		૮રૂ	घातुपुष्पिका. ८७ १ २४
दिप१४८		धन्य	-	•	घाट ५ १७
द्रिपाच१४६	•	धन्व	940	•	धात्री२५७ १७६
दिरद१४८	1	धन्वन्		4	धाना१७२ ४७
•	•			-	

হাভৱ:	पृष्टम्	श्लोकः	३व्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः पृष्टम् श्लोकः
धा नु ष्क	84 و	ξ \$	घुरी ण	,१७६		(98 20
धान्य	€ ب	२१	धुर्य	१७६	Ę٩	धुव ६७ ८
धान्यत्वः	च्१६८	२२	ध्रुत	२ १२	900	उन ः रे०६ ७३
धान्याक	969	३८	धूपायित	२ ११	१०२	(२६३ २११
धान्यांश	••••३३	84	च् षित	२११	१०२	ध्वा र ८५ ११५
घान्याम्ब	g969	३९	घूमकेतु	२३४	40	् (१३४ २५
धामन्	२४७	१२४	धूमयोनि	90	9	ध्वज१६० ९९
धामार्गव	وی کی		धूमल	३१	98	ध्वजिनी१५६ ७८
41-11-14	1 c 4	330	धुम्या	२२२	४३	ध्वनि ३६ २२
घाय्या	१३४		धूम्याट	९७	9 Ę	ध्वनित२१० ९४
धारणा	 9४६	२६	্ঘুদ্র	३१	9 €	ध्वस्त२१२ १०४
घारा	••••	४९	धुर्जिटि	c	३५	ध्वांक्ष र ९८ २०
धाराधर	30	9		< 68	છ છ	ध्वान ३६ ३२
_	त १७	99	धूर्त	∤ १९ २	४४	
धार्तराष्ट्र	55	२४	_	(२०२	४७	• •
धावनी	•••• ८२	९३	धूर्वह	१७६	६५	न. न२७४ १ १
धि क ्	∙∙∙२६९		धृलि	۰۰۰۹ و ۰	80	नकुलेष्टा ८५ ११५
धिकतः	{ २०१	३९ ः	धुसर	३१	93	नक्तक१२५ ११५
धिषण	-	९४	धृति	२३७	- ;	नक्तम्२७३ ६
ावपण धिषणा	···· २०	२४	र्वेह	986		नक्तमाल ७४ ४७
विषय विषय	२८ २५३	१ १५५	धृष्णज्	986		नक ५२ २९
धी	_	322	धेनु े	9७७	_	नक्षत्र १९ २१
या धीं दिय	•••• ३ ०			1886	36	नक्षत्रमाला. १२३ १०६
धीमत्	930	Ę	धनुका	1 2 3 5 2	94	नक्षत्रेश १८ १५
धीमती	,904		धनुष्या	9७७	,	(6/ 930
	∫ १२६	928	धेनुक	964		नख ११९ ८३
धीर	'' 🛛 १३०		धैवत	३७		नखर११९ ८३
धविर	٠٠٠٠ ٢٩	34	धे।रण	१५२	i	नग२२५ १९
धीशक्ति	₹9८	24	धौतकौशे		į	नगरी ६० १
_	385	& ,			• •	नगौकस्१०० ३३
घुनी	···· 48	३०		940	i	नम२०१ ३९
धु र	१५२	44	धीरेय	१७६	६५	नमहु१९२ ४२
धुगंधर	9 ∅ ξ	६५	ध्याम	९ ४	1	नीमका१०४ ८

शन्दः पृष्टम् स्रोव	तः शब्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः
(WE 48		नवोद्धृत १७३ ५२
नट र १८७ १२	नभस्वत् १३ ६६	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
नटन ३९ १०		Į.
नटी ८८ १२		नष्टचेष्टता ४४ ३३
् ९३ १६	२ नमस्कारी ८९ १४१	
नड ९३ १६	१ नमस्या१३६ ३५	ं नष्टंदुकला २४ ९
(२८५ ३३	नमस्यित२११ १०१	नस्तित१७६ ६३
नडप्राय ५८ ९	नमुचिस्दन १० ४६	नस्योत१७६ ६३
नडसंहति ९४ १६	∤नग्र ३०७०	नाहि२७४ ११
नद्या ••• ९४ १६	ं नयन१२१९३	ंना२७४ ११
नडूत् ५८ ९ नडूल ५८ ९	ना १०३ १	ν ξ
नत२०६ ७ १	नरक ४७ ९	नाक १५२
नतनासिकः १११ ४५	नरकांतक ६ २२	नाकु ५९ १४
नद्रमातकः ।।।२३४ ५७	नरवाहन १४ ७२	नाकुली ८५ ११४
नदी ५३ २९	नर्तक ३९ ९१	1 8 4 8
नदीमात्वक ५९ १२	नर्तकी ३९८	186 38
नदीसर्ज ७४ ४५	नर्तन ३९ १०	ंनागर् १८३ ४०५
नध्री१९०३१	नर्मदा ५४ ३२	२०४ ५९
नर्नाद्य९०८ २९	ंनर्मन् ४३ ३२	् २२६ २१ नागकेशर ७७ ६५
عرد مورد)	्रनलकुबर १४ ७३	नागजिह्निकाः १८४ १०८
ननु रिष्ठ १४	ं नलद ९३ १६४	नागबला ८६ ३१७
नंदक ७ ३०	नलमीन ५१ १८	(9199 32
नंदन ९० ४८	निलेन ५५ ३९	नागर २५८ १८८
नंदिक ९ ४३	निलिनी ५५ ३९	नागरंग ७३ ३८
नंदिकेश्वर ९ ४३	नली ८८ १२९	नागलोक ४५ १
नंदिवृक्ष ८७ १२	८ नल्व ६० १८	नागवली ८६ १२०
नंचावर्त ६२ १०	नव२०७ ७७	नागसंभव१८३ १०५
नपुंसक११० ३९	नवदल ५६ ४३	नागांतक ८३१
नष्त्री१०८ २९	नवनीत१७३ ५२	नाटच ३९ १०
(94 9	नवमालिका. ७८ ७२	नाहिंधम१८६ ८
नमस् २५ १६	नवसूतिका. १७७ ७१	1994 84
. ६७ २३	1	नाडी र १६८ २२
नभसंगम१०० ३४	नवीन२०७ ७७	(૨૨૧ ૪૨

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम् श्लोक	: शब्द:	पृष्टम् स्रोकः
नाडीव्रण११३ ५४	नाव्य	··· 88 90	निकृति	
नाथवत्१९७ १६	नाश	9६३ 99	+ _	···.२•३ ५४
नाद ३६ २३	नासत्य	••• 99 48	निकेतन	• •
(७१ ३०		∫ ६३ १३	1	
नादेयी	नासा .	'''{ १२० ८ ९	निकण	₹ ७३ २९ ३७ २४
99 54	नासिका	9२० ८९	निकाण	
(28 996	नास्तिक	ता २९ ४	निखिल	• •
नाना {२७० २४८		क१४५ २२	निगड	388 83
(707 4		२०५ ६५	निगद	•
नानारूप२१० ९३		र२०४ ५६	i	२१६ १२
नांदीकर२०० ३८		६४ १८	निगम	{ ६० १ {२५० १ ४०
नांदीवादिन्. २०० ३८		ा ••• २९ ६	निगाद	२१६ १२
नापित१८६ १०		२७४ १४	निगार	
१ १५२ ५६		···· हर १९	निगाल	१५० ४८ १५० ४८
नाभिर २४९ १३७	निःस्व	२०२ ४९	नियह	716 93
1 404 4	निकट	•••रे०५ ६६	निघ	२२० ३६
(२८२ २०	निकर	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	निघास	908 48
नाम र ३३ ८	निकर्षण	···· 88 38	निम	9९७ ३६
ाप्ति पार्चित्र स्थापति । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	निकष	990 37	निचुल	७७ ६३
		(Dieta an	् निचोल	924 998
नामन् ३३ ८ नाय२१५ ९	ंनिकषा ं	Į 4 0 3 0	, निज	•••२२९ ३२
-		ज १३ ६३	नितंब ••	∫ ६५ ५
नायक१९६ ११		१७५ ५७	:	€ 330 BR
नारक ४७ १ नारद ११ ५१	निकाय	१०२ ४२		••••१०३
, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	निकाय्य		नितात	··· 38 00
	निकार	्रिश्ह १५	नित्य •••	J 28 €9 €
	_	१ ५५० ३६		र २०६ ७२
	_	१६२ ११२	निदाघ	्र २५ १९
_	निकुंचक निकंड			6 00 dd.
	निकुंज रिकंग	٠٠٠، قود		२७ २८
नाल रि६ ४२	निकुंभ विकास	•••• 988	1	? > ? > ?
-03	निकुरंब	902 80	् निदिग् धि व	
नालकर ९४ १६८	निकृत	{ २०१ ४१ ' { २०२ ४ ६	निदेश	. ∮ ታ∤० ३ ०८ . ∮ ታ∤० ३ ०८
नामना का के के		1 404 06	1	. 6 540 308

शब्द		कः ∣ शब्दः	पृष्ठम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्ठम् श्लोकः
निद	, ,		(39		निर्देश	20 4 (3) 110
निद	ण२०० इ३	नियम .		•	,	
निदा	छ २०० ३३		८ १३९	86	निर्भर	{ २७२ २
निधन	_ ∫१६३ ११	६ नियामव	Alt:	92	निर्मद	…१४८ ३६
गिष	े ''' { २४६ १२	३ । नयुत	२८३	२४	निर्म ुत	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
निधि	٠٠٠. ولا ١٠٠٠	े नियुद्ध	•••∙9 € 9	9 ∘ €	निर्मोत	, ,
	च ∫ १४१ ५७	्नियो <u>ज्य</u>			निर्याण	
निघुव	न. {२७८ ४	ृनिर्	२७१	348	निर्यात	
निध्य	•	निरन्तर	३०५	ξξ.	निर्यास	•
निनद		ं निरय	···· ४७	3	निर्वेषण	
	,, ,,	निर्गल	૨૦૮	८३	निवर्णन	
निनात -२:		निरर्थक	२०८	८१	निर्वहण	
निंदा	•••• ३४ १३	निखमह	9 <i>९</i> €	94	•	,
निप	••••१७० ३२	् निरसन	२ १९	३ 🤋	निर्वाण	'''{ ૨૧ેં ૧ેં
निपठ		£	1 .		निर्वात	२१० ९६
निपाठ		् निर स्त.		LL	2_2_	
निपात	•	जिस्साल सेन	•		निर्वाद.	''' (२४० ९०
निपान	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	निराकृत विराकृत			नर्वापण	१६२ ११४
निपुण	•		(· · ·	ا ،	निर्वार्य	१९६ १३
निबंध	११२ ५५	निराकृति.	•	18 1	नेवसिन	१६२ ११३
निबंधन	\ -	[।] निरामय	· · · · · · ·	ξ9 , <u>.</u>	नेर्वृत्त	२११ १००
निबहण			•	9		(१९१ ३९
निभ	••••१९१ ३८	0.20	• •	اڳ : إ	नेर्वेश	٠ ﴿ عَ عِنْ عَ فَ
निसृत	१९८ २५	1	•	6		८२६४ २१५
निमय	968 60	निर्गुडी	1 62 6	10	नेर्व्यथन	४५ २
निमित्त	२३८ ७६		_	93 19	नर्व्यह	… २६८ २३७
निमेष	···· २४ ३ ३	: 0 30	••• ૨ં૬ ૨		हिर	296 96
निम्न	•••• 43 3R	निर्जर .	···· 😮 ७	F	हिरिन	··· ३० 99
निम्नगा ~	···· 48 \$0	नि जितें दिय	माम १३ ८।४	४ नि	हिंद	···· ३६ २३
निं ब	•••• ७७ ६२	निश्चर .	६५ ५		लय	···· ६१ ५
निंबतरु		निर्णय .	···		वह	41 J
नियति		निर्णिक्त .	२०४ ५	1	नात	२३९ ८४
नियंतृ	१५३ ५९	^ ~	9८Ę g.	• !	वाप	•
			· · ·	1 174	717	••••१६ ३१

शब्द:	पृष्टम् १	शकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः		पृष्ठम् स्रोकः
निवीत	्र १२४`		निष्टीवन		- 1		१०० ३४
_	6 152	l l	निष्टुर	∫ ३५		नीम्र	६३ १४
•	२०९		1197	. ∫ २०७	७६	नीप	७३ ४२
	980	33	निष्ट्यू त	३०९		नीर	४८ ४
निशा	२३	8	निष्टयूति	२२१	36	ਜੀਲ	···· ३१ १ ४
निशाम्ब्या.	१७१	83	निष्ठेव	२२१	३८	्र जीवकंत्र	
निशांत	ξ٩	٠,	निष्ठेवन	२२१	३८	-पालकाठः !	ं १२३१ ४०
निशापति	96	3 &	निष्णात	994	8	नीलंगु	९७ १३
निशित	२०९	99	निष्पक	२१०	94	नीललोहि	त ८३५
निशीथ	२३	Ę	निष्पतिस्	ाता. १०५	99	नीला	९९ २६
निशीयिनी	२३	ሄ	निष्पन्न	२११	900	नीलांबर	६ २५
निश्चय	२९	ર્	निष्पाव	396	२४	नीलांबुज	न्मन्. ५५ ३७
निश्रेणी	७६	96	निष्प्रभ	२११	900	नीलिका	७८ ७०
निषंग	942	26	निष्प्रवारि	णे१२४	992	, नीछिनी	४२ ९५
निषंगिन्	948	६९	निसर्ग	४५	३८	नीली	८२ ९४
निषद्या	٠ ξ٩	ર .	निग्रष्ट	२०९	66	: नीवाक	२१८ २३
निषद्वर	٠ ٧٩	8	निस्तळ	२०६	Ę٩	नीवार	१६८ २५
निषध	٠٠٠. ξ٢	ર્	ीनस्तर्हेण	१६२	118		1969 60
	(३७	9	निक्रिश	946	68	नीवी	'' { २६३ २१२
निषाद	. { 366	२०	निस्नाव	१७३	४९	नीवृत्	46 6
निषादिन्	943	49	निस्वन	٠٠٠٠ ३६		नीशार	124 196
	_			३६		नीहार	15 16
निष्क			निहनन		•	3	२७० २४९
_	9∘€		' निहाका	५२		उ नृति	३४ ११
	त. २०१		निहिंसन			्र नुत्त	२०९ ८७
निष्कुट		9	निहीन	•		्र. 'नुन्न	२०९ ८७
निष्कुटि		124		(5)		नूतन	२०७ ७७
निष्कुह			निह्नव		२०८	नुतन	२०७ ७८
•	२१८	•	शैकाश	999			(२७१ २५१
_	∫ %∘			_		न्नम्	\
निष्टा	' { २३१	88	्नीच	१८७ १०६ े	16	नपुर	928 908
	(0.103	Laka .	ं जी कैय	2106	910	्रेड [्] ह	903 9
निष्टान	{ २४५	40 t	न। पत् जीक			र े नृत्य	३९ १ ०
	(10)	116	715	,909	. ५७	, श्रुप	47 19

शब्द:	पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् श्ले	कः । शब्दः	पृष्टम् स्रोकः
नृप	989 9	न्ययोधी ८१ ८	७ पंकिल	46 90
नृपलक्ष	न्१४७ ३२	न्यङ्२०६७	० पंकेरह	44 Ro
न्टपस भ	२८४ २७	न्यंकु ९६ १	1	६७ ४
नृ पासन	१४७ ३१	न्यस्त२०९ ८	८ पंक्ति	4 300 C8
नृशंस	२०२ ४७	न्याद१७४ ५	ξ <u>, </u>	८२३७ ७२
नृसेन	२८७ ४०	न्याय१४६ २	ग=रंग=ार	999 &८
नेत्र	988 99	न्याय्य र १४६ २	·	८३ १०२
नेत्र ••	ુ∫ ૧૨૧ ૬૨	(५४६ ३	६१ पचा	۰۰۰،२१५ ८ م
	"रे २५७ १८०	न्यास१७९ ८	· 1	१०३ १
नेत्रांबु	१२१ ९३	न्युब्ज११४ ६	`	१६३ १ १६ २३ ७
नेदिष्ट	२०६ ६८		i	
नेपथ्य	१२२ ९९	न्यून२४७ १		ર્હ ૧ T ર્ર ૬
नेमि	्रिपुद्द २७	प.	पंचशर	७ ३६
	हे १४५ ५६	पक्रण ६४ २	0	996 69
नेमी	७१ २६	पक्त र २०९ ९	9 ਪੰਜਾਬਿਨ	७५ ५९
नैकभद	२०८ ८३	_{Any} ∫ ≤ 3 0	६ । ग्यायुक्त _ पंचास्य	
नैगम	20 206	८ ४४ ३	२ गंजिका	२७८ ७
		9093	٩	(७२ ३५
नेचिकी कै	•	पक्ष ४ १२१ ९ १५८८	46	" ફે ૧૨૬ ૧૧૬
नैपाली केंग्य		र १६५ २		924 994
नैमय नैययोध	968 60	i	.	(E3 9×
नयमाघ	६९ १८	८ ५५ ३	पटल	" र्रे २६१ २०१
नैर्ऋत	} १३ ६३ } १६ २	पक्षति 🕇 १०१ ३	६ पटलप्रांत	
_		८ २३७ ७	२ पटवासव	र१२ ९ १३ ९
	१४२ ७	पक्षद्वार ६३ १	ੇ ਹੁਣ	∮ ३८ ६
	ह ३५४ ७०	पक्षमाग१४९ ४		{ 1 kg 1 oc
नो 	२७४ ११	पक्षमूल१०१ ३	Ę	(९२ १५५
નો 	٠٠٠ کې ۵۰۰۰	पक्षांत २३ ७	47	1 966 99
	५० १३	,	· 2	1 400 51
नौतार्य	88 30	पक्षिणी २३ ५		(२३१ ४०
न्यक्ष	२६६ २२५		२१ पदुपर्णी	
न्यप्रोघ.	्र ७२ ३२ [™] }२४२ ९६	पंक र ६ २	३ पटोल एकेकिक	ተየየ ۶ዖ
	6 202 74	1 (, ,)	े १ रहा छन	T ८६ ११८

राष्ट्रां तुत्रमे पिका.

शब्दः	पृष्टम्	स्रोक:	शन्दः	पृष्ठम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्ठम् स्रोकः
यष्ट	२८१	19	पतिवरा	† 08	6	पदाति	१५४ ६६
पट्टिका	७३	¥1	पतिवली	१०५	12	पदिक	948 EA
पष्टिन्	७३	83	पतित्रता	908	Ę	पद	१५४ ६७
पट्टिश	२८२	२१	पत्तन	ξο	9 .	पद्धति	49 94
	1960	26	•	(348	ęε	पद्म	∮ 94 64
पण	381	३९	पति		60		ि ५५ ३९
	"			(२३७	•	्पद्मक	1¥9 ₹9
क्णव	39	6	पत्तिसंहति		•		णी •••९० इन्ह
पणव पणायित	•		पत्नी	₩ و و	4	पद्मनाभ	•
यणायत यणित	२१२	908		् ६९		पद्मपत्र	5. 384
गाणस या णस ठ्य		८२	ंपत्र	جره ک. ۱۹۰۶		पद्मराग	१८ १ ९२ (७ २८
पंड	990	39		् । १५२ २५७	-	पद्मा	< 49 68
५७ पंडित	••••१३०	47	पत्रपरशु	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •			60 38E
_	ग्गान्य देश्यान्यस्था	•	् पत्रपाइया - पत्रपाइया	• •		' पद्माकर	ं ५३ २८
ग ाक रानाः गब्धः	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	•	पत्रस्थ	,900		पद्मा ट	60 380
	गका∙…६१	3	पत्रलेखाः	9२६		पद्मालय	ा … ७ २८
वण्या	9 9	٠.		1930	•	पद्मिन्	१४८ ३५
	व १७८	- •	्रपञ्जीग	" { 9 68		पश्चिनी	••• ५५ ३९
पतन	900		पत्रांगुलि	9२६	993	पद्य	२८५ ३९
(3)**	(100	• •	-	(90	94	पद्या	46 34
पतंग	∵ { २२६		। सर्वक्र≃	ه و ا		पनस	૭૭ ફરૂ
_	T 59	- 1	पश्चिन्		_	पनायिर	T २१२ ३०६
पतत्	900			८२४१	८ ३०६	पनित	२१२ १०९
पतत्र	909		पत्रोर्ण	_ ∫ ⊍6	• • •	पन्न	•••२१२ १०४
पत्रत्रि	900		I	﴿ 35	४ ११३	पद्धग	४६ ८
पत्रित्			पथिक	387	8 90	पश्चगाइ	• •
	(12)	१ १३९	पथिन्	40	१ १९	10000	् ४८ ३ ≺ १७३ ५१
पतद्यह	. { . }.	_ •	पध्या	9	६५९	पयस् •	४ १७३ ५ १ ८२६७ २३४
पतयाह	•	_	पद्	99	६ ७१	पयस्य	963 49
पतांका	•	٠,	पद	३४	१ १३	पयोधर	• •
	न् १ ५'		पदग	94	& é é		[89 C
	130		पदवी	Y	48 2	पर .	182 11
षति .	··· { is		पदाजि	به و	4 6 6		(२५%, १९७
	-						

राष्ट्रायुक्तमणिकाः

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	सन्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकः
पर्श्यत२०५ ६४	परिकर्मन्१२६ १२१	परिवर्ह२६९ २४०
पंरजात१८८ १८	परिक्रम२१६ १६	परिभव ४१ २२
परतंत्र१९७ १६	परिक्रिया२१७ २०	परिभाषण३४ १४
परिपंदाद१९७ २०	पिक्षिप्त२०९ ८८	परिभूत२१२ १०६
षरमृत् ९८ २०	परिखा ५३ २९	पीरमल. ३० १० २१६ १३
परसृत ९८ १९	परिष्रह२६८ २३८	ीरग्र १२१६ १३
परमम्२७४ १२	परिष्य { १५८ ९१	परिरंभ२१९ ३०
परमाञ्च १३४ २४	ार्य रे २२८ २७	परिवर्जन१६२ ११४
परमेष्टिन् ५ १६	परिघातिन१५८ ९१	'परिवादिनी ३८ ३
परंपराक १३५ २६	परिचय२१८ २३	्परिवापित२०८ ८५
परवत्१९७ १६	परिचर१५३ ६२	परिवित्ति१४१ ५६
परञ्च१५८ ९२	परिचर्या१३६ ३५	परिवृद्ध१९६ ११
परमंघ१५८ ९२	्परिचाय्य१३३ २०	. परिवेत्तृ१४१ ५६
परश्वस्२७६ २२	्परिचारक१८८ १७	परिवेष २१ ३२
1111111 ∫ 1€0 103		परिज्याधः { ७१३०
पराक्रमः {२५० १३८	परिणय१४१ ५७	1160414. J RE E.
	परिजाम२१६ १५	परिव्राज्१३८ ४२
पराग र २२ ६ २ १	परिणाय १९३ ४६	परिषद्१३२ १५
पराङ्मुख२०० ३३	परिणाह १२५ ११४	परिष्कार १२२ १०१
पराचित१८८ १८	परितस्२७४ १३	परिष्कुत१२२ १००
पराचीन२०० ३३	परित्राण२१४ ५	परिष्वंग२१९ ३०
पराजय१६२ १११	परिदान१७९ ८०	परिसर ५९ १४
पराजित१६२ ११२	परिदेवन ३५ १६	परिसर्प २१७ २०
पराधीन१९७ १६	परिधान १२५ ११७	परिसर्या२१७ २१
पराक्र१९७ २०	-22 (29 32	परिस्कंद१८८ ३६
पराभूत१६२ ११२	परिधि { २१ ३२ ९७	परिस्तोम १४९ ४२
परायण२१३ २	परिधिस्थ १५३ ६२	परिस्यंद१२९ १३७
क्सारि२७५ २०	परिपण१७९ ८०	परिखुत्१९१ ४१
परार्ध्य२०४ ५८	परिपंथिन १४३ ११	परिस्ता१९२ ४०
परासन१६२ ११३	परिपाटी १३७ ३७	परीक्षक१९५ ७
परासु१६३ ११७	परिपूर्णता १२९ १३७	परीभाव ४१ २२
यरास्कंदिन्. १८९ २५	परिपेक्टव ८८ १३१	परीवर्त१७९ ८०
परिकार२५५ १६५	परिष्ठव२०७ ७५	परीयाद ३४ १३
•	•	

शब्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोव	तः शब्दः
परीवाप२४८ १२९	पर्युदंचन१६४ ३	पञ्चप्रेरण२२१ ३९
परीवार२५५ १६९	पर्येषणा १३६ ३२	पशुरज्जु१७७ ७३
परीवाह ४९ १०	पर्वत ••• ६४ ९	पश्चात्२७० २४४
परीष्टि १३६ ३२	पर्वन् रे १३ ११	!
परीसार२१७ २१	6 4 94 3	,
परीहास ४३ ३२	पर्वसंधि २३ ७	पश्चिमा १५ १
परुत्२७५ २०	ेपर्जुका११६६९	. 1
परुष ३५ १९	ंपल ११८० ८ १ पल	
पहस् ९३ १६२	1	113 160 26
परेत१६३ ११७	पलगंड१८६ ६ [!] प लं कचा ८२ ९४	1.30
परेतराज् १२ ६१	्षळक्षा १५ ५३ ्षळ्ळ ११५ ६३	पाक 🧷 🛴
परेबावि२७५ २१		४७ पाकल ८७ १२६
षरेष्ट्रका१७७ ७०	प्रकाल१६८ २	•
परैधित्१८८ १८ फोर्च्या ९९ २६	- (ES 3'	∧
-	पलाञा ५३ २	•
पर्कटी ७२ ३२ पर्जनी ८३ १०२		(a a a a a
पर्जन्य२५१ १४६	पलाशिन् ६७ ५	पाक्स 🗸
£6 38	पिलकी१०५ १	
पर्ण ७ ३ २९	पलित११० ४	९ पांचजन्य ७ २९
(२८२ २२	पल्यंका१२९ १	३८ पांचालिका १९० २९
पर्णज्ञाला ६१ ६	पह्नच ६९ १	४ पाट्२७३ ७
पर्णास ८० ७९	पल्वल ५३ २	८ पाटचर१८९ २५
पर्यंक१२९ १३८	प य२१८ २	४ पाटल { ३१ १५
पर्यटन१३६३६	' 633 / ' '	6 466 33
पर्यंतभ् ५९ १४	(416.4	४ पाटला ि ७० २०
पर्यय र १३७ ३७		(163 38
् १ ५५० ३३	•	र पाटाल १ ७५ ५४
पर्यवस्था२१७ २१	1 111	
पर्याप्त१७५ ५७ पर्याप्ति२१४ ५		१६६ पाठ रेशर रह
- (0210 210	; ''' ,	पाठा ८० ८४
	•	६ पाठिंच ८० ८०
पर्यायशयन २२० ३२		१२ । पाद्यनि ५१ १८

शब्दः	पृष्ठम् स्रोक	: शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	स्रोकः
पाणि	.996 69	पाद्	990	३१	-	न्१३८	
पाणिगृहीती.	908 4	पाद्कृत् .	9 28	9		क्षेन्. १३८	
पाणिघ •••	.१८७ १३	पाच	9₹₹	३३	पारिजात	r. { 99 60 }	43
पाणिपीडन.	989 40	पानगोष्ठिका	. १९२	४३	_	-	-
षाणिवाद	१८७ १३	पानपात्र	१९२	४३	_	T922	•
पांडर	. ३० १२	पानभाजनः	960	३२	_	क२१	-
•	३१ १३	पानीय		8		٥٠٤	
षांडुकंबलिन्.	१५२ ५४	पानीयज्ञालि	•		_	وي داده	•
पांडुर …	. ३१ १३	पौथ				ñ ዕኝ	-
पातक	• •	पाप	∫ २६	२३		q 60	•
	४५ १	1	१२०२	80		कि६५	-
ι	२६१ २०२	1		'	_	८ १२३	-
पातुकः		पाप्मन्			-	•	
	४९ ८ १३४ २४	•	११२		पा र ा पा रु ध्य	२७९ ३४	
पात्र	125 45 900 33	i	338	-	ļ.	42	
<u></u>	२५७ १७९	1	929		_	9	
पात्री	२८७ ४२	١	99₹	•	_	····	-
पात्रीव	२८६ ३५	पायस	930	,			
पाथस्	86 8	1		२४	पार्श्व	{ 996 { 2 29	⊌ ₹
۲	६६ ७	. •	996	, ,		१ ४९	
1 .	998 49	i	9८0		_	996	
į.	969 68	1	४९			998	-
_	२४० ८९	1	१८२			983	
पादकंटक		पारंपयोपदेश	•	1	पालझ	-	
षादम्रहण		पारशव		1		····	
पादम	•	पारश्वधिक		' 1	पाळाज्ञ	३१	
पादबंधन		पारसीक			•		_
षादस्फोट		पारकेणेय			पाछि	1 349	१५ १९७
पादाम ••••	•	पारायण	•	- 1	ता किं टी	58	90/
पादांगुर		पारावत ••		38	पाछदा पाछवा	३७८	
पादात	•	पारावतां ग्रि		4 1 1	पाछव। पावक	93	
पादातिक		पारावार.	¥6.	3		, १२२	
भाटुका	35• {•	(१८६	3.T.,}	पाश	110177	,•

शब्दः पृष्ठ	म् श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम् स्रोव	तः शब्दः	पृष्टम् स्रोकः
पाशक१९	३ ४५	पित्रम	{ १६९ ३१ `	विषी कि	हा. २७८ ८
पाशिन् ··· १	३ ६४		-	1 ,	ە ۋە سى
पाञ्चपत ८	:• ८१	ļ	186 ₹1	⁹ पिप्पर्छी	८२ ९७
पा शुपाल्य · · · १ ६	४ २	पिंड	122 3	पिष्पली	मूक. १८४ ११०
पाश्चात्य२०	6 69		124 14	ष्यु	992 XS
पाश्या२२	२ ४३	(Úzera:	926 95	i rues	११४ ६०
पाषाण ६	4 8		942 \$6		३१ १६
पाषाणदारण. १९	• ३४		७५ ५२		¥ 99
पिक … ९	८१९				११५ ६३
पिंग ३	3 38	पिण्याक.	{ 228 8 { 264 23		११६ १२४
पिंगल ∫ २	१३१	पितरौ	१०९ ३७	पिशुन	. ४ २०२ ४७
पिंगल र	9 9 €	ł	4 98	. 1	रिष्ठ १२७
ापगला १	ĘΥ	पितामह.	1905 33	1483.11	८८ १३३
पिचंड ···· { ११	9 99	पिष्ट	906 36	। पष्टक	,9 <i>७</i> ₹ ४८
१९६	1 16	पितृहान	9३५ ३१	· I _	१७० ३२
पिचंडिल११]	(। १४ होत	•
षिचु१८		पितृपति.	रे १६२	पाठ	•
पिचुमंद ७	·	षित्वपितः	९०९ ३३	1 _	9 89 909
र्षिचुल ७	`	_	३२ ३	ं पाडा	
पिचट१८			9३२ १४	पीत	₹9 9 8
पिच्छ १० २८	० ३९	_ `	9 ६३ 99	्र पातदार	७५ ५३
(२८	४ ३०	पिष्टव्य .	१०८ ३१	पीतह्	{ ७६ ६० { ८३ १०१
षिच्छा { २७	8 80 • •	पि तसन्निभ	१९६ १३		(64 46
१२७ १भिच्छिल१७))))	पित्त .	११४ ६२	पीतन	
_	- '		(१३४ २४	,	र १२६ १२४
IU (34666) . Z	४ ४ ६ ७ ६२	ापत्र्य	1 380 43	पीतसार	⊼ ७४ ४ ३
पिंज१६	•	_	१०० ३४		969 89
		_	9८ 9३		٠٠. ۽ ١٩
पिंजर { १८	4 39	_	948 64	i 🚗	२०४ ६१
पिंजल१६	0 99				992 49
पिट१६	}	ापनाक) < 30) 224 98	पीनोध्नी	900 09
(0 0	•	पिनाकिन्	८ ३३	1	1 99 49
		•	968 44	पयुष	{ 308 48

शब्दः पृष्ठम्	श्लोक:	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोक:	शब्द:	पृष्ठम्	ह्योक:
चील े ७१	२८	पुत्री	9 0 \$	३७	पुरुषोत्तम	ξ	29
षीलु { २६०	993	370	२८२	२०	पुरुहू	२०५	६३
<u>~ ~ ~ </u>	68	पुनःपुनः	२७२	9	पुरुदूत	90	88.
, ,		पनर	्र २७१	२५४	पुरोग	944	७२
पविन्२०४			. { २७४		पुरोगम 🕆	944	७२
पीवर { २०४ २१३	\$ 3	पुनर्नवा	99			ç944	
पीवरस्तनी. १७७	117	पुनर्भव \$	998	८३		२८२	
पुंश्वली१०४		पुनर्भ्	900	२३	_	9४२	
-		पुत्राग	69	२५	पुरोभागिन	₹₹ ०२	४६.
- '		पुमस्	१०३ (७२	9 ३४	पुरोहित	१४२	4
पुकस१८८ पुंख२८१		पुर	{ २५८		·	२२३	4
_		परःसर	944		पुलिन		
पुंगव२०४ पुच्छ१५०		पुरतस्	२७३्	૭	पुलिद	966	२०
पुंज१०२		पुरद्वार	६३	9 Ę	गुलोमजा		
पुटभेद ४९		पूरं द र	90	४४	पुषित	२१०	
पुटभेदन ६०		पुरंत्री	908	Ę	•	(94	9
पुटी२८७		पुरस्	∫ २७३	ø	:	86	8
			'` र् २५८		पुष्कर	न्दे ५५ ९०	83
्रंडराके. ४ ५५	89	पुरस्कृत	२३९			, .	• • •
ī.	99	पुरस्तात्		२४७		(२५८	
पुढरीकाक्ष ६	98	पुरा	२७१		-	۰ ९८	
पुंड ९३		पुराण	∵ { ३२ ∵	પ હહ	· पुष्करिणी	···· ५३	
पुंड्क ७८	७२	पराणपरु	۳۰۰۰۰ ६		पुष्कल	508	
(> c	3~	पुरातन	३०७	७७	पुष्ट	5 g o	९७.
पुण्य { २५४	3 É 0	पुरा वृ त्त	<u>३</u> २	8		(६९	96.
पुण्यक१३७	३८	Ţŧĵ	ξο	9	पुष्प …	. 🕇 १०६	२१
पुण्यजन १३	६३	पुरीतत्	٠٠٠،٩٩٤	ξξ	<u> </u>	८२८३	
पुष्यजनेश्वर १४	७३	पुरीष	99६	-	पष्पक	∮ १५	७४
युष्यम्मि ५८	4	पुरु	२०५	-		··{ १८३	
पुण्यवत्१९४	३	•	(२७	33	पुष्पकेतु		
पुत्तिका ९९			وه ا	२५	पृष्पदंत		R
पुत्र१०७		पुरुष …	१०३	9	पुष्पधन्वन		२७.
पुँत्रिका१९०	२९	ł	८२६५	215	पुष्पफल	७०	₹ %

शब्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् स्रोकः	शन्दः पृष्टम् स्रोकः
युष्परस ६९ १७	पूर्णकुंभ१४७ ३२	पृथ्वीका ८७ १२५
पुन्पलिङ्९०० २९	पूर्णिमा २३ ७	पृदाकु ४६ ६
पुष्पवती१०६ २०	पूर्व१३५ २८	पृक्षि१११ ४८
पुष्पवंती २४ १०	200 20	पृक्षिपणी ८२ ९२
पुष्पसमय २५ १८		पृषत् ४९ ६
युष्य	पूर्वज११० ४३	पृषत ४९ ६
(, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	पूर्वदेव ५ १२	6 24 10
पुष्परथ१५१ ५३	पूर्वपर्वत ६५ २	प्रवत्क१५७ ८६
षस्त१८९ २८	्रपूर्वी १५ १	पृषदम् १३ ५५
युग	ं पूर्वेद्युस२७५ २१	ेपृषदाज्य१३४ २४
6,14,1	पूषन् २१ २९	পুষ্টগুণু
पूजन२५३ १५६	्षृक्ति२१५ ९	पृष्ठवंशाघर११७ ७६
पूजा१३६ ३५	पुच्छा ३४ १०	ेपृष्ठास्य११६ ६९
पूजित२११ ९८ (१९५ ५	ृष्टतना र १५६ ७८	पृष्ठ्य } १५० ४६
पुज्य र्वे ३५०	्र ^{ष्ट्राचा} १ १५६ ८१ - पृथक् २७२ ३	6441 04
(१३८४५	वृथक्षपणी · · · ८२ ९२	्वे चक
पूत १६८२३	(2/39	पेटक१९०३०
े ५०३ ५५	पृथगात्मता { १३७ ३८	पेटा१९०३०
पूतना ७६ ५९	े त्राच्या ∫ १८७ १६	पटी२८७ ४२
पृतिकः ७५ ४८	पृथग्जनः { २४३ १०५	पेलच२०५ ६६
पुतिकरज ७५ ४८	पृथगिवध२१० ९३	(966 98
पूर्तिकाष्ट-	पृथिवी ५७३	वेशल २०५ ६६
पूर्वकाष्ट. 👌 ७६ ६०	१७१ ३७	्रहर २०५
प्तिगंधि ३० १२	पृथु र १७१ ४० २०४ ६०	पेज़ी१०१ ३७
प्तिफली ८२ ९६	(२१३ ११२	ंपैठर१७२ ४५
पूष१७३ ४८	(909 30	पैतृष्वस्य१०७ २५
पूर् ६० १	ृष्युक र् १७२ ४७	पैतृष्वसीय१०७ २५
पूर २८२ २०	(२२३ ३	ंपैत्र २६ २१
पूरणी ७४ ४६	षृशुरोमन् ५१ १७	े पोटगल. १३ १६२ १३ १६३
पूरित२११ ९८	पृथुल२०४ ६०	(35 355
पूरुष१०३१	(५७ ३	भेटा१०५ ३५
पूर्ण } ३०५ ६५	पृथ्यी १७१ ३७	पोत १०१ ३८ २३५ ६०
1 J 533 88	(9 6 9 8 6	(14) 4.

जब्दः पृष्ठम् श्लोकः	जञ्दः पृष्टम् श्लोक	: ज्ञान्दः पृष्ठम स्रोकः
पासवणिज् ५० १२	प्रकोष्ठ११८ ८०	प्रज्ञान२४६ १२२
पोतवाह ५० १२	प्रक्रम२१८ २६	प्रज्ञ१११ ४७
पाताधान ५३ १९	प्रक्रिया १४७ ३१	प्रहीन१०१ ३७
धोञ्च२५७ १८०	प्रक्रण ३७ २४	प्रणय रि१८ २५
पोत्रिन् ९५ २	प्रकाण ३७ २४	न्त्रत रिश्व वर्षव
पोष्ट२३५ ५९	प्रस्वेडन१५८ ८७	प्रणव ३२ ४
पौंडर्म ८७ १२७	प्रगंड११८ ८०	प्रणाइ ३४ ११
पौक्री१०८ २९	प्रगतजानुक. १११ ४७	प्रणाली ५४ ३५
गौर ९४ १६६	प्रगरम१९८ २५	प्रणिषिः र १४३ १३
पौरस्त्य२०७ ८०	प्रगाढ२३२ ४५	(484 100
1999 60	प्रगुण२०६ ७२	प्रणिहित२०८ ८६
यौरुष { २६५ २२३	प्रमे२७५ १९	प्रणीत र १३३ २०
पौरोमव१६९ २७	प्रमह { १६३ ११	
पौर्णमास१३९ ४८	प्रमाह२६८ २३ प्रमाह२६८ २३	
पोर्णमासी २३ ७	प्रमीव२८६ ३५	AAA
मोलस्त्य १४ ७२	प्रदण ६३ १२	प्रतन२०७ ७७
गीलि१७२ ४७	प्रधाण ६३ १२	पतल ∫ ११९ ८४
पीष २५ १५	्राचक्र१५९ ९६	्रप्रतळ १९१९ ८५
प्याट्२७३ ७	प्रचलायित१९९ ३२	प्रताप१४५ २०
प्रकंपन १३ ६६	प्रचुर२•५ ६३	प्रतापस ८० ८१
प्रकर्प२१३ ११२	•	प्राति२७० २४६
	प्रचादनी ८२ ९४	प्रतिकर्मन्१२२ ९९
प्रकांड	प्रच्छद्दर१२५ ११	्रांप्रतिकुल२०८ ८४
प्रकामम्१७५ ५७	प्रच्छन ६३ १४	` managaran 999 35
मकार२५४ १६२	पच्छरिका११३ ५५	
(29 20	्राजन२१८ २५	प्रतिक्षिप्त२०१ ४२
प्रकाश { २६४ २१८	प्रजाविन्१५५ ७३	प्रतिख्याति२१९ २८
प्रकीणक१४७ ३१	प्रजा २२९ ३२	प्रतियह१५६ ७९
मकीर्य ७५ ४८	प्रजाता१०६ १६	्प्रतिमाह ••••१२९ १३९
(२७ २९	प्रजापति ५ १७	प्रतिघा ४२ २६
i	प्रजावती१०८ ३०	प्रतिघातन१६२ ११४
प्रकाति १४४ १८	∫ ₹6 1	मतिच्छाया १९१ ३६
८२३७ ७३	प्रज्ञा र्र १०५ १२	मतिजागर२१९ २८

गामहरूकी क

शन्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्द:	पृष्टम् श्लेकः	शन्दः	पृष्ठम् श्लोकः
प्रतिज्ञात२१२ १०८	प्रतिहारक · · ·	16 67	मत्यादिष्ट	Rog 80
मतिङ्गान · · · २९ ५	प्रतिहास ···	७९ ७६	प्रत्यादेश	२१९ ३१
मतिदान१७९ ८१		336 A	प्रत्यालीद	*** 078
प्रतिध्वान ३७ २५		२२३ ७	प्रत्यासार	१५६ ७६
मितिनिधि१९१ ३६	प्रतीकार · · ·	- 1	प्रत्याहार	२१६ १६
प्रतिपत्. { २२ १	प्रतीकाश ···	१९१ ३८	प्रत्युतकम	२१८ २६
		364 4	प्रत्युषस्	२२ २
प्रतिपन्न२१२ १०८	प्रतीची \cdots		प्रत्यूष	२२ २
मतिपादन१३५ २९	प्रतीत {	984 8	प्रत्युह	२१७ १९
मातेबद्ध२०० ४९		२३९ ८२	प्रथम ••	्रि०७ ८०
प्रतिबंध२१९ २७	1	243 388		ंरिक्ष १४४ [।]
प्रतिनिंग१९१ ३६	प्रतीपदर्शिनी.		प्रया	२१५ ९
प्रतिभय ४१ २०	1	. 89 0	प्रथित	984 8
प्रतिभान्वितः १९८ २५		784 114 63 46	प्रदर	२५५ १६४
प्रतिम्१९२ ४४		६३ १६ १४२ ६	प्रदीप	१२९ १३८
प्रतिमा१९१ ३६		२५६ १७०	प्रदीपन	80 30
धांत्रणात. 🔰 १४९ ३९	प्रतीहारी	•	् प्रदेशन ————	१४६ २७
र्मातमानः र १९९ २६	1		प्रदेशिनी '	
प्रतिमुक्त १५४ ६५	1	.200	प्रदोष	२३ ६
प्रतियत्न२४४ ३०७)	.२७६ २३	प्रशुम्न प्रदाव	७ २६
प्रतियातनाः १९१ ३६	प्रत्यकृपणी	•	भद्राप प्र धन	, 960 903
प्रतिरोधिन् १८९ २५	1 .		प्रयम	१६० १७५
प्रतिवाक्य ३४ १०	प्रत्यक्श्रेणी {	९० १४४		188 4
प्रतिविषा ८३ ९ ९	1	२०७ ७९	्रष्यात •	708 40
प्रतिशासन२२० ३४	प्रत्यव्य ••	.२०७ ७७	Ì	्रि४६ १२२
प्रतिक्याय ११२ ५१	प्रत्यंत	५८ ७	্ব বি	१५२ ५६
प्रतिश्रय२५२ १५३	प्रत्यंतपर्वत ••	६६ ७	प्रपंच	२२८ २८
प्रतिश्रव २९ ५	प्रत्यय ••	.२५१ १४७	्र प्रपद	११६ ७१
प्रतिश्वद ··· ३७ २५	प्रत्यथित ••	१४६ १३	प्रमा	६२ ७
प्रतिष्टंम२१९ २७	प्रत्यभिन् ••	∙.१४३ ११	प्रपात	
प्रतिसर२५६ १७४	प्रत्यवसित ••	२१२ ११०	प्रिपताम	हि१०९ ३३
प्रतिसीरा ••••३२६ ३२०	प्रत्यास्यातः	२०१ ४०	प्रमुनाड	
मतिहत२०१ ४१	प्रयाख्यान	.२१९ ३१	ं प्रपेंडरी	क ८७ १२७

इाब्दः पृष्ठम् स्रोकः	शन्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम् स्रोकः
प्रपुत्त ६७ ७	प्रयत१३८ ४५	प्रव्यक्त२०८ ८१
प्रबंधकल्पनाः ३३ ६	प्रयस्त१७२ ४५	प्रश्न ३४ १०
प्रकोधन १२६ १२२	प्रयाम२१८ २३	प्रश्रय२१८ २५
प्रभंजन १३ ६६	त्रयोगार्थ२१८ २६	प्रश्रित१९८ २५
प्रभव२६३ २१०	प्रलंबम ६२४	মন্ত গ্ৰহ
प्रभा २१ ३४	२६ २२	प्रष्ठवाह१७६ ६३
प्रमाकर २० २८	प्रलय ४४ ३३	मछौही१७७ ७०
प्रमात २२ ३	११६ इ३१)	प्रसन्न ५० १४
\ 184 18	प्रलाप ३४ ३५	मसम्रता १८ १६
प्रभाव { १४५ २०	प्रवण२३४ ५६	प्रसन्त्रा१९२ ४०
प्रभिन्न१४८ ३६	प्रवयस्११० ४२	प्रसम१६१ १०८
प्रमु१९६११	प्रवर्ह२०४ ५७	मसर२१८ २३
प्रमृत२०५ ६३	प्रवह२१७ १८	मसरण१५९ ९६
प्रश्नष्टक१२८ १३५	प्रवहण१५१ ५२	प्रसव {२१५ १०
प्रमथ ८३७	प्रवाहिका ३३ ६	१ रहर र०८
प्रमथन१६२ ११५	प्रवारण२१४ ३	प्रसवबंधन ६९ १५
प्रमथाधिप ८ ३३	प्रवा ल { ३८ ७ प्रवा ल { १८१ ९ ३	प्रसन्य२०८ ८४
प्रमद २६ २४	25 35	प्रसह्य२७३ १०
प्रमदवन ६७ ३	प्रवाह२१७ १८	प्रसाद र्रे १८ १६
प्रमदा१०३ ३	प्रवासन१६२ ११३	प्रसाद { २४१ ९१
प्रमनस्१९५ ७	प्रवाहिका११३ ५५	प्रसाधन१२२ ९९
प्रमा२१५ १०	प्रविदारण१६० १०३	प्रसाधनी१२९ १३९
प्रमाण२३४ ५४	प्रविक्षेष२१७ २०	प्रसाधित१२२ १००
प्रमाद ४३ ३०	प्रवीण१९५ ४	प्रसारिणी ९१ १५२
प्रमापण१६२ ११२	(प्रसारित्१९९ ३१
प्रमिति२१५ १०	प्रवृत्ति र्रे २१७ १८	प्रसित१९५ ९
mid J ' ' ' '	(२०७ ७६	प्रसिती२१६ १४
444 J 363 330	प्रवृद्ध ∙	प्रसिद्ध२४३ १०४
प्रमोला रिक्ष ३७	(२३९ ८५	प्रस् र १०८ २९
(478 184	प्रवेक२०४ ५७	. (२६७ २३०
प्रमुख२०४ ५७	प्रवेणी ११२२ ९८	प्रस्ता१०६ १६
प्रमुदित२११ १०३	(, , , ,	प्रस्ति२१५ १०
प्रमोद २६ २४	प्रवेष्ट११८ ८०	प्रसृतिका ••• १०६ १६

शब्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्दः पृष्टम् स्रीकः	झब्दः	पृष्ठम् स्रोकः
प्रसृतिज ४७ ३	प्राप्रहर२०४ ५८	शास रूप	२४८ १३१
प्रसून { ६९ १७	प्राम्ब२०४ ५८	प्राप्ति	२३६ ६९
ं (५४६ १५३	ं प्राचार११५ १०	प्राप्य	३०९ ९२
प्रस्जनियतारौ १०९ ३७	प्राधुणक१३६ ३४	प्राभृत	१४६ २७
प्रसृत२०९ ८८	पाच्णिक १३६ ३४	। प्राय	∫ १४० ५३
प्रसृता११६ ७२	प्र ाचिका२ ७८ ८	114	``} २५२ १५३
प्रसृति११९ ८५	प्राची १५ १	प्राय स्	२७५ १७
प्रसेव१६९ २६	प्राचीन ६१ ३	प्रार्थित	२१० ९७
प्रसेवक ३८ ७	प्राचीना ८१ ८५	' प्रा लंब	१२९ १३६
प्रस्तर { ६५ ४	प्राचीनावीतः १३९ ५०		ा…१२३ १०४
36 € 548 3€3	प्राच्य ५८ ७	- प्रा लेय	98 96
प्रस्ताव२१८ २४	प्राजन१६६ १२	प्रावरण	१२५ ११८
प्रस्थ १६ ५	्रप्राजितः१५३ ५९	प्रावार	१२५ ११७
180 66	प्राज्ञ१३० ५	प्रावृत	१२४ ११३
प्रस्थपुष्प ८० ७९	प्राज्ञा १०५ १२	प्रावृष्	२५ १९
प्रस्थमान१८० ८५	प्राज्ञी१०५ १२	्रपावृषायप	गी · · · ८९ ८६
प्रस्थान१५९ ९५	प्राज्य२०५ ६३	मा स	१५९ ९३
प्रस्फोटन१६९ २६	प्राद्भिवाक१४२ ५	प्रासंग	942 40
प्रस्रवण ६५ ५	१३ ६७	प्रासंग्य	१७६ ६४
प्रसाव११५ ६७	प्राण १६० १०३		···· ६२ ९
प्रहर २३ ६	। वहर ववर		948 00
प्रहरण१५७ ८२	(१८३ १०४	प्रह	२२ ३
प्रहस्त ,११९ ८४	प्राणिन् २८ ३०	प्रिय 🕡	
प्रहि ५३ २६	प्रातर्२७५ १९	4.4.4	े रि०३ ५३
प्रहेलिका ३३ ६	प्राथमकल्पिक १३२ ११		७३ ४२
प्रत्हस्र२११ १०३	्र _{पाहुस्} {२७२ २५७ २७४ १२	प्रियक •	} ø£ 4€ }
प्रांज्य२०६ ७०	पादेश११९ ८३		4 6 8
(२७४ १६	मादेशन१३५ ३०		108 44
प्राक् १ २७६ २३	प्राध्वम्२७२ ४	्रियंगु 👵	```{ ૧ ૬ ૭ ૨૦
प्राकार ६१३	प्रांतर ६० १७	्रे प्रियता	४२ २७
प्राकृत१८७ १६	1 (206 68	प्रियंवद	२०० ३६
प्राग्दक्षिण ५८ ७	ं प्राप्त र् २१२ १०१	िपियाल	७२ ३५
प्राग्वंश१३३ १६	प्राप्तपंचत्व१६३ ११५	ः प्रीणन	२१४ ४

शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	इन्दः	प्रष्टम्	क्षोकः	शब्दः	पृष्टम्	स्रोकः
मीत	२११	१०३	प्रवंगम	240	936	फांट	२१०	68
श्रीति	२६	२४	प्राक्ष	٠٠ ξ٩	16	115128	128	999
মুম্ব	२११	99	श्लीहन	994	ęę	फाल	186	93
प्रेक्षा •	्र २८	1	र्प्राहशत्रु	٠ ٧٧	४९	फाल्गुन		94
-	े १२६६	२२५	प्रृत	940	86	फाल्गुनिक-		34
प्रें द्धा २००	949	५३	প্রিষ্ট	२११	99	फाल्गुनी -	२७८	Ę
प्रें खित	२०९	60	स्रोष	२१५	9	TO	ફ્હ	C
प्रेत	1963	996	प्सात	२१२	19.	फेन	१८३	304
प्रता	∵ { २३५	•		फ.			१२८२	98
नता प्रत्य	४७ २७३	2	फणा	 ४६	9	फेनिल	७ २	•
न्या प्रमन्	४२	८ २७	फाणिष्मक	···· ८०	७९	' 🗨	} ७२ ९५	३६ ५
प्र वण	२२०	38	कणिन्	٠٠٠٠ ४६	હ	फरव फेरु	94 94	4
प्रेष्ट	२१३	999		1845		_	১৫ ১৫	•
प्रेष	२६५	२२०	फल	356	-		」 可,	14
प्रैष्य	966	9 19		" } २६१ ८२८३	२३	1	. ९८	२ २
प्रोक्षण	934	- :	फलक	946	90	बकुळ ••	७७	ξ¥
प्रोक्षित	934	· ')	फलकपा	•	9	बहिश	Կፃ	9 €
प्रोथ	949	•		,968	111	बत	२७०	९४५
प्रोद्यत	२३९	24	फलपाक	ता. ६७	Ę	बदर	७ ३	•
प्रोष्ट्रपदा	99	२२	फलपुर	۶۵	96	बदरा	24	,
प्रोष्ट्री	49	96	फरुवत्	६७	b	- 1	6 8 9	349
श्रीष्ट्रपद	२५	90	फलाध्यक्ष	1 by	84		७२	•
श्रीह	२०७	७६	फालेन्	ξυ	9	बाह्य स्वयं	२०१	४२
प्रक्ष	∫ ७२	32	फलिन	۰ ξ٥	9		१२१०	64
रूका • •) @&	४३	फलिनी.	∫ ७६	44	• • •	999	
	م م	99		1 68	938			96
	्र ५२	२४	फर्की	وξ	ووبو		१६३	
प्र व	7 26	932	फलेमहि	ξυ	Ę			90
	300	३४ १९	फलेरहा	٠ ٥٢	48	924 ****	१४६ १२१६	•
	94		recor	र ६	94	बंधनालय		
ध्रवग	·	•	फल्गु	208	६9		••३४९	
प्रवंग	94	- 1	फणित	982	•	-	905	
40 . 4		•	*** ***		- 🤻)	-3 ··	4 - 3	

क्रम्बंदुमान्यिकाः

शब्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः १	एम् हीकः	शब्द:	पृष्ठम् श्लोकः
बंधुजीवक ७९ ७३	()	३२ १४	बहुविध .	२१० ९३
बंधुता१०९ ३५		४६ २७	बहुनेतस .	46 9
बंधुर२०६ ६९		६० १९५	बहुसुता .	८३ १००
बंधुल१०७ २६	बलिध्वंसिन्	•	बहुसूति .	960 00
बंधूक ७९ ७३	_	אצ נננ	बाकुची	८२ ९६
बंध्कपुष्प ७४ ४४	_ •	९८ २०	बाइं	\$ 98 60
बम्रुः२५६ १७०	_	111 84		(१३२ ४४
वर्बर ८१ ९०	बलिभुज् बलिस		बाण	
वर्बरा ८९ १३९	बल्सिद्मन्	992 88 84 9	बाणा	66 AR
वर्ह र १०० ३१	• • •	964 48		128 111
(440 440	•	15, 16, 18, 20	बाधा	४७ ३
बर्ह्युप्प ८८ १३२	· ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ## ##	964 40		79०७ २६
बहिं: १२ ५७	बस्यज	९३ १६३	बांधव	9 . 38
बहिंण१०० ३०	बष्कयणी	100 00	बाहत	60 98
वहिंत्१०० ३०	ंबस्त	१७८ ७६		८६ १२२
वर्हिमुंख ४ ९	बस्ति	१९७ ७१	बाल	.4 990 KR
बर्हिष्ट ८६ १२२		६३ १६	i ခြောဆာလ်။	
६ ३५	, -	२१३ ११९	;	94 88
बह १६ ७८ वह १६० १०२	• • •	२७५ ५७	् बाल हण	
२६० १९५	~	२०५ ६३		FI ९७ १२
रिश्टेश रेश		380 30	बाला	80 JR
बलदेव ६ २४	बहुगर्धवाक्.		1	(2.2.44
बलभद्र ६ २४	बहुपाद् …	. ७२ ३२	बाळिश-	" रे २६४ २१८
बलमदिका ९१ १५०		.984 E	बालेय	9७८ ७७
{111 88		.१२४ ११३ .१२७ १२८	ा बाक्रयंत्रा	嗎. ८१ ९०
बलवत् { २७२ २		.१८७ १२८ २०५ ६३	बाल्य) jo 80
बलविन्यासः १५६ ७९	बहुङ 🗸	२१३ १ १२	बाब्प	२४८ १३०
बला ८४ १०५	. •	263 355		7969 80
बलाका ९९ २५	! #F#T	८७ १२५	बाहु	996 60
बलात्कार१६१ १०८		863 366	i	989 9
बलाराति १० ४६	बहुलीकृत		बाहुरा	५४ ३३
बलाहक १७ ६	बहुवास्त	. ७२ ३४	बाहुमूङ	996 38

सम्बद्धान देखाः

६८		8 P	Sept 1				
शब्दः पृष्ठा	(श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकाः
बाहुयुद्ध१६	9 906	बुद्धा	994	Ę¥	সম্ভুন	Yu	9.
बाहुल २	1 96	==	5 4	13	त्रहारंधु	२४३	9.08
बाहुलेय ९	४२	बुद्ध •	ं` रे २ १ २	906	मझ बिंदु	१३७	३९
बाल्हिक. { १५०	48	बुद्धि	•••• २८	9	न हा मृय	380	42
()	१ ३२	बुद्बुद	२८२	98	अहायज्ञ	१३२	38
बाल्हीक. 	१२४	ĺ	{ ^{२०}	२६	त्रह्मवर्चस	••••१३७	35
शल्हाक. 🕇 १७९	. e	बुध	न् १३०		त्रहासा युज	य. १४०	42
्रररः बाह्य२७६			८२४२	900	त्रहास्	७	२८
_	=	बुधित 	२१२	306	महस्य	9३९	40
বিভ १७ <u>৭</u>		बुध	کې ود معمد		अझांजली	१३७	३९
बिडाल ९६ विडोजस् १०	•	ब् भुक्षा	908		अह्यास न	१३७	Ro
		ं बुभुक्षित 			स्रोहा	. { २६ १४०	२१
बिंदु ४९ चित्रसम्बद्धाः १८९	•	बुस	ى€2		·		49
	३९	बुस्त बृंहित	२८५ १६१	-	जाह्मण	१३०	
विंब १८ विंबिका ८९		_				ष्टेका. ८१	
व्यावका ८५ विल ४५		बृहत्	४०۶	-	ब्राह्मणी	८१	८९
बिलेशय ४६			924		त्रह्मण्य	२२१	
	८ ३२	बृहती) iq 19 (4		5	30
_			999		त्राह्मी	. { ३२	१ १३७
विसकंटिकाः ९९		-	92			(८) भ.	140
विसंप्राटकाः ५५ विसंप्रसून ५५	ì	बृहस्पात		1	भ		2.0
		वेषकर व	958		न मक्त	۶۴	
विस्त१८०	. ,	बोधिहुम			मश्रक	१७३ १९७	
	` ;	बोल	9 ८३	· .	महारा भाक्षित		
गिज … { २७ ११४	ر دع دع	म्रह	٠ २०	,	•	२१२ १६९	
गणकोश ··· ५६				1			
बीजपुर ७९	• ;	त्रक्षच ारि	न् { ^{9३०} १३८	٠ ۲	भग		२६
गिजाकृत १६५	,	ब्रह्मण्य	b3		भगंदर	993	48
बीज्य १ ३		ब्रह्मत्व	3४०		भगवत्	Ý	93
		ब्रह्म		984	भगिनी	٥٠٠	35
वीभत्स { ४९ २६८	98	नहादार	, ७३	89	भंग	४८	4
र् २६८	२३५	*****	1 4	36	भंगा	१६७	२०
क ८०	1	湖面可	1 284	• •	મંત્રી	202	

शब्दः पृष्ठम स्रोकः	भन्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम् स्रोकः
भंग्य१६५ ७	भिंदरिक ३९ १२	भाइ २५ १७
भजमान१४६ २४	भर्तदारिका ४० १३	भाइपद २५ १७
मट१५३ ६१	भर्त्सन ३४ १४	भाइपदा १९ २२
भटित्र१७२ ४५	भर्मन् {१८२ ९४	(२१३)
भट्टारक ४० १३	(1)1 40	भानु २१ ३३
महिनी ४० १३	भक्ष२८२ २१	(२४३ १०५
भंटाकी ८५ ११४	महातकी ७३ ४२	भामिनी१०३ ४
भंडिल ७७ ६३	भक्षुक ९५३	भार१८० ८७
मंडी ८ १ ९१	मह्क ९५ ४	भारत ५८ ६ भारती ३२ १
भद्द रु७ २५	भव	•
(303 84	न्य गार्च ६० ५	भारद्वाजी ८५ ११६ भारयष्टि१९० ३०
भद्रकुंभ१४७ ३२	भवन ••• ६१ ५	1
भद्रदारु, ७५ ५३	भवानी ९३९	
भद्रपणी ७२ ३६	भविक २७ २६	
भदबला ९१ १५३	भविष्णु१९९ २९ भविष्णु१९९ २९	
भद्रमुस्तक ९३ १६०	1 •	1
भद्रयव ७८ ६७	भव्य २७ २६ भषक१८८ २२	
भदशी१२८ १३१	İ	भायो१०४ ६ भार्यापती११० ३८
भद्रासन१४७ ३१	भक्षा१९० ३३ भस्मगंधिनी८६ १२०	1
भय ४१ २१	भस्मगर्भा ७७ ६३	भाव १९ १२ भाव १९ ११
अयंकर ४१ २०	भा २१ ३४	२६२ २०७
भयद्त२०१ ४२	भाग१८१ ८९	भावबोधक ४९ २१
भयानक. र ४० १७	(> > > <	(१२८ १३४
(83 40	भागधेय. १४६ २७	भावितः 🚽 १७२ ४६
भर १४ ६९	भागिनेय१०८ ३२	्रिश्र १०४
भरण१९१ ३९	भागीरथी ५४ ३१	भावुक २७ २६
भरण्य१९१ ३९	1	भाषा ३२ १
भरण्यभुज्१९७ १९	भाग्य { २७ २८ १५५	भाषित र ३ १
भरत्१८७ १२		•
अरहाज ९७ १५	भांगीन१६५ ७	
भर्ग ८३५	भाजन१७० ३३	भास २१ ३४
मर्ष	भांड १०० ३३	भास२३४ ५८
अर्थ { रेइ४ ५९	भांड { २३२ ४४	भास्कर २० २८

	1.3	4110	
शब्द: पृष्ठम् स	ोकः ज्ञान्दः प्रमूस	21	
	284	श्लोकः शब्द	
भिक्षा रिश्४	6 8É		ष्ठ२०५ हर
निला रे २६६ व	A 611 000 C.A.	११५ मिर	रि०५ ६३
मिश्च	2 s.d 118	30	ी२५८ १८२ तेना ९० १४३
अ ३६६ हे है १३८ ४	× 276	27.00	
भित्त १८ १	Ę	1	2
भित्ती ६१ ४		7 20	4,
भिदा२१४ ५	ी पुट भू ५७	, ,	1
भिदुर ११ ५.	•	२ भूषण	
भिदिपाल१५८ ९	१ मृत		* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *
भिन्न र २०८ ८३	े सत ८ २१२	1	_
े (२११ १०	•	, 🗬 強	`
भिषज्११३ ५७	,	-	··· ξ'; &
भिस्सटा१७३ ४९	भारतीयारि	र्भ भूग	४६ ३३ ४
भिस्ता१७३ ४८		'1	900 38
મી ૪૧ ૨૧	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	° ६ भृंगराज	89 949
भीति ४१ २१		८ भृंगार	१४७ ३२
भीम	भृति १३	_ ,	٠٠٠٩٥٥ ٦٧
(89 40	₹ ₹ €	^९ ं भृंगी	···· ९ ४३
भीर 🕽 १०३ ३	भृतिक२२३ ८	भृतक	9 2 9 4
ी १९८ २६ भीरुक१९८ २६	भ्तेञ्च ८ ३	रे भृति	٠٠٠.٩९٩ €۷
, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	भ्दार ९५ २	मृति भृत्	
भारतक१९८ २६ भीषण ४१ २०	भृदेव१३० ४	भृत्य	966 96
मीष्म ४१ २०	भूनिंब ९० १४	^{(३} भृत्याः	**** 32
भीष्यस् ५४ ३१	भूप१४१ १	भ् शम्	98 60
मुक्त२१३ १११	भूपदी ७८ ७०	1 44.4	····
मृक्तसमुज्ज्ञित १७४ ५६	1 5. g.r 4 £ å	भेकी	····
(भूमन्२७५ १७	3-	ी १४५ २०
मुझ १ २०६ ७१	भूमि ५७ २	भेद	1 984 29
1772	भूमिजंबुक ि ५३ ३८	भेदित	₹99 900
1777	(64 116		••• ३८ ६
37:3-	स्मिधर२३५ ६१	भेषभ	992 40
10.00	स्मिस्युक्१६३ १	मेक्ष	****138 80
उत्तर्भव३०० ३०	मुक्स२०५ ६३	मैरव	···
	•	•	- • • •

शब्दः	रृष्टम्	स्रोकः	ञ ब्दः	पृष्ठम् -	होकः	शब्दः	पृष्टम् स्रोकः
भीषज्य	993	40	भ्रकुटि	xx	30	मणिबंघ	996 69
भोग	२२७	२३		(110	38	ਸਵ	\$ 64 49
भोगवती	२३७		भूष	.५ २३२	- 1	40	्री १७३ ४९
मोगिन्	٧٤	٤		(२४९	- 1	मंडन	्र १२२ १०२
भोगिनी	,908	4	भ्रेष	984	२३		(372 42
भोजन	१७४	44		म.		मंहप	६३ ९
भोस्	२७३्	9	मकर	५२	२०	<u> </u>	9 %
भौम	२०	२५	मकरध्वज	₹ ७	३७	मंडल	१९ २९ १९ ३२
मौरिक	१४२	•	मकरंद	ξ٩	90	मंडलक	•
अंदा	984	२३	मकु ष्टक	७३ १	96	मंडलाय	•
भ्रकुंस	३९	33	मक्लक	٠ ٩٥	188	i	989 ₹
भ्रकुटि	88	३७	मक्षिका	99	२६	1	596 9 0
	८ २९	8	मख	१३२	93	महारप मंद्रित	•
भ्रम	.ને ૪૧	છ	मगध	948	९७	मंडोरी	
	(२१५	9	मधवन्	90	ጻጸ	मंड्क	
भ्रमर	900	२९	मंक्षु	२७२	२	1 -	૧૧ ૧૬ ૧ ૭૬ ૧૬
अमस्क	9२१	९ ६	मंगल 💮	२७	२५	1 .	
भ्रमि	२१५		मंगल्यक	१ ६७	9 0	, -	ર્જો ૮૧ ९૧ ૧૮૨ ९૮
ऋह	२१२		मंगल्या	१२७		मंदूर सर्वास्त	१४८ ५४
भ्रष्टयव	१७३	80	मचर्चिक	sī ३७	२७	1	१४८ २४ ११ २७ २७
भ्राजिप्णु	••••9२२	909	मजा	६८	33	मतास्त्र माति	ा २७ २७ २८ १
श्रातरी	१०९	३६	मंच	9२९	936	नात	२८ १ (१४८ ३६
भ्रातृज	۶ ه و	₹ €	मंजारे	६८	93	मत	
अ)तृज्ञार	٥٠ <i>٤</i> ۱۲	३०	मंजिष्टा	69	९०		وهو ووج
भ्रातृभाग	ान्यौ. १०९	३६	मंजीर	૧૨૪	908	मत्तका	द्देशनीः १०३ ४
आतृत्य	२५१	386	र्मजु	२०३	५२	मत्सर	२५६ १७२
भ्रात्रीय	908	•	मंजुल	२०३	५२	मत्स्य	49 90
आंति	३९		मंज्ञा	990	३०	मत्स्यंडी	१७२ ४३
आर्ह	9 ६९		मठ	६२	6	मत्स्यपि	क्र १८न्ह
भुकुंस	३९	•	मङ्हु	३९	6	मत्स्यवे	धन ५३ ३६
भकारी	•••• ४४			(9	३०	मत्स्याद्	ती ८९ १३७
¥	9२०	•	मणि .	rsf f	7	मत्स्यात	खग. २६५ २२०
भुकुंस	३९		मणिक	1 ६९	39	मत्स्याः	शनी ५३ ३६
A 40.			, 4, , 20		4 -	•	

राम्यं दुक्तमिकाः

अब्दः पृष्ठम् क्ष	ोकः शब्दः	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम् ४	ह्रोक:
मियत१७४	' । नवार्या	T C8	904	मनुष्यधर्मन्	. 98	७२
.	्ष् म घुरिपु	٠ و	20	मनोगुप्ता	.१८४	306
	२ ने प्रश्रीता १९ मधुला	{900	२९	मनोजवस	.१९६	१३
,	३५ मधुवार	9९२	४३		.२०३	५२
	रेह मधुव्रत	•••9 ••	२९		.२५०	१३८
5	र३ मधुशिश्	ુ હ ર	३ १		४२	२७
	१८ मधुश्रेण		८४		२०३	
मदस्थान१९२ १	, 9		२८		२०१	
मदिरा१९२ १	1 .9			. "	.,9८४	-
	८ मध्क		1		9४€	२६
	१५ मध्यच्छ				. २ ५ ५	9 & 0
-	१४ मधूलव		२८	मंत्रव्या ख् याकृ मात्रिन्		
9	१९ मध्।ले	_	८४		.१४२ १७८	
	४० मध्य .	1996	७९		.102	
_ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	१५ १०७ मध्यदेश	(478	9 8 9		.902	
मधु ११२	1 -1 - 444	ं ५८ (३७	9		.966	
८२४३ :	^{। ०३} मध्यम.		9		944	
मधुक ८४ ९		196	७९	•	.966	68
मधुकर१०० न	9	806∫	4	· ·	366	96
मधुक्रम१९२ ४	१९ मध्यमा	J 336	دع	T 2	२४१	94
मधुहुम ७१ व	७ मध्याह्र.	२२	3	मंदगामिन्	.944	७२
मधुप१०० व	ı	व१९२		मंदाकिनी	. 99	५२
भवभाषकाः <	-	डा१८४		मंदाक्ष	. ४२	२३
~ (67)	४४ मनस्		३१	. (33	43
	१ ३ मनसिज	ि ७ ₹ २८	२७ २	मंदार {	७१	२६
• •	· ·		6 .		٥٥ ـ	२ 9
		२१२		मंदिर {	६१ २५८	ዓ የረጽ
## 2 · `	१९१ मनित		3		· ફર	9
•			4	मदोष्ण	. २२ . २२	३५
(, , ,	३ मनु		36	मं द		ર ે.
भप्रशाः <	०७ मनुज	•	9	` (6	२६
मनुरा ९१	१५२ मनुष्य	903	3 :	मन्मथ · · · ﴿	60	•

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः		कः शब्दः	पृष्टम् श्लोकः
मन्या११५ ६५	मर्द्क ३९ ८	,	-
मन्यु २८२ २५	मर्मन्२८४ ३		.900 bg
(434 134	मर्मर ३६ २	३ महाजाळी	. ८६ ११७
मन्वंतर २६ २२	मर्भस्पृज्२०८ ८	३ महादेव	८३४
मय१७८ ७५	मर्यादा १४६ २	६ महाधन	१२४ ११३ 🔫
मयु १५ ७४	मल र ११५ इ		.१६९ २७
मयुष्टख१६७ १७	[२६० १		982 4
मयुख र ३३	मल्रद्षित२०३ ५	नहायश ••	१३२ १४
न्त्रुख र्र २२५ १८		३१ महारजत .	. १८२ ९५
मयूर { ८५ १११	मलयू ७७ ६	भहारजन	.908 906
4 de se de	मिलिन२०३ ५	५ महारण्य	६६ १
मयुरक	मिक्टिनी१०६२	महागाजिक.	• •
~ (164 161	मलिम्लुच१८९ २	५ महारीख	
मरकत१८१ ९२	मलीमस२०३ ५	1.	१९४ ३
मरण१६३ ११६	मल२८२ २		
मरीच१७०३६	मलक२८६ ३	^७ महाश्वेता	
मरीचि र० २७	मक्षिका ७८ ६	9	७९ ७३
(૧૧ ૨૧	महिकाक्ष ९९ २	ु महासहाः र	८९ १३८
मरीचिका २२ ३५	मिलिगांधिन्१२७ १	२७ महासेन	९ ४१
मक १७ ५ २५४ १६३	मसी२७९ १	॰ महिला ••	१०३ २
च्य •••• रे २५४ १६३	मसूर१६७ १	७ महिलाह्मया	. ७६ ५४
गुरुव ∫ १३ ६५	मसूराविदला ८४ १	-91	., ९५ ४
मरुत् १ १६ २	मस्ण१७२ ४	६ महिषी	.108 A
मरुत२३५ ५९	मस्कर ••• ९३ १	६१ महा	५७ ३
मरुत्वत् १० ४४	-	२ महीक्षित् ••	383 3
मक्नमाला ८८ १३३	•	4	<i>६</i> ४ ३
(104 43	_	पहीच्ह ••	६७ ५
मरुबक् १ ८० ७९	•	र महीलता	५२ २१
मर्भट ९५ ३	मह ४५ ३) छरीधन	२० २५
मर्कटक ९७ १३		, महेच्छ	१९४ ३
मकटी ि ७५ ४८	.6.4	भहेरणा	" SA 35R
मकटा १८१८७	महत्तसहोल ४९ ६		૮ રૂર
मर्त्य१०३ १	महस्२६७ २	. 1 -	964 ६3
मदेन२१८ २२	महाकंद ९१ ३		44 39

शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः
महोत्साह.	१९ ४	३	मातुलपुत्रक	9	96	मार	७	२६
महोखम •	१९४	3	मातुलानी.	5 900	30	मारजित्	٠ ٧	93
	(43		ייונים צורי	रे १६७	२०	मारण	१६२	338
महौषघ	3 3	386	मातुलाहि •	۰۰۰ ۶€	Ę	मारिष	Yo	
	(909		मातुर्छी •	٥٠٠٩٠٠٠	₹0	मारुत	93	६५
मा	٥	२९	मातुलुंगक	७९	30	मार्कव	99	•
				80	३७			
मांस	1 334	44	मात≺	80	38	माग •••	· {	94
मांसल			मातः≺	306	२९		(940	۷.9
			_	र् १७६	1	मार्गेण	4 202	89
मांसात्पशु .			माहष्त्रसेय		२ %		(२१९	
•	۵۶۴		मातृष्वज्ञीयः			मार्गज्ञीर्ष	٠٠ २५	98
माक्षिक -			1	240	- 1	मार्गित		
मणध ····	₹ 949 626	. 50	मात्रा	र् २०५ २०५	६२ १७७	मार्जन		
_	105	٦ 9 و	माद •	206	35		••••१२६	
मागधी	1 22	96	ì		1	मार्जीर	٠٠٠، ٩٤	
माघ •	٠ २५	94	माघव ····	}	9 8	माजिता	••••9७२	•
माघ्व •			माधवक			मार्तेड	२१	
	२१		1 _	७८		1	والم والمرود	
	२७८		माध्यीक •			माष्टि	9२६	-
********	1990	४२	l	(~a	22	मालक	•	
माणवक.	रे १२३	306	मान ···	1 920	77 64	मालती		•
माणंब्य ्	२२ १	83	1			माला	976	
माणिक्य	…२८५	39	मानव .			Į.	3>r7	•
माणिमंथ .			मानस •			•		
mair.	\$ 966	98	मानसीकस्				क्त… ९४ 	
41/64	रे २२६	२१	मानिनी .			मालिक	356	
मातरपितरै	1. 909	, ३७	मानुष .			, .	···· ४६	
मातारिश्वन.	93	ÉR	मानुष्यक •			माङ्र		
मातिल .	90	88	\$	9८७		माल्य		
मातापितरै			मायाकार				٠٠٠ ﴿ لا	
मातामह .	909	. 33	मायादेवीसु	āy	34	मायपर्णी		१३८
मातुष्ठ			_	998		माषीण	3€4	•
-11.72	1300	३१	मायूर 🚬	903	४३	माध्य	964	•
			· · · · · ·					

शन्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम् श्लोकः	शब्दः पृष्टम् श्लोकः
मास • २४ १२	मुक्ता१८१ ९३	(
मासर१७३ ४९	मुक्तावछी१२३ १०५	मुत्तकी रुष ११९
मासिक१३५ ३१	मुक्तास्फोट ५२ २३	मुस्रस्य२०२ ४५
मास्म२७४ ११	मुक्ति २९६	मुस्तक ९२ १५९
माहिष१८५ ३	ि ईप्ट वर	मुस्ता ९२ १५६
माहेयी१७६ ६६	मुख ४१० ८९	मुहु२७२ १
मितंपच२०२ ४८	(२८२ २२	मुहुर्भाषा ३५ १६
(२१३०	मुखर२०० ३६ मुखवासन ३० ११	मुहूर्त २४ ११
ر کهار تستی	(9319 ~	म्क१९६ १३
१४३ १२ २५५ १६७	मुख्य र २०४ ५७	मूढ२०२ ४८
मिथस्२७२ २५७	. (999 8/	मूत२१० ९५
मिथुन१०१ ३८	मुंड { २८५ ३४	मूत्र११५६७
मिथ्या२७४ १५	niâ= ∫999 86	मूत्रक्रच्छ्११३ ५६ मत्रित२१० ९६
मिथ्यादृष्टि २९ ४	मुंडित र २०८ ८५	मृत्रित२१० ९६ मृर्ख२०२ ४८
मिथ्याभियोग. ३४ १०	मुंडिन्१८६ १०	मुर्छा१६१ १०९
मिथ्याभिशंसन. ३४ १०	मुद २६ २४	मुच्छील११४ ६१
मिथ्यामति२९ ४	मुदिर १७ ७	
मिशी ८८ १३४	मुद्रपर्णी ८५ ११३	मृक्ति { ११४ ६१ २२
मिश्रेया ८४ १०५	मुद्रर१५८ ९१	(000 50
ma	मुघा२७२ ४	मृत २०७ ७६
मिसि र ११ १५२	मुनि र ११४	- (99E W9
मिहिका १९ १८	अंत रे ३३८ ४२	मृति रु३६ ६६
मिहिर २१ २९	मुनींद ••• ५ १४	मृतिमत्२०७ ७६
मीट२१० ९६	मुरज् ३८ ५	मूर्वन १२१ ९५
मीन ५१ १७	मुरमर्रन ••• ६ २३	1100 19 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1
मीनकेतन ७ २६	मुरा ८७ १२३	1
मुक्ट१२२ १०२	मुषित२०९ ८८	मूर्वा ८० ८३
मुकुंद ६ २३	मुष्क११७ ७६	म्ल } ६८ १२
(94 ./.	मुष्कक ७३ ३९	
मुकुर१२९ १४०	मुष्टिबंध२१६ १४	मूलक ९२ १५७ मूलकमन्२१४ ४
मुकुल ६९ १६	मुसल१६८ २५	1
मुक्तकंचुक ४६ ६	मुसलिन् ६ २५	मूलवन१७९ ८०

शब्द:	पृष्टम	श्लोकः	इाब्द:	पृष्ठम	(स्रोक:	शब्दः	पृष्ठम्	स्रोकः
	{ 909 { 989	fie e	l	{ 9 € ;	₹ 99 ७ < 3	मेढ़ .	{ 990 300	७६ ७६
मूबक	94	12	,	۰ ع ج ر		मेदक	993	
मुषा.	‴ { १९० ‴ { २८६	३३	मृत्तालक		139	मेदस्	994	•
பக்க	१२८६ १ ८ …ोणि	~ CC	मृत्तिका	٠ ٩٧		मेदिनी	५७	ર
मूपित	२० ९		मृत्यु	9 € ₹	•	मेदुर	988	-
2,111	(% E		मृत्युंजय	•••• 4	• • •	मेघा	२८	
मृग •	√ २१९		मृत्सा	٧٠٠٠ م		मेधि	१६६	
	(२२६		मृत्स्ना	٧٠ }		मध्य	२०३	
	२१९	-	1 -		•	1_	जा ९	_
	ा ···· २२	-	मृदंग	٠ ३८		मेरु	99	•
	ñ ዓሪሪ		मृदु	. ∫२०७		मेलक	२१९	
	ሽ ····			∫ २४३	88	मेष	{ २० १७८	
_	र१२ <i>७</i>		~		` '	_		
_	जीव. १८८		मृदुल	२०७		_	856	
-	ी ••••१८९	• 1	मृद्दीका	٠ ٧٤	· ·	मेह रेक्टर	•	•
मृगमद	-		मृघ	••••9€9	į.	मेहन रीसानर्जा		७६ २०
मृगया		• 1	मृषा	२७४		मनावरा मेत्री		२० २ ०
मृग्यु	389		मृषार्थक	₹ ६		मत्र। मैत्र्य	७ ८५	
	न१२४		मृष्ट	···.२०४ 				₹ ९
मृगव्य 	966		मकलकन	का. ५४		मैथुन	, , , , ,	५७ १२२
न्द्रगाशस्त्र मृगङ्गीर्ष	र् २०	२३	मेखला	. { १२४ . { १५८				
चुगशाप मृगांक		•	-		80	मैरेय	992	
मृगादन	۵۶	•		•••• 90		मोक्ष		
द्याप्य मृगित	94			स्१७		मोघ	्	
रुगिरा मृगेंद्र	२१२ ९५	_ `	मेघनाद <u>ा</u> नु	•	2150	माय मोघा	७५	
न्द्रगर सृजाः			मेघनामन्		322	माया मोचक		_
मृड	१२६		मेघनिघीष 		۱ ک	71471		•
_{नृष} मृडानी			मेघपुष्प		1	मोचा	2	४६ ११३
मृणाल	••••		मेघमाला			ndez	•	-
मृणाळी	•	10	मघवाहन			मोदक सोरक	२८५ ३	
मृत्	40		मे च क	1 39	38	मोरट गोरस	3८४	
414	19	• '		f 100	२३	मोरटा	60	८२

शब्दः पृष्ठम् स्होकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	शब्दः पृष्ठम् श्लोकः
मोषक१८९ २४	यतिन् …१३८ ४४	यष्टि२८६ ३८
मोह१६१ १०९	यया२७३ ९	यष्टिमधुक ८४ १०९
मोक्तिक१८१ ९२	यथाजात२०२ ४८	यष्ट्र१३१ ८
मौद्गीन१६५ ८	यथातथम्२७४ १५	याम १३२ १३
मौन१३६ ३६	यथायथम्२७४ १४	याचक२०२ ४९
मौराजिक १८७ १३	यथार्थम्२७४ ३५	याचनक२०२ ४९
मौर्वी१५७ ८५	ययाहेवर्ण१४३ १३	याचना१३६ ३२
मौलि२६० १९३	यथास्वम्२७४ १४	याचित१६४३
मौष्टा२७८ ५	यथेप्सित१७५ ५७	्याचितक ३६४ ४
मोइत१४४ १४	यदि२७४ १२	याच्ञा. {१३६ ३२
मौद्दातिक१४४ १४	यदच्छा२१३ २	6/10 4
म्लिष्ट ३६ २१	यंद्य र १५३ ५९	'याजक१३३ १७
म्लेच्छदेश ५८ ७	प ^ए } २३५ ५९	यातना ४७ ३
म्लेच्छमुख१८२ ९७	् १२ ६१	यात्रयाम२५१ १४५
य.	यम ४ १३९ ४९	यातु १३ ६३
यक्त११५ ६६	(२१७ १८	यातुधान १३ ६३
(× 99	यमराज् ••• १२ ६१	याद१०८ ३०
यक्ष १ १४ ७३	यमुना ५४ ३२	यात्रा { १५९ ९५ २५६ १७५
यक्षकर्दम१२८ १३३		
यक्षध्य१२७ १२७	्ययु१५० ४५	यादःपति ४८ २
यक्षराज् १४ ७१	यव१६६ १५	यादस् ५२ २०
यहमन्११२ ५१	यवक्य१६५ ७	यादसांपति १३ ६४
यजमान१३१ ८	यवक्षार१८४ १०८	यान { १४४ १८
यजुस् ३२ ३	यवफल ९३ १६१	1
यज्ञ१३२ १३	यवस ९४ १६७	
यहपुरुष ६ २२	यवाग्१७३ ५०	याप्य२०३ ५४
यज्ञरोष १३५ २८	यवात्रज१८४ १०८	
यक्कांग ७० २२	यवानिका ९० १४५	याम { २३ ६ २१७ १८
यक्किय१३५ २७	यवास ८१ ९१	
यज्वन्१३१ ८	यवीयस्११० ४३	ंयामिनी २३ ४
यत्२७२ ३	यञ्य१६५ ७	यामुन१८३ १००
यतस्२७२ ३	यज्ञ:पटह ३८ ६	यायजूक१३१ ८
यति१३८ ४४	यशस् ३४ ११	ंयाव१२७ १२५

3.1

ज्ञब्दः	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोक:	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः
यावक	٠٠٠.٩ € ا		यूपखंड	२५५		रक्तांग	٠ ९٥	
यावत्	२७०	२४७	युपाम	••••9३३	98	रक्तोरपळ	५६	४२
यावन्	१२७	926	युष	२८६	३५	रक्षःसभ	२८४	२७
याष्ट्रीक	9€४	90	योक्त	9६६	93		8	99
यास	69	99	योग	२२७	२२	रक्षस्	۶ }.	६३
युक्त	••••१४६	२४	योगेष्ट	१८३	904	रक्षा	३१	
युक्तरसा	···· 69	380	योग्य	ሪኣ	392	रक्षित	२ १२	
स्या	وه و ک		योजन	२८ ४	३०	रक्षिवर्ग	982	Ę
युग	`` रे २२७	२४	योजनवह	î ८१	99	रङ्ण	२१५	-
युगक्रीलः	क १६ ६	38	योत्र	9 ६ ६	93	ব্যু	९६	
यांभा	र् १५२	40	योघृ	943	ξg	रंग	9८४	
344	" { २८६	३५	योघ	943	Ęg	रंगाजीव	9८६	૭
युगपत्	२७६	२२	योधसं राव	r9 Ę 9	१०७	रचना	9२९	१३७
युगपत्रक	७०	२२	योनि	996	७६	रजक	9८€	90
युगपार्श्वग	••••§	Ę Ę	योषा	१०३	२	श्लम	5963	९६
युगुङ	9 0 9	३८	योषित्	१०३	ર		· { २३८	<i>હ</i> લુ
युगाद्युग	१५२	40	यौतक	૧૪૬	२८	रस ्ट ी	. { २३ ९१	R
युग्म	909	३८	योतव	9८०	64		. 5 82	१५३
	9 ५२	46	यौवत	₽∘ و	२२	रजनीमुख	···· <u>.3</u> 3	Ę
યુવ્ય …	1 1 9 6	ÉA	यौवन	990	Ro.		(२७	२९
		1		₹.	:			
-	9 ξ 9		ian		- 1	रजस्	- } 90 € 9 € 0	38
	۵۰۰۰ ، ۱۰۰۰	:	रंहस्	93	-		(२६७	२३२
युवन्	••••	- 1		्रिश	ξ κ ;	रजस्वला	٩०६	२०
युवराज	३९		₹ ₩ •••	7 22 €	358	ত্ত্ত্	9८९	२७
यूथ	१०२			(२३८		ত্তে ন	9२८	१३२
यूथनाथ यूथनाथ	986	३५	रक्तक	७९	७३	रंजनी	••• ८२	94
_	986			(95/	, i		(989	308
¬_	७८	!	रक्तचंदन.	826 🕽			.4 294	6
•	(193		रक्तपा	५२	२२		(२३३	४९
य्प	' र २८६	•	रक्तफला	68	939	रंडा	69	22
यूपक	२८२	38	रक्तसंध्यव	···· 44	₹	रत	१४१	40
•	9३३		रक्तसरोदह		41		७	

यसर्क्षक्रम्भिकाः

शब्दः पृष्टम् स्रोक	: शब्दः	पृष्ठम् ४	ह्रोक:	शन्दः प्रष्ठम् श्लोकः
रत्न ····{ १८१ ९३ २४७ १२	रवण	₹००	- 1	राजन् रि४१ १
	र्वि रजना	२१ १२४	३१ १ ०८	राजन्य१४१ १
रत्नसानु ४४ २ रत्नाकर ४८ २		₹ 3	33	राजन्यक१४२ ४
रात्न११९ ८६	रिंम	{ 240	136	राजन्वत् ५९ १३
(७१ ३०		(२९	6	राजवला ९१ १५३
रथ १ १५१ ५१		३०	5	राजगीजिन्. १३० २
ग्यकटचा१५२ ५५	रस	٠٠٦ ٧٠	30	राजराज १४ ७२
रथकार र् १८६ ९		923 388	९९ २२८	राजलिंग२४१ ९१
8 201 8	रसगर्भ	963	902	राजवंश्य१३० २
रयगुप्ति१५२ ५७	रसज्ञा	930	9	राजवत् ५९ १३
रयहु ७१ २६	रसना	१२०	९ 9	राजगुक्ष ७० २३
रथांग ११२ ५५ १५२ ५ ६	रसवती	••••१	२७	राजसदन ६२ १०
रथांगाह्वयनामक.९८ २२		140	२	राजसभा२७९ ९
रायिक १५५ ७६	रसा •	{ 20	83	राजस्य२८५ ३१
•	1	6 20	१२३	राजहंस ९९ २४
रियन् १९३ ६०	रसांजन.		909	राजादन. 🗧 ७२ ३५
रथिन १५५ ७६	रसातल-	४५	9 ३३	1 2 2 2 1
रध्य १५० ४६	रसाल	र ९३	२२ १ ६३	
{ 89 3		1902	88	राजि ६७ ४ राजिका१६७ १९
रथ्या र् १५२ ५५	रसित	90	6	राजिल ४६ ५
ाद१२० ९ १	रसोनक	99	986	
रदन१२०९१	रह	••••१	२३	राजीव र्रे ५५ ४१
रदनच्छद१२० ९०	रहस्	984	२२	राज्यांग१४४ १८
छं ४५ २	रहस्य	384	२३	रात्रि २३ ४
रमस२८२ २१	राका	२३	6	रात्रिचर १३ ६३
स्मणी१०३४	राक्षस	१३	६२	रात्रिंचर १३ ६३
रमा ७ २९	राक्षसी	८७	926	राद्धांत २९ ४
रंभा ८५ ३३	रे राक्षा	••••१२७	924	राध २५ १६
रय १३ ६७	रांकव	१२४	999	राषा ••• १९ २२
798 ₹ 99	, i	383	9	(६ २४
रहक र् २८१ १७		१४२	₹	राम ९६ ११
रव ३६ २२	[।] राज क शे	इ२५९	366	८२५० १४०

शब्दः	पृष्ठम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्ठम्	स्रोक
रामठ	" ງ ७ ງ	٧.			49	रेफ	∫२०३	48
रामा	१०३	. ૪	रुचक	۶۵ ک		1	ी २४८	133
रांभ	१३९	४६	1	962	-	रेवतीरमण	Ę	२४
राल	१२७	920		(358		रेवा	48	३२
_	(२०	२७	रुचि .	… { २१ … { २२८		₹	8368	90
सारी		-	रुचिर	२०३			१२५५	•
	८२६४	२१४	रुच्य			i _	···· 84	3
राष्ट्र	२५८	928		२०३		1	••••११२	
राष्ट्रिका	८२	९४	रुज्	992		रोगहारिन्	99₹	40
राष्ट्रिय	٠٠٠. ४٥	38	रुजा	993	-	रोचन -	os	४७
रासभ	90C		रुत	•••• ३७		रोचनी	\$ 68	906
	(24	998	रुदित	••••		रायमाः	}	१४६
रास्ना ••	"{ Ž		रुद्ध	२०९		रोचिष्णु	9२२	903
राहु	२०		• रुद	‴{		रोचिस्	२१	३४
रख रिक्तक		. •	ŧ		३६	रोदन	9२9	९३
रिकथ दिक्थ	२०४		रुद्राणी	٠ ٩		रोदनी	८२	९२
	969	९०	रुधिर -	🔰 🤋 ધુ		रोदसी	<i>e ३ इ</i>	२३०
रिंगण	&&	३६		‴ रे २८२	२२		२६७	-
रिटि	۰ ۶	४३ ।	হত	••• ९६	J o	i _	۲۶	-
रिपु	…१४३	90	रशती	••• ३५	36		942	
विष्ट	२३०	३ ६	হৰ্	४२	२६	١ ـ	922	
रिष्टि	940	68	रुहा	٠ ९२	346			
ीढा	४२	!	रूप	२९	9		··· 88	
()ण ()ण	२०९	,	रूपाजीव	β∘ ε .π	98		४४	•
((vi		,		(969	83	रोष	४२	•
तितं	∫ १८२		रूप्य	🕇 १८२	९६		g ७ ६	•
	``			८२५४	360	(116°11	C 39	94
	१८३		रूप्याध्य	झ१४२	9	रोहित	, ,	98
इक्पति हि	क्या । ३१२	५०	रूषित	२०९	68		ر جو	90
ह क् म	१८२	94	रेक्वित	ه ۲ و	86	रोहितक	٠ نونې	84
व्यकार	क३८६	C	रेणु	۰۰۰.٩ξ٥	९८	रोहिताश्व •	•	46
हक्ष	••••२६६	२२६	रेणुक	•		22-	باو	88
हेउए ।	२०९	9	रेणुका	٠٠ ٤٤	920	. ' '	(80	36
ब्	२१	_	रेतस्	998	_	रौद	{	२०

ज्ञब्दः	पृष्टम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः	पृष्टम् -	श्लोकः
रौमक	969	४२		(€८	3	छस् तक	940	८५
रौख	४७	9		5,8	99		∮ १२७	924
•••	(E	२५	लता	₹ لا	44	लाक्षा …	`र्रे २७९	30
रौहिणेय	· {			20	७२	लाक्षा प्रस	दन. ७३	४१
۸.	-	9 ६ ६		39	१३३ १५०	लांगल	१६६	93
रोहिष …	∵ { ₹₹	90	लतार्क	99	386	लांगलदंड	9 ६ ६	98
	ल.	-	ल्याक स्टब्स		رم در	र्लागलपद्ध	ति. १६६	98
	•-	•	רוש	930		लां गलिर्क	ì ८६	396
लकुच	٠٠٠. ७६		लिपत …	्} ३२ '} २१२	9 909		1 64	999
लक्ष	٠٠٠.٩ ٢٥	•	लब्ध	33	-	लांगली	. १ ४४	386
लक्षण	98	90	रुव्धवर्ण			लांगुल	949	40
लक्ष्मण	9 ९ ६		ı	930	Ę	लाजा	9७२	80
ठ क्षणा	٠٠ ٩٩	२५	: लब्धानु ज्ञ		30	ভা ন্তন	98	96
लक्ष्मन्	۹۶ کی	90	लभ्य	98€		लाभ	968	60
CANA.	ेरे २४७	128	लंबन जंग ेन	१२३	908	!	5···· 9 3	१६५
_	(0	२८	लंबोदर	۰۰۰۰ ۹	83	1	(×3	२८
लक्ष्मी • • •		993	ल य	३९	\$	लालसा	` 🕽 २६७	२३०
_	८ १५७	८२	छ ळना	१०३	•	लाला	۲ و و	ह ७
लक्ष्मीवत्	••••१९६	38	<i>ल</i> लंतिका	१२३	302	लालाटि व	<u> </u>	90
37837	} &&	३३	ललाट	930		ठाव	900	३५
लक्ष्य …	ेरे १५७	८६	<i>ल्ला</i> टिक	ा१२२	_	। जा सका	३९	6
लगुड	२८१	96	ल्लाम	···· ₹ ५ 9	१४₹	लास्य	રેલ	90
लम	२०	२७	ललामक	9२८	१३५	लिकुच	•••• ७६	90
लग्रक.	9९२	४४	छ ित	•••• ४३	३ १	िकक्षा	२७९	90
	(98	६८	! ∣ਲਬ •••	§ 396	२४	लिखित	988	36
रुघु	2 22		· @4 ···	े रे २०५	६२	लिंग	२२७	२५
	ે	• •	लवंग	930	924	लिंगवात्त	980	48
लघुलय	···· ९ ३	9 8 4		(30	•	लिपि	****	9 Ę
<i>लं</i> का	२७८	9	लवण	7 9 6 9	-	लिपिकर	****388	94
	1 66		,	(२८३	२३	लिस	२०९	90
छजा	४२	43	' लवणोद	86	-	लिप्तक	946	
	988		ल्यन	396	•	लिप्सा	४२	
लिंबत	२०९	89	छ वित्र	966		लिबि	988	
•		90	लगुन लगुन	99	186	लीड	393	•
लट्टा	२७९	1.	৺প্র ন	11	100	///a	1001/1/	• • ,7

शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	ज्ञब्द:	पृष्ठम्	श्लोक:
නිලා	∫ ४३	३२	लोकुप	986	२२	वचस्	٠٠. ३२	9
@ @	े १२६१	388	छोछुभ	99८	२२	वचा	••• ८३	902
कुठित	949	40	लोष्ट	१६६	92		())	40
लुन्ध	996	२२	लोष्टमेद-	र ∙∙∙∙ १६६	92	वद्रा .	{ 68	•
लुब्धक	9८८	२ 3		९१२७	१२६	~ ~	(२५८	
ल ुलाय	९ ५	*	लोह ••	ا ۱۷۶ ل	86	ľ	ष १७	
क् ता	९७	93		1	99	वज्रपुष्प	68	
लून	₹99	१०३	->	(२८३		विष्ट्रिन्	90	
ळ्म	949	40	ł .	क१८६	9	वंचक	३०२	
लेख	४	૮		९७	3 €	वंचित	२०१	83
लेखक	••••3 <i>&</i> &	14		२०० झार. १५९	३७	वंचुक	94	-
लेखर्पभ	30	ጽ	1	<i>c</i> -	68	<u></u>	₩ 9	•
लेखा	६७	8	ळेगहित	{ 994 99	१५ ६४	वंजुल	₹0 }	३० ६४
छेपक	٩८६	Ę		? ? ? ? ? ?	93	वट	७२	३२
लेश	२०५	६२		दन. १२६		वटक	२८१	30
लेष्ट	9 ६ ६	92		[a 92	40	वटी	969	
लेह	gog	५६	_	२०	. 1	वडवा	940	
->-	1 40	Ę	2116		,,,		97	•
लोक …	ी २२२	ર	.	ब. ३७३			२०४	-
लोक ि त	ዓ	93	व	२७३	i	वडू वाणक	962	•
लोकमात्र		28	वंश •••	, ९३ 	9 E o	_	२३३	
	२८५	į	पद्म	र २६४	- 1	वाणिज्या	968	-
लोकालोक		1	वंशक	9२७	976	वंटक	969	
22	•	9 €	-	856[٠,١	7671	(996	
लोचन	939	•	वक्तव्य		१५९	वत्स	. Y 904	
_	क८५		वक्	₹००	J	4(0	(२६६	•
_	७२	İ	वक्त्र	9₹0	• •	वत्सक	७७	ξĘ
_	99		वक	२०६	i	वत्सतर	964	
	969		वक्षस्	992	96	वत्सनाम	89	99
-	922		वंक्षण	٠٠٩ ٩ ٠٠	इ्		(ax	93
लोमशा	66		वंग	9८४	• (वत्सर	$\cdot \left\{ \begin{array}{c} \hat{\lambda} & \hat{\xi} \end{array} \right.$	२०
	1200	98	वचन	३२	3	वत्सल	···.99Ę	38
रुलि …	े र्रे २६२	२०५	वचनेस्य	त. १९८	२४	_	60	
	• •	-						-

इब्द:	पृष्ठम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	इान्दः	पृष्टम्	स्रोकः
वद	२००	34	207	∫ ४५	3	वराशि		
वदन	9२०	65	वपा	'• 🕽 994	ÉR	वराह	94	•
	(१९५	6	वपुस्	99६	6 0	वरिवसित	त२११	१०२
वदान्य.,	" 🕽 २५४	•		(63	ર	वरिवस्य।	••••१३६	₹₩
वदावद	٠٠٠.٦٠٠	३५	वप्र		99	वरिवस्यि	त२११	9.05
वध	१६२	994		(१८३		वरिष्ट	••••१८२	९७
वध्य	२०३		वमथु	∫ 99₹		वरिष्ट	••••२१३	111
वंध्य	وع	•	}	386 J.,		वरी	८३	300
वंध्या	••••	६९	विभ	····33£		वरीयस्	∙∙∙२६८	२३६
वध्री	••••9९०	३१	वयस्	२६७			(93	६४
	(16	933	वयस्थाः	۶ <i>۵</i> کر در	१३७	वरुण ••	√ 9€	3
	103	3		ر جه			603	२५
वध्	" } 908	8	20120	5990	४२	वरुणात्म	जा. १९१	३ ९
	(२४३	१०२	वयस्य	ं रे १४३	92	वरूथ	945	40
	(86	3	वयस्या	9 04	33	वरूथिनी	•	
व न	५ ६६			१२६		वरेण्य	२०४	
	८२४७	•	वर	٠ ٠ ٦٩٢		वर्कर	٤٥٤,,,,	
	का८१			८२५६	२ ५	वर्ग	9 ~ ₹	
	९८		वस्टा	} ;;		वर्चस्	•••३६७	
_	<u>ሕ</u>		}	(69		वर्चस्क	₹۹۶	•
वनमालि		२१	वरण …	/ '	२५	वर्ण	₹ 930	
_	१६७		वरंड	२८१	16	44	च् १४९ २३२	
-	र ८३		275-	∮ १४९	४२		∫ 126	
_	وع		वरत्रा	🖣 ३८०	३१	वर्णक	'' { २८६	
	६७		वरद	954	9	वर्णित	२१२	
वनायुज	940		वरवर्णिर्न	\$ 90₹		वर्णिन्	9३८	४३
वनिताः	{ १०३	2	परवाचन	. 9 303	83	वर्तक •	∫ 9 ∘ 9	-
•		48	वरांग	२२७	२६	707, 1	ંં }ે રર૪	
वनीयक	२०२	84	वरांमक	66	१३४	वर्तन .		
	94			/ 4 8	-४३्	i	∫ કેઠઠ	
वंदा	60		वराटक.	4 968	२७	वर्तनी	49	
वंदार	••••999			८२८६	-	वर्ति	••••१२८	
वन्या	٠ ق	*	वरारोहा	१०३	R	वर्तिका	909	₹ ₹

शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः
वर्तिष्णु	998	२९	वल्क	६८		व सुंध रा	٠٠٠٠ ٢٥	3
व र्तु छ	२०६	Ę٩	वल्कल	٠ ६८	92	वसुमती	٠٠٠٠ ٢٥	3
वर्त्भन्	1 48	95	वल्गित	۰۰۰۹ و ۰۰۰۰	४८	वस्तु	२८०	१३
	6 406		वल्गु	२५१	388	वस्ति	924	998
व र्धक	وی		वल्मीक	٠ ५९	98	वस्र	924	994
वर्धिक	१८६		वह्नकी	३८	ર	वस्रयोनि	… १२४	990
वर्धन	988		वह्नम	∫२०३	५३	वस्रवेश्मन	[… १२६	१२०
	‴∫ રક્ષ્ય		<u> </u>	ॅर् २४९	१३्७	वस्न	968	७९
वर्धमान	७५		वह्नरि	ود		वस्नसा	994	ĘĘ
	F990	३२	्वङ्ठी	६८	•	वह	१७६	६३
वधिष्णु	988	२८	वङ्र	334	• •	-2	ी १२	፟ ቔ
व र्मन् -%-	१५३	ÉR	'वश	२१५	6	वह्नि	·· { 9 €	રે
वर्मित \$	948	•	[:] वशक्रिया	२१४	8		9८४	
वर्षे 	३०४				₹ ξ	_	60	•
वर्या वर्षणा	۶۰۰۰ و ۲۰۰۰		वशा ••	900	•		(200	
ववणा	••••	₹	_	(२६४		वा	. र् २७३	
चर्ष	90		वशिक	२०४	५६	i •	(२७४	24
বণ •••	عه ک معد آ	\$3×	वाशिर	ડ્ર ૮૨	९७	वाकुपति	२००	34
वर्षवर			1	. ∮ 103	83	वाक्य	••• ३३	
वर्षा	-		व श्य	9९८	२५ :	वागीश	२००	
वर्षाभू	५२		वषट्	२७३	1	वागुरा	965	•
वर्षाभ्वी	५२		वषट्कत	••••१६	२७	वागुरिक	929	3.s.
वर्षीयस	990		व सा ति	२३६	६७	वाग्गिमन्	२००	34
वर्षी पल	96	•	वसन	१२५	994	व ाङ् मुख	३३	•
	· ·		वसंत	२५		वाच्	··· 38	
वष्मेन्		923	वसा	994	६४	वाचंयम	93८	
वलज	२२९	39	1	, ,	30	वाचक	···· ३२	
वलजा	२२९		वसु	٠٠٠ ١٠٥		! _	२०	
बलभी	६३		-	ी १८१ ८२६६		वाचाट	३००	
वल्रथ	9₹३			(10		वाचाल	२००	
वस्रियत	३०९		वसुक	. { 363		वाचिक	३५	
वर्छाक	····		वसुदेव	4			२ । हषटु २००	
वक्रीमुख			वसुधा	٠ ٧७	•	, गांचाउ। ¹ वा ज	94c	
. 10019 41	, ,	٦.	7371	10	•	नामा		•

शब्दः पृष्ठम क्ष र ित	ः इन्दः पृष्ठम् स्रोव	तः । अन्दः पृष्टम् स्रोकाः
वाजभेय२८५ ६१	वान ६९ १५	र वारि ४८ ३
वाजिदंतक ८३ १०		ट वारिद १७ ७
(१०० ३३	् । १३२० र	वारिपणीं ५५ ३८
वाजिन्. न् १५० ४३ २४४ १०	वानर ••• ९५ ३	
		वारिवाह १७ ६
वाजिज्ञाला \cdots ६२ ७	,	वारी१४९ ४३
वांछा ४२ २५	1	वारुणी२३३ ५२
वाटी२८७ ४२		(993 40
वात्र्यालका ८४ १		यह वार्त { १९३ ५७ १६
् १२ ५	1 ., .	18
वाडव ∙⊷ ≺ १३० ४	4 7 4 7 7 7 7 7 7 7	वार्ता १६३ १
(940 At	ं विद्	विशा ।।। विश्व ७५
वाडवानल १२ ५९	1 4144 4 444 4 44	§ 22
वाडव्य२२१ ४९	- , , -	
वाणि१८९ २०	11.64	_2_
वाणिज१७८ ७८		
बाणिज्य. {१६४२	वामा१०३ २	
-	1	`
वाणिनी२४५ ३९	^{1२} वायदंड१८९ २८	
वाणी ••• ३२ १	वायस ९८ २०	वर्षिक ९१ १५०
वात १३ ६।		र वाल१२१ ९५
वातक ९१ १	11.4/41 44 4	५१ वालिय१५३ ५०
वातिकित्११४ ५	7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7	४४ वालपास्या१२२ १०३
वातपोथ ७९ २	1 112	
वातप्रमी ९६ ७	वायुसख १२ ५०	
वातमृग ९६ ७	वार् • ४८ ३	वालुका२३७ ७३
वातरोगिन्३१४ ५	902 30	र वाल्क१२४ १११
वातायन ••• ६२ ९	वार र २५४ १।	६१ वावद्क२०० ३५
वातायु ९६ ८	वारण१४८ ३१	८ वाशिका ••• ८२ ४०३
बात्ल२६० १	९६ वारण बुसा ८५ ५ ५	१३ वाशित ३७ २५
वात्या२६० १	६६ वारबाण१५३ १६	६ वास ६९ ६
वात्सक१७५ ६	वारमुख्या१०६ १९	९ वासक ८३ १०३
वादित्र ३८ ५	1 -	९ वासगृह ६२ ८
वाच ३८ ५	_	५१ वासंती ७८ ७२

शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	स्रोक
वासयोग	9₹८	१३४	विकासि	त् १ ९९	३०	विच्छाय	•••३	२६
वासर	२२	२	विकिर	900	३३	विजन · ·	. } 984	
वासव	90	ሄላ	विकीरण		60	19914	(447	
वासस्	924	994	वि कु वर्ण	۲ ۰۰۰۰۹ و ۲	9	विजय	१६२	99
वासित	,	१३४	विकृत	∫ ४ 9	38	विजिल	१७२	•
_	(४७२	•	1	6 110		विश	•••• 384	
वासिता	-	७५	विकृति	२१६		विज्ञात	995	
~_		8	विक्रम	. } १६० ११०	१०२ १०२	विज्ञान	٠ ٦٩	•
वासुदेव	٠ ٤	२०	विक्रय	908	_	विट् ••	{ 99€	•
वास्	yo	38	1	,,٩७९	•	विट	े (१६३ २८१	9 90
वास्तु	Ex	98	विक्रांत			विटंक विटंक	६३	_
वास्तुक 	९२	946	विक्रिया	•		14641		32
व्यतोष्पति 		४६	विकेट	٩७९	७९	विटप …	" { २ ४८	
वास	94e	aa 4a	विक्रेय	,909	८२	विटिपन्	६७	•
वाह …	. 900	66	विक्कव	209	४४		۲۰۰۰ نام	
शहदिषद	94		विक्षाव	२२०	३७	विट्चर	966	
गराप्त्र ग्रहन		40	विगत	२११	300	वि डंग	۷۲	906
वा हस	४६	4	विगतार्तः	झ. १०६	२१	वितंडा	२७९	\$
•	9४९	३९	विम	999	88	वितथ	३६	२१
•	(946	96		198		वितरण	१३५	२९
वाहिनी.	₹ 94€	69	विथह · ·		- 1	वित्तर्दि	६३	3 Ę
	(२४५	992	•	1 9 6 9	308	वित्तस्ति	998	ሪሄ
वाहिनीपरि		६२	G	-		वितानः	∫ १२६	350
वि		33	विघस	934	i	_	्री २४५	993
विंशति	995	-	विम	२१७		वितुन्न	63	186
विकंकत	•	-	विद्याज		& રૂ		(60	356
विकच विकर्तन	٠٠٠٠ ६७		1	···.930	Ę	वितुत्रक.	7 909	३७
_		•	विचयन	? १ ६ ११ ६	•		८१८३	309
	999	•	۱.		3२ २	.	969	90
विकसा किल्ला	-	90	l	ा •••• २८ : ••••२११	•	वित्त ···	्र १९५ ८२११	९
विकसित विकस्तर	•	د ع	विचिकि। विचिकि।			विदर	398	4
_	988	,	ाव।चाका विच्छंदक	•••	39	।पष्र विदल	324	-
।पक्षा	२१६	3.2	14च्छप्प	47	11	।পথ্ ত	, -,	4,

AND AND AND AND AND AND AND AND AND AND	18.22. 1	2	·	- 15	<u> </u>	
श्रम् पृष्टम		शब्द:	पृष्ठम् ह		शब्दः	पृष्टम् स्रोकः
विदारक ४९		विषुत	797		विपुरू	•••रे॰४ ६१
विदारी ि ७०	30	विधुंतुरं	२०	२६	विष्र	र्वे ३० इ
f. ca		विश्वर	२१७	\$.0	144 224	्री १३० ह
विदारिगंधा ८५	794	विध्ववन	7 98	ሄ	विप्रकार	•••२१६ १५
विदितः… { २१२		विध्नन	२१४	¥	বিসন্তর	२०१ ४१
(434		विधेय	996	२४	विप्रकृष्टक	२०६ ६८
विदिश् ••• १६	1	विनयमा	हेन्. १९८	२४	विषतीसा	रु ४२ २५
विदु१४८	· ·	विना	२७२	₹	विषयोग	२१९ २८
TABLE	३०		(4	18	विमलन्ध	२०१ ४१
(, , ,		विनायक	•	80	विप्रकंभ.	\$ 88 €
विदुल ७१			८२२३	Ę	1446न-	रेशक रूट
विद्ध२११		विनाश	₹9८		विप्रलाप	३५ ईंड्
विद्धकर्णी ७०		विनाशोन	मुख २०९		विप्रक्षिक	T904 20
विद्याधर ४		विनीत	} 94° } 98८	४४ २५	विभुष्	… ૪૬ €
विद्युत् १७		विद्			विष्ठव	316 3k
विद्रधि ••••११३	•	विध्य	٠٠٠. ξ٩	•	विबुध	
विद्रव ••••१६३			(२ ? ?	-	विभव	969 80
विद्वत२१		विक्रा	'' र्रे २१२	308	विभाकर	
विद्यम१८१	•	विन्यस्त	२३२	84	विभावरी	• • •
विद्युमलता८०		विपक्ष	… ૧૪૬	99		१२ ५९ २१ ३०
विद्रस् र १३० २६		विपची	३८	ą.	विभावसु	े ८२६६ २२७
(,,	८ २३५	विषण	968	•	किशीक	5 ve 46
विद्वेष ४३		विषणि.	{ ξ9		विभृति	• .
विधवा ••••१०।	•	विषसि	१ ९३३		विभूषण	•
विधा रेश		विषय				(×3 39
	4 90	विषय वि ष ष्ट	• • • •	•	विभ्रम.	… { २५० वे४२
• • • • •	4 90	वि पर्य य	•		विश्राज्	
विधिर	6 86	विपर्यास		• •	विमनस्	
विधि ५ १३		An Car	₹₹ ₹9₹¢	• •	विमर्दन	1
ر ۶۶ د- ستاست د	7.3	विषाद्	•		विमला	•
विधिदार्शेन्, १३		i~	का १ १ न		1	न९०७ २५
ے کے	£ 33	विपाश			विमान	
1.2	८ १४ २ ५५	विविन			वियत्	
	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	14114	**** 4.	•	1334	

श्रान्दः पृष्टम् स्रोकः	शब्द्र:	पृष्ठम् स्रोकः	शन्तः पृष्ठम् स्टेक्कः
विगद्रैंगा ११ ५२		. 33 %	विश्वकड्ड१८८ ३३
विक्म२१७ १८	विवाह ••	.989 44	विश्वकमन्२४४ १०९
वियात१९८ २५		१४५ दर	विश्वद्यस्२०० ३९
वियाम२१७ १८		१२३९ ८२	विश्वभेषज१७१ ३८
विरजस्तमस् १३८ ४५	1,,	.२१० ९३	विश्वंभर ६ २२
विरंति२२१ ३८	1	१३७ ३८	विश्वंभरा ५७ र
विरल२०५ ६६	1	४३ ३१	विश्वरूप ६ २३ विश्ववस ४ ३०
विराज्१४१ १	1	१३० २	विश्ववसु ४ ३० विश्वचन् ५ १७
विराव ३६ २३	1 .	२६४ २१४	विश्वस्ता१०५ ११
विरिच ५ १७	1	२०४ ६ ० ३० १२	विश्वा ८३ ९९
विरिचि ५ १७		३० १२ १६२ ११५	विश्वास१४५ २३
विरिण२३४ ५७		•	विष्१४८ ६८
विक्रपाक्ष ८ ३४	विशस्याः ≺	८१ ८३	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
विसेचन, र् २१३०		८२५३ १९५	१ रहर ररह
विरोध ४२ २५	्रिश्चसन •	9 ER 998	विषधर ४६ ७
विरोधन२१७ २१	1 -	९ ४२	विषमच्छद ७० २३
विरोधोक्ति ३५ १६	1 _ 1	99 22	1
विकक्ष१९८ २६	विशाय .	२२० ३२	विषय र १५ ११
विलक्षण२१३ २	विशारण .	9 ६२ - 9 9२	(२५२ १५२
विलंबित ३९ ९	विशारद	289 . 54	विषयि ३०८
विकंम२१९ २८	বিয়ান্ত .	२०४ ६०	विषवैद्य ४७ ३३
विकाप ••• ३५ १६	विशालता .	924 998	विषा ' ८३ ९९
विकास ••• ४३३१	विशालस्वच्	७० २३	विषासा१५८ ८८
विक्रीन२११ १०	, विशाला .	९२ ३५६	विषाण२३४ ५६
(00.00	विशिख.	940 ८६	विषाणी ८६ ३१९
विलेपनः { २१९ २७	विशिखा .	६१ ३	विश्वव २४ ३४
विलेपी१७३ ५०	विशेषक .	१२६ १२३	
विवध२४२ ९६	विश्राणनः	१३५ २९	विष्किर१०० ३३
विवर •••• ४५ १	1	२१५ २८	विकाम ६४ १७
विवर्ण१८७ १६	•	954 5	विष्टप ५८ ६
विवज्ञ२०१ ४४		[3 90	विष्टर२५५ १६
विवस्वतः. र २१ २९	. مسجوا	८ १७१ ३८	विद्यस्त्रवस् ६ १८
विवस्वत् { २३४ ५४	, .,	(२०५ -६५	·

चन्द्रकारिकः

iet:	पृष्टम् श्लोकः	मन्दः	पृष्ठम् स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम् स्त्रिकः
विष्ठा		विकसा	990 %9	वीरपाण	9 €0 90 3
विष्णु	E 96	विद्य	90# · देश:		90€ 9€
	ni ८३ २०४	विद्या	.,,,900 R	वीरमाद	90€ 9€
ज्ञासकाः विश्वपुरस्काः	34 7	विश्वम	900 ३६	वीरवृक्ष	७३ ४२
च ्यु पद	9 4× 34	विद्वंगिष	র …:१९० ₹∙	वीराशंस	न १६० १००
-		-	የ , የዩ ዲኒ	वीरस्	90
विष्णुर य 		विहस्त	_	वीरहन्	१४० ५३
वि ष्य	२७४ 1३		त१३५ २९	वीरुप	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
			(94 3	1	r 86 25
	सेन ६ १९ सन्तिमया ९१ १५९	विद्यायस	₹. { 900 3 3	वीर्थ •	र ११४ हर
		विद्वाय			८२५३ ४५४
	प्रेमा∙… ७६ ५६	विद्वार	·	বীবঘ	१४२ ९६
বিজ্ঞান	₹ २०० ३४	विहरू		हक	९६ 💆
विसंवा	इ ४४ ३६	वीकाइ		٧	\$ 920 320
विसर्	१०२ ३९	वीचि	_	े वृक्तधूप	(1/2 - 1/2
विसर्जन	4984 RG		_	. वृक्ण	२११ १०३
	२१८ २३		हिं ३८ ७	नुक्ष	ફંબ ધ્ર
विसार	49 90		शह१८७ १३		देन्१९० ३४
विसारि	न्१९९ ३१	1 _	_		
विस्त	२०८ ८६	वीत		• 1	ाटिका ६६ २
	ए१९९ ३१		_	•	A 1 60 63
विसम	र१९९ ३१				
विस्ता		1	होत्र १२ ५।	ा काम्बार	क्त१७० ३५
<u> </u>	J ES 98	नी बी	₹ . €७ ४		२६ १३
विस्त	^{गर.} १२१८ २३	1	} 380 C	1 2 1 - 0.	नन २०६ ७३
विस्ट	त२०८ ८	६ विभ	२०३ ५		६ २४४ १०
विस्प	e eşe Ha	०८ वीना	ह ५३ ६	🤏 वृतं	२०९ ९२
विस्पं	तेट११२ ५	3	(80 1	(47 7 7	₹ ₹ ₹ } > 9 ₹ €
विस्म	_	९ वीर	****		6711
	।यान्वित.१९८ ५	Ę	. 6946 4	1	२०६ ६९
विस्			म ं ९३ 🕯		4 २०९ ९३
विस					[१३८ ७
	Could b	३ विरा	14 ak	19 3	्रि } ३३ ७ वि } २३५ ६
- सिस	मि { २४९ व		पत्नी३०६	54	ाव कर है। विकास के बार का

şin;	पृष्टम्	होक:	शन्दः	पृष्टम्	हीका	शब्द:	पृष्ठम् स्होकः
	168	3	Salal	196	₹	वेषस् .	1 4:30
द्वात्ते ≺	368	-	वृषद्शक	٠ ٩٤	•	4	"ि रे २६६ २२९
	. २३७	-	वृष्ध्वज	6	₹€	विधित	?? ? ? ? ?
T 1.		168	वृषम्	90	84	वेपशु	84 36
वृत्रहन्	. 40 200	34	वृषभ	904	45	वेमन्	969 96
वृथा {	202		वृष्ल	964	3	वेस्म	₹\$ \$96
	2	122	वृषस्यंती	80 f	\$	वेक	€ و الد
बद्ध ≺	990	४२		1 90	84	वेह्नज	٧٤ ٥٥٠
	.२४२	300	वृषा	" {	60	30-	∫२०६ ७१
	.990		बुषाका पार	ी. २५३	948	पालत ,.	\ २०६ ७१ \ २०९ ८७
वृद्धदारक •••		•	_	386	- •	वेश	٠ ६९ २
बृद्धनामि …		•	दृ षी	9₹९	¥€	वेशंत	43 96
रृद्ध श्रव स् …	. 90	RR	गृष्टि	919	99	वेश्मन्	६१ ४
	.990		बृष्णि	9७८	3 छ	वेश्मभू	६४ ३९
44,	904	• •	वेग	••••३२६	२०	वेश्या	90€ 99
91∞≺	384		वेगिन्	944	७३	वश्याजन	समाश्रय.६१।२
र् दृद्धिजीविका	295	8	वेणि	9२२	96	वेष	922 99
शृद्धिमत् …		- 1	वेणी	66	Ę٩	वेषवार	٠٠٩७٥ ؏٧
	964	- 1	वेणु	••• ९३	959	वेष्टित	२०९ ९०
बृद्धचाजीव	-	4	वेणुक	389	83	वेहत्	990 89
_	६५	- 1	वेणुध्म	926	93		(२७३ ५
	.१०२		वेतन	959	36	वै	" } २७४ ay
इंदमेद	903	83	वेत स	وه	29	_	933 136
·	8	9	वेतस्वत्	40	•	व कुंठ	
वंदारकः {	२२५	96	वेताल	२८२	21	वैजनन	५ १८ ११० ३९
ट्रंदिष्ट · · ·	.२१३	992	वेत्रवती	٧٤	€8	वैजयंत	•
वृश्चिकः {	90	38	वेद	३३	3		···· ዓං ४९ ከዓነት ৬ዓ
श्राचका.	२२३	i	वेदना	*****	E [በ ነንን ሁን ሽ•… ৬৬ ՝ ቒ፟፟፟፞፞፞
ſ	२०	२७	वेदि	933	• 1	वैजयंती	
	₹	२४	वैदिका	···· ६३		_	····3 द ° '55 ···. 9 5 4 '8
₹4	८३ ۷५	303 336	वेष	494	٠ ١	_ :	f 69 90
ţ	904	49	वेधनिका	,990	38	वैणव	" } 139 x€
į	२६५	• • 1	_	66	' 1	वैणविक	·966 33
	•	•	•		• • /	, ,,,,,,,,	

यकाबक्रकानकाः

	era: 040	श्रीकः । श्रम	१ष्टम् स्रोक्षः
ब्दः पृष्ठम् स्रोकः	शब्दः १ष्टम् व्यंजकु ४०		ब्रेमार्स ७१ २४
णिक१८७ १३	1 '49'	**"	क्त११४ ५६
ांसिक१८७ १४	व्यंजन ••• १ २८३	रेड्डि ज्या	A9 C10
तिनिक१८७ १५	व्यडंबक ७	ं ⊬क्षा र	पह • २९ ४
्तरणी ४५ दे	व्यत्यय२२		
।तालिक१५९ ९७ १४८६ ३	व्यत्यास२२	० ३३	S XE W
विद्द्रक १७८ ७८	व्यया ४	9 3	छ ····र् २६० १९६
वेदेही ८२ ९६	व्यव३१		क्रियाबिन्४७ ३३
बैद्य99३ ५७	1 - • •		विस२०९ ९३
वैद्यमातः ८३ १०३	5177	. 1	तास२१८ २ <u>३</u> सहस्र ३२ १
वेबार ११ ५४		1	
वेषेय२०२ ४८	104141 0.0.		पुत्यान२४६ १७% पुद्धि२३० ३८
वैनतेय ८३१	1		युद्ध२३२ ४५
वेनीतक१५२ ५८			युरक्तकट१५४ ६५
वैमात्रेय१०७ २५ वैयाघ्र१९३ ५३	. 1	- 1	यति१८९ २८
		1	902 38
वैर ४२ ^{२९} वैरनिर्यातनः १६२ ^{१९}	i	०६ ७२	व्यह र् १५६ ७९
वेरगुद्धि१६२ १			्रें ६८ २३९
वैदिन्१४३ १		500	ode il
वैवधिक१८७ १	4 =====	22 .	
	२ व्याघ्र र्		व्योमकेश ८ २६ व्योमन् १५ १
{ 24 9	६ व्याघ्रनख	1	व्यामयान ११ ५१
	०४ व्याघ्र पाद ∙ ∙• व्याघ्र <u>प</u> च्छ	64 40	व्योष१८४ १११
444	1 -	९७ १५	1902 38
वेश्रवण १४ ' वेश्वानर १२ '		. ૮૨ ९३	प्रज र् २२९ ३०
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	90	४३ ३०	प्रवा १ १६६ ३६
बीषट्३७३	८ व्याज	४४ ३३	202 600
ज्यक्त२३५	६२ व्याङ 👵	হহ়	व्रणकार्य३१३ ५४
व्यक्ति २८			3.E are
व्यथ२५९	1	966 39	1 EC 3
व्यंगा२५७	94114		त्रतारी र्यु ६७
व्यजन१२९	180	(11/).	•

इन्दः	पृष्ठम्	ह्रोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	स्रोकः
व्रातिन्	9₹9	·61.		90		शतम्ली		
व्रथन	990	₹₹	शकपादप	ቴኒ	43	शतयष्टिकाः		
त्रात	१०२	३९	शक्रपुविषय	fi. ८९	336	शतवीर्या		
आस्य	380	48	शक	२००	३६	शतविधिन्	ረ९	383
व्रडिंग	४२		शंकर	···· c	३२	शतन्हदा	90	•
	ر ٥٠	.98		48	₹ 0	i	949	-
ब्रीहि	.4 988	76	शंकु	ξ ξυ	6	शतावरी	८३	3 - 3:
002	(164			£ 949	९ ३	शहं	१ १४३ । १४३	\$
_	9 60			1 17	25	•	• •	
ब्रै हेय	٠٠٠٠٩ ق٠٠٠٠	Ę	शंख ···	94 42 66	130		२०	•
•_	श∙			(२२६	•	`	,.२७५	
-	go		शंखनक	५२	२३		३३	
शकट	949			८७	126		३३	
शकल	3F			90	86	_	949	
	49	I	शचीपाते .	90	४६		. 49	
হাকু ন	900	·	शटी .	९२	٠, ١		.966	
য়কুনি	6 0-	1	शठ .	२०२	४६	शबरालय	•	
शकुंत \cdots			शणपर्णी	९२	386	_	. 39	
ज कं ति	,900	- 1	शणपुष्पिक			शबली	.90€	•
-	···· 49	,	शणसूत्र .	५ 9	3 €	शब्द {	२९	
-	का९२		शत	•••9८०	83	4104	३ २ ३ ६	२ >>
-			शतकोटि	99	40		.933	
शकुलादन	n. { ≥9 ≥4	999	शतदुं	48	३३			₹2
शकलार्भव	ክ ነ ን	96	शतपत्र ,	44	80		.398	•
-	****394	ξw	शतपत्रकः	ەي	36		.398	•
	364	६२	शतपदी .		93		92	-
,	[984]	•	शतपर्वन् ,	९३	263	शमन {	934	₹
शिक्ति	. { 9 € 0	902	शतपविका	∫ ८३	902	शमनस्त्रसः		•
	२३६	ĘĘ	नाय मध्यक्षी	र्भ ९२	346		.994	
शक्तिधर	8	४३	शतपुष्पा ,	59	942		.२१०	•
शक्तिहेति		Ę٩	शतमास .)		७५	 ५ २
ইক ···	\$ 90	84	-	90	- ' 1	2171	986	• •
	ou f	६६ ।	शतमान -	764	3 8	श्मीधान्य	•	
							-	

शब्दां दुक्तमंत्रिका.

that).	पृष्ठम् क्रोकः	इच्छि:	पृष्ठम् 🛊	ोक:	शंब्दः	पृष्ठम् स्हे	14:
शमीर	64:44	शराब	989	26	शब्द	\$8.9	1 E
शंपा	··· 90 ಳ 🦸	भराव	960	44	शस्त	्	
হাৰ	99 Am	शरावती	4x	38	41441	" ફેરકર	١,
शंबर	1 8C.A	शगसन	940	رع	शका	. ∫ 946	
_	j dé 🗫	शरीर	99€				
संक्रारि	७ २७		} e e			963	
शंबरी	29 24	शरीरित्	٠٠ ٦٧	₹•	_	928 !	
शंबल	२८५ ३४	_2_		11	ř.	8 3 YB	•
अं बाकुत		शकरा		43'	शकी		
शंबुक	५२ २३	शक्रात्व	45		शक •	}	• •
शंभर्छी	•	शकराय य शकीरेल				f 100 ;	-
शंभु 👵	∵{ ८ ३२ '''{ २४९ १३५		२७	_		•••.१७६	•
ज्ञस्या	966 38	श न्य श र्व	6		1	ħ9८७	
राम्याक इाम्याक	७० २३	शर्री	२२	•	1 .	948	•
राज्याक इाय	996 69	शर्वाणी		₹ ९	1 -	नि ५ 	
स्थ	(88 £	श्रल	९६	•	1	E 4	-
श्यन .	''' रे १२९ १३८	i -	900		1	ęc	
शयनीय	•	शलङ	٠٠.، ٩٤		i	गर ६१	
श्याल	२०० ३३	शळली	٠ ٩٤			ग ···· ९५ फ़ा ····६८	•
राग्डः श्रायित	२०० ३३	श लाटु	६९		; शास्त्रापः : शास्त्रिन्	-	
श्य	४६ ५	शल्क	२२४		1	96	
रूउ श्रम्या	,१२९ १३७		(64	43	शास्त्र	•	
•	(९३ १६२	शस्य	🖁 ९६	9	शाटी		• •
श्रर •	··· { 942 26		(949	९३	शास	४३	•
इरजन्म	न् ९४१	शव	9६३	116	झाण	990	-
इारण	२३३ ५३	হাহা	٠ ٩६	13	शाणी	२७९	-
	₹ 4 99	शशधर	96	24	अंडिल्य	*	
शरद्	२६ २०	शशलीम	न्…१८४	300	4000	र २७	-
	[२४१ ५३	शकादन	٠ ९७	ja	शात .	{ z · s	5 9
शरभ	56 39	शक्रोर्ण	**** 368	900		1169	
शस्य	په ۱۹۰۰۰۰	i	700	•	शाव <u>द्याः</u> शावला		
	स१५७ ८६	शश्वत्		3	1		
इसारि	९९ २५	i	(२७४	33	ं शात्रव	98₹	3.1

शब्दः पृष्ठम् श्लोकः	इन्दः पृष्ठम्	स्रोकः	इस्तः १४म स्रोकः
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	श्चिक्कि२२१	۸ď	शिपिविष्ट २२९ ३४
部度/・・・・ { 380 80	शासन१४६	२५	शिका ६८ ९४
शांदहरित ५८ १०	शास्त्र ५	3.8	शिफाकंद ५६ ४३
शोहरू ५८ १०	शाब्२५७	१७९	शिविका१५१ ५३
र्शात२१०९७	शास्त्रविद्१९५	Ę	शिबर१४७ ३३
शांति२१४ ३	ञ्चिय१९०	३०	शिया१६८ २३
ज्ञाबर ७२ ३३	शिक्यित२०९	۲۹	शिरस१२१ ९५
शांबरी१८७ ११	शिक्षा ३२	1	शिरण१५३ ६४
शार२५५ १६६	शिक्षित१९५		क्रिस्य१२२ ९८
शासद् { ७० २३	शिसंह१००		किसा११५ हं५
शारदी ८५ १११	शिखंडक१२१		शिरीप ७७ ६३
ज्ञारिफळ१९३ ४६		8	शिरोम ६८ १२
ज्ञाकर ५९ ११			शिरोषि१२० ८८
शार्ष ७ ३०	शि खरिन्. { ६४	9 • €	शिरोस्त १२२ १०२
शार्किन् ६ १९	t	•	शिरोवह१२१ ९५
	99	۹٥ ३ ٩	शिरोस्थि ११६ ६९
शार्द्छ २०४ ५९	शिखा ••• ४ १२१	30	त्रिल१६४ २
ज्ञार्बर२५९ १८८	े २२६	98	क्रिका } ६३ १३
হালে বিশ্ব গু ণ	शिखावत् · · · १२	46	शिला { ६३ ७३
4.160 J En A	शिखावल९००		शिलाजतु१८३ १०४
ज्ञाला { ६१ ६	शिखिमीव१८३		ज्ञिली ५२ २४
66 23 £	शि ख न्, {१००	३०	क्षिलीमुख२२६ १८
ज्ञालावृक२२४ १२	1	•	ड़िलिचय ६४ ९
शास्त्रि१६८ २४	शिखिवाह्न ९		शिल्प१९१३५
ज्ञालीन१९८ २६	शिश्र 🕻 ७२	₹ 9	शिल्पिन्१८६ ५
शास्क ५५ ३८	शियु { १७०	₹४	शिल्पिशाला६२ ७
शास्त्रं ५२ २४	शियुज१८४		जिल्ला ५ ३२
शालेय 🕻 ८४ १०५	शिंजित ३७		क्षिव र २७ २५
शाल्य १०५ शह्म ६ शाल्म डि ७४ ४६	किंगिनी१५७		शिवक१७७ ७३
शाल्मा ड ७४ ४७ :	शितश्क१६६		क्षिक्मही ८० ८१
शास्त्रकान्द्रः१०१ ३८	शिति२३९	•	4 33
शाक्त२०६ ७३	1 .	३४	शिवा 🗸 ७५ ५२
عننفيس مهمونييي الأراشية	क्रितिसारकः ७३	ર	, (७६ ५५

गणसम्बद्धीयाः

शब्दः	पृष्टम् स्रोकः	शुलु:	१ष्टम् स्रोकः	मन्द्रः	१ ष्टम् श्लेकः
विषा	24 926 34 4	जुक	{ c4 134 { 96 39	ગુપ્તવંતી ગુપ્ત ાં	16 4 16 18
क्षिशिर	(२६३ २१२ ∫ १९ १९ २५ १८	गुक्तास सुक	७६ ५७ २३९ ८३ २३९	गुल्क गुल्क	્રે ૧૮૧ <i>૧૫</i> ૧૯૧ <i>૧૫</i> ૧૯૧ ૧ ૫
হিছ্যু হিছ্যুক হিছ্যুক	909 ₹2 49 90	য়ুক্তি	िट १३० १२ ५९ २० २५	मुश्र् वा	र्देर३ २३ •१३६ ३५
शिशुमार शिक्ष	५२ २० १९७ ७६	गुक्	२५ १६ १९१४ ६२ २६५ ३२१	जुने गुण्कर्मा जुन्म	४५ ३ स१६० १०३ १६० १०३
	२०२ ४६ १४६ २६ १३२ ११	शुक्तशिष्य शुक्रशिष्य	५ १२ ∫ २४ १२	जुष्पन् जूक जूककी	१२ ५७ १६८ २३ ड ९७ १४
शीकर . श्रीघ्र •	96 99 98 EC	गुच	`} ३० १२ ४२ २५ १२ ५९		य१६८ २४
शीत -	69 30 62 38 322 28	शुचि	80 90	श्द श्दा	904 9 904 93
शीतक .	966 96	गुंठी	१७१ ३८	ज्दी ज्न्य	२०४ १३ २०४ ५६
शीतभीव .	66 60	शुंडापान	992 83	ज्ञा	944 88
शीतल	{ 49 9×9	<u> যুব্</u> তাহি	५४ ३३ • ६३ १२	शूर्व	१६९ २६ २६० १९७
शीतशिव.	\begin{cases} & 28 & 30 \\ 28 & 32 \\ 103 & 82 \end{cases}	ञ्जनक	" { २३६ ६६ १८८ २२	श्रूक श्रुकार श्रुकिन	त१७२ ४५
7	१८५ ३४	जुनासीर री	9 88	श्ल्य	१७२ ४५
इतिषे इतिषेक	१ २१ ९५	शुनी	722 44 { २८ १ ५	श्यात	5 ९५ ५ • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
रात्या शीर्षच्छेद	१५३ <i>६३</i> २०२ ४५	शुभ .	يود هو	श्वत	
शीर्षण्य	{ १२२ ९८ } १५३ <i>१</i> ४	ગુ મંત્રુ	्रिट३ २३ २०३ ५०	श्चित	(66 x
भील ••	े ४२ २६ ''{२६१ २ ०		१ ३० १२		{ ९० १४२ २२७ २६
সাই	४७ २७	. 25× •	} 444 34	२ श्रृंगदे	हर १७१ ३.७

सन्द ः पृष्टम्	होकः शब्दः	पृष्ठम् -	स्रोकः शब्द	पृष्ठम् स्रोकः
ऋंगाटक ६०	१७ शीनरत	969	९९ स्यार	
श्वंतर ४०	१७ शोणित	994	६४ श्याव	•
ऋंगिणी१७६	६६ शोय	998	५२ स्वेत	
	४३ शोषधी	39	१४९ स्थेन	
अंगी र ५३	२५ होवनी	₩ ق	१८ स्थेनंप	ाता२७८ इ
ं दे	900	1902	•	२४३ १०२
	११६ शोषित.		4 E	(0.0 0.0
श्रंगीकनक१८२	ં રામિ	992	५२ श्रद्धा	982 20
• •	१५ ज्ञोभन		५३ श्रयण	२१६ १२
त्रेखर१२९	१३६ ।	٠ ٩٩٠		• •
शेषस्३१७।	^{9 ह} ं शोष	٠٠٠.٩٩٦ ١	· 1—	123 58
शेफालिका. 🖁 🤟	³ शौक	902 1		
300 J	शौक्रिकेय	•	३० श्राणा	
होसुबी २८ १	गौक्या		্ব পান্ত	•
हेरकु ७२ ह	ं जाह	996 3	१३ श्राह्ये	
•	शौडिक		्रश्राय	२१६ १२
_*	शौंडी	•	७ श्रावण	٠٠٠ २५ و
केस१३२ १	। जारहारा <i>स</i>	4 9	५ श्रावि	
देखिरिक ··· ८९ ८ देख ··· ६४ ९	ूँ जोहि	··· ફ ર	· •	७ २८
• •	: डाँग्रे	•)०२	" र् १५७ ८२
	- गौलिवक		श्रीकंट	८३४
शैलूष { ७२ ३	·	986 9	श्रीप्रज	···· 4 98
(100)	२३ ध्योत	२१५ १	ਲਹਿਤ	•••• १४ ७३
शैवल ५५ ३	1.4	963 9	्री गारिक	· · · · ६ २ व
शैवालिनी ५४ ३	-	922 5	· ·	چ ۵۵ ∫
शेवाल ५५ ३	1 -		-11.1	···ં ી રફર પેરે
क्रेश्चव११० ४	्रयाम	₹9 9 7 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1	४ ४३ श्रीपाँग	का ७३ ४०
श्रोक ४२ २	1	•	Mouffe	•
काषा १२ २ क्रोबिष्केक्ष १२ ५	1	• -	श्रीफल	
	1	ि ७६ ५।	4	
(34.4)	241H	64 31	-	•
क्रोण र ३१ १५	~ i	(249 9x	1	
१ ४० २० कोणिक ••• ७६ ५०		43 96	· .	· ·
1. 1 of 1.	• (Z11711 •	••• >< 36	41 210	986 38

शब्गचुनामिका.

शब्दः पृष्ठम् स्रोकः	श्रम्:	पृष्ठम्	स्रोकः	इस्दः	१ष्टम् स्रोकः
श्रीवत्स •••• ७ ३०	शन्	96	ং ক্র	नहज	३७ १
श्रीवसकोछन६ २३	श्वनिश	78		वंड	१७५ ६२
श्रीवास १२७ १२९	श्वम	96	30	पंड	्र ११० ३५
श्रीवेष्ट१२७ १२९	,		5 ?		" તે ૧૪૨ ૬
श्रीसंज्ञ१२७ ३२४	49		158	पश्चिक	१६८ २४
श्रीहरितनी ७८ ६९		१ २८:		षष्टिक्य	• •
त्त२३८ ७७	श्वययु	997		dionia.	९ ४३
्रंश ३	श्रृति	••••9 €1			स.
आति﴿ १२१ ९४ │	श्रमुर	90		संयद संयद	•
(२३७ ७३	श्वशुरी		३ ३४६ १ ३४६		२०१ ४२
श्रेणि { ६७ ४	শ্বরূর্থ			संयाम	२१७ १८ २१७ १८
(104)	শ্বস্		-	संयुग	9
श्रेयस २६ २४	, ,	'० ११ <i>७</i> इ		1 -	तः । . । २०९ <i>९३</i>
श्रेयस् रू १ २०४ ५८	श्रम्		\$ 6 8	संराव	३६ २३
८ ७६ ५९	श्वसन .	_	< 4°	संछाप	• • •
श्रेयसी ८० ८४	श्वाविध	9		संवत्	२७४ १६
८२ ९७	भित्र		` ૱ ५ ४.	संवत्सर	•
त्रेष्ठ२०४ ५८	, , ,		० १२	संवनन	•
श्रोण१११ ४८	श्वेत .	₹ 12		संवर्त	
श्रोणि११७ ७४		{ २३	6 60	1	हा ···· ५६ ४ ३
श्रीणिफलक. ११७ ७४	L	۲ ۶		संवसय	•
श्रोत्र१२१ ९४	1	२६		संवाहन	
श्रोत्रिय१३० ६	ľ	च १८			£ 36 9
श्रीषट्२७३ ८	l .	٠ ३		संविद्.	्रे २९ ५
स्रहण२०४ ६१	श्रेतसुरस	fr v	10 2		्र४१ ९२
क्षेष२१५ ११		₹.		संवीक्षप	ग२१९ ३०
श्रेवाण११४ ६०		₹ ····9		संवी त	
क्षेप्पन्११४ ६२	षट्पद	٠٩	० ३९	संवेग	
लेपाल११४ ६०		••••		संवेद	=
श्रेष्मातक ७२ ३४	1	****		संवेश	
श्लोक२२२ २	षड्ग्रंथ	٠ ۱		संब्यान	· -
श्वःश्रेयस २७ २५	षष्ट्रभंथ		८३ १०	-	-
सद्धा ८२ ९८	ं बहुमंगि	कां	९२ वेप	४ । संशय	२९ ३

स्ट्र	- पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	सोकः	भूजाः	पृष्ठम्	लोकः
संशयाप्	त्रमानसः १	3414	सस्री	٢٥ و	12.	संग्राम	9 € 9	905
संभव	٠ ३९	4	संस्थ	••••१४३	98	संमाह	J 94¢	\$ •
संञ्जल	२	909	सगभ्य	9•8	ξ¥	1	j żat	32
संश्लेष	२१९	३०ं	समोत्र	9 0 9	•	संघ	१०२	x3
संसक	२•६	ĘC	स्रोध	968		संचात	{ `~ & ⊌	ર
संस र	••••१३२	94	संकट	30 F	_	_	ि १९५	३९
	∫ ξ∘	96	संकर संकर्षण	{¥		संचिव संजंबाल	२६२	२०६
संसरण	‴ र्रे २३४	44	संक्राक्टित	•	२५	l	٥٢	90
संसिद्धि	•••• 88	३७	संकल्प	٠.	९३	सञ	१५४ • ११	६५ ३
संस्कार	9२८	१३४	_	२८		सजन ••	{ 380	
संस्कारह	नि. १४०	48	संकसुक संकाश	jog	-	सळना	989	
संस्कृत	२३९	85	લકારા	989 Y&e)	२८ १	संचय	902	
संस्तर	२५४	9 6 9	संकीर्ण.	₹ 306	_	· ·	T90Ę	90
संस्तव	396	२३	4 107 10	(२३४		संजवन	···· €9	Ę
संस्ताव	३२०	३४		∫ ३५	98	संज्वर	98	ę̈́ο
संस्त्याय	२५२	949	संकुल …	1 3.0	८५	संज्ञपन	१६२	•
संस्था	•…₃≉६	२६	संकोच	9₹€	9 28	संज्ञा		
संस्थान	३४७	१२४	संक्रन्दन	90	80	संज्ञ	999	
संस्थित	१६३	330	संक्रम	396	२५	सटा	929	9.0
संस्पर्शा	९२		संक्षेपण	298	२१	संडीन	909	
संस्कोट	9 € 9		संख्य	१६१	308		€ 93.0	4
संहत	२०७		संख्या	२८	ર	सत् ••	' र् २३९	८३
	कि. १११	j	संख्यात	२०५	€&	सत्ततं	*** 38	Ę٩
संइतल	••••999		संख्यावत्	१३०	4	सती	jox	Ę
संहात	903	ł	संख्येय	965	८३	सतीनक	9€७	9 €
संहनन	99€	Į.	संग	२१९	२९	सत्तीर्ध्य	१३२	98
•	•••• ३३		संगत	३५		सत्तम	<u>२</u> ०४	46
सकल	२०५	36 3	संगम	्रिश्		सत्त्व	∫ २७	२९
सकृत्	•••२६९	1		6462	٠ ۱	414	`	२१३
सकुत्प्रज		1	संगर		366	सत्पथ	бо	•
	باه		संगीर्ण	२१२	308	सत्य	. ∫ ₹ξ	
सक्यि	990	- 1	संगृह	390	33		' रिश्इ	•
मखि	••••98३	17 '	संयह	•••• ३३	Ę,	सत्यकार	१७९	८२

सम्बंद्धिकम्बिका.

श्रम् १ एष्टम् सीमाः	शब्दः पृष्टम् स्रोक	: शब्दः पृष्ठम् स्त्रीकः
सत्यवचस्१३८ ४३	संतम२११ १०	सपिंड१०५ देव
सत्यकृति१७९ 🚜	संतमस ४५ ४	सपीति१७४ ५५
सत्यानृत१६४ ३	संवान { ११ ५३	सतकी१२४ १०८
सत्यापन१७९ ८२	1	1 2
सत्र२५८ १८१	संताप , १२ ६०	सप्तपर्ण ७० २३
समा२७२ ४	सतापित२११ १०	
सित्रन्१४४ १५	सदीन१७७ ७३	(100) **** \$
सत्वर १४ ६८	संदानित२१० ९५	THE COLOR
सदध्याज्य१३७ २४	संदाव१६२ ११	777727 39 38
सदन ६१ ५	संदित {२१० ९५	
सदस्१३२ १५		समझचारिन्. १३२ ११
सदस्य१३३ १६	संदेशवाच् ३५ १७	मार्जिका १०५ १३
सदा२७६ २२	संदेशहर१४४ १६	
सदागति १३ ६४	संदेह २९ ३	सभा १३२ १
सदातन२०६ ७२	संदोह१०२ ३९	(288 936
सदानीरा ५४ ३३	संदाव१६२ ११	भभाजन३१४ ७
सहक्१९१ ३७	संघा२४३ १०	र ंसभासद१३३ <u>१</u> ६
सहरा१९१३७	संघान१९२ ४२	*********
सहक्ष१९१ ३७	संधि { १४४ १८	सभिक्ष १९२ ४०८
सदेश२०५ ६७		(13. 3
सद्मन् ६१ ४	संधिनी१७७ ६९	
सचस्२७३ ९	संध्या २२ ३	1 3 7 3 3 9
सधर्मिणी १९ २०	सञ्जकहु ७२ ३५	1 1 1 1
सप्रश्रं२०० ३४	ंसबद्ध१४४ ६५	ू तमम •••र ५३ ५३
सनरकुमार ११ ५४	सस्रय२५२ १५ सिक्रकर्षण२१८ २३	सभीत र १९०
सना२७५ १७	सिक्छिष्ट२०५ ६६	
सनातन२०६ ७२	सिकावि२१८ २३	· MING 194 R4
सनाभि१०९ ३३	सिविका ६४ ३९	' : Aug i : 38' 49
सनि१३६ ३२	सपत्न१४३ १०	सम्बंधा३२५ ३५
सनिष्ठीव ३६ २०		
समीड२०५ ६६	सपरि {२७२ २	समधिक२०७ ७५
स्रोत्तर्त 👬 १४ ६९		THE 211 2 12
संतति१३० व	सपर्या ११३२ १६	संगतदुग्धाः ८४ १०६

शन्यः प्र	व्य श्लोकः	ग्रब्दः	पृष्ठम्	श्लोकः	878:	पृष्ठम्	सोकः
समंतमइ			२१२	945	समृह	1+%	
समन्वितस्य		समाइति	३३	Ę	समुख	933	•
समम्३६	8 Fe	समाह्य	9९३	κĘ	समृद	994	
{ :	१२ १		्र १३२	34	समृद्धि	२१५	
	१२ १४९		4 969	3.4	संपत्ति	940	68
समबा {२।	७१ २५३		८२३७		संपद्	···.95€	-
			9 € 9	- 1	संपराय	२५२	
समर्१		समिष्	६८		संपिधान	₹४७	324
· _	80 60	1	989		संपुटक	925	
_	४६ २५	समीप	२०५		संप्रति		-
समर्थक१		समीर	93	ξų	संप्रदाय	२१४	6
	क्ष ६७	समीरण.	र्व १३ ८०	६५ ७९	संबधारण	••••२५३	946
समवर्तिन्	-	समुचय	२१६	-	संप्रचारण	T98€	२५
समवाय१			२५२	349	संप्रहार	9 € 9	904
समष्टिला ९		_ ~ ~		909	संकुष्ट	ω۶	•
समसन२१		1	9 € 0	99	संबाध	२०८	64
समस्त२०	•		३०९	90	संबोधन	,२७३	Ę
समस्या ३	• •	समुदय	9•₹	80	संभेद	48	३५
्समाः ३ सर्मासमीना- १५	•		∫ १०२	80	rizen	} &&	३४
समासमाना- ३९ समाकर्षिन्: ३		समुदाय.	ी १६१	90€	(1314 ···	{ २१८	२६
समाघात१६	-	समृद्	२८१	96	संमद	२६	२४
समाज१	•	समुद्रक	9२९	१३९	संमार्जनी	६४	16
		समाद्गरण	२३४	44	संमूच्छन	२१४	Ę
समाधि … { ३४	(समृद्धत	9९८	२३	संमृष्ट	१७२	κÉ
()	3 & 6	समुद	४८	3	सम्बश्	३६	२२
समान { १९	, ३ ३७		r 22	९२	सम्राज्	••••१४२	ર
ે , ર ૪	७ १२७	समुद्रांता.	2 24	198	सरक	993	४३
समानोदर्य१०	९ ३४	Į	Lee	933	सरवा	95	₹
समार्छभ२१	९ २७		₹95		सस्ट	50	13
समावृत्त१३		समुद्र	₹१२	904	सरपा	९३	942
समासाच२०		-	२४३	1-3	सरीण	٠ ५٩	14
समासार्या ३		सभुपजीव	म्. २७३	90	सरदिन	995	LX
समाहार२१	€ 9 €	स मुब	٩٤	•	सरमा	966	44
			•				

शब्दः पृष्टम् स्रोकः	डाच्दः	पृष्टम्	स्रोक्:	इाव्ह:	पृष्टम् स्टोक्टर
<i>a</i>	सर्वमंगला.				908 44
सरक { १९५ ८	सर्वरस .				
सरलदव१२७ १२९	सर्वेह्ना	949	९३	सइस्≺	२५ १४ १६० १०२ २६७ २३३
सरला ८४ ९०८	सर्वलिंगन	,1३८	84		८२६७ २३३
सरस् ५३ २८	सर्ववेदस्			सहसा	२७३ ७०
सरसी · · · ५३ २८	सर्वसमहन	945	88	सहस्य	24 14 960 cr
सरसीवह ५५ ४०	सर्वानुभूति	CX	906		
सरस्वत्. {४८ १ १ १ १७	सर्वाष्ट्रभोर्ग	जेन्.१९८	२२		49 96 44 80
	सर्वाभीन .	328	२२		
सरस्वती. { ३२ ९ ५४ ३४	सर्वाभिसा	t. 948	88		97 946
	सर्वार्थिसद	٠ ٧	94	-	969 80
सरित् ५३ २९	सर्वाघ				68 \$89
सरित्पति ४८ ३ सरीसुप ४६ ७	सर्वप	१६७	90		২৭ ২ ৭ ৭০ ৮৩
सर्ग२२७ २२	संख्लि	٠٠٠٠ ٧٧	३ ।		
सर्ज ७४ ४४	सक्रकी	८७	१२४		9 43 63
सर्जक ७४ ४४	सव	१३२	93	सहा	\ 65 m2 \ 64 992
सर्जरस१२७ १२७	सवन .	935	४७ .		. 944 69
सर्जिकाक्षार. १८४ १०९		१४३	35	-	२२१ ४१
सर्प •••• ४६ ६	1	···· २१	39		१९९ ३१
सर्पराज ४५ ४	1 _	२०५	• 1		५૦ વેર
सर्पिस्१७३ ५२	1	२०५	• ,	सांयुगीन ••	948 00
सर्व२०५ ६४	1	३०८	,	सावत्सर	988 38
सर्वेसहा ५७ ३]	9५३	. ,	सांशयिक ••	984 4
सर्वज्ञ र ११३	1	६९		साकम्	२७२ ४
भुष्ट भारत	सस्यमंजरी	•		साकल्य	
सर्वतस्२७४ १३	सस्यज्ञ्क	-			.२७० २४४
सर्वतोभद्र. { ६२ १०	सस्यसंवर .			सागर	
	सह		}	साचि	
सर्वतामदाः ७२ ३५ सर्वतामुखः ४८ ४	सहकार .				२२१ ३९
सर्वदा२७६ २२	सहचरी .			सात	२३६ ६७ २७९ ९
सर्वेषुरावह१७६ ६६	सहज सहघार्मणी				··888 #4
सर्वेषुरीण१७६ ६६	!		•		80 3€
4.24.1 1111116 64	सहन .	***177	41	याप्रतका ••	0- 14

शब्द:	पृष्ठम् -	स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम्	ह्रोक:	शब्द:	पृष्ठम् स्र	कः
	943 388		MICHU 4	२७४ २७ ६			१९६ १ १८२ ९	
•••	રં૪૬			३२२	2	<u>.</u>	980	
	१९१ १२०८	३७ ८२	27 T/77	{ २७५	३ १९	सिंहास्य	८३ १	१०३
साधित साधिष्ठ ••				६८ १२५६			{	
,	२६८ (१३० (२०३	३	सारंग	९८ २२७ २६६		सिकतामय	२३७ I ४९ I ५९	\$
साधुवाहिन्:	(२४२ १५०	88 303	सारमेय .	94₹ 966	५९ २१	सिक्यक.	(4
साध्वस	४ ४१ १०४	२१	सारव •	५५ { ५५ { ९८	V.	सित	₹9 ₹9° ₹99	93 94 96
• • •	٤٢	۲.	सारसन	∫ १२४ { १५३	१०९ ६३	सितछत्रा	₹₹ 99	१५२
स्रांत्व	१४६ १३५	96	सारिका • सार्थ • सार्थवाह •	१ ०२			. { 90€ 20€	
सोद्दष्टिक सोद			साई .	२१२ २७२	१०५	1	9२७ त ५५	83
सोद्रक्षिग्धः साम्राप्यः			सार्वभौमः	(8	सिद्ध ••	∵{२११ २९	300
साप्तपदीन • साम •			साल	E9		सिद्धार्थ सिद्धि		36
सामन्	्र १४१	२ ३ ५ २१	साला साला			सिध्म सिध्मल	993	५३
सामाजिक	93		साइस	6063	63	}	३७९	3.
सामान्यः सामि •	₹ ₹•		साहस्र	` { २२२ ८९५	४३	सिघका	३७८	2
सामिधेनी		४ २२	1418	6 /	49 90"	~	છી… ૧૪ … ૭૮	
सा <u>भ</u> ुद् सौपरायिक	9 ફ	9 3 01 9 3 01	सिंहनाद सिंहपुच्छी				७८	-

शब्द:	पृष्टम्	积两;	शब्द:	पृष्ठम्	स्रोकः	शब्द:	१ष्टम् श्लोकः
सिंद्र	923	9 • 4	सुगंधि	∫ ₹°	39	सुमनस्	8 6
•					929	सुमनस	٠٠٠. ١٩ ع
- Since	४७	2	सुचरित्रा ए डेट क		ξ.	सुमना	७८ ७२
सिंधु,≺	४८ ८२४२	9 9	सुचेलक	924	396	20.11.	स्६९ १७
सिंधुज	909	४२	सुत	1900 1234	२७ ६०	सुमेरु	११ ५२
सिधुसंगम		34	सुतश्रेणी		66	सुर	···· 8 3
_ ~	9 २ ७	926	सुतात्मजा		२९	सुरंगा	२७८ ८
_ *	9 ६ ६		सुत्रामन्		४५	सुरज्येष्ट	•
_	٠٠،٩ ६ ٢		सुत्या	938	80	सुरदीधि	का११ ५२
_	१९२		. सु त्वन्	933	90	सुरदिष्	•••• ५ ३२
			, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	७	२ ९	सुरनिम्न	गा५४ ३३
	२ ८२		. •	१४६	२८	सुरपति	90 × E
सीमन्तिनीः	_	-		२०६	ĘŞ	1	१ २५ १८
_	Ę&		2	99	49	सुरभि	4 A
-	9 € €		3,4,11	99	49		्२४९ १३७
सीरपाणि			सुधा	. { २४३	3 o द	सुरभी	८७ १२३
_	२ <i>१४</i>		सुधांशु	96	98	सुरपि	99 49
_	१८३		। खगाङ : सु धी	930	4	सुरलोक	૪ ξ
_	८४ 		्रुनासीर सुनासीर	•	88	सुरवर्मन	···· 94 9
_	(२७२	2	सुनिषण्णव		988	सुरसा	८५ ११४
सु	(२७३	4	संदर	२०३	५२	<i>`</i> सुरा	१९१ ३९
सुकंदक -	۰۹۰	१४७		१०३	8	सुराचार्य	••• २० २४
सुकरा .	१৬७	00	सुपिन्	···· ξο	9 &	, मुरामंड	१९२ ४३
सुकल •	१९५	C	सुपर्श	···· `c	39	सुरालय	१९ ५२
	२०७		सुपर्वन्	४	9	सुराष्ट्रज	८८ १३१
सुकृत .	२६	२४	सुपार्श्वक	98	8.ई	सुत्रचन	३५ १७
सुकृतिन् .	9 ९ ४	ે ર	सुप्रतीक	۹٤	R	सुवर्ण	100 €
77727	र्ग २७	24	; =	ाशिख १ ५४	१६८		``` रे १८२ ९४
सुख	१२८३	•	सम्राप	३५	96	सुवर्णक	७ १ २४
सुखवर्षक.	9८४	908	i -	وه و	२४	सुविह	८२ ९५
सुखसंदीखाः			सुभिक्षा	وی	358		00 00
सुगत •	٠ ٧	•	सुम	٠ ६९	90	सुत्रहा	4 994
सुगंधा •	ሪկ	. 338	सुमन	9 € ′o	36		(८६ ३१९
	ર	Ę					

सुवहा	शन्दः	पृष्ठम् स	होकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्टम्	श्लोकः
सुवासिनी १०४ ९ सूना १४४ ११ ११ स्वमा १८४ ११ ११ सूना १४४ ११३ स्वमा १९४ ११ सूना १५४ ११ ११ सूना १५४ ११ ११ सूना १६४ ११ सूना १६४ ११ सूना १६४ ११ सूना १६६ ११ सूना १६६ ११ सूना १६६ ११ सूना १६६ ११ सूना १५६ ११ सूना १६६ ११ सूना १५६ ११ सूना १५६ ११ सूना १६६ १६ सूना १६६ १६ सूना १६६ १६ सूना १६६ १६ सूना १६६ १६६ सूना १६६ ४९ सूना १	सवहा	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \		स्त्रवेष्टन	₹9८	२४	सनामुख	३५६	69
सुनता१७७ ७१ सुना१९७ ११ सुना१९५ १११ सुना१९१ १११ सुना१९१ १९ सुना१				He		२८	सेनारक्ष	9५३	६१
सुषमा १९ १५ सुन १५ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १६ १९ स्वा १९ १९ स्व १९ १	_	ी ••••ी ० ४	٩. ا	24	'' रे २४१	89	सेवक	१४३	9
सुषमा १९ १७ स्नृत १५ १९ सांच्य ९३ १६४ सुषमा १९ १७ स्प मार १६९ २७ सुषमा १६९ २७ स्प मार १६९ २७ स्प मार १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १५ स्प १९६ १६ स्प १९६ १५ स्प १९६ १६	सुद्रता	وه و	9	स्ना	२४५	993	सेवन	३१४	4
सुषमा 9९ १७ सुनृत ३५ १९ सिव्य ९३ १६४ सुषवी १९ १५ सुषकार १६९ २७ सिहिकेय २० २६ सुकत १९ १ सुर १० १८ सुर सुर १० १९ १५ सुर १० १९ १५ सुर १० १९ १५ सुर १० १९ १५ सुर १० १९ १५ सुर १० १० १६ सुर १० १० १६ सुर १० १० १६ सुर १० १० १६ सुर १० १० १६ सुर १० १० १६ सुर १० १० सुर सुर १० १० सुर १० १० सुर .	सुषम	२०३	42	स्नु	····300	२७	सेवा	१६४	2
सुष्वी	सुषमा	۹۹ ،	90	स्नृत	३५	98	1.	-	
सुषि	सपदी			सूपकार	१ ६९	२७			•
सुषि	3	(101	રૂ.હ	सूर					
सुषिर १९ ३ स्रांत १९६ १५ सिनिक १५३ ६१ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १९ ३२ स्रम्त १४ ३२५ स्रम्त १४ ३२५ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ १९ १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्रम्त १४ स्र				•	٠ ९२	940	1		-
मुनिरा ८८ १२९ सूरस्त २१ ३२ से संघव ११५० ४४ सूर्यीम १९ १९ सूर्यों १९१ ३५ सुनिया १८ १५ स्वर्य १९१ ६१ स्वर्य १८०२ २ स्वर्य स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८३ १५७ स्वर्य १८४ १६६ स्वर्य १८४ १६६ स्वर्य १८४ १६६ स्वर्य १८४ १५ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ स्वर्य १८४ १४ स्वर्य १८४ १६४ स्वर्य १८४ १४ स्वर्य	सु।का -		-				l		
सुषित १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुषेत १९ १९ सुष्त १९ १९ सुष्ट	•	-	•	•	-		130		•
सुषा	~						सेधव	,	
सुषण ८४ १०८ सूर्यं २० २८ सिंग्यो १०६ १८ सूर्यं प्रिया १४ ३२ स्यं प्रिया १४ ३२ स्यं प्रिया १४ ३१७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १४३ १५७ स्यं प्रिया १५३ १५७ स्यं प्रिया १५३ १५७ स्यं १५० १५० स्यं १५० १६० स्यं	•							_	
सुषाणका १८ १० स्पर्यंतनया १४ ३२ संग्रिं १०६ १८ स्पर्यं प्रिया २५२ १५७ संग्रिक १७६ ६४ स्पर्यं हुस्तं गम २३ ८ संग्रिक १७६ ६४ संग्रिक १५ ४ संग्रिक १५ ४ संग्रिक १५ ४ संग्रिक १५ ४ संग्रिक १५ ४ संग्रिक १५ १५ १५ संग्रिक १५ १५ संग्रि	•		•	·			सेन्य …	2 '	•
सष्टु र १ १ १ स्पंप्रिया २ १ १ ५ सेरिक १ १ ४ स्पंट्रसंगम २ १ ८ सेरिक १ १ ४ स्पंट्रसंगम २ १ ८ सेरिक १ १ ४ सेरिक १ १ ४ सेरिक १ १ ४ सेरिक १ १ १ ४ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ ५ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ १ १ १ १ सेरिक १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	सुषणिक	٧٠ ٦	406	1 -			सैरंधी	- ,	
ससंस्कृत१७२ ४५ स्विंह्य१९८ ११ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३५ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ३६ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९ स्वंह्य१९४ ६९	मच .		-	,			1		
ससंस्कृत १९४३ १२ सृक्षिणी १२० ९१ सेरेयक १९ ९५ सृष्ट्य १९४३ १२ सृणि १९५८ ११ सोट्य १९०९ ३४ सृष्ट्य १९३४ स्मृणि १९३५ सोपप्रत्र १९३५ स्मृणि १९३५ सोपप्रत्र १९३५ स्मृणि १९३५ सोपप्रत्र १९३८ सोपप्रत्र १९३८ स्मृणि १९३५ सोपप्रत्र १९३८ सोपपान १४३० स्मृणि १९३५ सोपपान १४३० स्मृणि १९३० स्मृणि १९३० स्मृणि १९३० सोपपान १९३४ सोपपा १९३४ सोपपा १९३४ स्मृणि १९३४ स्मृणि १९३४ स्मृणि १९३४ सोपपा १९३५ स्मृणि १९३४ सोपपा १९३५ स्मृणि १९३४ सोपपा १९३५ स्मृणि १९३४ सोपपा १९३४ सोपपा १९३४ स्मृणि १९३४ सोपपा १९४४ सोपपा १४४ सोपपा १४४	58 .	… { २७५	98	1 Tan .			L	,	•
सुहृद्१४३ १२ सुहृद्य१९४ ३ सुहृद्य१९४ ३ सुहृद्य	ससंस्कृत	।१७२	४५	,			1 _		_
सुह्रय१९ ३ सृणि१४९ ४१ सोदर्य१९९ ३४ स्कर१९ ३४ स्णिका१९ १५ सोपप्लव१९ १४ सोपप्लव१९ १५ स्वित१९ १५ सोपप्लव१९ १५ स्वत१९ १६ सेवत१९ १६ सोपप्लव१९ १५ स्वत१९ १५ स्वत१९ १६ सेवत१९ १६ सोपप्लव१९ १५ सेवत१९ १५ सेवत१९ १५ सेवत१९ १५ सेवत१९ १५ सेवत१९ १५ सेवत१५ १५ सेवत१९ १६ सेवत१५ १५ सेवति१९ १६	सुहृद्	૧૪રૂ	१२				1		
स्कर ९५ २ सृणिका१९ १५ सोनमाइ१९ २३ स्क्ष्म १९ १५ सोनमाइ१९ १० सोपप्र १४ १० स्वक२०२ ४७ सृपाटी२८६ ३८ सोपान ६४ १८ स्वन२४५ ११५ सृमर ९६ ११ सोमां १९ १४ सोम १८ १४ स्वन५० १३ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३० ३९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१३१ ९ सोमपा१५० १६ सोमपा	सुहृदय	3 6.8	३						
स्हम {२०४ ६१ सृति ५९ १५ सोपप्रत २४ १० सृपदी२८६ ३८ सोपान ६४ १८ सृमर ९६ ११ स्मर ९६ ११ सृमर ९६ ११ सोमांजन ७२ ३१ सोम १८ १४ सृष्ट२३० ३९ सोम १८ १४ स्मर ५० १३ सोमपीथिन. १३१ ९ स्मर १९ १४ सेतु १९ १४ सोमपीथिन. १३१ ९ सोमपाणी ८२ ९५ स्तिमास १९० ३९ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७ सोमवल्का १९ १३७	सुकर	٠٠٠. ٩٩	ર	-			1 .		•
स्वक२०२ ४७ सृपाटी२८६ ३८ सोपान ६४ १८ सृचक२०२ ४७ सृमर ९६ ११ सोर्भाजन ७२ ३१ सोम १८ १४ सृष्ट२३० ३९ सोम १८ १४ सृष्ट२३० ३९ सोम १८ १४ सृष्ट२३० ३९ सोमपा१३१ ९ स्वन ५० १३ सोमपा१३१ ९ स्वन ५० १३ सोमपा१३१ ९ स्वितकागृह ६२ ८ सेना१४६ ७८ सोमवह्न ६२ ८ सेना१४७ ३३ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९३७ सोमवह्न ८९ ९५			६१	, -		•	1 _ `		
स्वन२४५ ११५ सृमर ९६ ११ सोमांजन ७२ ३१ स्वन२७८ ८ सृष्ट२३० ३९ सोम १८ १४ स्वि२७८ ८ सेकपात्र ५० १३ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमपी थिन्. १३१ ९ सोमवर्क. १२४ ९ सोमवर्क. १२४ ९ सोमवर्क. १२४ ९ सोमवर्ष्ठका ८९ ९५ सोमवर्ष्ठका ८९ ९५ सोमवर्ष्ठका ८९ ९५	सूरम •	… તેુ રુષ્	388						
स्चन२४५ ११५ हुए२३० ३९ सोम १८ १४ स्चि२४० ८ सोमपी थिन. १३१ ९ १३४ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ सोमपी थिन. १३१ ९ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६	स्चक	२०२					1		
स्वि२७८ ८ स्कामत्र ५० १३ सोमपा१३१ ९ स्त १० १३ सोमपीथिन. १३१ ९ स्त १० १३ सोमपीथिन. १३१ ९ सोमपाजी ८२ ९५ सेत् १५९ १४ सोमपाजी ८२ ९५ सोमपाक्त. १५९ १६ सोमपाजी ८२ ९५ सोमपास११६ ७८ सोमपास११० ३२ सोमपाक्त. १२४ ९ सोमपाक्त. १९१६ ९ सोमपाक्त. १९९६ सोमपाक्त. ८२ ९५	स्चन	२४५	994	i -					• .
स्त १९११ सेचन ५० १३ सोमपीथिन. १३१ ९ १८ १९ १८ ३ सेतु १९ १४ सोमराजी ८२ ९५ सेतु १५९ १४ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्क. १२४ ९ सोमवल्क. १८१ १९ स्त्यान१८ १९ सोमवल्का ८२ ९५	सूचि	२७८	C	· -			1 [
स्त १८५ ३ १८५ ३ २३५ ६२ स्ति १७१ २५ स्तिकागृह ६२ ८ स्तिमास १९० ३२ स्तिमास १९० ३२ स्तिमास १९० ३२ स्तिमास १९० १९	•	(१५३	५९		=	•	1		_
्रिड् ६२ सितु े ७१ २५ सोमवल्क. े १२४ ९ स्तिकागृह ६२ ८ सेना१५६ ७८ सोमवल्क. े १२४ ९ स्तिमास१९० ३९ सोमवल्का ८९ १३७ स्त्यान१८८ १९ सेनावी ८९ ९४	2276	٠ - ر	59	सचन	-	•			
स्तिकागृह ६२ ८ सेना१५६ ७८ सोमवल्क. १२२४ ९ स्तिमास१९० ३९ सेनांग१४७ ३३ सोमवल्का ८९ १३७ स्त्यान१८८ १९ सेनांग१४० ३३ सोमवल्का ८२ ९५	Ø., •,	1	-	सेत	2		ું લામરા ખ		
स्तिमास १९० ३९ सेनांग १४७ ३३ सोमवह्नरी ८९ १३७ स्त्यान १८८ १९ सनावी ९ ४२ सोमवह्निका ८२ ९५	_		•	i.	•		सोमवल्क	7 22 X	. 6 . 6
स्त्यान१८८ १९ मनावी ९ ४२ सोमविष्ठिका ८२ ९५		•	6				1		
मनावी	स्रिमा	H990	३९	सर्नाग	380	३३	;		
सूत्र१८९ २८ प्राप्तामा १ १५३ ६२ सोमवल्लां ४० ८३	सूत्यान	•		में बाबी	,	•	_		
	सूत्र	۶۵ و	२८	Mattale	(9 4 3	६२	ं सामवली	20	८३

হাৰ্ক:	पृष्ठम श्लोक	: शब्देः	पृष्ठम् श्लोग	ন: হাত্ত্:	पृष्टम् श्लोकः
सोमोद्भवा	५४ ३२	स्तानत	۷ وو'	स्थली	٠٠٠ ٢٥ ٩
	भि ३६	3	•	स्थितिर	११० ४२
सागधिक.≺	८ ९४ १६१ ८१८३ १०३		मन् ९५ २	स्थविष्ठ	२१३ १११
सौचिकं	•		. ∫ ६८ ९		८ ३६
सौदामनी		İ	·· { 9 & 0 2 9	1	४ ६७ ८ (२३३ ४९
सौध ••			tे१६७ २१	+41160	१३८ ४५
सौभागिनेय.	१०७ २४	स्तंबघन	• • • • • •		1984 98
सौम्य	२०२६	स्तवन्न	• •	.	''{ २४५ ११७
* *	। २० २६ १२५४ १६१	स्तंबरम स्तंभ	• •	स्थानाय	···· ६० 9
सारभय	१७५ ६०	स्तव	\	' स्थान	२७४ ११
सौरभेयी ••		स्तिमित	···· ३४ ११ ···.२१२ १०	: स्वापत्य	१४२ ८
सीराष्ट्रिक … सीरि …		स्तुत	२१२ ११	े स्थापना	···· 60 68
-	२० २६ [.] १७२ ४३	स्तुति	३४ ११	स्थामन	9 ६० १० २
सौवर्चेल. {	100 04	1	उका. ३५९ ९७	्रस्थायुक	१४२ ७
3.0	.१४२ ८	स्तुप	२/२ १९ २८२ १९	स्थाल	२८५ ३२
सौविदस	.१४२ ८	स्तन	9८९ २४	स्थाली	१६९ ३१
(. ७३ ३७	स्तेम	२१९ २९	ं स्थावर स्थाविर	२०६ ७३
	१७१ ३९	स्तेय	968 24	स्थासक	११० ४० १२६ १२२
	१८३ १००	स्तैन्य	968 24	स्थास्नु	२०६ ७३
	१४ ४७ १	स्तोक	२०४ ६१		Cauc sa
स्कंद	. ९४२ ६८१०	स्तोत्र	ई४ ११	्रिशिति	ં (રંગ છે રંગે
. 1	६८ १० ११८ ७८	स्ताम	, {१०२ ३९	स्थिरतर	२०६ ७३
ŧ	२४२ १००		'` { २५० १४१	स्थिरा	५७ २
स्कंथशाखा	ود ع	स्री	,१०३ २	स्थिरायु	(01 111
स्कन्न	२१२ १०४	क्राधामणा स्त्रीपुंस	ा१०६ २०		(00 0 2 4
	४४ ३६	स्यगार स्यगार	····909 3८ ···· ६२ 99	स्थूणा	1 2 3 3 4 9
स्खालेत	१६१ १०८		93 17 933 96		(any ca
	990 60	_	यिन्.१३८ । ४४	स्थ्ल	1 3 65 50
स्तनंधयी	3	स्थपति	∫ १३१ ९		984 €
स्तनपा		त्यमात	रिवेशे ६१	i -\	त. १२५ १ १६
स्तनायित्नु	₹ 9 €	स्थल	५७ ५	स्थ्लाचय	२५२ १४८

स्थेयत्	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्द:	पृष्ठम्	श्लोकः	शब्दः	पृष्ठम	श्लोकः
स्योणेय ८८ १३२ २०८ ८१ स्वास्त १५० ४६ स्वास्त १५० ४६ स्वास्त १५० १६ स्वास्त १५० १६ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास्त १६६ १२४ स्वास १६६ १४	स्थेयस्				f em	10		१३४	24
स्थारिन१५० ४६ स्थारण२१४ ५ स्थारण२१४ १ स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१५ १० स्थारण२१६ १० स्थारण२१६ १० स्यारण२१६ १० स्थारण२१६ १० स्यारण२१६ १० स्थारण२१६ १०		66	१३२	4.0c	" रे २०८	63	श्रुत		
स्थील्थ२६० १९५ हिंगुरण२१५ १० ह्युवा ८० ८३ हिंगुरण२१५ १० ह्युवा हुआ ७३ ३७ हिंगुरण२१५ १० ह्युवा ७३ ३७ हिंगुरण२१५ १० ह्युवा ७३ ३७ हिंगुरण२१५ १० ह्युवा ७३ ३७ हिंगुरण२१३ १० ह्युवा ७३ ३७ हिंगुरण२१३ १० ह्युवा ७३ ३७ हिंगुरण२१३ १० ह्युवा ७३ ३० हिंगुरण२१३ १० ह्युवा ७३ ३० हिंगुरण ०३ १० हिंगुरण ०३ १० हिं	स्थौरिन्			स्फुटन	••••२ १४	ч	स्रव		
स्व	स्थोल्य			स्फुरण	۶ و چ	90	1 —		
स्नातक१२८ ४३ स्नान१६८ १२२ स्नान१६८ १२२ स्नान१६८ १२२ स्नान१६८ १२२ स्नान१६८ १२२ स्मान१५८ १२८ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १८ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १४ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ स्मान१५८ १३५ समान१५८ १३५	स्रव	२१५	9	स्फुरणा	394	90	सुवावक्ष		•
स्नान	स्नातक	9₹८	४३	स्फुलिंग	···· 92	Ęo		(h.	0.6
स्नायु ११ ६६ ११ १८ ११ १८ ११ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८	स्नान			स्फूर्जक	სვ	३८	क्षातम्	'' 🕽 २ ६ ७	२३४
स्निम्ध श्रिक १२ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८ १८				स्फूर्जथु	90	90	स्रोतस्विन	î 48	३०
स्निया			-	स्फैष्ठ	२१३	992	स्रोतॉजन	\$56	900
स्नु ६५ ५ स्मर ७ २६ स्वच्छंद १९६ १५ स्नुक् ८४ १०५ स्मरहर ८ ३५ स्वजन १०९ ३४ स्नुका १०० ९९ स्मृत १३६ ६ स्वतंत्र १०९ ३४ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ३५ स्वतंत्र १०९ ६६ स्वतंत्र १०९ ६६ स्वतंत्र १०९ ६६ स्वतंत्र १०९ ६६ स्वतंत्र १०९ ६५ स्वतंत्र १०९ ६६ स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ ६० स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १०९ १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०४ स्वतंत्र १००० १०० स्वतंत्र १००० १०० स्वतंत्र १००० १०० स्वतंत्र १००० १०० स्वतंत्र	स्निग्ध	1	_	E TT	∫ २७३	ሄ	x 24	1909	३४
स्नु ६५ ५ स्मरहर ८ ३५ स्वच्छंद १९६ १५ स्मरहर ८ ३५ स्वच्छंद १९६ १५ स्मरहर ८ ३५ स्वच्छंद १९६ १५ स्वच्चंद १९६ १५ स्वच्चंद १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १५ स्वचंच १९६ १६ स्वचंच १६६ १६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६६ स्वचंच १६६ १६					े १७५	30	₹9 •••	``र्रे २६३	233
स्नुत	स्रु	٠٠٠ ﴿ ٢	4	स्मर	6	२६	स्त्रक्तंत	∫ १९६	94
स्नुषा१०४ ९ स्नुही ८४ १०५ स्नेही ८४ १०५ स्नेह ४२ २७ स्पर्श १२६ ७ स्पर्श १३६ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३६ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३५ १० स्पर्श १३६ १०	स्नुक्			स्मरहर	¿	३५		. J 360	3 €
स्नृही ८४ १०५ स्नेह ४२ २७ स्मेह ४२ २७ स्मेह ४२ २७ स्मेह ४२ २७ स्मेह ४२ २७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६७ स्मेह १३ ६० स्मेह १३ ६० स्मेह १३ १०	स्नुत	२०९	९२	स्मित				۶۰۴	३४
स्नेह ४२ २७ स्यद १३ ६० स्विति१५८ ९२ स्यद्न १३ ६० स्यद्न १५१ ५९ स्यद्न १५१ ५० स्यद्न १५१ ६० स्यद्ग१९५ ६० स्यद्ग१९६ ६० स्यद्ग१९५ ६० स्यद्ग१९५ ६० स्यद्ग१९५ १३५ १२५ १२५ १३५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२५ १२	स्नुषा	•••• d o &	9	स्मृति	ु ३३	•		३९६	94
स्पर्श { २९ ७ स्यंदन { ७१ २६ स्वन ३६ २२ स्यंदन { १११ ५१ स्वनित २१० ९४ स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदना १५६ १० स्यंदन १६६ स्यंदन १५६ १० स्यंदन १६६ स्यंदन १६६ स्यंदन १५६ १० स्यंदन १६६ स्यंदन	स्नृही	ሪሄ	304	. 6.4.60				••••३	6
स्पर्श	स्नेह	४२	२७	स्यद			स्त्रधिति	946	९२
स्पर्शन १३६ ६४ स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५३ ६० स्यंदनारोह १५५ ६७ स्यंदनारोह १५५ ६७ स्यंदनारोह १५५ ६७ स्यंदनारोह १५५ ६७ स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ १५६ स्यंदनारोह १५६ ६० स्यंदनारोह १५६ १५६ स्यंदनारोह १५६ १५६ स्यंदनारोह १५६ १५६ स्यंदनारोह १५६ १६६ स्यंदनारोह १६६ स्यंदनारोह १५६ १६६ स्यंदनारोह १६६ १६६ स्यंदनारोह .	xusî			स्यंदन	∫ ७१	२६	स्वन	३६	२२
स्पश्चन ११६ २९ स्यहिनी११५ ६७ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०९ ९२ स्यप्न२०४ ५ स्यप्न२०४ ५ स्यप्न२०४ ५ स्यप्न२०४ ५ स्यप्न२०४ १६ स्योनाक ७६ ५७ स्यप्न२०४ १६ स्योनाक ७६ ५७ स्यप्म२७४ १६ स्याप्म५७४ १६ स्यप्म५७४ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५७५ ६३ स्यप्म५५५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५ १३५	₹ 7₹(स्वनित	२१०	88
स्पन्न १११ ९ स्यह ११९ ६७ स्यम् ११९ ६६ स्यम् ११९ ९६ स्यम् ११९ ६६ स्यम् ११९ ६६ स्यम् ११९ ६५ ११९ स्यानाक ७६ ५७ स्यानाक ६० १० स्यानाक ६० १० स्यानाक ६० १० स्यानाक ६० १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक १० स्यानाक	स्पर्शन						स्बप्त	४४	३६
स्पष्ट२०८ ८१ स्यूत १६९ २६ स्वभू ६ ११ स्वयंत२०४ ७ स्यूत२९४ ५ स्यांत२९४ ५ स्यांत२९४ ५ स्यांत२९४ ५ स्यांता ७६ ५७ स्यांता ७६ ५७ स्यांता ७६ ५७ स्यांता ७६ ५७ स्यांता ५ १६ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांना ५ १६ स्यांना ५ १६ स्यांना १९५ ९ स्यांना१९५ ९ स्यांना१९५ ९ स्यांना१९५ ९ स्यांना१९५ ९ स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ १० स्यांना१९६ स्या		•				ι	स्त्रप्रज्	۰۰۰،३۰۰	33
स्पष्ट२०८ ८१ स्यूत १११ १०१ स्वयं१०४ ७ स्यांत२१४ ५ स्यांत२१४ ५ स्यांत२१४ ५ स्यांत२१४ ५ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ७६ ५७ स्यांनाक ११६ स्यांनाक ११६ स्यांनाक११५ ९ स्यांनाक११५ ९ स्यांनाक११५ ९ स्यांनाक११५ ९ स्यांनाक११५ १०० स्थांना११६ स्यांनाक११५ १०० स्थांना११५ ९ स्यांना११६ स्या	स्पशः			स्यन्न		,	स्वभाव	88	३८
स्पष्ट २० १४ स्यति२१४ ५ स्प्रका ८८ १३३ स्योनाक ७६ ५७ स्प्रका ८२ ९३ स्योनाक ७६ ५७ स्प्रका ८२ ९३ स्योनाक ७६ ५७ स्प्रका ८२ ९३ संतिन ७१ २८ स्प्रिंह२१५ ९ सज्२१५ ९ स्प्रहा ४२ २७ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९ स्प्रहा४६ ९ सवद्गर्मा१७७ ६९		• •		स्युत	1968	२६	स्वभू	ξ	99
स्पृक्ता ८८ १३३ स्योनाक ७६ ५७ स्योम् ५ १६ स्पृक्ता ८२ ९३ स्योनाक ७६ ५७ स्योम् ५ १६ स्पृक्ता ११ ९ सज् ११ ९ सज् ११ ९ सज् ११ ९ स्वर्टा ४२ २७ सवहर्मा १७७ ६९ स्वर्टा ४६ ९ सवहर्मा १७७ ६९ स्वर्टा ४६ ९ सवहर्मा १७७ ६९ स्वर्टा ४६ ९ सवहर्मा १७७ ६९ स्वर्टा ११ ९ स्वर्टा ११ ९ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १७ स्वर्टा ११ १६							,	806	৩
स्प्रज्ञा ८२ ९३ स्थानाक ७६ ९७ स्वयंभू ५ १६ स्प्रज्ञा ८२ ९३ स्वंसिन् ७१ २८ स्वयंभू ५ १६ स्प्र्र्ण १४ ९ स्वयं १४ ६० स्वयं १४ १० स्वयं १४ स्वयं १४ १० स्वयं १४ १० स्वयं १४ १० स्वयं	-		,				स् वयम्	२७४	9 €
स्पृष्टि२१५ ९ सज्२१५ ९ सज्२१५ ९ सज्२१५ ९ सज्२१५ ९ स्पृष्टि४२ २७ स्पृष्ट्४२ २७ स्पृष्ट्४२ २७ स्पृष्ट्४५ १० स्पृष्ट्४६ ९ स्पृष्ट्४५ ३० स्पृष्ट्४६ ९ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १७ स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ १० स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्५ स्पृष्ट्	-				•	- (स्वयंभ्		•
स्पृहा ४२ २७ स्त्र २१५ ९ स्त्र २१५ ९ स्तर ४१ ६० १ स्तर ४६ ९ स्तर्ता ५४ ६० स्तर ११५ १३७ १ स्तरा २१५ ९ सहित ११६ १० स्तरा २१५ ९ सहित ११७ १० स्तरा २१५ १३७ १ स्तरा २१५ ६३ सस्त २१२ १०४ स्तरा ४४ ३८			វ	•			rar	_	•
स्प्रष्टु२१६ १४ सवद्गर्भा१७७ ६९ स्परा४६ ९ सवंती ५४ ३० स्प्रात२१५ ९ सष्टु ५ १७ स्प्राद२९५ ६३ सस्त२१२ १०४			3				रवर् …		
स्फात२१५ ९ सवंती ५४ ३० स्वरु ५ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १७ स्वरु १ १० स्वरु १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	-		1	_			Fat	्र ३२	ሄ
स्फाति२१५ ९ स्वष्टु ५ १७ स्वर्ष १ १० स्वर्ष १ १ १ १ स्वर्ष १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	_		Į.			•	, , , , , ,	१ ३७	9
स्फार२०५ ६३ सस्त२१२ १०४	_					३०	स्वरु		•
お客で J V V					···· 4	90	· ************	१ २५५	१३७
स्फिन्११७ ७५ 'स्राक२७२ २ । राजा } २४८ १३१	_ ' '		• • •				स्त्ररूप		
	स्फ़िच्	996	94	स्राकः	२७२	2	1787	` रे २४८	353.

स्वर्ग ४ ६ स्वीरिता २१३ २ स्वीरिता २१३ २ स्वर्ण १८६ ८ स्वीरित् १९६ १५ स्वर्ण साराज् १८६ १७ स्वास्त १८३ १८ स्वरंद १९३ १९ स्वरंद १९३ १९३ स्वरंद १९३ १९४ स्वरंद १९३ १९४ स्वरंद १९३ १९४ स्वरंद १९३ १९४ स्वरंद १९३ १९४ स्वरंद १	वब्द :	पृष्ठम् १	होकः	शब्द:	पृष्टम्	स्रोकः	शब्दः पृष्ठम् स्होकः
स्वर्ण १८२ ९४ स्वर्णकार १८६ ८ स्वर्णकीरी ८९ १३८ स्वर्णकीरी ८९ १३८ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवी ११ १५ स्वर्णवा ११ १५ स्वर्णवा ११ १५ स्वर्णवा ११ १५ स्वर्णवा १६ १४ स्वर्णवा १६ १४ स्वर्णवा १६ १४ स्वर्णवा १६ १४ स्वाह्यं १६ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १८ १४ स्वाह्यं १६ १४	स्वर्ग			स्वैरिता			1 30 00
स्वर्णदी	स्वर्ण	१८२	९४	स्वैरिन्	१९६	94	हारत रे २८२ १९
स्वर्णदी ११ ५२ हैंस ११ ३१ हैतिलक १८३ १०३ हैति स्वर्णेश ११ ५५ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ हैति ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ १४ हिता ११ १४ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ हिता ११ १४ १४ १४ हिता ११ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४	स्वर्णकार				₹.		हरितक१७० ३४
स्वर्भेतु २० २६ हंस १९ २३ हिरिद्ध १९ २९ स्वर्वेद्द्या १९ ५५ हंस १९ १५ हंसिका १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ हिरद्धा १९ १९ हिरिद्धा १९ १९ हिरद्धा १९ १९ १९ हिरद्धा १९ १९ १९ हिरद्धा १९ १९ १९ हिरद्धा १९ १९ १९ हिरद्धा १९ १९ १९ हिरद्धा	स्वर्णक्षीर	ो ८९	१३८	£	२७३	ሄ	हरिताल२८५ ३२
स्वेतंत्रया ११ ५५ हंतक १२४ ११० हंतिया ११ १४ हंतिका ११ १४ हंतिया ११ १४ हंतिका ११ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ हंतिया ११ १४ हंतिया ११ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ हंतिया ११ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४	स्वर्णदी	99	५२				हरितालक१८३ १०३
स्वेंच	स्वर्भानु	••• २०	२ ६	हंस			हरिदश्व २१ २९
स्वसृ	स्ववेदया	•••• 33	44	•			हरिदा१७१४१
स्वस्ति २६९ २४२ स्वस्तिक ६२ १० स्वस्तिक ६२ १० स्वस्तिक ६२ १० स्वस्ति २८६ ३८ स्वाति २८६ ३८ स्वाति २८६ ३८ स्वातु २४१ ९४ स्वातु २४१ ९४ स्वातु २४१ ९४ स्वातु २४१ ९४ स्वातु २४१ १४ स्वातु २४१ १४ स्वातु २४१ १४ स्वातु २४१ १४ स्वातु २४१ १४ स्वातु २४१ १४ स्वाता १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वातु १८ १८ स्वाता १८ १८	स्वर्वेद्य		•				
स्वास्तिक हर १० ह्हि २८१ १८ हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४२ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७६ १२ १६ १३ १६ हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७३ ४६ हि हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १३ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ हि सिमय ७६ १४ १६ १४ १६ हि सिमय १४ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १६ १४ १४ १४ १६ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४ १४	स्वसृ			-			हरिद्रु ८३ १०१
स्वसिय१०८ ३२ हृहविलासिनी. ८८ १३० हिरिप्रया ७ २८ स्वाति२८६ ३८ हृह१६१ १०८ हिरिप्रया ७६ १८ हिरिप्रया ७६ १८ हिरिप्रया १६० १८ हिरिप्रया १६० १८ हिरिप्रया १६० १८ हिरिप्रया १८ १२ १८ हिरिप्रया १८ १२ १८ हिरिप्रया १८ १२ १८ हिरिप्रया १८ १८ हिर्प्य १८ १८ १८ हिर्प्य	स्वस्ति	२६९	२४२	_		-	
स्वाति २८६ ३८ हठ ३६३ ३०८ हित चांडु २८६ ३८ हंडे ४० ३५ हित छुक ८६ १२१ हत २०३ ४१ हित छुक ८६ १२१ हत २०३ ४१ हित छुक ८६ १२१ हत २०३ ४१ हित छुक ८६ १२१ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० १६ हत २०० २४५ हत २०० २४५ हत २०० १६ हत २०० २४५ हत २०० १६ हत २०० १६ हत २०० १६ हत २०० १६ हत २०० १६ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत २०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ हत १०० १५ १०० हत १०० १५ हत १०० १०० ह		६२	30				हरिप्रिय ७३ ४२
स्वादु२४३ ९४ हुँ हुँ ४० ३५ हुँ स्वित्त २६ ३२९ हुँ २०३ ४१ हुँ स्वित्त हुँ स्वादुक्त २६ १२९ हुँ २०३ ४५ हुँ स्वित्त २६ १२९ हुँ २५० २४५ हुँ स्वित्त २६ १२९ हुँ २५० २४५ हुँ स्वित्त २६ १२९ हुँ २५० २४५ हुँ स्वित्त २६ १२९ हुँ २५० २४५ हुँ स्वित्त २६ १२९ हुँ २५० १६ हुँ २६ १४ हुँ स्वापत ५८ ३१ हुँ २५० १६ हुँ २६ २४ हुँ स्वापत ५८ ३१ हुँ स्वापत ५८ ३१ हुँ स्वापत ५८ ३० हुँ स्वापत ५८ ३० हुँ स्वापत ५८ ३० हुँ स्वापत ५८ ३५ हुँ स्वापत ५८ ३० हुँ स्वापत ५८ ३५ हुँ स्वापत ५८ ३५ हुँ स्वापत ५८ ३५ हुँ स्वापत ५५ १० हुँ स्वापत ५५ १० हुँ स्वापत ५५ १० हुँ स्वापत ५५ १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १० १० हुँ स्वापत १		306	३्२	-			हरिप्रिया ७ २८
स्वादुकंटक. $\left\{ \begin{array}{cccccccccccccccccccccccccccccccccccc$	स्वाति	२८६	३८	-	-		हरिमंथक१६७ १८
स्वाहुकंटक. { ८२ ९८ हुनु { ८८ १३० हिरिष्य १० १६ १९ हिर्मे १० १६ १९ हिर्मे १८ १९० हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १६ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १६ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ १९ हिर्मे १८ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९ १९	स्वादु	२४१		1		•	हरिवाळुक ८६ १२१
स्वाहुरसा ९० १४४ हत२७० २४५ हरेणु ६२ ९ १६० १६ हत२५० २४५ हरेणु ६२ ९ १६० १६ हम२१० ९६ हम्म ६२ ९ १६० १६ हम ६२ ९ १६० १६ हम ६२ ९ १६० १६ हम ६२ ९ १६० १६ हम ६२ ९ १ १ १ हम १५ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	स्वादकंट	# <i>)</i> '		ĘΠ			
स्वाहित ८४ १०७ हित२७० २४५ हिएण १६७ १६ स्वाहित १४ १०७ हिल्ल२१० ९६ हिल्ल १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६		6 01		हनु			हरीतकी ७६ ५९
स्वाध्याय १३९ ४७ हम्म ११० ९६ हम्म ६२ ९ १ १ स्वान ३६ २३ ह्य १५० ४४ हम्म १५ १ १ स्वान ४८ ३१ ह्यणुच्छी ८९ १३८ हम्म १५ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ हम्म १५ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १					-		े ु रह १२०
स्वान ३६ २३ ह्य१५० ४४ हम्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह्य ह				i -			્ ^{ફરહા} તે ૧૬૭ ૧ ૬
स्वांत २८ ३१ ह्यपुच्छी ८९ १३८ ह्य				i ⁻		•	हर्म्य ६२९
स्वाप ४४ ३६ ह्यमारक ७९ ७६ ह्व २६ २४ ह्वमाण १८ १८ ह्य ८ ३५ ह्वमाण १९५ ७ ह्वमाण १६६ १३ ह्यामिन. १९६ १० ह्या १९५ १ ह्ला १० १५ १ ह्ला १० १५ १ ह्ला १० १५ १ ह्ला १० १५ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १५ १६९ १४ १ ह्ला १५ १६९ १६० ह्ला १५ १६९ १६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १६९ १४ १ ह्ला १५ १६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० ह्ला १५ ६६० हला १६० हल		· -	-	_			हर्यक्ष ९५ १
स्वापतेय१८१ ९० हर ८ ३५ हर्षमाण१९५ ७ हल१६६ १३ हरण१४६ २८ हल१६६ १३ हला १० १५ हिए १० १५ हला १० १५ हला ६ २४ हला ६ २४ हला ६ २४ हला ६ २४ हलाहल ४७ १० हलाहल ४७ १० हलाहल ४७ १० हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल ६ २५ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६ हलाहल १५ ३६			-				हर्ष २६ २४
स्वामिन. \	_		• •	i -		•	हर्षमाण१९५ ७
स्वामन. \		(0	•	i -		•	हल१६६ १३
स्वाराज् १० ४६ हिर्रे	स्वामिन्			66.1			हला ४० १५
स्वाहा	स्थाराज	• •		'हरि .	,		हलायुध ६ २४
स्वेद २६९ २४३ हिरीचंदन. \	_	(03.4	~ `		(00		हलाहल ४७ १०
स्वेद ४४ ३३ हिरिण १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ८ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ हल्य १६ ६ हल्य १६ ६ हल्य १६ ६ हल्य १६ ६ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ ६ हल्य १६ ६ ६ ६ ६ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	स्वाहा •	''' र्वे २७३	L	हरिचंदन	1 132	939 939	इलिन् ६ २५
स्वेद ४४ ३३ हारीण २ ९६ ८ हल्य १६५ ८ स्वेदज २०३ ५१ २ २३३ ५० हल्या २२१ ४१ स्वेद १५९ १९२ हिसी २३३ ५० हल्ल ५५ ३६ स्वेर २५९ १९२				<u> </u>	•	-	हिलिप्रिया१९१ ३९
स्वेदज२०३ ५१ (२३३ ५० हल्या२२१ ४१ स्वेदनी१६९ ३० हिएणी२३३ ५० हळक ५५ ३६ स्वेर२५९ १९२ हिए	स्वेद	४ ४	३३	द्वारिण .			हल्य१६५ ८
स्वेदनी१६९ ३० हारिणी२३३ ५० हस्रक ५५ ३६ स्वेर२५९ १९२ हारिल १९५ १ हत्व १२१५ ८	स्वेदज	२०३	49	V.			हल्या२२१ ४१
स्वैर२५९ १९२ 률 🕞 १५ १ 🚾 矣 २१५ ८		••••१	३०	हरिणी	_		हस्रक ५५ ३६
∡कैतिणी१०५ ११ ^{हार्त्} } ३१ १४ ^{। एप} } २६२ २०७	स्वैर	…२५९	१९२		(94		
Addition accounts to a finished and finished	∗₹वैरिणी	٠٠٠.٩ ٥ لا	99	ELCT .	… { ₹ 3	38	ं ह्य रे २६२ २०७

706		হাত	ा जुकम ि	का.		
शब्दः	पृष्ठम् स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम	स्रोकः	भ न्दः	पृष्टम् स्रोक
हविस् ····	∫ 934 २७ ⋛ 9७३ ५२	1	र्गन्…२१५ …१९९		हूति •	{ ३३ ८ {२१५ ८
हव्य •	१३४ २४ १३४ २२	हिका हिंगु	२७८ १७१	6	हुहू ह णीया	११ ५५ २२० ३२
ह्व्यवाहन .	99 46 89 96	1	 हे १८२	६२		{ २८ ३१ { ११५ ६४
हसनी	968 30	हिंगुली	٠ د٢	338	हृदय •	ु २८ ३१
	११९८६ ११२९८	हिजल हिंताल	98	9 6 9	इदयंगम	ि १११५ ह४ ३५ १८
	८२३५ ५९ २९४ ५	हिम	﴿ ٩٩		ह्रया <i>लु</i> ह्य	
हास्तिन्	9४८ ३४ ६४ १७	i -	(२८२ ६५	3	ह् षी क हषीकेश	३० ८
हस्तिपक .	१५३ ५९	हिमसंहि	का. १२७ तं १९	१३० १८	हष्ट	२११ १०३
हा	१५३ ५९ २७२ २५७	हिमां शु हिमानी	9¢	93 96	हे	• ११९१९५ २७३ ७
1	१८२ ९४ ∫ २६ २०	हिमावती	?S	936	होति	∵ { १३ ६० ∵ { २३७ ७१
	२४४ १०८ १२३ १०५		929 929	99 98	हेतु हेमकूट	२७ २८ ६५ ३
हारीत	१०० ३४ ४२ २७	_		96	हेमदुंग्ध	७० २२ ∫१८२ ९४
हाला	१९१ ३९	हिरण्यरेत	म् १ २	40		'`रि२८३ २३
हाव	१७६ ६४ ४३ ३२		्र २७२ १ २७३ का. ९२	0	हेमंत हेमपुष्पक	७७ ६३
र किस्	83 38 83 38	ही	263	Y :		ii ७८ ७१ ११ ५२
हास्य {		हीन …	े १११ ' १ १४७	326	हेरंब	९ ४९
हाहा	33 44 २७२ २५८	हुतभुक्षि हतभज	याः १३४	۲۹ ۲۷	हेला हेषा	४३ ३२ १५० ४७
底 { 能和	२७३ ५	ङ"उ∼ हुम् ···	्र २७५ १ ३ ३००	96	है के	१५० ४७ १७३ ७ १४७ ३२
16/11	40 440	-	(791	774	ह्य	•••••

্মান্য:	पृष्टम् १	क्षेकः	स ब्द:	Ā	ष्टम्	स्रोकः	शब्द:	पृष्ठम् र	होक:
हेमवती	} ७६	३८ ५९	हद हसिष्ठ	٠۶	-	२५ ११२	हादिनी.	{ 48 { 284	
	6 28	9०३ 9३८	इस्य			४६	ह्री होण	४२ २०९	
होत	१७३ १३३		हस्वगवेषु	का.	८६	336	हीत	२०९	-
_	१ ३२ ३ ७९		ह्रस्वांग	····		५० १४२	हीवेर हेपा	१५०	
-	…२७६		ह्नादिनी.	Ţ.	90	•	हादिनी	ده	१२४

इति काळे इत्युपाद्ध-काशीनाथात्मज-गणेशशा-स्त्रिणा विरचिता सभाषामरकोशस्थ-शब्दानुक्रमणिका समाप्ता।

अथ सभाषामरकोशस्थक्षेपकश्चोकशब्दानुकमणिका.

शब्दः	पृष्ठम	्राब्द ः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अ.		अवाग्भव	१६	इन्द्राणी	9
अंशुमालिन् -	२१	अवाचीन	gę	इला	40
अक्षपाद	१३	१ अष्टमूर्ति	٠ د	ईशित्व	٩
अंडज	ነ	अहिदंष्ट्रिका.	४ ६	ड.	
अच्छ	२२	अहिर्बुध्न्य.	C	उत्कलिकाः	२२५
अणिमन्.	····	अ	П-		9 Ę
अधागंत	٠٠٠، ٩७	आम्बोहा	••• ३५	उदीचीन	9 €
अनेडम्क	२२	आक्षेप	••• ३५	उद्भव	ঙ
अंतरिक्ष	٠٠٠٠ ع	आदिकवि.	१३७	उंदुर ,	90
अञ्जिनीपतिः	२१			उल्का	93
अभ्यंजन	94	अहिंक		₵.	-
अभियोग	٠ ३١	आशिस्	४६	एकदृष्टि	• •
अवधान ····	٠ ٩٧	1	ξ.	1	76
अवलेप	88	इन	२१	औ.	
अवष्टम ···	¥5	इन्द्रलुप्तक.	···· 993	औळुक्य	93,9

शब्दः पृष्ठम्	शब्दः पृष्टम्	ज्ञब्दः पृष्ठम्
碼.	गणिका २२६	₹.
कच्छ २२८	गर ७	संझावात १३
	गरिमन् ९	₹.
कटक २२५	गहरी ५७	टंक २२६
कंटक २२५		1
कंठीरव ९५	गुच्छ २२८	त.
Milester Committee	गो ५७	तामिस्रहन् २१
	गोकर्ण ४६	तार ३८
कर्मसाक्षिन् २१	गोसर्ग २२	तारपथ १५
	गौरिला ६७	तिलौदन १७३
किंजल्क २२५	्रियंय २४०	
कुांहम २००० ६२	घ.	त्रयीतनु २१
	घूक ९७	द.
कुंभिनी ५७		दंतक ६६
कुंभीनस ४६	चंद्रज्ञालाः ६२	दर्भ ४९
	चर्चिका १०	दव १३
कृत्तर १७३	. चर्ममुंडा १०	दारक २२६
_	चंदु ३५	दारुक ७
कौमारी९	चाटु २५	दाव १३
\$ 90	चामुंहा १०	
कौशिक र १३७		दिवस्पृथिव्यो ६०
क्षमा ५७	चित्तोद्रेक ४१	दिवांघ ९७
क्षा गङ्	चित्रकायः ९५	दिवाभीत ९७
क्षीरसागरकन्यका. ७	ं चिरंजीविन् ९८	दुरेषणा ३५
क्षौर १३९	ंचोच ···· ३५	देशिक २२५
ख.	छ .	द्विरसन ४६
	छायानाय २१	द्वैपायन १३७
स्वयोत २१	্ জ.	द्यावापृथिन्यों ६०
खनक ९ ७	जगचक्षुस् २१	बावाभूमी ६०
खेट क २२ ^६	detril **** to	· -
ग.	जलज्ञायिन् ६	ঘ.
गुजारि ८		५ घामनिधि २१
गंजा ६०	जिमिनीय ३३	৭ ঘাঙ্গী ১৬

राव्यातुक्रमणिकाः

इास्ट:	पृष्ठम्	ज्ञब्दः	पृष्ठम्	ज्ञ न्दः	पृष्टम्
न.		प्राग्भव ····	٩६	महीस्नु	
नाभिजन्मन्.	٠ ٧	प्राचीन	٩६	माहेश्वरी ···· •	
नायक	_	प्राचेतस	130	मीमांसक	
नासामल	*** 334	ጥ	•	मृगदिष	
निधन	٠ ٤	फणधर	४६		94
निबद्धाभू	६२	ब			94 .
निर्द्धारेणी	ሄሄ	बळाहक ····	७	मृगाञ्चन	
निशाटन	९७	बुष		1 -	२४०
नैयायिक	१३१	बृहस्पाति	•	1 60	१३९
प	•	जहावादिन्.	939	मघपुष्प	
पंचनख ····	94	त्राह्मी	•	मघाष्यम्	
पद्माक्ष		3.161		मैत्रावरुणि	
पर्यक ••••		, i	-	1 30	کې دمو
पाक		भग …		म्रक्षण	
पादवल्मीक.	993	भणित		₹.	
पाराशर्य	१३७	भद्राकरण		्र दिवा ।	
पिंजूष ••••	994	भारीत		्रियाच्यात	
<u>पुंडरीक</u>	٠ ٩٤	भस्मन् …		(Calalan	
षुंध्वज	९७	भानुज भागवी	•	रायकानामः	
पुराणपुरुष.	६	भावना		रवि ···	
पूर्व	٠ ٢		•	रुमा ••••	, ६० , ६०
पेटक	२२	776	93	(1641)	•
पौष		200		े रादस्था ••	, ,,,, ,,,,
पौषी		भीताम		् (विविध्यक्षाः ••	 ਲ.
प्रकंपन			स.	लियमन्	
प्रकटोदितः		- 1	··· ···	l l	&0
प्रणिधान			३	L.	२२५
प्रत्यग्भवः		•	३		४६
प्रतीचीनः			c	1 -	
प्राकाम्य.		1 -		1 -	२१
प्राप्ति	• -	1	9		२१
प्रयोत्तन -	-	1 =			n 93,9
प्रभात .	••••	√्या ह नार			-

<u>ज्ञाब्दः</u>	पृष्ठम्	अ ब्दः	र्ष्ट्रम्	शब्द:	पृष्ठम्
च.		वैष्णवी	٩.	समाधान	२८
वनहुताञ्चन	33	व्यास	१३७	सरस्वती ••••	48
थनज	19	च्युष्ट	२२	सांख्य	131
वयन ्र	१३९	श.		सागरांबरा	40
वरण	२३४	भाकशाकट	964	सिंघाण	194
विशिक्तः		शाकशाकिन	954	सुत्रीव	b
वगरही		शाप	1	स्रोत्यास	
वार्षक		क्षिरोग्रह	६२∙	सोङ्गंडन	
वाल्मीक		যুক	3.6	सीगत	•
वासना		शुल्क	२२५		-
विधु	-	ज्ञृन्यवादिन्	,13,1	स्मय	83
विपुला		हौंब्य	9	स्वर्भानु	93
विभात		श्राब्य	३६	स्याद्वादिक	93,9
विमर्श		श्लाघा	३५	and the second s	
विश्वामित्र	•	श्लीपद	993	₹.	
विस्पष्ट	• •	स.			
वृक		ı		हंसवाहन	ų
वेणी		सत्यक			
वृद्दांतिन्		सत्यवतीसुत			-
वैशेषिक	939	सदानंद	4	ह्य	₹ €

इति सभाषामरकोशस्यक्षेपकश्चोकशब्दानु-क्रमणिका समाप्ता।

पुस्तक मिलनेका विकाना— गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेङ्काटेश्वर" छापाखाना. कल्याण—मुंबई.

व्याकरणग्रन्थाः।

सिद्धान्तकौ सुदी व	रतिङ्तम	और छोटा	टैपमें छफ	कर तैयार	₹	?-0
७ षुसिद्धान्तकौ मुद्	ो टिप्पणीर	तहित जीरू	द अक्षर ब	डा मुत्र		•
और वृत्ती खुट	ासेवार है	••••	••••	****		०-१२
तत्त्वबोधिनी कौमु	दीके पृष्ठांव	न्सह पूर्वाः	ई छफ्के त	पार है	• • • •	3− 0
तथा उत	रार्द्ध	••••	••••	****		3-6
ह्रपमालाव्याकरण	का षड्छिं	गविभाग	••••	••••	••••	o -Ę
प्रयोगविधि	****	••••	****	••••	••••	o- ર
कारकसमासतद्धित			भा ख्यातच	न्द्रिका घा	तुरू-	
पभेद श्लोकयोज	ानिकोपाय	••••	••••	••••	••••	o- Ę
समासकुवल्याकर		-	•		••••	
<mark>बाल्संस्कृतप्र</mark> भाकर	र नवीन संग	स्कृतवा लेको	ो बहुत उप	योगी है	••••	0-6
संस्कृतनामावळी भ	ाषाटीका	****	••••	****	••••	o – ₹
रू पमाछाव्याकरणव						
ग्रहः (कारकर				ाः भाख्या	तच-	
न्द्रिका धातुरूप	-	_		••••	_	
सिद्धान्तचन्द्रिका स्	રૂ નો ધિનીટી	का और त	ात्त्वदीपिक	ासह संपूर्ण	Ì	8-°
सिद्धान्तकौमुदी त	स्वबोधिनी	टीकासहित्	त जिल्दु व	नाशीका ह	जपा	0-o
सिद्धान्तचन्द्रिका र	उत्तरार्ध सु	बोधिनी औ	र तत्त्वदी	पिकासह	••••	२०
महाभाष्य नवान्हि	कमात्र	••••	••••	••••	••••	२-०
रुघु३ाब्देन्दु३ोखर व	गशीके छा।	٠	••••	••••	••••	4 -0
सिद्धान्तकोमुदीअ	श्रध्यायी,	गणपाठ,	धातुपाठ,	लिंगानु इ	गसन	
पा० अक्षर मोर	ध जिल्द र	अतिउत्तम	••••	••••	••••	8-o
अष्टाध्यायी, गणपा	ठ, घातुपा	ठ, छिंगानु	शासन पा	o	••••	१-0
सन्धिविभाग	••••		••••	••••	••••	0-4
अव्ययार्थविभाग	••••	***	••••	••••	****	6-3
सारस्वत तीनों वृत्ति	Ŧ	••••	••••	••••	.y.	o-83
सारस्वत चंद्रकीर्त्ति	टीकासह प	स्मो त्तम	••••	••••	••••	1-8
समासकु सुमावारिः	****		••••	• • • •	***	9 -0

मिल्लायकुतन्यास्यासहितः छोगोंके सुभीतेके ित्र इसके तीन प्रकारसे भाग बनाये हैं. १-पांह सगेसे पांचवें समैतक की० ५ आ०। २-छठे सगेसे दशवें समैतक की० ५ आ०। ३-पहिछे सगेसे उन्नीसवें सगेतक अर्थात् समग्र, की० १ ठ० ४ आ०। पुनः पुनः पंडितोंसे शुद्ध करवाकर अच्छी रीतिसे जिल्द छपके तैयार है.

घरंडसंहिता भाषाटीका (योगशास्त्रयंथ)

यह एक अपूर्व योगशासका प्रंथ संपादित कर छापदिया है. यह अप्रसिद्ध प्रंथ आजतक कहां भी नहीं छपा. इसमें वेरंडजीने चंडकापाछिराजाको सात उपदेशों में योगशासकी सब गुह्म २ बातें अर्थात् आसन मुद्राध्यानधारण समाचि सगुण निर्गुण उपासनादि सब विषय नियमसहित बतलाकर उसको मोक्षसुखभागी कर दिया है. जिसको योगशासके रहस्यका अभ्यास करना या मर्म जानना हो उसने अवश्य ही पास रखना बहुत उचित है. की० १० आना.

हिरिवंदी —यह तीन प्रकारसे छपके तैयार है. १—संस्कृत टीकासह, की० ५ रु०। २—पं० ज्वालापसादजीकृत भाषाटीका सह. की० १० रु०। ३—केवल भाषा, इसमें श्लोकांक और प्रत्येक अध्यापके आदांत श्लोक हैं की. ग्ले० रु. ५, रफ् रु० ४।

ं दत्तकारुण्यल्ड्से भाषाटीकासहित.

जिस छहरीके माधुर्यपर दूर्व हो छहरीकारको श्री राजा रर श्री १०८ श्रीसुँदछदेवादी के, सि, आह, इन